प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय, मंत्री
सस्ता साहित्य-मंडल
नई दिल्ली

पहली बार . दिसंबर १९४८

मूल्य
अजिल्द २॥) . सजिल्द ३)

मुद्रक
जे० के० शर्मा
इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस
इलाहाबाद

# प्रकाशककी ओरसे

पूज्य गाधीजी आगा खा-महलके कारावाससे मुक्त होनेके बादसे सध्याकी प्रार्थना-सभामें नियमित-रूपसे प्रवचन किया करते थे। यह परंपरा उनके महानिर्वाणके एक दिन पहलेतक, यानी २९ जनवरी १९४८ तक, बराबर चलती रही।

इस पुस्तकमें दिल्लीकी प्रार्थना-सभाओमें, १ अप्रैल १९४७ से २९ जनवरी १९४८ तक, किये गए प्रवचनोका सग्रह किया गया है।

ये गाधीजीके अतिम उद्गार है और जिन समस्याओपर हुए है उनमे बहुत-सी आज भी मौजूद है। इन प्रवचनोमे गाधीजीने सक्षेपमें सर्वसाधारणके समझने-योग्य भाषामे बहुत कामकी बाते कही है। और बहुत जगह तो अपनी हार्दिक वेदना जनताके सामने रख दी है। गाधीजीके अन्य लेखो और भाषणोसे इनका एक अलग और महत्त्वका स्थान है।

इसलिए 'गाधी-साहित्य'के पहले दो भागोमें (लगभग १००० पृष्ठोंमें) हम ये प्रवचन प्रकाशित कर रहे है।

इनमेंसे अधिकाश प्रवचन गाधीजीकी भाषामे ही है। श्री प्रभुदास गाधीने तथा 'हिन्दुस्तान'के उप-सपादकोने समय-समय पर 'हिन्दुस्तान'के लिए उनकी रिपोर्ट ली थी। गाधीजीके बादके प्रवचनोंके रेकार्ड 'आल इडिया रेडियो'ने लिये थे। उनमेंसे कुछ प्रवचन 'भाइयो और बहनो'के नामसे चार छोटी-छोटी पुस्तिकाओमें सरकारकी ओरसे छपे है। इस संग्रहमें उन सबकी हमने मदद ली है। इसके लिए हम इन सबके विशेष कृतज्ञ है।

भाइयो और बहनो !

# प्रार्थना-प्रवचन

## : १ :

### १ अप्रैल १९४७

वायसराय-भवनसे देरसे लौटनेके कारण कल गाधीजी शामकी प्रार्थनामे शामिल नही हो सके थे। आज एशियाई सम्मेलनसे समयपर लौटे और प्रार्थना ठीक समयपर आरभ हुई, लेकिन कुरानकी आयत शुरू होते ही कुछ शोर हुआ और प्रार्थना रोकनी पडी। इससे पहले प्रार्थनामें ऐसा कभी नही हुआ था।

गाधीजीकी प्रार्थनामें छ चीजे होती है : (१) बौद्धधर्मका जापानी भाषाका मत्र, (२) सस्कृतमे भगवद्गीताके श्लोक। (३) अरबी भाषामें कुरानसे एक कलमा। (४) फारसी भाषामे जरथुश्त धर्मका मत्र। (५) हिंदी या हिंदुस्तानी या किसी भी प्रातीय भाषामे भजन और (६) राम-नाम या नारायण नामकी धुन।

आज पहली दो चीजोके बाद कुमारी मनु गाधीके मुहसे ज्यो ही कुरानके कलमेका पहला शब्द निकला कि प्रार्थनामेसे एक युवक खडा होकर शोर मचाने लगा, "बस-बस, बद कीजिए, बहुत हो गया। अब हम यह नही बोलने देगे। बहुत सुन लिया।" प्रार्थनासभाके और लोगोके उसे बैठनेको कहनेपर भी वह नही बैठा। आगे बढ़ता हुआ बिलकुल गाधीजीके मचके पास आकर खडा हो गया और कहने लगा, "आप यहासे चले जाइए। यह हिंदू-मदिर है। यहा मुसलमानोकी प्रार्थना हम नही होने देगे। आपने बहुत बार यह कह लिया, पर हमारी मा-बहिनोकी हत्यापर हत्या हो रही है। हम अब यह सब सहन नही कर सकते।"

जब उसने गाधीजीको चले जानेके लिए कहा तो गाधीजीने उससे कहा, "आप जा सकते है। आपको प्रार्थना न करनी हो तो दूसरोको करने दे। यह जगह आपकी नही है। यह ठीक तरीका नही है।"

परतु पच्चीस-छब्बीस वर्षकी उम्रका वह लडका चुप नही हुआ। तब लोग उसे घेरकर "चुप हो जाओ", "बैठ जाओ" की आवाज लगाने लगे। इसपर गाधीजी माईक्रोफोन नीचे रखकर आसनसे उठकर मचके बिलकुल किनारे जा खडे हुए। वह लडका वही गाधीजीके बिलकुल पास आ गया। लोग उसे पीछेकी ओर खीच रहे थे और वह डटा हुआ अपनी बात और भी आवेशसे दोहराता जा रहा था।

गाधीजीने लोगोसे उस लडकेको छोड देने और शातिसे बैठ जानेके लिए कहा। इधर मचपरसे एक महिला गाधीजी की सहायतार्थ उनके और उस लडकेके बीच खडी हो गई। गाधीजीने उनको भी हट जानेके लिए कहा। बोले, "मेरे और इसके बीच कोई न आवे।" इतने परिश्रमसे गाधीजी थक-से गये। उनकी आवाज धीमी पड गई। उन्होने अपने सारे विक्षोभको, जो कि प्रार्थनामे विघ्न आनेके कारण उनके चेहरेपर झलक रहा था, सावधानीसे दबा लिया और बहुत ही शातिसे इस मामलेको निपटानेका प्रयत्न करने लगे। लेकिन उस लड़केने तो गाधीजीके साथ बहस ही छेड दी। यह देखकर लोगोको धीरज न रहा और सबने मिलकर उसे प्रार्थना-सभासे बाहर कर दिया।

यह देखकर गाधीजीने कहा, "यह आपने ठीक नही किया। उस लडकेको आपने जबरदस्तीसे निकाल दिया। ऐसा नही करना चाहिए था। अब वह यही कहेगा कि मैने विजय पाई है। वह गुस्सेमे था। प्रार्थना नही सुनना चाहता था, पर मै जानता हू कि आप सब तो प्रार्थना सुनना चाहते है। मै किसीका विरोध करके प्रार्थना नही करना चाहता। अब आगेकी प्रार्थना मै छोड देना चाहता हू। जो प्रार्थना मै करता हू वह आप सब जानते है। नोआखाली जानेसे पहले भी आपने प्रार्थना सुनी है। उसमें इस मुसलमानी प्रार्थनाके बाद पारसी प्रार्थना है। बादमें यह लडकी आपको मधुर भजन सुनाती और फिर रामधुन होती। मै अब रामधुन भी छोडता हू, पारसी प्रार्थना भी छोड़ता हू। 'अोज़ अबिल्ला'

अरबी भाषामे कुरानके एक मन्त्रका पहला शब्द है। इसे कहनेसे, आप यह समझते है कि हिंदू धर्मका अपमान होता है, पर मै एक सच्चा सनातनी हिंदू हू। मेरा हिंदू धर्म बताता है कि मै हिंदू प्रार्थनाके साथ-साथ मुसलमान प्रार्थना भी करू, पारसी प्रार्थना भी करू, ईसाई प्रार्थना भी करू। सभी प्रार्थनाए करनेमे मेरा हिंदूपन है, क्योकि वही अच्छा हिंदू है जो अच्छा मुसलमान भी है और अच्छा पारसी भी है। वह लडका जो कह रहा था कि यह हिंदू-मदिर है, यहा ऐसी प्रार्थना नही की जा सकती, सो यह वहशियाना बात है। यह मदिर तो भगियोका मदिर है। अगर चाहे तो एक अकेला भगी मुझे यहासे उठाकर फेक दे सकता है। लेकिन वे मुझसे प्रेम करते है, वे जानते है कि मै हिंदू ही हू। उधर जुगलकिशोर बिड़ला मेरा भाई है। पैसेमे वह बडा है, पर वह मुझे अपना बडा मानता है। उसने मुझे एक अच्छा हिंदू समझकर यहा टिकाया है। उसने जो बडा भारी मदिर बनवाया है उसमे भी वह मुझे ले जाता है। इतनेपर भी वह लडका अगर कहता है कि तुम यहासे चले जाओ, तुम यहा प्रार्थना नही कर सकते तो यह घमड है। लेकिन आप लोगोको उसे प्रेमसे जीतना चाहिए था। आपने तो उसे जबर-दस्ती निकाल दिया। ऐसी जबरदस्तीसे प्रार्थना करनेमे क्या फायदा ? वह लडका तो गुस्सेमे था और गुस्सेके मारे वह वहशियाना बात कर रहा था। ऐसी ही बातोसे तो पजाबमे यह सब कुछ हो गया। यह गुस्सा ही तो दीवानेपनका आरम्भ है।

अभी इस लडकीने जो श्लोक सुनाए उनमे यह बात बताई गई है कि जब आदमी विषयोका ध्यान करता है—विषय माने एक ही बात नही, पर पाचो इद्रियोके स्वादोका ध्यान धरता है—तो वह काममे फसता है। फिर वह क्रोध करता है और तब उसे सम्मोह यानी दीवाना-पन घेर लेता है। ऐसी ही दीवानेपनसे देहातियोने बिहारमे ऐसी बात कर डाली कि मेरा सिर झुक गया। नोआखालीमे भी ऐसे ही दीवाने-पनसे लोगोने ज्यादतिया की, पर बिहारमे नोआखालीसे ज्यादा जगलीपन हुआ और पजाबमें बिहारसे भी ज्यादा। अगर आप लोग सच्चे हिंदू है तो ऐसा नही करना चाहिए। कही कोई सभा हो रही हो और वहां कही

जानेवाली बात हम नही सुनना चाहते हो तो हमें उठकर चले जाना चाहिए। चीखने-चिल्लानेकी जरूरत नही है । फिर यह तो धर्मकी बात है। धर्म-चर्चाकी बात छोडो, यह तो प्रार्थना भी नही करने देना चाहता ! इस तरह एक लडकेको प्रार्थनामें दखल नही देना चाहिए। ऐसी बातोसे कुछ फायदा नही निकल सकता।

पजाबमें जो लोग मर गए उनमेंसे एक भी वापस आनेवाला नही है। अतमें तो हम सबको भी वहीपर जाना है। यह ठीक है कि उनको कत्ल किया गया और वे मर गए, पर दूसरा कोई हैजेसे मर जाता है या और किसी तरहसे मरता है। जो पैदा होगा वह मरेगा ही। पैदा होनेमें तो किसी अशमें मनुष्यका हाथ है भी, पर मरनेमें सिवाय ईश्वरके किसीका हाथ नही होता। मौत किसी भी तरह टाली नही जा सकती। वह तो हमारी साथी है, हमारी मित्र है। अगर मरनेवाले बहादुरीसे मरे है तो उन्होने कुछ खोया नही, कमाया है। लेकिन जिन लोगोने हत्या की उनका क्या करना चाहिए, यह बडा सवाल है। बात ठीक है कि आदमीसे भूल हो जाती है। इसान तो भूलोकी पोटली है, लेकिन हमें उन भूलोको धोना चाहिए। खुदा हमारे कामको नही भूलेगा। जब हम उसके यहा जायेंगे, वह हमारा हृदय देखेगा। वह हमारे हृदयको जानता है। अगर हमारा हृदय बदल गया तो वह सब भूलोको माफ कर देगा।

पजाबमें बहुतसे मित्र है, जो अपनेको मेरे भक्त भी बताते है। पर मैं कौन हू कि वे मेरे भक्त कहलाए ! उन सब मित्रोका आग्रह है कि जब मै दिल्ली तक आ गया हू तो कम-से-कम एक रातको पजाब भी जाऊ, जिससे वहा लोगोको कुछ तसल्ली मिले। हवाई जहाजसे जानेमें तो कुछ ही घटे लगेगे। लेकिन मै किसीके कहनेपर कैसे जाऊ ? मैं तो ईश्वरके कहनेपर, ईश्वर नही तो अपने हृदयके कहनेपर ही वहा जाऊगा। नोआखाली मै किसीके बुलानेपर नही गया था। मैंने यहासे जाते समय ही कहा था कि मेरा हृदय मुझे वहा जानेको कह रहा है। बिहारमें भी बहुत समय तक लोग मुझे बुलाते रहे, पर मै किसीके बुलानेपर वहा नही गया। जब डाक्टर महमूद साहबने लिखा कि तुम आ जाओ तभी हमारा दिल साफ हो सकेगा तो मै बिहार चला गया।

बिहार ऐसा सूबा है, जहां हिंदू-मुसलमान एक साथ मिलकर रह सकते है। वहां भी औरत-बच्चोपर कम अत्याचार नही हुआ। क्रोधमे भरकर लोगोने मासूम बच्चोको मार डाला और औरतोको मारकर कुओमे डाल दिया। यह मै हवाई बाते नही करता, ये सब सिद्ध हो सकने-वाली बाते है। तब मुसलमान जरूर कहेगे कि हम यहां नही रहनेवाले है; परंतु जब उनको यह भरोसा हो जाय कि अब हमारे साथ दुबारा ऐसा बर्ताव नही होगा तो वे लौटकर आ जावेगे । इस बातको बिहारके मुसलमान करीब-करीब समझ ही गए थे, यहातक कि मुझे विश्वास हो गया था कि हम भरोसा दिला सकें तो आसनसोल और सिंध गए हुए मुसलमान भी वापस आ जावेंगे। उनके आनेकी नौबत भी आ गई थी; पर क्या अब पंजाबका बदला बिहार लेने जाय? फिर मद्रास लेगा? और यह बात कहा पहुचेगी? इस तरह क्या जगली बन जायेंगे? कांग्रेसने अंग्रेजोके साथ अहिंसाकी लड़ाई लड़ी। अब क्या हम अपने भाइयोकी हिंसा करने बैठ जाय? ठीक है कि वे अत्याचार करते है; पर क्या हम भी वैसा ही करें? अंग्रेजोने कौन-सा अत्याचार नही किया था?

लेकिन अब अंग्रेज तो जा रहे है। वायसरायने मुझसे कहा कि आज-तक हम लोग कहींसे नही हटे है, पर यहासे हम अहिंसाकी लड़ाईकी वजहसे जा रहे है। आप शायद कहेगे कि उनको तो जाना ही था, इसलिए ये बनावटी बाते कर रहे है। पर अगर कोई आदमी शराफतसे हमारे पास आता है तो हम क्यो उसकी शराफतको शैतानियत बतावे? जबतक बुरा अनुभव नही होता तबतक शराफतको मान लेना ही मै सीखा हू। क्या हम इस मौकेपर, जब कि वे जा रहे है, ऐसा नजारा पेश करेंगे कि 'आप तो जा रहे है, पर हमें गोरे सिपाही तो चाहिए ही।' पजाबमे आज उन्हींकी वजहसे हमारा रक्षण है। लेकिन वह क्या रक्षण है? मै चाहता हूं कि मुट्ठी भर आदमी रह जाए तो भी अपना रक्षण करे। मरनेसे न डरें। मारेंगे तो आखिर हमारे मुसलमान भाई ही तो मारेंगे न? क्या धर्म-परिवर्तनसे भाई भाई न रहेगा? और वे जैसा करते है वैसा हम नही करते क्या? बिहारमें हमने औरतोके साथ क्या नही किया? हिंदुओने किया, याने मैंने किया। यह शर्मिंदा होनेकी बात है। क्या मैं

एक गालीके बदलेमे दो गालिया दू ? पर ऐसी ही बाते हिंदू और मुसलमान दोनो छिप-छिपकर करते है और फिर ऐसा पागलपन उनके दिमागपर सवार हो जाता है।

यह बादशाह खान मेरे पास बैठे है। इन्हे कौन हटा सकता है ? मैने उस लडकेके कारण कितनी प्रार्थना छोड दी ? कारण, मै सबको बताना चाहता हू, सबसे कहना चाहता हू कि मै अच्छा पारसी हू, अच्छा मुसलमान हू, तभी अच्छा हिंदू भी हू। अलग-अलग धर्मको गालिया देना क्या धर्म हो सकता है ? मेरे सामने अलग-अलग धर्म जैसा कुछ नही है।

ये लोग जो एशियाके सभी मुल्कोंसे[1] यहा बात करने आए है, जवाहरलालसे कितने प्रेमसे बातें करते है ? सब उसपर फिदा है। ईश्वरकी कृपासे हमारे पास ऐसा जवाहर पडा है, जो सारी दुनियाको अपनाना चाहता है । क्या उसको सुशोभित करनेके लिए भी हमे शातिसे नही रहना चाहिए ?

अब मै थोडी वाइसरायकी बात भी बता दू। कल मै उनके पास दो घटेसे ज्यादा रहा और आपकी प्रार्थनामे न आ सका। यह अच्छा हुआ, जो इस लडकीने प्रार्थना शुरू करा दी, क्योकि मै कह गया था। आज दो घटेतक वाइसरायने बातें की। उन्होने कहा कि मै सचमुच कोशिश कर रहा हू। उन्होने यकीन दिलाया कि 'मै आखिरी वाइसराय हू। मै तो हिंदुस्तान आना नहीं चाहता था, समुद्रमे ही रहना चाहता था पर जब मजबूर कर दिया गया तब आया हू।'

मजदूर सरकारने भारत छोडना तय किया तब इनको भेज दिया, क्योकि यह राजाके खानदानके है। अग्रेज लोग भली तरहसे भारत छोडना चाहते है। वे कहते है कि हिंदू क्या, मुसलमान क्या, अगर एक पारसी भी हिंदुस्तान लेनेको तैयार है तो वे प्रेमसे उसे देनेको तैयार है। इस तरह जो आदमी शराफतसे मेरे पास आता है उसकी बात मै क्यो न सुनू ? अग्रेजोने अबतक हमारा काफी बिगाडा है, परन्तु इसने (लॉर्ड माउटबैटनने) तो कुछ नही बिगाडा । वह तो कहता है कि यदि

---

[1] एशियाई कान्फ्रेंस (२३ मार्च '४७से २ अप्रैल '४७ तक)के अवसरपर।

हो सके तो मै आजहीसे खिदमतगार बनना चाहता हूं। लेकिन जब आप लडते-भिडते है तब उसका भाग जाना अच्छा नही। आखिर वह बहादुर कौमका है। उसे भागनेकी क्या जरूरत? वह सोच रहा है कि किस तरह यहासे जाऊ? वह काफी कोशिश कर रहा है। वह शराफतसे चलता है। यदि हम भी शराफतसे चलेगे तो दुनियामें जो कभी नही हुआ वह होनेवाला है। अगर कोई शराफत न करे, वहशियाना काम करे, तो भी उसको कैसे अपनाया जाय, यह जो सीखना चाहे मुझसे सीखे।

वाइसरायने मुझे शुक्र तक बाध रखा है। जवाहर भी मुझे कैदी बनाना चाहते है। तीन दिन बाद मैं सब बाते बता दूगा। छिपाना कुछ नही है, पर होना क्या है! मेरे कहनेके मुताबिक तो कुछ होगा नही। होगा वही जो काग्रेस करेगी। मेरी आज चलती कहा है? मेरी चलती तो पजाब न हुआ होता, न बिहार होता, न नोआखाली। आज कोई मेरी मानता नही। मै बहुत छोटा आदमी हू। हा, एक दिन मैं हिंदुस्तानमें बडा आदमी था। तब सब मेरी मानते थे, आज तो न काग्रेस मेरी मानती है, न हिंदू और न मुसलमान। काग्रेस आज है कहा? वह तो तितर-बितर हो गई है। मेरा तो अरण्य-रोदन चल रहा है। आज सब मुझे छोड सकते है। ईश्वर मुझे नही छोडेगा। वह अपने भक्तकी परख कर लेता है। अंग्रेजीमे कहा है कि वह 'हाउड ऑव दी हेवन' है, वह धर्मका कुत्ता है, यानी धर्मको ढूढ लेता है। वही मेरी बात सुनेगा तो काफी है। वह ईश्वर जब आपके हृदयमे आ जायेगा तो आप वही करेंगे जो वह करायेगा। इसलिए हमे विचारशील प्राणी रहना चाहिए। थोडी-सी बातपर बकवास शुरू नही कर देनी चाहिए।"

## : २ :

### २ अप्रैल १९४७

"भाइयो और बहनो,

कलकी तरह प्रार्थनाके बीचमे आज भी कोई झगडा करनेवाले हो तो

अभीसे वे अपना इरादा मुझे बता दे, ताकि मैं शुरूसे ही प्रार्थना स्थगित कर दू। किसीका विरोध करके मैं प्रार्थना करना नही चाहता।" प्रार्थना-स्थानपर बैठनेपर गाधीजीने पूछा।

दो व्यक्ति खडे हुए और बोले, "आपको यदि प्रार्थना करनी ही है तो हिंदू-मदिरसे बाहर आकर बैठे और इस दूसरे मैदानमे अपनी प्रार्थना करें।"

गाधीजी—यह मदिर भगियोका है। मैं भी भगी हू। ट्रस्टी लोग आकर रोकेंगे तब अलग बात है। आप मुझे नही रोक सकते। अगर आप लोग करने देंगे तो प्रार्थना यही करूगा।

युवक—यह मदिर पब्लिकका है। हमने देख लिया कि पजाबमे क्या हुआ। हम आपको यहा प्रार्थना हरगिज नही करने देंगे।

गाधीजी—मैं बहस नही चाहता। मैं बडे अदबसे कहना चाहता हू कि आप लोग भगियोकी तरफसे नही बोल सकते। मैं भगी बना हुआ हू। मैंने पाखाना उठाया है। अगर मैं कहूगा तो आप लोगोमें-से कोई भी पाखाना उठानेका काम करनेवाला नही है, फिर भी आप रोकेंगे तो मैं रुक जाऊगा। प्रार्थना नही करूगा।

लोगोने चिल्लाकर कहा—हम प्रार्थना सुनेंगे। हमें प्रार्थना चाहिए।

गाधीजी—इन हजारो आदमियोके बीच केवल आप दो ही जने बाधा डाल रहे है। यह आपके लिए शोभाकी बात नही है। मैं जानता हूं कि आप गुस्सेमे भर गए है। आप शात हो जायेंगे तो अपने आप समझ जायेंगे और तभी मैं यहा प्रार्थना करूगा।

युवक (चीखते हुए)—आप मस्जिदमें जाकर गीताके श्लोक बोलिए। क्या वे बोलने देंगे? हमने पजाबमें सब कुछ देख लिया।

गाधीजी—चीखनेकी जरूरत नही है। इस तरह आप हिंदू धर्मकी रक्षा नही कर रहे है, बल्कि उसे मारनेकी कोशिश कर रहे है। मैं किसीसे डरकर प्रार्थना मुल्तवी नही कर रहा हू। कोई मुझे बीचमें रोकेगा तो प्रार्थना शुरू करनेके बाद मैं रुकनेवाला नही हू, चाहे कत्ल भी क्यो न हो जाऊ। और उस समय भी आप देखेंगे कि मेरी आखिरी सास

छूटती होगी तब भी मेरे मुहसे 'राम-रहीम' 'कृष्ण-करीम'[1]का जाप चलता होगा। मैंने बता दिया कि मै भगी हू, ईसाई हू, मुसलमान हूं और हिंदू तो हू ही। मेरे साथ यहा बादशाह खान भी तो है, मुझको आप कैसे रोक सकते है? लेकिन आप रोकें। एक बच्चा भी मुझे रोक सकता है।

युवक—आप पंजाब जाइए।

गाधीजी—मै वहा जाकर क्या करूगा? मुझमें तो जितनी शक्ति है वह पजाब, बिहार और नोआखालीकी सेवामें यहा रहते हुए खर्च कर ही रहा हू।

कई लोग उस युवकको हटाने लगे कि हम प्रार्थना सुनेंगे।

गाधीजी—आप लोग इसे धक्का न दे। शातिसे काम ले।

युवक—हम लोगोंको आप चार मिनट दीजिए, हम आपसे बातें करेंगे।

गाधीजी—मेरे पास समय नहीं है और इसकी जरूरत भी नही है। अदबसे मै इतना ही कहूंगा कि आप मुझे 'हा' या 'ना' कह दे।

युवक—हम आपको प्रार्थना नही करने देंगे।

गाधीजी—सब लोग शातिसे बैठे रहे। मै जा रहा हू। इन भाइयोंको कोई न छेडे। ये भले ही अपनी विजय मान ले, पर यह क्या विजय है? कोई पीछे छुरा भोक दे तो उसमे क्या बहादुरी है। मै इतना ही कहूगा कि यह हिंदू-धर्मका कत्ल हो रहा है। आप लोग सोचिए और समझिए। कल भी आकर मै यही प्रश्न करूगा और आप प्रार्थना करनेको मना करेंगे, तो मै चला जाऊगा।

---

[1]नोआखालीसे लौटनेपर गांधीजीने "भज मन प्यारे सीताराम" की जगह "भज मन प्यारे राम-रहीम, भज मन प्यारे कृष्ण-करीम" की धुन शुरू की थी।

## : ३ :

### ३ अप्रैल १९४७

भाइयो और बहनो,

कल तो दो-तीन ही आदमी थे जो प्रार्थनामें रुकावट डालना चाहते थे, पर आज बात और बढ गई है। मेरे पास लिखा हुआ पत्र आया है जो किसी मेहतर यूनियनके प्रेसिडेंटका है। उसमें लिखा है कि मुझको यहा रहना ही नही चाहिए। अब आप देखिए कि मेरे जैसे बूढे आदमी-पर कैसी गुजर रही है। लेकिन यहाकी यूनियनके प्रेसिडेट तो और ही कोई भाई है। मै भी तो मेहतर ही हू और यहा जो मेरे मेहतर भाई है वे मेरी सुनते है। मै उनके साथ फैसला करके यहा रहा हू और रहूगा। फिर यहाके कर्ता-धर्ता तो जुगलकिशोर बिडला है। उन्होने मुझे यहा टिकाया है। जब टिकानेवाले जानेको नही कहते तो फिर मेरे जानेकी क्या जरूरत ?

मै आज भी पूछूगा कि मै प्रार्थना करू या न करू ? पर यह पूछनेसे पहले मै एक बात और पूछूगा कि आप कलकी मेरी बात समझे है या नही ? अगर समझे है तो आपको पता लग गया होगा कि मैने प्रार्थना क्यो रोक दी। अगर कोई कहे कि आप प्रार्थना न करें या करें तो कुरानकी न करें तो क्या मै अपनी जीभ कटवाकर प्रार्थना करूगा ? मेरा सिर भले चला जाय, पर मै प्रार्थना छोडनेवाला नही हू। जो इस तरह प्रार्थना रोकते है वे हिंदू धर्मको बढाते नही है, काटते है। ऐसा करनेवाले कल दो-तीन ही थे, आज ज्यादा है।

आज जो बात मैने सुनी वह मुझे खटक रही है—मै चाहता हू वह बात सही न हो—वह यह कि ये जो अडचन डालनेवाले लोग है वे एक बडे सघके है।

परतु जो लोग रोज सवेरे यहा कवायद-व्यायाम करते है[1] और

---

[1] वाल्मीकि-मंदिरके पासके अहातेमें नित्य प्रातःकाल राष्ट्रीय स्वयसेवक संघके सैकडो युवक व्यायाम आदि करते हैं।

जो उनके मेम्बर है वे तो मुझसे मुहब्बत रखते है। अगर वे सब मुझे यहां रहने देना नही चाहते तो मेरा यहा रहना फिजूल हो जाता है। मुझे यहा रहना ही नही चाहिए, लेकिन उनके नेतासे मेरी वात हुई। उन्होने कहा कि हम किसीका कुछ विगाडना नही चाहते। हमने किसीसे दुश्मनी करनेके लिए सघ नही वनाया है। यह सही है कि हम लोगोने आपकी अहिंसाको स्वीकार नही किया है, फिर भी हम सब काग्रेसकी कैदमे रहने-वाले है। काग्रेस जवतक अहिंसाका हुक्म करेगी हम शातिसे रहेंगे। इस तरह उन्होने वडी मुहब्वतसे मीठी वाते की।

इतनेपर भी अगर आप मुझे रोक देते है तो फिर कलसे आप यहा न आए। मै इस तरहकी प्रार्थना करना नही चाहता। मै और ही किस्मका वना हुआ हू। मै हिंदू हू तो मुसलमान भी हू और सिक्ख तो करीव-करीव हिंदू ही है। मैने ग्रथ साहवको देखा है। उसमे काफी हिस्से ज्यो-के-त्यो हिंदू धर्मके है—उसी धर्मके, जिस धर्मका मै पालन करने-वाला हू। इसलिए आपसे अदवके साथ मेरी विनती है कि एक बच्चेके कहनेपर भी अगर मै प्रार्थना रोक देता हू तो आप शात रहिए। यदि आपको झगड़ा करके ईश्वरका नाम लेना है तो वह नाम तो ईश्वरका होगा, पर काम शैतानका होगा। और मै कभी शैतानका काम नही कर सकता। मै ईश्वरका ही भक्त हू।

आप इसे बुजदिली न समझें। जव आप वड़ी तादादमे होते और सब कहते कि प्रार्थना मत करो तो मै जरूर करता। तव मै कहता कि आप मेरा गला काटिए, मै प्रार्थना करता हू, पर यहा आप सवके वीचमे दो-पाच आदमी मुझे रोकना चाहते है। आप उन्हे दवा ले और मुझसे कहें कि प्रार्थना करो तो वह शैतानी होगी। और शैतानके साथ मेरी निभती नही। जो खुदाका यानी ईश्वरका दुश्मन है वह राक्षस है। उस राक्षसके साथ मेरी वन नही सकती। मेरा लडनेका तरीका तो राम-जैसा है। राम-रावण-युद्ध जव चल रहा था तव विभीषणने रामसे पूछा कि आप विना रथके है, आप कैसे लडेगे ? तव रामने सच्चाई, शौर्य आदि गुणोके आधारपर कैसे लडाई लडी जाती है यह वताया। राम ईश्वरका भक्त था, इसलिए वात भी वैसी ही करता था। उसको

मैंने भगवान नही माना है, भक्त ही माना है । फिर भक्तमेंसे वह भगवान बन गया । तुलसीदासने भी रामको अशरीरी बताया है । वह अशरीरी सबके शरीरमें भरा है । उसीको हम भजते हैं । मैं उस रामका पुजारी हूं । रावणकी पूजा मैं कैसे कर सकता हूं ? चाहे आप मुझे मार डाले, आप मुझपर थूकें, मैं मरते दम तक 'राम-रहीम,' 'कृष्ण-करीम' कहता रहूंगा। और फिर उस वक्त भी जब आप मुझपर हाथ चलाते होंगे तो मैं आपको दोष न दूंगा। मैं ईश्वरसे भी यह नही कहूंगा कि यह तू मेरे ऊपर क्या कर रहा है ? मैं उसका भक्त हूं। मैं उसका किया स्वीकार लूंगा।

लेकिन आज एक बच्चा कहेगा कि आप प्रार्थना न करें तो मैं न करूंगा। मैं चला जाऊंगा। आप शांतिसे बैठे रहे, बहस न करें। शांति भी प्रार्थना ही है, क्योंकि मेरी प्रार्थना जगतको दिखानेके लिए नही है। मेरी प्रार्थना मनकी शांतिके लिए है, दिलकी सफाईके लिए है। इस समय क्रोधभरे दिलमे प्रार्थना करनेमें दिलकी स्वच्छता नही हो सकती। इसलिए शांतिको ही प्रार्थना समझें।

अगर सब मिलकर मुझे दबाते है, प्रार्थना करनेसे रोकते है, और ऐसे मौकेपर मारके डरसे मैं प्रार्थना न करूं तो वह धर्म न होगा, अधर्म होगा। उससे दिलकी सफाई न होगी। फिर मैं नोआखालीके हिंदुओंके पास किस मुहसे जाकर कहूंगा कि आप डरिए मत, राम-नाम लेते रहिए। इसलिए मैंने कहा कि आप मेरा यह शांतिका तरीका समझें। सब मिलकर अगर रोकते है तो मैं प्रार्थना क्या कर सकता हू, पर राम धुन लेता रहूंगा, 'राम-रहीम, राम-रहीम' और लड़केके कहने-पर चला जाऊंगा।

अब मैं पूछता हू, मुझे 'हां' या 'न' में उत्तर दे। बहस न करें। मैं प्रार्थना करूं ?

करीब तीस आदमी खडे हो गए और हवामे हाथ हिलाते हुए बोले—मत कीजिए प्रार्थना। हम नही चाहते आपकी प्रार्थना।

गांधीजी—अच्छा, तो सब मुखालिफ है ?

करीब सौ-दो-सौ लोगोकी आवाज आई—नही, सब मुखालिफ नही है। आप जरूर प्रार्थना कीजिए।

गाधीजी—नही, ये बहुत हाथ है। मै हार गया और आप जीत गए। कल और भी लोग हाथ उठाइए। इस वक्त भी आपकी तादाद बहुत काफी है। मै अब प्रार्थना कर सकता हू, पर इस समय मै आपके हाथो मरना नही चाहता। मुझे अभी काम करनेके लिए जिंदा रहना है।

लोग—सब नही है, थोड़े है।

गाधीजी—ठीक है, ज्यादाके आनेकी जरूरत नही है। इतने भी चाहे तो मुझे मार सकते है।

इसके बाद दोनो तरफकी आवाजें बढी और बहुत शोर होने लगा। गाधीजी मचके किनारे खड़े होकर कहने लगे :

"सुनिए, ऐसा गुस्सा मत कीजिए। आप हिंदू है। हिंदूको चाहिए कि वह खामोशीसे सोचे, खूब विचारे और समझकर बोले। आप घर लौट जाइए और सोचिए कि पजाबका जख्म कैसे मिट सकता है। मै भी शक्तिभर सोच रहा हू, पर गुस्सा करनेसे तो वह जख्म भरनेवाला नही है।"

इतना कहकर गाधीजीने भाषण समाप्त किया, पर भीडमेसे आवाज आई, "एक प्रश्नका उत्तर देते जाइए। आपने नोआखालीमे रामधुन कैसे बद कर दी थी?[१] आप यहा भी बद कीजिए। अपनी कोठरीमे बैठे प्रार्थना कीजिए।"

गाधीजी—मै यहापर कुछ जवाब नही देना चाहता। आप अब जाए और बाहर जाकर भी न लडे।

गाधीजी इसके बाद जाने लगे। इस बीच पुलिसने व्यवस्था कायम करनेका प्रयत्न किया। इसपर सभामे गड़बड शुरू हो गई। तब

[१] नोआखालीमें किसी भी प्रार्थनामें रामधुन बंद नहीं हुई थी। हा, रामधुन होनेपर कुछ मुसलमान भाई उठकर चले गए थे। प्रार्थना नही रुकी थी।

गाधीजी फिर मचके किनारेपर आए। लोगोंने उनसे कहा कि आप प्रार्थना कीजिए। शोर मचानेवालोको हम शात किए देते है। सब बैठ जायेंगे। आपके साथ हम सब मरनेको तैयार है। आप प्रार्थना न छोडे।

गाधीजीने कहा—आप मरे तो मेरी शर्तसे मरे, अपनी शर्तसे नही। मरनेका इल्म मै जीवनभर सिखाता आया हू और सीख रहा हू। मरना हो तो इस तरह गुस्सेमें खौलते हुए नही मरना चाहिए। ठडी ताकतसे मरना चाहिए। इस समय ये लोग गलतफहमीमे है। वे समझते है कि गाधी ही यह सब कुछ बिगाडता फिरता है। इसलिए इस वक्त तो शातिको ही मेरी प्रार्थना समझिए। मै जानता हू कि पजाबके कारण सबका खून उबल रहा है। क्या मेरा खून नही उबल रहा है? मेरे दिलमें भी तो आग धधक रही है। मै पजाबकी समस्या सही-सही समझता हूं। पजाबी सब मेरे भाई है। वे इस समय गुस्सेमे है। उन्हे शात होना चाहिए। बिहार भी गुस्सेसे भर गया था। उसका गुस्सा मैने रोका है। इस समय गुस्सेको रोककर ही हम आगे बढ सकते है।

उन दो-चार आदमियोको पुलिस हटा ले गई है। उनको हटाने-के बाद मै कैसे प्रार्थना कर सकता हू? वे सब यहा फिर आवे, शातिसे बैठे और तब हम सब मिलकर प्रार्थना करें।

और इस समय जो चल रहा है उसे रोकनेकी बात सोचनेमें ही तो मै शक्ति खपा रहा हू। क्या मै वाइसरायके पास खाना. खानेके लिए जाता हू? हम दोनो मिलकर इसमेंसे रास्ता निकाल रहे है। इस सारी गडबडको रोकनेके लिए मुझसे ज्यादा वह परेशान है और उन्हे परेशान होना भी चाहिए। आखिर मै फिर कहता हू, आप शात हो जाइए। शाति ही प्रार्थना है। उनको जबरन रोका जाय, यह मुझे नही सुहाता।

इतना कहकर गाधीजी जाने लगे तो तीसरी बार लोगोने फिर उन्हे रोका और कहा, "आप उन थोडेसे आदमियोकी बात क्यो सुनते है, जो बेकार रोडा अटका रहे है? असलमे उन लोगोने कुछ भुगता भी नही है। हम लोग है, जिन्होने पजाबमें भुगता है, जिनके ऊपर सितम

ढाया गया है। हम तो आपको नही रोकते। हम आपसे विनती करते है कि आप प्रार्थना कीजिए। थोडी-सी ही सही।"

गाधीजी—आपकी बात तो सही है, पर उन लोगोको समझनेका मौका देना चाहिए।

लोगोने कहा—आप हमारे सवालका जवाब देगे ?

गाधीजी बोले—आप सोचें तो सही, मै बुड्ढा आदमी हू। क्या मै खडे-खडे बात करने लायक हू ? वाइसराय तकसे मै माफी चाहता हू कि मुझे खड़े रहकर बोलनेको वह न कहे। मुझमे इतनी ताकत कहा है ? पर ईश्वर मुझे बुलवाता है। वह शक्ति दे देता है। आजकल मुझे खूनका दबाव भी रहता है। तब भी वह मेरी गाड़ी खीचे ले जा रहा है। कल अगर कोई मुखालिफ नही होगा तो मै और बाते करूगा।

जो इस मुखालिफतकी जड़मे है वे मुझे मिले तो सही। अगर वे यही चाहेंगे कि मै यहा न रहू तो मै चला जाऊगा। मुझे तो अपने यहा रहनेके लिए बहुत लोग बुला रहे है; पर मै भगी हू और भगीखानेमे पडा हू। मुझे तो यहां इतनी जगह भी मिल गई है। उनके पास छोटे घुल्लक (दरबे) है। मुझसे वह बर्दाश्त नही होता। मुझे सफाई चाहिए। ईश्वर ताकत दे देगा तो मै उन घुल्लकोमे ही रहने लगूगा।

ईश्वर सबका भला करे और भारतको आजादी दे !

## : ४ :

### ४ अप्रैल १९४७

"भाइयो और बहनो,

क्या आज भी आप लोगोको वही करना है जो आपने कल या परसो किया था, या आज शान्ति रहेगी ?"

चारो ओरसे आवाजे आई—आज शाति है। आज कुछ न होगा। आप प्रार्थना कीजिए।

गाधीजीने दुबारा पूछा—आप लोगोंने अपनी आवाजमें एक-दोकी आवाजको दबा तो नही दिया ? एक भी आदमी ऐसा तो नही है, जो विरोध करना चाहता हो ?

सामने एक हाथ ऊपर उठा था। गाधीजीने कहा—ठीक है। तब आज भी प्रार्थना नही होगी। एक आदमी भी जबतक समझता नही है या यहासे उठकर अपने आप चला नही जाता तबतक मैं प्रार्थना नही करूगा। अगर सिपाही लोग उसे पकडकर ले जाये तो वह तो कोई बात नही हुई। बहुत-से आदमियोंको मिलकर इस तरह थोडेसे आदमियोंको दबाना नही चाहिए। थोडे आदमी भी अगर खिलाफ रहते है तो उन्हे समझाना चाहिए। जहा कोई बात उन्हे पसद नही, वहासे उन्हे उठ जाना चाहिए। उन्हें रुकावट नही डालनी चाहिए। अगर यह बात इस एक आदमीकी समझमें आती है तो वह उठकर चला जाय तब मैं प्रार्थना कर लूगा, या वह शान्तिसे प्रार्थनामें बैठे।

एक पडितजी उठकर गाधीजीके पास आए और बहुत शाति और विनयके साथ बोले, "आज आप प्रार्थना करके ही जाइए। आप हमारे महान् नेता है। आपकी प्रार्थना इतने दिनोसे रुक रही है, यह इस दिल्लीकी बहुत बडी बदनामी है। मै आपसे केवल एक मिनट चाहता हू।"

गाधीजीने उनको बोलनेकी इजाजत दे दी। पडितजीने लोगोको समझाया और शान्ति रखनेकी अपील की। इसके बाद उन्होने गाधीजीसे प्रार्थना शुरू करनेके लिए अनुरोध किया। सब लोग शान्त रहे।

गाधीजीने फिर पूछा—अब आप सब शान्त है ? वह भाई चला गया जो प्रार्थना नही चाहता था ? मैं सबसे कहूगा कि उस भाईको हमारी ओरसे डराना या धमकाना नही चाहिए। अगर सिपाही उसे ले जाता है तो उस बेचारेका क्या होगा ! वह अपनेको कैसा भी समझे, मैं तो उसको बेचारा ही कहूगा। अगर उसकी रक्षा मैं नही करूगा तो और कौन करेगा ? एक आदमी अगर अपनेको हिंदू बताता है या अपनेको मुसलमान बताता है और मुझे प्रार्थनासे रोकना चाहता है तो उसपर आक्रमण क्या करना !

वह कहता है कि आप इस मदिरमे प्रार्थना मत कीजिए। लेकिन मदिर तो मेहतरोका है। मेहतर भाई मेरे पास आकर रोते है कि हमारे मदिरमे आकर ये दूसरे लोग ऐसी बाधा क्यो डालते है? इन छोटे भाइयोको मै क्या दिलासा दू? मै उनका बडा भाई हू। मै आला भगी हू। मै बाहरकी सफाई करता हू, बाहरके पाखाने उठाता हू, लेकिन हमारे सबके दिलमे भी मैला भरा हुआ है। असली भगीको भीतरकी भी सफाई करनी होती है, जो मै कर रहा हू। अगर इस मैलेको हमने अपने दिलसे नही निकाला, अगर ऊच-नीचकी यह बात हममेंसे नही हटी तो हिंदू धर्म बचनेवाला नही है। आजतक यह बचा हुआ है, क्योकि यह बहुत बडा धर्म है। वह मरते-मरते भी टिका है। फिर भी अगर हमने ऊच-नीचका भाव न छोडा तो यह बडा होनेपर भी कमजोर हो जावेगा। मेरी इस बातका डा० मुजेने समर्थन भी किया है। उन्होने चिट्ठी लिखी है कि मै आपकी और बाते तो मानता नही हूं—मै तलवारकी तालीम मानता हू—पर छुआछूत और ऊच-नीचके इस भेदको मिटानेमे पूरा-पूरा आपके साथ हू।

इसलिए जो मेरी प्रार्थनाका विरोध करते है, वे हिंदू धर्मको मार रहे है। उन्हे समझना चाहिए कि मै जितना हिंदू हू, उतना ही पारसी हू, ईसाई हू, मुसलमान भी हू। 'ओज अबिल्ला'का अर्थ भी कितना सुदर है। मैने तो यजुर्वेद नही पढा है, लेकिन एक भाईने लिखा है कि इनमे सारी बाते वे ही है जो यजुर्वेदमे है। फिर आप लोग इसका विरोध क्यो करे? धर्मकी बातें अरबीमे हो, सस्कृतमें हो या चीनी भाषामे हो, सब अच्छी ही है। इसलिए मै उस भाईसे पूछूगा कि वे इसे समझ गए है या नही?

अगर वे हिंदू नही है, गैर मजहब है, तो प्रार्थनामें न आवे। मुसलमान थोडे ही आते है। मुसलमान भी मुझसे कहते है कि तुमको क्या हक है कि तुम कुरानकी आयत बोलो। फिर भी नोआखालीमे उन्होने मुझे नही रोका। क्या वे रोक नही सकते थे?

लेकिन हिंदू धर्मंमे किसीको शिकायत नही हो सकती। हमारे यहा १०८ उपनिषद् है। उनमें एक उपनिषद्का नाम 'अल्लोपनिषद्' है।

यही तो हिंदू-धर्मकी खूबी है कि वह बाहरसे आनेवालोको अपना लेता है। लेकिन उसमें जो कमी है वह है अस्पृश्यता या ऊच-नीचका भेद। यह जहर उसमे फैल गया है। उसके निकल जानेसे ही वह बचेगा। ये लोग तलवारसे हिंदू धर्मको बचानेकी बात करते है। ये तलवार लेकर कवायद करते हैं। यह सब क्यो? मारनेके लिए? इस तरह हिंदू-धर्म बढ़नेवाला नही है।

सत्यसे ही धर्म बढता है और यह बात तो मैंने हिंदू-धर्ममे ही सीखी है। 'सत्यान्नास्ति परो धर्म' और 'अहिंसा परमो धर्म' भी हिंदू-धर्मने सिखाया है। भगवान पतजलि है जिन्होने अहिंसा, अपरिग्रह, अस्तेय, ब्रह्मचर्य आदि पाच व्रतोको हिंदू-धर्ममें विज्ञानका स्थान दिया। और धर्मोमें भी ये बातें है, लेकिन इनका विज्ञान हिंदू-धर्मने ही रचा है।

( इसके बाद गाधीजीने दक्षिण भारतके हरिजन सत नन्दनार और अवाईमाईकी कहानी सुनाते हुए बताया कि अवाईमाईके पैर किसी देवमदिरके सामने थे। तब कोई हिंदू उससे झगड़ने लगे। अवाईमाईने उससे कहा कि भैया, जिधर भगवान नही है उधर मेरे पैर कर दो। जहा-जहा पैरोको घुमाया गया, वहा तो भगवान थे ही।)

पत्थरकी मूर्ति पूजाका एक तरीका ही तो है और दिलमें भगवान हैं तो फिर चाहे पैर किधर भी हो। पैरोसे आदमी पूजा भी कर सकता है और लात भी मार सकता है। अगर कही ज्वालामुखी-सी आग धधक रही हो तो वह पानीसे बुझ नही सकती। उसे मै पत्थरसे दबाऊं और उसके ऊपर खड़ा होकर लाखो आदमियोकी जान बचा लू तो वह पत्थरसे और पैरोसे ईश्वरकी पूजा ही तो हुई। पूजा पैरसे हो सकती है, हाथसे हो सकती है और जिह्वासे हो सकती है। पूजाका तरीका कुछ भी हो, पूजा सच्ची होनी चाहिए।

इसलिए अगर वह भाई यहा है तो मै उससे विनय करना चाहता हू कि वह आरामसे प्रार्थना करने दे।

इतना मै बता देना चाहता हू कि उन बालकोपर मुझे जरा भी रोष नही है। उनपर गुस्सा क्या करू? गीता गुस्सा करना नहीं

सिखाती। और मै तो दक्षिण अफ्रिकासे ही प्रार्थनामें गीताके श्लोक बोलता आया हूं। मैने वहीसे गीताकी इस भलाईकी सीखको अपना लिया हैं और उसे लेकर यहा आया हू। जो इसका विरोध करते हैं वे समझते नही हैं कि हिंदू-धर्म क्या चीज है। न समझकर हैवानका काम करते है और भगवानको भूल जाते हैं।

इसके बाद सब चुप हो गए और गाधीजीने शातिपूर्वक प्रार्थना की। आजका भजन था 'हरि तुम हरो जनकी पीर', और रामधुन

रघुपति राघव राजाराम। पतितपावन सीताराम॥
ईश्वर अल्ला तेरे नाम। सबको सन्मति दे भगवान॥
शातिविधायक राजाराम। पतितपावन सीताराम॥
रघुपति राघव राजाराम। पतितपावन सीताराम॥

प्रार्थना समाप्त हो जानेके बाद गाधीजीने कहा—

मै ईश्वरका बडा अनुग्रह मानता हूं कि आज चौथे रोज उसने शांतिके साथ हमे प्रार्थना करने दी। और यह भी कहता हू कि पिछले तीन दिन प्रार्थना नही हुई, ऐसा कोई न माने। जब आप यहां आए, मै यहा आया और हम सब शात रहे तो वह प्रार्थना ही थी, क्योकि हमारे दिलोमें प्रार्थना थी।

फिर जिन भाइयोने दखल देनेकी कोशिश की उनका भी मुझपर उपकार हुआ है। मै उनका धन्यवाद मानता हू, क्योकि मुझे अपना दिल देखनेका मौका मिला। इस तरह प्रार्थनाके बारेमे अपना अतर जांचनेका मौका मुझे पहले नही मिला था। मुझे अपने भीतर यह टटोलना पडा कि मैं कहां हू। मेरे अदर उन लोगोपर रोष तो नही है। मेरी प्रार्थनामे कही दूसरी बात तो नही है। भगवान तो तरह-तरहसे अपने भक्तकी परीक्षा लेना चाहता हैं। और आखिर वह हरिजनकी पीडा हरता है, जैसा कि अभीके भजनमे आपने सुना। इसपरसे हमें यह शिक्षा लेनी है कि हमपर जो कुछ बीतता है वह भगवानकी नियामत ही होती है। भगवानकी कृपा है, जो मै आज इस परीक्षामें उत्तीर्ण हुआ हू।

उस भाईको भी, जो शास्त्रीजीके कहनेपर समझ गया, धन्यवाद।

भगवानने और कठिन कसौटीसे मुझे बचा लिया है। एक बार प्रार्थना शुरू कर देनेके बाद अगर चार ही आदमी मुझसे कहते कि प्रार्थना मत करो तो मैं उनसे कहता, 'आप मेरा गला काट सकते हैं, मैं 'राम-रहीम, राम-रहीम' करता रहूगा और उस समय भी अपने दिलमें रोष न लाकर, अभी जैसे धुनमें कहा गया है, दिलमें सोचूगा—'भगवान इन्हे सन्मति दे।'

आपको नोआखालीकी एक बात बता दूं। वहा बडे कष्टसे राम-धुन शुरू हुई। मैं जो यात्रा करता था उसमें प्रारम्भमें रामधुन होती थी और जहा पहुच जाते थे वहा ग्राम-प्रवेशके समय भी रामधुन होती थी। हम वहा लोगोको बताते थे कि राम, रहीम, खुदा, ईश्वर सभी भगवानके नाम है, बल्कि उसके तो दस करोड नाम हैं।

और 'औज अविल्ला'का अगर मैं अर्थ सुनाऊ तो आपको पता तक नही चलेगा कि यह अरबीसे लिया गया है। तो क्या मैं अरबीमें प्रार्थना करू, यह गुनाह हो जायेगा? आप लोग हिंदू-धर्मको इस तरह निकम्मा न बनाइए। यह धर्म बहुत बडा धर्म है, बहुत पुराना धर्म है। लोकमान्य तिलकने इसे १० हजार वर्ष पुराना धर्म बताया है, पर मेरी समझसे यह लाख बरससे भी ज्यादा पुराना है। यह अनादि है। वेदमें जो बाते बताई है वे धर्मका निचोड है और धर्म मनुष्य प्राणीके धर्मके साथ-साथ पैदा हुआ है। इसलिए वेद अनादि है। और ये बातें जब मनुष्योने जानी तबसे कठस्थ रखी। बहुत दिनो बाद ये लिखी गईं, क्योकि मनुष्यने लिखना बादमें सीखा। उन लिखी हुई बातोमेंसे भी बहुत-सी गायब हो गई है। बाइबिलका भी इस तरहसे बहुत सारा हिस्सा विस्मृत हो गया है। कुरानका भी ऐसा ही हुआ है। बाइबिलके जानने-वाले कई लोग कहते हैं कि उसमें काफी क्षेपक है। इस तरह शास्त्र अनत है। शास्त्रोका यानी वेदका निचोड इतना ही है कि ईश्वर है और वह एक ही है। कुरानका और बाइबिलका भी यही निचोड है। कोई यह न कहे कि बाइबिलमें तीन भगवान बताए हैं। वहा भी भगवान एक ही है।

मै वाइसरायके पास वार-वार जाता हू। वहा काफी समय दे रहा हू, पर वह समय व्यर्थ नही जाता। वहा विहार, पजाव, नोआखाली सभी जगहका काम कर रहा हू। मेरे सामने मेरा छोटे-से-छोटा काम भी वडे-से-वडेके वरावर ही होता है। मेरी दृष्टिसे अणु-परमाणुमे जो है, वही ब्रह्माडभरमे है—'यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे'। इसी सूत्रका मै माननेवाला हू। पजाव और विहार या नोआखालीको छोडकर मै हिदुस्तानका कुछ काम नही कर सकता। मेरे लिए हिदुस्तान उन्ही-जैसी जगहोमे है।

आज वहुत-सी वाते आपको समझाई गई है। यह अच्छा लगा है। आपकी शातिके लिए धन्यवाद।

## : ५ :

## ५ अप्रैल १९४७

"भाइयो और वहनो,

"दु खकी वात तो है, लेकिन अभी दो-चार दिनतक मुझे पूछना ही पडेगा कि कुरानकी आयत पढनेके वारेमे किसीकी ओरसे शिकायत तो न होगी ? अगर होगी तो उसमे न आपका फायदा है, न धर्मका। जैसे अनेक नाम होनेपर भी ईश्वर एक ही है, वैसे ही अनेक नाम होते हुए धर्म एक ही है, क्योकि सारे धर्म ईश्वरसे आए है। अगर वे ईश्वरसे नही आए है तो वे निकम्मे है। जो धर्म ईश्वरका नही है वह शैतानका है और वह किसी कामका नही हो सकता। इसलिए आप समझ ले कि जैसा तीन दिनसे होता रहा है वैसा ही चलेगा तो धर्मका नाश हो जायगा।

"अगर मै हिदू हू तो कुरान क्यो नही पढ सकता ? जेन्दावस्ता क्यों नही पढ सकता ? और हिदूकी प्रार्थनामे भी तो भेद कम नही है। कोई कहेगा, वेद नही उपनिषद् कहो, उपनिषद् नही गीता कहो, यजुर्वेद नही अथर्ववेद कहो। यानी सभी अपने-अपने ढगकी प्रार्थना करनेके

हकदार है । यदि आप मुझे रोकना चाहे तो मै आज भी खुद हार मानकर आपको जितानेको तैयार हू । यदि आपमेंसे कोई चाहें तो मुझे वह जहरका प्याला दे सकते है । कोई देगा तो मै उसे खुशी-खुशी पीना चाहूगा और आप भी उसे सहन कीजिए । आपको पीना नही है, पर आप उसके साक्षी बने । आप गुस्सा न करें और अपने दिलमे समझें कि यह बुड्ढा जो गम खा रहा है वह ठीक ही कर रहा है ।

"आप लोग इतनी सख्यामें आए है, यह अच्छी बात है, पर आपमेंसे एक आदमी भी 'ओज अबिल्ला' का पाठ न चाहेगा तो मै प्रार्थना छोड दूगा और आपको शातिसे लौट जाना होगा।"

लोगोके विश्वास दिलानेपर सारी प्रार्थना शातिपूर्वक हुई । अनतर गाधीजीने प्रवचन करते हुए कहा :

आप लोगोने जो इतनी शाति रखी इसके लिए आपको धन्य-वाद है । पहले इतनी शाति नही हुआ करती थी । इससे साफ है कि पिछले तीन दिन जो हुआ उससे हमने धर्म नही खोया है । यदि आदमी शातिसे न रहे, कभी अपने विचारोको भीतरसे न देखे, जीवनभर दौड-दगलमे ही रहे और हर वक्त गरम बना रहे तो वह उस शक्तिको पैदा नही कर सकता, जिसे शौकतअली साहब 'ठडी ताकत' कहा करते थे। मुहम्मदअली साहब भी कहते थे कि हमे अग्रेजोसे लडकर स्वराज्य लेना है और हमारी लडाई होगी तकलीकी तोपोसे और कुकडियोके गोलोसे। वह तो जितना विद्वान था, उतना ही कल्पनाए दौडानेवाला था ।

और यह सब आपकी दिल्लीकी ही बात है । उन दिनो मै सेंट स्टीफेंस कालेजमें रुद्र साहबके घर टिका हुआ था । आजकल तो वह कालेज कही बडे मकानोमे चला गया है, पर उस पुराने कालेजमे ही पहली बार मै मौ० अबुलकलाम आजादसे मिला था। प्रो० अब्दुल बारी भी वहीपर मिले थे । और भी कई बडे-बडे मौलानाओसे मेरी मुलाकात हुई और वहीपर यह बात काफी बहस-मुबाहिसेके बाद तय हुई कि खिलाफतके मामलेमे काग्रेस तभी साथ दे सकती है जब खिला-फतका सारा काम अमनसे होगा । सबने ईश्वरको हाजिर-नाजिर

करके यह ठहराया था कि खिलाफतका कोई काम बगैर अमनके न होगा। वहा ईश्वर यानी खुदाकी कसम लेनेकी बात थी । ईश्वर और खुदामे भेद न था । उस दिन जो यह काम किया गया उसका ही यह अच्छा नतीजा आज हम पाने जा रहे है ।

यह बात मैने इसलिए बताई कि कलसे राष्ट्रीय सप्ताह शुरू हो रहा है। कलके ही दिन हिंदुस्तानने अपने आपको पहचाना। हिंदुस्तानने तब जाना कि वह इस दिल्ली या बबई या लाहौरमे नही है, बल्कि सात लाख देहातोमे बसा हुआ है । अगर कल कोई जबरदस्त भूकप हो जाता है और सारे शहरोकी तमाम आबादी नेस्तनाबूद हो जाती है तब भी हिंदुस्तान नही मरेगा । शहरोकी कुल मिलाकर दो करोडकी आबादीके खतम हो जानेके बाद भी अडतीस करोड देहाती, जो सात लाख गावोमे है, बने ही रहेगे । पटनामे इतना भारी भूकप हुआ तब भी बिहारके बडे-बडे शहरोको ही हानि हुई, छोटे-छोटे देहात बच ही गये। हा, गीताके ग्यारहवे अध्यायमे बताया हुआ विराट् ईश्वर सबको निगलना चाहे तब तो कोई भी न बच सकेगा । फिर भी यह स्पष्ट है कि हिंदुस्तानका जीवन देहातोके जरिये ही है ।

ये सात लाख देहात सन् १९१९ के अप्रैलकी छठी तारीखको अचानक जाग्रत हो उठे थे । जब पांच अप्रैलको मैंने ऐलान निकाला था तब मुझे सपनेमें भी खयाल नही था कि हिंदुस्तान इतना जग उठेगा। उस दिन मै आपके आजके मिनिस्टर राजगोपालाचार्यजीके यहा सेलम-मे था। दिनभर मै सोचता रहा कि सत्याग्रह शुरू कैसे किया जाय। श्रीविजयराघवाचार्य—जो आज इस दुनियामे नही रहे है—और दूसरे लोग भी वही मिले। मुझे जब विचार आया, मैंने महादेवसे—वह भी आज उठ गया है—कहा कि राजाजीको बुलाओ। राजाजी सहमत हुए और हमने अपील निकाल दी। इतनेपरसे ही हिंदुस्तान इतना जग उठा कि मै तो हैरान हो गया। उन दिनो काग्रेसके पास न स्वयसेवक दल थे, न सदेशवाहक; फिर भी मानो बिजली दौड गई।

हमने छठी अप्रैलको उपवास और प्रार्थना करनेके लिए कहा था। हिंदुओका उपवास तो छत्तीस घटेका होता है, पर मुसलमान २४ घटेका

रोजा ही कर सकते है । हिंदू भी २४ घटेका प्रदोष करते है। हमने भी यही २४ घटेका उपवास ठहराया ताकि हिंदू-मुसलमान दोनो ही कर सकें । इसमें अन्न, दूध, सब्जी कुछ नही लिया जाना चाहिए। भरपेट पानी पी सकते है । मेरे-जैसे बूढे व कमजोर फल ले सकेंगे, ऐसा मैंने उस दिन कहा था । पर आप कल जब फाका करें तब पेट भरनेवाले केले-जैसे फल न ले। ऐसा करना तो मेरी माता जैसे मुझे फलाहार करवाती थी और दिनभर कूटकी पूरी और गुलाबजामुन आदि खिलाती थी वैसी ही चीज हो जायगी। मै अपनी माकी तरह आपका लाड करना नही चाहता। जो निरा उपवास बर्दाश्त न कर सकें वे फलका रस ले सकते है।

छटी अप्रैलका खास सदेश है हिंदू-मुस्लिम ऐक्य, खादी और देहातका काम, पर आज इसे कौन करेगा? आज हिंदू-मुस्लिम ऐक्य है तो मेरे हृदयमे है । चर्खा भी मेरे ही पास पडा है । अगर आप लोग भी इसे अपनाना चाहे तो कल अपनाइए । ऐसा करनेके लिए आपको पुरानी बाते भूल जानी चाहिए । भले ही पजाबमें मुसलमानोने और बिहारमे हिंदुओने कितना भी आक्रमण किया, दोनो ही इस बातको भूल जाए और भाई-भाई बननेकी बात सोचें । अगर ऐसा नही करेंगे तो क्या आप यह प्रार्थना करेंगे कि हे भगवान, हमको वैसा ही दीवाना बना दो जैसा बिहार या पजाबमे लोग बन गए थे? क्या ऐसा करके आप अपनेको और धर्मको बचा लेंगे? इसीलिए आप उपवास तभी करें जब आपके दिलमें सन् १९१९ की बात कायम हो, और वह तभी कायम हो सकेगी जब आप अमन और शाति धारण करेंगे।

शाति कैसे आएगी? आप रोज एक, घटा चर्खा कातिए और आपको शाति न मिले तो मुझसे कहिए। भावनगरकी कौंसिलके प्रमुख और भारत-मत्रीकी कौंसिलके मेंबर पट्टणी साहबको जब सैकडो नुस्खोसे नीद नहीं आती थी तो रातको एक घटा चर्खा कातनेपर आ जाती थी।

शातिमे ही हिंदू-मुस्लिम एकता कायम हो सकेगी । मैं जानता हू कि यह बडा कठिन काम है। हमारे दिलमें ज्वालामुखी दहक रहा हो तब भी ठडा रहनेमें हमारी अहिंसाकी परीक्षा है।

और शांति रखनेसे अगर सब मर भी जायगे तो क्या बिगडेगा? अगर मुसलमान मुझे मार भी डालेगा तो मेरा भाई ही तो होगा। अगर हमने शांति नही रखी और जबरन देशको एक बना रखा तो वह पाकिस्तान हमारे मनमे भर जायेगा। और जब पाकिस्तान हमारे दिलमे रहेगा और हम किसी भी तरह अपने भाइयोके साथ अमनसे रहनेको तैयार न होगे तो मै आगाह करता हू कि हिंदुस्तान आजाद रह ही नही सकेगा।

हा, पाकिस्तान एक तरह अमृतमय हो सकता है। लेकिन उसके लिए पिस्तौल, भाला, तलवार क्यो होनी चाहिए ? इस तरह जबर-दस्तीका पाकिस्तान तो जहरीला होगा। ऐसा जहर हम सबको क्यो खिलाएं ? दूसरोके दिलोमे जहर पैदा न करू, अपने दिलमे भी जहर न रखू, और सबसे लडाई ले लू और लडते-लडते मारे जानेपर भी परवा न करू तब वह पाकिस्तान अमृतमय होगा और वैसा ही अमृतमय हिंदुस्तान होगा। अमृतमय हिंदुस्तान वह है जो केवल हिंदूका नही है; पर साथमे मुसलमान, पारसी, ईसाई और सिखका भी उतना ही है जितना हिंदुओका। और अमृतमय पाकिस्तान भी वही है जिसमे सभी कौमो-के लिए जगह हो और किसीके बारेमें वहा जहर न हो। चूकि मै ऐसे ही हिंदुस्तान और पाकिस्तानका माननेवाला हू, इसलिए जब गायत्री और गीता पढना चाहूगा तब 'ओज अबिल्ला' भी बोलूगा। आज एंड्रूज साहबकी सातवी पुण्य-तिथि है। उनके गुणोको हमें याद करना चाहिए। उनका जीवन बहुत सादा था। हम दोनो घने मित्र रहे है। उनकी चमडी गोरी थी, लेकिन वह इतने सादे थे और देहा-तियोसे मिलते-जुलते थे कि वह अंग्रेज है, ऐसा पहिचानना कठिन हो जाता था। उनको कपडे पहननेका भी शऊर न था। मोटेसे बदनपर ढीली-ढाली धोती किसी तरह लपेट लेते थे। उनको ऊपरके दिखावेसे काम न था। उनका दिल सोनेका था।

## : ६ :

### ६ अप्रैल १९४७

भाइयो और बहनो,

जब मैं यह भजन[1] और धुन[2] सुन रहा था तब नोआखाली-यात्राके समयका सारा दृश्य मेरी आंखोंके सामने ताजा हो आया। वहां-पर यही मंडली और यही भाई-बहन थे जो प्रातःकाल यात्रा शुरू होने-पर पहले आध मीलतक चलते थे।

मुझे जो कहना है वह तो एक ही बात है कि हमें अपनी भलाई नहीं छोड़नी चाहिए। अगर सब-के-सब मुसलमान मिलकर हमें कह दें कि हम हिंदुओंके साथ किसी भी किस्मका वास्ता नहीं रखना चाहते, उनसे अलग रहना चाहते हैं तो क्या हमें गुस्सेमें भरकर मारकाट शुरू कर देनी चाहिए? अगर हमने ऐसा किया तो चारों ओर ऐसी आग फैल जायगी कि हम सब उसमें भस्म हो जायंगे, कोई भी नहीं बचेगा। अंधाधुंध लूट-खसोट और आग जलानेसे देशभरमें बरबादी ही फैलेगी। मैं तो कहूंगा कि बाकायदा जो योद्धा लोग लड़ते हैं उससे भी विनाश ही होता है, हाथ कुछ भी नहीं आता।

हमारे महाभारतमें जो बात कही गई है वह सिर्फ हिंदुओंके कामकी ही नहीं है, दुनियाभरके कामकी है। यह कथा पांडव-कौरवकी है। पांडव रामके पुजारी यानी भलाईके पूजनेवाले रहे और कौरव

---

[1] बले बले बले सबे शत वीणा वेणु रबे,
भारत आबार जगत सभाय, श्रेष्ठ आसन लबे।
धर्मे महान् होबे कर्मे महान् होबे।
नव दिन मणि उदिबे आबार॥

"सैकड़ों बंसरीकी मधुर ध्वनिसे आज सब मिलकर बोलो कि विश्व-सभामें इस बार भारत उच्च आसन ग्रहण करेगा। वह धर्मसे और कर्मसे महान् बनेगा। इसके प्रांगणमें नया सूर्य जगमगाएगा।"

[2] भज मन प्यारे राम रहीम, भज मन प्यारे कृष्ण करीम।

रावणके पुजारी यानी बुराईको अपनानेवाले रहे, वैसे तो दोनो एक ही खानदानके भाई-भाई थे। आपसमे लडते हैं और अहिंसा छोडकर हिंसाका रास्ता लेते हैं। नतीजा यह कि रावणके पुजारी कौरव तो मारे ही गए, पर पाडवोने भी जीतकर हार ही पाई। युद्धकी कथा सुननेभरको इने-गिने लोग बच पाए और आखिर उनका जीवन भी इतना किरकिरा हो गया कि उन्हे हिमालयमें जाकर स्वर्गारोहण करना पडा। आज हमारे देशमें जो चल रहा है, वह सब ऐसा ही है।

आजसे राष्ट्रीय सप्ताहका आरभ हुआ है। मै मानता हू कि आप लोगोने चौवीस घटेका व्रत रखा होगा और प्रार्थनामय दिन विताया होगा।

आज तीसरे पहर तीन बजेसे चार बजेतक यहां चर्खा-कताई भी की गई, जिसमें राष्ट्रपति,[1] उनकी पत्नी, पडित जवाहरलाल नेहरू, आचार्य जुगलकिशोर और दूसरे भी बहुतसे थे, जिनके नाम मैं कहातक गिनाऊ! इस तरह कताई-यज्ञ पूरी शक्तिसे और खूबसूरतीसे पूरा हुआ और अब यहासे जानेके बाद आपका उपवास भी खत्म हो जायगा, परतु कितना अच्छा हो यदि राम-रहीमके शब्द तथा उक्त भजनका सदेश सदाके लिए सबके दिलोपर अकित हो जाय! लेकिन यह सब आज तो हिंदुस्तानके लिए स्वप्नवत् हो गया है। मेरे पास तार और खत बरस रहे है, जिनमे गालियां भरी रहती है। इससे पता चलता है कि कुछ लोग मेरे विचारोको कितना गलत समझते है। कुछ यह समझते है कि मै अपनेको इतना बड़ा समझता हू कि लोगोके पत्रोके उत्तर नही देता तथा कुछ मुझपर यह आरोप लगाते है कि पजाब जब जल रहा है तब मैं दिल्लीमे मौज उडा रहा हू। ये लोग कैसे समझ सकते हैं कि मै जहां कहीपर भी हू उन्हींके लिए दिन-रात काम कर रहा हू। यह ठीक है कि मै उनके आसू न पोछ सका। केवल भगवान ही ऐसा कर सकता है।

---

[1] आचार्य कृपलानी।

ख्वाजा अब्दुलमजीद आज मुझसे मीठा झगडा करनेके लिए आए थे। वह अलीगढ यूनिवर्सिटीके ट्रस्टी है। उनके पास काफी वडी जायदाद है, फिर भी उनका मन तो फकीर है। मै जब वहा जाता था उन्हीके यहा खाना खाता था। उस जमानेमे स्वामी सत्यदेव—परिव्राजक—मेरे साथ रहते थे। उन्होने हिमालयकी यात्रा की थी। ईश्वरने आज उनकी आखे छीन ली है। उस समय वह बहुत काम करनेवाले थे। उन्होने मुझसे कहा, "मै तेरे साथ भ्रमण करूगा, पर तू मुसलमानके साथ खाता है, तो मै तो नही खाऊगा।" यह सुनकर ख्वाजा साहबने कहा, "अगर उनका धर्म ऐसा कहता है तो मै उनके लिए अलग इतजाम करूगा।" ख्वाजा साहबके दिलमे यह नही आया कि यह स्वामी गाधीके साथ आया है तो क्यो नही मेरे यहा खाया। पुराने दिन फिर वापस आएगे जब हिंदू-मुसलमानोके दिलोमे एकता थी। ख्वाजा साहब अब भी राष्ट्रीय मुसलमानोके प्रेसीडेंट है। दूसरे भी जो राष्ट्रीय भावनावाले मुसलमान लडके उन दिनोमे अलीगढसे निकले थे वे आज जामियाके अच्छे-अच्छे विद्यार्थी और काम करनेवाले बने हुए है। ए सब सहाराके रेगिस्तानमे द्वीपसमान है। ख्वाजा साहब ऐसे है कि उनको कोई मार डालेगा तो भी उनके मुह से बद्दुआ न निकलेगी। ऐसे लोग भले थोडे ही हो, पर हमे तो अपनापन कायम रखना ही चाहिए। बदमाशको देखकर हमे भी बुराईपर नही उतर आना चाहिए। लेकिन बिहारमे हमने यह भूल की। वहा हिंदुओने राष्ट्रवादी मुसलमानोकी हत्या की और मुसलमानोके हिंदू मित्रोकी हत्या दूसरे मुसलमानोने की।

हमे शातिपूर्वक यह विचारना चाहिए कि हम कहा बहे जा रहे है? हिंदुओको मुसलमानोके विरुद्ध क्रोध नही करना चाहिए, चाहे मुसलमान उन्हे मिटानेका विचार ही क्यो न रखते हो। अगर मुसलमान सभीको मार डाले तो हम बहादुरीसे मर जाए। इस दुनियामे भले उन्हीका राज हो जाय, हम नई दुनियाके बसनेवाले हो जाएगे। कम-से-कम मरनेसे हमे बिलकुल नही डरना चाहिए। जन्म और मरण तो हमारे नसीबमे लिखा हुआ है, फिर उसमे हर्ष-शोक क्यो करें। अगर हम

हँसते-हँसते मरेंगे तो सचमुच एक नए जीवनमे प्रवेश करेंगे—एक नए हिंदुस्तानका निर्माण करेंगे। गीताके दूसरे अध्यायके अतिम श्लोकोमे बताया गया है कि भगवानसे डरनेवाले व्यक्तिको कैसे रहना ,चाहिए। मै आपसे उन श्लोकोको पढने, उनका अर्थ समझने तथा मनन करनेकी प्रार्थना करता हू, तभी आप समझेंगे कि उनके क्या सिद्धात थे और आज उनमे कितनी कमी आ गई है। आजादी हमारे करीब आ गई है तब हमारा यह कर्तव्य है कि हम अपनेसे पूछे कि क्या हम उसे पाने तथा रखनेके योग्य भी है ? इस सप्ताहमे जबतक मै यहा रहूगा तबतक चाहता हू कि आप लोगोको वह खूराक दे दू जिससे हम उस लायक बनें। अगर झगडते ही रहे तो आजादी आकर भी हाथमें नही रहेगी।

: ७ :

सोमवार ७ अप्रैल १९४७

(आज मौनवार होनेके कारण प्रार्थना-सभामे गाधीजीका लिखित सदेश सुनाया जानेवाला था, किंतु सयोगवश प्रार्थना आध घटे बाद शुरू हुई। तबतक महात्माजीका मौन समाप्त हो गया था। इसलिए सदेश सुनाए जानेके बजाय उन्होने नीचे लिखा भाषण दिया :)

भाइयो और बहनो,

मेरे पास बराबर ऐसे पत्र आ रहे है जिनमे मुझपर यह इलजाम लगाया जाता है कि मै जिन्ना साहबका गुलाम और पाचवे दस्तेवाला बन गया हू। कोई पत्र-लेखक कहता है, मै कम्यूनिस्ट बन गया हू। लेकिन मै इन बौछारोसे नही घबराता। आप लोग हर रोज गीताके जो श्लोक सुनते है वे हमेशा मेरे साथ रहते है और इन बातोके सहनेकी शक्ति देते है। अगर मुझपर इलजाम लगानेवाले इन श्लोकोका मतलब समझते तो ऐसी बात न करते। मै सनातनी हिंदू हू, इसलिए ईसाई, बौद्ध और मुसलमान होनेका दावा करता हू। कुछ मुसलमान भाई भी यह महसूस करते है कि मुझे कुरानकी अरबी

आयतें पढनेका अधिकार नही है। वे समझते है कि कलमा पढकर मै मुसलमानोको धोखेमे डालता हू। ऐसे लोग यह नही जानते कि मजहब भाषा और लिपिकी सीमासे बाहर है। मै कोई कारण नही देखता कि मै कलमा क्यो नही पढ सकता और मुहम्मदको रसूल यानी अपना पैगबर क्यो नही मान सकता। मै तो हर मजहबके पैगबर और सतोमे विश्वास रखनेवाला हू। मै ईश्वरसे प्रार्थना करूगा कि मुझपर इलजाम लगानेवालोपर मुझे गुस्सा न आए। इतना ही नही, बल्कि मै उनके हाथो मरनेके लिए भी तैयार रहू। मेरा विश्वास है कि अगर मै अपने यकीनपर मजबूतीसे कायम रहा तो मै सिर्फ हिंदू-धर्मकी ही नही, इस्लामकी भी सेवा करूगा।

आज रावलपिंडीका एक हिंदू वहाकी घटनाओका दुखजनक विवरण सुनाने आया था। महज हिंदू होनेके कारण उसके ५८ साथी मार डाले गए थे और वह खुद तथा उसका एक लडका बच गया है। रावलपिंडीके आस-पासके गाव तो भस्म कर दिए गए है। यह कितने दुखकी बात है कि जिस रावलपिंडीके बारेमें मुझे याद है कि किस तरह वहाके हिंदू, मुसलमान और सिख मेरा और अलीबधुओका सत्कार करनेमे आपसमें एक-दूसरेसे होड लगाते थे, वही आज किसी भी गैरमुसलमानके लिए खतरेकी जगह बन गया है। पजाबके हिंदुओके दिलोमे गुस्सेकी आग जल रही है। सिख कहते है कि वे गुरु गोविंदसिंहके चेले है, जिन्होने उन्हे तलवारका इस्तेमाल सिखाया है। लेकिन मैं हिंदुओ और सिखोसे बार-बार यही कहूगा कि वे बदला न ले। मै यह कहनेकी हिम्मत करता हू कि बदला लेनेकी भावना छोडकर अगर सब हिंदू और सिख अपने मुसलमान भाइयोके हाथो दिलमे गुस्सा लाये बिना मर भी जाय तो वे सिर्फ हिंदू और सिख मजहबकी ही नही, इस्लाम और दुनियाकी भी रक्षा करेंगे।

तीस सालसे मै आपको अहिंसा और सत्यका उपदेश देता आया हू। मैने दक्षिण अफ्रिकामे बीस सालतक इसी तरह किया था। मेरा विश्वास है कि दक्षिण अफ्रिकाके हिदुस्तानियोने मेरी बात मानकर फायदा ही उठाया है और यहा भी जो सत्य और अहिंसाके रास्तेपर

चले है उन्होने कुछ गंवाया नही है। ठीक है कि हमारे सत्याग्रहियोने अपना सब कुछ लुटा दिया। लेकिन उसमे क्या हुआ? रत्नको उन्होने हाथमे कर लिया और निकम्मी चीज फेक दी। अगर मै पजाव गया तो मै वहा क्या करूगा इसकी मेरे दिलमे हिचकिचाहट हो रही है। वहा क्या मै वदला लेने जाऊ? वदला लेनेकी वात मीठी तो लगती है, लेकिन ईश्वर कहता है वदला लेनेका काम मेरा है। मुझसे काफी लोग कहते है कि यहां आओ तो सही। मै उनसे कहता हू कि मै वहा वदला लेनेकी वातका प्रचार करनेवाला नही हूं। ऐसा करना तो हिंदू, सिख और मुसलमान सवकी कुसेवा करना होगा।

मै मुसलमानोसे भी कहना चाहता हू कि हिंदू और सिखोके साथ लड़कर पाकिस्तान लेनेकी वात निरा पागलपन है। पाकिस्तानमे तो अमनसे रहनेकी वात है। कायदे आजमने कहा है कि हमारे यहा हरदम इन्साफ होगा। आज वहा क्यो इन्साफ नही दीखता? शायद वह पूछेगे कि विहारमें भी क्या हुआ? पर बिहारके प्रधान मत्री तो आज रो रहे है। वह कहेंगे, आपकी काग्रेस कहा गई थी? उसने क्या किया? यह सवाल वडा है। काग्रेसका राज्य हिंदू-मुसलमान दोनोपर चलना चाहिए। लेकिन आज ऐसा नही है। मै ऐसे पाकिस्तानकी कल्पना ही नही कर सकता जहा कोई गैरमुसलमान शाति और सुरक्षाके साथ न रह सके। न ऐसे हिंदुस्तानका ही खयाल करसकता हू जहा मुसलमान खतरेमे हो। मै विहार गया और वहाके हिंदुओके गुस्सेको ठडा करने और मुसलमानोमे हिंदुओके प्रति विश्वास पैदा करनेकी कोशिश की। खुशीकी वात है कि बहुतसे हिंदुओने अफसोस जाहिर किया और आगे वैसा न होने देनेका विश्वास दिलाया। उसी तरह मै मुस्लिम नेताओसे अपील करूगा कि जिन प्रातोमे उनकी आबादी ज्यादा है, वहाके अपने मुस्लिम भाइयोसे वे कहे कि वे अपने यहासे गैरमुसलमानोको मिटानेकी कोशिश न करे।

पजाबके हिंदुओं और सिखोने कितनी ही उत्तेजक भाषाका प्रयोग क्यो न किया हो, फिर भी जिन इलाकोंमे मुसलमान ज्यादा तादादमे थे वहां उन्होने गैरमुसलमानोके साथ जो वेरहमी और पाशविकता की उसकी कोई वजह न थी।

पिछले दो दिनोसे नोआखालीसे फिर बुरी खबरें आ रही है, लेकिन सब कुछ होनेपर भी पुलिस या फौजकी मदद मागना गलती और कायरता है। जो लोग गडबड मचनेपर रोते है, वे गुलाम है और जो फौजकी सहायता चाहते है वे गुलाम बने रहेगे। लोग न तो गृह-युद्धमें पडेगे, न गुलाम रहना ही पसद करेंगे। मुझसे सतीश बाबू व प्यारेलालजीने पत्र लिखकर पूछा है कि घास-फूसके झोपडोके दरवाजे बद करके, जिसमें दस-बीस आदमी हो, जला दिया जाय तो वे क्या करें ? हरेन बाबूने चौमुहानीसे ऐसी ही बात लिखी है और बताया है कि आश्रित लोग जाना चाहते है, पर समझानेपर रुक गए है। मैंने बगालके प्रधान मत्रीको तार दिया है कि यह खतरनाक बात है। लोगोको मैंने सदेश भेजा है कि जिनमें साहस हो, हिम्मत हो, वे जल जाए, मिट जाए। अगर अपनेमें इतनी मजबूती वे महसूस नही करते तो वे वहासे हिजरत करे। बडे-बडे लोगोने हिजरत की है। मुहम्मद साहबने भी की है। कुछ भी करें, जिन अग्रेजोको यहा से हम भगाना चाहते है उनकी फौजोको लोग हरगिज न बुलावें। पिछली लडाईमें इग्लैंडके और जापानके कितने आदमी मर गए, पर उसकी वे शिकायत नही करते। ये बहादुर जातिया है। हमको अग्रेजोका राज अच्छा लगे, यह हमारे लिए शर्मनाक बात है।

जो भूमि अमर हिमालयसे घिरी हुई है और गगाकी स्वास्थ्यप्रद धाराओसे सिंचित होती है क्या वह हिंसासे अपना नाश कर लेगी ? मैं अन्त करणसे आशा करता हू कि बडी-बडी फौजे रखनेका खयाल हम अपने दिलसे निकाल डालेगे। इन फौजोसे हमारा कुछ भी भला नही होनेवाला है और उनके रहते हमारी आजादीकी कोई कीमत न होगी।

## : ८ :

८ अप्रैल १९४७

भाइयो और बहनो,

मैं देखता हू कि अब आपने इतनी शाति अपनाली है कि

रोज-रोज धन्यवाद देनेकी आवश्यकता नही रहती । आज मैं अपनी दुर्दशापर ही बोलना चाहता हू और मुझे उम्मीद है कि आपके कानो-तक इसका एक-एक शब्द पहुचेगा तथा इसकी एक-एक बात आपके हृदयका भेदन करेगी, यानी हृदयकी गहराईमे पहुंचकर वह अपना असर डालेगी ।

कल अखबारमे आपने सतीश बाबू और हरेन बाबूके तार देखे ही होगे । आज सतीश बाबूने प्रत्युत्तरमे जो तार भेजा है उसमे वह लिखते है कि जीवनसिहजी, प्यारेलालजी और दूसरे जो आपके साथी यहा आकर काम कर रहे है उन सबने मरते दमतक यहीपर बने रहनेका निश्चय किया है और सभी यह बात मजूर करते है कि आपका कहना सही है। यहाके हिंदू ऐसा कर सकते है जैसा आपने लिखा है । खतरा तो पूरा है, मारे जानेका डर बढता जा रहा है । वे रोते है, इतनेपर भी वे मजबूतीके साथ शात और तैयार हो रहे है। अब डरके मारे भाग जाना वे पसद नही करते । वे सोचते है कि अगर मौत आने ही वाली है तो उसे ईश्वरका प्रसाद समझकर मजूर कर लेना ही अच्छा है । यह खुशीसे मरनेकी बात है, मारकर मरनेकी बात नही है । यह सब आजतक किए गए कामका नतीजा है ।

मैंने उन लोगोसे पुछवाया था कि आप यह तो नही चाहते कि मै यहाका काम छोड़कर आपके पास चला आऊ ? मुझे दूसरे जरूरी काम है । मुझे बिहार जाना है । फिर पजाब भी पड़ा है । उन लोगोने मुझे लिखा है कि 'तुम यहां आनेका जरा भी खयाल न करो ।'

वे सारे लोग अलग-अलग जगह फैले हुए है । सतीश बाबू एक ओर है तो हरेन बाबू दूसरी ओर चौमुहानीमे बडा भारी काम कर रहे है । अम्तुस्सलाम, प्यारेलाल, कनु और आभा-जैसे हरेकने एक-एक गाव चुन लिया है । मुझे भरोसा है कि सभी लोग मेरी उम्मीदके मुताबिक भलीभांति काम करेगे । मेरी वह उम्मीद क्या है ? मेरी उम्मीद तो है कि भगवानसे सबको सुमति मिलेगी, जैसा कि यह लडकी रामधुनमे सुनाती है, 'सबको सन्मति दे भगवान' । मै यह उम्मीद

करता ही रहूगा कि वे समझ लेंगे कि जबरदस्ती और मारपीटसे कुछ भी हासिल होनेवाला नही है। अगर किसीने मारपीटकर कुछ ले लिया या दूसरेसे कुछ करवा लिया तो वह टिकनेवाली बात नही होगी। ऐसा तो चोर-डाकू करते है। दूसरे लोग डाका डालें तो क्या हम भी डाकू बन जायगे? नही, हम उनके रास्तेपर नही चलेंगे। वे हमें मारना चाहते है तो हम मर जायगे।

हमारे बीच इस तरह मरनेवाले बहादुर लोग मौजूद है, यह देखकर अच्छा लगता है। उनकी बहादुरीसे उनका और देशका भला होगा। वे मरते-मरते भी मारनेवालोकी शिकायत नही करेंगे। न उन्हे सजा दिलवानेकी बात सोचेंगे। मारनेवाले सजामेंसे छूटनेवाले नही है। ईश्वर उन्हें सजा देगा, हम सजा देनेवाले कौन होते है? हम ईश्वरसे भी नही कहेंगे कि हे भगवान, उन्हे सजा दे, क्योकि ईश्वर तो दयावान है। हम तो उससे अपने लिए और दुश्मनके लिए भी रहम ही मागेंगे और अततक सबका, मारनेवालोका भी भला चाहनेकी कोशिश करते हुए मरेंगे। इतनेपर भी भगवान जो करेगा उसमें दया ही भरी होगी।

लेकिन ऐसोमेंसे कोई वहा मर जाय तो क्या मै यह कहूंगा, 'हाय क्या हुआ?' मै ऐसा नही कहूगा। मै तो कहूगा, अच्छा ही किया जो उन्होने इतनी बडी सेवा की। मुसलमानोकी भी सेवा की है और ऐसा करके ईश्वरका काम किया है।

लेकिन जो मरनेको तैयार हो जाते है, बहादुर बनते है, उनसे मौत हट जाती है। हम उम्मीद करें कि उन्हे मरना नही पडेगा। वहा सुहरावर्दी साहब है, छोटे-मोटे अफसर है। जो डाके डालनेवाले भी है उनको ईश्वर सुमति देगा और डाका डालनेवाले भी चेत जायगे तथा दूसरोको मजबूर करनेकी बात छोड देंगे। मै तो यहातक उम्मीद करता हू कि वहाके सब मुसलमान भाई इकट्ठे होकर अपने हिंदू भाइयोकी रखवाली अपने जिम्मे ले लेंगे और जगह-जगहसे मुसलमान भाइयोके मिलकर तार मेरे पास आयगे कि 'आप फिकर न करें, हमारे यहा खतरेकी कोई बात नही है।' और तब मै नाचूगा।

एक भाईने पूछा है कि 'मै क्यो कहता हू कि मै हिंदू हू, इसलिए मुसलमान हू ?' यह तो साफ़ बात है। यह मैंने गीतासे सीखा है। गीतामे बताया है :

यो मा पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।
तस्याह् न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति॥

यानी जो मुझे हर जगह देखता है, उसका मै नाश नही करता और वह मेरा नाश नही करता। गोया कुरानमे, जेंदावस्तामे, बाइबलमे, सबमें राम है और ईसाई, पारसी, सिख, मुसलमान जिस गॉडको, जिस हुरमसको और जिस खुदाको भजते है वह ईश्वर ही है और मै इस धर्मका माननेवाला सच्चा हिंदू हू, इसीलिए मै मुसलमान हू और ईसाई भी हू। यह सिर्फ दिमागकी या कहनेकी बात नही है। यह हकीकत है। ईशोपनिषद्मे भी ऐसा ही लिखा है कि 'मै सब चीजमे हू और सारा मुझमे ही है।' और फिर लिखा है कि 'वह दौडता भी है, वह स्थिर भी है।' ईश्वरके बारेमे इस प्रकार कई तरहकी बाते गीता-उपनिषद्मे कही गई है।

दूसरे पत्रमे कहा है कि 'अगर आप अपनेको खिदमतगार कहते है और राम और रहीम एक ही है तो दोमेसे एकको क्यो नही चुन लेते ? इस बातका खुलासा दीजिए।' मै खिदमतगार हू, इसलिए यह खुलासा देता हू। विष्णुके सहस्र नाम है। पर ईश्वरके केवल हजार ही नाम नही है, एक लाख भी है। मै तो कहता हू कि ईश्वरके चालीस करोड नाम है। इसलिए क्या वजह है कि मै केवल राम ही कहू या रहीम ही कहू ? और फिर किसीने पूछा है, क्या मै मुसलमानोकी खुशामदके लिए ऐसा कहता हू ?

तो मेरा उत्तर है—नही। मैंने कोई सोच-समझकर प्रार्थना नही बनाई है। अब्बास तैयबजीकी लडकी रेहाना, जो पक्की मुसलमान भी है और हिंदू भी है, उसने मुझसे कहा, 'औज अबिल्ला' सिखा दू ? मैंने कहा, ठीक है, सिखा दे, चाहे तो मुझे मुसलमान भी बना दे। तो वह बोली, नही, आप मेरे पिता है, मै आपकी लडकी हू। आप अच्छे हिंदू है, आपको मुसलमान बनानेकी कोई जरूरत नही। पर उसने मुझे यह 'औज

अविल्ला' सिखा दिया और वह तबसे चल रहा है। उसी तरह मेरे उपवासके बाद डा० गिल्डरने एक पारसी मन्त्र सिखा दिया। वह भी चल रहा है। मैं तो राम-नामका भूखा हू। उसे हजार तरीकेसे कहूगा और कोई मजबूर करने आयगे कि फला नाम लो, फला मत लो तो एक भी नाम न लूगा।"

(इसके बाद गाधीजीने कुछ लिखित प्रश्नोके उत्तर दिए।)

प्रश्न—आपने कहा, जिनमें मरनेकी ताकत नही है और मरना नही चाहते वे हिजरत करे। तो वे कहा जाय ?

उत्तर—वे मुट्ठीभर आदमी इतने लबे-चौडे भारत देशमें कही भी समा सकते है। अव्वल तो पजाबमें ही वे अपने लिए जगह कर सकते हैं, पर यदि नही कर सकते तो इतना बडा देश पडा है, वे जगह ढूढ ले। मुझे यह बतानेकी आवश्यकता नही है। इतना ध्यान रखे कि किसीसे भिक्षा न मागे, हाथ न फैलावे, बल्कि अपने-अपने बूतेपर सब कुछ करे।

(अग्रेजीमे लिखकर भेजे कुछ पत्रोपर व्यग्य करते हुए गाधीजीने यह भी कहा कि मै जो अग्रेजी ठीक-ठीक नही जानता और जिसकी 'ऊजड गावमे अरंड पेड' जैसी हालत है, उसे ही इसमें गलती मिलती है तो अग्रेजीदा कितनी गलती बता दगे ? अग्रेजी व टाइपराइटरकी क्या जरूरत थी ?)

प्रश्न—अपनी प्रार्थनामें पुलिस बुलाते हुए आपको शरम नही आती ?

उत्तर—शरम तो बहुत आती है और जब-जब पुलिसने प्रार्थनामे अमन करनेकी कोशिश की है तब-तब मैंने प्रार्थना रोकी है। फिर मैंने सरदार पटेलसे याचना तो नही की कि आप मेरी रक्षाके लिए पुलिस भेज दे। इसपर भी पुलिस आती है तो मुमकिन है वह भी राम नाम व प्रार्थनासे दो-एक भली बाते सीख जायगी। उसका द्वेष क्यो ?

प्रश्न—हिंदू-धर्ममे आप अहिंसा कहासे ले आए ? अहिंसासे तो आप हिंदुओको बुजदिल बना रहे है।

उत्तर—मेरी वजहसे कोई बुजदिल हुआ है, ऐसा मेरे ख्वाबमे भी नही है। वह छोटी लडकी आभा जो पहले कुछ डरती थी वह भी मेरे

पास रहकर बहादुर बन गई है । मैने उसे कह दिया, तेरा पति तेरे साथ नही जायगा। वह अब अकेली ही खतरेकी सब जगहपर चली जाती है। तो क्या वह बुजदिल है ? वह निहत्थी जाती है । यह भी नही कहती कि मुझे खजर दिलवाओ तब जाऊगी। उस बेचारीके पास तो सब्जी काटनेकी छुरी भी मुश्किलसे रहती है । मैने यह कभी नही कहा कि आप लोग खतरेकी सीटी सुनते ही सब भाग निकले । हमे मरना है, और मारकर नही मरना है। अहिंसा हिंदू-धर्मका असली सार है। आपकी गीताने अहिंसा सिखाई है । मै तो कहता हू कि मुसलमान धर्मका सार भी अहिंसा है और ईसाई धर्म भी अहिंसा सिखाता है ।

## : ६ :

### ६ अप्रैल १९४७

भाइयो और बहनो,

सुचेतादेवीने आज जो भजन सुनाया है वह आप लोगोने पिछली बार, जब मै यहा था तब भी, सुना था। उसके शब्द जितने सुदर है उतने ही मीठे स्वरसे वह गाया गया है। आज भी जब मै उसे सुन रहा था मुझे वह वैसा ही ताजा और नया-सा लग रहा था। क्या ही अच्छा हो, यदि हमारा देश ऐसा ही बन जाय और हम कह सके कि यहापर शोक नही है, आह नही है। लेकिन हम जानते है कि आज देश ऐसा नही है । एक-एक करके हरेक आदमी अगर इस भजनके मुताबिक अच्छा बन जाय तो देश भी ऐसा हो जायगा । समुद्रकी क्या ताकत है ? एक-एक बूदसे ही तो वह बना है। इसी तरह देश भी एक-एक आदमीसे बनता है। आज हम लोग ऐसे नही है कि इस भजनको सच्चे दिलसे गा सके । ऐसा देश ढूढने चले तो वह कौन-सा होगा ? वह देश है हमारा शरीर और उस देशका निवासी है हमारे शरीरमे रहनेवाला आत्मा। आत्माके जो गुण होने चाहिए वह इस भजनमे बताए है। हमे चाहिए कि उन गुणोको अपनाए। अगर हम लोग ऐसे बन जाय तो फिर हमारे देशका

नाम चाहे हिंदुस्तान रहे या पाकिस्तान, वह सुंदर ही होगा, भले ही फिर उसमें ११ प्रांत हो या २१, या चाहे जितने। सबको ऐसा होना चाहिए कि हर कोई आरामसे रह सके, कोई मुफलिस न रहे, न कोई किसीपर आक्रमण कर सके।

अपने देशको ऐसा बनानेके लिए आपको जिंदा रहना है, हम सबको जिंदा रहना है, मुझको भी जिंदा रहना है। लेकिन आज जो हो रहा है वह उससे उलटा ही हो रहा है। मेरे पास जो ढेरो चिट्ठिया आ रही हैं उनमें गालिया भी रहती हैं और स्तुति भी होती है। हमें चाहिए कि जो गालिया मिलती हैं और जो स्तुति होती है उन सभीको कृष्णार्पण करके हम बरी हो जाय।

मैं समझता हू कि इन चिट्ठियोके लिखनेवालोमेंसे कुछ लोग इस मजमेमें होगे ही। मुझे यह अच्छा लगता है कि वे मेरी बात सुनते हैं, क्योकि सुननेसे वे समझेंगे और मुल्कको फायदा पहुचायगे।

हम अभी तो आजादी पा रहे हैं। अभी हमने वह पाई नही है। अगर हम मिल-जुलकर काम करें तो आज ही वाइसराय चले जाय या सब बागडोर हमें सौंपकर वह बैठे रहें अथवा हम जो काम बतावें वह अपने दिलबहलावके लिए करते रहें। वह खाली बैठनेवाले आदमी नही हैं। बादशाही खानदानके हैं, बडे चतुर हैं। उनकी बीवी भी चतुर हैं। उनसे हम काम ले सकते हैं। लेकिन आज जो हालत है उसमें नही ले सकते। अभी तो वह चौदह महीने तक बैठे रहेंगे और हिंदुस्तानको प्रमाणपत्र देंगे कि वह कैसा अच्छा या बुरा है। हिंदुस्तानको ही देखनेके लिए एशियाई कान्फ्रेंसमें एशियाके लोग आए थे, लेकिन वे यह खयाल लेकर गए कि यहा हिंदू-मुसलमान लड रहे हैं। वे क्यो लड रहे हैं, यह किसीको पता नही। कम-से-कम मुझे तो पता नही है कि क्यो लड रहे हैं।

क्या पाकिस्तानके लिए लड रहे हैं? वे कहते हैं कि हम पाकिस्तान लेकर रहेंगे। क्या वे हमें मजबूर करके लेंगे? जबरदस्तीसे लेंगे? जबरदस्तीसे एक इंच जमीन भी नही ले सकते। समझा-बुझाकर लें तो सारा हिंदुस्तान भले ही ले ले। मुझे तो यह अच्छा लगेगा

कि हमारे आजाद हिंदुस्तानके पहले प्रेसीडेंट जिन्ना साहब बने और वह अपनी केबिनेट बनावे । लेकिन इसमे एक ही शर्त होगी कि वह खुदाको हाजिर-नाजिर समझे यानी हिंदू, मुसलमान, पारसी सबको एक समझे ।

चिट्ठिया भेजनेवालोमें एक आदमी लिखता है, 'तुम्हें 'मुहम्मद गाधी' क्यो न कहा जाय ?' और फिर बडी खूबसूरत गालिया दी है, जिन्हे यहा दुहरानेकी जरूरत नही है । गाली देनेवालेको जवाब न दिया जाय तो वह एक, दो, तीन या अधिक बार गाली देकर थक जायगा । थककर या तो चुप हो जायगा, या और गुस्सेमे आकर मार डालेगा । पर मारनेके बाद फिर क्या होगा ? हमारा कुछ नही बिगडेगा । कोई कहे कि फिर हमारे बीवी-बच्चोकी रखवाली कौन करेगा ? तो उसे समझना चाहिए कि उनकी रखवाली करनेवाला तो ईश्वर बैठा है । फिर हम परेशान क्यो हो ?

बगाल-विभाजनके आदोलनको शात करनेका सबसे अच्छा तरीका उस बारेमे हिंदुओके साथ दलील करके उन्हे समझाना होगा और अभीसे उन्हे यह बताना होगा कि वह उनसे कोई बात जबरदस्ती नही कराना चाहते । अपने सर्वथा निष्पक्ष व्यवहारसे यह सिद्ध करना होगा कि पाकिस्तानमे हिंदुओको निष्पक्षता और न्यायके बारेमें किसी तरहकी आशका नही रखनी चाहिए । मुसलमानोके साथ केवल मुसलमान होनेके कारण ही पक्षपात न किया जायगा और सरकारी नौकरीके लिए आदमी चुनते समय केवल उसकी योग्यताका ही ध्यान रखा जायगा । अगर सुहरावर्दी साहब ऐसा करे तो समूचा बगाल एक आजाद सूबा बन जाय । फिर उसके दो या चार टुकडे करनेकी बात न होगी । अल्प मतवालोकी खुशामद करके उनके दिलको इस तरह जीत लेना चाहिए—हिंदुओके साथ उन्हें इस तरह पेश आना चाहिए—कि वे यही कहे कि 'हमारे प्रधान तो सुहरावर्दी ही होगे । हमारा भरोसा उन्हीपर है ।'

लेकिन अभी वैसा नही है । मेरे पास आज ही सुशीलाका, जो पहले राजकोटमें स्कूल चलाती थी, खत आया है । उसने वहाके हालात

बताए है कि वह जहा काम करती है वहा इतना खौफ रहा कि कोई हिंदू औरत अकेली तो क्या, मिलकर भी वहा जा नही सकती थी। जब वह खुद चली गई तब वे औरतें उसके पीछे-पीछे वहापर जा सकी।

मैं यह कहे बिना नही रह सकता कि अगर हिंदुस्तानियोंमें सच्ची बहादुरी हो तो पाकिस्तान लेनेके लिए आज जो जोर-जबरदस्ती हो रही है वह अपने मकसदमें नाकाम हुए बिना नही रह सकती। मैं हिम्मतसे कहूंगा कि जबरदस्ती और डर दिखलाकर पाकिस्तान लेनेकी बात खाली सपना देखना है।

## : १० :

### १० अप्रैल १९४७

भाइयो और बहनो,

भजन[1] जितना मीठा है, उसका अर्थ भी वैसा ही बुलद है और आज आप लोगोंपर और हम सबपर वह लागू होता है। हमपर कितनी ही मुसीबतें और कठिनाइया क्यो न आए हमें उनसे निराश नही होना चाहिए, घबराना नही चाहिए, यह इस सारे भजनका निचोड है। जो दिया जलाया जाता है वह गुल हो जाता है और अधेरा छा जाता है तो भी हमें उसे सहन करना है। जो दिया बुझ गया, जो जिंदगी चली गई, वह लौटकर तो आनेवाली है ही नही। हिंदू-मुसलमान जानवर बन जाते है पर उन्हे याद रखना चाहिए कि वे झुकी हुई कमरवाले जानवर नही है, सीधी कमरवाले मनुष्य है। इसलिए घोर विपत्तिमें भी उन्हे धर्म और श्रद्धा नही छोडनी चाहिए।

आज भी मेरे पास काफी खत आए है। एक सज्जनने लिखा है कि

---

[1] यदि तोर डाक सुने केउना आसे तबे एकला चलोरे,
एकला चलो, एकला चलो, एकला चलोरे।

हिंदू-मुसलमान दोनो हैवान बने हुए है । दोनो लडते है । क्या इसमेसे कोई रास्ता नही है ? रास्ता तो है । दोमेंसे एक जानवर न बने यही इसमेसे निकलनेका सीधा रास्ता है । पर पत्र-लेखकने एक बात और कही है कि 'तीसरे लोग क्या करते है, यह बडा सवाल है । वाइसराय साहब हिंदुस्तानकी सत्ता हिंदुस्तानियोको सौंपने आए है । माना कि वह सच्चे दिलसे आए है, अंग्रेजोने अपने बादशाहके कटुंबके बडे योद्धाको यहा फैली हुई अपनी सत्ताको समेट लेनेके लिए ही भेजा है और उनको यहा भेजनेवाले ब्रिटिश मिनिस्टर लोग भी दिलके सच्चे है । फिर भी सवाल यह है कि जो अंग्रेज व्यापारी इतने बरसोसे हमे चूस-चूसकर खाते रहे है वे ठीक तरहसे रहेंगे या अपनी कारगुजारियोको चलता रखेंगे ? आजतक हमारा कुल व्यापार उनके हाथोमें रहा है। अब आगे वे क्या करेंगे ?' यह प्रश्न सही पूछा गया है । हिंदू-मुसलमान मिलकर उन्हे रखना चाहे तब वे दोस्तकी तरह रहेंगे या उनके न चाहनेपर भी जबरदस्ती हमपर वे अंग्रेज व्यापारी लदे रहेंगे । दूसरी तरफ सिविल सर्विसका जोर है । उसने तो हम लोगोपर इतना काबू जमाया है कि हम यह जान नही पाते कि हमे कभी आजादी मिल भी सकेगी या नही । यह तो ईश्वरकी दया है कि हमारे हाथ दो-एक ऐसी तरकीबे आ गई और हालात ऐसे बन गए कि अंग्रेज जानेको कहते है । लेकिन अभी तो सिविल सर्विस भी है, उनके सोल्जर (योद्धा) भी है । उनका खाना-दाना यहा बना रहेगा तो वे क्यो जायगे ?

ऐसा तो न होगा कि वाइसराय साहबकी दी हुई चीज यूही वापस छीन ली जाय ? ऐसी शकापर मुझे यही कहना है कि अभी जो हालत है उसमे हम कुछ भी नही कह सकते । अभी स्वराज्यका अरुणोदय ही हुआ है, सूरज चमका नही है । हमें पता नही कि उस सूरजमे गरमी कितनी है । इस समय तो हम थरथर काप रहे है । हमारे दिलोमे संदेह भरा हुआ है । सूरज चमकेगा तभी हमे उसकी सही गरमीका पता चलेगा ।

इस बारेमे मै आप लोगोसे तो कुछ नही कहना चाहता; लेकिन उन अंग्रेज लोगोसे, व्यापारी, सिविलियन और सोल्जर सभी लोगोसे

कहना चाहता हू कि अगर आपको अंग्रेजोका नाम कायम रखना है तो आप यहासे अब रवाना हो। आजतक आप हमारे कंधोपर बैठे रहे, यह अच्छा नही किया, लेकिन अब आप उतरनेको तैयार हो जाय तो अच्छा होगा।

उन लोगोने यही काम करानेके लिए माउटवेटन साहब यहा आ गए है और वह अकेले नही है। इग्लैंडवालोकी सारी ताकत अपने साथ लेकर वह आए है। ऐसा करनेमे उन्हें कुछ नुकसान भी उठाना पडेगा, पर इसके लिए वह तैयार है। इसका कुछ सबूत भी उन्होने दिया है। हमने कहा कि सिविल सर्विस जानी चाहिए तो वह सिविल सर्विस जा रही है और उन्हीके सिरपर जा रही है। यानी उनको पेंशन आदि ब्रिटेन ही देगा।

इधर माउटबेटन साहबने गवर्नरोको और उनके सब सेक्रेटरियोको भी बुलाया है—सही बात समझानेके लिए बुलाया गया है। उधर चर्चिल और उनकी पार्टी भी मोर्चा लिए बिना न मानेगी। इतनेपर भी वाइसराय साहबका कहना है कि हम ब्रिटिश प्रजाके नामसे यहा आए है और उसीकी रायसे अब हमे यहासे लौट जाना है। वाइसराय साहबके इस काममें गवर्नरोको, अंग्रेज व्यापारियोको और सिविल सर्विसवालोको सहयोग देना चाहिए। उन सबको यहासे चला जाना चाहिए। यहा रहना चाहें, वे खुशीसे रहे। पर आजतक जो किया उससे उलटा करे, यानी हमें चूसनेके बदले हमें फूलने-फलनेमे मदद दे। ऐसा करेंगे तो उनकी नामवरी हो जायगी।

लेकिन सब जगहसे बात आ रही है कि जितना दगा-फसाद हो गया है उसमें उनकी शरारत भरी थी। इस बातकी माउटबेटन साहबको भी बू आ रही है। उनके दिलमें शक हो गया है कि लोगोकी यह बात कही सही न निकल जाय। अब यहाके अंग्रेजोको यह देखना है कि हिंदू-मुसलमान जो बात मानते थे कि इन दगोमें अंग्रेजोका ही हाथ है वह सही साबित न हो। अगर वह बात सही है तो इतिहास किसीका लिहाज रखनेवाला नही है। भावी इतिहास कहेगा कि वे लुटेरे लोग थे।

परतु वे कह सकते है कि जो हुआ सो हुआ। अब हमने नया पन्ना खोल दिया है। माउटबेटन साहब तो अच्छा करना चाहते है ही, पर उनकी कामयाबी अग्रेज व्यापारी, अग्रेज सोल्जर और अंग्रेज सिविलियनके हाथोमे ही है। उन सभीकी नेकनीयत न होगी तो वाइसरायका किया-कराया खतम हो जानेवाला है। इसलिए हमको प्रार्थना करनी चाहिए कि ईश्वर उन लोगोको सुमति दें। हिंदुस्तान छोड जानेमे उन्हें चाहे कितनी ही परेशानी क्यो न हो उनके सामने अपने भविष्यके बारेमें अघेरा ही क्यो न छाया हुआ हो, फिर भी मै उनको कहना चाहता हू कि उनकी उन्नति इसीमे है कि वे यहासे जानेकी बात पक्की कर लें।

इसके बाद हमारा झगडा निपटानेमें वे हमे मदद दे सकते है। ऐसा करनेमें वे सफल भी हो जायंगे। फिर उनको बडा यश मिलेगा। मेरी ईश्वरसे प्रार्थना है कि वे यहासे दुश्मनकी तरह न जाकर दोस्तकी तरह भलाईके साथ जाय और हमारे दिलोमे उनकी दोस्ती बनी रहे।

## : ११ :

### ११ अप्रैल १९४७

भाइयो और बहनो,

आपको खबर देते हुए मुझे सकोच होता है कि आज मैने एकाएक बिहार जानेका निश्चय कर लिया है। आप जानते है कि मेरा क्षेत्र नोआखाली और बिहार है। इनको मैने चुना है, ऐसा नही है। नोआखाली तो मै दैवयोगसे यानी ईश्वरकी पुकार सुनकर चला गया। उसी सिलसिलेमें मेरा बिहार जाना भी हुआ। नोआखालीमे मै जितने दिन रहा, उसमें मैंने काफी काम कर लिया। वहा जो हिंदू आतकसे विह्वल हो गए थे उन्हे कुछ शाति मिली। पर जिस तरह वहा हिंदुओके लिए काम हुआ उसी तरह मुसलमानोके लिए भी हुआ। आज उसकी

कीमत न सही, पर आगे चलकर जब हवा बदलेगी तब वहा किए गए कामका मूल्य देशकी समझमे आएगा । वैसे तो आज भी वहा की गई कोशिशोका फायदा नजर आता है । आज भी वहा नेक मुसलमान अपने हिंदू पडोसीको फिरसे भाई समझने लगे है, पर अभी ऐसे लोगोकी तादाद इतनी नही बढी है जितनी बढनी चाहिए। फिर भी वहा जो काम हो रहा है उससे भविष्यमे बहुत लाभ होनेवाला है, इसमें शक नही।

इस समय मेरा काम उतना नोआखालीमे नही है जितना बिहारमें है । बिहारसे एक मुसलमान भाईका तार आया है कि आप लबे अरसे तक बिहारसे बाहर रहे, अब आपको यहा लौट आना चाहिए । आप आएगे तभी हमारे दिलको तसल्ली मिलेगी । यह ठीक है कि मैंने बिहार जानेका निश्चय इस तारके कारण नही किया है, पर अब मेरा दिल वही लगा हुआ है, क्योकि मैंने तो वहा कहा है कि करूगा या मरूगा ।

करूगासे मतलब यह है कि बिहारके हिंदू-मुसलमान साथ मिलकर भाई-भाईकी तरह रहने लगे । बिहारके बाहर चाहे सब जगह अगार ही क्यो न बरस रहे हो तब भी वहा हिंदुओ और मुसलमानोको मिलकर अमनके साथ रहना है । बिहारमें कई देहात मौजूद है जहा बाहरकी आगका असर नही पहुचा है । बिहारमे ही नही, ऐसे नोआखालीमें भी है और पजाबमे जहा इतना दगा मच गया है वहा भी ऐसे गाव पडे है जहा सब मिलकर शातिसे और एक-दूसरेके भरोसेपर रह रहे है । ऐसे देहात सारे हिंदुस्तानमे मिल जायगे ।

आप पूछ सकते है कि कल-परसो तो तुमने पजाब जानेकी बात की थी, उसे एक ओर रखकर अब बिहार क्यो जाना चाहते हो ? और वाइसरायसे बात करनेके लिए जो इधर आए थे सो वह बात क्या पूरी हो गई ? अगर वाइसरायसे बाते हो भी गई है तो आखिर उसका क्या अजाम आता है, यह देखनेके लिए तो रुक जाओ । पर मै अजामके लिए क्यो रुकू ? अजाम लाना मेरे हाथकी बात तो है नही । इन बातोका निर्णय करनेवाले दूसरे है । मुझसे वाइसरायकी जो बातें होनी थी वे हो चुकी । मैंने कहा था कि मै यहा दिल्लीमे दो आदमियोका कैदी हू, एक वाइसरायका और दूसरे पडित जवाहरलाल नेहरूका ।

मेरे पास राजेंद्र बाबू आए थे। उनसे मैंने बातचीत कर ली है और नेहरूजीके पास भी संदेशा भेज दिया है। सबने मिलकर मुझे इजाजत दे दी तब मैंने बिहार जानेका निश्चय किया।

बिहार जाना मेरा स्वधर्म है। मै गीताका सेवक हू। गीता सिखाती है कि स्वधर्मका पालन करो और अपने ही क्षेत्रमे बने रहो। गीताने साफ-साफ कहा है कि स्वधर्ममे और स्वक्षेत्रमे मरना अच्छा है, परधर्ममें जाना भयावह है। इसीलिए दिल्ली-जैसे परक्षेत्रमें रहना भयावह हो जाता है।

अगर पजाब जानेके लिए ईश्वरकी आवाज आती तो मै जरूर ही चला जाता। आप पूछेंगे कि क्या ईश्वर तुझसे कहनेको आता है ? वैसा कोई ईश्वर मेरे पास नही आता। लेकिन भीतरसे आवाज तो आती है ही। जो कोई ईश्वरका भक्त बन जाता है वह अपने भीतर बैठकर ईश्वरकी आवाज सुन लेता है। पजावके बारेमें मुझे वैसी आवाज नही सुनाई दी।

पर इतना मै कहूगा कि पजाब जानेकी बातपर मैंने काफी गौर किया और इस नतीजेपर आया कि आज वहा जानेसे कोई खास मतलब पूरा होनेवाला नही है, क्योंकि वहा हमारा राज नही है। अगर वहा लीगका भी राज होता तो वह हमारा ही राज कहा जाता, क्योंकि अगर लीगवाले आते है तो वे वोटके जरिये आते है और तब वह हमारा राज हो जाता है। लोगोके वोटसे जो राज आयगा वह लोगोका ही राज कहलायगा। वह राज सुख देनेवाला हो या दु:खदायी हो यह देखना हमारा काम है।

फर्ज कीजिए कि हमारी कमनसीबीसे हमारे देशमें एक हिंदू राज्य हो गया और दूसरा मुसलमानोका पाकिस्तान बन गया। अगर दोनो ही ऐसे बन जाय कि वहा दूसरी कौमवाले सुख-शातिसे न रह सकें, तो वह हिंदू राज्य नरक हो जायगा और वैसा पाकिस्तान नापाकिस्तान हो जायगा। सच्चा पाकिस्तान वही है, जहापर अदल इन्साफ—सही-सही न्याय—हो, जहा मारपीटके सहारे कुछ भी करवानेकी बात न हो और जो कुछ करना-धरना है या पाना है वह दूसरोके हृदयपर असर डालकर ही करने-करवानेकी बात है। परतु आज हमने अपना यह आदर्श भुला दिया है।

पर मैं पंजाब जाऊं या न जाऊं, वहांका काम तो करूंगा ही। जो वहां जाकर मुझे कहना है वह यहां पंजाबसे बाहर रहकर भी मैं सुना सकता हूं। और मेरे सिखानेकी तो एक ही बात है, जो मैं दोहराते हुए थकनेवाला नहीं हूं। वह बात यह है कि एक-एक हिंदू व एक-एक सिख यह निश्चय कर ले कि वह मर जायगा पर मारेगा नहीं। मास्टर तारासिंह कहते हैं, 'हम मारेंगे।' उनका यह कहना मेरी समझसे ठीक नहीं है। उन्हें तो यही कहना चाहिए कि 'हम जो चाहते हैं, वह आप नहीं देंगे तो हम चाहे मुट्ठीभर आदमी ही क्यों न हों, मर मिटेंगे, पर लेकर ही रहेंगे। मारनेकी बात उन्हें नहीं करनी चाहिए। इतनी बात सुनानेके लिए मुझे पंजाबतक जानेकी जरूरत नहीं है।

बिहारको भी मैं बाहरसे सुना सकता था, पर मैं अनुभव करता हूं कि वहां कुछ लोगोंको समझाना जरूरी है। नोआखालीमें भी मैं इसी वजहसे घूमा। लोगोंने कहा, 'तुम्हें मार डालेंगे।' पर मैं कहता हूं, आप सब-के-सब रक्षा करेंगे तो भी मुझे मौतसे बचा नहीं सकेंगे। डाक्टर हकीम भी बैठे रह जायेंगे। आज जो भजन गाया गया उसमें हकीम लुकमानने भी हाथ मलकर निराश हो कहा कि जिंदगीकी बहार चंद रोजकी ही है। तो फिर हम मौतसे क्यों भागें ? हमें बहादुरीके साथ मरना चाहिए। इस तरह हमें चलना चाहिए कि हमपर हाथ चलाने-वालोंपर दुनिया लानत बरसावे। सारी दुनिया उन लोगोंसे कहे कि आप जालिम होकर पाकिस्तान लेना चाहते हैं सो कैसे ले सकते हैं ?

सत्याग्रहका रहस्य ही यह है कि सत्याग्रही समूची दुनियाका मत अपनी ओर कर लेता है। मैंने शुरूसे कहा था कि हमें अमेरिका या इंग्लैंडमें प्रचारक लोगोंके भेजनेकी आवश्यकता नहीं है, यहीं बैठे-बैठे हमारी सचाई चमकेगी और सारी दुनिया देखने आयगी। दक्षिण अफ्रीकामें भी मैंने इसी प्रकार दुनियाकी हमदर्दी कमाई थी और अंग्रेज तथा अमेरिकनों तकने मेरी बातको सही बताया था।

## : १२ :

### १२ अप्रैल १९४७

भाइयो और वहनो,

कलका दिन राष्ट्रीय सप्ताहका आखरी दिन है। छ अप्रैलका दिन जाग्रतिका दिन था। उस दिन हमने देखा कि सारा हिंदुस्तान एक हो गया था। शहर तो एक होते ही है, क्योकि एकताके विना उनका व्यापार नही चल सकता, पर हिंदुस्तानके सभी देहात एक है, यह अनुभव हमे उसी दिन हुआ।

देहातका एक होना वहुत वडी वात है। छ अप्रैलके दिन लोगोसे मैंने उपवास रखनेको कहा और सारे देशने वह वात मान ली। मै कौन चीज था? पर वह ईश्वरकी पुकार थी। तभी मद्राससे लेकर पजावतक, और पजावसे लेकर आसामके डिब्रूगढतक सभी देहात हिल उठे। हिंदुस्तान उस रोज जाग उठा। कलकी १३ अप्रैलकी तारीख हिंदुस्तानके कत्लकी तारीख है। उस दिन हिंदू, मुसलमान, सिख सभी एक साथ जलियावाला वागमे कत्ल हुए। वह कोई वगीचा नही था। चारो ओर दीवारोसे घिरा हुआ एक अहाता था। उस घेरेमेंसे भागनेके लिए गुजाइश न थी। एक छोटा-सा रास्ता था। वहापर निहत्थे लोगोको कत्ल किया गया और कम-से-कम दो हजार—शायद पाच हजार—आदमी मारे गए। उस जगह हिंदू-मुसलमान-सिख सबके खून आपसमें मिल गए। कोई नही वता सका कि वहापर कितनी मात्रामे किसका खून वहा था। शीशीमे भरकर अगर किसीका खून भेजा जाय तो वडे-वडे डाक्टर भी उसे जाचकर नही वता सकते कि वह खून हिंदूका है, सिखका है या मुसलमानका। मतलव यह कि जलिया-वाला वागमे सभी हिंदुस्तानी एक साथ शहीद हुए।

आप यह न कहे कि वे वहा मरनेके इरादेसे तो गए नही थे फिर उन्हे शहीद क्यो कहा जाय? सच है कि वे मरनेके लिए नही गए थे, पर वे सव निर्दोष थे। वेगुनाह लोगोका मारा जाना वडी भारी वात होती है। वह भुला देनेकी वात नही है। हमारा काम है कि हम उन्हे

याद रखें। वह काड इतना भीषण था कि उससे सारा देश बेचैन हो गया। उसीको देखकर गुरुदेव—रवीन्द्रनाथ ठाकुर—ने सरकारको पत्र लिखा और वह हमारे साथ आ गए। इसलिए कल आपको तेरह अप्रैलका दिन मनाना है। कल मैं यहा आपके साथ शरीक नही रहूगा। यह मुझे अच्छा नही लगता, पर अब मैंने बिहार जानेका निश्चय कर लिया है।

यह सवाल हो सकता है कि एक दिनके लिए क्यों न रुक जाऊ? लेकिन मैं बिहार भी अपनी मौज-शौकके लिए तो नही जा रहा हू। वहा जाकर भी हिंदुस्तानकी, जो बन पडेगी, सेवा करूगा। उपवास तो रेलगाडीमें भी हो सकेगा। इसलिए मै आज जाऊगा। आप कल उपवास करें और तेरह अप्रैल उसी तरह मनावें जिस तरह पिछले इतवारको ६ अप्रैलका दिन आपने मनाया था।

अगर आप लोगोने इन सात दिनोकी सारी बातें ठीक तरह समझ ली हैं तो आप जितने आदमी यहा आते रहे हैं इतने ही कल निश्चय कर ले कि हम मर जायगे, पर मारेंगे नही। ऐसा हम क्यो कहें कि मारकर मरेंगे? ऐसा भी क्यो कहे कि हमारे हाथमे तलवार या बदूक होगी तभी हममें मरनेकी हिम्मत आयगी। बदूकके सहारे मै नही डरूगा और उसके बिना डर जाऊगा, ऐसा कहनेमे हमारी कौन-सी शोभा है? हम लाठी, तलवार, बदूक सब छोडे और ईश्वरको अपने साथ लेकर चल दें। फिर सब जगह निडर होकर घूमें और यह ऐलान कर दें कि हम हिंदू-मुसलमान कभी भी आपसमे नही लडेंगे।

लेकिन आज तो हम बुरी तरहसे लड रहे हैं। विदेशी लोग जो मिलने आते हैं उनके सामने मैं शरमिंदा हो जाता हू। फिर भी उन्हें तो मे जवाब दे देता हू कि दीवाने बननेवाले चद लोग ही है, चालीस-के-चालीस करोड दीवाने नही बने हैं और मुझे पूरा विश्वास है कि एक दिन वह आयगा जब हिंदुस्तानके सब लोग यह निश्चय कर लेगे कि हम अपनी बात बुद्धिके बलसे हासिल करेंगे, तलवारके बलसे नही। हिंदुस्तान अगर सच्ची आजादी चाहता है तो सभीको यह सबक सीख लेना चाहिए।

दूसरी बात मुझे यह बतानी है कि कोई कितना ही चीखे, हमारे अखबार दुरुस्त होते ही नही है। आज एक अखबारने तो यहातक लिख दिया है कि गाधी इसलिए जा रहा है कि वर्किंग कमेटीके साथ उसका झगडा हो गया है और वर्किंग कमेटीके साथ अब उसकी बनती नही है। और यह किसी छोटे-मोटे मामूली अखबारने नही लिखा है। वह बड़ा प्रतिष्ठित और काफी बिकनेवाला अखबार है। इसे देखकर मुझे शरम आती है कि हमारे देशके अखबार कितने गिर गए है।

अपने जानेका कारण मैंने यहा कल दिया था और वह शुद्ध सत्य ही बताया था। फिर भी अखबारवालेने जो यह लिखा है वह बिलकुल निकम्मी बात है। मै जा तो रहा हूं, पर हममे झगडा थोडे ही हो गया है! हम तो एक-दूसरेसे पूरी मुहब्बत करते है। अभी मौलाना साहब आए थे, राजाजी थे, सरदार थे, नेहरूजी थे और कृपलानी भी थे। सभी लोग आपसमें बडे प्रेमसे बातें कर रहे थे। सिर्फ राजेंद्र बाबू यहा नही आए थे, तो क्या उनका मुझसे झगडा हो गया था इसलिए वह नही आए? कैसी वाहियात बातें है ये सब! हा, ऐसा कह सकते है कि हमारे बीच मतभेद है। पर मतभेद कब नही थे? मतभेद तो सदा रहे हैं। बाप-बेटेके बीच भी मतभेद रहता है, पर यहा तो अखबारवालेका मतभेदपर इशारा नही है। वह तो साफ लिखता है कि हम आपसमें झगड पडे है!

अगर झगडा होनेके कारण मै जाता तो वाइसरायसे जानेकी इजाजत लेने क्यो जाता? नेहरूजी और कृपलानीजीकी इजाजत क्यो मागता? यो ही बिना कहे-सुने न चला जाता!

इतना ही नही, सरदारने तो अभी मुझसे पूछा कि लौटकर कब आओगे? तो मैंने उत्तर दिया, "जब आप हुक्म देंगे।" झगडेकी बात होती तो क्या मै ऐसी बात कहता? मै जब बागी बन जाता हू बडा पक्का बन सकता हू और बडा ही खूबसूरत बागी बनता हू। मै किसीकी सुनूगा नही तो किसीको मारूगा भी नही, न किसीको सताऊगा।

लेकिन लोगोको इस तरह घबराहटमे डालकर अपने अखबारकी बिक्री बढाना, यह उनका पेशा है। पापी पेटको भरनेके लिए ऐसा करना बडी बुरी बात है। मै भी पुराना अखबारनवीस हू और मैंने उस अफ्रीका-

के जगलमें अच्छी-खासी अखबारनवीसी की है, जहापर हिंदुस्तानियोको कोई पूछनेवाला भी न था। अगर ये लोग अपना पेट पालनेके लिए अखबारके पन्ने भरते है और उससे हिंदुस्तानका बिगाड होता है तो उन्हे चाहिए कि वे अखबारका काम छोड दे और कोई दूसरा काम गुजारेके लिए ढूढ ले । अखबारोको अग्रेजीमें राज्यकी चौथी शक्ति बताया गया है । इनसे बहुत-सी बातें बिगाडी या बनाई जा सकती है। यदि अखबार दुरुस्त नही रहेगे तो फिर हिंदुस्तानकी आजादी किस कामकी रहेगी ?

हम लोग भी ऐसे हो गए है कि सवेरे उठते ही कुरानके बिना हमें चलेगा, गीता-रामायणके बिना भी चल जाएगा, लेकिन अखबारके बिना हमारा काम बिलकुल ही नही चलेगा । बडे-बडे लोग भी अखबारके गुलाम बन गए है। अगर सवेरे अखबार न मिला तो 'हाय-तोबा' मच जाती है । अखबारवालोने भी हवाई बातें कर-करके सबको गुलाम बना डाला है, लेकिन वे सारी बाते करीब-करीब निकम्मी ही होती है।

मैं कहूगा कि ऐसे निकम्मे अखबारोको आप फेक दें । कुछ खबर सुननी हो तो दूसरोसे जान-पूछ ले । अखबार न पढेगे तो आपका कोई नुकसान होनेवाला नही है । अगर पढना ही चाहे तो सोच-समझकर ऐसे अखबार चुन लें जो हिंदुस्तानकी सेवाके लिए चलाए जा रहे हो, जो हिंदू-मुसलमानोको मिल-जुलकर रहना सिखाते हो । फिर ऐसे अखबारवालोको भी इतनी धाधलीमें पडनेकी जरूरत नही रहेगी कि उन्हे रातभर जागते रहना पडे और दिनमे भी चैन न ले सके । और ऐसी बेबुनियाद खबरें छापनेकी दौड भी नही लगानी पडेगी ।

भले अखबारवालोको चाहिए कि अगर वे कुछ बात सुन लें कि गाधी-नेहरूके या कृपलानी और आजादके बीच झगडा हो गया है तो उसे छापनेसे पहले गाधीसे या नेहरूसे पूछ ले ।' अगर ऐसा वह पूछने आते तो हम उन्हें डाट बताकर कहते कि ऐसी बेकारकी बात क्यो करते हो ?

आज एक मुसलमान भाईने अच्छा पत्र भेजा है और एक हिंदूने भी बढिया बात लिख भेजी है । मुसलमान भाईने लिखा है कि सातवलेकरजीने ईशोपनिषद्के मत्रका जो अर्थ दिया है वह बडी बुलद चीज है । उसी

तरहका अर्थ 'ओज अविल्ला' का भी है। दोनोमे कोई अतर नही है, कोई अरवी है तो कोई सस्कृत भाषाका है।

हिंदू भाईने पूछा है कि आप कुरानको धर्मपुस्तक मानते है तो मुसलमान क्यो गीता और उपनिषद् आदिको धर्मपुस्तक नही मानते? वे क्यो मस्जिदमें उन्हे नही पढते?

उत्तर सीधा है। सच्चे हिंदूके नाते मैं कुरानको धर्मग्रथ समझता हू, क्योकि कुरानमे खुदाकी तारीफ लिखी है। लेकिन यह कौन-सा न्याय है कि मै मुसलमानसे भी वलपूर्वक मनवाने जाऊ कि हमारे सस्कृत ग्रथोको तुम भी धर्मग्रथ मानो? यह तो कोई भलमनसाहृत नही हुई।

आशा है, हम फिर मिलेंगे। जव जवाहरलाल, कृपलानीजी या वाइसराय वुलायगे तव आ जाऊगा। बिहारसे और नोआखालीसे भी मै आपका और पजाबका काम करता रहूगा। जिस लगनसे आप इतने दिन प्रार्थनामें आते रहे है, इसी लगनसे आप हरदम प्रार्थना करते रहे।

## : १३ :

### १ मई १९४७[1]

भाइयो और वहनो,

यहासे गए मुझे बीस ही दिन हुए है। जव मै गया था तभी मुझे शुवहा था कि शायद जल्दी लौटकर आना पडे। लेकिन मेरा स्थान बिहार और नोआखालीमे था और मै पद्रह दिनके लिए भी यहा रुक नही सकता था। इस वजहसे मै विहार चला गया। मैने कहा था कि मै जवाहरलालका कैदी हू और उनके वुलानेपर आ जाऊगा। उनका और कृपलानीका हुक्म मिलनेपर मै यहा आ गया हू।

यह जानकर आप खुश होगे कि जव मैं यहासे बिहार गया तव लोगोने मुझे वड़ी शाति दी। रास्तेभर किसीने नही सताया। मै

[1] १३ अप्रैलसे ३० अप्रैल तक गांधीजी विहार-प्रवासमें रहे।

आरामसे सोया, थका नही और काम भी कर सका । लौटनेमे ऐसा नही हुआ। लोगोने जगह-जगह शोर मचाया । उन्होने यह नही सोचा कि मुझ-जैसे जईफ आदमीको शाति देनी चाहिए, उसकी नीदमें खलल नही डालना चाहिए । सो न सकनेके कारण आज मै थका-थका-सा रहा। फिर भी दिनमें मैने काम तो किया ही, क्योकि काम ही मेरा जीवन है । विना काम किए मै जी ही नही सकता, पर कम काम हुआ । लेकिन जो वात मुझे सहन नही होती वह है लोगोकी चिल्लाहट और किस्म-किस्मके नारे । आप लोगोके द्वारा मै सभी लोगोको सुनाना चाहता हू कि आगे वे ऐसा शोरगुल न करें, नारे न लगावे । स्टेशनोपर लोग जमा हो जाय तो भली ही वात है, क्योकि आयगे तो दो-चार पैसे हरिजन-चदेके दे जायगे । लेकिन उन्हे अशाति नही दिखानी चाहिए ।

मै आपको वताना चाहूगा कि मैने बिहार जाकर क्या किया ? वहा काफी काम हुआ है । जनरल शाहनवाज एक छोटी-सी जगहपर वैठ गए है । उनको अपने काममें अव फतह मिलने लगी है । जो मुसलमान लोग दु खके मारे आसनसोल चले गए थे वे अव वापस आ गए हैं । आसनसोलमे उन्होने वहुत ज्यादा दु ख पाया और समझ गए कि आराम तो अपनी जगहपर ही मिल सकता है । उनके वाल-वच्चे विलकुल ही सूख गए थे, उनकी हड्डी-पसली निकल आई थी, उनकी किसी किस्मकी परवरिश वहा नहीं हो पाई थी । अव उन्हें दूध दिया जाता है । ताजा दूध तो मिलना अब असभव हो गया है, क्योंकि हमारा सारा गोधन नष्ट हो चुका है । इसलिए उन वच्चोको सूखा दूध दिया जा रहा है । सुखाए हुए दूधमे विटामिन नही रहते और वह जीवन-तत्त्व नही मिलता, जो ताजे दूधमे मिलता है । लेकिन दूधमें जो अपना एक पोषक गुण है वह सूखे दूधमे भी ज्यो-का-त्यो कायम रहता है । आसनसोलसे लौटे हुए वच्चोको वह सूखा दूध दिए जानेके वाद अव वे तदुरुस्त हो रहे है, उनकी पसलिया भर आई है ।

दूसरा सवाल था वडोके राशनका । जव इतने आदमी लौटकर आ गए तव उनके खानेका इतजाम कैसे हो ? जहा उन्हे सताया गया

था वहा खुद तो वे बाजारमे राशन लेनेके लिए जाते डरते थे। सरकारने उनके पास राशन भेजनेकी व्यवस्था की, पर उनके हिंदू-पडोसियोने कहा, यह हमारे मेहमान है। इनका राशन हम पहुचायगे। सरकारी लोगोको इसके लिए परेशान होनेकी जरूरत नही है।

एक दूसरी जगहकी बात है। वहा बहुतसे मुसलमान मारे गए थे। जो बचे थे वे वहा लौटकर जानेमे झिझकते थे। उनकी झिझक मिटानेके लिए उनके साथ आजाद हिंद फौजके कुछ भाइयोको भेजा गया। उनको जाते देखकर हिंदुओने उन आजाद हिंद फौजके सिपाहियोसे कहा कि आप क्यो जा रहे है। हम लोग है इनकी सेवा करनेके लिए। हम मर जायगे तब भी इनकी हिफाजत करेगे। आजाद हिंद फौजके लोगोने कहा कि हमे जनरल साहबका हुकम है। हम नही लौट सकते। तब हिंदुओने कहा, 'हम लोग हमेशा पागल थोडे रहेगे ? हम उस बार तो पागल ही हो गए थे। दस हजार आदमी मिलकर एक हजारको मार डालें इसमे बहादुरी ही कौन-सी है ! अब हम कभी ऐसा नही करेगे।'

इस प्रकार हिंदुओने मुसलमानोका डर मिटा दिया और उन्हे अपनी जगहपर जानेका प्रोत्साहन दिया। नतीजा यह हुआ कि उन्ही मुसलमान भाइयोने खुद उन सिपाहियोको लौटा दिया। मुझे भरोसा है कि अगर बिहार सच्चा उतरता है तो हिंदुस्तानभरमे जगह-जगह जो बाते हो रही है वे सब शात हो जायगी। मेरा कहना यही है कि हम सभीको बहादुर होना है, लेकिन मैने सुना है कि अब तो दिल्लीमे भी कायरताके काम हो रहे है। लुक-छिपकर रोज-ब-रोज कुछ हो रहा है। उधर डेराइस्माइलखामे भी बहुत बुरी बाते हो रही है। अभीतक वे बद नही हुई।

लोग पूछते है, तुम लोगोने जो दस्तखत[1] किए थे वे कहा गए ?

---

[1] आपसी मारकाट बंद करने और मेलके साथ शांतिपूर्वक रहनेके लिए हिंदू और मुसलमानोके नाम एक अपील निकाली गई थी जिसपर गांधीजी और जिन्ना, दोनोने हस्ताक्षर किए थे।

शांति क्यो नही होती ? जो दस्तखत मैंने दिए यह कोई जिन्ना साहब-से मिलकर और उनसे बातचीत करके नही दिए । वाइसरायने आग्रह किया कि तुम दस्तखत दे दो । मैने उनमे कहा कि मै कौन हू देनेवाला ? कांग्रेसका तो मै चवन्नीका मेम्बरतक नही हू । मेरे दस्तखतसे फायदा क्या होगा ? मै तो बिलकुल छोटा आदमी हू । हा, कायदे आजम बडे आदमी है, उनके दस्तखतका बडा असर होगा, लेकिन वाइसरायने मुझसे कहा कि तुम्हारे दस्तखत जिन्ना साहब चाहते है । इसके बिना वह दस्तखतके लिए तैयार नही होते । तुम दस्तखत कर दोगे तो हमें पता तो चल जायगा कि आखिर जिन्ना साहब करना क्या चाहते है । मैने तब दस्तखत कर दिए । इसके बादकी बातें मै छोड देता हू ।

मेरे लिए यह दस्तखत नई बात नही है । जिंदगीभर मैंने यही काम किया है और कर रहा हू । लेकिन जिन्ना साहबके दस्तखत भारी बात है । अगर उनकी कैदमे सारे मुसलमान है तो उन सब मुसलमानोको जिन्ना साहबकी बात माननी चाहिए, क्योकि उन्होने मुसलमानोकी ओरसे दस्तखत किए है । मैने हिंदूकी हैसियतसे दस्तखत कहा दिए है ? मेरी कैदमे कोई नही है । मै किसी भी पार्टीका नही हू । मै सभीका हू । अगर बिहारमे हिंदू फिर पागल बनेगे तो मै फाका करके मर जाऊगा । उसी तरह अगर नोआखालीमे मुसलमान दीवाने होगे तो वहा भी मुझे मरना है । मैने वह हक हासिल कर लिया है । मै जितना हिंदूका हू, उससे कम मुसलमानोका नही हू । सिख, पारसी, ईसाईका भी मै उतना ही हू । भले ही लोग मेरी न सुनें, पर जो मै कहूगा सबकी ओरसे कहूगा और सबके लिए कहूगा ।

लेकिन जिन्ना साहब तो बहुत बडी सस्थाके प्रेसीडेट है । उनके दस्तखत हो जानेपर फिर क्या बात है जो मुसलमानोके हाथसे एक भी हिंदू मारा जाता है ? हिंदुओसे मै कहूगा कि मुसलमान मारते है तो मर मिटो । अगर कोई मेरे कलेजेमे खजर भोक दे और मरते-मरते मै यह मनाऊ कि मेरा लडका उसका बदला ले तो मै निरा पापी हू । मुझे बिना रोषके मरना चाहिए । पर मुसलमान छुरा मारेगा ही क्यों, जब उसे ऐसा न करनेको कहा गया है ?

पर वात यह है कि सियासी[1] मामलेमे जवरदस्ती नही चलेगी, यह अभी उन्हे समझना है। लोग पूछते है कि जव हम दोनोने लिख दिया, दस्तखत कर दिए कि मत मारो तव असर क्यो नही होता ? अव भी मुसलमान शात क्यो नही होते ? डेराइस्माइलखा व सीमाप्रात-मे यह सव क्या हो रहा है ? डा० खानने और वादशाह खानने उसे रोकनेका प्रयत्न किया, पर वहाके लोग कहते है कि हम तो लीगवाले है ।

लीगी होकर भी सीमाप्रातमे लोग अगर जिन्ना साहवकी वात नही मानते तो मैं कहूगा कि जिन्ना साहवका यह परम धर्म है कि और सव छोडकर सवसे पहले उन लोगोको शात करनेका काम करे। अगर वे ऐसा नही करते तो क्यो नही करते ? क्या इस तरह पाकिस्तान लेगे ? अगर उन्हें पाकिस्तान लेना है तो शातिसे लें। तलवारके जोरसे अगर कोई आदमी कुछ ले लेता है तो उससे वडी दूसरी तलवारसे वह छीन लिया जाता है। जवरदस्तीसे पाकिस्तान लेनेकी जिन्ना साहवकी वात कामयाव नही हो सकती ।

परंतु मैं वाइसरायसे भी पूछना चाहता हू कि आपने जव हम दोनोके दस्तखत ले लिए तो आप फिर अव क्यो कुछ नही कर पाते ? आप मेरा टट्टुआ क्यो नही पकडते ? जिन्नाका टट्टुआ क्यो नही पकडते ? इसपर भी अगर हिंदू-मुसलमान लडते रहते है, सिख लडते है तो अग्रेजोको अलग हो जाना चाहिए ।

लेकिन अग्रेज वने रहते है तो आप क्या करेगे ? आप कहेंगे कि हम तलवार लेगे, पर तलवारसे डरकर अग्रेज कुछ देनेवाले नही है। अव भी वे आजादी देनेकी जो वात कर रहे है सो तलवारके कारण नही कर रहे है । उनका कहना है कि हिंदुस्तानने दुनियाको नया रास्ता वताया है । यही हमारी आजादीकी वजह है । वैसे तो दुनियामें तलवारका वदला तलवारसे लेनेवाले वहुत होते है । वदला क्या, वे तो एकके वदले-में दसको काटनेकी वात करते है । मैं कहूगा, दस नही एकके वदले सौ भी काटो, फिर भी शाति न होगी । मारकर मरनेमे कोई वहादुरी नही है। वह झूठी है । न मारकर मरनेवाला ही सच्चा शहीद है ।

---

[1] राजनैतिक ।

आप पूछेंगे, तब क्या सभी हिंदू, सभी सिख मर जाय ? मैं कहूंगा, हा । ऐसी शहादत कभी बेकार नही जानेवाली है ।

मेरी इस बातपर आप चाहें मुझे धन्यवाद दें, चाहें गालिया दे, मैं तो अपने दिलकी ही बात आपसे कहूंगा । जब आप शातिसे सुन रहे है तब दिलका दर्द ही आपके सामने रखूंगा और कहूंगा कि आप बहादुर बने, डरें नही । हमको डराकर कोई लेना चाहेगा तो हम कुछ भी, एक कौडी भी नही देंगे । समझाकर लेने आवे तो करोड भी दे देंगे। अगर आप ऐसी बहादुरी नही अपनाते और हिंदू, मुसलमान, सिख सभी पागल हो जाते है तो अंग्रेज हिंदुस्तानके लिए कुछ भी करें, कुछ भी दें, वह हमारे हाथमें रहनेवाला नही है । हमे जो कुछ हासिल करना है वह समझा-बुझाकर हासिल करना है । इतना इल्म अगर हमने सीख लिया तब तो हमारी खैरियत है, नही तो हिंदुस्तानका खातमा है, इसमें मुझे जरा भी शका नही है ।

## : १४ :

### २ मई १९४७

आज कुरानकी आयतका एक हिस्सा बोला जा चुका था तब एक नौजवानने नारा लगाया—'बद करो, बद करो, हिंदू-धर्मकी जय, बद करो, हिंदू-धर्मकी जय ।' सुनकर गाधीजीने प्रार्थना रोक दी और कहा—"ठीक है, आज उसीके मनकी होने दो ।" गाधीजीने उसे शात होनेको कहा, लेकिन वह चिल्लाता रहा । इसी बीच पुलिसवाले उसे पकडकर ले गए । यह गाधीजीको ठीक न लगा । उन्होने कहा—पुलिस-वालोतक अगर मेरी बात पहुच पाती है तो मैं कहूंगा कि कृपा करके वे उस आदमीको छोड दें और यहा आने दें । प्रार्थनामें अमन रखनेके लिए पुलिस बीचमें आए, यह मुझे बिलकुल नही सुहाता । रोज पुलिस यहा गिरफ्तारिया करती रहे और उसके बलपर मैं प्रार्थना करू तो वह तो प्रार्थना नही हुई । मैं तो तभी प्रार्थना कर सकता हू जब सभी लोग अपनी

खुशीसे उसे करने दे। आपने देखा कि इस जवानने प्रार्थना बद करनेको कहा तो मैंने बद कर दी। कल भी अगर वह बद करनेको कहेगा तो मैं बद कर दूगा, लेकिन उसने जो कहा 'हिंदू-धर्मकी जय' तो धर्मकी जय इस तरह नही हो सकती। उसे समझना चाहिए कि इससे धर्म डूब रहा है। दूसरोको प्रार्थना न करने देनेसे धर्म-रक्षा कैसे हो जायगी ? पर इसमें उसका दोष नही है, हवा ही ऐसी चली है। आजकल सब चीज उलटी निगाहसे देखी जाती है, कोई सीधी बात तो समझता ही नही। इसलिए अगर कोई मुझे प्रार्थनासे रोकता है तो मैं गम खा लूगा।

परतु मुझे इस बातका ज्यादा दर्द है कि उसने बीचमें शोर मचाया। अगर शुरूसे ही वह कह देता तो मैं पहले ही रुक जाता। इसमे पुलिसको बीचमे आनेकी क्या बात थी ? इतनी पुलिस यहा प्रार्थनामें शाति रखनेके लिए रहती है, इससे मैं शर्मिदा होता हू। मेरे धर्मकी रक्षा पुलिस कैसे कर सकती है ? मैं खुद करूगा तभी मेरे धर्मकी रक्षा होगी। बल्कि 'मैं धर्म-रक्षा करूगा' ऐसा कहना भी घमड है। मेरे धर्मकी रक्षा ईश्वर करेगा। आज मेरे दिलमे प्रार्थना है तो ईश्वर मेरी रक्षा करेगा ही। बाहरकी प्रार्थना न हुई तो क्या हुआ ?

लेकिन आप लोग क्या कर सकते है ? आप तो शातिसे बैठे है। ईश्वरका ध्यान करने, अपनेको कुछ अच्छा बनानेके लिए आप यहा आए है। एकके कारण आप सबको भुगतना पडता है। पर उस एकको इतने सब मिलकर दबा दे और फिर प्रार्थना करे तो उससे ईश्वरका दर्शन होनेवाला नही है। वह तो अपना ही दर्शन होगा।

मै चाहता था कि वह लडका शात रहकर मेरी बात सुनता। मै उसे समझाता। अगर वह आज न समझता तो कल समझता। कल न सही, परसो समझता। कुछ भी हो, हमें यह याद रखना है कि धर्मका पालन जोर-जबरदस्तीसे नही हो सकता। धर्मका पालन करनेके लिए मरना होगा। ससारमे ऐसा कोई धर्म पैदा नही हुआ जिसमे मरना न पडा हो। मरनेका इल्म सीखनेके बाद ही धर्ममे ताकत पैदा होती है। धर्मके वृक्षको मरनेवाले ही सीचते है। धर्म उन लोगोके कारण बढता है जो ईश्वरका नाम लेते है, ईश्वरका काम करते है, ईश्वरका स्तवन करते है,

उपवास और व्रत करते हैं और ईश्वरसे आरजू करते रहते है कि हे भगवन, हमें रास्ता नही दीखता, तू ही दिखा। तब लोग कहते हैं कि वह तो भक्त हैं और उसके पीछे चलते है। धर्म इसी तरह बनता है। मारकर कोई धर्म नही पनपा; मरकर ही धर्म पनपा है। यही धर्मकी जड है। सिख धर्म ऐसे ही बढा है।

पैगंबर मोहम्मद साहबने भी बिना डरके हिजरत की और हजारो दुश्मनोके हाथो उनको और हजरत अलीको उनकी श्रद्धाके कारण खुदाने बचाया, गोया मौतके मुहमें खेलकर ही मोहम्मद साहबने इस्लामकी जड मजबूत की।

ईसाइयोका इतिहास भी ऐसा ही है। बौद्ध धर्मको भी अगर हम हिंदू-धर्मसे अलग मानें तो वह भी तभी बढा जब कई लोग उसके लिए मरें। जितने धर्म हैं उनमें एक भी मैंने ऐसा नही पाया जिसमें शुरूमें कुरबानी न हुई हो। जब धर्म बन जाता है तब बादमें उसमें बहुत सारे लोग आ जाते है और गलत अभिमान पैदा हो जाता है। अब तो हिंदू-धर्मवाले भी मार-काटपर उतर आए हैं, जब कि हिंदू-धर्ममें कभी खून-खराबी करना नही सिखाया गया है।

आज तो धर्मके नामसे सभी भयभीत हो उठे हैं। लोगोको न जाने इतना भयभीत क्यो किया जाता है? हिंदू क्या, सिख क्या, सारा पंजाब व्याकुल हो उठा हैं। उधरसे बंगालकी चीख सुनाई देती है। लोग कहते हैं—पंजाब व बंगालके दो टुकडे करो। अगर टुकडे करने ही है तो वे वाइसरायके पास क्यो जाते है? मेरे पास क्यो नही आते? आप लोगोके पास क्यो नही आते? पाकिस्तान दिया जा रहा है तो क्या वह हिंदुओको और सिखोको मटियामेट कर देनेके लिए है?

जिन्ना साहबने तो कहा है कि पाकिस्तानमें अल्प मतवाले हिंदू और सिख पूरे सुरक्षित होंगे, उन्हें परेशान नही किया जायगा, पर आज ऐसा क्यो नही है? पंजाब व बंगालमें जो हो रहा है उसीमें तो मैं उनके पाकिस्तानकी झलक देखूगा न? अगर सचमुचमें पाकिस्तान ऐसा नही है तो जिन्ना साहब जैसा कहते है वैसा करके क्यो नही बताते?

मुस्लिम-बहुमतवाली जगहोमे सिख और हिंदू-जातिके एक-एक आदमीकी हिफाजत क्यो नही होती ?

सिंध, जहा हिंदू केवल पच्चीस ही फी सदी है, वहा उन्हे क्यो इतना डरना पड रहा है ? क्या पाकिस्तानका मतलब यह है कि उसमे सिवा मुसलमानके सभी हिंदू, सभी सिख, सभी ईसाई और दूसरे धर्मवालोको गुलाम बनकर रहना है ? ऐसा हो तो वह पाकिस्तान नही है । और हिंदुस्तान भी तभी सही हिंदुस्तान कहा जा सकता है जब उसके हिंदू बहुमतवाले इलाकोमे मुसलमानके मासूम बच्चे तकको जरा भी आच न आवे ।

जिन्ना साहब पूछ सकते है कि हिंदुओने क्या किया ? बिहारमे हिंदुओने भी तो ऐसा ही किया है ? ठीक है कि उन्होने गलती की, पर आज बिहारके हिंदू पछता रहे है । प्रधान मत्रीतक कहते है कि मैने गुनाह किया है । अगर सभी जगह ऐसा हो तो मै समझूगा कि कुछ बना । लेकिन आज तो सबने अपने धर्मका पालन छोड दिया है और दूसरा कोई पालन करता है तो कहते है कि हम उसे मारेगे । यह ठीक बात नही है । मुसलमान भाइयोको भी अपने कम तादाद पडोसियोसे कह देना चाहिए कि सभी अपने धर्मका पालन करें, हम बीचमें न आयगे ।

आखिर हमारे हाथमे एक चीज आ रही है, उसे क्यो छोडे ? लेकिन सभी उसे छोडनेकी कोशिश कर रहे है । हिंदू , मुसलमान, सिख, ईसाई सभीको आपसके झगड़ोके इस पापसे छूटना चाहिए और छूटनेका एक ही तरीका है । वह यह कि हम ईश्वरसे डरें । फिर हथियारकी माग नही होगी, तब कोई नही कहेगा कि हमे मिलिटरी चाहिए, राइफल चाहिए, बदूक चाहिए । पर आज तो सब जगहसे आवाज आ रही है कि हमे सिखो-जैसी कृपाण चाहिए । वह भी छोटी है, इसलिए बडी चाहिए । यह सब किसको मारनेके लिए ? अगर सबके घरमें ऐसे हथियार रहेगे तो आप उसके बीच मुझे न पायगे ।

मेरे पास तो एक ही उपाय है, जिससे हम अग्रेजोकी उस बडी ताकतको भी बिलकुल मिटा दे सकते है, जो इस समय जमी पडी है । वह तरीका है—'ना' कहना, असहयोग करना । शातिपूर्ण असहयोगसे वे

उखड जायगे । यह चीज बडी ही बुलद है । इसको अपनानेके बाद फिर हमे फौजी तालीम लेनी नही पडेगी ।

## : १५ :

### ३ मई १९४७

"भाइयो और बहनो,

"रोजकी तरह आपको शात हो जाना चाहिए। आप प्रार्थनाके लिए आते है, इसलिए आनेके बाद शात ही बैठे रहें। बातें तो हरदम होती ही रहती है। प्रार्थनासे लौटकर जाय तब बातें कर सकते है। इससे पहले मौन रहनेमे ही प्रार्थनाका महत्त्व है।"

प्रार्थनामे कुरानकी आयतके पाठको एकने फिर टोका। गाधी-जीने प्रार्थना रोक दी और बोले—ऐसा मालूम होता है कि बाकी प्रार्थना तो ठीक करने दी जाती है और सिर्फ कुरानकी आयतवाली प्रार्थना ही नहीं करने दी जाती। इसलिए कलसे 'ओज अबिल्ला' से ही मै प्रार्थना शुरू करूगा। अबतक तो प्रार्थना बौद्ध मत्रसे शुरू होती थी। यह जापानी भाषाका मत्र है। सेवाग्राममे मेरे पास एक जापानी साधु रहते थे। वे नित्य प्रात काल एक घटेतक आश्रमकी प्रदक्षिणा करते हुए अपने डिमडिमकी आवाजके साथ बडी बुलद आवाजसे और मधुरतासे इस मत्रका घोप करते थे। उस जापानी भाईकी इच्छा उसे प्रार्थनामे सुनानेकी हुई तो मैने उसकी बात मान ली और प्रार्थनामे सबसे पहले यह मत्र कहा जाने लगा। पर कलसे मै 'ओज अबिल्ला' से प्रार्थना शुरू करूगा और उसमें किसीने नही रोका तो आगे प्रार्थना होगी, अन्यथा आप लोग मौन रहकर दिलमें प्रार्थना करेंगे और शातिसे लौट जाएगे।

इतना मै आपसे कहूगा कि आप लौटे तब सभी धर्मोकी प्रार्थना अपने दिलमें लेकर जाए। आप इतना समझ ले कि सभी मजहब अच्छे है। विश्वास रखे कि जितने भी धर्म है, सब-के-सब ऊचे है। धर्ममें कसर

नहीं है। कसर है तो उनके आदमियोंमें है। हरेक धर्ममें कुछ-न-कुछ गंदे आदमी पैदा हो गए हैं। ऐसी बात नहीं है कि किसी एक धर्मने ही गंदे आदमियोंका ठेका ले रखा हो। इसीलिए हमारा कर्तव्य हो जाता है कि हम उन गंदे आदमियोंकी ओर न देखकर उनके धर्मकी अच्छाईको देखें। हरेक धर्ममें जो रत्नकी-सी बात हाथ आवे उसको ले लें और अपने धर्मकी अच्छाईको बढाते चलें।

अब जो बात मैंने आज कहनेको सोची थी वह भी कह दूं। आजकल हमारी हालत बड़ी ही नाजुक है। हमारा हिंदुस्तान इतना बडा मुल्क है कि सारी दुनिया हमारी ओर देख रही है। जवाहरलालने जो एशियाई कान्फ्रेंस बुलाई उसमे आपने देखा कि सबकी निगाह हिंदुस्तानकी ओर लगी थी। शहरियार साधारण आदमी नही है। वह काफी बड़ा आदमी है। लेकिन उसकी भी नजर आप लोगोंपर यानी हिंदुस्तानपर ही है। उधर अरबवाले भी हमको ही देखते हैं कि अगर हिंदुस्तानमें कुछ होगा तभी एशियाके मुल्क कुछ कर पायगे। जापान तो कुछ न कर सका। इसमे शक नही कि जापानने बहुत ही बहादुरी दिखाई। कला भी बहुत बताई, पर आज वह कहां है? वह एशियाकी नाक नहीं बन पाया है। उसकी हालत पिछड़ गई है। उसे देखकर दिलमें खेद होता है।

हम तो अभी आजादी लेकर भी नही बैठ पाए है। इसपर भी दुनिया हमारी बात देखना चाहती है; क्योंकि हमने लड़ाई ही ऐसी ली कि आजतक आजादीके लिए ऐसी लडाई और किसीने नही ली। धर्मके नामसे तो ऐसी लडाइयां लडी गई है, पर आजादीके नामपर तो ऐसी लड़ाई पहली यही है। सन् १९१९ के अप्रैलकी छठी तारीखको हम लोगोंने ऐसा कदम उठाया कि अब आजादी करीब-करीब हमारे हाथोंमें आ गई है और सबको उम्मीद बंध गई है कि अगर हिंदुस्तान आजाद होता है तो सारा एशिया आजाद होता है और फिर अफ्रीका भी। इसका मतलब होगा कि सारी दुनियाने नया जन्म पा लिया।

एशियाई कान्फ्रेंसके प्रतिनिधि यहांसे यही सबक लेकर गए है। वे जब यहां आए तब यहांका सारा वातावरण साफ नही था, पर उन्होंने

तो हमारे यहांका मैल नही देखा। आजादी देखी। समझनेवाले समझते हैं कि जब नदीमें बाढका पानी आता है तब वह गदला होता है। वैसे ही हमारे यहा स्वतन्त्रताकी बाढका पानी आता है तब वह गदला होता है। हमारे यहा स्वतन्त्रताकी बाढ आई है तो कुछ बदअमनी हो सकती है; पर अब हमारा काम है कि जैसे बादमें गगाका पानी निखर जाता है वैसे ही हम भी अपनी आजादीको गगाजलकी-सी स्वच्छ और पवित्र बनावें।

यह कैसे होगा? अधर्मको धर्म माननेसे हिंदुस्तानकी रक्षा होनेवाली नहीं है, न धर्मकी आजादी ही उस तरहसे मिल पायगी। लेकिन आज हो क्या रहा है? डेराइस्माइलखामें क्या हुआ? हजारामें क्या हुआ? सारे सीमाप्रातमे यह कैसा ऊधम है? तलवार लाओ, भाले लाओ, बदूक लाओ। जाहिरा तौरसे भी लाओ और खुफिया तौरसे भी लाओ। बमके गोले भी चुपके-चुपके बनाओ। क्यो कहा जा रहा है कि मार-पीट करेंगे, धमकाकर और डराकर मनमाना करायगे?

इन सबसे हम न अपनी रक्षा कर सकेंगे, न औरोकी। न भारत आजाद हो सकेगा, न एशिया। और दुनिया भी आजादीसे वचित रह जायगी।

इसलिए हम सब प्रार्थना करे और शुद्ध भावसे समझें कि सब मजहब एक हैं। हम एक-एक अच्छे बनेंगे तो भी बहुत बडा काम हो जायगा।

दूसरी बात मुझे बतानी है अखबारोके बारेमें। एक अखबारने हमारे वजीरोके साथ वाइसराय साहबकी क्या बातें हुई यह बताया है। वर्किग कमेटीमें क्या हुआ इसका बयान भी उसमे आया है। वह छोटा अखबार नही है। हमारे दुश्मनके रूपमें वह नही चलता। वह तो काग्रेसके हितमे चलता है। उस अखबारने अनुमान लगाया है कि वाइसरायने क्या तजवीजे सोची है? वे इस तरह अनुमान करें यह भारी गलतीकी बात है। वाइसरायको खुदको ही कहने देना था कि उसने क्या करना विचारा है। वर्किंग कमेटीके कामकी भी अटकल क्यो लगाई जाय? वर्किग कमेटीकी तरफसे जो बयान दे दिया जाय उसीको प्रकाशित किया जाना चाहिए और कुछ नही होना चाहिए।

मै जानता हू कि बहुतसे अखबारनवीस ऐसे होते है जो थोडा इधर पूछते है, थोडा उधर पूछते है और बात गढ लेते है। लेकिन मैं कहूगा कि वे लोग उच्छिष्ट भोजन खाते है। उच्छिष्ट भोजन करना अखबारनवीसका धर्म नही है।

अग्रेजोने अपने एक अच्छे आदमीको यहा भेज दिया है। वह इग्लैडकी नाक रखनेके लिए आया है। जिस खूबीसे उसे भेजा गया है उसी खूबी और नीयतसे वह काम कर रहा है।

फिर क्या हक है कि उसकी बात बिना उससे पूछे जाहिर की जाय ! क्या हक है किसीको कि वह मीठी-मीठी बाते करता हुआ सबको फुसलाता फिरे और कुछ बात उससे निकाल ले, कुछ मुझसे निकाल ले और अखबारमे छाप दे ?

मै भी तो पिछले पचास वर्षोसे अखबारनवीस रहा हू । मै जानता हू कि अखबारोमें क्या चलता है। इग्लैड और अमरीकाके अखबारोमें क्या-क्या चल रहा है, इसका भी मुझे पता है । पर हम इग्लैड-अमरीकाकी गदगीका अनुकरण क्यो करें ! अगर दूसरोंकी गदी बातोका हम अनुकरण करेगे तो मर जायगे ।

मै नही कहता कि इसने गलत ही लिखा है। उसमे जो-जो बाते है कुछ सही है, कुछ गैर सही है। खिचडी पकाकर दे दी है। ऐसी अखबारनवीसी मै बिलकुल पसद नहीं करता।

आप लोगोके मार्फत मै सभी अखबारनवीसोको सुनाना चाहता हू कि इस तरह पैसे पैदा करनेकी वे कोशिश न करें। सीधे ढगसे अगर पेट नही भरता तो भले ही वह फूट जाए, पर वे ऐसी बात क्यो करे कि हिंदुस्तानका पेट फूटे ! और इसने तो शीर्षक भी ऐसा दे दिया है जो किसीके ख्वाबमे भी नही आया है ।

अच्छा हो कि हम लोग इग्लैड-अमरीकाकी गंदी बातको छोडकर अच्छी बातको ग्रहण करे ।

इस सिलसिलेमे आज जवाहरलाल मेरे पास अपना दु ख बता रहे थे। किसे-किसे वे अपना दु ख कहे ! मैं भी उन्हे क्या दिलासा दू ?

हमने धर्मका युद्ध किया है। धर्मसे ही हम आजादी पानेवाले है। अखबार-नवीस भी उसमें हमे मदद दे, यही प्रार्थना है।

## : १६ :

### ४ मई १९४७

"भाइयो और बहनो

"आज प्रार्थना कुरानसे ही शुरू की जायगी; पर इससे पहले मैं पूछूगा कि कोई ऐसा भी है जो इतने सारे मजमेको प्रार्थना न करने देना चाहता हो? अगर प्रार्थना शुरू होनेपर कोई रोकेगा तो वह रुक जायगी, पर वह बहुत असभ्यता होगी। इसलिए आप कोई रोकना चाहे तो शुरूसे ही रोक सकते है। आपमें है कोई ऐसा?"

सभाके बीचमेंसे एक आदमी बोला, "मैं हू।"

"क्यो?" गाधीजीने पूछा।

"मदिरमे कुरानका पाठ नही हो सकता।"

"इतने बडे मजमेको क्या आप रोकना चाहते है?"

"जी हा।"

गाधीजीने लोगोको सबोधित करते हुए कहा—"आप लोग सुने, मै इससे बात करूगा। देखू तो सही, उसके मनकी क्या दशा है?"

फिर उस आदमीको सबोधित करते हुए गाधीजी बोले, "आपको गुस्सा करनेकी जरूरत नही है। आप शातिसे मुझे समझाइए कि जब मै रोज इस मदिरमे प्रार्थना करता हू तो आज क्यो न करू?"

"मदिर पब्लिकका है। पब्लिकके मदिरमें आप न करें।"

"है तो मदिर पब्लिकका, लेकिन मदिरके पुजारी या ट्रस्टी तो मुझे रोक नही रहे है। फिर आप भगवानका नाम लेनेवाले इतने आदमियोको क्यो रोकना चाहते है? यह मेरी समझमें नही आता।"

"क्योकि मै भी पब्लिकका आदमी हू।"

"खैर, तो आप प्रार्थना नही करने देंगे?"

"नही ।"

"अच्छा, तो प्रार्थना वद करता हू । लेकिन मै आप लोगोको यह बात बताना चाहता हू कि धर्ममें सभ्यताका और अहिंसाका क्या स्थान है। आप लोग रोज ही मेरी प्रार्थना रोकते रहे तो उसमे तौहीन मेरी नही है, आपकी है । तरीका तो यह होना चाहिए कि एक आदमी अगर इतने आदमीकी वात सुनना नही चाहता है तो वह वाहर चला जाय। इतनी वडी सभामे कैसे हो सकता है कि एक आदमी उसे रोक दे ? यह और कही नही हो सकता, मेरे पास यानी अहिंसा जगतमे ही हो सकता है । मदिर सबका है, इसका मतलब यह नही होता कि एक आदमी जैसा चाहे रोडा अटकाता फिरे। ऐसा हो तब तो मदिरका सारा काम ही रुक जाय। मै अकेला होता और वह रोकता तो बात और थी, पर यहा इतने लोगोमें वह चीखता रहे और मै प्रार्थना करू तो आप गुस्सेमे आ जायगे । उसको गाली देंगे और पुलिससे उसे पकडवा देंगे । इसमे हमारी कौन-सी शोभा होगी। ऐसा होनेपर दुनिया हमें क्या कहेगी ?

"इसलिए मै प्रार्थना रोक रहा हू । पर 'ओज अविल्ला' तो वे नही रोक सकते। वह तो मेरे मनमें है ही । हम आज उसे न कहेंगे, केवल दो मिनिट मौन बैठेंगे और उसमें आप यही प्रार्थना करेंगे। ठीक है कि 'ओज अविल्ला' आपको कठाग्र नही है, पर मौन रहते हुए राम-रहीम दोनो एक ही है, ऐसा आप मनमें समझें । यानी हिंदू-धर्म और मुसलमान-धर्म दोनो महान् है। दोनों धर्मोमें कोई भेद नही है। मेरी समझमे यह बात ही नही आती कि दो धर्म आपसमें एक दूसरेको दुश्मन क्यो मानें और किस वजहसे माने। इसलिए मै चाहता हू कि शांतिमे आपका यही मत्र हो कि 'तू ईश्वर है, तेरे हजार नाम है ।' मैने वताया था कि हमारे धर्ममें विष्णुसहस्रनामका बडा चलन है; वल्कि मै तो मानता हू कि दुनियामे जितने आदमी है उतने ईश्वरके नाम है। ईश्वर, भगवान, खुदा, गॉड, होरमसजी कुछ भी कह लो उसीके नाम है। और इन सब नामोसे भी वह ज्यादा है । इतने बडे ईश्वरको, जिसे कोई पहचान नही सकता, उसका नाम लेनेसे रोकनेकी बात कोई कैसे कर सकता है ? ऐसा करना तो निरा अविवेक है, असभ्यता है, हिंसा है ।

"मौनके साथ आप आख मूदकर बैठ सके तो और भी अच्छा। इतनी देरमे अगर उस भाईको समझ आ जाएगी और वह रोकना नहीं चाहेगा तो और प्रार्थना करेगे, नही तो मुझे जो बाते बतानी है बताऊगा।"

इसके बाद सारी जनता गाधीजीके साथ आख बद करके दो मिनिट-तक मौन बैठी रही। वातावरण अत्यत शात और पवित्र था।

दो मिनिट समाप्त होनेपर गाधीजीने कहा---

आज मुझको वाइसरायके पास जाना पडा था, यह आप जानते ही है। डेढ घटेतक हम बैठे और हमारे बीचमें बहुत अच्छी-अच्छी और कामकी बाते हुई। सभी बाते मै यहा नही सुना सकता; पर एक बात बताऊगा।

वाइसरायने मुझे कहा कि तुम मेरी ओरसे लोगोको कह दो या तुम्हारा निजका विश्वास हो तो अपनी ही ओरसे कह दो कि 'मै ब्रिटिश हकूमतको यहासे ले जाने और इस मुल्कमे ब्रिटिशका राज खत्म करने आया हू। एक दिनमे तो इतनी बडी हकूमत समेटी नही जा सकती। इतनी बडी फौज चुटकी बजाते-बजाते हटाई नही जा सकती। लेकिन यह भरोसा रखो कि ३० जून (सन् १९४८) के बाद हम यहा बिलकुल रहनेवाले नही है। मै इस कामको करनेके लिए यहा आया हू। और जितना बन पडता है, उसे कर रहा हू।

लेकिन तुम लोगोके अखबारोमे कैसी-कैसी बातें आती है, इसे देखकर मै हैरान हो जाता हू। मेरा काम रुक जाता है। एक तो तुम लोग आपसमे लडते हो और फिर उसमें अग्रेजोका दोष ढूढते हो और उन्हें बदनाम करते हो। माना कि अग्रेजी सल्तनतने आजसे पहले भूल की है, पर अब तुम्हारे झगडोमे अग्रेजोका कितना हिस्सा था इस बातको तुम लोग भूल जाओ। अग्रेजोने 'ऐसा किया, वैसा किया' ऐसी बात रटते रहनेपर कुछ भी सही काम बननेका नही है। ऐसी बातें मत कहो। आगेके काममे पिछली बातोकी चर्चा छोडो।

पर तुम्हारे अखबार ऐसा ही करते है और उनकी इन हरकतोसे तो सारी बात बिगड जाती है। मैने तो किसीसे कोई बात ऐसी नही कही थी, जिससे अखबारवाले कुछ जान ले। मेरे पासके रहनेवालोमेंसे भी किसीने ऐसी बात नही कही है।

हिंदुस्तानके लोगोको थोडी-सी तो सभ्यता रखनी चाहिए। अपने अखबारोमें सुर्खिया भी वे ऐसी दे देते है कि वे बातको बहुत तोड-मरोड देती है। यह किस आधारपर लिख दिया है कि सीमाप्रातमे खान-साहबका अमल बद हो जायगा और फिर राष्ट्रवादी अखबार ऐसा लिखते है तो मुसलमान अखबार उससे भी बढ-बढकर सुर्खिया देते है।

इस तरह तो आपसी जहर और भी बढ जायगा। मै यहा जहर बढानेके लिए नही आया हू। आप लोग हिंदू, मुसलमान, सिख, पारसी, ईसाई सब मिल-जुलकर रहने लगोगे तो उसमे हम ब्रिटेनवालोका नाम अच्छा ही कहलाएगा कि जब छोडा तब सबको एक करके, मिलाकर छोडा।

वाइसरायने यह भी कहा—"मै बता देना चाहता हू कि हिंदुस्तानके लोग अगर आजादी चाहते है तो उन्हें कुछ खामोशीसे रहना चाहिए। ऐसा करना हम नही चाहते कि हम चले जाय और आप लोग आपसमें लडते रहें। इसलिए सब बात सुलझानेकी मै भरसक कोशिश करता हू, नतीजा कुछ भी हो। तीस जून '४८ को हमें जाना ही है, इसमें कोई शक नही है, उस बातको ध्यानमे रखकर मै चलता हू।

"मेरा एतबार करोगे तो मै कहना चाहता हूं कि मै अपने अंतःकरणको पूछ-पूछकर हरेक काम करता हू। यह ठीक है कि मै जहाजी बेडेका कमाडर हू और हिंसा-शक्तिपर विश्वास करता हू, पर जैसे आप ईश्वरको मानते है वैसे मै भी अपनी शक्तिभर ईश्वरको मानता हू और मै वही करता हू, जो मेरी अन्तरात्मा मुझे सही बताती है। खुदाने मुझे जैसी अकल दे रखी है उसीके मुताबिक चलनेवाला मै हू। इसके अलावा मै दूसरी तरहसे ब्रिटिशकी सेवा कर भी नही सकता।

"मै अपनी पूरी कोशिश करूगा कि तुम सब लोग मिल-जुलकर काम करो। मै ऐसी कोई बात करना नही चाहता, जिससे अल्पसख्यकोके साथ अन्याय हो जाय। वरना लोग कहेंगे कि हमने मुसलमान, पारसी, सिख आदिको दबाकर बहुसख्यक हिंदुओको सब कुछ दे दिया।

"हमारे जानेके बाद तुम लड़ना चाहोगे तो बीच-बिचाव करने कौन आयगा? अभी तो मैं खामोशीसे समाधानका प्रयत्न कर रहा हू, पर जब मेरा धीरज खतम हो जायगा तब मै चुप न रहूगा। अब तो रक्षा-सदस्य

भी आपका ही है। लेकिन उससे भी बात बनती दीख न पडेगी तो अभी यहाका कमाडर तो अग्रेज है। गोरी फौज भी छोटी नही है और उनके सिवाए आदमी भी है। इन सबको लेकर मै अपने धर्मका पालन करूगा, लेकिन वैसे ही आप लोग मेरी बात मान ले तो मेरा काम कुछ आसान हो सकता है।"

सो वाइसराय साहबका काम कठिन ही है, पर अग्रेज लोग कठिन बातसे भागनेवाले नही होते।

आप लोगोको यह कहनेकी बात नही थी, पर मुझे लगा कि हम इतने सब मिले है तो आज यही कह दू और आप लोगोकी मारफत अखबारवालोसे भी कह दू।

कल ही मैने आप लोगोसे कहा था कि जबतक हमने माउटबैटन साहबका विश्वास खोया नही है तबतक उनके बारेमे हमे कुछ भी इधर-उधरकी बात कहनी नही चाहिए। हम ठीक चलेगे फिर भी अगर वह कुछ न करेगे तो हम अग्रेजोसे कह सकेगे कि आपके वाइसराय एकके बाद एक आते तो है आजादी देनेके लिए, पर वे हमे दबाते ही चले जाते है।

यह सब हमे असभ्य भाषामे कहनेकी जरूरत नही है। हरेक बात मीठी भाषामे कही जा सकती है। अगर हम असभ्यता बरतते है तो अपना ही गला काट लेते है।

अगर हम आपसमे भी लडते ही रहते है तो उनका जाना कठिन हो जाता है। उनके हाथमे डिफेस तो है, पर उससे तो वे बाहरके हमलावरोको रोक सकते है। जब हम आपसमे लडे तब वे किस तरह हमे रोके? वे तो कहेगे हिंदू मुसलमानोको बुरे बताते है और मुसलमान हिदुओको। उसमे वे क्या करे? उनको तो जाना है। हम लडते ही रहेगे और ३० जून आ जायगी और उनसे कुछ हो नही सकेगा तो हम कहेगे अब आपका अधिकार नही, आप जाइएगा।

अगर वे रह जाते है तो फिर वे हिंदूको भी और मुसलमानको भी दोनोको मार-मारकर झगडा करनेसे रोक सकते है और उन्होने यह करके दिखाया भी। एक अग्रेजके मारे जानेपर हजार-हजार आदमीको मौतके घाट उतार दिया गया है। पर जाते समय वे ऐसा नही कर सकते।

इसलिए हमारा कर्त्तव्य है कि उनके यहासे जानेका काम हम अपने विश्वाससे आसान करे। उनकी मुसीबत बढावे नही।

पर आज क्या है! खाना नही मिलता, कपडा नही मिलता, मुझे और आपको तो मिल जाता है, पर करोडो ऐसे लोग मुल्कभर मे पड़े है जिन्हे कुछ भी खाना नही मिलता, न कपडा मिलता है। आज मदरासके वजीर आए थे। उन्होने बताया कि वहा बाढ आ गई है और फसल मारी गई है। खानेकी किल्लत है। अगर हम आपसमे न लडते तो गरीबोको खाना पहुचा सकते थे। खाना-पीना देनेके लिए हिंदू-मुसलमान नही देखे जाते—मुल्कके सभी लोगोको वह देना होता है।

पर आज तो सबका एक ही काम हो गया है—बस, काटो और मारो, वह भी वहशियाना तरीकेसे। जो हिंदू मिले उसे मुसलमान मारे, जो मुसलमान मिले उसे हिंदू।

अगर हम ऐसे जगली बन जाए और कहे कि अग्रेजोके जानेके बाद हम अच्छे बन जायगे तो यह सारा गलत खयाल है।

एक बात और बताता हू। जनरल शाहनवाज आज आए थे। बिहारसे मेरे चले जानेपर भी वे वहापर काम करते है। वेतन नही लेते। फिर भी बाकायदा पद्रह दिनकी छुट्टी लेकर घर जा रहे है। उन्होने बताया कि बिहारमे जो मुसलमान लौटकर नही आते थे और जिन्हे हिंदू पहले डराते थे वे भी अब लौट आए है, क्योकि समझानेपर हिंदू अपना धर्म समझ गए और उन्होने मुसलमानोके स्वागतके लिए लगातार दो दिनतक परिश्रम करके उनका रास्ता साफ किया और जो झोपडिया ढह गई थी उनके बनानेमे भी योग दिया। दूसरे देहातोमे भी ऐसा ही अच्छा काम हुआ है।

अगर ऐसा ही चलता रहेगा तो बिहारके भागे हुए सभी मुसलमान लौट आयगे। उन्हे पैसेकी मदद तो सरकार देती है, पर हिंदुओको चाहिए कि उन्हे डरानेवालो, रोडा अटकानेवालोको वे समझावे। तब यह काम बन जायगा।

सार यह कि आजकल जो 'काटो-काटो' की पुकार मची है उसके

बीच भी अच्छे आदमी पड़े हैं। हरेक मुसलमान, हरेक सिख, हरेक हिंदू खराब नहीं है।

जिस तरह बिहारमें अमन हुआ है उसी तरह डेराइस्माइलखान और सासारामनमें भी शांति होनी ही है।

अगर जिन्ना साहबने जो लिखा है, सही लिखा है, तो उन्हें वहांकी हुल्लड़बाजीको रोकना ही है। फौजके रोकनेसे यह हुल्लड़बाजी रुकने-वाली नहीं है। लोगोंको समझानेपर ही वह रुक सकती है। नहीं रुकती तो उसका मतलब है या तो लोग जिन्ना साहबको मानते नहीं, या जिन्ना साहब उसे रोकना नहीं चाहते।

लेकिन हम जिन्ना साहबके बारेमें उल्टी बातें क्यों सोचें? जब साफ होता नहीं, शंका तो दिलमें शक पैदा हो ही जाता है। अगर मैं किसी बातपर इकरार करूं और उससे उल्टा ही काम कर बैठूं तो वह दगाबाजी तो हो ही जायगी। उस तरह यहां भी शक हो जाता है। लेकिन हमें आखिरतक देखना होगा कि जिन्ना साहब क्या करते हैं।

## : १७ :

### ६ मई १९४७

प्रार्थनाके समयतक गांधीजी जिन्ना साहबके यहांसे लौटकर नहीं आ सके थे। उनके आदेशानुसार ठीक साढ़े छः बजे प्रार्थना शुरू की गई और जनतासे पूछा गया कि आज कुरानकी आयत बोली जाय या नहीं? इसपर सिर्फ एक आवाज आई कि 'नहीं।' तब दो मिनिटतक मौन प्रार्थना हुई। तत्पश्चात् गांधीजीका कलका लिखा हुआ यह संदेश सुनाया गया, जो वर्षाके कारण कल नहीं पढ़ा जा सका था :

मैं पापात्मा शैतानके हाथोंसे—अपनेको—बचानेके लिए परमात्माकी शरण लेता हूं।

हे प्रभो! तुम्हारे नामको ही स्मरण करके मैं सारे कामोंको आरंभ करता हूं। तुम दयाके सागर हो। तुम कृपामय हो, तुम अखिल विश्वके

स्रष्टा हो, तुम ही मालिक हो। मैं तुम्हारी ही मदद मागता हू। आखिरी न्याय देनेवाले तुम्ही हो। तुम मुझे सीधा रास्ता दिखाओ, उन्हीका चलनेका रास्ता दिखाओ जो तुम्हारी कृपादृष्टि पानेके काबिल हो गए है; जो तुम्हारी अप्रसन्नताके योग्य ठहरे, जो गलत रास्तेसे चले है, उनका रास्ता मुझे मत दिखाओ।

ईश्वर एक है, वह सनातन है, वह निरालब है, वह अज है, अद्वितीय है, वह सारी सृष्टिको पैदा करता है, उसे किसीने पैदा नही किया है।

यह कुरानशरीफकी आयतोका तरजुमा है जो कि प्रार्थनामे पढी जाती है। उसे पढनेकी शिकायत कोई कैसे कर सकता है, समझमे नही आता है। मै तो कहूगा कि इस प्रार्थनाको हम हृदयमे अकित करें तो वह बेहतर ही हो सकता है।

इससे अधिक आज नही कहूगा।

## : १८ :

### ७ मई १९४७

प्रार्थना-सभामे आते ही गाधीजीने सबसे पहले श्रीमती उमादेवीके बारेमे पूछा कि क्या वे आई है? वे वहा थी। बापूजीके कहनेसे उन्हे मच-पर उनके पास बैठाया गया। श्रीमती विभावरी बाई देशपाडेको भी गाधीजीने अपने पास बुलाया और कहा कि इन दोनो बहनोने कुरान-शरीफकी आयते पढनेका विरोध किया है। बीस आदमियोकी सहीवाले एक पत्रका कि दो-एक आदमियोके विरोध करनेपर सारी प्रार्थना रोकी नही जानी चाहिए उल्लेख करते हुए गाधीजीने कहा—ऐसा कहनेवाले बीस ही आदमी थोडे है! मै तो समझता हू कि आप सब लोग (दो तीन हजारके करीब) जो विरोध नही करते और खामोशीके साथ रोज यहा बैठते है उन सभीके मनकी बात यही है, जो इन बीस आदमियोके दस्तखत वाली चिट्ठीमे लिखी हुई है।

लेकिन मै आपसे कहूगा कि आपको धैर्य रखना चाहिए । धर्मका पालन धैर्यसे ही किया जा सकता है। हिंदू-धर्मने सहिष्णुताको बडे महत्त्वका स्थान दिया है । शकराचार्य महाराजने तो धीरज रखनेकी बात यहातक बताई है कि 'एक तिनकेकी नोकपर बिंदु-बिंदु करके समूचे महासागरका सारे-का-सारा जल निकालकर उसे दूसरे गढेमें भर देनेमें जो धैर्य चाहिए उससे बढकर धैर्य मोक्ष पानेके लिए हमें धारण करना चाहिए।' अब आप कल्पना कीजिए कि तिनकेसे नही सही, लोटा भर-भरकर ही अगर एक आदमी समुद्र खाली करने बैठता है, और दूसरी ओर उतना बडा गढा उस पानीको भरनेके लिए उसे मिल भी जाता है और वह आदमी सैकडो-हजारो वर्षतक जिंदा भी रहता है तो शायद उस अपार जलराशिको वह सोख सकता है; लेकिन फिर भी जो नया पानी समुद्रमें आएगा उसका क्या होगा ? फिर समुद्र सोखनेमें उसके पास कितना धैर्य चाहिए ? अर्थात् शकराचार्यजीने मुमुक्षुके लिए असीम धीरज बनाए रखनेकी बात कही है । उनका कहना यह है कि हमारा एक पैर तो हिन-हिनाते घोडेकी रकाबमें फसा हो, दूसरेसे हम जीनपर उछाल मारने ही वाले हो और गुरुजीसे कहे कि 'गुरुजी, ब्रह्म क्या है, जरा बता तो दीजिए' तो वह ब्रह्म नही जाना जा सकता। यहा हम सब जो आए है, जिज्ञासु बनकर आए है, यानी हम लोग मुमुक्षु है । पर क्या इतना धैर्य धारण करनेकी शक्ति हमारे पास है ? अगर नही है तो भी प्रार्थनाभरके लिए तो हम धैर्य धारण करें। इसमे हमारी क्या अच्छाई होगी कि एक ओर तो बालक चीखता रहे और दूसरी ओर हम प्रार्थना करें । ईश्वरको तो मनकी प्रार्थना चाहिए। मुहकी बातको ही मान लेने-जैसा वह भोला नही है । प्रार्थनाका मतलब यह नही है कि जिह्वासे जो उच्चारा जाय उसे ही प्रार्थना कहा जाय । और उस उच्चारका आग्रह भी हम तब क्यो रखें, जब हमपर किसी प्रकारका खतरा न हो। क्या हम इतने आदमी एक बालकको दबाकर, उसे डरा-धमकाकर धर्मका पालन करेंगे ? धर्मका पालन तो बालककी बातको सह लेनेमें ही होगा। मुझे इस बातकी खुशी है कि आपने इतनी बडी भारी सख्यामें होते हुए भी शांति रखकर धर्मका पालन किया है और अज्ञान बालककी बातको सहन किया है ।

परन्तु आज तो बालककी बात नही, एक बहनकी बात है । मैं खता हू कि वह मेरी स्वीकृत लडकीसे भी कुछ छोटी है । वह एक मत्री हाशयकी धर्मपत्नी है । उसने जो चिट्ठी[1] भेजी है, उसीकी चर्चा मैं ाज पहले करूंगा ।

इस चिट्ठीमे जो लिखा है उसमे हिंदू-धर्मका ज्ञान नही है, कोरा ज्ञान भरा है । इस तरह धर्मको बचानेकी जो चेष्टा की है वह वास्तवमे र्मके पतनकी ही चेष्टा है । मै सभी हिंदू और सभी सिख भाइयोसे हना चाहता हू कि वे ऐसे गलत रास्तेको न अपनावे । मै एक-एक करके स बहनके प्रश्नोका उत्तर दूगा ।

(१) मदिरमे कुरान पढनेसे वह अपवित्र हो जाता है, यह कहना ीक नही है । मदिरमे ईश्वरकी स्तुति करना, अधर्म कैसे हो सकता है ? ल यहापर हिंदीमे 'औज अविल्ला' का अर्थ सुनाया तो किसीने उसका वरोध तो नही किया ! क्या गीताका अनुवाद कोई अरबीमे सुनावे तो ह अधर्म हो जायगा ? ऐसा कोई कहता है तो वह अज्ञानी है । सीमा- ातमें एक नियम बना था कि कुरानका तरजुमा नही किया जा सकता; कंतु वहा अब डा० खानसाहब प्रधान मत्री है, जो समझदार है । उन्होने

---

[1] श्रीयुत महात्माजी, मै आपको यह सूचित कर देना चाहती हूं कि न्तरात्माकी प्रेरणासे मैं आपके साथ प्रार्थनामें कुरान पढ़नेका नम्न कारणोसे विरोध करूंगी : (१) मदिरमें कुरान पढ़नेसे उसकी वित्रता और मर्यादा नष्ट होती है । (२) कुरानको धर्मग्रंथ मानने- ालोंने बंगाल, पंजाब आदिमें राक्षसी अत्याचार किए हैं, उसे देखते ए कुरान पढ़ना-पढ़ाना हिंदुओके लिए मैं महान् पाप समझती हूं । (३) किसी मस्जिदमें गीता या रामायण पढ़नेका साहस आजतक ापने किया है, ऐसा मालूम नहीं देता ।

हिंदूधर्मसेविका
उमादेवी
धर्मपत्नी संचालक दैनिक राजस्थान समाचार
और मंत्री अखिल भा० देशी राज्य हिंदू महासभा ।

कहा कि कुरानका तरजुमा करनेसे तो उसका फैलाव होगा। उसे ज्यादा लोग पढेंगे और समझेंगे। यहा इसी मदिरमे खानसाहब नमाज पढते है तो क्या यह मदिर अपवित्र हो गया ? नमाजमें तो कुरानकी आयते बोली जाती है तो क्या उनका बोलना पाप कहाएगा ?

(२) यदि आप कहे कि मुसलमानोने पाप किया है, तो हिंदुओने कौन-सा कम पाप किया है ? बिहारमे जो हिंदुओने किया वह आप लोगोको जानना चाहिए । वहा उन्होने औरतोको मार डाला, बच्चोको मार डाला, उनके मकान जला दिए और उन्हे अपने घरोसे भगा दिया। इसपरसे अगर कोई मुसलमान आवे और कहे कि भगवद्गीता पढने-वालोने पाप किया है तो वह कितनी गलत बात होगी। थोडे अशतक मैं यह सुननेको तैयार हो जाऊगा कि मुसलमानोने अत्याचार किए है, पाप किया है । लेकिन मेरी समझमे यह नही आता कि कुरानको पढने-वाला पापात्मा है, इसलिए वह चीज भी पापमय है। इस तरहसे तो गीता, उपनिषद्, वेद आदि सब-के-सब धर्मग्रथ पापके ग्रथ साबित हो जाते है। गीतामेंसे भी अलग-अलग अर्थ निकलते है। मै जो अर्थ करता हू उससे कई लोग बिलकुल ही दूसरा अर्थ लगाते है। मुझे गीतामें अहिंसाकी ही बात दीखती है और दूसरे कहते है कि गीताने आततायीको मारनेका उपदेश दिया है। मै क्या उनके मुह बद करने जाऊ ? मै उनकी बात सुन लेता हू और मुझे जो सही लगता है, करता हू ।

(३) मैंने मस्जिदमे गीता नही पढी है, वहा मैं ऐसा नही करता, यह कहनेका मतलब तो यही हुआ न कि मै बुजदिल हू ? मान लिया कि मैं बुजदिल हू और मस्जिदमे मुसलमानोके सामने अपनी प्रार्थना करनेसे डरता हू । लेकिन अगर मै एक जगह बुजदिल हू तो हर जगह क्या बुजदिल बनू ? क्या आप चाहते है कि मै यहा भी बुजदिल बनू ?

पर आपको यह मालूम होना चाहिए कि मैं कई जगह मुसलमानोके घरमे ठहरता हू । वहा बडे आरामसे और बिना सकोचके नियमित प्रार्थना करता हू। और वहा, नोआखालीमे, जब मैं घूम रहा था तो खास मस्जिद तो नही, पर बिलकुल ही मस्जिदके पास मैने अनेक बार प्रार्थना की है । एक बार तो मस्जिदके अहातेमें ही—मस्जिदके अदरके

मकानमे भी—मैंने प्रार्थना की है । वहा तो मेरे साथ पूरा साज-बाज रहता था। ढोलकी भी बजती थी और तालियोके साथ रामधुन भी होती थी। मस्जिदके अहातेमें जब प्रार्थना हुई तब मेरे पास ढोलक तो नहीं थी, परंतु वहां भी तालियोके साथ रामधुन हुई थी । मै वहांके मुसलमान भाइयोसे कहता था कि जैसे आप रहीमका नाम लेते है वैसे ही मै यहां रामनाम लूगा । रहीमका नाम जो कहते है उन्हें रामनाम लेनेवालो-को रोकना नही चाहिए और उन्होने मुझे रामनाम लेनेसे रोका नही था ।

आप अत्याचारकी बात करते है। नोआखालीमें काफी अत्याचार हुए है, पर मै कहूंगा कि नोआखालीमें मुसलमानोने इतने अत्याचार नही किए है जितने बिहारमे हिंदुओके हाथो हुए है। मै इस बातका गवाह हू। मै नोआखाली भी गया हू और बिहारमें भी घूमा हूं।

मुसलमानोंके पास जाकर मै प्रार्थना नही कर सकता, ऐसा जो कहे वह गाधीको नही जानता। यह बेचारी उमादेवी क्या जानती है कि गाधी किस मसालेका बना है। मै अपने लिए नही, इसकी बातपर लज्जित होता हू। उस मत्री महाशयके लिए लज्जित होता हू कि वह हिंदू-धर्मसभाके मंत्री होकर ऐसे घोर अज्ञानको अपनाए हुए है! जब समुद्रमें आग लगेगी तो उसे कौन बुझायगा ?

पर सही बात तो यह है कि इनका विरोध उस प्रार्थनासे नही है, अरबी भाषासे है। कल जब आपको कुरानकी आयतका अनुवाद सुनाया गया था तब आपमेंसे किसीको वह चुभा नही था। (फिर अनुवाद सुनाकर) लीजिए, मै सारी प्रार्थना (औज अबिल्ला) पढ गया और वह इन बहनको भी चुभी नही। इसमें उन्हे कोई पाप नही दीखता। अगर दीखता तो वे मुझे क्यों पढने देती, रोक न लेती कि "चुप हो जाओ, हम यह सुनना नही चाहती।"

यह मुझे रोकेंगी भी कैसे! ईश्वरकी मै और प्रार्थना कर ही क्या सकता हू ? क्या वह यह चाहती है कि मै ईश्वरको 'अज' कहकर न पुकारूं ? उसको अमर न मानू ? उसको निरालम्ब भी न कहूं ? या यह न कहूं कि तू ही मालिक है ? फिर मै प्रार्थनामें कहूगा ही क्या ? तब वही बात जो हम प्रार्थनामें कहना चाहते है वह अगर अरबीमें कही

लिए हम किसीको जोर-जबरदस्तीसे मजबूर नही करेंगे। हरेक पक्ष अपनी बात एक-दूसरेको समझानेकी कोशिश करेगा और डराने-धमकानेका सहारा कभी भी नही लिया जायगा।

दूसरी बात लोगोको मार-काट और अत्याचारोसे रोकनेकी है। कल अखबारमें जिन्ना साहबके यहासे जो विज्ञप्ति निकली है उससे आप समझ गए होगे कि हमारे बीचमे राजनैतिक मतभेद पूरा है। जिन्ना साहब पाकिस्तान चाहते है। काग्रेसवालोने भी तय कर लिया है कि पाकिस्तानकी माग पूरी की जाय, लेकिन उसमे पजाबका हिंदू व सिखोका इलाका और बगालमें हिंदू-इलाका पाकिस्तानमे नही दिया जा सकता। केवल मुसलमानोका हिस्सा ही हिंदुस्तानसे अलग हो सकता है। लेकिन मैं तो पाकिस्तान किसी भी तरह मजूर नही कर सकता। देशके टुकडे होनेकी बात बर्दाश्त ही नही होती। ऐसी तो बहुत-सी बातें होती रहती हैं जिन्हें मैं बर्दाश्त नही कर सकता, फिर भी वे रुकती नहीं, होती ही है। पर यहा बर्दाश्त न हो सकनेका मतलब यह है कि मैं उसमे शरीक नही होना चाहता, यानी मैं इस बातमे उनके वशमें आनेवाला नही हूं। अगर वे पाकिस्तान बनाना चाहे तो वे अपने और भाइयोसे सुलझ लें। मैं किसी एक पक्षका प्रतिनिधि बनकर बात नही कर सकता। मैं सबका प्रतिनिधि हू। सारे हिंदुस्तानमे जितने हिंदू है, जितने मुसलमान हैं, जितने सिख और पारसी है, जैन और ईसाई हैं, उन सबका ट्रस्टी बनने-का मेरा प्रयत्न है। अगर ट्रस्टी नही बन सका हू या बनने लायक नही हू तो भी मैं चाहता हू कि मै ट्रस्टी बनू। इसलिए मैं पाकिस्तान बनानेमें हाथ नही बंटा सकता। जिन्ना साहब जो करना चाहते हैं उसको पूरी तौरसे खतरनाक चीज समझते हुए यह कैसे हो सकता है कि मैं उन्हे पाकिस्तानकी स्वीकृतिके दस्तखत दे दू। यह बात मैंने धीरजके साथ उनको सुना दी। हम आपसमें लडे नही। माधुर्यसे ही हमने आपसमें बातें की।

मैंने जिन्ना साहबसे अदबके साथ कह दिया कि हिंसाके बलपर वे पाकिस्तान नही ले सकते। वे मुझको पाकिस्तान देनेके लिए मजबूर नही कर सकते। मजबूर तो मुझे सिवाय ईश्वरके कोई कही भी नही कर

सकता। अगर समझा-बुझाकर वे लेना चाहें तो पाकिस्तान ही क्यो, सारा हिंदुस्तान भी ले सकते है।

शातिकी दरखास्तमें मै उनका साझीदार बना हू और इसको कार-आमद करनेके लिए मैने जिन्ना साहबसे कहा है कि 'मुझसे जितना काम आप लेना चाहे ले सकते है। जरूरत पडेगी तो इस वातके लिए हजार दफे भी मै आपके साथ चला आऊगा।'

मै आपको यह भी बता दू कि जिन्नाके पास जानेसे सभीने मुझे रोका था। सबने मुझसे कहा कि जिन्नाके पास जाकर उससे लाओगे क्या ? मै कहा कुछ लेनेके लिए उसके पास गया था ? मै तो उसके दिलकी बात जानने गया था। अगर मै वहासे कुछ लाया नही हू तो मैने वहा जाकर कुछ गवाया भी नही है। मेरा तो उनसे मित्रताका दावा है। आखिर वे भी तो हिंदुस्तानके ही है। मुझे सारी जिंदगी हर हालतमें उनके साथ बसर करनी है। मै कैसे उनके पास जानेसे इन्कार कर दू ?

हमे मिलकर ही रहना होगा। मिलकर रहनेके लिए भी किसीके ऊपर आपको बल-प्रयोग नही करना चाहिए। मै तो कहूगा कि वे लोग पाकिस्तान चाहते है तो वे हमे समझावें। औरोको भी वे समझावें कि पाकिस्तानमे सबका फायदा है तो जरूर ही उनकी बात मान सकता हू। लेकिन मजबूर करके वे मुझसे लेना चाहे तो मै 'हा' नही कह सकता।

आप पूछेगे कि हिंदुस्तानका बटवारा क्यो नही होना चाहिए ? उसमे हानि क्या है ? तो मै बता सकता हू। मेरा दिमाग खाली नही है। उस वारेमे बहुत कुछ बातें मेरे दिमागमे है। पर वे बातें आप पढ-सुन लें। आज मै बहुत काफी समय आप लोगोको दे चुका।

अब मै कलकत्ता जा रहा हू। मै नही जानता कि वहा जाकर मै क्या कर पाऊगा, कितनी देर वहा रहूगा और कब लौटूगा। यहा मैने कह रखा है कि जब भी जवाहरलालजी, कृपलानीजी या वाइसराय भी, मुझे बुलवा भेजेंगे, मै आ जाऊगा और मुझे आशा है कि आपके दर्शन मुझे फिर मिलेगे।

तबतक अच्छा हो कि आप समझ लें कि मुझे प्रार्थनासे रोकनेमे कोई फायदा नही हो सकता। मुझे तो खामोश रहनेका फायदा मिल जाता

है। आप जो लोग अपने गुस्सेको दवाकर शात रहे है उनको भी कम फायदा नही मिला है, पर रोडा अटकानेवाले घाटेमे ही है। आप लोगोको चाहिए कि आप उन्हे समझावे। आपको याद होगा कि उस वार जव प्रार्थनामें गडबड हुई थी हिंदू महासभाके मत्रीने उन लोगोको समझाकर शात किया था, उसी तरह अव भी इन्हे समझावे। दवाकर नही, मारपीट-कर नही, पर खामोशीके साथ समझावे कि गाधी जो प्रार्थना करेगा उसमें धर्म ही है, अधर्म नही। अगर न समझे तो मुझे धीरज है। मै मौन ही प्रार्थना कर लूगा। इस मदिरमे भी अपने अकेलेमे वह प्रार्थना करूगा ही। परसोके दिन जव वारिश थी तव यह प्रार्थना भलीभाति हुई। वही यह मदिर था और वे ही हिंदूभाई थे, पर आज फिर विरोध हो गया। यह है हमारी हालत, जो विलकुल ही गई-गुजरी है।

इसलिए मेरी विनती है कि आप लोग अहिंसक दृष्टिसे चेष्टा करके इन लोगोको इतना समझा दें कि वे मुझसे कहे कि खुले दिलसे हमारे साथ आप यहापर प्रार्थना कर सकते है। चाहे अरवीमे करें, फारसीमे करें या सस्कृतमें करे।

अव आप दो मिनट शांति रखकर मौन प्रार्थना करे। आखे भी बद हो तो अच्छा।

## : १९ :

### २५ मई १९४७[1]

भाइयो और वहनो,

आप जानते है कि प्रार्थनामें शाति रखनी चाहिए। आप लोगोने यहापर शातिका जो स्वाद चखाया है वह आपके जरिएसे लोग सव जगह अपना रहे है। आपको यह जानकर खुशी होगी कि इस वार वंगालमे वहुत वड़ी-वडी प्रार्थना-सभाए भी शातिसे हुईं। वैसे में

---

[1] ८ मईसे २४ मईतक गांधीजी बंगाल और विहार-प्रवासमें रहे।

जब प्रवास करता हू, लोग जमा हो जाते है और प्रेमके वश होकर जोरोमें नारे लगाते है, मानो चीखते है। मै इस प्रेमको समझ तो सकता हू, पर अब मेरा शरीर इस शोर-गुलको बर्दाश्त नही कर सकता। मै आपको धन्यवाद देता हू कि आपने पिछली प्रार्थना-सभाओमें गडबडी होने-पर भी शाति बनाए रखी और औरोके लिए अच्छा उदाहरण पेश किया। जैसे बगालकी प्रार्थना-सभामे शाति रही वैसे ही विहारमे भी रही। वहा तो बहुत अधिक लोग जमा हो जाते थे। ऐसी भारी गरमीमें मै हर जगह जा सकू ऐसा अब मेरा शरीर नही रहा है। इसलिए विहारमें रोजाना घटा-डेढ घटा रेल या मोटरमें यात्रा करके मै अलग-अलग जगह चला जाया करता था और वहा प्रार्थना होती थी। एक जगह एक नदीके किनारे[१] करीब एक लाखसे भी ज्यादा लोग जमा हो गए थे। हर बार नए-नए आदमी वहा चले आ रहे थे और जय-ध्वनि करते रहते थे।

इसलिए इतना कोलाहल हो गया कि मै प्रार्थना न कर सका। लेकिन इस एक जगहके अलावा विहारमे नियमसे मेरी प्रार्थना होती रही। विहारकी सभा बगालसे भी बडी हुआ करती थी। वहाके लोग मुझे जानते है, लेकिन फिर भी मुझे देखने चले आते है। हम चालीस करोड लोग कहातक एक व्यक्तिको जरा देर देख-सुनकर याद रख सकते है? लोग मुझे देखनेकी हरदम इच्छा रखते है कि देखे तो सही कि गाधी कैसा है? आया उसके पूछ है, सीग है, या क्या है? और इस तरह अनगिनत आदमी वहा जमा हो जाते थे। यद्यपि वहा इतने थोडे मुसलमान है कि हिंदू शोर कर सकते थे कि हम अरबीमें प्रार्थना सुनना नही चाहते, पर वहा इतने बडे मजमेमे एक भी आदमीने ऐसा नही कहा। कहता भी क्यो? ऐसी कौन-सी वजह है जो मै कुरान न कह सकू।

आप भी यहा शाति रख रहे है, लेकिन आप शातिके साथ अशाति भी पैदा कर देते है। यहाकी ही तरह बगालकी सभामें भी एक लडकेने प्रार्थना रोकनेकी जुर्रत की, पर मैने सोचा कि यह तो अहिंसाके नामपर हिंसा होने जा रही है। मैने उसकी बातपर ध्यान न दिया। वह समझ

---

[१] पटनासे छः मील दूर दीनापुर नामक स्थानपर।

गया और शात हो गया। यह अच्छी वात थी कि वहा पुलिसने बीचमें दखल नही दिया था। वहा खादी-प्रतिष्ठानमे ही प्रार्थना हुआ करती थी और वहुत आदमी होनेपर भी हमेशा शाति रहती थी।

यहा प्रार्थनामे रुकावट डालनेका सिलसिला चला है। अव वहनोने चिट्ठी लिखना शुरू किया है। आज एक वहनका पत्र मराठीमें आया है। उसमे वह लिखती है कि आप मदिरमें कुरानका पाठ करे यह मुझे मान्य नही है, यानी वह कहना चाहती है कि आप लोगोको सवको वह मान्य नही है, क्योकि कुरान वोलनेवालोने हजारो स्त्रियो और वे गुनाहोपर अत्याचार किया है।

लेकिन अब मै इस रुकावटके कारण प्रार्थना छोड देनेवाला नही हू। अहिंसा कोई चीज नही है जो किसी कामको पूरा होने ही न दे। अहिंसाके नामपर हिंसाका खेल होता रहे और मै उसे देखता रहू, यह मुझसे नही हो सकेगा। इसलिए अब अगर वह वहन कोलाहल मचायगी तो भी मेरी प्रार्थना चलेगी ही। मै उस वहन और उसके पति महाशयसे, यदि वे यहा हो, तो कहता हू कि ऐसी अविनय हमे शोभा नही देती। एकके कारण हजारोको हम तकलीफ दे! उनको प्रार्थना मान्य नही है तो उन्हे यहा आना नही चाहिए। फिर भी अगर वह वहन शोर मचायगी तो उसे भी कोई हाथ न लगायगा। वह निडर रहे। पुलिस भी अगर यहां हो तो वह भी उसे न पकडे। अगर उसकी या उसके दो-तीन साथियोकी आवाजे आती रहेगी तो उसको मै सहन कर लूगा और प्रार्थना करूगा। आप लोगोने भी बहुत सहन किया। मुझे उम्मीद है कि आप लोगोमे इस वहन-की-सी मान्यतावाले न होगे। अगर आप सव ऐसी मान्यतावाले हो तो फिर मै कहूगा कि प्रार्थना मेरे साथके ये लडके नही करेंगे, मै खुद करूगा और आप सव मिलकर मुझ अकेलेको मार डालें। मै हँसते-हँसते राम-राम करते मरूगा। जव आप इतने सारे हो तव मै अकेला आपको मार तो नही सकता और न पुलिस ही आपको ऐसा करनेसे रोक सकती है। लेकिन मुझे आशा है कि इस वहनको छोडकर और कोई नही है जो कुरानके खिलाफ हो। मै आपसे कहूगा कि आप उस वहनकी चीख-पुकार-पर ध्यान न दे। कोई उसे छुए तक नही। प्रार्थना शातिपूर्वक होने दे।

(इसके वाद प्रार्थना हुई। सारी प्रार्थना होनेके वाद गाधीजीने

कहा:) मैं उस बहनको मुबारकबाद देता हू कि उसने इतनी बातपर सतोष कर लिया कि मैंने उसका पत्र आप लोगोको सुना दिया। कल भी यही सिलसिला चलेगा। विरोध करनेवालोकी बात सुना दी जायगी, पर प्रार्थना होगी ही। लेकिन मैं आशा करता हू कि कल ऐसा कोई न होगा जो प्रार्थनामे बाधा डालना चाहता हो।

मै आपसे कहना चाहता हू कि विहारमे हिंदुओने कम गुनाह नही किया, यह आप समझ ले। वहापर नोआखालीका बदला ही नही, उससे ज्यादा किया गया। और फिर यह सिलसिला ऐसा चला कि डेराइस्माइलखां तक पहुच गया। विहारके हिंदुओने जो अत्याचार किए उसपरसे मुसलमान अगर कहने लगे कि हम तुलसीदासजीकी रामायण नही पढने देंगे, गीता, उपनिषद् या वेद भी नही पढने देंगे, अगर आप उसे बोलना चाहे तो अरबीहीमें बोलें तो क्या वह ठीक बात होगी? ऐसा कहनेवाले मुसलमानोसे मै पूछूगा कि गीता और रामायणने आपका क्या बिगाडा है और वेद जो प्राचीन-से-प्राचीन ग्रथ है, उसने क्या गुनाह किया है? रामचद्रजीने उसको क्या नुकसान पहुचाया है? यही बात कुरान और मुहम्मद साहबके लिए भी है कि उन्होंने हमारा क्या बिगाडा है? इसलिए आप समझेंगे कि चूकि मै रामायण तथा गीता पढना चाहता हू इसी वास्ते कुरान भी पढना जरूरी समझता हू।

अब आप यह सुनना चाहेंगे कि मैंने कलकत्ता और पटनामे क्या किया? कलकत्तामें क्या हुआ यह मै अभी पूरा नही बता सकता। वहा मैं सुहरावर्दी साहबसे मिला और उनसे बातें की। अब देखना होगा कि उन बातोका नतीजा क्या आता है। जो कुछ हो, लोगोने इतना महसूस किया कि मेरे वहा जानेसे उन्हे कुछ तसल्ली मिली है। वहा शरत् बाबू भी कोशिश कर रहे है। पर अभीतक वहा मार-काट बद नही हुई है।

बिहारमे भी सुधार अधिक नही है, शरणार्थी लोग अपने घरोपर लौट रहे है, पर अभी न हिंदू, न मुसलमान एक दूसरेके लिए बेखौफ हुए हैं। वे अबतक यह नही कह सकते हैं कि अब हमे डर नही है या अब हम कुछ ज्यादती करेंगे ही नही। फिर भी वहाकी फिजा सुधर ही रही है, इसमे कोई शक नही।

अब सवाल यह है कि मैं यहा क्यो आया ? सच बात यह है कि मैं नही जानता कि क्यो आया ? लेकिन एक बात साफ है। मैंने जब बरसो-तक काग्रेसकी सेवा की है तब वे लोग मुझे एक सेवकके नाते याद कर लेते है। वे मेरी बात सुनना चाहते है, फिर चाहे वे उसे माने या न माने।

लेकिन इतना मैं आपको कह देना चाहता हू कि लदनकी तरफ देखनेका जो रवैया चल पड़ा है वह ठीक नही है। हमारी आजादी लदनसे आनेवाली नही है। हिंदुस्तानकी आजादीका कोहेनूर औरोके हाथोसे मिलनेवाला नही है। अपने ही हाथोसे वह लिया जा सकता है।

मै उस कोहेनूरकी बात नही करता हू जो लदन टावरमें रखा हुआ है; मै अपने देशके स्वतत्रतारूपी कोहेनूरकी बात करता हू। वह कोहेनूर हमारे पास आ रहा है। अब जी चाहे तो उसे हम फेक दे, या जी चाहे तो उसे अपनाकर अपने पास रख ले। जैसा भी कुछ करना हो वह हमारे अपने ही हाथकी बात है, दूसरेके हाथकी नही।

फिर हम माउटबेटन साहबकी ओर क्यो देखे ? क्या इस ताकमे रहे कि वे इग्लैडसे हमारे लिए क्या लायगे ? लेकिन हमारे अखबार तो उन्ही बातोसे भरे रहते है कि माउटबेटन साहब लदनसे यह लानेवाले है, वह लानेवाले है। हम अपने ही बलको क्यो न देखें।

दूसरे अल्पसख्यकोका क्या होगा ? मान लिया कि हिंदू, सिख आदि इग्लैडकी ओर नही झाकना चाहते, पर मुसलमान उन्हीकी ओर देख रहे है तो क्या फिर हिंदू-सिख भी उस ओर देखने लग जाय ? यदि वे देखें और उनकी कुछ सुनवाई माउटबेटन साहब कर भी लें तो दूसरे हिंदुस्तानियोका क्या होगा ? पारसी, जो सख्यामे बहुत थोडे है, उनकी बात सुननेकी माउटबेटनको क्या पडी है ? और हिंदुस्तानमे दूसरे भी कितने लोग है, जिन्हे न वाइसराय पूछते है, न दूसरे कोई।

इस हालतमे मेरा धर्म मुझको पालन करना है। यानी हिंदुस्तानका धर्म हिंदुस्तानको पालन करना है और इस तरह अपनी आजादी लेनी है।

आज हममें बाज लोग दीवाने बन गए है। सच्चा बननेके लिए ही आप और हम प्रार्थनामे आते है। सच्चा बननेके लिए चाहिए कि हम एकमात्र ईश्वरके ही गुलाम बनें। और किसीके गुलाम

न बने। फिर आजादी हमारी अपनी ही है। क्या हम भी दीवाने बन जाय? और जबतक वह चद दीवाने ठीक न हो जाय तबतक क्या आप यह चाहेंगे कि माउंटबेटन उनपर अपना अकुश रखे और यहा बने रहे?

मैं यह पसद नही करता। मैंने दूसरी ही बात सिखाई है। मैं यहा सन् सोलहमे आया और तबसे मैंने कहा है कि हर कोई अपनेको देखे। अगर हम ऐसा करेंगे तो इग्लैंड ही क्या, अमरीका और रूस—तीनो मिलकर भी हमें मिटा नही सकते। हमारे जन्म-सिद्ध अधिकारकी जो चीज है वह हमसे कोई छीन नही सकता। आजादी हमारी है और हम सच्चे बनेंगे तो उसे हमारे पास आना ही है।

## : २० :

### सोमवार, २६ मई १९४७

### (लिखित प्रवचन)

मैंने आजका भाषण लिख डाला। उसके बाद करीब पाच बजे कल-वाली बहनका खत आया है कि मैंने वचनका भग करके कल प्रार्थना करवाई। मुझे ऐसा खयाल तक नही है। मैंने विनय किया, विरोधियोकी रक्षाके लिए सयमका पाठ दिया। आपने उसे स्वीकार किया। अब भी ऐसे विरोधके कारण प्रार्थना बद करे तो विनय अविनय होगी और उदारता कृपणताका रूप लेगी। अहिंसाका यह लक्षण कभी नही है। इसलिए वह बहन माफ करे। प्रार्थना होगी।

मैंने कल आपसे जो कहा था, आज वही चीज फिर दोहराता हू। सामूहिक प्रार्थना हमारा खास फर्ज है। इसे झटसे छोडा नही जा सकता। अगर सामूहिक प्रार्थनाके बारेमें कोई विरोध उठाता है और उसका ऐसा करना अपराध ही है—तथा उसपर हमला होनेका खतरा पैदा हो जाता है तो मूक प्रार्थना अच्छी है। आप लोग तो मेरी विनय सुनकर बराबर पूरी तरह शांत रहे और उन विरोधियोको आपने नही सताया;

पर जब मैंने देखा कि हमारे इस सयमका दुरुपयोग होने लगा है तब मैंने दूसरा रास्ता अख्तियार किया। और मुझे यह देखकर खुशी हुई कि विरोध उठानेवाली बहन भी शात रही। उनके मनमे कुछ भी हो, मैं आशा करता हू कि शाति जारी रहेगी। इतनी सभ्यता तो हममे होनी चाहिए। आगेके लिए भी मैं आपसे यह कहूगा कि अगर कोई विरोध करे तो आप अपनी प्रार्थना जारी रखे और साथ-ही-साथ विरोध करनेवालेकी ओर उदार रहे, रोष न करे।

मैंने कल आपसे कहा था कि हमे यह शोभा नही देता कि हम लदनकी ओर ताकते रहे। अग्रेज लोग हमें आजादी नही दे सकते। वे तो हमारे कधोसे उतर सकते है। ऐसा करनेका उन्होने वचन तो दिया ही है। आजादीको सम्हालना और उसे रूप-रेखा देना हमारा काम है। यह हम कैसे कर सकते है? मै समझता हू, जबतक हिंदुस्तानमे अग्रेजी राज है तबतक हम ठीक तरह नही सोच सकते। हिंदुस्तानके नकशेको बदलना ब्रिटिश सरकारका काम नही है। उसका काम तो यह है कि वह अपनी निश्चित की हुई तारीखके दिन या उसके पहले चली जाय। हो सके तो हिंदुस्तानको अच्छी तरह अपना कारबार चलाते हुए छोडकर जाए, मगर अराजकताका खतरा हो तो भी उसे तो चला ही जाना है।

एक और कारण भी है कि आज हिंदुस्तानकी शकलमें किसी किस्मका फेर-फार न किया जाय। कायदे आजमने और मैंने एक अपील निकाली है कि राजनैतिक मकसद हासिल करनेके लिए हिंसाका इस्तेमाल न किया जाय। अगर उस अपीलके बावजूद लोग पागल बनकर बड़ी किस्मकी हिंसा करते रहे और ब्रिटिश सत्ता उसके सामने झुक जाय, यह समझकर कि एक दफा पागलपन निकल जानेपर सब ठीक हो जायगा तो वह यहां खूनी विरासत छोड जायगी और सिर्फ हिंदुस्तान ही नही, सारी दुनिया उसे गुनहगार मानेगी। मैं हरेक देशप्रेमीसे और ब्रिटिश सत्तासे भी, अनुरोध करूगा कि कितनी भी हिंसा हो तब भी वह कैबिनेट मिशनके पिछले सालके १६ मईके दस्तावेजपर कायम रहकर हिंदुस्तानको छोड़ दे। आज ब्रिटिश सत्ताकी मौजूदगीमे खून,

कतल, आग और उससे भी बुरी बातें देखकर हम नीचे गिरते जा रहे हैं। जब अंग्रेजी सत्ता चली जायगी तब मेरी उम्मीद है कि हममें साफ विचार करनेकी ताकत आवेगी और तब हम जैसा ठीक समझते होंगे एक हिंदुस्तान रखेंगे या उसके दो या ज्यादा टुकडे करेंगे। और अगर हम तब भी लडते ही रहेंगे तो भी मुझे यकीन है कि हम आजकी तरह नीचे नही गिरेंगे, हालांकि हिंसाके साथ कुछ-न-कुछ गिरावट तो होती ही है। मै तो निराशामे भी आशा रखता हू कि आजाद हिंदुस्तान दुनियाको हिंसाका और एक नया पाठ नही पढायगा। वह पहले ही बुरी तरह बेजार है।

## : २१ :

### २७ मई १९४७

भाइयो और बहनो,

उस महाराष्ट्रीय बहनका लबा खत आज भी आया है। इसमे उसने शिकायत की है कि स्वयसेवकोने उसे रोककर उचित नही किया। उसने यह भी लिखा था कि कुरानमें गैर-मुस्लिमोको मारनेकी बात लिखी है, इसलिए उसे नही पढना चाहिए। कुरान मैने पढा है और उसमे कही भी ऐसा नही लिखा है, बल्कि उसमें तो लिखा है कि गैर-मुस्लिमोसे भी मुहब्बत करो। उसके पढनेवाले इस बातको न मानें तो कुरानका क्या दोष? हमारे यहा भी तुलसी-रामायण, गीता, वेदमें जो लिखा है उसका पालन कौन करता है?

मै धर्मके नामपर अधर्म करना नही चाहता। मै एक-एक शब्द ईश्वरसे डरकर मुहसे निकालता हू। मुझे उस बहनके लिए दर्द हो रहा है कि वह जो बात जानती नही वह क्यो लिख रही है? क्यो वह दूसरेके कहनेपर मान लेती है कि कुरानमें यह लिखा है, वह लिखा है? किंतु आप अपना मन दृढ करें। उसके विरोध करनेपर भी प्रार्थनामे ध्यान दे। अगर आप सब उसकी तरह कहेगे तो मै अकेला ही मरते दमतक प्रार्थना करूगा।

उस पत्रमे दूसरी शिकायत यह थी कि पुरुष स्वयसेवकोने उसको हाथ लगाकर हटाया था। इसपर मेरा कहना यह है कि मेरी दृष्टिसे इसमें कोई हर्जकी बात नही है। स्वयसेवकोका धर्म है कि गडवडी मचानेवालेको, फिर वह स्त्री हो या पुरुष, रोकें। हा, स्त्रीपर वे हाथ न चलावें, मारें नही। ठडे दिमागसे समझावे। जब मनमे किसी किस्मका विकारका भाव न हो तव स्त्रीको छू देनेभरसे कोई पाप नही हो जाता। मै भी लडकियोके कधोपर हाथ रखकर चलता हूं, तो क्या मै गुनाह करता हू ? मेरी तो ये सब वेटी-जैसी है। अगर मेरे मनमे मैला विचार पैदा हो तो वह जरूर पाप कहलायगा। स्वयसेवक भी जब सभाकी व्यवस्था करें तो हरेकको अपनी माता या वहन समझकर सभामे आनेवाली वहनोसे वरताव करें। जैसे पुत्र अपनी माताको छुए, वैसे वह भी छू सकता है, यह उसका कर्त्तव्य है।

(इसके वाद प्रार्थना शुरू हुई। तव उस वहनने कहा, "वंद करो प्रार्थना, वंद करो।" सुनकर गाधीजी मुस्करा दिए और प्रार्थना चलाते रहनेका आदेश दिया।)

प्रार्थनाके वाद गांधीजीने कहा—आज समय तो काफी हो गया है, अत मुझे जो कहना है जल्दी ही पूरा करूगा।

आप तो जानते हैं कि मै विहारमे काम करता हू। वहा मुसलमान वहुत कम हैं। मुश्किलसे चौदह फी-सदी होगे। उधर नोआखालीमे हिंदुओकी तादाद इसी तरह कम है। नोआखालीके कामके सिलसिलेमें मै विहार चला गया।

विहारमे जो भाई काम कर रहे हैं उनकी तरफसे टेलिफोन आया है कि अभी वहा जूनकी वात चल पडी है। इसी तरह पहले भी जब विधान-परिषद् होनेवाली थी तव नौ तारीखके वारेमे डर पैदा हो गया था और हर जगहसे पत्र आते थे कि हम क्या करे। नोआखालीमे तो यहां-तक धमकी दी जा रही थी कि पिछले (नवम्बरके) दगेमें कई हिंदुओको जिंदा ही छोड़ दिया गया था, पर अवकी वार तो सारे-के-सारे हिंदुओ-को मुसलमान वना दिया जायगा। तव मैंने उनसे पूछा था कि आप चाहे तो मै वहा पहुच जाऊगा और वहापर अधिक क्या कर सकूगा, अपनी

अकेली जान ही दे सकता हू। पर उन लोगोने मुझे नही बुलाया और अगर आफत आए तो उसे झेलनेको वे तैयार हो गए। असलमें मैं तो मानता ही नही कि सारे-के-सारे हिंदुओको मुसलमान बनानेकी बात कभी भी कामयाब हो सकती है।

उसी तरह बिहारमे भी मुसलमानोको डरनेकी कोई बात नही, दो जूनकी हम फिक्र क्यो करें ? हम क्यो सोचें कि वाइसराय लदनसे क्या ला रहे हैं ? माना कि वाइसराय साहब हमारे लिए वहासे लड्डू ला रहे हैं तो भी मैं तो कह चुका कि वह हमारे किस कामका है । हमारे कामकी चीज तो वही होगी, जो हमने अपने आप पैदा की होगी।

मैं पूछता हू, बिहारके मुसलमान क्यों डरें ? हिंदुओको भी, जो राम-राम रटते हैं, उन्हें अपने रामकी कुछ परवाह होगी कि न होगी ?

इसी प्रकार सिंधके हिंदुओको डरनेका क्या कारण है ? क्यो डरें ? वहासे मेरे पास खत आया है कि हिंदू डर रहे हैं। डर छोडकर वे 'राम-राम' क्यों नही करते ? वहाके लोग मुझे बुलाते है। मैं कई बरससे सिंध नही गया हू, पर सिंधी भाइयोंसे मेरी इतनी घनिष्ठता रही है कि एक बार मैं अपनेको सिंधी कहा करता था। दक्षिण अफ्रीकामें भी मेरे साथ सिंधी लोग थे । सिंधी, मारवाडी, पजाबी सभीने मेरा साथ दिया है। उनमे ऐसे भी थे जो शराबतक पीते थे और दूसरी चीज भी खाते थे। उन चीजोको छोड़नेमें वे अपनी मजबूरी महसूस करते हुए भी अपनेको हिंदू बताते थे। उन सबसे मेरी दोस्ती थी। उनमेंसे एक भाई लिखते है कि क्या तुम मुझे व सिंधको भूल गए ? पर मैं कैसे भूल सकता हू ।

सब जगह लोग डर रहे है कि दो जूनको क्या होगा। कहा जा रहा है कि मुसलमान भाई बहुत-बहुत तैयारिया कर रहे है। लेकिन वे क्या, तैयारी कर रहे हैं ? क्या हैवान बननेकी तैयारी कर रहे हैं ? क्या वे मस्जिदमें जाकर इबादत नही करते कि खुदा सबको इन्सान बनाए ? हिंदू भी कोई ऐसी खबर नही लिख भेजते कि वे एकातमें बैठकर ईश्वरसे कहेंगे कि वह हिंदुस्तानसे अग्रेजोको चले जानेकी सुबुद्धि दे और सभी मुसलमान भाई जिन्हे पागलपन छू गया है उन्हे सयाना बनाए।

पंजाबमें भी वे डरते हैं, क्योंकि वे तादादमें कम हैं। वहां हिंदुओंके साथ सिख भी हैं। सिख क्यों डरें? दोनों ओर ऐसी बात क्यों हो कि न जाने कौन पहले तलवार उठायगा।

बिहारमें अगर हिंदू लोग मुसलमानोंको मारेंगे तो वे मेरा कत्ल करेंगे। मैं तो कहता हूं कि बिहारके मुसलमान मेरे सहोदर भाई हैं। वे मुझको देखकर खुश होते हैं। उनको यह यकीन हो गया है कि यह एक शख्स तो हमारा अपना ही है। उनको अगर कोई मारता है तो वह मुझे मारता है। अगर उनकी बहन-बेटीका अपमान करता है तो वह मेरा अपमान करता है। यह बात मैं इस मंचपरसे बिहारके सभी हिंदुओंको सुना देना चाहता हूं।

और मुसलमानोंको वहां डरनेका क्या कारण है? दो अच्छे मुसलमान सेवक उनकी सेवा कर रहे हैं। फिर वहांके मंत्रिमंडलमें श्रीकृष्ण सिनहा हैं, जो पूरे सजग हैं।

आजकल एक अफवाह यह चल पड़ी है कि गांधी बिहारमें रहकर हिंदुओंको कटवाना चाहता है; पर मैं बुलंद आवाजसे कहता हूं कि सब-के-सब मुसलमान पागल बन जायं तब भी हिंदू पागल न बनें।

सिख भाई तो अपने लिए कहते हैं कि एक सिख सवा लाखके बराबर होता है और पांच सिख छः लाखके बराबर। उनका ऐसा कहना मुझे अच्छा लगता है। ग्रंथ साहब और गुरु जैसे उनके हैं, वैसे मेरे भी हैं। मैं जब अपनेको मुसलमान बताता हूं तब अपनेको सिख बतानेमें मुझे लज्जा किस बातकी? और सिखोंने तो ननकाना साहबमें सत्याग्रह और शूर-वीरताका बड़ा काम किया है। लेकिन आज वे तलवारकी ओर देख रहे हैं। वे यह नहीं समझते कि कभी तलवारका जमाना था तो भी अब वह चला गया है। वे नहीं जानते कि आज तलवारके भरोसे वे किसीको जिंदा नहीं रख सकते। यह एटमबमका युग है।

गुरु गोविंदसिंहने जब तलवारकी बात सिखाई तबकी बात आज नहीं चल सकती। हां, उनकी सीख आज भी कामकी है कि एक सिख सवा लाखके बराबर है। लेकिन वह ऐसा तब होगा जब वह अपने भाईके लिए और सारे हिंदुस्तानके लिए मरेगा।

ऐसी बहादुर औरतें भी हुई हैं। एक जगह सब मर्द मारे गए और उनकी मदद मिलनेकी आशा नही रही तब वे चुपचाप तावे होनेके बजाय खुद मर गई। यह सच्ची बात है। करीब पचहत्तर बहनें इस तरह मर मिटी। उन्होंने अपने हाथसे अपने बाल-बच्चोको पहले कत्ल किया, क्योकि वे नही चाहती थी कि दूसरे लोग उनके बालकोको सताए।

मैं कहूगा कि मुसलमान हो या हिंदू, जिसने इस तरह किया है, उसका ही धर्म जिंदा रहा है। सिखोसे भी मैं कहूगा कि जब आप एक-एक सवा लाखके बराबर है तब ईश्वरका ध्यान करके 'सतश्री अकाल' का नारा लगाते हुए आप मर जाय। इससे ज्यादा और बहादुरी क्या हो सकती है ?

मुझको भले कोई बुजदिल कहे, मै बुजदिल हू यह तो ईश्वर ही जानता है। पर बुजदिल आदमी भी अगर बहादुरीकी बात सिखाता है तो वह सीखनी चाहिए। मैं किसीको बुजदिल बनाना नही चाहता। न मैंने किसीको बुजदिल बनाया है और न मैं बुजदिल हू।

## : २२ :

### २८ मई १९४७

भाइयो और बहनो,

आज किसी बहन या भाईने उपद्रव नही मचाया और न विरोध ही किया, यह मुझे अच्छा लगा। मुझे तो यकीन है कि दीवानापन रोज नही चल सकता। यही बात हिंदू-मुस्लिम झगडेके लिए भी है। मेरे पास खत चले ही आ रहे है। कुछ भले खत भी आते है। कई मुसलमान भले है जो लिखते है कि हिंदू और मुसलमानका धर्म अलग हुआ तो क्या हुआ ? इस कारण उनके दिल तो अलग नही होने चाहिए। कुछ हिंदू भी ऐसे है जो मुझे धकमिया देते हैं कि कुरानसे बोलना आप बद नही करेगे तो हम आपको देख लेगे। आपके यहा

काली झंडिया लेकर हम आएंगे[1]। और आकर वे करेंगे क्या? हवा ही ऐसी है कि न कुछ सुनना, न कुछ देखना, बस चीखते रहना। वे भी उसी तरह प्रार्थनामें दखल देंगे। लेकिन ऐसा होगा तो भी जबतक आप लोग शांतिसे साथ दे रहे हैं, हमारा प्रार्थनाका सिलसिला चलता ही रहेगा और अगर आप सभी लोग काली झंडिया लेकर आवेंगे तो फिर मैं अकेला प्रार्थना करूंगा। आप मुझे पीटेंगे तो भी मैं राम-राम करता रहूंगा। अगर मैं आपसे बचनेके लिए पुलिस रखूं, तलवार-बंदूक चलाऊं तो भी अखीरमें तो मुझे मरना ही है। तो फिर मैं राम-राम करते ही मरूं तो क्या बुरा है। जब मैं इस तरह मर जाऊंगा तब आप पछतायंगे। आप अपनेसे ही कहेंगे कि हमने क्या कर डाला, इसको मारकर कुछ पाया तो नहीं; पर यदि मैं पुलिस रखूं या आपको पीटूं तो आप मुझे मारकर यही कहेंगे, अच्छा हुआ जो इसे मार डाला। लेकिन मुझे उम्मीद है कि आप तो जिस तरह आए हैं उसी तरह शांत रहेंगे।

आज मैं आपको कुछ प्रश्नोंके उत्तर दूंगा। सबके उत्तर तो आज नहीं दे सकता। कल एक भाईने पूछा था कि अगर कुत्ता पागल हो जाय तो क्या किया जाय? क्या उसे मारा न जाय? यह अजीब प्रश्न है। पूछना तो यह चाहिए था कि इन्सान पागल हो जाय तो क्या किया जाय? पर बात तो यह है कि अगर हमारे दिलमें राम है तो कुत्ता भी हमारे सामने पागल नहीं बन सकता। लेकिन एक बार मेरे एक भाईने मेरे पास आकर कहा, 'कुत्ता पागल हुआ है। काटता फिरता है, उसको क्या किया जाय?' मैंने कहा कि मेरी जिम्मेदारीपर उसे मार दिया जाय, पर वह थी कुत्तेकी बात। इन्सानके पागल होनेपर वह बात नहीं चलती। मुझे याद है, जब मैं दस वर्षका था, मेरा भाई दीवाना बन गया था। बादमें वह अच्छा हो गया। अब तो वह नहीं रहा; पर मुझे उसका स्मरण आज भी उतना ही ताजा है। पागलपनमें वह सबको

---

[1] गुजरातके पाकिस्तानविरोधी मोर्चेवालोंने गांधीजीको चेतावनी दी है कि यदि आठ दिनमें आप अपना मुस्लिमपरस्तीका रवैया नहीं बदलेंगे तो हम आपके दिल्ली-निवासस्थानपर काली झंडियां लेकर आवेंगे।

मारनेको दौड़ता था, लेकिन मैं उसे क्या करता? मारता? या मेरी मा या पिताजी उसे मारते? घरवालोंमेंसे किसीने उसे नहीं मारा। वैद्यराजको बुलाया गया और उनसे कहा गया कि उसको बिना मारे जो कुछ इलाज किया जा सकता है वह किया जाय। वह मेरा सगा भाई था। लेकिन अब मेरे पास वह भेद नहीं रहा। आप सब मेरे लिए सहोदर भाईके समान ही हैं। अगर आप सब पागल बन जाय और मेरे पास फौज मौजूद हो तो क्या मैं आप सबपर गोली चलवा दू? दुश्मन भी अगर पागल बन जाय तो उसपर गोली नहीं चलाई जा सकती। जो पागल बनेगा उसे पागलखानेमें भेजना होगा। आपको मालूम होना चाहिए कि हिंदुस्तानमें बहुतसे पागलखाने है। मैंने अपनी आखो ऐसे पागल देखे है जो सचमुच गोलीसे मार देनेके लायक होते है, पर हम उनको डाक्टरके हाथमें छोड़ते है।

मेरे एक नजदीकी मित्र थे जो मेरे भाईके बराबर थे। उनका लड़का पागल हो गया। वह दूसरोंका खून करनेतक हावी हो जाता था। उसके लिए मैंने नहीं कहा कि उसे गोली मार दो। मैं चाहता तो उसे मरवा सकता था, क्योंकि महात्मा कहा जाता था। हमारे यहा महात्मा कहलानेवालेको सब कुछ करनेका अधिकार है। वह खून करे, व्यभिचार करे, चाहे जो करे, उसे माफ हो जाता है। उसे पूछनेवाला कौन होता है? लेकिन मुझे तो ईश्वरका डर था। मैंने सोचा, ईश्वर तो तुम्हें पूछेगा ही। सच बात तो यह है कि आज कोई महात्मा तो हमारे बीच है ही नहीं, सभी अल्पात्मा ही है।

खैर, मैंने उस लड़केको डाक्टरके यहा भिजवा दिया। वहासे भी वह भाग आया। अभीतक उसका पागलपन गया नहीं है। उसके बाल-बच्चे भी है। सभी घरवाले उसे बर्दाश्त करते है। मेरे मित्रके उस लड़केकी तरह ही हमें इस सब पागलपनका उपाय सोचना चाहिए।

आज हमारा खून खौल रहा है। चारों ओरसे बातें आ रही है कि न जाने ? जूनको क्या होगा? पहले चार-पाच जगह दगा हुआ, अब सभी जगह हिंदुओंका खून करनेकी चर्चा है और हिंदू कहेंगे कि जब मुसलमान मारते है तो हम भी क्यो न मारे? और फिर खूनका दरिया

वहा देंगे ! यह पागलपन नही तो क्या है ? मुझे भरोसा है कि आप लोग जो इतनी शातिसे यहा बैठे है ऐसे पागल नही बनेंगे । जो पागल बने हैं और हमें मारना चाहते हैं उन्हे हम मारने देंगे । हम मर जायगे तो उनका पागलपन अच्छा हो जायगा ? आजकल जो पागलपन फैला है वह ऐसा नही है, जो बातको समझे नही । अगर सच्चा पागल भी छुरी हाथमे लिए आता है तो हम खतरा उठाते है, उससे डरते नही हैं । इसी तरह मुसलमान भी अगर तलवार उठाकर आते हैं और पाकिस्तान मागते हैं तो मैं कहूगा—'तलवारके जोरसे पाकिस्तान नही ले सकते । पहले मेरे टुकडे कीजिए और बादमे हिंदुस्तानके ?' यदि सब इसी प्रकार कहेंगे तो ईश्वर उनकी तलवारके टुकडे कर डालेंगे ।

मैं तो मिस्कीन आदमी हू, लेकिन ऐन मौकेपर आप मेरी बहादुरी देखेंगे । उस समय मैं किसीकी लाठीके मुकाबले लाठी नही चलाऊगा । मैं चाहता हू कि पागलके सामने हम पागल न बनें । हम समझदार रहे तो सामनेवालेका पागलपन चला जायगा । उनका पाकिस्तान भी चला जायगा । अगर पाकिस्तान सच्चा होगा तो वह सारा हिंदुस्तान ही होगा ।

अगर हम पागल बनेंगे तो अग्रेज पूछेंगे कि क्या अहिंसा हमारे ही लिए थी ? आपसमे आप तलवार खीचते है । कहा गई वह अहिंसा ? फिर कहेंगे कि अहिंसावालोसे हम अग्रेज अच्छे थे, जो मारा तो सही, पर अमन रखा । उनको तो राज चलाना है । इसलिए ऐसी बात कहेंगे । लेकिन मैं उनसे कहूगा कि वे ऐसा न कहें । उन्हे तो जाना ही है और हमारी अहिंसाकी लडाईके कारण जाना हैं । यहा करोडो लोगोने अहिंसाकी बहादुरी बताई । आपने अग्रेजी झडेको सिर नही झुकाया, आप जेल गए, आपने अपने घर बरबाद होने दिए । तब जाकर आज हम आजाद हो रहे हैं । पर अब उस बहादुरीके जरिएसे हम आजाद होनेकी बात नही करते । आज हम ऐसा काम करने लग गए है कि हिंदुस्तान-पर सब हँसे और थूके ।

ऐसा हम हरगिज नही करेंगे । आप किसीको मारेंगे नही, मर जायगे तभी आप सच्ची आजादी पायगे ।

माउटबेटन आ रहे है । वे क्या लायगे, यह सोचकर सब डर रहे

है। अगर वह हिंदुओंको कुछ देते है तो मुसलमान पागल क्यो बने ? और मुसलमानोको दे तो हिंदू क्यो डरे ? हम उनकी ओर न देखें, २ जूनको न देखें, अपनी ओर ही देखें ।

अगर वे कुछ न देंगे तो क्या सब पागल बन जायगे ? ऐसे पागल कि बुड्ढो, बच्चो और औरतो सभीको काट डाले !

दूसरा प्रश्न यह है कि अतरिम सरकारके अदर जो लोग है वे अंग्रेजोके नचाए क्यो नाचते है ? क्या हिंदमे तीन ही कौमें है—हिंदू, मुस्लिम और सिख ? वे पारसीको क्यो नही बुलाते ? क्या इसलिए नही बुलाते कि उनके पास तलवार नही है ? पारसीको भी बुला लें तो ईसाइयोने क्या गुनाह किया है ? फिर यहूदियोको क्यो नही बुलाते ? प्रश्नकर्त्ताका लिखना ठीक ही है। मुझे भी इस बातका दर्द होता है। काग्रेस तो सबके लिए है। काग्रेसका सभी लोग साथ देते है। फिर काग्रेस बुजदिल क्यो बनती है ? काग्रेस कोई अकेले हिंदुओकी नही है। सच है कि उसमे बहुत बडी सख्यामे हिंदू है, पर दूसरे भी तो है। यदि हिंदू, मुसलमान और सिख आपसमे फैसला कर लेंगे तो क्या पारसियोको दबा देंगे ? यहूदी और दूसरे भी जो लोग है वे मर जायगे ? उन सबका समाधान हो जानेपर औरोका क्या करेंगे ? उनको छोड देंगे ? फिर वे सब कहेंगे कि हमने जो पहले काग्रेसका साथ दिया तो क्या इस दिनके लिए ? क्या कारण है, जो वाइसराय केवल अतरिम सरकारके चद आदमियोसे ही सारी बाते करे ? क्या इसलिए कि जवाहरलाल बहुत बडे आदमी है ? या सरदार बारडोलीके बहादुर है, राजेंद्र बाबू बहुत पढे हुए है और राजाजी बडे बुद्धिमान है ?

मै आपसे कहना चाहता हू कि काग्रेसमे वे ही नही है, आप सब है। जिन्होने काग्रेसको मदद दी और उसके लिए काम किया वे सब है। जो लोग डेपुटेशनमे नही जाते, जो बोलते नही है, वे सब लोग भी इसमें है। अगर तीनो कौमे मिलकर कुछ तय कर ले और दूसरोकी परवा न करें तो वह बडी बुरी हालत होगी और बाकी लोगोकी हमपर आह पडेगी। इसलिए हम समझे कि जितना हम करें वह सब जातियोके लिए करें।

जब मुसलमान भी इस बातको समझ जायगे तब सब काम अच्छा

हो जायगा। और तब हमारा—मेरा व जिन्ना साहबका—दस्तावेज ठीक मान लिया जायगा कि राजनैतिक मकसदके लिए हिंसा नहीं करनी चाहिए।

## : २३ :

### २९ मई १९४७

भाइयो और बहनो,

जबतक प्रार्थना समाप्त न हो जाय और मैं अपनी बात कहना खतम न कर लूं तबतक आप मौन रहें। मैं चाहता हूं कि मैं जबतक यहां मौजूद हूं और जिंदा हूं तबतक आप लोग जो रोज भक्ति-भावसे यहां आते हैं—जो केवल तमाशा देखने आते हैं उनकी बात जाने दीजिए—प्रभुका नाम लेनेमें मेरा साथ दें। और बादमें भी मेरी बात शांतिसे सुनें। आज जो मैं कहनेवाला हूं, बड़ी कामकी बात है।

प्रार्थना समाप्त हो जानेपर गांधीजीने कहा—

आजके और २ जूनके बीच थोड़े ही दिन रह गए हैं। इन दिनों मैं रोज एक ही विषयके किसी-न-किसी पहलूपर बोलूंगा, जो आप लोगोंके दिलोंमें सबसे ज्यादा समाया हुआ है। आप लोगोंने शांति और संयम रखकर मुझे अपनी ओर खींच लिया है और अपना दिल खोलकर रख देनेको बाध्य किया है। कितना अच्छा हो कि जो लोग अपनेको इस देशकी संतान मानते हैं वे ठीक तरहसे सोचें और बहादुरीसे चलें। यह मुश्किल काम जरूर है, जब कि अखबारोंमें पागलपनसे भरी हुई आग और मार-पीटकी भयंकर खबरें छपती रहती हैं।

मैं इस बातकी कोई चिंता नहीं करता कि २ जूनको क्या होनेवाला है। या माउंटबेटन साहब आकर क्या सुनायंगे। मेरी ऐसी आदत ही नहीं है कि सरकार क्या कहेगी इसकी चिंतामें रहूं। १९१५ में मैं यहां आया, तबसे लेकर आजतक मैंने ऐसा ही किया है।

मेरा जन्म तो यहींका है। २२ वर्षकी उम्रमें मैं यहांसे चला गया।

सालों मैं वनवासमें रहा और बीस बरसतक दक्षिण अफ्रीकामें रहनेके बाद यानी अपनी असली जवानी बिताकर मैं यहां लौटा। इस बीच मैंने यहां कोई पैसे इकट्ठे नहीं किए। मैंने शुरूमें ही समझ लिया था कि भगवानने मुझे ऐसा ही बनाया है कि पैसोंकी ओर मैं न जाऊं। पर उसकी खिदमत कर, ईश्वरने मुझसे कहा कि तू दूसरा काम करेगा तो सफल नहीं होगा। सेवाका तरीका गीताने मुझे यह बताया कि यह समझ कि मेरे पास जो है वह मेरा नहीं है, 'तेरा है' (ईश्वरका है)। तब प्रश्न यह सामने आया कि यह 'तू' (ईश्वर) कहांपर है? जवाब मिला कि संसारके सारे व्यक्तियोंमें। यानी जो मनुष्य-जातिकी सेवा करता है वह ईश्वरकी सेवा करता है।

तब हम ईशोपनिषद्के उस मंत्रपर आ जाते हैं जिसमें कहा है—'सारा जगत ईश्वरसे ही भरा है।'

जब मैं आश्रममें था तब रोजाना इस मंत्रका अर्थ सुनाता था। उसमें आगे कहा है—'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृध कस्यस्विद्धनम्।' यानी सब कुछ छोड़कर काम कर, किसीका कुछ भी लेनेका लालच मत कर।

बात तो यह सादी है, बच्चा भी उसे समझ सकता है, पर वह उसका भेद नहीं समझ सकता। हम बड़े हैं, हमें चाहिए कि उसका भेद समझें। इसलिए मैंने आपको यह बड़ी बात सुना दी। इसका भेद अगर हम समझ लें तो फिर हम किसके लिए लड़ें?

यह तो बड़ी बात हो गई, अब जो मैं सुनाना चाहता हूं उस बातपर आऊं। आज मैंने थोड़ा कष्ट किया है। मेरे पास इतना समय कहां कि रोज मैं अपने भाषणको अंग्रेजीमें लिख दिया करूं और हमारे अखबार जो अंग्रेजीमें चलते हैं उन्हें तो मेरा भाषण छापना चाहिए ही, परंतु हमारे अखबारनवीस उसे अंग्रेजीमें किस प्रकार दें। वे बेचारे अंग्रेजी पूरी तरह कहां समझ पाते हैं? वैसे तो वे लोग बी० ए०, एम० ए० होते हैं, लेकिन इतनी अंग्रेजी नहीं जानते कि मैं जो हिंदुस्तानीमें कहता हूं उसका सही मतलब अंग्रेजीमें समझा सकें। क्योंकि वह भाषा उनकी नहीं है, दूसरोंकी है। यहां तो मैं हिंदुस्तानीमें कहूंगा,

क्योकि वह तो करीब-करीब मेरी भी और आप सबकी पूरी तौरसे मातृभाषा है। इसलिए उसमे मै जो कुछ कहूगा यह आप सही-सही समझ सकते है। यह (डा० सुशीला नैयर) मेरे भाषणको अंग्रेजीमे कर तो लेती है, क्योकि वह खासा अंग्रेजी जानती है, फिर भी उसमे कमी रह जाती है। इसलिए आज मैने थोडा समय निकालकर अंग्रेजीमे लिख रखा है। यहा मै उसीको ध्यानमें रखते हुए बात कहूंगा। परंतु अखबारोमे वही छपेगा जो मैने लिख रखा है।

तो शुरूमें मै उस खतकी बात बता देना चाहता हू, जिसमें मुझे प्रार्थना चालू रखनेके बारेमे कोसा गया है और लिखा है कि झूठा है, ठीक तरहसे जवाब भी नही देता। ऐसा जो लिखते है वे बालक है। उम्रमे भले ही सयाने हो गए हो, पर बुद्धिमे बालक ही रहे है।

उनको मेरी यह बात चुभती है कि मै यही क्यो कहता हूं कि 'मरो', 'मरो'। ऐसा क्यो नही कहता कि पहले 'मारो-काटो और फिर मरो'। वे चाहते है कि मै हिंदुओसे तलवारका बदला तलवारसे और आगका बदला आगसे लेनेको कहूं। लेकिन मै अपने सारे जीवनके विरुद्ध नही जा सकता और मानव-कानूनकी जगह पाशविक कानूनकी हिमायत करनेका अपराधी नही बन सकता। जब कोई मुझे मारने आवेगा तब मै यह कहते-कहते मरूगा कि ईश्वर तेरा भला करे। इसके बदले उनका आग्रह है कि मै पहले मारनेको कहू और बादमे मरना पडे तो मरनेको कहू। अगर मै ऐसा कहनेको तैयार नही हू तो वे मुझे कहते है कि 'तुम अपनी बहादुरी अपनी जेबमे रखो।' और यहासे जगलमे भाग जाओ। पर वे ऐसा क्यो कहते है? इसलिए कि मुसलमान सबको मारते है। तो क्या इसी बातपर हिंदू भी मारनेको उतारू हो जाए और फिर दोनो दीवाने बन जाय? क्या मुसलमान बिगड जाय तो हम भी बिगडे? कहा जाता है कि सब मुसलमान खराब है, गदे (दिलके) है। और यह भी बताते है कि सब हिंदू फरिश्ते है। लेकिन मै इस बातको नही मान सकता।

एक मुसलमान महिलाका खत मेरे पास आया है। उसमे लिखा है कि जब आप 'औज अबिल्ला' की ईश्वरकी स्तुति करते है तो उसे

उर्दू नज्ममें क्यो नही करते ? मेरा उत्तर यह है कि जब मै नज्म पढने लगूगा तब उसपर खफा होकर मुसलमान पूछेंगे कि अरबीका तरजुमा करनेवाले तुम कौन होते हो ? और वे पीटने आयगे तब मैं क्या कहूगा ?

सही बात यह है कि जो चीज जिस भाषामें कही गई और जिसपर तप किया गया उसी भाषामे उसका माधुर्य होता है। बिशपोने अंग्रेजी-बाइबिलकी भाषाको बहुत परिश्रमसे मधुर बनाया है और लेटिनसे भी अग्रेजीमे वह किस तरह मीठी हो गई है। अग्रेजी सीखना चाहनेवालेको बाइबिल तो सीखनी ही चाहिए। मै अग्रेजी भाषाका द्वेषी नही, उसका प्रशसक हू। पर गलत जगह जाकर वह गदी हो जाती है। सो मैं 'ओज अबिल्ला' की भाषाका माधुर्य छोडनेको तैयार नही; क्योकि हमारे पास ऐसे कवि नही है जो वैसी ही मधुरतासे उसका अनुवाद कर सके।

आज मै अहिंसाके शाश्वत नियमकी बात नही कहूगा। हाला कि उसपर मेरा दृढ विश्वास है। यदि सारा हिंदुस्तान उसे सोच-समझकर अपना ले तो वह बेशक सारी दुनियाका नेता बन जायगा। यहा तो मैं केवल यह कहना चाहता हू कि कोई आदमी विवेकके अलावा और किसी चीजके आगे न झुके।

लेकिन आजकल तो हमने विवेक बिलकुल ही भुला दिया है। विवेक तभी कायम रह सकता है जब हममे बहादुरी हो। आज जो चल रहा है वह बहादुरी नही है। इन्सानियत भी नही है। हम बिलकुल जानवर-जैसे बन गये है। हमारे अखबार रोज-रोज हमे सुनाते है कि यहां हिंदुओने बरबादी कर डाली और वहा मुसलमानोने। क्या हिंदू और क्या मुसलमान, दोनो ही बुरा काम करते है। यह मैं माननेको तैयार हू कि मुसलमान ज्यादा बरबादी कर रहे है, पर जब दोनो ही बुराई करते है तब किसने ज्यादा बुराई की और किसने कम, यह जानना बेकार है। दोनो गलतीपर है।

खबर आई है कि हमारे नजदीक ही गुडगावमें कई गाव जल गए है। किसने किसके मकान जलाए है, इसका पता चलानेकी कोशिशमे मै हू, पर सही पता लगना कठिन है। लोग कहेंगे कि जब इतने करीबमे

यह सब हो रहा है तब यहा बैठा मैं लबी-चौड़ी बाते कैसे सुना रहा हू ? जब आप लोग यहा आ गए है और हमारी बदकिस्मतीसे गुडगावमे यह हो रहा है तब अपने मनकी बात मैं आपसे कहूगा ही। और मेरा यही कहना है कि हमारे चारो ओर अगार जलते रहे तो भी हमें तो शात ही रहना है और चित्त स्थिर रखते हुए हमे भी इस अगारमे जलना है। हम क्यो दहशतके मारे यह कहते फिरे कि दूसरी जूनको यह होनेवाला है, वह होनेवाला है ? जो बहादुर होगे उनके लिए उस दिन कुछ भी होनेवाला नही है। यह यकीन रखिए। सबको एक बार मरना ही है। कोई अमर तो पैदा हुआ नही है। तो फिर हम यही निश्चय क्यो न कर ले कि हम बहादुरीसे मरेगे और मरते दमतक अपनी ओरसे बुराई नही करेगे ? जान-बूझकर किसीको मारेंगे नही। एक बार मनमे ऐसा निश्चय कर लेगे तब आप स्थिरचित्त रहेंगे और किसीकी ओर नही ताकेगे। जो डरा-धमकाकर पाकिस्तान लेना चाहेगे उनसे कह देगे कि इस तरह रत्तीभर भी पाकिस्तान मिलनेवाला नही है। आप इन्साफपर रहेगे, हमारी बुद्धिको समझा देगे, दुनियाको समझा देगे तो आप पूरा-का-पूरा हिंदुस्तान ले जा सकते है। जबर्दस्तीसे तो हम पाकिस्तान कभी नही देगे।

और अग्रेजोसे क्या कहू ! अगर वे मिशन-योजनासे हटते है तो वे दगाबाज है। हम दगाबाज न बनेगे और न बनने देगे। हमारा और उनका सबध १६ मईकी घोषणासे है। उसीके आधारपर विधान-परिषद् बनी है। उसके मुताबिक हम चलेगे। इसके अलावा हम कुछ नही जानते। दूसरा कुछ तभी हो सकता है जब हम खामोश हो जाय, लडाई-दगा न रहे और हम शात होकर बैठे। पर हम दबेगे नही।

इन चार दिनोमे इतना पाठ आप सीख ले तो सब कुछ मिलनेवाला है। भले ही वे सारे हथियार जो बटोरे है आजमा लें। जब हम इतनी बडी सल्तनतके मुकाबलेमे डट गए और उनके इतने सारे हथियारोसे नही डरे, उसके झडेके सामने सिर नही झुकाया तो अब हम क्यो लडखडाए ? जब कि आजादी मिलने ही वाली है, हम यह सोचनेकी गलती न करे कि अगर हम न झुके—चाहे यह झुकना पाशविक शक्तिके आगे ही क्यो

न हो तो आजादी हमारे हाथोसे निकल जायगी। अगर हम ऐसा सोचेंगे तो हमारा नाश निश्चित है।

मै लदनमे आनेवाले तारोमे विश्वास नही करता। मै यह आशा नही छोडगा कि ब्रिटेन गत वर्पके १६ मईके केबिनट मिशनके वक्तव्यकी इबारत और भावनासे बाल-बराबर भी नही हटेगा, जबतक कि भारतकी पार्टिया अपने आप कोई फर्क करनेको रजामद न हो जाए। इस कामके लिए दोनोको एक जगह मिलना होगा और मानने लायक हल निकालना पडेगा।

यहाके अग्रेज अफसरोके लिए कहा जाता है कि वे बदमाश है। इन दगोमें उनका हाथ है, वे ही हमे लडाते है। लेकिन जबतक यह गभीर आरोप ठीक-ठीक साबित नही हो जाता तबतक हमे उनपर इल्जाम नही लगाना चाहिए। मै तो कहूगा कि अगर हम लडना नही चाहते तो लडाई कैसे होगी? मै अगर यहा बैठी हुई अपनी लडकीसे लडना न चाहू तो मुझे कौन लडा सकता है?

और माउटबेटन साहबका काम आसान नही है। वे बडे सेनापति है, बहादुर है, पर अपनी उस बहादुरीको वे यहा नहीं बता सकते। यहापर वे अपनी सेना लेकर नही आए है। यहा वे फौजी वर्दीमें नही आए है, सिविलियन बनकर आए है और उनका कहना है कि मै अग्रेजोसे हिंदुस्तान छुडवा देनेके लिए आया हू। अब हमें देखना है कि वे किस तरह जाते हैं। माउटबेटन साहबको अपने गवर्नर-जनरलके पदको शोभित करना है। उन्हे अपनी सारी चतुराई और सच्ची राजनीतिज्ञता बतानी है। अगर वे जरा भी चूक जायगे, जरा भी सुस्ती कर जायगे तो ठीक न होगा। इसलिए हम और आप सब मिलकर प्रार्थना करें कि भगवान उनको सन्मति दे और इतनी बात वे जान ले कि सोलह मईकी बातसे बालभर भी फरक जबर्दस्तीसे वे नही कर सकते। अगर करते है तो वह दगा होगा और दगा किसीका सगा नही होता। दगेका अत भलाईमें कभी आ नही सकता।

## : २४ :

### ३० मई १९४७

भाइयो और बहनो,

आप लदनकी ओर न देखें, न वाइसरायकी ओर देखें। इसका मतलब यह नही कि इग्लैडमें जितने अग्रेज है, सब-के-सब बुरे है। उनमें बहुत-से भले भी हैं। माउटबेटन साहब भी भले है। पर वे सब अपने घरमें भले है। जब यहा आकर दखल देते है तो वे बुरे बन जाते है। अब वह पुरानी बात नही रही कि जब अग्रेजोकी हिफाजतका इरादा जरूरी समझा जाता था। सिविल सर्विसमें जो अग्रेज लोग हैं उन्हें अब अपने यहा नौकर रखनेके लिए हम मजबूर नही हैं। अगर सिविलयन रहना चाहें तो रहे और अंग्रेज व्यापारी भी रहना चाहें तो वे भी रहें, लेकिन उनको बचानेके लिए यहा एक भी अंग्रेज सिपाही नही रह सकेगा। हिंदुस्तानियोकी खिदमत और उनकी मुहब्बतके जरिए ही वे रह सकते हैं। अगर कोई पागलपनमे उन्हें नुकसान पहुंचाए तो उसकी जिम्मेदारी हमपर नही होगी। अग्रेजोके हिंदुस्तानसे पूरी तरहसे चले जानेमें कुछ देर लग सकती है। उन्होने इसके लिए १९४८ के जूनकी ३० तारीख कायम की है। उस दिनको आजसे पूरे बारह महीने बाकी रहे हैं। अगर वे इससे पहले जा सकें तो उन्हे जाना है। लेकिन उसके बाद तो वे एक दिन भी नही टिक सकते। यह तो प्रामिसरी नोट की-सी बात है। अगर प्रामिसरी नोटमे इतवारके दिन रुपया देनेका वचन दिया है तो उसे सोमवारपर नही टाला जा सकता। इसी तरह अग्रेज भी ३० जूनके बाद यहा नही रह सकते। अग्रेज-प्रजाने उन्हें जो आदेश दिया हैं उसका उन्हें पालन करना है। आखिर वाइसराय उसी अंग्रेज-प्रजाके नौकर है। इस दूसरी या तीसरी जूनको वह हमें बतायंगे कि वह क्या करना चाहते हैं और किस तरह यहासे जायगे। यह उनका कर्तव्य है और उसे पूरा करना उनका काम है। हमको अपना धर्म खुद देखना है।

फिर मैं सोचता हूं, मै कौन हूं? मै किसका नुमाइदा हूं? बरसों

बीते, मैं कांग्रेससे बाहर निकल आया हू। चवन्नीका मेम्बर भी नही हू। पर कांग्रेसका खादिम हू। मैंने उसकी बरसोतक सेवा की है और कर रहा हू। इसी तरह मैं मुस्लिम लीगका भी खादिम हू और राजाओंका भी खादिम हू। सबका खादिम हू,-पर नुमाइंदा किसीका नही हू। हा, एकका मैं नुमाइंदा जरूर हू। मैं कायदे आजमका नुमाइंदा हू, क्योकि उनके साथ मैंने शाति-अपीलपर दस्तखत किए है। हम दोनोने मिलकर कहा है कि हिंसासे कोई राजनैतिक बात हम नही ले सकते। यह बहुत बडी बात है। उस अपीलपर दूसरे लोगोकी सही भी लेनेकी बात थी, लेकिन जिन्ना साहबने कहा कि मुझे तो अकेले गाधीजीकी ही सही चाहिए। इस तरह मैं जिन्ना साहबका नुमाइंदा बन गया। उनके अलावा मैं किसीका नुमाइंदा नही हू।

लेकिन मैंने अपीलपर हिंदूकी हैसियतसे दस्तखत नही किए, किंतु हिंदू मैं जन्मसे अवश्य हू, कोई मुझे हिंदू मिटा नही सकता। मैं मुसलमान भी हू, क्योकि मैं अच्छा हिंदू हू और इसी तरह पारसी और ईसाई भी हू। सब धर्मोकी जडमें एक ही ईश्वरका नाम है। सबके धर्म-शास्त्र एक-सी बात कहते है।

मैंने कुरान देखा है और जैसा कि उस बहनने लिखा था, मैं नही मानता कि कुरानमें काफिरोको कत्ल करनेकी बात लिखी है। मैंने बादशाह खान और अब्दुस्समदखा साहबसे, जिन्होने आज बढिया तरीकेसे आयत पढी है, पूछा तो वे भी नही कहते कि कुरानमें गैर-मुस्लिमको कत्ल करनेके लिए लिखा है। बिहारके मुसलमानोमेंसे किसीने नही कहा कि क्योकि आप अविश्वासी है, इसलिए हम आपको कत्ल करेंगे और नोआखालीके मौलवियोने भी ऐसा नही कहा, बल्कि उन्होने राम-धुनको ढोलकके साथ होने दिया। कुरानमें जो लिखा है उसका मतलब इतना ही है कि खुदा काफिरसे पूछेगा। खुदा तो सबसे पूछेगा। मुसलमानसे भी पूछेगा। वह लफ्जको नही पूछेगा, कामोको पूछेगा। बाकी जो गदा देखना चाहे, हर जगह गदा देख सकते है। ऐसी कोई चीज नही जिसमे अच्छा व बुरा न मिला हो। हमारी मनुस्मृतिमें भी लिखा, है कि अछूतोके कानमें सीसा डालो। पर मैं कहूगा कि हिंदू-धर्मशास्त्रोकी यह

असली शिक्षा नही है। तुलसीदासजीने सब शास्त्रोका निचोड बता दिया कि दया धर्मका मूल है। कोई भी धर्म यह नही सिखाता कि हम किसीका खून करें। हमको तो तुलसीदासजीके इस दोहेपर अमल करना चाहिए—

जड चेतन गुन दोषमय, 'विश्व कीन्ह करतार।
संत हंस गुन गहहिं पय, परिहरि वारि विकार॥

हमें तो मुसलमानोसे कह देना होगा कि इस तरह पाकिस्तान नही लिया जा सकता। तबतक पाकिस्तान मिलनेवाला नही है जबतक कि यह जलाना-मारना बद नही होगा। इसी प्रकार हिंदू भी मुसलमानोको जबर्दस्ती पाकिस्तानका नाम लेनेसे नही रोक सकते। पर मैं पूछता हू कि ख्वामख्वाह आप क्यो पाकिस्तानके नामपर लडते है? पाकिस्तान कौन-सा भूत है? सच्चा पाकिस्तान तो वह है, जहा बच्चा-बच्चा सुरक्षित हो। चाहे पाकिस्तान हो चाहे हिंदुस्तान हो उसमे प्रत्येक धर्म और कर्मवाले सकुशल रहने चाहिए। फिर वे चाहे ब्राह्मण, बनिया या पंडित हो अथवा अलग-अलग धर्मके हो। इसलिए मै जिन्ना साहबसे कहूगा कि आइए, हम सारे हिंदुस्तानमे घूमें और जोर-जबर्दस्तीको बद कराएं।

मै अपने साक्षी जिन्ना साहबसे कहता हू और सारी दुनियासे कहता हू कि हम तबतक पाकिस्तानकी बात भी नही सुनना चाहते जबतक यह तगद्दुद चलता है। जब यह बंद हो जायगा तब हम बैठेंगे और ठहरायगे कि हमे पाकिस्तान रखना है या हिंदुस्तान। इस तरह जब भाई-भाई होकर बैठेंगे तब हम रोशनी करेंगे और जलेबी बाटेगे। दोस्तीसे ही पाकिस्तान बन सकता है और दोस्तीसे ही हिंदुस्तान कायम रह सकता है। अगर हम लडते रहे तो हिंदुस्तान तबाह हो जानेवाला है।

गत वर्षका १६ मईका निवेदन समझौतेकी जड (बुनियाद) है। उसका एक भी कामा हटाया नही जा सकता। अंग्रेजोको इससे बाहर कुछ भी करनेका हक नही है और न हम ही इससे ज्यादा कुछ माग सकते हैं। हमको यह साफ कह देना चाहिए कि चाहें हम सब मर जायं या सारा हिंदुस्तान जल जाय—राख हो जाय, परतु जबर्दस्ती पाकिस्तान मिलनेवाला नही है।

## : २५ :

### ३१ मई १९४७

गाधीजी मचपर आए तो लोगोको शात करते हुए उन्होने कहा कि प्रार्थनाके समय आख वद और कान खुले रहने चाहिए।

कुरानकी आयतके पाठपर एक हैटधारी युवकने विरोध किया, लेकिन फिर भी प्रार्थना चलती रही। लोगोने काफी शाति रखी। प्रार्थनाके बाद गाधीजीने कहा—

वह भाई जो अग्रेजी टोप लगाकर बोलता था कि 'जिन्नाको गिरफ्तार करो' क्या जिन्नाको गिरफ्तार करना चाहता है? वैसा करनेकी आपके पास ताकत हो सकती है और मै भी वैसी ही ताकत रखता हू, लेकिन मेरा तरीका दूसरा है। मै जबसे दक्षिण अफ्रीकासे आया हू, आपको वह तरीका सिखा रहा हू। वैसा मै कोई ऐसा भारी शिक्षक तो नही हू, पर एक पागल भी अपनी बात तो बता ही सकता है। आज चौवन बरसोसे मै यही बात बताता रहा हू कि हमें अपने शत्रुको कैद कर लेना है। आप जिन्नाको शत्रु समझते है, लेकिन मै तो किसीको शत्रु मानता ही नही। मैने तो कहा है कि मै उनका नुमाइंदा बना हुआ हू और जो मै कहता हू वह सच्चाईसे ही कहता हू। तब फिर मै उनको शत्रु कैसे मान सकता हू? अग्रेज भी मेरे दुश्मन बन गए थे, लेकिन मै उनका दुश्मन नही बना। मै तो उनका दोस्त बना, उनका प्रतिनिधि बना और मैने उन्हें उनकी भलाईकी ही बात सुनाई।

आदमी दो तरहसे अपने दुश्मनको कैद करते है। एक सख्तीसे और दूसरे मुहब्बतसे। मैने आपको मुहब्बतसे कैद कर रखा है। जब मै आपको शात रहनेके लिए कहता हू तब आप शात हो जाते है। आपको कैद किया है यह भाषा-प्रयोग थोडा विनोदमे है, पर भाव आप समझ गए होगे। तो मेरा कहना यही है कि कभी-न-कभी हम जिन्ना साहबको जरूर कैद कर लेंगे। पुलिस उन्हे क्या कैद करेगी? पुलिस उन्हें नही पकड सकती। मुझको भी पुलिस गिरफ्तार नही कर सकती और न खान साहबको ही पकड सकती है। हा, सल्तनत चाहे तो उन्हें पकड

सकती है, लेकिन सल्तनतके पकड़नेपर भी जिन्ना साहब ठीक तरह कैद नही होगे । सही तौरपर गिरफ्तार तो वे तब होगे जब मै उन्हें कैद करके यहापर लाकर खडा कर दूगा ।

एक शख्स मीर आलम था। सरहदी गाधीके मुल्कका। जैसे ये पहाडके-से है, वह उनसे भी ऊचा था। पहले वह मेरा मित्र था। पर पठान तो भोले ही होते है। इसी कारण वे बादशाह है। उसको किसीने बहका दिया कि गाधीने पद्रह हजार पौड जनरल स्मटससे ले लिए है और कौमको बेच डाला है। बस, एक दिन वह मीर आलम मेरा दुश्मन बनकर आया। उसके हाथमें बडी-सी लाठी थी और उसपर सीसेकी मूठ लगी थी। उसने ठीक मेरी गरदनपर वह लाठी मारी। मै गिर पडा। नीचे पत्थरका फर्श था। मेरे दात टूट गए। ईश्वरको मजूर था, इसलिए मैं बच गया। मीर आलमको दो-तीन अग्रेजोने, जो उस रास्तेसे जा रहे थे, पकड़ लिया, लेकिन मैंने उसे यह कहकर छुडवा दिया कि "वह बेचारा दूसरेके धोखेमे आ गया कि मै लालची हू और इसपर फौजी पठानका खून खौल उठे और वह मारनेको उतारू हो जाय तो कोई आश्चर्यकी बात नही है।" इस तरहसे मीर आलमको मैने कैद कर लिया। वह मेरा पक्का दोस्त बन गया।

अगर ईश्वरको मजूर होगा तो एक दिन जिन्ना साहब भी यहा आकर बैठेंगे और कहेगे कि मै आपका दुश्मन न हू और न था। मै पाकिस्तान तो मागता हू, पर मेरा पाकिस्तान आला दरजेका होगा। वह सबके भलेके लिए होगा। तब हम सब मिलकर रोशनी करेगे और मिठाइया बाटेगे ।

यह मै बुजदिली या खुशामदकी बात नही कह रहा हू। मै बहादुर बननेकी ही बात कह रहा हू। सिखोकी तरह हमे एक-एकको सवा लाखके बराबरका बहादुर बनना है। मै बता चुका कि प्रत्येक सिख सवा लाखके बराबर क्योकर होता है। कृपाणके जरिएसे नही, कृपाण तो उसके पास इसलिए होती है, जिससे वह बता सके कि वह कभी भी उसके मातहत नही होगा। सवा लाख मिलकर मारे या कोई अकेला मारे, तो भी वह हाथ नही उठायेगा। कौन कहेगा कि इस तरह मरनेवाला बुजदिल है। सभी उसे सच्चा बहादुर बतायगे ।

मैंने कल कहा था कि सारा हिंदुस्तान जल जायगा तो भी हम ताकतके जोरसे पाकिस्तान नही होने देंगे। बुद्धिके जरिए, हमारे दिलोपर असर डालकर, समझा-बुझाकर आप कहेंगे और हम समझ जायगे कि आप तो सीधी-सी बात करते हैं, आपके दिलमे कोई छल-फरेब नही है तो पाकिस्तान मान लेगे, लेकिन उस समय आप हमे विश्वास दिलायगे कि पाकिस्तानमें किसीको भी मुसलमानोसे डरनेकी बात नही रहेगी। आपने जब खुदाको हाजिर-नाजिर समझकर दस्तखत किए हैं और यह एलान कर दिया है कि राजकीय उद्देश्यकी पूर्तिके लिए हिंसा नही होनी चाहिए तब पाकिस्तानके लिए जोर-जबर्दस्ती कैसे उचित हो सकती है?

हम हिंदुस्तानमें बिरलाका राज नही चाहते और भोपालके नवाबका भी राज नही चाहते। बिरला कहते हैं कि हम राज करना नही चाहते। उसी तरह नवाब भोपाल भी अपनेको रैयतके दोस्त बताते है। वे भी रिआयाके खिलाफ होकर राज नही चाहते। तो फिर राज आयगा किसके हाथमें? वह आप लोगोके हाथमे आयगा। आपके हाथोमे भी नही, मिस्कीनोंके हाथमे हिंदुस्तानका राज होगा।

हिंदुस्तानमे कई बिरला है। उनकी ताकत क्या है? वे पैसे देते हैं और मजूरसे मजूरी कराते है। जब मजूर कह दे कि हम काम नही करेंगे तब धनवानोके करोडो रुपये उनकी जेबमें रह जानेवाले है। अगर वे जमीनवाले है तो भी खुद तो जोतनेवाले नही हैं। जब उन्हें जोतनेवाला कोई न मिलेगा तो उनकी बडी-बडी जमीनें बेकार हो जायगी। इसी तरह नवाब भोपालकी बरछी, भाले और घुडसवार सभी निकम्मे हो जानेवाले है। मार-मारकर वे कितनोको मारेंगे? अपनी रिआयाको मारकर किसपर राज करेंगे? वे तभी अपनी प्रजापर राज कर सकेंगे जब वे प्रजाके ट्रस्टी बन जायगे।

इसके विपरीत अगर कोई कहता है कि नवाब भोपाल मुसलमान है, इसलिए वह मुसलमानका राज कहलाएगा और काश्मीरमें मुट्ठीभर पंडितोका राज रहेगा तो यह तनिक भी चलनेवाला नही है।

हैदराबादके निजामकी बात लीजिए। कहते है कि मौका पाकर वह सारे हिंदुस्तानको सर कर लेनेवाले है; लेकिन कौन सर करेंगे? वहाकी सारी रिआया तो हिंदू पडी है।

अंग्रेज अगर सोचते है कि वह हिंदुस्तानसे हटकर हैदराबाद, भोपाल, राजकोट या इधर-उधर अड्डे जमायगे तो यह दगेकी बात होगी। मुझपर ऐसी कोई छाप नही है। मै तो मानता हू कि अंग्रेजोके जानेकी बात पूरी ईमानदारीकी है। जब उनको भारत छोडना है तब उनकी सार्वभौमिकता भी खत्म होती है, फिर छोटे-मोटे अड्डे उनके क्या काम आनेवाले है? और जब अंग्रेज नही रहेंगे तब राजा लोग रिआयाके साथ बैठनेवाले है।

एक बार मालवीयजी बम्बई पधारे थे। मै उनके साथ था। वहा कुछ महाराजाओके पास हम दोनो गए। राजाओने हमें ऊपर आसनपर बिठाया और वे हमारे घुटनोके पास नीचे बैठे। उस समय अंग्रेजी सल्तनत पूरे जोरमे थी। अब जब वह जबरदस्त सल्तनत हट जाती है तब राजा लोग तुरत ही समझ जानेवाले है कि जनताको जब मानेंगे तभी हम कायम रह सकेंगे। और जनताको माननेका तरीका यही है कि वे विधान-परिषद्मे आवे। अगर वे जिद पकडते है कि हम विधान-परिषद्मे नही आते तो फिर वे राजा नही रह सकते।

हिंदुस्तानमें कोई मुसलमान राजा यह नही कह सकता कि वह सब हिंदुओको मार डालेगा। अगर कोई ऐसा कहता है तो मै उससे पूछूगा कि अबतक वह क्यो हिंदुओका राजा बनकर रहा, क्यो हिंदू प्रजाका अन्न खाया? इसी प्रकार कोई राजा मुसलमान है, इसी आधार-पर यह कहनेका हकदार नही हो जाता कि वह पाकिस्तानमे जा मिलेगा और न हिंदू राजा हिंदू होनेके कारण यह कह सकता है कि वह कांग्रेस-का साथ देगा। प्रजा जहा कहे वही उसे जाना होगा।

अतमे गाधीजीने आश्रमवासी हरिजन युवक चक्रैयाकी दु.खद मृत्युका समाचार सुनाते हुए कहा—वह सेवाग्रामका आश्रमवासी था। नई तालीमके तरीकेपर सीखा था। बडा परिश्रमी और दस्तकार था। झूठ, फरेब, क्रोध-जैसे दोष उसमें नही थे। दैववश उसके दिमागमे कुछ

रोग पैदा हो गया। खुद निसर्गोपचारमें ही विश्वास करता था, पर दोस्तोंने और डाक्टरोंने उसका आपरेशन करनेका आग्रह किया। इस रोगसे उसकी आंखोंका तेज जाता रहा था। फिर भी उसने आपरेशन-मेजपर जानेसे पहले मुझे बड़ी कोशिशसे पत्र लिखा था कि प्राकृतिक चिकित्सा मुझे प्रिय है, पर आपरेशनका प्रयोग करानेके लिए भी मैं तैयार हूं और मौत आएगी तो राम-नाम लेता हुआ मरूंगा। आखिर बंबईके अस्पतालमें आपरेशन किया गया और आपरेशन-मेजपर ही उसके प्राण छूट गए।

उसके जानेपर रोना आता है, पर मैं रो नहीं सकता, क्योंकि मैं रोऊं तो किसके लिए रोऊं और किसके लिए न रोऊं? भारतमाताको अगर बच्चे चाहिए तो बकौल तुलसीदासजी, ऐसे ही चाहिए जो या तो दाता हो, या शूर। चक्रैया दाता था, क्योंकि वह निःस्वार्थ सेवक और परम संतोषी था और शूर भी था, क्योंकि उसने अपने हाथसे मृत्युको अपना लिया। वह हरिजन था, पर उसके दिलमें हरिजन-सवर्ण, हिंदू-मुसलमान-जैसे भेद न थे। वह सबको इन्सान मानता था और स्वयं सच्चा इन्सान था।

आज मैंने नवाब भोपाल और हरिजन बालक चक्रैयाकी बात एक साथ आपको सुना दी। भारतमें दोनोंके लिए स्थान है। नवाब भोपाल ट्रस्टी बनकर ही रहें और चक्रैया-जैसे करोड़ों युवक निकल आवें, तभी भारत सुखसे रहेगा।

## : २६ :

### १ जून १९४७

आज भी प्रार्थनामें कुरानकी आयतके समय एक पंडितने बाधा डाली। लेकिन प्रार्थना चलती रही। श्रोताओंमेंसे दो जवानोंने उस व्यक्ति-का हाथ खींचकर उसे नीचे बिठा देने और चुप करनेकी कोशिश की तो सभामें कुछ खलबली मच गई। जब पुलिस उसे ले जानेके लिए आई तब गांधीजीने कहा, "पुलिस भाई! आप उसे न ले जायें। वहीं बैठा रहने

दें और वह ज्यादा गडबडी न मचावे, इतना भर देखते रहे।" इसपर सिपाही उन पडितजीकी बगलमे शातिसे बैठ गया। गाधीजीकी इस सहानुभूतिका प्रभाव उन पंडितजीपर भी अच्छा पडा। जब गाधीजीने कहा—"कुरानकी आयत तो खतम हो गई। अब भजन हम तभी कहेंगे जब यह पडितजी इजाजत दे देंगे, वरना अब भजन बद रहेगा।" पडितजीने मुस्कराते हुए और अपनी कुहनी बताते हुए गाधीजीसे कहा—"देखिए, खीचातानीमे मुझे यह खून निकल आया है। यही आपकी अहिंसा है?"

गाधीजीने कुछ विनोदमे कहा—"खैर, खून निकलनेकी बात जाने दीजिए। आप यह बताइए कि मै प्रार्थना आगे चलाऊ या बंद कर दूं? आप कहेगे तो भजन चलेगा, नही तो आज न होगा।"

तब प्रसन्नतापूर्वक पडितजीने भजन सुननेकी इच्छा प्रदर्शित की। गाधीजीने पडितजीको समझाते हुए कहा, "आपके पास ही हिंदूधर्म नहीं है। मै भी हिंदू हू और पूरा सनातनी हूं। लेकिन हम गीता ही क्यों कहें, कुरान क्यो नही! मोती तो जहासे मिले वहासे ले लेने चाहिएं। राज अब हमारे हाथमें आ रहा है। उसे हमे देनेके लिए वाइसराय परेशान है। तब क्या आप इस तरह झगड़ेंगे और अपनी अज्ञानता दिखायगे? आपको विनय सीखना चाहिए। बादशाह खानसे आप विनय सीख सकते हैं। आज प्रार्थनाके लिए जब मनु उन्हे लिवाने गई तब उन्होने कहा, 'मुझे वहापर देखकर किसी हिंदूके दिलमे चोट पहुचेगी। इसीलिए मै वहा नही आऊगा।' तब मैने कहला भेजा कि 'आप तो पहाड-जैसे है। मै बनिया होकर भी नही डरता तो आपको क्या डर'! और अब वे यहा आ गए हे तो मुझसे भी अधिक बकरी-जैसा गरीब होकर बैठ गए है। हमें भी ऐसा विनयी होना चाहिए। माना कि कुरानमें कुछ ओछी बाते लिखी है; पर कौन ग्रथ ऐसा है जिसमे ऐसी बाते नही है? मै तो सैकडो मुसलमान मित्रोमे रहा हू, किसीने मुझे यह नही कहा कि तू मुसलमान नही है, इसलिए तुझको हम बुरा मानते है। एक मुसलमान मित्रने[1] —जो अब मौजूद नही रहे, और जो नामके जौहरी थे तथा गुणमे भी वे

---

[1] दक्षिण अफ्रिकाके सौदागर उमर झवेरी।

वैसे ही थे—मुझसे कहा था कि "तू हम लोगोसे डरा कर, क्योकि हममें सभी अच्छे नही होते है।" पर मैने उनसे कहा कि मै किसीकी बुराई क्यो देखू? मुझे तो आपके समान भले मित्र मिल गए इसीपर सतोष है। और वे अकेले नही थे। ऐसे काफी नाम मेरे पास है। एकको तो मैने अपना ही लडका बनाया था, वह सबकी खिदमत करनेवाला था, पर ईश्वरने उसे उठा लिया।[1] जब ऐसे-ऐसे अच्छे आदमी मुसलमानोमें है तब मै कहता हू कि अगर थोडेसे मुसलमान पागल बन जाते है तो भी हिंदूको पागल नही बनना चाहिए। आजतक अग्रेजोने तलवारके जोरसे हमें शात रखा तो क्या उनके जानेपर हम लडने लगेंगे? इसमें हमारी कोई शोभा नही है।"

भजन और धुन अच्छी तरह हो जानेके बाद गाधीजीने लोगोको तथा पडितजीको शात रहनेके लिए धन्यवाद दिया और कहा—अगर लोग जरा-सी समझदारीसे चलें तो स्वराज्य उनके हाथोमे आ चुका है, क्योकि हमारी सरकारके उप-प्रधान जवाहरलालजी है। वाइसराय प्रधान है सही, पर उन्हे अब शातिसे बैठना है। आपके असली बादशाह जवाहरलाल है। वे ऐसे बादशाह है जो हिंदुस्तानको तो अपनी सेवा देना चाहते ही है, पर उसके मार्फत सारी दुनियाको अपनी सेवा देना चाहते है। उन्होने सभी देशोके लोगोसे परिचय किया है और उनके राजदूतोका सत्कार करनेमें वह बडे कुशल है। लेकिन वह अकेले कहातक कर सकते है?

वह बेताजके बादशाह आपके खिदमतगार है। तो क्या वह बदूकसे आपकी बदअमनीको दबा देंगे? अगर आज एकको दबायगे तो कल दूसरेको इसी तरह दबाना पडेगा। फिर वह स्वराज्य तो नही हुआ। पचायती राज भी नही हुआ। जब आप लोग अनुशासनसे रहेंगे तभी जवाहरलालकी बादशाहत चलेगी और हमारा स्वराज्य सुखरूप होगा।

खुद जवाहरलालजी भी किस तरह अनुशासनमे रहते है इसका उदाहरण सुनिए। पिछले वर्ष जब वह काश्मीर चले गए थे तब वेवल साहबको उनकी जरूरत पड गई, मौलाना साहबने उन्हें बुलाना

---

[1] वीर बालक हुसैनमिया।

चाहा और मेरे समझानेपर वह वहाका सघर्ष छोडकर राष्ट्रपतिका हुक्म मानकर यहां चले आए थे।

आज भी जवाहरलालका चित्त काश्मीरमे है, जहा प्रजाके नेता शेख अब्दुल्ला सीखचोमे बद पडे है। मैंने जवाहरलालसे कहा है कि तुम्हारी आवश्यकता यहापर ज्यादा है। इसलिए जरूरत हुई तो मैं काश्मीर जाऊगा और तुम्हारा काम करूगा। तुम यही रहो। मैंने यह भी उनसे कहा कि यद्यपि मै वचनसे बिहार और नोआखालीमें ही करने या मरनेके लिए बधा हू, परतु काश्मीरमे भी मुसलमान भाइयोका ही सवाल है, इसलिए वहा जा सकता हू। वहा जाकर काश्मीरके राजासे मित्रता करूगा और मुसलमानोकी भलाईका काम करूगा। लेकिन जवाहरलालने अभी इस बातकी 'हा' नही भरी है।

सार यह कि अब जब हमारे हाथमे स्वराज्य आ गया है तब हममेंसे प्रत्येकको अनुशासनसे, विनयसे और समझदारीसे चलना चाहिए, तभी हिंदुस्तानकी आजादी शोभा देगी।

जैसे कल मैंने आप लोगोको राजाओकी बात कही थी वैसे आज मै व्यापारियोके बारेमे कहना चाहता हू। कल मैंने कहा था कि हिंदुस्तानमे न बिरलाका राज होगा, न नवाब भोपालका; न निजामका राज होगा, न काश्मीरके महाराजाका; राजा लोग केवल हिंदुस्तानकी रैयतके खिदमतगार होगे।

ऐसा नही हो सकता कि हिंदुस्तानकी रैयत एक जगह तो आजाद हो जाय और दूसरी जगह गुलाम बनी रहे। जब आजादी होगी तो वह सभीके लिए होगी।

अब आजादी तो आ ही रही है, क्योकि अगर अग्रेज शरीफ है और मै समझता हू कि वे है, तो उन्हें चले जाना है। वाइसराय लार्ड माउट-बेटन साहब तो यह कह रहे है कि हमें जल्दी-से-जल्दी यहासे चला जाना है और वे अपना वचन पालेंगे ही।

जब वे जा रहे है तब हिंदुस्तानमें हमारा ही राज हो जाता है। फिर क्या जब अपना राज हो जायगा तो हम आपसमे झगडा करेंगे? क्या राजा लोग हमको दबायगे? नही, वे सभी जनताके ट्रस्टी बन जायगे। यानी

ये सब चक्रैया-जैसे जनताके सेवक बनेगे तभी वे हमारे राजा रह सकेंगे।

इसी तरह हमारे ऊपर व्यापारियोका राज भी नही होना चाहिए। हमें तो राज चाहिए भगियोका। भगी हमारेमे सबसे ऊचे है, क्योकि उनकी सेवा सबसे बडी है। तभी तो मै खुद भगी बन गया हू। भगियोके राजसे मेरा मतलब यह है कि एक मेहतरको आपने अपना अमात्य बना दिया तो फिर आपको उसकी बात उसी तरह माननी है जिस तरह अग्रेजोने अपनी सत्रह वर्षकी रानी विक्टोरियाका राज माना था और छोटे-बडे सभीने अपना-अपना कर्त्तव्य पाला था। अग्रेज लोग कर्त्तव्य-पालन किस तरह करते है, इसका मै गवाह हू।

मै कई बार लदन गया हू। एक बार तो वहा तीन बरसतक रहा, पर तब मै लडका था। बादमें दो-तीन बार मै लदन हो आया हू। वहापर लोग इतने समझदार है और कायदेके पाबद है कि पुलिसको हाथमें कभी बदूक नही लेनी पडती। केवल एक छोटा-सा डडा वे अपने हाथमे रखते है। लोग जानते है कि वे हमारे खिदमतगार है, इसलिए उनके कहनेके मुताबिक चलते है। पुलिस भी लोगोका काम पूरी कोशिशसे कर देती है। वहापर रिश्वत नही चलती। कोई देने जाय तो भी पुलिस लेती नही।

हमारे हिंदुस्तानकी पुलिसको भी अब ऐसा ही बनना है। उन्हे चाहिए कि वे बिलकुल रिश्वत न लें। अगर उनका पेट नही भरता तो वे सरदार साहबसे अपनी तनख्वाह बढानेके लिए कहे, बल्देवसिंहसे कहें, नेहरूजीसे कहे। जब बडे-बडे अफसर और प्रधान लोग हजारो पाते है, तब सिपाहीको क्यो पाच ही दस रुपये दिये जाय? वे लोग इतजाम करेंगे। पर रिश्वत लेनी छोडनी चाहिए।

व्यापारियोके लिए भी मुझे यही कहना है। वे सब एक हो जाय और मिलकर कह दे कि हम सबको सच्चा बनिया और सच्चा मारवाडी बनना है। सच्चा बनिया वह है जो सच्ची तोल तौलता है। हमारे यहा जितने बनिए, जितने मारवाडी और जितने व्यापारी है उन सबको इकट्ठे होकर निश्चय करना है कि हममेसे कोई चोरबाजार नही करेगा, कोई रिश्वत नही लेगा और न देगा।

इतनी बात वे कर लेते है तो फिर राजेंद्र बाबूको जो मजबूरी महसूस होती है और सबको खाना खिलानेमें उनके रास्तेमे जो कठिनाइयां पैदा हो जाती है वे जाती रहेगी। मेरे पास एक खत आया है कि 'आपने नमक-कर उठवा तो दिया, पर नमक अब पहलेसे भी ज्यादा महगा हो गया।' ऐसा क्यो होता है? मैं कहूगा कि नमक-कर उठ जानेपर तो हमे नमक करीब-करीब मुफ्तमें मिल जाना चाहिए। इसके लिए व्यापारियोको अपना व्यापार भूलकर हिंदुस्तानके लिए ही व्यापार करना होगा। उन्हे चाहिए कि वे चोरबाजार बिलकुल भुला दे। जब ऐसा होगा तभी अतरिम सरकारके वजीर अपना-अपना काम कर सकेगे और राजाजी, राजेंद्र बाबू, जवाहरलालजी, मथाई, भाभा और लीगके चारो वजीर तभी आपकी हर तरहकी सेवा कर सकेंगे। अगर इसके बाद भी हिंदुस्तानको खाना-पीना नही मिलता, मुल्ककी खुशहाली नही बढती तो फिर आप लोग उन्हें निकाल बाहर कीजिए।

लेकिन आप उन्हे कैसे निकालेगे? क्या आप वाइसरायके हाथो उन्हे निकलवायगे? नही, वाइसरायसे तो आप आरामसे बैठनेके लिए कहेंगे। आप खुद अपने वजीरोको कैद करेंगे। जैसा कि कल मैंने जिन्ना साहबको कैद करनेका तरीका बताया था। और तब आप उनसे अपने मनका काम करवा लेगे।

मैंने जवाहरलालजीसे सुना है कि लदनमे लोग भूखो मर रहे है। यह सुनकर मुझे दु ख हुआ। चाहे अग्रेजोंने हमारे साथ कितना ही गुनाह किया हो, तो भी उन्हे खाना तो मिलना ही चाहिए।

हमारा मुल्क बहुत बडा है। हमारे व्यापारी ठीकसे चले और उनमें अक्ल हो तो हम कहेगे कि जबतक हिंदुस्तान जिंदा है तबतक दुनिया कैसे भूखो मरेगी? हम उसे खाना देगे। मै तो बनिया हू, तिजारत जानता हू। यदि सब बनिए और व्यापारी मुझे मदद दे, अतरिम सरकार भी मदद दे और सब मुसलमान मदद दे तो मै सबको खाना दे सकता हू। मै इस बातको माननेके लिए कतई तैयार नही हू कि हमारे मुल्कमे अन्नकी पैदावार कम है। अगर आप काफी मेहनत करे, अक्लसे काम ले और ईश्वरकी कृपासे ठीक वर्षा हो जाय तो यहा भरपूर खाना मिल

सकता हूं, लेकिन अकेले हाथसे तो ताली नही वजती। मुझे सवकी मदद मिले तभी ताली वज सकती है और इतनी जोरकी वज सकती है कि आप सभी प्रसन्न होगे और दुनिया भी प्रसन्न होगी।

अगर आजाद हिंदुस्तानमे सभी अपने धर्मका पालन करे तो सारा हिंदुस्तान खुश हो सकता है, यह मै निश्चयपूर्वक आपसे कहता हू।"

## : २७ :

### सोमवार, २ जून १९४७

### (लिखित सदेश)

राजनैतिक क्षेत्रमे क्या हुआ या क्या हो रहा है यह मै आपको वता नही सकता। लेकिन तीन-चार दिनसे जो मै कहता आया हू, वही आज आपको याद दिलाना चाहता हू, यानी आम जनताको फिक्र नही करनी चाहिए कि वाइसराय विलायतसे क्या लाए है। हमे तो इस वातपर ही सोच-विचार करना है कि जैसा भी मौका सामने आवेगा, उसके वारेमे हमारा धर्म क्या होना चाहिए। यह वात तो देशको साफ कर देनी चाहिए कि वह जवर्दस्तीसे कोई चीज कवूल नही करेगा।

इन तीन-चार दिनोसे जिस सोच-विचारका सिलसिला हमने चलाया है उसको लेते हुए अव हमारे सामने सवाल आता है कि हमारे डाक्टर और वैज्ञानिक देशके लिए क्या कर रहे है। वे लोग विदेशी मुल्कोमे तो नई-नई वाते और इलाजके नये तरीके सीखनेके शौकसे जाते है। मै तो उनसे कहूगा कि उन्हे अपना ध्यान हमारे मुल्कके सात लाख देहातोकी ओर देना चाहिए। फिर तो उन्हे फौरन पता चलेगा कि हमारे सव डाक्टर और डाक्टरनिया वही कामपर जुट सकते है। लेकिन पश्चिमके तरीकेसे वे नही जुट सकेगे, वल्कि हमारे अपने तरीकेसे देहातमे जुट सकेगे। तव उन्हे वहुतसे देसी इलाजोका भी पता चलेगा, जिन्हे वे अच्छी तरह काममे ला सकेगे। हमारे देशमे इतनी जडी-वूटिया है कि

हिंदुस्तानको बाहरसे दवाइयां मंगानेकी जरूरत है ही नही। लेकिन दवासे ज्यादा फायदेमंद तो यह होगा कि वे हमारी जनताको सही जीवन जीनेका ठीक तरीका बता दे। और वैज्ञानिकोसे मै क्या कहू। क्या वे ज्यादा खुराक पैदा करनेकी ओर ध्यान दे रहे है? और वह भी नकली खादके जरिए नही, बल्कि जमीनको बाकायदा अच्छी तरह जोत-बोकर और कुदरती खाद देकर। नोआखालीमे मैने देखा कि वहाके लोग एक जंगली फूल (जलकुंभी) जो नदियोका पानी रोक देता है, उसका भी उपयोग कर लेते है। ऐसे काम हमारे डाक्टर तब करेंगे जबकि वे अपने लिए नही, बल्कि देशके लिए जीना सीखेंगे।

कल मैने जवाहरलालजीके अमूल्य कामके बारेमें जिक्र किया था। मैने उन्हे हिंदुस्तानका बेताजका बादशाह कहा था। आज जब अंग्रेज अपनी ताकत यहासे उठा रहे है तब जवाहरलालकी जगह कोई दूसरा ले नही सकता। जिसने विलायतके मशहूर स्कूल हैरो और केंब्रिजके विद्यापीठमे तालीम पाई है और जो वहा बैरिस्टर भी बने है उनकी आज अंग्रेजोके साथ बातचीत करनेके लिए बहुत जरूरत है। लेकिन अब वह समय जल्दी ही आ रहा है कि जब हिंदुस्तानको अपनी रिपब्लिक-का पहला प्रधान चुनना होगा। चक्रैया जिंदा होता तो मै उसका नाम आप लोगोके सामने रखता। अगर कोई बहादुर मेहतर लडकी हो, बिना स्वार्थकी हो और शुद्ध हो तो मै तहेदिलसे चाहूंगा कि ऐसी कन्या हमारी पहली प्रेसीडेंट बने। यह कोई बेकारका ख्वाब नही है। ऐसी लडकिया जरूर मिल सकेंगी अगर हम उन्हें ढूढनेकी कोशिश करें। क्या मैने गुलनार, मौलाना मोहम्मद अली साहबकी लडकीको नही चुना था? लेकिन उस बेवकूफ लडकीने तो श्वैब कुरैशी साहबसे शादी कर ली। वह एक वक्त तो फकीर थी और जब अली भाई जेलमे थे तब मुझसे मिली थी। अब गुलनार तो कई होशियार बच्चोकी मा है, लेकिन वह मेरी वारिस अब नही बन सकती।

हमारे भविष्यके प्रेसीडेंटको अंग्रेजी जाननेकी आवश्यकता नही होगी। उनकी मददके लिए ऐसे लोग जरूर होगे जो सियासतमें होशि-यार होगे और विदेशी भाषाएं भी जानते होगे। लेकिन यह सब स्वप्न

तो तभी पूरे हो सकते हैं जबकि हम एक दूसरेको मारनेसे बाज आए और पूरा-पूरा ध्यान देहातकी तरफ दें।

## : २८ :

### ३ जून १९४७

भाइयो और बहनो,

हमारी समझसे यदि लीगने तारीफके लायक काम नही किया है तो हम कहें कि उसने तारीफके लायक काम नही किया। इसी तरह अगर काग्रेसने तारीफके लायक काम नही किया है तो हम काग्रेस वालोसे भी कहें कि आपका काम तारीफके लायक नही है। जब ऐसा होगा तभी वह पचायती राज बनेगा । अगर एक गिरोह अपने मनसे चलता रहे तो वह पचका राज नही हुआ।

जनतत्र वह है जिसमें रास्ते चलनेवाला जो बोले वह भी सुना जाय। जब हम जनतत्र कायम कर रहे है तब हमारा राज्य वाइसरायके घरमे नही है और वह जवाहरलालके घरमे भी नही है। मैंने तो जवाहर-लालको बेताजका बादशाह कहा है। और हम तो गरीब हैं। ऐसे गरीब कि हम पैदल चलेंगे, मोटरमें नही बैठेंगे। अगर कोई मोटरमें बिठाने आवे तो भी हम कहेगे, 'आपकी मोटर आपको मुबारिक हो, हम तो पैदल ही जानेवाले हैं। भूख ज्यादा लगेगी तो एक रोटी ज्यादा खा लेंगे।' पचायती राजमें इस तरह रास्ते चलनेवालोका ही राज होता है। हरदम जो मोटरपर ही चलता रहता है वह तो बिगड जाता है। महलोमें रहनेवाला आदमी राज्य नही चला सकता। इसीलिए मैंने कहा कि अग्रेज जो दुनियाके बादशाह बने हुए हैं वे हमारे लिए कुछ भी सोचें तो उनसे हमारा काम नही बनता। अगर हिंदुस्तानका बादशाह भी कुछ सोचे और हमारी समझमे वह ठीक नही है तो हम कहे कि वह ठीक नही है।

कल मैंने कहा था कि चोरबाजारके लिए बनिए गुनहगार हैं। सामान्य ताजिर और मुझमे फर्क इतना ही है कि मै सारे हिंदुस्तानकी भलाई

करता हू और दूसरे ताजिर अपना घर भरते है। जैसे राजेद्र बाबू सारे हिंदुस्तानको खाना खिलानेकी फिकर करते है उसी तरह मैं भी करता हू।

मुझसे कहा गया है कि आजकलका व्यापार बनियोके हाथमे तो बहुत कम रह गया है। बहुत थोडे ही बनिए चोरबाजार कर सकते है। यह सारी अधाधुदी सरकारी सेक्रेटेरियटकी वजहसे है, क्योकि सारा काम सरकार करती है। खाना देना राजेद्र बाबूके हाथमे है जो बिहारके बादशाह है और कपडा देना राजाजीके हाथमें है जो मद्रासके लोकप्रिय मत्री रह चुके है। फिर भी लोगोको चीजे नही पहुचती, क्योकि सिविल सर्विसमें बडा भ्रष्टाचार चल रहा है। अगर राजेद्र बाबू और राजाजीके अगल-बगलमे बदमाश सेवक है और उन लोगोकी देखभाल नही कर पाते तो उस बुराईमे राजाजी और राजेंद्र बाबूका भी ऐब माना जायगा। मैं नही जानता कि सरकारी नौकरोको ऐसा बताना कहातक गलत है; लेकिन इतना जरूर कहूगा कि हममेसे कोई चोरबाजारका काम न करे। सरकारी अफसर अगर ऐसा करते है कि जिनपर उनकी मेहरबानी होती है उन्हे उनके घरके आदमियोकी सख्यासे दुगुने-तिगुने राशन टिकट दे देते है तो वह कार्ड लेनेवाला और देनेवाला दोनो ही बदमाश है। हो सकता है कि आजतक ऐसा जो चला है वह बहुत कुछ अग्रेजोके रोब और डरके मारे चला है, लेकिन अब भी यह सिलसिला जारी रहता है तो फिर भगवान ही हिंदुस्तानका भला कर सकता है। पर अब वह नही होना चाहिए। आज ऐसी बात नही रही कि साहब बहादुरने जो हुक्म दिया, वह जैसा भी हो हमे पालना ही है। अब हमपर विदेशी मालिक नही है। राजेद्र बाबू ऐसा हुक्म नही दे सकते। उनके पास पुलिस है ही नही जो जबरदस्ती हुक्म मनवा सके। राजाजी या नेहरूजी या सरदार भी अपना हुक्म इस तरह नही मनवा सकते। सरदार बलदेव-सिहके पास फौज है सही; पर वे भी यह नही कह सकते कि मै सारी फौज तुम लोगोपर छोड दूगा और तुम्हें दबा दूगा। अंग्रेज अफसरको आप निकाल नही सकते थे, आप इन्हे निकाल सकते है। वे आपको खुश करके ही आपपर राज कर सकते है।

मै आप लोगोको यह बताना चाहता हू कि आजसे आपका पचायती राज शुरू हो गया है। पूरा राज हाथ आनेमे अब बारह महीने है तबतक भगवान ही जाने क्या होता है, क्या नही। पर आपको पचायती ढगको आजसे ही अपनाना है। हममें कोई देशका नुकसान करके अपना पेट न पाले।

जो सिविल सर्विसवाले है--चाहे वे गोरे हो या काले, हिंदू हो या मुसलमान, सेक्रेटेरियटमे काम करनेवाले हो या पुलिसमें बडे अफसर हो--जिस-जिसको मेरी आवाज पहुचती है उनसे मै कहूगा कि अब आपका फर्ज दस गुना बढ गया है। आप लोग सब अब साफ और सुथरे बन जाय। तभी स्वराज्यका यह सारा काम आसान हो जायगा और आजादीका सबको अनुभव मिलेगा।

## : २६ :

### ४ जून १९४७

भाइयो और बहनो,

आप लोग जानते ही है कि मै इस समय सीधा वाइसरायसे मिलकर आ रहा हू। इसका मतलब यह नही कि मै उनसे कोई चीज लेनेके लिए गया था, न उन्होने ही मुझे कुछ देनेके लिए बुलाया था, बल्कि हमारी जो बात चल रही थी वह पूरी भी नही हो पाई थी। फिर भी मैने माउटबेटन साहबसे इजाजत ले ली और कहा, 'जहातक बन पडे और जहातक इन्सानके काबूकी बात है, मै प्रार्थनाका समय चूकना नही चाहता।' उन्होने मेरी इस बातकी कद्र की और कहा कि हमारी बातें बादमें हो जायगी।

मैने आपसे कहा था कि हम मजबूर होकर पाकिस्तानके लिए एक इच भी जगह देनेवाले नही है। यानी हिंसासे, खौफ खाकर नही देंगे। बुद्धिसे यानी शातिसे वे अपनी बात हमें समझा दे और वह हमारी बुद्धिको जचेगी तभी हमें पाकिस्तान देना है।

मैं यह नही कह सकता कि यह सारा बुद्धिका ही प्रयोग हुआ है। कांग्रेस वर्किंग कमेटी कहती है कि 'हमने डरके मारे कुछ नही दिया है। इतने सारे लोग मर रहे है या मकान, जायदाद जल रही है, यह देखकर हम डरे नही है। हिंसाके सामने हम लाचार हो गए, ऐसी बात हरगिज नही है। हमे आप डरपोक न समझे। लेकिन जब हमने देखा कि मुस्लिम लीगको हम और किसी भी तरीकेसे मना ही नही सकते, तब हमने यह रास्ता पसद किया है। क्योकि एक बार मुस्लिम लीग कुछ भी बात मान लेती है तो हमारा काम सरल हो जाता है। सार यह कि हमने डरकर नही, परिस्थितिको देखकर पाकिस्तान व हिंदुस्तानका बटवारा मान लिया है।

हम किसीको मजबूर नही करना चाहते। बहुत-बहुत कोशिशे की। बहुत समझाया, पर वे लोग विधान-परिषद्मे आए ही नही और लीग-वाले यही कहते रहे कि वहां आनेमे हमे हिंदू-बहुमतका डर लगता है।

ऐसी हालतमें वाइसराय क्या करे? वे कहते है कि हमें हर हालतमे १९४८ की जूनमें हिंदुस्तान छोड जाना है। आप उन्हे रोकें तो भी वे उससे ज्यादा रुकना नही चाहते। वे कहते हैं कि हमे हिंदुस्तानको पूरी आजादी देनी ही चाहिए। ऐसा वे क्यो कह रहे है, यह अलग बात है। आप कहेंगे कि अब वे दुनियामे ऊँची ताकत नही रहे है, इसलिए वे मजबूर हो गए है। हम तो चाहेगें कि वे आज भी फर्स्ट क्लास पावर (अव्वल दर्जे-की ताकत) बने रहे। ठीक है कि उन्होने डेढ सौ बरसतक हमको सताया है और यह भी मुझे याद है कि आज ३२ बरससे हम उनके साथ लड रहे हैं। पर यह सब जानते हुए भी मै कभी अपने दुश्मनको दुश्मन नही बनाता। मै तो तब भी ईश्वरसे कहूगा कि 'हे ईश्वर, तू उनका भला कर, और ईश्वर जो न्याय होगा सो करेगा।'

उसकी अमोघ शक्तिके बारेमे इस समय अधिक नही कहूगा। इतना हम समझ लें कि हरेक इन्सान भूलोसे भरा पड़ा है। हिंदू, सिख, मुसलमान सभी। ऐसा कह सकते है कि मुसलमानोने बडी गलती की है, पर हम अपनेको अच्छे किस आधारपर कहें? न्याय करना ईश्वरपर ही छोडें।

इतना मैं कहूंगा कि उनका पाकिस्तान मांगना गलत चीज थी, पर वे दूसरा कुछ सोच ही नहीं पाते। वे कहते हैं कि हम वहां रह ही नहीं सकते जहां ज्यादा हिंदू हों। इसमें उनका नुकसान है और मैं ईश्वरसे मांगता हूं कि जल्द-से-जल्द वह उन्हें इस नुकसानसे बचा ले। जब मेरा भाई, मेरा सहधर्मी या विधर्मी भी मेरा नुकसान करना चाहे तो मैं खुद उसमें सहयोग नहीं दे सकता। वह भले ही उसे नुकसान न माने, पर जब मैं उसे नुकसान समझता हूं तो उसमें मैं उसका साथ कैसे दूंगा? ऐसा करूंगा तो मैं चक्कीके दोनों पाटोंके बीच पिस जानेवाला हूं। मैं अपना पाट अलग ही क्यों न रखूं?

रही अंग्रेजोंकी बात। इसका मैं आपको इतमीनान दिलाता हूं। वाइसरायके भाषणको देखते हुए नहीं, पर अपनी निजी बातचीतके आधारपर कहना चाहता हूं कि इस निर्णयके पीछे वाइसरायका कोई हाथ नहीं है। सब नेताओंने मिलकर इस निश्चयको किया है। नेता लोग कहते हैं कि हम लोगोंने सात-सात बरसतक कहा, हिंदुस्तान एक है। कैबिनेट मिशनने भी अच्छा निर्णय दिया लेकिन लीग मुकर गई और यह रास्ता लेना पड़ा। उन्हें फिर हिंदुस्तानमें वापिस आना ही है। पाकिस्तान बन गया तो भी आपसमें लेन-देन चलेगा ही, आना-जाना भी रहेगा। हम उम्मीद रखें कि हमारा सहयोग बना रहेगा।

लेकिन अब यह फैसला हो गया तो क्या मैं यह कहूं कि हम सब कांग्रेससे बागी बन जायं? या वाइसरायसे कहूं कि आप बीचमें पड़ो? वाइसराय तो कहते हैं कि मैं यह चाहता नहीं था। जवाहरलाल कांग्रेस-की ओरसे कहते हैं कि उन्हें भी यह बात पसंद नहीं है, पर वे सब परिस्थितिके कारण लाचार बन गए हैं, तलवारके कारण नहीं, क्योंकि हिंदू, सिख सभी कह रहे हैं कि हम अपने घरमें रहेंगे, उनके यहां नहीं। हिंदू, सिखोंके अमलमें रहनेको तैयार हैं, क्योंकि सिख कभी तलवारके जोरसे नहीं कहेंगे कि तुम्हें गुरुग्रंथके सामने सिर झुकाना ही पड़ेगा।

मैंने मास्टर तारासिंहसे भी, जो आज मिलने आए थे, कहा कि आप एक नहीं सवा लाख बन जाय, बिना मारे मरना सीख लें तो पंजाबका सारा इतिहास बदल जायगा और हिंदुस्तानका भी इतिहास बदलेगा।

सिख तादादमे जरा-से हैं, पर बहादुर है । इसलिए अग्रेज उनसे डरते है। अगर सिख सच्चे बहादुर बने तो फिर खालसाका राज दुनियाभरमे हो जाय।

आपका दर्द भुलानेके लिए मैंने यह सब बताया। आप दिलमें दर्द न मानें कि हिंदुस्तानके दो हिस्से हो गए। आपने जब मांगा है तब वह दिया गया है। काग्रेसने नही मागा था। मै तो यहा था ही नही, पर काग्रेस लोगोके मनकी बात जान लेती है। उसने जान लिया कि खालसा भी यही चाहते है और हिंदू भी। आपके हाथसे कुछ गया नही है। न सिखके हाथसे, न मुसलमानोके हाथसे ही कुछ गया है। वाइसरायने व्याख्यानमें तो कहा ही है और मुझे भी विश्वास दिलाया है कि 'आप सब मिलकर जब आवेगे तब हमारा यह फैसला खत्म हो जायगा। आप मिलकर जो कहेंगे वही होगा। मेरा (वाइसरायका) काम इतना ही है कि जबतक सत्ता हस्तातरित होती है तबतक यहाके अग्रेज लोग ईमानदारीसे काम करें और शातिसे चले जाय यह देखू। इग्लैडके लोग यह नही चाहते कि उनके जानेपर यहा अधाधुधी फैल जाय।'

मैंने तो कह दिया था कि आप अराजकताकी फिक्र न करे। मै तो जुआ खेलनेवाला ठहरा। पर मेरी कौन सुने? आप मेरी नही सुनते; मुसलमानोने मुझे छोड दिया और काग्रेससे भी मै अपनी बात पूरी-पूरी मनवा नही सकता। वैसे काग्रेसका गुलाम हू, क्योकि हिंदुस्तानका हूं। मैंने १६ मईकी बात मनवानेका पूरा प्रयत्न किया। पर अब जो हो गया है वही हम स्वीकार कर ले। इसमे यह खूबी भी है कि हम जब चाहे उसे मिटा सकते है।

अतमे मै इतना कहूगा कि आप वाइसरायको भूल जाय तो अच्छा है। मुझे यह बुरा लगता है कि हम आपसमे सीधी बात न करे और सारी बात वाइसरायकी मध्यस्थीसे चले। लीगवाले वाइसरायसे कहें, वाइसराय काग्रेससे कहे और काग्रेस फिर वाइसरायसे कहे, यह हमे शोभा नही देता। पर मुस्लिम लीग मानती ही नही तब क्या हो? काग्रेस मान जाती है और सिख काग्रेसमे शामिल हो गए है। तब वाइसरायको दिन-रात जिन्ना साहबकी मिन्नत करनी पडी कि 'साहब, थोड़ा तो

नीचे उतरिए।' और ऐसा करके उन्होने यह रास्ता निकाला। इतना करते हुए भी वाइसराय कहते है कि 'मेरे दिलमें डर बना रहता है कि लीग क्या कहेगी, काग्रेस क्या कहेगी। लेकिन ईश्वरका नाम लेकर मै करता हू।' तो हम उनकी ईमानदारीमे विश्वास रखें जबतक कोई बुरा अनुभव नही हो।

लेकिन जिन्ना साहबसे मै कहता हू, मिन्नत करता हू कि अब तो आप हम सबसे सीधी बात करे। जो हुआ ठीक है, पर आगेकी सब कार्रवाई हम मिलकर करें। वाइसरायको अब आप भूल जाय और अब जो समझौते करने है उन्हे करनेके लिए आप हम लोगोको अपने पास बुला ले, ताकि हमारा सबका भला हो।

## : ३० :

### ५ जून १९४७

बौद्ध विद्वान श्रीकौसबीकी मृत्युका समाचार देते हुए गाधीजीने कहा—शायद आपने उनका नाम नही सुना होगा। इसलिए शायद आप दु ख मनाना नही चाहेंगे, वैसे किसी मृत्युपर हमें दु ख मानना चाहिए भी नही; लेकिन इन्सानका स्वभाव है कि वह अपने स्नेही या पूज्यके मरनेपर दु ख मनाता ही है। हम लोग ऐसे बने है कि जो अपने कामकी डुगी पिटवाता फिरता है और राज्य-कारणमें उछालें भरता है, उसको तो हम आसमानपर चढा देते है, लेकिन मूक काम करनेवालोको नही पूछते।

कौसबीजी ऐसे ही एक मूक कार्यकर्त्ता थे। उनका जन्म गावमें हुआ था। जन्मसे वह हिंदू थे, पर उनको ऐसा विश्वास बैठ गया था कि बौद्ध धर्ममें अहिसा, शील आदि जितने बढे-चढे है, उतने दूसरे धर्ममें, वेद-धर्ममें भी नही है। इसलिए उन्होने बौद्ध धर्म स्वीकार किया और बौद्ध शास्त्रोके अध्ययनमें लग गए और उसमे इतने बड़े विद्वान् हो गए कि शायद ही हिंदुस्तानमें उनकी बराबरीका और कोई हो।

उन्होंने गुजरात विद्यापीठ व काशी विद्यापीठमे पाली भाषा पढाई और अपनी अगाध विद्वत्ताका ज्ञान-दान किया था।

उन्होंने मेरे पास १०००) भेज दिए, जो किसीने उनको दिए थे। उन्होंने मुझको लिखा था कि किसीको पाली पढनेके लिए लका भेज देना। लेकिन मैंने उनसे पूछा कि क्या लका जाकर पढनेसे किसीको बौद्ध धर्म प्राप्त हो जायगा ? मैंने तो दुनियामे बौद्धोसे कहा है कि आपको अगर बौद्ध धर्म जानना है तो आप उसके जन्म-स्थान भारतमे ही उसे पायेगे। जहापर वेद-धर्मसे वह निकला है, वही आपको उसे खोजना है और शकराचार्य-जैसे अद्वितीय विद्वान् जो प्रच्छन्न बुद्ध कहलाए उनके ग्रथोको भी आप समझेगे तब बौद्ध धर्मका गूढ रहस्य आप जान पायेंगे।

लेकिन कौसबीजीकी विद्वत्तासे मै अपनी तुलना नही कर सकता। मै तो इग्लैंडमे भोज खाकर बना हुआ बैरिस्टर हू। मेरे पास सस्कृतका ज्ञान जरा-सा है। अगर आज मै महात्मा बना हू तो इसलिए नही कि अग्रेजीका बैरिस्टर हू, पर इसलिए कि मैने सेवा की है और वह सेवा सत्य और अहिसाके द्वारा की है। इस सत्य और अहिसाकी पूजामे जो थोडी-सी सफलता मुझे मिलती चली गई उसीके कारण आज मेरी थोड़ी-बहुत पूछ है।

कौसंबीजीकी समझमे यह समा गया कि अब यह शरीर अधिक काम करनेके योग्य नही रहा है तो उन्होंने अनशन करके प्राण-त्याग करनेकी ठानी। टडनजीके कहनेपर मैंने उनका अनशन उनकी (कौसबीजीकी) अनिच्छासे तुडवाया, पर उनका हाजमा बहुत खराब हो चुका था और कुछ भी खुराक ले ही नही सकते थे। तब दुबारा सेवाग्राममे चालीस दिनतक केवल जलपर ही रहकर उन्होंने शरीरात किया। बीमारीमें नाममात्रकी सेवा और ओषधि भी नही ली। जन्म-स्थान गोवामे जानेका मोह भी उन्होंने तजा और अपने पुत्र आदिको अपने पास न आनेकी आज्ञा दी। मृत्युके बादके लिए कह गए कि 'मेरा कोई स्मारक न बनाया जाय।' शरीरको जलाने या दफनानेमे जो सस्ता पडे वह किया जाय और इस तरह उन्होंने बुद्धका नाम रटते-रटते अतिम

गहरी निद्रा ली, जो हरेक जन्मनेवालेको कभी-न-कभी लेनी ही है। मृत्यु हरेकका परम मित्र है, वह अपने कर्मके मुताबिक आवेगा ही। भले ही कोई यह बता दे कि अमुकका जन्म अमुक समय होगा, पर मौत कब आवेगी यह कोई भी आजतक नही बता पाया है। चकैयाके किस्सेमें हमने यही देखा।

आपका मैंने इसमें इतना समय लिया, इसलिए मैं क्षमा चाहता हू।

कल रात मेरे पास तार आया कि 'आपने चार-पाच दिन इतनी लबी-लबी बाते बनाई कि हम एक इच भी पाकिस्तान मजबूरीसे देना नही चाहते—बुद्धिसे हृदयको जाग्रत करके भले ही जो चाहें सो लें, लेकिन वह तो बन गया। अब आप इसके खिलाफ अनशन क्यो नही करते ?'

और वे पूछते है कि तब आपने ऐसी बाते क्यो कही थी और अब आप ठडे क्यो बने है ? आप काग्रेसके बागी क्यो नही बनते और उसके गुलाम क्यो बनते है ? आप उसके खादिम कैसे रह सकते है ? अब आप अनशन करके मर क्यो नही जाते ?

ऐसा कहनेका उनका हक है। पर मुझको उस भाईपर गुस्सा करने-का हक नही है। गुस्सा करनेका मतलब है थोडा पागल होना। अग्रेजीमें कहा है—'ऐंगर इज शार्ट मैडनेस' और गीतामें भी कहा है—'क्रोधाद्भवति समोह समोहात्स्मृतिविभ्रम' तो मैं गीता सीखा हुआ आदमी गुस्सा कैसे करू ?

किसीके कहनेपर अनशन कैसे करू ? मैं मानता हू कि मेरे जीवनमें एक और उपवास लिखा है। आगा खा महलके उपवासके बादसे ही मेरे दिलमें यह बात जमी हुई है कि वह आखिरी उपवास नही था। एक और उपवास मुझे करना होगा, लेकिन वह किसीके कहनेपर मैं नही करूगा। खुदा जब कहेगा, करूगा।

मैंने कह दिया है कि मैं जिन्ना साहबका साक्षी बन गया हू। वे चाहते है, देशमे शाति हो और मैं भी यह चाहता हू। फिर भी अगर जगह-जगह दगा चलता ही रहता है और सारा हिंदुस्तान डावाडोल हो जाता है और ईश्वर मुझसे कहता है—यानी मेरा दिल मुझसे कहता है कि अब

ससारसे तुझे उठ जाना है तो मैं वैसा करूगा ही । श्रीजिन्नाने मुझसे दस्तखत लिए कि सियासी मामलोमे हिंसा नही करनी है और माउंटबेटनने भी मुझपर अपना जादू चलाया और कृपलानी या नेहरूके दस्तखत न लेकर मेरे ही दस्तखत लिए। मैंने जवाहरलालकी रायसे उन्हे दस्तखत दे दिए। तब हम इस बातके तीन हिस्सेदार बन गए है। हमारे दोनोके दस्तखत है इसलिए, और माउटबेटन—वाइसरायके नाते नही, पर माउटबेटनके नाते, क्योकि वे गवाहसे भी ज्यादा बन गए है।

मतलब यह है कि सारे हिंदुस्तानको शात रहना है। अगर वह नही रहता तो क्या करना है, यह जिन्ना साहबको उनका खुदा बतायगा। माउटबेटन साहबको उनका गॉड बताएगा और मुझे मेरा परमात्मा बतायगा।

लेकिन आपके द्वारा मै उन दोनोसे कहना चाहता हू कि वे जब कहेंगे तब मैं उनके साथ पैदल या सवारीमें, जैसे भी वे ले जाना चाहे मैं जाऊगा। हवाई जहाजसे मै नही जा सकता। उसमे चलकर नीचे क्या दीखेगा ? मै कभी हवाई जहाजमे चला नही हू। हा, उसे नीचेसे देखता हू और एक मछली-सा वह दीखता है ।

गुड़गांव अभीतक जल रहा है । आजकी खबर नही मिली है, पर वहां जाट और मेवोने आमने-सामने मोर्चा लगा रखा है । इतना अच्छा है कि वे ऐसा पागलपन नही चाहते कि बच्चो, औरतो और बुड्ढोको मारने लगे । वे सिपाहीकी तरह आपसमें टक्कर लेते हे । पर वे लडे ही क्यो ? यह चलता है, इसमे मेरी भी शरम है, जिन्नाकी भी है और माउटबेटनके लिए भी शरमकी बात है । इसी तरह सरदार बलदेवसिंह और जवाहरलालके लिए भी यह शरमकी बात है। यह अच्छा हुआ कि २ जूनको कोई खास बात न हुई और न ४को ही हुई।

पर एक काम बन गया है सही। पाकिस्तान और हिंदुस्तान बन गए और उनकी विधान-परिषद् बना दी गई है। क्या अब उन्हे मिटानेके लिए मैं मरने बैठू ? इस तरह मै मरनेवाला नही हूं।

मेरे लिए ध्यान देनेको एक बहुत बडा काम पडा है। कहते है कि अब हिंदुस्तानका औद्योगीकरण होनेवाला है। मेरा औद्योगीकरण तो देहातोमें होगा, यानी घर-घरमें चरखा चलेगा और गाव-गावमें कपडा तैयार होगा।

अगर वे कहते है कि एक बिरला-मिल है, उसकी हम हजार मिल बनायगे---बिरलाका नाम मैं इसलिए लेता हू कि वे मेरे दोस्त है, बाकी मेरा मतलब हरेक मिलवालेसे है---तो मैं वह पसद नही करूगा। अगर भूकप हो जाय या अपने आप बिरला-मिल जल जाय तो मुझे हरज नही है। न मैं उस नुकसानीके लिए बिरला-बधुके पास एक आसू गिराऊगा। हा, यदि कोई जान-बूझकर उनकी मिलें नष्ट करने जाता है तो मैं उसे डाट लगा दूगा।

ऐसा मालूम होता है कि आज काग्रेसने यह तय कर लिया है कि वह हिंदुस्तानभरमें बहुत-सी मिलें बना दे और कलपुर्जे बिछा दे। और वह चाहती है कि सारे हिंदुस्तानमें बहुत बडी फौज बन जाय। तो उसमें मेरा हाथ नही है। बिहारमें जो मार-काट हुई उसमें मेरा हाथ कहा था? और आज हिंदुस्तानमें कौन-सी ऐसी चीज हो रही है जिससे मुझे खुशी हो सके। तो भी मैं पडा हू, क्योंकि काग्रेस बहुत बडी सस्था हो गई है। उसके सामने मैं उपवास नही कर सकता, लेकिन आज मैं भट्ठीमें पडा हू और मेरे दिलमें अगार जल रहा है। फिर भी मैं जिंदा क्यो हू, यह मेरा ईश्वर ही जानता है। जैसा भी हू, आखिर काग्रेसका खादिम ही हू। अगर काग्रेस पागलपनपर उतर आवे तो क्या मैं भी पागलपन करू? क्या मै मरकर यह सिद्ध करने बैठू कि मेरी ही बात सच्ची है? मैं तो काग्रेसकी, आपकी, मुसलमानोकी और अपने साथी जिन्ना साहबकी बुद्धिपर चोट करना चाहता हू और उनके हृदयपर कब्जा करना चाहता हू।

जिन्ना साहबसे कहूगा कि अब तो आपका 'पाकिस्तान जिंदाबाद' हो गया न! अब आप माउटबेटन साहबके पास क्यो जाते है? काग्रेसके पास क्यो नही जाते? आप बादशाह खानको और डा० खान साहबको क्यो नही बुलाते? उन्हें क्यो नही समझाते कि 'देखिए तो सही, यह

पाकिस्तान कैसा अच्छा गुलावका फूल है ?

लेकिन पाकिस्तानके वारेमे मेरे पास शिकायतें आ रही है । आज ही एक खत मिला है, जिसमे लिखा है कि एक अग्रेज कपनी हथियार वनानेके लिए लाहौर जायगी । यह भी कहा जाता है कि मुस्लिम लीगने कामन-वेल्थमे रहना तय कर लिया है । वह औपनिवेशिक स्वराज्य ही कायम रखेगी ।

काग्रेसने औपनिवेशिक स्वराज्य स्वीकारकर कोई गुनाह नही किया है । उसने तो वह आरजी तौरपर तत्काल अग्रेजोको हटानेके लिए स्वीकार किया। पर विधान वनते ही वह मुकम्मिल आजादी ले लेगी। फिर मुस्लिम लीग क्या औपनिवेशिक पदपर ही वनी रहेगी ? हमारे दोनो विधान एक-से होने चाहिए । दोनोने कहा है कि हमे मुकम्मिल आजादी चाहिए । तव मुकम्मिल आजादीको ही लेनेका जिन्नाका भी धर्म हो जाता है । आपसमे लडकर इस धर्मका पालन नही किया जा सकता ।

जव कि सारे हिंदू मनाते-मनाते थक गए तव भी उन्होने न माना तो उनको पाकिस्तान दे दिया कि वादमे तो शाति मिलेगी।

कोई कहे कि मैने ऐसा क्यो होने दिया। तो क्या मै ऐसा करू कि काग्रेस मुझसे पूछकर ही सव काम करे ? मै ऐसा दीवाना नही बना हू । और मै काग्रेसका वागी वनूगा, इसका मतलव सारे हिंदुस्तानका वागी वनूगा, क्योकि काग्रेस सारे देशकी है। ऐसा मै तभी करूगा जव मै देखूगा कि काग्रेस तो पूजीपतियोकी हो गई है।

लेकिन अभी तो मेरी समझसे काग्रेस गरीवोका ही काम करती है। भले ही उसका रास्ता मुझसे अलग हो, भले ही उसका दिमाग हथियार, फौज, कारखानोमे लगा हो । मुझे तो उनको वुद्धिसे समझाना है, अनशनसे नही ।

अनशन भी राक्षसी हो सकता है। ईश्वर भी मुझे ऐसे राक्षसी अनशनसे वचाए, वह मुझे राक्षसी कार्य, राक्षसी उच्चार, राक्षसी विचार सभीसे वचाए रखे । अच्छा हो कि ऐसा मै करू, उससे पहले वह मुझे उठा ले। मै जब करूगा, सात्त्विक और दैवी अनशन ही करूगा ।

## : ३१ :

### ६ जून १९४७

आज फिर एक बहनने प्रार्थनामें विरोध किया।

गांधीजीने कहा, "मैं उसकी लंबी चिट्ठी सुनानेमें समय नहीं खोऊंगा। मेरा खयाल था कि अब लोग मुझे समझ गए हैं। पर देखता हूं कि ऐसा हमारा शुभ नसीब नहीं है। धर्मके नामसे अधर्म हो रहा है, पर हमें अधर्म सहना ही होगा। अगर वह बहन बीचमें बोलने लगे तो आप उसे तंग न करें। अब तो उसने आगे कदम बढ़ाया है और मुझे लिखा है 'आप भाषण भी न करें।' वह कुछ भी कहे, प्रार्थना बंद न होगी और भाषण भी बंद न होगा। ऐसा हर कोई आदमी करने लगे तो हिंदुस्तानका राज चलनेवाला नहीं है। आप लोग शांत रहें।"

प्रार्थना नियमपूर्वक हुई और वह महिला बीच-बीचमें चिल्लाती रही। प्रार्थनाके बाद गांधीजीने कहा—"मैं देखता हूं कि आपको गरमी सता रही है, लेकिन मैं सुनाने और आप सुननेके लिए लाचार हैं, पर आप शांत रहें, तभी सुना सकता हूं। इसका मतलब यह नहीं कि आप कागज या रूमालसे थोड़ी बहुत हवा भी न लें। गरम ही सही, पर हवा मुझे भी मिल रही है। यह लड़की मेरे लिए पंखा कर रही है, तो मैं आपको क्यों रोकूं?[1] अगर आप सभी पंखा चलावें तो मैं नहीं कहूंगा कि पंखा चलाना औरतका ही काम है। आप पंखा ला सकते हैं। औरत भी तो मरद बन सकती है। वह मनको गिरावे नहीं तो वह अबला नहीं है, 'बेटर हाफ' है"।

भजनमें गोपीने कहा है, 'बंसरी सुन वह वनमें जाना चाहती है',

---

[1]इसपर सारी सभामें आधी मिनटतक जोरकी हँसी हुई, क्योंकि गांधीजीके पीछे एक पुरुष पंखा कर रहा था, जिसे उन्होंने लड़की बता दिया था। गांधीजी खुद भी यह देखकर खिलखिलाकर हँसे और अपनी भूल सुधारी।

लेकिन यह भजन केवल औरतके ही लिए नहीं है। ईश्वरके सामने हम सभी गोपिया है। ईश्वर स्वय न नर है, न नारी है, उसके लिए न पक्ति-भेद है, न योनिभेद, वह 'नेति नेति' है। वह हृदयरूपी वनमे रहता है और उसकी बसी है अतरनाद। हमे निर्जन वनमें जानेकी आवश्यकता नही है। अपने अतरमे हमे ईश्वरका मधुर नाद सुनना है और जब हममेसे हरेक वह मधुर नाद सुनने लगेगा तब हिंदुस्तानका भला होगा।

आज ठीक मौकेसे यह भजन सुनाया गया है। वह बहन मुझसे कहती है, 'तुम वनमे चले जाओ, तुम्हीने जिन्नाको बिगाडा है। पर मै कौन होता हू उसे बिगाडनेवाला? मै अगर कुछ आशा कर सकता हू तो उन्हें दुरुस्त ही कर सकता हू। लाठीसे नही, बल्कि प्रेमसे। लाठी या एटम बमसे तो विनाश हो सकता है। एटम बमने नाश ही किया है, किसीको अपनी ओर खीचा नही है। मनुष्यको अपनी ओर खीचनेवाला अगर जगतमे कोई असली चुबक है तो वह केवल प्रेम ही है, इसका मै साक्षी हू। वह कहती है, 'कुरान मत पढो, अब बात ही मत करो, जगलमे जाकर रहो।' पर मै वनमें जाऊ तो भी आप मुझे खीच लेनेवाले है। इन्सान साथ-ही-साथ रहनेके लिए पैदा हुआ है। अगर मै यह कला सीख पाया होता कि वनमे बैठा रहू, वही आपको खीच सकू तो फिर मुझे न भाषण देने पडते, न कुछ कहना पडता। मै एकातमें बैठा मौन रखता और आप मेरे मनकी बात करते। पर अभी ईश्वरने मुझे इस योग्य नही बनाया।

आप जानना चाहते होगे कि आज इतनी देर बैठकर मैने वाइसरायसे क्या बाते की और उनसे क्या लाया। वे क्या देते? वे तो बेचारे है। उनको न कुछ लेना है, न देना है। वे तो कहते है कि मै 'ईश्वरसे प्रार्थना करता हू कि हिंदुस्तानका हरेक आदमी—हिंदू, मुसलमान, सिख सब—इस बातपर विश्वास करे कि मै यहा लूटने या आपसमे फिसाद करानेके लिए नही आया हू। हो सके तो शाति कराकर, वरना जैसे भी हो, चले जानेके लिए ही आया हू। हम १५ अगस्तके बाद यहां नही रहेंगे। अगर गवर्नर-जनरल रहेंगे तो भी आपके कहनेपर। इस समय हमारे पास

औपनिवेशिक स्वराज्यसे अधिक कुछ नही है, जो हम दे सके । हमको आपने मार भगाया होता तो और वात थी, लेकिन मित्रताके साथ जानेमे यही तरीका श्रेष्ठ है ।'

वाइसरायने यह भी बताया कि 'हम इसलिए मित्रतापूर्वक जाते है कि हिंदुस्तानने हमें मारकर फेंकनेकी कोशिश नही की। सन् '४२ में रेल, तार आदि काटे सही, पर वे थोडे आदमी थे, करोडोने ऐसा नही किया, लेकिन आपने शराफत बरती । आपने हमसे इतना ही कहा, 'आप चले जाओ'; क्योंकि आपको यह बुरा लगा कि हमने हिंदमे जहर फैलाया है। लेकिन काग्रेसने हमें जहर नही दिया । उसने केवल असहयोग किया और हम समझ गए कि बिना मार्शल-लाके हम यहा नही रह सकते है, इसलिए हमने जाना स्वीकार किया।'

अगर हमारा असहयोग पूरा-पूरा होता तो आजसे बहुत पहले और कही अच्छे तरीकेपर अग्रेज चले गए होते । काग्रेसने विद्यार्थियोसे, नौकरोसे और सिपाहियोसे भी कहा था कि आप सब वहासे निकल आवें । लेकिन वे कमजोर रहे, उन्हें छोड नही सके । फिर भी आप लोगोने यह नही कहा कि 'हम उन्हे मार डालेगे । उन्हे जहर दे देगे ।' हमारी इस शक्तिको अग्रेजोने परख लिया और इस कारण वे जा रहे है। लेकिन वाइसराय कहते है कि 'अब भी लोग हमपर भरोसा नही करते। एक अखबारवालेने लिखा है कि अग्रेज यहा सत्ता जमाने आए है और भारतके दो टुकडे करके जा रहे हैं, ताकि दोनो टुकडे लडें और एक-न-एक अग्रेजका दामन पकडे। तो उन्हें यहा रहना मिल जायगा।'

यह तो दगा होगा और मुझे आशा है कि अग्रेज इस बार दगा न करेगे। अगर करें तो भी हम खुद बहादुर बने। बहादुर लोग धोखेसे क्यो डरेगे ? जब वे मेरे साथ शराफतसे बात करते है तो मैं क्यो शका करू। मुझसे वाइसरायने पूछा, 'तुझे तो मुझपर विश्वास है या तुझे भी नही है ?' तब मैंने उनसे कहा कि 'मुझे विश्वास न होता तो मै आपके पास आता ही नही। मै सत्यवादी हू, शरीफ हू ।'

वाइसरायसे ऐसी हमारी बातें चलती रही और यह जो पाकिस्तान तथा हिंदुस्तान बना दिया गया है उसके बारेमे मेरे दिलमे जो परेशानी है,

वह भी मैंने वाइसरायको सुना दी । तब उन्होने मुझे बताया कि यह अग्रेजका किया हुआ नही है । काग्रेस और लीगने मिलकर जो मागा है वही दिया गया है । और हम तुरत ही इसलिए नही चले जा सकते कि एक छोटे घरके सामानके बटवारेमें उसकी फेहरिस्त बनानेमे कुछ देर लगती है, तो यह तो इतने बडे मुल्कके बटवारेकी बात है । फिर भी मैंने उनसे कहा कि अब आप आराम करे । यह बटवारे आदिका काम हम आपसमे मिलकर कर ले, यही अच्छा है ।

आप लोगोके मार्फत दो-चार दिनसे मिन्नत कर रहा हू और आज भी करता हू कि अब आपको जो चाहिए था मिल गया—चाहे कुछ कम मिला, पर वह क्या है यह तो बताइए ! उसका नाम-ही-नाम गुलाबका है, या उसमे खुशबू भी है ? सुघाइए तो सही और यह तो बताइए कि आपके यहा सिखोको और हिंदुओको जगह है या उन्हे गुलाम रहना है ? और सीमाप्रातमें जनमत लेकर आप क्या सीमाप्रातके भी दो टुकडे करना चाहते है ? और बलूचिस्तानके भी ?

क्या आप अब भी अपनी कार्रवाईसे नही बतायगे कि आजतक मुसलमानोंने हिंदूको अपना दुश्मन माना, पर अब नही मानेंगे ? पठानका हिस्सा नही करेंगे ? बलूचका हिस्सा भी नही करेंगे और हिंदू-हिंदूका भी नही करेंगे ? हिंदुस्तान अखड रहेगा, पर भाई-भाईके तौरपर हम उसमे बटवारा कर लेंगे और अग्रेजके विना हमारी गाडी चलेगी ।

मेरी इस बातपर वे मुझे गाली दे तो मुझे गम नही है । मुझे तो कल भी गाली मिली थी कि 'तू मर क्यो नही जाता ।' पर वे खुलासा तो करें कि उनका मशा क्या है ? अब भी मेरे पास क्यो नही आते ? आपके पास क्यो नही आते ? काग्रेसी या गैर काग्रेसीको अपने पास क्यो नही बुलाते ? एक जमाना था जब काग्रेस-लीगका समझौता उन्होने किया था । अब और पक्का और अटूट समझौता क्यो नही करते ?

हम सब मिलकर कोशिश करे कि दुश्मन न रहकर आपसमे दोस्त बने । यह काम अकेले वाइसराय नही कर सकते, अकेली काग्रेस भी नही कर सकती । सब मिलकर ही दोस्त बन सकते है ।

## : ३२ :

७ जून १९४७

भाइयो और बहनो,

मैं विनयसे कहता हू कि प्रार्थनामें दखल देना बेहूदापन है। मै प्रार्थना तो रोक नही सकता, वह चलेगी ही। पर देखता हू कि रोज कोई-न-कोई शिकायत रहती ही है। इससे मेरा दिल बहुत दुखता है।

कुरानकी आयत पढते समय आज फिर विघ्न डाला गया, लेकिन गाधीजी इस सारे समय आख बद करके प्रार्थना करते रहे।

फिर उन्होने कहा---आज मुझे वही सिलसिला कायम रखना है, यानी वायुमडलमे मडराती बातपर ही मैं कहना चाहता हू, क्यो मुझपर बहुत काफी दबाव पड रहा है कि जबतक वाइसरायका ऐलान नही हुआ तबतक तो मैं मुखालफत करता रहा और बार-बार मै कहा कि हम जबरदस्ती कुछ भी मजूर करनेवाले नही है और अब मै चुप हो गया हू। मुझसे यह जो कहा जाता है, ठीक कहा जाता है। मैं कबूल करता हू कि मुझे भी यह निर्णय अच्छा नही लगा है, लेकिन दुनियामें कई चीजे ऐसी होती रहती है, जो अपने मनकी नही होती, फिर भी हम उसे सहन करते हैं। इसी तरह इसको भी हमें सहन करना है।

एक अखबारसे निकला है कि 'अब भी अखिल भारत-काग्रेस-कमेटीको हक है कि वह इसे नामजूर कर दे।' मैं भी मानता हू कि अखिल भारत-काग्रेस-समितिको ऐसा करनेका पूरा हक है कि वे इस बातको स्वीकार न करे, लेकिन जिसके प्रति आजतक हम वफादार रहे, जिस काग्रेसने दुनियामे नाम कमाया और जिसने काफी काम भी किया, उसकी मुखालफत एकदमसे नही करनी चाहिए।

बहुतसे सनातनी छूआछूतके भूतको मानते है और उसके पालनमे धर्म समझते है। लेकिन हममे कौन सच्चा सनातनी है, इसका न्याय तो ईश्वर ही चुकाएगा। इसी तरह अगर काग्रेस भी अधर्मको धर्मका लिबास पहनाती है तो हमे काग्रेस बद कर देनी पडेगी। काग्रेसको तो कौन मार

सकता है, पर हम उसके सामने मर जायगे। आत्महत्या करके नही मरेंगे, पर हम तबतक उसका मुकाबला करेंगे और उसके आगे सिर नही झुकायगे जबतक हम उसे सही रास्तेपर नही लायगे या खुद मर नही जायगे। लेकिन ऐसा तब करेंगे जब हम देखेंगे कि काग्रेस जान-बूझ-कर गलती करती है। मेरी समझसे इस समय तो वह ऐसा नही कर रही है। न उसने पहले ऐसी गलतिया की है। यदि वह अधर्मको ही धर्म मानकर आजतक चलती तो वह वहातक नही पहुच पाती जहातक आज पहुची है।

यह कहना कि काग्रेस-कार्य-समितिको यह करनेसे पहले अखिल भारत-काग्रेस-समितिसे पूछना चाहिए था, ठीक नही है। कदम-कदम-पर कार्य-समिति पूछने बैठे तो वह काम नही कर सकती। बादमें उसे हक है कि वह कार्य-समितिका विरोध करे और चाहे तो उसे अलग करके नई समिति बना ले।

जब मैं काग्रेसमे बाकायदा काम करता था और काग्रेसके विधानको अमलमे लानेका मुझे अधिकार था तब भी एक पुरानी बहसमें मैंने कहा था कि हम महासमितिके ३०० या १००० सदस्योको बार-बार इकट्ठा नही कर सकते। इस तरह काम करना कार्य-समितिके लिए अव्याव-हारिक हो जायगा, पर बादमें महासमिति कार्य-समितिसे अवश्य जवाब-तलब कर सकती है। दुबारा वह गलती न करे, इस हेतुसे उसे नालायक करार देकर हटा सकती है और नई समिति बना सकती है।

फर्ज कीजिए कि कार्य-समितिने अखिल भारत-काग्रेस-समितिके नाम कई लाख रुपयेकी हुडी निकाल दी और अखिल भारत-काग्रेस-समितिको वह पसद न आई। तो भी उसे वह हुडी सकारनी तो होगी ही, लेकिन दुबारा ऐसी गलती न हो, इसलिए वह उस कार्य-समितिको खत्म कर सकती है और नई चुन सकती है—बल्कि उसे ऐसा ही करना चाहिए।

यही कायदा इस पाकिस्तान-हिंदुस्तानके मामलेमें लागू होता है। वह चीज हो गई है; पर अभी उसमे दुरुस्तीकी बहुत बडी गुजाइश है। हम चाहे तो हिंदुस्तान तथा पाकिस्तानको—या और

पाकिस्तानवाले अपने हिस्सेको काग्रेसवालोसे भी अच्छा बनावे। तो फिर दोनो मिल जाते है और हम सुखमे रह सकते है।

(अन्तमे गाधीजीने जिन्ना साहबके प्रति अपनी रोजकी अपील आज भी काफी विस्तारसे दोहराई और हिंदू-मुस्लिम-पारसी सभीको अपने पास बुलाकर समझौता करने, वाइसरायको परेशानीसे और काग्रेस नेताओको बेकारकी दौड-धूपसे बचानेकी तथा ऐसा पाकिस्तान बनानेकी बात कही कि जिसमे भगवद्गीताका पाठ भी कुरानशरीफके बराबर ही किया जा सके और मदिर तथा गुरुद्वारेकी भी मस्जिदके समान ही इज्जत की जाय, ताकि पाकिस्तानके आजतकके विरोधी भी अपनी भूलपर पछतावे और आला पाकिस्तानकी प्रशसा-ही-प्रशसा करे।)

## : ३३ :

८ जून १९४७

भाइयो और बहनो,

आकाशसे गोले भी क्यो न बरसाए जाय और कैसा भी उपद्रव क्यो न हो, ईश्वरभजनके समय हमारी शाति भग नही होनी चाहिए। जैसे गोपी बसीका नाद वनमे सुनती है वैसे ही ईश्वरका भक्त अतर्नाद हृदयमे सुनता है। इसे अग्रेजीमे 'वॉइस आव साइलेस' कहा गया है, यानी वह नाद तभी सुनाई देता है जब हम शात रहे।

आप लोगोको मैंने कह तो दिया है कि प्रोफेसर कोसबीजी जो बडे विद्वान थे और पाली भाषामे अग्रगण्य माने जाते थे वे अभी-अभी सेवाग्राम आश्रममे चल बसे। उनके बारेमे वहाके सचालक बलवतसिंहका पत्र है, जिसमे कहा गया है कि ऐसी मृत्यु आजतक मैंने नही देखी। यह तो बिल्कुल ऐसी हुई जैसी कबीरजीने बताई है—

दास कबीर जतन सो ओढी,
ज्यों-की-त्यों धर दीनी चदरिया।

इस तरह हम सभी लोग मृत्युकी मैत्री साध ले तो हिंदुस्तानका भला ही होनेवाला है।

मुझसे किसीने कहा कि 'आप पच बन जाइए और इन मेवो और जाटोका[1] झगडा निपटा दीजिए,' पर मै कैसे पच बनू ? एक तो मेरी जान-पहिचान उन लोगोमेसे किसीसे नही है। दूसरे पच वह हो सकता है जिसके हाथमे अपना फैसला मनवानेकी शक्ति हो। मेरे हाथमे न बदूक है, न मै अदालतकी शरण लूगा, लेकिन मुझे लगता है कि अब उनको शात हो जाना चाहिए। भला हो गया या बुरा, अब तो लीग-काग्रेसमे भी समझौता हो गया है और अब वहातक नही लडते रहना चाहिए, जहा-तक दोनोमे एक हार कबूल नही करता। मेव भी बहादुर है और जाट-अहीर भी ऐसे नही है कि अपने लिए किसीको यह कहने दे कि वे मार खा गए। यह अच्छा है कि वे बालक, बूढे और औरतोको नही मारते। हथियार भी दोनोने काफी बना लिए है। वीरतासे लडते है, परतु नुकसान होता ही है। झोपडी जल जानेसे गरीबको इतना ही दु ख होता है जितना राजाको महलके जलनेसे होता है। हमारे इतने नजदीक लडाई हो रही है, पर हम कुछ नही कर पाते। वहा अधेरा-सा छा गया है; लेकिन आप लोगोमेसे जो उन्हें जानते-पहचानते है वे उनके पास मेरी आवाज पहुचा सके तो पहुचावे और लडाई बद करानेकी कोशिश करे।

मुझसे कहा गया है कि बगालके मामलेको मै बिगाड रहा हू। मेरा दावा है कि मुझसे कोई काम बिगडता नही। बगाल, बिहार या नोआखालीका, किसीका भी काम मेरे हाथसे बिगडा नही है। मुझसे तो सुधार ही हो सकता है और हुआ है। अब पजाबकी तरह बगालके भी दो हिस्से होनेवाले है। बगालके हिस्सेमे मुसलमानोकी अक्सरियत है और दूसरे हिस्सेमे हिंदुओकी। बहुत सारे हिंदू चाहते है कि हमारा

---

[1] गुड़गाव जिलेके।

हिस्सा तकसीम कर दिया जाय, क्योंकि कहातक अशाति बर्दाश्त की जाय। अपना घर बन जायगा तो उसमें शातिसे तो रहा जा सकेगा। बगालकी मुस्लिम लीगने इस बातको माननेसे इन्कार कर दिया है। लेकिन वहाकी लीगकी बातको मानता कौन है? नई योजनामे बगालका बटवारा निश्चित है।

अब मुझपर दोष लगाया जाता है कि मैं बगालको तकसीम होने देना नही चाहता। ठीक है, मै यह नही चाहता। पर मै तो यह जरा भी पसद नही करता कि सारे मुल्कके हिंदुस्तान तथा पाकिस्तान-जैसे दो टुकडे किए जाय। मेरा साहस तो यहातक है कि अगर मै अकेला हिंदू रहूगा तो भी मुसलमान अक्सरियतवालोके बीच बैठा रहूगा। अधिक-से-अधिक वे क्या करेंगे? मुझे मार डालेंगे, इतना ही न! लेकिन वे नही मारेंगे। एक आदमीकी वे रक्षा करेंगे। ईश्वर ही बचाएगा। अकेले आदमीकी रक्षा ईश्वर करता ही है। इसीलिए उसे 'निर्बलके बल राम' कहा जाता है। मुझे बिलकुल ही प्रिय नही है कि बगालको तकसीम किया जाय। लेकिन मै ऐसा आदमी नही हू कि मै यह कह दू कि "हिंदू डरके मारे दब जायं और अपने जानमालकी हिफाजतके विचारसे अपनी इच्छाको छोड दे।" अगर वे मानते है कि अपने टुकडेमे वे आराममे रह सकेंगे तो ऐसा कोई न समझे कि मै उनके बीचमे दखल देनेवाला हू।

परसो या नरसो मेरे पास शरत्बाबू आए थे। वे नही चाहते कि बगालके हिस्से हो। वे कहते है, सारे प्रातकी एक ही सस्कृति है, एक-सा खान-पान है, तो केवल धर्मके बहाने दो टुकडे क्यो किए जाय? पर शरत्बाबूकी बात वे जाने और मेरी मै अपनी जानू। लेकिन लोगोको पूरा हक है कि वे अपने मनकी करे। बहुत आदमियोकी रायके बीच मेरे एक आदमीकी राय रोडा नही बन सकती।

और मै तो हमेशा ही अच्छी बातमे साथ देता हू। अगर बुरा आदमी भी मुहसे रामनाम निकालता है तो क्या मैं उसके साथ बैठकर रामनाम न लू? मै उसके साथ जरूर रामनाम लूगा और शरीफ कहा जानेवाला आदमी शैतानका काम करे तो क्या मैं उसका साथ दूगा? अगर ऐसा करू तो फिर मै गाधी नही। गाधीमे शैतानकी पूजा कभी नही होगी और

जो कोई भला काम है, प्रेमका काम है, उसमें मेरा हिस्सा है।

मुझे पता चला है कि आज तो बंगालका विभाजन रोकनेके लिए पैसे उड़ रहे हैं। पैसेसे कोई स्थायी चीज नहीं हो सकती। पैसेसे पाए गए वोट दमदार नहीं होते। ऐसे काममें मेरी शिरकत हरगिज नहीं हो सकती। जो काम गुंडेपनसे किया जाता है उसमें फिर वह करनेवाले मा-बाप अथवा पत्नी या बेटे ही क्यों न हों—मैं कभी भी साथ नहीं दे सकता।

इसलिए मैं सब भाइयोंसे कहूंगा कि आपके दिलमें और मेरे दिलमें बंगालका विभाजन न होने देनेकी बात है, पर अभी हम उस विभाजन न करनेकी बातको भूल जायं। बुरे साधनसे वह नहीं हो सकता। नापाक साधनसे ईश्वर नहीं पाया जा सकता और बुरी चीजको पानेका साधन साफ नहीं हो सकता।

## : ३४ :

सोमवार, ९ जून १९४७

(लिखित संदेश)

मेरे पास कुछ खत आए हैं जिनमें कहा गया है कि अल्लोपनिषद्, जिसके बारेमें मैंने आपको एक रोज बताया था, तो किसी धर्मशास्त्रके संग्रहमें नहीं है। मैंने तो याददाश्तसे ही ऐसा कहा था। इसलिए मैंने एक मित्रसे पूछा और मुझे उनसे यह जवाब मिला है कि जिस संग्रहका स्मरण मुझे था उसमें अल्लोपनिषद्का जिक्र है और उसमें कहा गया है कि उसमें ७ मंत्र हैं। ये उपनिषद अथर्ववेदके जमानेसे हैं। लेखकने और बहुत कुछ बताया है, जो ज्यादातर विद्यार्थियोंके लिए है। इसलिए मैं आपको खतका वह भाग नहीं सुनाता।

इसके अलावा मेरे पास एक खत श्रीजयचंद्र विद्यालंकारका भी आया है। जयचंद्रजीने लिखा है कि 'महाराणा कुंभाने, जो राणा सांगाके बाबा थे, सर्वप्रथम आक्रमणकारी मुसलमानोंका संगठित विरोध किया

और गुजरात तथा मालवाके मुस्लिम प्रदेशको जीतकर चित्तौडमे एक कीर्ति-स्तम्भ स्थापित किया। उस स्तम्भपर अनेक हिंदू देवी-देवताओके चित्रोके साथ ब्रह्मा, विष्णु, महेशके चित्रके बगलमे ही अल्लाका नाम भी खोदा हुआ है। महाराणा रणजीतसिंह तथा छत्रपति शिवाजी-जैसे हिंदू-गौरवोकी इस्लामके प्रति श्रद्धा प्रसिद्ध ही है। जो हिंदू-धर्म-अभिमानी आपकी प्रार्थनामे कुरान पढनेपर आपत्ति करते है वे विजय-स्तभमे अल्लाके नामपर क्यो नही आपत्ति करते ?'

इसके बाद विद्यालकारजीने यह बताते हुए कि हिंदू-मुस्लिम-वैमनस्यका कारण गलत ढगका लिखा इतिहास है, मुझसे अनुरोध किया है कि मै ठीक ढगसे इतिहास पढानेकी ओर ध्यान दू, नही तो हिंदू-मुस्लिम-एकताके सारे प्रयत्न बालूकी भीतकी तरह ढह जायगे।

आजकल तो मेरे पास बहुत ऐसे खत आते रहते है, जिनमें मेरे ऊपर हमला होता है। एक मित्र लिखते हैं कि आप जो कहा करते थे कि हिंदुस्तानका काटना तो समझो मेरे शरीरको काटना है, तो आज आपकी यह बात कितनी कमजोर पड गई है, और मुझे इस बटवारेका सख्त विरोध करनेको कहते है। मै तो अपना इसमे कोई भी दोष नही देखता। जब मैंने कहा था कि हिंदुस्तानके दो भाग नही करने चाहिए तो उस वक्त मुझे विश्वास था कि आम जनताकी राय मेरे पक्षमे है, लेकिन जब आम राय मेरे साथ न हो तो क्या मुझे अपनी राय जबरदस्ती लोगोके गले मढनी चाहिए ? मैने यह भी जरूर कई बार कहा है कि असत्य और बुराईके साथ तो कभी समझौता नही करना चाहिए और आज मै दावेसे कह सकता हू कि अगर तमाम गैर मुस्लिम लोग मेरे साथ हो तो मै हिंदुस्तानके दो टुकडे न होने दूगा। लेकिन आज मुझे स्वीकार करना पडता है कि आम राय मेरे साथ नही और इस कारण मुझे पीछे हटकर बैठना चाहिए। जो सबक हम ३० सालसे सीखते आए है और जिसे आज हम भूल रहे है वह यह कि असत्य और हिंसापर जीत केवल सत्य और अहिंसासे ही हो सकती है। अधीरजको धीरजसे ही मारा जा सकता है और गरमीको सरदीसे। आज तो हम अपनी परछाई-

किसको पसद न आयगा । पर झूठसे, फरेबसे या रिश्वतसे बगाल-को एक रखनेकी कोई बात करे तो मै उनका साथ नही दे सकता। अगर किसी बगालीने—ख्वाह वह हिंदू हो या मुसलमान—ऐसा नही किया है तो फिर कोई बात रह ही नही जाती। कोई व्यर्थमे मेरी बात अपने ऊपर क्यो ले ले ?

लेकिन लोगोको वहम जरूर है कि बगालमे गलत चीज हो रही है। जिन्होने मुझे खबर दी है उन्होने नाम और पते भी दिए है। पर उन्हे यहा खोलना मै ठीक नही समझता । अगर उन्होने मुझे झूठी खबर दी है तो यह बुरी बात है और उन्हे सजा मिलनी चाहिए । पर मै किसको सजा दू ? किसीको सजा देनेकी शक्ति मै नही रखता।

पर मेरे पास एक बुलद चीज है और वह है लोकमत । लोकमतमे बडी प्रचड शक्ति है । अभी हमारे यहा इस शब्दका अर्थ पूरे जोरसे प्रगट नही हुआ है; पर अग्रेजीमे उस शब्दका अर्थ बड़ा जोरदार है। अग्रेजीमे इसे 'पब्लिक ओपीनियन' कहते है और उसके सामने बादशाह भी कुछ नही कर सकता। चर्चिल जो इतना बडा बहादुर है और जो ऊचे खानदानका, बडा भारी वक्ता, बहुत ही विद्वान—मेरे-जैसा अनजान बिलकुल नही है, यह सब कुछ होते हुए भी अपनी गद्दी न सम्हाल सका । इसका मतलब यह है कि वहाका लोकमत बहुत जाग्रत है । इसलिए उसके सामने किसीकी नही चल सकती ।

आज हमारे यहाका लोकमत इस तरह जाग्रत नही है । अगर जाग्रत होता तो मेरे-जैसा निकम्मा व्यक्ति महात्मा न बन बैठता। और महात्मा बन जानेके बाद मै जो कुछ करू वह सहन न कर लिया जाता, जैसा कि आज हिंदुस्तानमे किसी महात्मा कहे जानेवालेको कोई पूछता ही नही—चाहे वह कुछ भी उलटा-सीधा करे ।

टाल्स्टाय एक बडा योद्धा था, पर जब उसने देखा कि लडाई अच्छी चीज नही है तब लडाईको मिटा देनेकी कोशिश करते-करते वह मर गया। उसने कहा है कि दुनियामें सबसे बड़ी शक्ति लोकमत है और वह सत्य और अहिंसासे पैदा हो सकता है ।

यही काम मैं कर रहा हू, परतु यदि हमारे लोकमतमें सच्ची वहादुरी और सच्चाई नही आई तो उससे कुछ वननेवाला नही है ।

लेकिन आज तो ऐसा नही है । १५ अगस्तको जो औपनिवेशिक स्वराज्य आ रहा है, उसको हम नही चाहते, ऐसा मुझे लगता है । कारण यह कि हमारे यहा पूर्ण आजादीके लिए वरसोंसे लोकमत वन गया है। देशको यह औपनिवेशिक स्वराज्यकी वात चुभती है । यह चुभना ठीक भी है और ठीक नही भी। ठीक इसलिए नही कि हम उसकी ताकत नही समझते । एक तो यह कि इसके जरिए अग्रेज दो ही महीनेमें यहा-से चले जाते है। दूसरे यह कि जब चाहे तब हम औपनिवेशिक दर्जेको हटा सकते हैं। अगर हम पागल ही रहे तो उसमें दूसरोका क्या दोष है ? खैर, लोकमतकी वातपर आऊ, अगर वह जाग्रत रहता है तो सवका अच्छा ही होनेवाला है। अगर लोकमत यह समझे कि 'रिश्वत नही खाई', 'वुरा काम नही किया' और इस हालतमें वगाल एक रहनेका तय करता है तो अच्छा ही है, लेकिन हम पुश्तोसे कायर रहे है, गुलाम रहे है, इसलिए हमारे यहा हमारे हाथसे गदी चीजे वन जाती है।

लेकिन अगर किसीनें गदा काम नही किया और दूसरा कोई लाछन लगाता है तो जी क्यो दुखाया जाय ? मसलन कई ऐसे वडे-वडे ओहदेदार होते है जो नापाक नही होते, चोखे रहते है, फिर भी उनपर रिश्वतका इल्जाम लगाया जाता है, लेकिन वे इस वातसे परेशान नही होते । अगर कोई मुझे वदमाश वतावे और नापाक कहे तो क्या मै रोने वैठू ? किसीके कहनेपर मैं क्या वदमाश सावित हो जाऊगा ? यह मैं मानता हू कि कुछ लोगोका गलत शिकायत करना द्वेषभाव और वुजदिली कहाएगा । हमें किसीकी वुराई नही करनी चाहिए, भला ही देखना चाहिए । अगर आजाद वनना चाहते है तो औरोकी वुराई न देखें, भलाई देखें और उसका सिचन करे ।

अव मैं ऐसा मानकर चलता हू कि हिंदुस्तानके हिस्से हो गए हैं और सव काग्रेसने मजवूरीसे कवूल किया है । लेकिन हिंदुस्तानके टुकडे हो जानेपर अगर हम खुश नही रह सकते तो हम रजीदा भी क्यो हो ? हमें अपने दिलके टुकडे नही होने देने चाहिए । हृदयको चूर-चूर होनेसे

बचाना चाहिए । वरना, जिन्ना साहबकी बात सही साबित हो जायगी कि हम दो राष्ट्र है । मैने कभी यह माना ही नही । जब कि हमारे उनके मा-बाप एक थे तो महज धर्म बदलनेसे क्या राष्ट्र बदल जायगा ? जब कि सिंध, पजाब और शायद सीमाप्रात भी पाकिस्तानमें चले जायगे तो क्या वे अब हमारे नही रहे ? मै तो ब्रिटेन तकको गैर नही मानता तो पाकिस्तानको दूसरा राष्ट्र क्यो मानू ?

कहनेको तो मै हिंदका हू और हिंदमें बबई प्रातका और उसमें गुजरातका। गुजरातमे फिर काठियावाडका तथा उसमे भी छोटे-से देहात पोरबदरका। लेकिन पोरबदरका हू, इसीलिए सारे हिंदका भी हू अर्थात् मै पजाबी भी हू और पजाबमे जाऊगा तो उसे अपना समझकर वहा रहूगा और मार डाला जाऊगा तो मर जाऊगा।

मुझे खुशी है कि जिन्ना साहबने कहा है कि पाकिस्तान शहनशाहका नही, जनताका रहेगा और अल्पमतको भी बराबरका माना जायगा। उनकी इस बातमे इतना इजाफा मै करना चाहूगा कि जैसा वे कहते हैं वैसा करें भी। अपने पैरोकारोको भी वे यह बात समझा दे और कह दें कि 'अब लडाईकी बात भूल जाओ ।'

हम भी अपने यहा अल्पमतको दबानेकी सोचेंगे नही । मुट्ठीभर पारसियोका भी हमारे यहा साझा रहेगा। अगर हिंदू-मुसलमान दोनों मिलकर पारसीसे कहे कि तुम 'शराब पीते हो, इसलिए निकम्मे हो, तुम्हें हम मार डालेंगे' तो वह बुरा होगा। पारसी तो मेरे मित्र है और उन्हें मै कहता हू कि शराब नही छोडोगे तो अपनी मौत मरोगे, पर हम उन्हे नही मारेगे । इसी तरह पजाबमे सिख और हिंदुओकी हिफाजत होनी चाहिए । मुसलमान उनमे मुहब्बतसे बरतें और कहें कि आप आरामसे रहे, आप हमारे भाई है। अगर वे जबरदस्ती करने लगे तो हिंदू-सिख मरनेसे न डरें और कहे कि मजबूरन न हम इस्लाम मजूर करेंगे, न मजबूरन गोश्त खायगे । हिंदुओको ऐसा नही समझना चाहिए कि एक नई प्रजा बन गए है जिसमें मुसलमान रह ही नही सकते । हम बहु-मतवाले हिंदुस्तानमे है। बहुमतको जाग्रत करके हमे बहादुरीसे काम करना है । बहादुरी तलवारमे नही है । हम सच्चे बनेंगे, ईश्वरके बदे

बनेंगे और जरूरत पड़नेपर मरेंगे भी। जब ऐसा करेंगे तब हिंदुस्तान अलग और पाकिस्तान अलग, यह बात नहीं रह जायगी और ये कृत्रिम हिस्से निकम्मे बन जायंगे। अगर हम लड़ाई करेंगे तो हमपर दो राष्ट्रका इल्जाम सच्चा साबित होगा। इसलिए आप और मैं ईश्वरसे प्रार्थना करें कि हिंदुस्तान और पाकिस्तान अलग तो हुए, पर अब हमारे दिल अलग-अलग न हों।

## : ३६ :

### ११ जून १९४७

भाइयो और बहनो,

यद्यपि बंगालके जो टुकड़े होनेवाले हैं उनके बारेमें मैंने दो दफा कह दिया है फिर भी तीसरी बार उस बारेमें कहना जरूरी हो गया है। एक सज्जनका बहुत ही गुस्सेसे भरा हुआ कागज मेरे पास आया है। इतना गुस्सा करनेकी जरूरत ही क्या है? अभी मैंने बताया था कि गुस्सा करना पागलपन है। हमें अपनी बुद्धि शांत रखकर सब बातोंको समझना चाहिए।

वह उसमें आगे लिखते हैं कि मैंने बंगालको बड़ा नुकसान पहुंचाया है। पर मैंने कैसे नुकसान पहुंचाया? और क्या नुकसान पहुंचाया? मैंने तो जो बात हो रही थी वह सुना दी और मैंने इतना ही कहा था कि बंगालके टुकड़े मैं नहीं चाहता, लेकिन इन्साफसे बाहर कुछ नहीं होना चाहिए। ख्वाह हिंदू हो, मुसलमान हो अथवा ईसाई—अगर वह बंगाली है और अपनी मातृभाषाको कायम रखना चाहता है, अपने मुल्कको एक रखना चाहता है तो वह अच्छी बात है। लेकिन अच्छी बातके लिए साधन भी अच्छे ही बरतने चाहिए। टेढ़े रास्तेसे सीधी बातको नहीं पहुंचा जा सकता। पूरबको जानेके लिए पच्छिमकी ओर नहीं चलना चाहिए। मैं बंगालियोंसे कहूंगा कि मैं अपनी बातपर कायम हूं। अगर बंगालके टुकड़े हों तो आप ही कर सकते हैं, न हों तो आप ही उसे

रोक सकते है। आप जो न चाहे वह न हो, इसीमे इन्साफ और सच्चाई है।

आज मेरे पास केम्बेलपुरके कुछ भाई आए। वे इस बातसे घबराए हुए है कि पाकिस्तानमे उनकी हालत क्या होगी ? उनपर कैसी बीतेगी और अब वे वहापर कैसे रहे ?

मैने उन भाइयोसे कहा कि आप अपने मनमे ऐसा समझ ले कि हम हिंदुस्तानमे ही पडे है। जब हमारा भूगोल एक है तब महज कह देनेभरसे पाकिस्तानवाला हिस्सा हिंदुस्तानमे नही मिट सकता और मेरी रायमे आप वही बने रहिए।

मेरे इस कथनपर उन लोगोने पूछा—"तो हम सब मिलकर एक जगह रहे ?" मैने उनसे ऐसा करनेसे भी मनाही की और उनसे कहा कि नोआखालीके हिंदुओ और विहारके मुसलमानोसे भी ऐसा करनेको मना किया है और यह भी कहा है कि हमे हथियार भी नही रखने चाहिए।

जहापर अल्पमतवाले थोडे-से आदमियोका रक्षण सरकार नही कर सकती वहापर उस सरकारको बने रहनेका कोई हक नही रहता। अगर हिंदुस्तानकी सरकार चद मुसलमानोके जानो-मालकी हिफाजत नही कर सकती तो उस सरकारको उलट देना चाहिए और पाकिस्तानमे अगर थोडे हिंदू और सिखोकी खैरियत नही रहती तो उसे भी खतम हो जाना चाहिए। जहापर बहुमतवाले अल्पमतवालोको मार डाले, वह तो जालिम हुकूमत कहलायगी। उसे स्वराज्य नही कहा जा सकता।

तो फिर क्या हमने जो इतनी लडाई ली, इतना सत्याग्रह किया सब चूल्हेसे निकलकर भट्ठीमे पडनेके लिए ? लेकिन मेरी बातपर केम्बेलपुरवालोने कहा, 'आप महात्मा है। आप महात्माकी-सी बाते करते है। हम लोग ताजिर है, वहा हमारा व्यापार चलता है, और हम बाल-बच्चेदार है। हम आपकी तरह कैसे कर सकते है ?' तब मैने कहा कि मेरे पास दूसरी चीज नही है। मै यही कहते-कहते बुड्ढा हो गया और अखीरतक यही कहूगा। अगर कोई कहता है कि हम बहादुर नही बन सकते, हम डरपोक ही रहेगे तो यह बात ठीक है। लेकिन इन्सान डरपोक बननेके लिए थोडे ही पैदा हुआ है ? फिर यह कैसे कहा जायगा कि मनुष्य ईश्वरका तेज है—खुदाका नूर है। गाय-बैलमे ईश्वरका तेज है

ऐसा किसीने कहा है और हम मनुष्योंमें ईश्वरका तेज है, वह क्या डरनेके और एक दूसरेका गला काटनेके लिए है ?

पाकिस्तानको देखकर सहम जानेकी कोई बात नही है। मैं तो मिट्टीका पुतला, हड्डी-पसली जिसकी दीख रही है, ऐसा मामूली-सा आदमी हू, और बहादुर बननेकी बात कह रहा हू। लेकिन जिन्ना साहब तो इतना बडा काम कर रहे हैं। किसीके ख्वाबमें भी नही था कि कभी ऐसा बन जायगा, पर पाकिस्तान बन गया, जिन्ना साहबने उसे पा लिया। कांग्रेसको मजबूर होकर वह मजूर करना पडा। पर मैं सोचता हू कि कांग्रेस उसपर दुःख क्यो माने ? मैं भी क्यो बुजदिल बनू ? मैं क्यो मान लू कि हमारे टुकडे हो गए है। जिसको ईश्वरने एक बना रखा है उसको दो कौन कर सकता है ?

और जिन्ना साहबने बातें भी ऐसी ही की है। उनसे जब पूछा जाता है कि क्या पजाबसे हिंदू, सिख भाग जाय तो वे कहते है, "हमारे यहा सब एक ही तराजूमें तोले जायगे। सबका अदल इन्साफ होगा, वे भागे क्यो ?"।

बादशाह खान मेरे दोस्त है। मौलाना आजाद तथा जवाहरलालके महल छोडकर मेरी झोपडीमें आकर टिकते है। यहा गोश्त नही मागते। मेरे साथ ही रोटी-फल लेते है। वे पूरे फकीर है। उनके भाई डा० खान साहब बिना उनकी मददके काम नही चला सकते। हम उन्हें सीमात गाधी कहते है; पर यहा गाधीको ही कोई नही जानता तो सीमांत गाधीको कौन जाने ? वहां तो यह बादशाह कहलाते है और जिस झोपडीमें जाइए वहा पठान अपने इस बादशाहपर खुश हो जाते है।

ऐसे बादशाहके इलाकेमें जनमत-सग्रह करनेकी बात तय कर दी गई है और वह भी तब जब पठानका खून अभी ठडा नहीं हुआ है, जिसका कि खून सदा गरम ही रहना आया है और बादशाहने अपनी जिंदगी उस खूनको ठडा करनेमें खपा रखी है।

वहा मत लिया जायगा तब सब-के-सब न पाकिस्तानकी कहेंगे न हिंदुस्तानकी। तब क्या आप पठानके दो टुकडे कर डालेगे ? इसलिए बादशाह खानसे कहता हू कि यदि जिन्ना साहब आश्वासन देकर भली

प्रकार समझा दे तो आप पाकिस्तानसे क्यो डरे ? सब पठान इकट्ठे होकर क्यो न रहे ?

और जिन्ना साहबने जब मेरे साथ अपील निकाली है—दस्तखत किए है कि लडाईमे कोई राजनैतिक काम नही किया जायगा तो फिर वे क्यो नही कह देते कि अब हम जनमत-संग्रह नही करेगे ? वाइसरायने तो वादा किया है कि तीनो पार्टी मिलकर जो तय करेगे वह मान लेगे । तो अब कायदे आजम सबको बुलाकर समझा दे कि पाकिस्तानमे एक बच्चे तकको तकलीफ नही होगी। काग्रेसवाले यहाकी बाते बतला दे कि हम सब भाई-भाई बनकर रहेगे और पाकिस्तानवाले भी यह बता दे कि वे जहर नही फैलावेगे ।

अगर आपसमे जहर फैल जायगा तो वह बहुत बुरी चीज होगी। अग्रेज यहासे तो चले जायगे, पर बादमे मुसलमान और हिंदुओको कोसेगे कि हम तो पाकिस्तान बनाना ही चाहते थे, लेकिन जब दोनो विधान-परिषद्मे इकट्ठे बैठे ही नही और हमे तो जाना ही था इसलिए यह तीसरा रास्ता निकाला, फिर भी शाति नही हुई।

लेकिन मुझे दु ख है कि यद्यपि माउटबेटन बुरा करनेके लिए नही आए, पर उनके हाथसे बुरा हो जानेवाला है । ऐसा तो कभी होता नही कि कोई सारी दुनियाको खुश ही रख सके, फिर वह तो बहादुर सेनापति रहे है। वे पाकिस्तानवालोसे भी और काग्रेसवालोसे भी कह सकते है कि तुम्हारी यह बात ठीक नही है और लीगसे अब भी वे कह सकते है कि आप लोगोने जिस गेदके लिए जो जिद पकडी थी वह गेद आपको मिल गई । अब बताइए कि यह पाकिस्तान क्या चीज है ? उसमे कौन-सा सौंदर्य है ? वे इतना तो कह दे कि अब हमारा पाकिस्तान बन गया, अब हम भाई-भाई बनकर रहना चाहते है।

सारी दुनिया भी यह देखना चाहती है कि हम एक है। इब्न सऊद तकने कायदे आजमको तार दिया है कि आपको पाकिस्तान मिल गया। अब हमें आशा रखनी चाहिए कि दुनियामे शाति ही रहेगी। कायदे आजमने भी उत्तरमे लिखा है 'दुनियामे शाति ही रहेगी', पर वह कैसे रहेगी ? हिंदुस्तानमे अशाति होगी तो दुनियामें शाति कहासे आवेगी ?

मै फिर जिन्ना साहबसे कहूगा कि आपको दोस्ताना तौरसे सबको अपनी ओर खीचना है। सबको सतोष देना है, वरना दुनियाका बुरा हाल होनेवाला है। हिंदुस्तानका बुरा होनेवाला है, मुसलमानका बुरा होगा और हिंदूका भी बुरा होगा। मै यह एक ही चीज कहूगा।

## : ३७ :

१२ जून १९४७

भाइयो और बहनो,

आप लोग देख रहे है कि मेरी दाहिनी ओर ख्वाजा साहब[1] बैठे हुए है। इनके बारेमें एक बार मैं आपको पहले सुना चुका हू कि किस प्रकार मै स्वामी सत्यदेवके साथ इनके घर पहुचा था और सत्यदेवजी मुसलमानके हाथका पानीतक नही पी सकते थे। लेकिन तब भी ख्वाजा साहबने बुरा नही माना और उदार स्वागत किया। उस समय ये अलीगढ युनिवर्सिटीके ट्रस्टी थे। बादमे असहयोग आदोलनमें शरीक होनेके लिए इन्होंने ट्रस्टीपन छोड दिया। जहातक मुझे याद है, जब मैं वहा गया था तब वहा लीगकी मीटिंग हो रही थी। मैंने वहा पूछा था कि यहा भी कोई सत्याग्रही मिलेगा या नही? मौ० मुहम्मदअली और मौ० शौकतअली तब नजरबद थे और उनके कैद होनेके बारेमे वहा सब मायूस हो रहे थे। तब ख्वाजा साहबने मुझसे कहा था कि आपको ढाई सत्याग्रही मिल सकते है। उनमें एक तो थे श्वेब कुरेशी, जो काफी प्रख्यात और बहादुर जवान थे। दूसरे साहब भी जो वहा मौजूद थे, पक्के सत्याग्रही थे। एक बार लोगोंने उन्हे मारा और उनके हाथमे दो जगह चोटें आई, तब भी वे शात रहे और ताकत होनेपर भी मार सहन की, लेकिन जवाबमे हमला नही किया। इन दोनोका

---

[1] अखिल भारतीय राष्ट्रीय मुस्लिम मजलिसके अध्यक्ष ख्वाजा अब्दुल मजीद।

परिचय करानेके बाद ख्वाजा साहबने कहा था कि ग्राधा सत्याग्रही मै हू। ग्रौर तबसे ख्वाजा साहब मेरे सगे भाईकी तरह बनकर रहे है।

वे नही चाहते थे कि देशके हिस्से हो पर हिस्से हो ही गए। तो वे मेरे पास अपना दुख प्रगट करने आए है। मैंने उनसे कहा कि हम रोनेवाले नही है। और मैंने उन्हे हँसा दिया।

चोट तो सप्रू साहबको भी बहुत पहुची है कि यह क्या कर दिया गया। ठीक है कि यह लीगके मनकी चीज है, पर काग्रेसको यह बात पसद नही आई है। जब ऐसा है, यानी जिस बातपर दोनो राजी नही है वह बात कहातक चल सकती है? भले ही भूगोलके टुकडे हो गए हो, पर दिलोके टुकडे नही हुए तो हमें रोना नही है, क्योकि जबतक दिलोके टुकडे नही होते तबतक खैर ही है। फिर चाहे मुल्कके हिस्से पाकिस्तान-हिंदुस्तान कुछ भी हो। हम एक ही हो जानेवाले है। यह नही कि वे थककर और परेशान होकर हमे मिलने आयगे। पर हमारा बरताव ऐसा होगा कि चाहनेपर भी वे हमसे अलग रह नही सकेगे।

जवाहरलालके दिलमे यह बात बहुत खटकती है कि अब हम शेष हिस्सेको हिंदुस्तान कहे। उसका कहना ठीक ही है कि जब उनका पाकिस्तान बन गया तब भी हमारा हिंदुस्तान कैसे बन सकता है। इसका अर्थ तो यही होगा कि यह हिस्सा हिंदुओका हो गया। फिर ईसाई, यहूदी और बाकी मुसलमान क्या करे, यहासे हट जाय? पतजी ख्वाजा साहबको, जो युक्तप्रातके रहनेवाले है, और उनके पुराने मित्र है, कहेगे कि आप युक्तप्रातसे हट जाइए?

अगर ऐसा हम करेंगे तो जिन्ना साहबकी बात सही साबित हो जायगी कि 'उनके दिल पहलेसे ही फटे हुए है।'

लेकिन इतिहास ऐसा नही बताता है। बड़े इतिहासवेत्ता श्री-जयचद्रजीका पत्र मैंने आपको बताया था। वे कहते है कि जब हिंदू-मुसलमान आपसमे लडते थे तब भी धर्मके नामसे एक दूसरेको नही मारते थे। अपने बचपनमे भी हम लोग एक दूसरेको अलग अनुभव नही करते थे। पुराने जमानेमे जब जैनुल आब्दीन साहब हिंदुओके साथ काशीकी यात्राके लिए जाते थे तब रास्तेमे जो मदिर टूटे पाए जाते

थे, उनकी मरम्मत भी कराते थे। चित्तौडमे विजय-स्तभपर अल्लाका नाम मिलता है।

फिर आज हमारे दिल ऐसे क्यो विगड जाय कि न साथ बैठ सके, न एक-दूसरेको अच्छी नजरमे देख सके ?

माना कि थोडे मुसलमान विगड भी गए तो क्या हम भी विगड जाय ? जवाहरलालजी ऐसा नही चाहते। कहते है, जवतक इसमे मुसलमान शामिल थे तवतक हमारे देशका नाम हिंदुस्तान बहुत अच्छा था, क्योकि उस समय यह अर्थ निकलता था कि जो हिंदुस्तानमे पैदा हुआ है उसका स्थान हिंदुस्तानमे है, चाहे फिर वह किसी धर्मका हो।

अव हिंदुस्तानका अर्थ लगाया जाता है कि वह हिंदुओका है। और हिंदू भी कौन ? सवर्ण। पर मैने कहा है कि सवर्ण तो—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, सभी मिलाकर हमारे यहा थोडे है, बहुत वडी तादाद तो शूद्र और अछूतो तथा आरण्यकोकी है। उनकी वडी तादाद पर क्या थोडेसे सवर्ण राज करेंगे ? ठीक है कि आज उनकी चलती है, पर अछूत, आरण्यक आदिको अलग करके सवर्ण लोग राज करेंगे तो जिन्ना साहवकी वात ठीक ही सावित होगी कि 'थोडेसे ऊचे हिंदू वाकी सवको कुचलकर रखना चाहते है। तो क्या हम ऐसे पाजी वनेगे ?' तो जिन्ना साहवके दो भिन्न राष्ट्रके सिद्धातको स्वीकार करेगे ? यानी जव मेरा लडका मुसलमान वना तो वह अलग राष्ट्रका हो गया ? अगर हम अपने तीन-चौथाई भाइयोको जगली वनायगे और उन्हे छोडकर राज करेगे तो उसका अर्थ यही होगा कि सचमुच जैसा जिन्नाने कहा है वैसे हमारा हिंदुस्तान वन गया।

और तव पारसीस्तान, सिखोके सिखिस्तान, आरण्यकोके आरण्यकस्तान और अछूतोके अछूतस्तानकी उत्पत्ति हो जायगी और हिंदुस्तान हिंदुस्तान न रहकर उसके टुकडे-टुकडे हो जायगे।

अगर अग्रेज हिंदुस्तानके ऐसे टुकडे करना चाहते है तो अग्रेजोके लिए दुनियामे स्थान रहनेवाला नही है।

यानी जो वन गया है उसके लिए हमे रोना नही है। जवाहरलालने इसका नाम 'यूनियन आव इडियन रिपब्लिक' (भारतीय प्रजातत्र सघ)

दिया है। यानी सभी इसमे मिलकर रहेगे । अगर कोई भाग जाना चाहता है तो उसे हम रहनेको मजबूर नही करेगे, लेकिन जो रहेगे उन्हे भाई बनाकर ही रखेगे। हम उन्हे इस तरह रखेगे कि वे महसूस करे कि हम भागेगे नही; क्योकि हम अलग टुकडेमे नही है। हम सघके वफादार रहेगे तथा सघकी सेवा करेगे ।

आज किसीने मुझसे पूछा कि अब हिंदुस्तानीका क्या काम ? यह प्रश्न नही उठाना चाहिए। अगर हम यह सोचे कि उनके यहा उर्दू चले और हमारे यहा हिंदी तो हमपर वही भिन्नताका इल्जाम सावित हो जायगा। हिंदुस्तानीका मतलब यही है कि आसान बोली बोली जाय और वही लिखी-पढी जाय। पहले तो वह हमारे यहा चलती भी थी, अब तो फारसीकी भरमारवाली उर्दू चलती है, वह जनता समझ नही सकती और हिंदीमे जब ठूस-ठूसकर सस्कृत शब्द भरे जाते है तब वह भी जनताके कामकी नही होती। अगर हम ऐसी भाषामे बोले तो सप्रू साहब-जैसोको हमे अपने यहासे निकाल देना पडे। वे है तो हिंदू, पर उनकी मादरी जवान उर्दू है। मै उनसे सस्कृतभरी हिंदीमे बाते करूगा तो वे शिकायत करेगे कि तू क्या बोल रहा है ? इसलिए हिंदुस्तानीका—हिंदुस्तानी सभाका—काम चालू रखकर उर्दूवालोसे भी हमे अपनी मुहब्बत सावित करनी चाहिए।

मै तो समझता हू, जो हो गया है उसमे ईश्वरकी मरजी है। वह हम दोनोकी परीक्षा लेना चाहता है कि पाकिस्तानवाले क्या करते है और हिंदुस्तानवाले कितने उदार बनते है। हमे इस परीक्षामे सफल होना है। मै उम्मीद करता हू कि हममेसे कोई हिंदू ऐसा पागल बननेवाला नही है जो उनकी पाक चीजकी कम इज्जत करे और उनकी अलीगढ युनिवर्सिटी-को, मालवीयजीके हिंदू-विश्वविद्यालयकी तरह बढिया तालीमगाह न माने। अगर हम इनकी पाक जगहोको ढा देगे तो हम खुद भी ढह जायगे।

इसी तरह पारसियोकी अगियारी, यहूदियोके सीनेगाफ और दूसरे भी सब पूजास्थानोकी हिंदू-मदिरोके समान ही हमे रक्षा करनी चाहिए और हम यह भी कहे कि अछूतोका भी हमारे यहा इतना आदर किया जानेवाला है, जितना ऊची-से-ऊची जातिके सवर्ण लोगोका। सच्चा हिंदू-धर्म वही है जिसमे सब धर्मोका समावेश हो।

इसमें हमें सौ फीसदी सही उतरना है। 'जैसेको तैसा' वाला कायदा अमलमें नही लाना है। वह तो पुराना कायदा हो गया। अब नया जमाना तो यह आया है कि अगर कोई गाली देता है तो उसका जवाब हम मुहब्बतसे दें। झूठके सामने सचाईका प्रयोग करें और कोई बेहूदापन और नीचपन करे तो उसके साथ हम उदार भावसे बरतें। यानी हर समय हर बातमें हमारी आख, कान, हाथ पाक रहे। तभी हमारी खैर है और तभी दुनिया जिंदा रहनेवाली है। इसमें मुझे कोई शक नही है।

ऐसा हम हरगिज न सोचे कि चलो, मुसलमानोको जगह दे दी, अब हम अपने यहा मनचाहा बरतेंगे।

## : ३८ :

### १३ जून १९४७

भाइयो और बहनो,

जब मैंने नोआखालीके देहातोमे पैदल यात्रा की तब वहांपर लोग बहुत ही डरे हुए थे। और डरे हुए लोग रामका नाम नहीं ले सकते। फिर हमें ऐसे देहातोंमे और खेतोकी मेंढोपरसे होकर चलना पड़ा कि शायद ही कोई नोआखालीमें रहनेवाला स्त्री या पुरुष इस तरह चला हो। पर मैं इस पैदल यात्रामेंसे जो शिक्षा ले सका वह दूसरे तरीकेसे नही ले सकता था। हिंदू और मुसलमान दोनोके खेतोंमेंसे हमें गुजरना पड़ता था। इसलिए वहा चलते-चलते हम दोनो नाम[1] लेते थे।

जब यहा भी ईश्वर है, वहा भी ईश्वर है और ईश्वर तो एक ही हो सकता है तब दोनो अलग-अलग नाम लें और एक दूसरेके नाम बर्दाश्त न कर सकें, यह तो पागलपन-सा ही दीखता है। तभी मैंने कल कहा था कि क्या हिंदुस्तानमेंसे—हालाकि अब हिंदुस्तान नाम तो हमें छोड़ना

[1] भज मन प्यारे राम रहीम, भज मन प्यारे कृष्ण करीम।

है—रहीमका नाम लेनेवालेको चला जाना होगा? और वहा—पाकिस्तान कहे जानेवाले हिस्सेमे—रामका नाम त्याज्य रहेगा? क्या वहा कोई कृष्ण कहेगा तो उसे निकाल दिया जायगा? वहा कुछ भी हो, हमारे यहा यह नही हो सकता। हम कृष्णको और करीमको—दोनोको बराबर मानेंगे और दुनियाको भी बतायगे कि हम पागल बननेवाले नही है।

एक भाईने मेरे पास इस आशयका एक बहुत सख्त पत्र भेजा है कि क्या तुम अब भी पागल ही रहोगे? अब तो थोडे दिनोमे इस दुनियासे चले जाओगे तब भी कुछ सीखोगे नही? यदि पुरुषोत्तमदास टडनने यह कहा कि 'सबको तलवार लेनी चाहिए, सिपाही बनना चाहिए और अपना बचाव करना चाहिए, तो तुमको इस बातमे चोट क्यो लगती है? तुम तो गीताके पढनेवाले हो? तुम्हे तो इन द्वन्द्वोसे परे हो जाना चाहिए और बात-बातमे चोट लगा लेने या खुश होनेकी झझट छोड देनी चाहिए। तुम उस कहानीवाले भोले साधु बाबा-जैसी बात करते हो जो पानीमे बहते हुए बिच्छूके डक लगानेपर भी उसे हाथसे पकडकर बचानेकी कोशिश करता था। अगर तुमसे अहिंसाका गीत गाए बिना रहा नही जाता तो कम-से-कम जो दूसरे रास्तेसे जाते है उन्हे तो जाने दो! उनके बीचमे रोडा क्यो बनते हो?

अगर मै स्थितप्रज्ञ रह सका तो अपनी एक सौ पच्चीस वर्षकी उम्रमे-से एक भी वर्ष कम जिंदा नही रहूगा। अगर हम सब स्थितप्रज्ञ बने तो हममेसे एक भी आदमीको १२५ वर्षसे जरा भी कम जीनेका कोई कारण नही है। वैसे भगवान चाहे तो भले मुझे आज ही उठा ले, पर अभी तुरत मै चलनेवाला नही हू। मुझे अभी रहना है और काम करना है। पुरुषोत्तमदास टडन मेरे पुराने साथी है। हम बरसोतक साथ-साथ काम करते आए है। मेरे-जैसे ही ईश्वरके वे भक्त है। जब मैने यह सुना कि वे ऐसी बात कर रहे है तब मुझे दु ख हुआ। मैने कहा कि आज तीस बरससे भी अधिक समयसे जो हमने सीखा है और जिसकी हमने लगनसे साधना की है, वह क्या इस तरह गवा दिया जायगा? बचावके लिए तलवार पकडनेकी बात की जाती है; पर आजतक मुझे दुनियामें एक आदमी ऐसा नही मिला है, जिसने बचावसे आगे बढकर प्रहार न

किया हो। बचावके पेटमें ही वह पटा है। अब रही मेरे दिलपर चोट लगनेकी बात। अगर मै पूरा स्थितप्रज्ञ बन गया होता तो मुझे चोट न लगती। अब भी चोट न लगे ऐसी कोशिश मै कर रहा हू। कल जहा था वहासे आज कुछ-न-कुछ आगे ही बढता हू। अगर ऐसा नही हो तो रोज-रोज गीतामेसे स्थितप्रज्ञके ये श्लोक बोलनेमें मै दभी ठहरता हू, पर ऐसा नही हो सकता कि इन श्लोकोके बोलने भरसे ही कोई एक ही दिनमें स्थितप्रज्ञ बन जाय।

मैं राम-राम कहू और वह मेरे हृदयमे एक दिनमे नही आता तो क्या मै हार मान लू? मेरा एक पजाबका मित्र रामभजदत्त चौधरी था, जो अब तो (दुनियासे) चला गया है। कभी-कभी वह कविता बनाता था। जब जेलसे आया तब यह कविता बना लाया था और खुद तो गा नही सकता था इसलिए अपनी पत्नी सरलाजीसे कहता था कि यह भजन सुना दे। वह मीठे स्वरसे सुनाती—'कदी नही ओ हारणा, भावे साडी जान जावे।' और मैंने अपनेसे कहा कि 'तुझे कभी नही हारना है।' रोज-रोज अगर स्थितप्रज्ञ गाता रहूगा तो कभी-न-कभी मेरे हृदयमे स्थितप्रज्ञता अवश्य समा जायगी। जब ऐसा बन जाऊगा तब टडनजीके या किसीके कुछ कहनेपर मुझे रोना या हँसना नही आयगा। रोना-हँसना दोनो ही ईश्वरको सुपुर्द कर दूगा और दुखी नही होऊगा।

बिच्छूको बचानेवाले बाबाजीकी मिसाल अच्छी ही है। उनसे जब किसी नास्तिकने कहा था कि 'बिच्छूको बचानेके फेरमें क्यो पडे हो, उसका तो स्वभाव ही डक मारनेका है। उसे मार ही क्यो नही डालते?' तब उस बाबाने जवाब दिया था, 'अगर बिच्छूका स्वभाव डक मारनेका है तो मनुष्यका स्वभाव भी तो बर्दाश्त करनेका है। बिच्छू जब अपना स्वभाव नही छोडता तो मै कैसे अपने स्वभावको छोडू? क्या बिच्छू डक मारता है तो मै भी बिच्छू बन जाऊ और उसे मार डालू?'

आखीरमे उस विद्वान दोस्तने मुझे सीख दी है कि तू जिद्दी आदमी है। अगर तू अहिंसाकी अपनी हठ नही छोडता तो दूसरोको तो मत रोक? तो क्या मैं दभी बन जाऊ? दुनियाको भी धोखा दू? दुनिया फिर यही कहे कि हिंदुस्तानमें एक नामधारी महात्मा पडा है जो अहिंसा-

की तो बडी मीठी-मीठी बात करता है, पर उसके साथी मार-काट करते रहते है। यानी मै ऐसा बनू कि 'मुखमे राम और बगलमे छुरी।'

एक बडे दु खकी बात हो गई है। मै तो राजा-महाराजाओका दोस्त हू और उनका सेवक रहा हू। धनी लोगोका भी सेवक रहा हू। क्योकि मै मिस्कीन हू, भगी हू और उन राजाओ और श्रीमतोको भगीवासमे खीच लाता हू ताकि वे उनकी कुछ मदद करे। वे कब भगीवासको देखते ! पर मै बड़ा मेहतर हू तब मेरे पास यहा वे चले आते है।

मैंने अखबारोमें सर सी० पी० रामस्वामीका ऐलान देखा।' वे बडे विद्वान व्यक्ति है। ऐनी बेसेटके शिष्य रहे है। जब मैं हरिजन-यात्रामे था तब उनके निमत्रणपर उनके यहा त्रावनकोरमें मेहमान बनकर गया था। लडने नही, पर मिलकर काम करनेको गया था। उनसे यह बात सुनकर अच्छी नही लगती। अगर अखबारमें गलती हो तो वे मुझे माफ करें, सही हो तो मेरी बातपर गौर करे। उन्होने कहा है कि पद्रह अगस्तमे जब हिंदुस्तान स्वतत्र होगा तब त्रावनकोर आजाद हो जायगा और उनकी वह आजादी ऐसी है कि आजसे ही त्रावनकोरकी स्टेट काग्रेसके लिए सभाबदी कर दी गई है। खबर यहा-तक है कि सी० पी० रामस्वामीने उन लोगोको त्रावनकोर छोडकर चले जानेके लिए कहा है जो त्रावनकोरकी स्वतत्रताकी मुखालफतमे हो। और यह आज्ञा वे सज्जन दे रहे है जो खुद त्रावनकोरके नही, बल्कि मद्रासके रहनेवाले है। वे किस तरह ऐसा कह सकते है !

ब्रिटिश राजमें आजतक त्रावनकोरको अग्रेज शाहशाहीको सलामी देनी पडती थी। तो अब हिंदुस्तानके प्रजातत्र सघमें वह मनमानी कैसे कर सकता है ? वह अब हमारा राज्य है यानी भारतके प्रजाकीय राज्यको उसे (त्रावनकोरको) अपना ही राज्य समझना चाहिए। मैंने बताया है कि प्रजाकीय राजमें राजा और मेहतरकी कीमत एक-सी रहनेवाली है। मनुष्यके नाते दोनोकी कीमत एक ही रहेगी, पर दोनोकी बुद्धिमत्तामें भेद हो सकता है। अगर त्रावनकोरके महाराजाके पास बडी अकल है तो उन्हें उसे लोगोकी सेवामे लगाना चाहिए। अगर प्रजाको कुचलनेमें वे अपनी बुद्धि दौडाते है तो उनकी वह अकल फिजूलकी है।

अपनी सारी रैयतको कुचलकर और मार डालकर क्या त्रावनकोर नरेश निरी जमीनपर राज करेंगे ?

सुना जाता है कि हैदराबाद भी वही करने जा रहा है। अभी उसने साफ नही बताया है, पर वे कह रहे हैं कि हम दोनोको देखेंगे। न इधर जायगे, न उधर। लेकिन निजाम स्वतन्त्र होगा तो किससे होगा ? वहा नब्बे प्रतिशत तो हिंदू हैं और उनमें कई बडे गण्य-मान्य व्यक्ति हैं। अगर निजाम व त्रावनकोर या दोनोकी स्वतन्त्रता ऐसी नही है कि जिसमें वहाकी प्रजा अपनी आज़ादी महसूस करे तो वे समझें कि उनका राज्य नही रह सकता। आज समय बदल गया है। वे समयको पहचानें।

जो अंग्रेज यहा अच्छा करने आए है वे ऐसा ही करके जायगें क्या ? मैं अंग्रेजोको समझ नही पाता। लोग मुझे पागल बताते हैं कि तुम सब किसीपर विश्वास करते रहते हो—एक ओर मुझे इसलिए पागल बताया जाता है कि मैं अहिंसाकी जिद्द नहीं छोडता तो दूसरी ओर अंग्रेजपर भरोसा करनेपर मुझे पागल बताया जाता है। वे कहते हैं, तुम क्यों माउंटबेटनकी बात मानते हो ? अगर वे सच्चे आदमी हैं तो क्या इतने कुशल नौसेनापति होकर भी इतनी छोटी-सी बात नहीं देख पाते कि करीब छ सौ राजाओंको—जो कलतक बिना किसीके बताए एक तिनकातक नही तोड सकते थे—आज मनचाहा करने दिया जाय तो फिर आजादी एक उलझन ही हो जाती है। यह तो ईश्वरकी मेहर है कि काफी राजा लोगोंने कह दिया है कि हम भारतमें ही रहेंगे।

अंग्रेज कहते हैं कि 'हम जानेवाले हैं। दगा नही करेंगे।' तो हम प्रार्थना करे कि अंग्रेजोको और उनके बडे नुमाइदोको भगवान सन्मति दें। वे बहादुर बनें और सत्यनिष्ठ रहें ताकि जब वे हिंदुस्तानसे चले जाय तो कोई उन्हे गाली न दे कि वे हिंदुस्तानमें गए तो बुरा करके गए।

मेरा मानस तो ऐसा बना है कि वे दो महीने भी न रुकें, आज ही चले जाय। फिर बादमें हम आपसमें सब बात मिल-जुलकर ठीक कर लेंगे। और मैं तो यह भी कहता हू कि अगर हमें आपसमें मरना-कटना है तो भी वह हम भुगत लेंगे, पर अंग्रेज यहासे चले जाय।

और दोनो राजाओंसे (ट्रावनकोर और निजामसे) मैं कहूगा कि

आप रहे, लेकिन रैयतके सेवक बनकर रहे। अगर कांग्रेस भी रैयतकी सेवक नही रहेगी तो वह भी टिक नही सकती।

राजा लोग यह न कहे कि काग्रेस कौन होती है पूछनेवाली! काग्रेसने राजाओकी काफी सेवा की है। मै जब पढता था तबकी बात है कि मैसूरकी राजगद्दीका कुछ किस्सा बिगड गया था और काग्रेसने मैसूरकी गद्दी दिलवा दी थी। काश्मीरमे भी कुछ ऐसा ही किस्सा हो गया था। तब काग्रेसने सहायता दी थी और बडौदाकी भी एक बार काफी मलामत होने लगी थी तब उस अपमानमेसे उसे (बडौदाको) छुडवानेके लिए काग्रेसने कम प्रयत्न नही किया था। काग्रेसने यह सोचा था कि राजाओको अपना ही समझा जाय। वे हमारा क्या बिगाडेगे? समय आनेपर हमारे सहयोगी बन जायगे। इसलिए काग्रेसने उनका विरोध नही किया। अब अगर राजा यह कहते है कि 'हम तो राजा है' तो यह ठीक बात नही है। उन्हे चाहिए कि वे विधान-परिषद्मे आवे, बल्कि अपनी प्रजाके प्रतिनिधियोको भेजे।

अगर वे ऐसा नही करते तो मालूम होता है कि हिंदुस्तानके नसीबमे झगडा-ही-झगडा लिखा है। अभी हिंदू तथा मुसलमानका झगडा पूरा निपटा नही है कि वहा अब राजाओसे लडनेकी बात सामने आ रही है। फिर सिविल सर्विसवाले है। मै समझता हू कि सिविल सर्विस ठीक तरहसे सुलझकर रहेगी और किसी झगडेकी बायस नही बनेगी। लडाई ही बढनेवाली हो तो और भी बहुतसे छोटे-छोटे फिरके पडे है जो कहेगे कि हम इधरसे खायगे और हम उधरसे मुल्कका हिस्सा हडपेगे। लेकिन फिर हिंदुस्तानका क्या होगा? इस तरह तो किसीके हाथमे कुछ रह जानेवाला नही है। सारा देश बरबाद हो जायगा।

मेरे नसीबमे जन्मसे लडाई पडी है। मै चाहता हू कि वह और न लडनी पडे। फिर भी दिलको यह बर्दाश्त नही होता कि छोटे फिरके आपसमे लडते रहे और हम पाई हुई आजादी खो बैठे।

अतमे मै कहूगा कि हम राम-रहीम और कृष्ण-करीम रटते रहे। राजा लोगोको हम गाली न दे, पर उनसे यह जरूर कहे कि आप प्रजाके

सेवक वनकर ही रह सकते है, स्वामी वनकर रहनेकी आपको कोई गुजाइश नही है।

## : ३६ :

### १४ जून १९४७

भाइयो और वहनो,

गजराजकी प्रार्थनाका यह भजन मुझे वहुत प्रिय है। गजेन्द्र-मोक्षकी कथा हमारे यहा वडे ऊचे प्रकारका साहित्य है। इतना शक्तिशाली होते हुए भी जव गजेंद्र हार जाता है और देखता है कि अपने वलसे अव काम नही चल सकता, ग्राह उसे डुवा ही देगा, तव वह सोचता है कि अव भगवानकी शरण लेनी चाहिए।

हमारी भी ऐसी ही हालत है। इस समय हम समझ रहे है कि हम हार गए है। लेकिन हम हारे नही है। जो ईश्वरको अपने पास समझता है वह कभी नहीं हारता।

मनुष्यको ईश्वरने वनाया ही ऐसा है कि जव वह करीव-करीव डूवनेको होता है, जव उसका सव कुछ लुट जाता है तभी उसे ईश्वरको पुकारनेकी वात सूझती है। जव वह अमन-चैनसे होता है तव वह ईश्वरको नही पुकारता है। ईश्वरने ऐसा ही खेल रच रखा है।

कल मैंने त्रावनकोरके दीवान सर सी० पी० रामस्वामीकी वात आप लोगोको सुनाई थी। आजकल तो तार और रेडियोका जमाना है। उनके कानोतक मेरी वह वात पहुच गई और उन्होने एक लवा-चौडा तार मेरे पास भेज दिया है। उन्होने वहुतसे खुलासे किए है, पर त्रावनकोर-काग्रेस-कमेटीको सभा करने और जुलूस निकालनेकी इजाजत नही दी है। उसके वारेमें वे कुछ नही वोले है। इसमे मुझे वुराई नजर आती है। यह लक्षण अच्छे नही है। वे कहते है कि त्रावनकोर तो सदासे आजाद रहा है।

वात ठीक है, हमारे देशमे पुराने जमानेमे सैकडो राजा होते थे, पर हम हिंदुस्तानको एक मानते थे । ऋषि-मुनियोने देशभरमे जगह-जगह तीर्थ-स्थानोकी रचना की और दूसरी भी ऐसी व्यवस्थाए कर दी कि सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक रूपसे सारे मुल्कको हम एक ही अनुभव करते थे ।

पर राजकीय क्षेत्रमे हमारा देश कभी एक नही रहा । चद्रगुप्त या अशोकके साम्राज्यमें हिंद एक हो गया था, पर तव भी एक छोटा-सा दक्षिणी कोना उसके साम्राज्यसे वाहर था । जव अंग्रेज आए तभी पहली वार डिब्रूगढसे लेकर कराचीतक और कन्याकुमारीसे लेकर काश्मीरतक सारा देश एक हो गया । हमारे भलेके लिए नही, पर अपने राज्यकी भलाईके लिए अंग्रेजोने ऐसा किया । इस अंग्रेजी राजमे वह आजाद था, ऐसा त्रावनकोरका कहना गलत है । राजा लोग आजाद क्या थे, अंग्रेजोके गुमाश्ते थे । पूरी तौरसे उनकी मातहतीमे दवे हुए थे । अव जव अंग्रेजी राज जा रहा है और लोगोके हाथमे राज आ रहा है तव किसी भी राजाका यह कहना कि हम तो आजाद थे और आजाद रहेंगे, विलकुल गलत चीज है और वह जरा भी शोभाकी वात नही है । सर सी० पी० रामस्वामी तो मेरे दोस्त रहे है, सव वात सही, लेकिन मेरा लडका ही क्यो न हो, सही वात कहनेसे मैं क्यो रुकू ? हिंदुस्तान जव आजाद होता है तव अगर वे यही कहते है कि त्रावनकोर आजाद है तो इसका मतलव यह है कि वे आजाद हिंदसे लडना चाहते है ।

मैं तो उनसे कहूगा कि आप तख्तपरसे नीचे उतरिए और त्रावन-कोरके लोगोके खादिम वनकर रहिए । जव अंग्रेजोने आपसे एक वार राज्य छीन लिया और कुछ पैसे लेकर तथा अपनी रैयतको कुचलनेका आपको अधिकार देकर वह राज आपको लौटा दिया तो उसमें इतनी फख्रकी वात क्या थी ? फख्रकी वात तव है जव आप जनताको अपना मालिक माने । वैसे तो हिंदुस्तान गिरा नही है और अगर वह अपनी परेशानीमे पडा है तो यह शराफतकी वात नही है कि आप जो आदमी गिर पडा है उसको ऊपरसे लात धर दें । हिंदुस्तानके एक-चौथाई और तीन-चौथाई ऐसे दो टुकडे होते है तो उन टुकडोकी वातसे आपका कोई

सबब नहीं। आप शरीफ बने और समझे। हिंदमें बेकार फसाद न बढ़ावें।

रावलपिंडीके कुछ भाई आए हैं। उन्होंने कुछ बातें सुनाईं। सुचेता कृपलानीसे भी वहांके दुःखभरे हाल मालूम हुए। पर एक बात जानकर बहुत दुःख हुआ। वह यह कि जबतक पाकिस्तानकी बात तय नहीं हुई थी तबतक तो हालात कुछ ठीक भी थे, पर अब तो वहांपर मुसलमान धमकियां दे रहे हैं। वहांके मुसलमान कह रहे हैं कि पाकिस्तान क्या है यह हम अब दिखा देंगे, सबको मुसलमानोंके गुलाम बनायगे।

यहां प्रार्थनामें मैं इन बातकी चर्चा इसलिए कर रहा हूं कि मेरी बात सभी मुसलमानोंतक पहुंच जाय। जिन्ना साहबतक तो पहुंचेगी ही। अगर मैं गलत कहता हूं तो सब मुसलमान भाई मुझे डांटें और कहें कि ऐसी कोई बात नहीं है। पेशावरमें आकर देखो तो सही कि सब हिंदू, सिख, औरत, बच्चे कितने आरामसे हैं।

पर मेरे पास नाम पड़े हैं। दो-चार मामूली आदमियोंने ऐसा कहा हो तो समझा जा सकता है कि हर जगह कुछ गैर-जिम्मेदार आदमी होते ही हैं, लेकिन सारे मुसलमान अगर इस तरह सोचते और कहते हों तो यह बहुत बुरा है।

जिन्ना साहब तो कहते रहे हैं कि मुसलमानोंकी अक्सरियतमें सब छोटी तादादवाले चैनसे रहेंगे। इसके बदले यह क्या हो रहा है? पाकिस्तान बन जानेपर भी अगर ऐसा रहा, झगड़ा बढ़ता गया तो इसका यह मतलब हुआ कि हम बेवकूफ बनते रहेंगे। यानी वे तो सब सरदार बनेंगे और जो कोई विधर्मी होगा उसे उनके यहां गुलाम बनना होगा या नौकर बनकर रहना होगा, और यह कबूल करना पड़ेगा कि वह उनसे नीचा है। अगर यह सच है तो बहुत बुरी बात है। मैं तो उनसे यह सुननेको अधीर हूं कि पाकिस्तानमें सबको बढ़िया तरीकेसे रखा गया है और मंदिर भी अच्छी हालतमें हैं। जब ऐसा देखूंगा तब उनके प्रति मेरा सिर झुकेगा। अगर ऐसा न होगा तो समझूंगा कि जिन्ना साहब गलत बात कहते थे और माउंटबेटन साहबके लिए भी मेरे दिलमें शक पैदा हो जायगा कि इतने बड़े सेनापति होते हुए भी वे समझ नहीं पाए और

उन्होंने जल्दबाजी की। मार-काट होती थी तो होती रहती, पर वे यह कह सकते थे कि तलवारके सामने झुककर हम कुछ नही देंगे।

## : ४० :

### १५ जून १९४७

### (लिखित सदेश)

मुझे अफसोस है कि आज मुझे मौन जरा जल्दी लेना पडा, क्योकि कल तीसरे पहर कार्य-समितिकी सभा होनेवाली है। इसलिए अपना सदेश लिखकर देता हू। दुनियाके कई मुल्कोसे मेरे पास चिट्ठिया आई है, जिनमे मुझसे एक सवाल पूछा गया है, जिसका जवाब मै आज आप लोगोके मार्फत देना चाहता हू। वह प्रश्न सक्षेपमे यह है—'आपके देशके राजनैतिक दल अपने सियासी मकसदको प्राप्त करनेके लिए हिंसाका प्रयोग क्यो करते है? दिन-ब-दिन आपके यहा हिंसा बढती ही जा रही है। क्या आप इसका कारण बता सकते है? तीस सालतक आपने अग्रेजोके साथ अहिंसात्मक लडाई की, उसका यह नतीजा क्यो? क्या यह होते हुए, आप अभी भी जगतको अहिंसाका सदेश देंगे?'

इस सवालका जवाब देते हुए मुझे स्वीकार करना पडेगा कि मै तो दिवालिया हो गया हू, लेकिन अहिंसाका दिवाला कभी नही निकल सकता। मै पहले भी कह चुका हू कि जिस अहिंसाका हमने इस तीस सालमे उपयोग किया वह निर्बलकी अहिंसा ही रही है। मेरा यह उत्तर सतोषजनक है या नही, यह तो आप लोग ही कह सकते है, पर इतना तो मुझे स्वीकार करना पडेगा कि आजकी बदली हुई हालतमे कमजोरोकी अहिंसाके लिए जगह नही है। सच तो यह है कि हिंदुस्तानको आजतक वीरोकी अहिंसाके प्रयोग करनेका मौका ही नही मिला। अगर मै बराबर कहता रहू कि बहादुरोकी अहिंसाके समान दुनियामे दूसरी कोई सच्ची शक्ति नही है तो उससे

कोई खास फायदा नही हो सकता। इस सत्यको सावित करनेके लिए तो वार-वार और विस्तारसे जीवनमें उसे प्रकट करनेकी जरूरत है। जहातक मुझसे वन पडता है मैं तो अपने जीवनमे उसे प्रकट करनेकी कोशिश कर ही रहा हू, लेकिन शायद मेरी कावलियत कम हो, शायद मैं शेखचिल्ली हू, तो फिर मैं लोगोको अपने पीछे चलनेको क्यो कहू जव उसका कुछ नतीजा नही ? यह सवाल पूछनेके लायक है और मेरा उत्तर तो सीधा है। मैं किसीसे नही कहता कि वह मेरे पीछे चले। हर एकको अपनी अतरात्माकी आवाजका हुक्म मानना चाहिए। अतरात्माकी आवाज न सुन सके तो जैसा ठीक समझे वैसा करना उचित होगा, लेकिन किसी भी सूरतमे दूसरोकी नकल नही करनी चाहिए।

एक दूसरा महत्त्वपूर्ण प्रश्न भी मुझसे यह पूछा गया कि अगर आपकी पक्की राय है कि हिंदुस्तान गलत रास्तेपर जा रहा है तो फिर आप भूल करनेवालोके साथ वास्ता क्यो रखते है ? अपने बूते आप अपनी काश्त खुद क्यो नही कर लेते और इस वातका विश्वास क्यो नही रखते कि अगर आपका रास्ता ठीक है तो आपके पुराने साथी लौटकर आपके पास आ जायगे ? यह सवाल मुझे अच्छा लगता है। मैं उसके खिलाफ वहस नही छेडूगा। इतना ही कहूगा कि मेरी श्रद्धा तथा मेरा ईमान ऐसा ही है जैसा पहलेसे था, यानी मेरी समझमे उनकी ताकत कम नही पडी है। यह मुमकिन है कि मेरा तरीका गलत रहा हो। मुश्किल या उलझनमे पुराने नमूने या कठिनाई और उलझनके समय पुराने उदाहरण और अनुभव काममे आते है, लेकिन इन्सानको यत्र वनके काम नही चलाना है।

इसलिए मैं अपने सव सलाहकारोसे यह प्रार्थना करता हू कि वे मेरे साथ धीरज रखे और इससे भी ज्यादा यह कि वे मेरी इस श्रद्धामें हिस्सेदार हो कि इस दुखी जगतकी पीडा हटानेके लिए कठिन होने-पर भी सिवा अहिंसाके और कोई सीधा और साफ रास्ता नही है। मेरे-जैसे लाखो आदमी इस सत्यको भले इस जीवनमे सिद्ध न कर पाए, यह उनकी कमजोरी तथा नाकामयावी होगी, न कि अहिंसाकी।

एक और वात मैं आपसे कहना चाहता हू। मेरा मौन होते हुए भी

त्रावनकोरके कुछ मित्र आज मुझसे मिलने आए थे। उन्होने मुझे यकीन दिलाया कि जो भी मैंने उस रियासतके बारेमे कहा उसमे जरा भी अत्युक्ति नही है। यह भी बताया कि जो जल्से किए गए, उनपर लाठी चार्ज हुए और कल लगभग ३५ व्यक्ति गिरफ्तार भी किए गए। वहा आम रायका गला घोटा जा रहा है। जो भी हो, मुझे जरा भी शक नही कि आजाद हिंदुस्तानमे एक रियासतका अपनी आजादीका ऐलान करना एक बेहूदा बात है। इसका मतलब तो यह भी हो सकता है कि उन्होने हिंदुस्तानके करोडो आजाद व्यक्तियोपर लडाईका ऐलान कर दिया है। यह कतई नासमझीकी बात है खासकर तब जब कि महाराजा साहबके साथ उनकी जनताका सहारा नही है। जबतक अग्रेज सरकार उनके पीठके पीछे थी तबतक ऐसा करना मुमकिन था, लेकिन अब तो हालत बिलकुल बदल गई है।

## : ४१ :

### १६ जून १९४७

भाइयो और बहनो,

आज सबेरे जब मेरा मौन था तो श्रीपुरुषोत्तमदास टडन आए। मैंने आपको बताया था कि जब टडनजीने कहा कि हरेक स्त्री-पुरुषको शस्त्रधारी बनना चाहिए और स्वरक्षा करनी चाहिए तो यह सुनकर मुझे कैसा बुरा लगा था। एक पत्र-लेखकने मुझसे पूछा था कि गीता पढते रहनेपर भी इस तरह आपको बुरा कैसे लग सकता है ? उस पत्रसे यह भी पता चलता था कि टडनजी 'शठ प्रति शाठ्य' का सिद्धात मानते है। तब टडनजीसे मैंने पूछा कि आप क्या मानते है ? इसका खुलासा देते हुए टडनजीने बताया कि मैं 'शठ प्रति शाठ्य' के सिद्धातको तो नही मानता हू, लेकिन स्वरक्षाके लिए शस्त्रधारी बनना जरूरी है, ऐसा मै मानता हू। गीताने भी यही सिखाया है।

तब मैंने टडनजीसे कहा कि इतना तो आप उस भाईको लिख

दीजिए कि आप 'शठ प्रति शाठ्य' के माननेवाले नही है ताकि वे भ्रममे न रहे। और स्वरक्षाके लिए हिंसा करनेकी बात गीतामे कही है, यह मै नही मानता। मैने तो गीताका अलग ही अर्थ निकाला है। मेरी समझमे गीता ऐसा नही सिखाती है। गीतामे या दूसरे किसी संस्कृत ग्रथमे अगर ऐसी बात लिखी है तो मै उसे धर्मशास्त्र माननेको तैयार नही हू। महज संस्कृतमे कुछ लिख देनेसे कोई वाक्य शास्त्र-वाक्य नही बन जाता।

टडनजीने मुझसे कहा कि 'तूने तो उन बदरोंको मारनेके लिए भी लिखा था, जो बेहद पीडा पहुचाते है और खेती उजाड देते हैं।' लेकिन मै तो (गाधीजी) किसी भी प्राणीको और यहातक कि चीटीतकको भी मारना पसद नही करता। फिर भी खेती-बाडीका सवाल अलग है और मनुष्य-मनुष्यका अलग है।

तब टडनजीने कहा कि "शठ प्रति शाठ्य" यानी एक दातके बदलेमे दो दात निकालनेकी बात हम न करें और एक दातके बदलेमें एक दात तथा एक थप्पडके बदलेमे एक थप्पडकी बात भी नही करेंगे, परतु हाथमे शस्त्र नही लेंगे, अपनी शक्ति नही दिखायगे तो स्वरक्षा किस तरह होगी?

इसके बारेमे मेरा यह जवाब है कि स्वरक्षा जरूर की जाय, पर मेरी स्वरक्षा कैसे होगी? कोई मेरे पास आता है और कहता है कि बोल, राम-नाम लेता है या नही? नही लेगा तो यह तलवार देख! तब मै कहूगा, यद्यपि मै हरदम राम-नाम लेता हू, लेकिन तलवारके बलपर मै हरगिज न लूगा, चाहे मारा क्यो न जाऊ? और इस तरह स्वरक्षाके लिए मै मरूगा। वैसे कलमा पढनेमे मेरा कोई धर्म जानेवाला नही है। क्या हो गया अगर मै ठेठ अरबीमे बोलू कि अल्लाह एक है और उसका रसूल एक ही मुहम्मद पैगम्बर है। ऐसा बोलनेमें कोई पाप नही और इतने भरसे वे मुझे मुसलमान माननेको तैयार है तो मै अपने लिए फख्रकी बात समझूगा। लेकिन, जब तलवारके जोरसे कोई कलमा पढवाने आवेगा तब कभी भी कलमा न पढूगा। अपनी जान देकर मै स्वरक्षा करूगा। इस बहादुरीको सिद्ध करनेके लिए मै जिंदा रहना चाहता हू। इसके अलावा और तरीकेसे मै जीना नही चाहता।

मैंने कहा है कि भौगोलिक दृष्टिसे हमारी भूमिके टुकड़े भले हो जाय पर हमारे दिलोके टुकडे नही होने चाहिए, पर मेरी कौन सुने? एक दिन था जब गाधीको सब मानते थे, क्योकि गाधीने अग्रेजोके साथ लडनेका रास्ता बताया था। और वे अग्रेज भी कितने, केवल पौन लाख। पर उनके पास इतना सामान था, इतनी ताकत थी कि वकील एनी बेसेंट रोडेका जवाब गोलीसे दिया जाता था और हमारी हिंसा चल नही पाती थी। तब अहिंसासे काम बनता दीखता था, इसलिए उस समय गाधीकी पूछ थी। पर आज लोग कहते है कि गाधी हमे रास्ता नही बता सकता है, इस वास्ते स्वरक्षाके लिए हमें शस्त्र हाथमे लेने चाहिए! तो फिर यही कहना पडेगा कि हमने तीस वर्ष बेकार खोए जो अहिंसाकी लडाई लडी। हिंसाके सहारे तुरत ही उनको (अग्रेजोको) हटा देना चाहिए था।

लेकिन मेरे खयालमे हमने तीस वर्ष बेकार नही गवाये हैं। हमपर बेहद जुल्म ढाए गए फिर भी हम अहिंसक रहे, यह अच्छा ही किया। उन्होने अपने अस्त्र-शस्त्र सब हमारे खिलाफ बरसाए, पर हम दबे नही और इस तरह काग्रेसका पैगाम सारे हिंदुस्तानमें फैला, लेकिन वह सात लाख देहातोमे ठीक तरहसे नही फैला, क्योकि हमारी अहिंसा नामर्दकी अहिंसा थी। उस समय हमको किसीने एटम बम बनाना नही बताया था। अगर हम वह विद्या जानते होते तो उसीसे अग्रेजोको खत्म करनेकी सोचते, पर दूसरा कोई चारा नही था, इसलिए तब मेरी बात मानी गई और मेरा सिक्का जमा। पर लोग कहते है कि आज मेरा प्रभाव किसीपर नही है।

लेकिन आप लोग जो रोज यहा प्रार्थनामें आते है तो क्यो आते है? आपपर मेरा कौन-सा जोर है? आप प्रेमसे बधकर यहा आते है और शातिसे यहा बैठकर सुनते है। अगर इसी तरह मेरा सिक्का आज सिर्फ हिंदुओपर ही चले तो आप देखेंगे कि बहादुरोकी अहिंसासे दुनियामे हिंदुस्तानका सिर ऊचा उठ जायगा। मुसलमानोसे मै नही कहता। उन्होने तो मुझे अपना शत्रु मान रखा है, पर हिंदुओ तथा सिखोने मुझे शत्रु नही बनाया है। लेकिन हिंदू मेरी अहिंसाकी बहादुरीकी बात

मानें तो हमारे पास जो कुछ अस्त्र-शस्त्र होंगे, उन्हे मै दरियामें और बबईकी 'बेक बे' खाडीमें डाल देनेको कहूगा और बहादुरोको अहिंसाका अमल करना सिखा दूगा।

काग्रेस महासमितिमे तो मुट्ठीभर आदमी थे। उनमें भी कुछके दिलोमे सकुचित विचार है, यह मैने देखा। क्योकि मैंने दो-एक व्याख्यान सुने भी थे। लेकिन मुझे तो मुल्कभरकी बातका पता चलता है। मै उन करोडोका बना हुआ हू। वे कहते है कि अब मुसलमान कहा जायगा? आज जैसा मुसलमान कर सकता है उससे कही ज्यादा हम कर सकते है, क्योकि हम तादादमे ज्यादा है। अग्रेजोके जानेपर हम उनपर अपना राज जमायगे। हम अपनेको राज करनेका हकदार इसलिए मानते है कि हम जेल गए, हमने लाठिया खाई और हमने कोडे भी खाए। पर ऐसा कहना हमे शोभा नही देता। यह सारी हिंसा है। अगर आप अहिंसाकी बात सुनना नही चाहते और हिंसाकी बात ही सीखते है तो उसमे हमारी शर्म है। इस तरह 'जैसेको तैसा' का न्याय करेंगे तो समझ लीजिए कि दोनो धर्मोंका नाश है। इससे इस्लाम भी मरेगा और हिंदू-धर्म भी।

अगर हम जबरदस्तोकी अहिंसा अपनायगे तो उन्होने जो पाकिस्तान ले लिया है वह महज खिलौना रह जानेवाला है। अहिंसामे हम कुछ खोएगे नही।

मै तो पाकिस्तान और हिंदुस्तानको अलग मानता ही नही हू। मुझे पजाब जाना हो तो मै पासपोर्ट लेनेवाला नही हू। सिंध भी मै ऐसे ही चला जाऊगा और पैदल जाऊगा। कोई मुझे रोक नही सकेगा। भले ही वे मुझे दुश्मन कहें, पर जब मै जाऊगा तो किसी असेंबलीकी मेंबरी करने नहीं जाऊगा, सेवाके लिए जाऊगा। मेरी जिंदगीमे वह पहला मौका न होगा। नोआखालीमे चला ही गया था और अब भी कोई न समझे कि वह इस्लामिस्तानमे होनेको है, इसलिए मैं वहा नही जाऊगा। मेरा दिल वही पडा है और वहा जाकर मै हिंदुओसे कहूगा कि अगर आप सच्चे हिंदू है तो—चाहे कितनी ही मार-काट करनेवाले आपके चारो ओर क्यो न फिरते हो—आप किसीका डर न मानें।

लेकिन हम बहादुरोकी अहिंसा तभी रख पायगे जब हम शराब-खोरी और चोरी-जारीको छोडेंगे । अगर लगातार हम व्यसन-व्यभिचार-मे पडे रहे तो हिंद आजाद होकर भी उसकी आजादी व्यर्थ जानेवाली है ।

बहादुरी तो मुझमे तब आयगी जब मै मारा जाऊ। तो भी मारनेवालेके भलेके लिए ईश्वरसे प्रार्थना करता रहू। ईश्वरका नाम भी मै केवल मुहसे न लूगा; पर उसे अपने हृदयमे जिंदा बैठा हुआ देखूगा। मदिर-मस्जिदमे उसे ढूढने नही जाऊगा। अगर सब हिंदू ऐसे हो जाय तो बहुत काफी है। वे ऐसी बहादुरीकी अहिंसा न भी सीखे और केवल थोडेसे सिख ही बहादुरोकी अहिंसा अपना लें और खालसाका एक-एक व्यक्ति सवा लाखके बराबर सच्चा बहादुर बने तो हिंदुस्तानका काम बन जाय।

पर आज तो बादशाह खान, जो इतने बहादुर रहे है, बहादुर नही बन सकते । वर्षोसे यह पठानोको अहिंसा सिखाते आए है—पर आज वह कहते है कि मै नही कह सकता कि मै हिंदुस्तानमें हू । अगर कहूगा तो बिहारसे दस गुना काड वही हो जायगा। लेकिन वे क्या करे ? अपने पठान भाइयोको कहातक साहस दिलावें ? अहिंसा कोई हल्दी-मिर्च तो है नही जो बाजारसे मोल आ जायगी । अगर वे सच्ची अहिंसा दिखा पाते तो अकेला सीमाप्रात समूचे हिंदुस्तानको बचा सकता था।

मेरे पास नागपुर तथा बबईसे दो पत्र आए है, जो सही हो तो दु खकी बात है। क्या आप अपने राष्ट्रीय मुसलमान भाइयोको, जिन्होने आपके साथ इतनी यातनाए झेली, ऐसा कह देंगे कि आप हिंदुस्तानके नही है ? मै तो कहूगा कि लीगी मुसलमानसे भी हम न कहे कि आप जाइए! ऐसा कहना अहिंसाका न्याय नही है। फिर तो जिन्नाकी दो राष्ट्रकी बात ठीक ही कहलाएगी और दुनिया हमपर थूकेगी। इसका मतलब तो यह है कि अभी हिंदुस्तान पूरा आजाद बना नही है और हम उसे हाथसे खो देनेका सामान पैदा कर रहे है।

मै नही कहता कि मुसलमान हमारे साथ तकब्बरी (?) कर सकते है। जो कुछ अग्रेजके राजमे था वह सब उन्हे नही दिया जा सकता। पृथक् निर्वाचन वे मागे तो हम नही देगे । पृथक् निर्वाचन तो अग्रेजोकी जबरन

जमाई हुई जहरी जड थी। पर हम उनके साथ न्याय तो करेंगे ही। उनके बच्चोको तालीमकी सहूलियत उतनी ही देंगे जितनी अपने बच्चोको, बल्कि वे गरीब हो तो वे ज्यादा सहूलियतके हकदार होंगे और अगर हम ऐसा इन्साफ करेंगे तो हम हिंदुस्तानके लोग बहादुर साबित होंगे।

## : ४२ :

### १७ जून १९४७

भाइयो और बहनो,

आजकल जो भजन गाये जाते है उन्हे पसद करनेमें मेरा हाथ नही होता। पर ठीक वही भजन आता है जो मौकेका होता है। आजके भजन[1]में कहा है कि जब साधुकी सगत मिल जाती है तब हम परायापन भूल जाते है और तब कोई वैरी या बेगाना नही होता।

आजकल हमें इसी बातकी सबसे ज्यादा जरूरत है। लेकिन जो मेरे पास आता है, यही कहता है—'तुम कितना भी चीखो, यह अलगाव तो रहने ही वाला है। दोनो ही अपने-अपने दायरेको कसकर मजबूत बनाये बिना नही मानेंगे।' यह बात मुझे अच्छी नही लगती, फिर भी मुझे उससे परेशानी नही है। मै तो कहता ही रहूगा कि जो हुआ वह भले ही हो गया, लेकिन उसपर मोहर लगाकर हमे उसे पक्का नही करना है।

आप जानते है कि कल जब हमारी प्रार्थना पूरी हुई तब एक भाईने प्रश्न किया था। मैंने उसे लिखकर भेजनेको कहा था। उसने लिखा है—'अगर पाकिस्तान नही टूट जाता है तो मै और मेरी

---

[1] बिसर गई सब तात पराई,
जब ते साधु संगत पाई।
नहि कोई बैरी नहि बेगाना,
सकल संग हमरी बन आई—

धर्मपत्नी—दोनो फाका करके मर जाएगे। और फाका भी यहा[1] पडे-पडे करेगे।'

फाका करना है तो पहले मैं करू। हर चीजका शास्त्र होता है, यानी उसके करनेके कानून अथवा पद्धति होती है। चर्खे-जैसी छोटी चीजका भी शास्त्र होता है। पहिले हम उसको नही जानते थे, लेकिन अब उसका शास्त्र बन गया है। तब हमें चर्खेकी शक्तिका पता चला है। मैं तो यहातक कहता हू कि सारी दुनिया उसके द्वारा आजाद होगी। 'एटम बम'से दुनिया आजाद नही होगी। दुनियामें शास्त्र दो प्रकारके है—एक सात्त्विक और दूसरा राजसी। यानी एक धार्मिक और दूसरा अधार्मिक। 'एटम बम' का शास्त्र धर्मवाला नही हो सकता। वह ईश्वरको नही मानता, बल्कि वह खुद ही ईश्वर बन जाता है।

इसी तरह फाकेका भी शास्त्र होता है। बगैर तरीकेके फाका करनेमे धर्म नही होता। अगर कोई कहे कि जबतक ईश्वर मेरे सामने नही आयगा तबतक मैं भूखो मरूगा, तो वह मर भले ही जाय, पर ईश्वर उसे नही दिखेगा।

सार्वजनिक अनशनका भी एक शास्त्र है, और उसको जाननेवाला मैं हू। यद्यपि मैं भी उसे पूरा नही जानता, पर सबसे ज्यादा मैं ही उसे जानता हू। गोया 'ऊजड देशमे अरड ही पेड', वाली मेरी स्थिति है। मैं इस अनशनको धार्मिक अनशन नही मान सकता। इसका मेरे दिल-पर कुछ असर होनेवाला नही है। दुनियाकी भी इसके साथ हमदर्दी नही हो सकती। इसलिए मैं तो दोनोसे कहूगा कि आप फाका छोड दें और अपने घर जाय।

लेकिन घर जाकर क्या करें? चुप बैठ जाय? नही, चुप बैठने-की बात नही है। हमें अपने मनमे यह बात आने ही नही देनी है कि हम अलग-अलग हो गए हैं। हम अपने दिलमे पाकिस्तान मानें ही नही, किसीको अपना वैरी न समझें, किसीको बेगाना या पराया न मानें।

---

[1] वाल्मीकि-मदिरमें।

और यह सब साधु-सगतमे हो सकेगा, यानी हम सद्‌ग्रथ पढे, बुरे विचार छोडे। ऐसा तभी हो सकेगा जब हम अपने चित्तको कुविचार-से खाली करेंगे। चित्तके कुविचार आसानीसे नही टल सकते। रामका नाम लेनेसे ही वह खाली हो सकता है।

लेकिन आजकल हमारा चित्त तो किस्म-किस्मके उपभोगोको सोचता रहता है। हम रामको नही याद करेंगे, हम सिगारको याद करेंगे—और सिगारके लिए मै क्या कहू। लेकिन हालत यही है कि हमारा ध्यान गलत बातोपर जाता है। लोग जोर-जोरसे कहे ही जाते है कि हम मुसलमानोकी खबर लेगे। और इस तरह हम खुद पाकिस्तानको पक्का बनानेकी पैरवी करते है।

पाकिस्तान जिन्नाने नही बनाया है। हमें स्वप्नमें भी खयाल नही था कि जिन्ना पाकिस्तान बना पायगा। पर वह बहादुर आदमी है। अग्रेजोकी मार्फत उसने पाकिस्तान प्राप्त कर ही लिया। लेकिन हम अगर अपने दिलमे उसे न माने और यह कहे कि मुसलमानोको अब हम देख लेगे तो उससे वह पाकिस्तान मिट नही जानेवाला है।

उसका मतलब यह नही कि मै मुसलमानोकी खुशामद करनेके लिए आपसे कहता हू। हम अपने घरमें छोटे भाईकी खुशामद नही करते। उसके प्रति अपना जो धर्म है उसका पालन करते है और उसका विश्वास कमा लेते है।

आपको अखबारसे पता चला होगा कि आज मै वाइसरायके पास गया था। वाइसरायने मुझसे पूछा कि "तूने अखबार देखा?" मैने कहा, "मै अखबार कम देख पाता हू।" तब उन्होने कहा, "हमने आज एक अच्छा काम कर लिया है।"

विभाजनके प्रश्नपर हिंदुओकी और मुसलमानोकी अलग-अलग रिपोर्टें वाइसरायके पास पहुची और वाइसरायने दोनो दलोको मिलकर एक रिपोर्ट बनानेके लिए राजी कर लिया।

मै तो कहता हू कि जब भाई-भाईका बटवारा होना तय हो जाय तो फिर वह रूठ-खीजकर नही हो सकता। ऐसा नही हो सकता कि घरमे जब एक कुर्सी है तो उसकी टाग तोडकर या टुकडे करके उसे बाट लें।

अगर हमारा एक-चौथाई और तीन-चौथाई वटवारा होना है तो सारे आकडे समझदारीसे निकालने होगे ।

इसलिए एक समिति वनाकर यह जो अच्छा काम किया गया है, उसका सिलसिला वरावर चलते रहना चाहिए । केवल मुस्करा देने-भरसे अच्छाई सावित नही हो जाती । अगर यह जवानी मिठास ही नही, पर सचमुच मिल-जुलकर काम किया जाना है तव तो मै कहूगा कि भले पाकिस्तान आया । और तव वाइसरायको तकलीफ देनेकी वात ही नही रहेगी । वाइसरायको अपना दफ्तर वद करना होगा । तव हम सरकारी अफसरोसे, जो इस कामको जानते है, कहेगे कि आप इकट्ठे बैठकर दोनो दलोको सतोप हो वैसी फेहरिस्त वना दे । जहा हिसावसे काम वने, हिसावसे वटवारा कर दीजिए, जहा हिसावसे वटवारा ठीक न वैठे वहा पर्ची डालकर फैसला कीजिए, पर हम इस वातपर लडनेवाले नही है । मेलसे ही फैसला करेगे । वाइसरायको भी वीचमे नही डालेगे ।

आखिरी वात यह है कि आज फिर मेरे पास त्रावनकोरके दीवान सर रामस्वामीका लवा-चौडा तार आया है, जिसमे मुझे समझानेकी कोशिश की गई है कि उनके साथ वहाके ईसाई आदि भी है । पर ऐसे तारसे मुझे वुरा लगता है । कडवी चीजको मीठी वनानेसे वह मीठी नही वन जाती । मूलसे ही इनकी वात वुरी है । 'आओ, हम तो आजाद है ।' 'आप किससे आजाद है ?' रैयतसे ? लोग इस तरह भारतसे आजाद होकर करेगे क्या ? आप इस तरह घुमा-फिरा कर वात न करे । सीधी वात करे कि हिंदुस्तानके साथ हम है, तव ही आप अपने राजाके प्रति सच्चे वफादार है, नही तो वेवफा है ।

## : ४३ :

१८ जून १९४७

भाइयो और वहनो,

आप लोगोको कल मै वता चुका हू कि यहा एक भाई और

उनकी पत्नी वाल्मीकि-मंदिरके बाहर रास्तेपर उपवास कर रहे हैं। उन्होंने आज विनयने भरा पत्र मेरे पास भेजा है। पर मुझे खेद है कि उसमें समझदारी नहीं है। वे छोटे हैं, मैं बूढ़ा हूं। अगर मैं कहूं कि आत्माकी बात मैं कुछ जानता हूं तो उन्हें वह मान लेनी चाहिए। वे कहते हैं कि आपकी बात हमें लगती तो ठीक है पर हमारी अन्तरात्मा नहीं मानती, इसलिए हम उपवास छोड़नेमें मजबूर हैं।

आप लोगोंने तिलक महाराजकी प्रसिद्ध पुस्तक 'गीता-रहस्य' का नाम सुना होगा। उसमें इतना ज्ञान भरा है कि उसके अनेक पारायण करने चाहिए। मैंने वह यरवदा जेलमें पढ़ी थी। यह बात नहीं है कि मैं उनकी सभी बातोंमें सहमत नहीं हूं, पर इसमें कोई संदेह नहीं कि तिलक महाराज बहुत बड़े विद्वान थे और उन्होंने संस्कृत साहित्यका बहुत गहरा अध्ययन किया था। उनकी वह गीता पढ़े मुझे बहुत समय हो गया, इसलिए उनके ठीक शब्द मुझे याद नहीं हैं, पर उनके लिखनेका भावार्थ मैं बताऊंगा। वह बात मुझे बहुत ठीक लगती है।

उन्होंने एक जगह कहा है कि अंग्रेजी भाषामें अंतरात्माके लिए 'कान्शस' शब्द अच्छा है पर, जब यह कहा जाता है कि हम अपने 'कान्शसके मुताबिक चलते हैं तब इसका सही अर्थ यह नहीं होता कि हम अन्तरात्माके कहनेपर चलते हैं। हमारे वैदिक धर्मके मुताबिक 'कान्शस' सभीमें (जड़-चेतनमें) होता है। पर बहुतोंका कान्शंस सोया हुआ रहता है, अर्थात् उनकी अंतरात्मा मूढ़ अवस्थामें होती है। तो उस अवस्थामें उसे 'कान्शस' कैसे कहा जाय? हमारे धर्मके अनुसार मनुष्यकी अन्तरात्मा तब जाग्रत होती है जब यम-नियमादिका पालन और दूसरी भी बहुत-सी चेष्टा आदि करे। तिलक महाराजकी इस बातको मैंने पचा लिया है। शास्त्रकी जो चीज हम पचा सकें वही सार्थक है। जैसे वही आहार हमारे लिए सार्थक बनता है जिसका हम रक्त बनाएं। तो तिलक महाराजकी इस बातको मैंने पचा लिया है, जिसके जरिए कौन-सी आवाज अंतरात्माकी है और कौन-सी नहीं,

उसकी परख मै कर लेता हू । कोई चोर यह कह कि मेरी अतरात्माने मुझे कहा कि अमुक लडकेको मार डाल, उसके हाथ-पैर काट ले और उसके जेवर लूट ले तो वह अतरात्माकी आवाज नही, जडता है । आज-कल तो हम भी जड बने है न ? हमे वही सूझ रहा है कि हम मासूम बच्चोको मार डालते है। पर वह अतरात्माकी आवाज नही होती ।

दूसरी बात यह कि मै उपवास सिखानेवाला आचार्य हू । कुछ जैन लोग किसी चीजको न पानेतकके लिए अनशन कर लेते है। उन्हे समझाकर मैने उनका अनशन तुडवाया है। स्व० धर्मानद कोसबीजीकी बात भी मैने बताई थी कि उन-जैसे विद्वानतकने मेरे कहनेपर अनशन छोड दिया था और काका साहब कालेलकर जो यहा आए है, वे कहते है कि कोसबीजीने अपने स्वर्गवासके पहले कहा था कि गाधीने अनशन छोडनेकी बात ठीक ही कही थी। तो जब मै, अनशनका आचार्य, कह रहा हू कि वे पति-पत्नी अनशन छोड दे तो उन्हे छोड देना चाहिए। तीन दिनका अनशन बहुत हो गया है। अब वे मान जाय।

आपने अखबारमे देखा होगा कि मै कल जिन्ना साहबसे मिला था। यह बात मैने आपको नही बताई थी, क्योकि पहलेसे मिलनेकी बात थी ही नही। जब मै वहा था तब वाइसरायने मुझसे कहा कि जिन्ना साहब यहा आ गये है, उनसे मिल लो। तो मै इन्कार कैसे करता ? मै वह आदमी रहा जो जिन्नाके घर भी चला जाता हू। हम मिले और यह ठहरा कि बादशाह खान भी मिले तो अच्छा । और कल शामको तो हमे फिर वाइसरायके पास जाना था । पर बादशाह खान तो मिस्कीन आदमी ठहरे। वे गरीबोकी-सी मोटरमे बैठकर देवबद चल दिए । इसलिए वहासे लौटकर आनेमे उन्हे तीन घटेके बजाय पाच घटे लग गए और हम कल शामको वाइसरायके पास नही जा सके।

आज वाइसराय चले गए, पर उनके दिलमे था कि हम मिले तो अच्छा। सो लार्ड इज्मेके पास हम साढे चार बजे गए । इसका नतीजा यह हुआ कि बादशाह खान जिन्ना साहबके घरपर उनसे मिलने गए है और अभी वह वहीपर है ।

इसपर भी हम बडी लबी-चौडी आशाए न बना ले कि चलो, अब सब भला हो गया। पर पाकिस्तानका जो जख्म हो गया है उसके और भी गहरा हो जानेसे रुकनेकी आशा तो हम कर सकते हैं। हमारा काम तो प्रयत्न करनेका है, इसलिए बादशाह खान कायदे आजमके मकानपर चले गए हैं। लेकिन फल देना ईश्वरके हाथकी बात है। हम प्रार्थना करें कि अच्छा परिणाम आ जाय।

और वह अच्छा परिणाम कौन-सा हो सकता है? सीमाप्रातमें जो सब पठान हैं वे एक हो जाय। पठान तलवारबाज होता है। कोई पठान ऐसा नही होता जो तलवार और बदूक चलाना न जानता हो। पीढी-दर-पीढी पठान खूनका बदला लेता रहा है। पर बादशाह खान-ने देखा कि हथियारोकी बहादुरीसे भी ज्यादा बुलदी, मरकर स्वरक्षा करनेमे है। बादशाह खानका खयाल था कि पठान लोग यह ऊची बहादुरी अपना ले और एक होकर सबकी खिदमत करे। पर यह ख्वाब पूरा होनेसे पहले वहा यह जनमतसग्रहका झगडा फैल गया।

कुछ कहेगे कि हम पाकिस्तानके साथ रहेंगे, कोई कहेंगे कि काग्रेसके साथ रहेंगे। और काग्रेस तो आज बदनाम है कि वह हिंदुओकी हो गई। इस बातपर पठान अलग-अलग होगे और ऐसी यादवस्थली मचेगी कि जिसका दबाना दुश्वार होगा। वे आपसमे कट मरेंगे। बादशाह खान चाहते है कि किसी तरहसे जनमतसग्रहकी बला-से छूटकर पठान आजाद रहें। वे खुद अपने कानून बनावें और एक रहे। फिर चाहे वे पाकिस्तानमे रहे चाहे हिंदुस्तानमे मिले। वे कहते है कि हमारे पास पैसा नही है। हम तो मिस्कीन आदमी है। हम अपना स्वतन्त्र राष्ट्र बनाना नही चाहते, पर किसमे मिलेंगे इसके बारेमें आपसी झगडा मिट जानेके बाद ही हम निश्चय करेंगे।

फिर जो हिंदू भागकर हरद्वार आए हैं यह भी डा० खान साहब-को बहुत चुभता है। इसलिए बादशाह खान सीमाप्रातके हिंदुओको वापस लौटाना चाहते है। सीमाप्रातमें भी अभी बहुतसे हिंदू है जो गरीब है और कही जा नही सकते। उन सबको तसल्ली तभी मिल सकती है जब जनमतसग्रहका यह झगडा खत्म हो।" इसलिए बादशाह

खान कायदे आजमके पास मिलनेके लिए चले गए है। पता नही वहासे क्या करके लाते है। हम इबादत करे कि अच्छा ही हो।

आखिरी बात यह कि आज फिर ख्वाजा अब्दुल मजीद साहब आए थे। कहते है कि अब तो पाकिस्तान बन गया है, तब राष्ट्रीय मुसलमानो-की उपेक्षा नही होनी चाहिए।

ख्वाजा साहब अपनेको अच्छा मुसलमान होनेकी वजहसे वैसा ही अच्छा हिंदू बताते है जैसा कि मै अपनेको अच्छा हिंदू होनेकी वजहसे अच्छा मुसलमान बताता हू। गोया हरेक अच्छा धार्मिक आदमी दूसरे सभी धर्मवालोके बीच पूरी इज्जत पानेका हकदार है। और उन्होने यह कहा कि अब पृथक् निर्वाचन खत्म हो जाने चाहिए। हम दुनियाकी नजरोमे हिंदुस्तान यूनियनमे एक बनकर रहना चाहते है। धर्म अलग हो, पर कानूनकी दृष्टिमे सभी हिंदुस्तानमे रहना चाहते है और यूनियनके प्रति जो वफादार रहता है उसे उसकी योग्यताके आधारपर सभी हक होने चाहिए जो हरेक हिंदुस्तानीको हो।

मैने उनसे कहा कि आपको वे सब हक मिलेगे ही। अगर दूसरे नही तो हम दो तो है ही, जो एक दूसरेको पूरा धार्मिक और अच्छा मानते है। धर्मके कारण किसीका हक नही छीना जायगा, यह हम देखेंगे। पर यह भी हमे देखना है कि धर्मके नामसे ज्यादा रिआयत देना भी अच्छा नही होगा।

एक बार जिन्ना साहबने ऐसा ही किया था। कभी वे १४ शर्तें पेश करते थे, उससे पहले उनकी ११ शर्ते थी और फिर १४ हुईं। फिर २१ हुईं और फिर एक पाकिस्तानवाली शर्त हुई। लेकिन अब कोई ऐसा नही कर सकेगा। हिंदुस्तान बहुत बडा मुल्क है। उसमे सब आजादीसे रहें। जो हिंदुस्तानमे वफादारीसे रहना चाहे उन सबको हिंदुस्तानमे स्थान है।

## : ४४ :

### १९ जून १९४७

भाइयो और बहनो,

कल प्रार्थना-सभाकी समाप्तिके बाद एक सज्जनने मुझसे एक प्रश्न किया था। मैंने उनसे लिखकर देनेको कहा। उन्होंने लिखकर भेजा। लेकिन वह पर्ची जेबमें[1] पडी रहनेके कारण कपडा धोनेके समय धुल गई और जब वह मेरे पास पहुची तब वह पढी नही जा सकती थी। यह मेरे लिए शरमकी बात है, पर प्रश्नकर्त्ता यहा मौजूद नही है, इसलिए मैं क्षमा किससे मागू?

तीन-चार दिनमे पाकिस्तानके विरोधमें जो दम्पत्ति उपवास कर रहे थे, उनके बारेमे कल जब मैंने यहा कहा था, उसे सुनकर पहले तो उन लोगोको बुरा लगा कि मै अपनेको उपवासके शास्त्रका आचार्य कैसे कहता हू। इतना घमडी क्यो बनता हू? लेकिन मै रातको नौ बजे उनसे कुछ देरके लिए मिला और मैंने उन्हे समझाया कि जो आदमी पाच फुट ऊचा है वह अगर कहे कि मै पाच फुटका हू तो इसमें घमडकी क्या बात है? उनका वह क्षणिक जोश था। फिर वे समझ गए कि उपवास करनेसे यह अच्छा है कि हिंदुस्तानके टुकडे हो गए यह बात हम दिलमें माने ही नही। उन्होंने दूध-फल लेकर अपना उपवास छोड दिया। इसके लिए मै उन्हे मुबारकबाद देता हू। लेकिन उन्होंने मुझसे पूछा, "यह तो बताइए कि हम अनर्थका साथ कैसे दे?" तब मैंने कहा—"अनर्थसे जो लाभ मिल सकता है, उसे छोड दें।" हम किसीके साथ जबर्दस्ती न करें। अनर्थके कामका कोई लाभ न उठावें, यही अहिंसक युद्धका राजमार्ग है। इसीका नाम असहयोग है।

यह सहज प्रश्न है कि बादशाह खान कल जब जिन्ना साहबके पास गए थे तब मैंने कहा था कि हम प््रार्थना करें, तो उस प्रार्थनाका फल

---

[1] जिसे वह रखनेको मिली यहा उसकी जेबसे मतलब है, क्योंकि गांधीजी तो कपडे पहनते नहीं थे।

हमें क्या मिला ? इस सिलसिलेमें अखबारोमें जिन्ना साहबने जो कुछ निकाला है उससे ज्यादा मैं नही बता सकता। उन्होने जो कहा है कि दोनोकी बाते मुहब्बतसे हुईं, यह अच्छा है। मुहब्बतसे बात न करते तो क्या लडने लगते ? पर नतीजा क्या निकला ? कहते है कि नतीजा तो तब निकलेगा जब बादशाह खान सरहदसे समाचार भेजेंगे। यह तो कोई नतीजा नही हुआ। लेकिन कल जो प्रार्थना हमने की उसका नतीजा आज मिल जाय, ऐसा थोडा होता है ? ऐसा जो कहे, वह भगवानको जानता ही नही। ईश्वर तो निराकार और निरजन है। उसकी प्रार्थनाका महत्व मैं आज थोडा-सा आपको बताना चाहता हू।

ईश्वरकी प्रार्थनाका फल नही मागा जा सकता और न उसकी प्रार्थना छोडी ही जा सकती है। खाने-पीनेका उपवास भले ही हम करें—समय-समयपर करना भी चाहिए—पर प्रार्थनाका फाका नही हो सकता। हमें आखिरी सासतक रामको भजना चाहिए। आजके भजनमें कबीरजीने कहा है न, 'साहब मिले सबूरीमे।' वह धैर्य, वह सबूरी हमे नाम-स्मरणसे ही मिल सकती है। शरीरकी खुराक जैसे अन्न है वैसे शरीरमें पडी आत्माकी खुराक राम-नाम है। गायत्री-पाठ, सध्या-वदन, नमाज आदिका समय होता है। राम-नामके लिए तो समय ही नही होता। जिसके सासके साथ राम-नामका जाप चले उसकी खैर। ऐसा करनेवाला आदमी १२५ वर्ष जिंदा रह सकता है। अगर मैं १२५ वर्षसे पहले मर जाऊ तो आप कह सकते है कि मैं उस स्थितितक नही पहुच पाया हू, जिसे मैंने बताया है। मैं चाहता हू और कोशिशमें हू कि दिन-रात सासके साथ राम-राम कहता रहू।

(इसके बाद गाधीजीने हनुमानजी और सीताजीवाली वह कथा सुनाई जिसमें हनुमानजीने सीताजीकी दी हुई मालाके मोतीमे राम-को खोजनेके लिए एक-एक करके उन्हे चबाकर फेंक दिया था और कारण पूछनेपर हनुमानजीने अपना हृदय चीरकर राम दिखा दिया था।)

इस कथाको याद करके अगर मैं हनुमान-जैसा भी बन जाऊं तो फिर पूछना ही क्या ? तो फिर मेरा भी शरीर पहाड-जैसा हो ? शरीर-

की बात छोडो, आत्मा तो उससे भी ऊचे पहाडके समान दृढ होनी चाहिए। यह सब कहना आसान है, करना कठिन है। मैंने आपके सामने वह आदर्श रख दिया। अगर आज उसतक हम न पहुच सकें तो उसकी ओर कुछ-न-कुछ प्रगति तो करें। तो हम ऐसा न कहें कि 'बादशाह खान गए और कुछ हाथ नही आया तो प्रार्थना क्यो करें ?' हम फल न देखें। पृथ्वीमें कोई कार्य ऐसा नहीं होता, जिसका फल न हो। और प्रार्थना तो सबसे उत्तम कार्य है। इसलिए अगर हम मदिर जाते है, माला फेरते है, जो थोडा-सा ढोग भी होता है, उसके पीछे भी अतमें अच्छाई आनवाली है, यह विश्वास रखें।

मैं परसो हरिद्वार जाऊगा। मेरे साथ जवाहरलाल जायगे। वे तो युक्तप्रातमें अद्वितीय है। आज तो वे सारे हिंदुस्तानमें भी अद्वितीय हो रहे है। हमारे सामने पेचीदा प्रश्न है। वहा हजारो आश्रित पडे है, उनके लिए क्या करें ? बेकारमें किसीको खाना देनेके मैं विरुद्ध हू। हम जो खाना खाते है, उसका बदला हमें चुकाना ही चाहिए। ईश्वरका यह कडा नियम है कि जो काम करे वह खाना खाय। बिना काम किए कोई न खाय। इसलिए उन आश्रितोको भी मैं कहूगा कि उन्हे काम करना जरूरी है। वैसे तो जितनी शीघ्रतासे हो सके, उन्हे घर लौट जाना चाहिए।

परतु जो वाकये वहा हालमें हो गए है उन्हे देखते हुए मैं उन्हे मृत्युके मुहमें जानेके लिए नही कह सकता।

लेकिन मुस्लिम लीगको मैं कहूगा कि अपने पाकिस्तानमें उन सभी लोगोको सजा देनेका इतजाम करें, जिन्होने गुनाह किया है। मैं यह नही कहता कि गालीके बदले गाली दी जाय और पिटाईके बदलेमें पीटा जाय। लेकिन हकूमतका फर्ज है कि अपने यहाके सब लोगोकी, चाहे वे विधर्मी ही हो, रक्षा करे। ऐसा तो वे कहते है कि आओ। पर वे जाय और फिर मार खानेकी बात हो तो वे कैसे लौटें ? इसलिए वहाकी हकूमतको ऐलान करना चाहिए कि वह गुनाह करनेवालोको सजा देगी और जनताकी रक्षाका पक्का बदोवस्त करेगी। यह ऐलान कहनेभरका न हो। ऐसा हो जिसपर हम भरोसा कर

सके। वे कहे कि पहले आपको खाना खिलायगे फिर हम खुद खायगे। और विधर्मीको भी वे सभी हक है जो हमारे यहा मुसलमानको है। तो फिर मै एक भी दिन शरणार्थियोको हरिद्वारमें रुके रहने नही दूगा।

जब वाइसरायने उनसे पूछा कि यह तो बताओ 'आप अलग जो हो रहे है, तो भाईकी तरह या दुश्मनकी तरह ?' तब उनके चारो प्रतिनिधियोने कहा था, 'हम भाई-भाईकी तरह ही अलग होनेवाले है।' अगर यह बात सिर्फ वाइसरायके कमरेतक ही सीमित रह जायगी, इसका अमल रोजके कामसे न होगा, तो उन चारोने और वाइसराय-ने भी फरेब किया है, ऐसा कहना होगा। इसलिए वे आज ही अपना भाईपना दिखलावे। चार महीनेके बादतक रुके रहनेकी क्या जरूरत।

(बादशाह खानकी बात बताते हुए गांधीजीने कहा—) आज उनके प्रांतमे यह बात पैदा कर दी गई है कि दो बक्सोमेंसे एक बक्सेमें पर्ची डालो। चाहे पाकिस्तानवालेमें, चाहे हिंदुस्तानवालेमें। और हिंदुस्तानमें उन्हे बिहारवाला हिंदूराज बताया जाता है। इस आबोहवामे कोई मुसलमान नही कहेगा कि वह मुसलमानका साथ छोडकर हिंदूके साथ जायगा। आज उनमें यह कहनेका साहस नही है कि वह यह कहे कि बदमाश मुसलमानसे शरीफ हिंदूकी सोहबत अच्छी है।

इस हालतमे बादशाह खान कहते है कि वे अपने सूबेको सबसे पहले स्वतन्त्र सूबा बनाना चाहते है। यानी हिंदुस्तान या पाकिस्तानसे न मिलकर पठान-पठान आपसमें मिल जाय और अपना कानून और अपना विधान बना लें।

कांग्रेसको पठानोसे यह कह देना चाहिए कि वे अपना कानून बनाएं। आपके बनाए विधानमें हम जरा-सा भी दखल नही देंगे। हमे उतना दखल तो रहेगा जितना कि केंद्रका बधन माननेवाले दूसरे प्रांतोमे हो सकता है। बाकी अदरूनी सारा काम आप अपनी शरीयतके मुताबिक चलावें।

इसी तरह लीग भी कह दे कि उसके जो दो-चार सूबे होगे वे अपने अदरूनी इतजाममें आजाद रहेंगे और सिर्फ अमुक-अमुक बात केंद्र-

की जायेगी। गोया हमारे यहां दो केन्द्र अलग-अलग बनेंगे और हरेक सूबा अपने लिए आजाद होगा। तो फिर जन-मतसंग्रहकी जरूरत न रहेगी। और मैं भी पठानोंसे कहूंगा कि चूंकि आप लोग पाकिस्तानके पास हैं, इसलिए उन्हींके साथ रहें। आज मैं उन्हें यह नहीं कह सकता, क्योंकि मैं नहीं जानता कि पाकिस्तान कैसे चलनेवाला है।

ऐसी सूरतमें सरहदवाले जन-मत लेना चाहें तो लें, पर फिर वह पाकिस्तानके मुकाबले हिंदुस्तानके लिए नहीं, पर पाकिस्तानके मुकाबलेमें पठानिस्तानके लिए ही लिया जाय। इतनी सीधी-सी बात ही मैं उनसे कहना चाहता हूं।

## : ४५ :

### २० जून १९४७

भाइयो और बहनो,

कल प्रातःकाल मैं हरिद्वार जाऊंगा और कल ही लौटनेकी उम्मीद है, इसलिए मोटरमें ही शाम हो जायगी। यहां प्रार्थनामें मैं न रहूंगा। आप आना चाहें और प्रार्थना करना चाहें तो कर सकेंगे। मुझे वहां लोगोंको आश्वासन देनेके लिए जाना है। ज्यादा तो मैं क्या कर सकूंगा? पर धर्म समझकर जाता हूं।

आज इस छोटी लड़की[1]के पास किसीने एक पत्र भेजा दिया था कि तू अगर कुरानकी आयत बोलेगी तो तुझको मैं मार डालूंगा[2]।

---

[1] कु० मनु गांधी।

[2] पता चलानेपर मालूम हुआ कि आज सवेरे कु० मनु गांधीके पास डाकसे एक पत्र पहुंचा कि शामको प्रार्थनामें तुम कुरानका पाठ मत किया करो। करोगी तो गोलीसे उड़ा दी जाओगी। गांधीजीने और दूसरोंने इसे एक मजाक समझा और बात टाल दी। पर दोपहरमें कु० मनु गांधी-

इस तरहसे किसीको धमकाना हमारी सभ्यताके अनुकूल नही है। और फिर मनु तो छोटी-सी लडकी है। अगर वह कुरान बोलती है तो मेरे सिखानेपर बोलती है। मेरा गला ऐसा नही चलता कि मै मधुरता-से वह गा सकू। अगर यह विनोद ही है तो भी छोटी लडकीसे ऐसा मजाक नही करना चाहिए।

और कुरानकी इस आयतके बारेमे तो मै काफी समझा चुका हू। उसमें कोई ऐसी बात नही है जो खटकनेवाली हो। उसका अर्थ मै बता चुका हू। जिन मुसलमान मित्रोके साथ मै उठता-बैठता हू वे कहते है कि सच्चे दिलसे जो यह प्रार्थना करे तो उसे शैतान नही सता सकता। इसी तरह राम-नामकी महिमा गाते हुए तुलसीदासजी-ने सा ी रामायण भरी है। गायत्री-मत्रके बारेमे भी हम लोग ऐसी भावना रखते है। तो जो प्रार्थना करे उसपर क्रोध क्या करना? धमकी क्या लिख भेजना? इस तरह करनेका फायदा क्या? अगर फायदा है ही, तो इस तरह लिखनेवालेको कोई फायदा होनेवाला नही है, होगा तो उस लडकीको, क्योकि वह तो अब ज्यादा निर्भयता महसूस करती है।

मै आपसे कहना चाहता हू कि हम लोग आज स्वदेशीको भूल

---

को टेलीफोनपर बुलाया गया और पूछा गया—"बोलो, तुमने क्या विचार किया?"

"किस बारेमें?"

"प्रार्थनामें कुरान बोलोगी?"

"हां जी, वह तो नियमपूर्वक बोलूंगी ही।"

"तो गोलीसे मार दी जाओगी।"

"बस, इतना ही।"

"अच्छा, मानोगी नहीं?"

"गरजनेवाले मेघ कम बरसा करते है! पर आप अपना नाम तो बताइए?"

बस टेलीफोन बंद हो गया।

गए है । मै शुरूसे कहता आया हू कि अगर हम विदेशी रीति-रिवाज अपनाते है तो स्वदेशी राजकी बात करना बेकार है। आप ऐसी पश्चिमी तरीकेकी धमकी न दे। अपनेमें स्वदेशीपन रखे। जिससे हमे नुकसान हो, जिससे हम भूखे रहे वह स्वदेशी मनोवृत्ति नही है। वह परदेशी मनोवृत्ति है। पहले अगर कोई जरा भी परदेशी काम करता था तो मै उसे बहुत डाटता था। लेकिन तब मेरा राज था, बदूकका राज नही। पर सारे मुल्कमे प्रेमका राज था। अब मेरा वह सिक्का नही है। मै अब बूढा हो गया हू। हर जगह दौडकर नही जा सकता। अगर आज भी मेरी आवाज हर जगह पहुचे तो मै वही कहूगा जो ३२ बरससे कहता आया हू। वैसे मै ७८ बरसका हू, पर जवानीमें दक्षिण अफ्रीकामे मै जलावतन रहा । वहासे लौटकर मैंने जो ३२ बरस-तक बात सिखाई है उसका नतीजा यह है कि इस सारे कामको हम अपने हाथो मारनेपर तुले हुए है और विदेशीपन अपना रहे है। स्वदेशी वह है जो आत्माको भाता है ।

मैंने सपूर्ण स्वदेशीकी बात कही। उसका केंद्र खादी ठहराया। उस समय हमारे पास राष्ट्रीय झडा नही था। तब तीन रगका ऐसा झडा बनाया गया जिसमें हिंदुस्तानके सारे आदमियोका प्रतिनिधित्व आ गया। लेकिन इकट्ठे होकर करे क्या? बोलते रहे? ना। 'काम करे?' 'हा'। तो क्या काम करें? सूत कातें। और ऐसा समझकर हमने हिंदुस्तानकी महाशक्ति चर्खेको झडेमे रखा। यह तिरगा झडा आज मृतप्राय हो गया है। अगर उसे हम हृदयमें रखे तो बहुत ऊचे उठ सकते है।

लेकिन आज तो हम खादी पहनते है या खादी टोपी पहनते है, पर भीतरमे तो पोल-ही-पोल रहती है। मैंने तब कहा था कि बाहरका कपडा ही नही, यहाकी मिलोका कपडा भी, हमारे लिए परदेशी है । कपूर जो हम यहा पैदा नही कर सकते और जो बहुत कामका और उपयोगी है, उसे जापानसे मगावे तो उसमें परदेशीपन नही है। लेकिन जो यहा पैदा कर सकते है उसे जापानसे मगावे तो वह हमारे लिए जहर है। जब कि हमारे यहा करोडो आदमी पहले अपना कपडा बनाते थे, खुद ढके

रहते थे और जहाजके जहाज भरकर बाहर भी भेजते थे, उन्होने अब कौन-सा गुनाह किया है कि वे अपनी कपास तो विदेशोमे भेज दें और उसीमेसे विदेशोसे जो कपडा बनकर आवे, वह यहाकी रुईके दामोसे भी सस्ता बिके ? इसके पीछे क्या-क्या कारगुजारिया चलती है यह कोई सुने और समझे तो उसके रोगटे खडे हो जाय।

उस जमानेमे हमने विदेशी कपडेके पहाड चिन-चिनकर जला दिये थे और कोई यह नही कहता था कि इससे राष्ट्रकी निधि बरबाद हो रही है। श्रीमती नायडूने अपनी पेरिसकी साडी जला दी थी और स्व० मोतीलालजीने भी अपने विलायती कपडोमे दियासलाई लगा दी थी। उनके पास तो आलमारीकी आलमारिया विदेशी कपडे थे। इसके बाद जब वे जेल गए तब उन्होने मेरे पास एक खत भेजा था—आज वह खत मै खोज नही सकता—पर उसमे था कि मै सच्चा जीवन अभी जी रहा हू, आनदभवनमे मेरे पास जो समृद्धि थी उससे मुझे यह सुख नही मिलता था। वहा उन्हे सिगार, शराब, गोश्त कुछ नही मिलता था। पूरा भोजन भी नही मिलता था, फिर भी उसमे उन्हे सुख मालूम हुआ। यह सही है कि उनकी यह चीज हमेशा नही चली। आदमी जो ऊची उडान लेता है वह हमेशा टिक नही सकता। हम भी ऊचे चढकर बार-बार गिर जाते है। पर मनुष्य-के लिए अपनी वह ऊची उडान पुण्यस्मृति बन जाती है। कम-से-कम मेरे लिए तो ऐसा ही है। तो क्या वह जमाना खराब था ? आज वह जमाना कहा चला गया ?

आज तो जमानेने एकदम पलटा खाया है। एक छोटेसे भले व्यापारीने मेरे पास पोस्टकार्ड भेजा है कि वह पुराना जमाना कहा गया ? आज तो हम सब स्वार्थी बने हुए है। हम व्यापारी तो स्वार्थी है ही, राजा भी स्वार्थी है, उनके दीवान भी स्वार्थी है। और ये अग्रेज भी जाते-जाते इतने नखरे और इतना स्वार्थ क्यो करते है, वे इतनी लडाई कराते है और उसमेसे अपने लिए पैसे पैदा करते है। अगर उन्हे जाना है तो मोह क्यो नही छोडते ? अपने जानेमें सुगध

पैदा क्यो नही करते ? लेकिन अग्रेजकी क्यों कहें। काग्रेसी भी स्वार्थी हो गए है। इन्हें क्या कहें ? समुद्रमें आग लगी हो तो उसे कौन बुझायगा ? नमक अगर अपना नमकीनपन छोड देगा तो रस कहासे आयगा ? काग्रेसने इतना त्याग किया, इतनी लडाई की, वह उसका गौरव कहा गया ? अब तो वे लोग प्रधान बनना चाहते हैं, सेक्रेटरी बनना चाहते है। मेरी रायमें यह सारा-का-सारा परदेशीपन है।

मै सुन रहा हू कि देशी मिलोके कपडेकी बिक्रीपर हमारे देशमें अकुश, है पर बाहरसे आनेवाले कपडेपर कोई अकुश नही है। यह सब क्या हो रहा है ? मेरी समझमे नही आता। यह तो हम एक हाथसे स्वराज ले रहे है और दूसरे हाथसे उसे खोनेकी कोशिशमें लगे हुए है। यह बडे ही दु खकी बात है।

एक भाईने लिखा है कि पश्चिमी पंजाबको कुछ आश्वासन दो। मैने कुछ आश्वासन दे भी दिया, लेकिन केवल सहानुभूति जतानेसे काम होनेवाला नही है।

आखिर पजाब तो वही है न, जहा पजाबके शेर लाला लाजपतराय पैदा हुए थे। पजाब तो बहादुरोका गढ ठहरा। वहा सिख पैदा हुए। मै सिखोकी तलवारकी बहादुरीकी सराहना नही कर सकता। मेरी निगाहमे निहत्थे रहकर जो बहादुरी दिखाई जाय वही असली बहादुरी है। पर पजाबके लोग आज हथियारकी ही बात करते है। मैने पूछा था कि आपको पैसेकी आवश्यकता है क्या ? तो उन्होने ( पजाबियोने ) कहा कि हमे तो हथियारोकी मदद दिलवाइए। मेरी समझमे यह मनोवृत्ति भी परदेशीपन ही है।

दु ख-निवारणकी बात क्या बताऊ ? मै तो उन्हे यही कह सकता हू कि पजाबमें बकरी नही, भेड नही, शेर पैदा होने चाहिए। मै तो पजाबको जानता हू। मै वहाकी स्त्रियोको भी जानता हू। उन लोगोका मजबूत शरीर होता है। पर मन भी तो मजबूत चाहिए। आजकल वहा जो प्रवाह बह रहा है उससे आदमी शेर-दिल नही बन पाते।

वहाकी स्त्रियोको आज विदेशी और चटकीले कपडे चाहिए। साडी भी उतनी बारीक चाहिए कि सारा बदन दीखता रहे। और पुरुष भी उनसे कम नही होते। वे खुद नही पहनते, पर स्त्रियो को पहिनाने-का चाव रखते है। मेरे पास जब पजावी बहने आती है और पूछ बैठता हूं कि इतने जेवर क्यो, ऐसे कपडे क्यो? तो वे कहती है हमारे भाई, पिता या पतिका आग्रह है कि इतने जेवर तथा कपड़े तो चाहिए ही। पुरुष क्यो अपने घरकी स्त्रियोको गुडिया बनाते है?

अगर यह सब छोडेंगे तो फिर हम डरेंगे नही। हमें डरना किससे है? मुसलमानोसे? वे अगर हैवान बन जाते है तो हम इन्सान बने। फिर वे भी इन्सान बन जायगे। जब मै निकम्मा बनिया भी नही डरता तो आप क्यो डरे? मै तो कहता हू कि वे मेरा क्या करेगे? मारेगे न? भले मारे। खून पीएगे? तो पिये, एक दिनका भोजन बच जाएगा। और मै मानूगा कि मैने सेवा की। लेकिन मै सेवा करने-वाला कौन, ईश्वर ही सब करता है। इसलिए यह कहना सही होगा कि उसने मेरा उपभोग सेवाके लिए किया। इसी तरह मै सबसे कहूंगा कि आप भी न डरे।

## : ४६ :

### २२ जून १९४७[1]

भाइयो और बहनो,

आप तो जानते है कि मै पजाव और सीमाप्रातके शरणार्थियो-को देखने हरिद्वार चला गया था। वहा डेराइस्माइलखा और दूसरी जगहोके ३२,००० आदमी आ गए है। वहा बहस करने-को तो समय नही था। मैंने उन लोगोसे भरपेट बाते की। उनके

---

[1] २१ ता०को गांधीजी हरिद्वारसे देरमें लौटनेके कारण प्रार्थनामें सम्मिलित नहीं हो सके।

कैंपोमें भी चला गया। लोगोने मुझसे उनके बारेमे तरह-तरहकी बाते कही। वहा दो किस्मके लोग आए है। एक सचमुच दुखी, मिस्कीन है, और दूसरे वे जो अच्छे खाते-पीते है, पैसेवाले हैं। पर उनमे कुछ ऐसे है जो जुआ खेलते है, शराब पीते है और तरह-तरहसे पैसा पैदा करते है। मै कहना चाहता हू कि उनका यह धर्म नही है कि आपत्ति-कालमें वे ऐसा करे।

लोग वहा दुखी होकर आए है। अपने रिश्तेदारोंसे अलग हो गए है। पर अब इसका रोना क्या ? मैने उन्हें बताया कि दुखकी बात भूल जाओ। दुखको भूलनेसे दुख मिट जाता है। तुम्हें तो दुखमे सुख पैदा करना है। इतनी बडी दुखकी बात हो गई, हिंदुस्तानके दो टुकडे हो रहे है, इसका मुझे बडा रज है, पर क्या मै रोऊ ?

मै आपको सुनाना चाहता हू और आपके मार्फत उनको[1] कहना चाहता हू कि सब लोग दुखको भूल जाय। इन ३२,००० आदमियोंको अपना सहयोगी सगठन बना लेना चाहिए। उनको उद्यम करना चाहिए। जुआ नही खेलना चाहिए, शराब नही पीना चाहिए, गाजा नही पीना चाहिए। उन्हें कुछ-न-कुछ काम जरूर करना चाहिए। हुकूमत उन सबको खाना देना चाहे तो भी नही दे सकती। आज तो सब जगह ब्लैक मारकेट चलता है, अगर सच्चे आदमी भी हो तो भी इस जमानेमें अन्नका पूरा राशन नही मिल सकता। लेकिन उन्हें रोना नही चाहिए। शिकायत करनेसे, रोनेसे, खाना नही मिल सकता। वे सहयोगसे काम ले।

दक्षिण अफ्रीकाकी ऐतिहासिक यात्रामे हम सब लोग रोज २० मील चलते थे। बहुत आदमी साथ थे। उनके देनेके लिए मेरे पास एक औंस चीनी और कुछ डबल रोटी होती थी। यह एक आदमीकी पूरी खुराक नही होती थी। जब २० मील चलकर पहुचते थे तो शाम हो जाती थी। मै देखता कि वहा कुछ पका करता था।

---

[1] शरणार्थियोको।

जाच करनेपर मालूम हुआ कि वे लोग घासमेसे कुछ पत्तिया और दूसरी खाने लायक चीजें चुन लेते थे। थोडा-सा नमक लेते थे। पानी वहा होता ही था। पकाना शुरू कर देते थे। मै बहुत खुश हुआ कि ऐसे (उद्यमी) यात्रियोके साथ तो सदा यात्रा की जा सकती है। वहा उन्होने जगलमे मगल कर दिया था।

हरिद्वारकी मिट्टी और भी उपजाऊ है, वहा तो वे और भी उद्यम कर सकते है। वे ऐसा करेगे तो लोग उससे थकेगे नही। जो आश्रित है उन्हे तो ऐसी खूबसूरतीसे रहना चाहिए कि वे दूसरोके लिए भार न मालूम पडे। सब साथ-साथ इस मुसीबतको काट ले।

लोगोको कुछ-न-कुछ पेशा करना चाहिए। वहा मुझे कुछ बहने मिली जो सिलाई-कताईका काम करती थी, कुछ आदमी भी ऐसे मिले, जो कुछ काम निकाल लेते थे। यह मुझे अच्छा लगा। उन्हे भिक्षुक नही बनना चाहिए। उन्हे बहादुर बनना चाहिए और डरना नही चाहिए।

मै तो सब जगह जा नही सकता था। डा० सुशीला नायर सब कैपोमे गई। वहा उन्होने बडी गदगी देखी। गदगी तो नही रहनी चाहिए। यह काम गवर्नमेट नही कर सकती। हमे खुद अपनी सफाई करनी चाहिए। दूर-दूर रहना चाहिए। लोग कहते है कि वहा जानवरोका डर है। मै कहता हू कि उन्हे जगली पशुओसे क्या डरना? जैसे आदमी जगली पशुओसे डरता है, वैसे ही जगली पशु स्वय आदमीसे डरते है। ३२,००० आदमियोको डर छोड देना चाहिए। वे तो जहा बस जायगे वहा जगली पशु भाग जायगे। इन लोगोको प्रेमसे जैसे दूधमे मिश्री रहती है ऐसे सबके साथ मिलकर रहना चाहिए।

मैनेएक दुःखकी बात सुनी है। वह बात काबुलकी है। काबुलमे जो हिंदू रहते है वह वहावालोकी मेहरबानीपर रहते है। उन्हे वहा एक खास रगकी पगडी पहननी पडती है। मुझे यह सुनकर बडा बुरा लगा कि वहाके लोग पैसेके लोभके लिए ऐसी ज्यादती सह लेते है। हम अपने हक रखकर रहे तो रहे, नही तो नही। मै इसको बर्दाश्त नही कर

सकता। कोई बादशाह हो तो अपने घरका। फिर काबुल तो हमारा ही मुल्क है। हमारा मुल्क है, यानी पठानका मुल्क है। फर्क इतना है कि यहा ब्रिटिश है, वहा ब्रिटिश सल्तनत नही है। मेरी दक्षिण अफ्रीका-की लडाई भी इसी तरहकी थी। हम उन-जैसी पगडी क्यो नही पहने? हमारे लोग वहा आजादीसे न रह सके यह कोई सहन करने-जैसी बात नही है। मै समझता हू कि काबुलमें ऐसा नही होगा और इस कथनमे अतिशयोक्ति होगी। मै देखूगा और काबुलवालोंसे पूछूगा।

## : ४७ :

### सोमवार २३ जून १९४७

(लिखित सदेश)

हिंदुस्तानका बटवारा और प्रातोके जो टुकडे किए जानेवाले है, वह हमारे लिए कसौटी समझिए। आजके अखबारोमे जिक्र किया जाता है कि लदनमे हिंदुस्तानके बटवारेका जो बिल पार्लमेंटमे रखा जायगा उसकी रस्म धूमधामसे मनाई जायगी और हिंदुस्तान जो आजतक एक कौम रहा है, दो कौमें या दो नेशन बना दिया जायगा। ऐसे उदासीके मौकेपर खुशी किस बातकी! हमने तो यह श्रद्धा दिल-में रखी है कि हम जुदा हो रहे है तो भी वह जुदाई एक ही खानदान-के भाइयोकी होगी, और हम मित्र तो रहेगे ही। अगर अखबारोकी खबर ठीक है तो बरतानिया हमे दो राष्ट्र बनानेवाला है और वह भी खुशीके नारे लगाकर! क्या यह उनकी हमपर आखिरी गोली होगी? मै उम्मीद करता हू कि नही।

लेकिन अगर हिंदुस्तानके बडे हिस्सेने, अर्थात् इडियन यूनियन-ने अपने धर्मका पालन किया तो हम उनकी चालको मात कर सकेंगे। बटवारेसे तो हम आज बच नही सकते, चाहे वह हमें कितना ही नापसद हो। लेकिन धर्मका पालन यह है कि हम सीधे रास्तेपर

चलें, अपने आपको हमेशा एक ही कौम समझे और मुसलमान अल्पसख्यकोंको कभी भी परदेशी माननेसे साफ इन्कार करें। हिंदुस्तान उनका भी उतना ही घर है जितना कि हमारा।

इसके स्पष्ट मानी यह हुए कि हमें हिंदू-धर्ममें क्रातिकारी परिवर्तन करना होगा। हमारे ऊपर अछूतोंका कलक लगाया जाता है और वह हमारी कमजोरी जरूर है। पढनेमे आता है कि मुस्लिम लीगके नेता आज अछूतोको यह झासा दे रहे है कि पाकिस्तानमे उन्हे अलग चुनावका हक मिलेगा। क्या यह पाकिस्तानी इस्लाममे शामिल होनेकी दावत है? जवर्दस्तीसे जो हालमे लोगोसे मजहव वदलवाया ऐसी और वात चली है, उसके वारेमे मै कुछ नही कहना चाहता। चूकि मैने अछूत भाइयोसे खुद ऐसी वातें सुनी है। मुझे जरूर डर है कि क्या होनेवाला है।

इस डर या डरावेका जवाव एक ही हो सकता है, वह यह कि हिंदू-धर्ममेसे छूतछातका भूत विल्कुल निकल जाय। हिंदुस्तानमे कोई अछूत न हो। हिंदू सव एक हो। कोई ऊचा, कोई नीचा नही। जिन गरीव लोगोकी ओर, मसलन अछूत या आदिवासी, हम आजतक वेदरकार रहे है, उनकी हम खास देखभाल करे। उन्हे पढाए, उनके रहन-सहनको देखें, आदि। वोटरोकी फेहरिस्तमें सव एक ही हो। आजकी हालत न रहे, इससे कई दर्जे वेहतर हो। क्या हिंदू धर्म इतनी ऊचाईतक चढ सकेगा या कि झूठी मिथ्या वातोसे और दूसरोकी खरावीका अनुकरण या नकल करके अपना आत्मघात करेगा? सवाल तो हमारे सामने यही है।

## : ४८ :

२४ जून १९४७

भाइयो और वहनो,

इस भजनमे ऐतिहासिक रामकी करुण कहानी है, जिसे सुनकर

आंखोंमें आंसू आ जाते हैं। कहां तो जानकीनाथका तिलक होनेवाला था और कहां उन्हें वनवास हो गया! इससे अधिक करुणाजनक चीज और क्या हो सकती थी! वही इतिहास आज हमारी आंखोंके सामने आ रहा है। एक ओर तो लदनमें हिंदुस्तानको औपनिवेशिक स्वराज्य दिए जानेपर खुशियां मनानेकी चर्चा है, दूसरी ओर हम आज अपने धर्मकी रक्षाके नामपर आपसमें लड रहे हैं। मेरे पास कितने ही खत आते हैं जिनमें मुझपर तरह-तरहके कटाक्ष किए जाते हैं। कोई लिखता है कि 'तूने हिंदुओंको बर्बाद कर दिया। तू मुसलमानोंकी खुशामद करता रहता है,' आदि। मेरे दिलपर इन गालियोंका असर नही होता। मैं किसीकी खुशामद, नही करता और करता हू तो केवल ईश्वरकी। उसकी भी खुशामद क्या, उसके तो हम सब गुलाम हैं, हम सब उसके बंदे है। वह किसीकी खुशामद नही मानता, क्योंकि वह तो सर्वशक्तिमान है। मैं इन खतोंपर गुस्सा करके भी क्या करूं? आखिर मेरा गुनाह क्या है? मैं यही तो कहता हू कि कोई व्यक्ति पापी बननेमे या फरेब रचकर या दूसरोंपर अन्याचार करके अपने धर्मकी रक्षा नही कर सकता। यह बात हिंदू, मुसलमान सबपर लागू होती है। पाकिस्तान बुरी चीज है यह सब कोई कहता है। ऐसी हालतमें वहां खुशियां और धूमधाम मनानेवाली क्या चीज है। हमारे देशके टुकडे करके भी उनको नक्कारा क्या बजाना था! हमें एक लड्डू मिलता है और उसके भी टुकडे हो जाते है। इसमें उन्हे खुशी क्या मनानी थी? मै ६० वर्षसे, जब कि मैं हाईस्कूलमे पढता था, यही कहता आया हू कि इस देशमें हिंदू, मुसलमान, पारसी और ईसाई जो भी रहते है सब भाई-भाई है। इतने वर्षोंके तजुर्बेमे मैं कहता हू कि हमारी जमीनके टुकडे हो गए तो क्या हम अपने भी दो टुकडे करें? एक देशमें रहनेवाले लोग दो प्रजा कैसे बन सकते हैं? क्या यहां हिंदू और मुस्लिम प्रजा अलग-अलग होगी? हिंदुस्तानमें एक ही प्रजा रहेगी और वह हिंदुस्तानी प्रजा होगी। हम गलत इतिहास क्यों सीखें? हम यही कहेंगे कि हम दो प्रजा नही है। जब मैं ऐसा कहता हू तो लोग गालियां देते हैं। क्या मैं उनकी बात मानकर अपने आपको खूनी बना

लू ? इससे मैं अपनेको ही नुकसान पहुचाऊगा। आत्मा ही आत्माका बधु और आत्मा ही आत्माका शत्रु हो सकता है। अत हिंदूको मिटानेवाला हिंदू ही हो सकता है, दूसरा नही ।

परतु आज तो चारो ओर अगार फैल रहे है । इस आगसे बचोगे तभी धर्म बच सकेगा। मै कहा-कहा जाऊ, यह मुझे नही मालूम देता। मेरी शक्ति क्षीण होती जाती है । मेरा शरीर इस गर्मीको सहन करने लायक नही रहा। मैने जो कहा है वह सत्य है। वह सबपर लागू होता है। वह सर्वसामान्य दुनियाका नियम है और सत्यकी हमेशा जय है और झूठकी क्षय होती है। मै जो कह रहा हू वह डरपोक और बुजदिलके लिए नही, बल्कि उनके लिए जो बहादुर है और नि:स्वार्थ है, जो अपनी माकी, लडकीकी और अपने धर्मकी रक्षा करते हुए मरना जानते है, दूसरोको मारना नही। जो आदमी खुशीसे मर जाता है वह मारनेवालेसे कही ज्यादा बहादुर होता है। मै चाहता हू कि इस बहादुरीके स्तरतक सारा हिंदुस्तान पहुचे ।

मै तो यह सब[1] देखकर काप उठता हू। किसको मैं जाकर समझाऊ। मै तो धीरज रखकर यहा बैठ गया हू । हम अग्रेजोकी ओर देख रहे है। ऐसे हम कबतक देखेंगे ? १५ अगस्तके बाद, जब कि सब कुछ हमारे हाथोमे आ जायगा, तब हम किसकी ओर दखेगे ?

पजाबमे मार्शल-ला लागू करनेकी बात कही जाती है । वहा एक मार्शल-ला लागू हुआ मै देख चुका हू। मै जानता हू कि मार्शल-ला क्या चीज हो सकती है। मार्शल-ला दिलोको नही बदल सकता।

मै तो यही कहूगा कि मुसलमानोको इस्लाम, हिंदुओको हिंदूधर्म और सिखको गुरुद्वारा बचाना है तो वे सब मिलकर यह फैसला कर लें कि हम आपसमे लडेंगे नही । यदि किसी चीजके बटवारेपर झगडा भी हो तो उसका फैसला तलवारसे नही, पचद्वारा कराएगे ।

(त्रावनकोरके दीवान सर सी० पी० रामस्वामी अय्यरके ताजा वक्तव्यकी आलोचना करते हुए) सर सी० पी० कहते है कि गाधी

---

[1] लाहौर, अमृतसर और गुड़गांवके उपद्रव ।

और काग्रेस मरहूद्दी मूवेको तो आजादी देनेको तैयार है परतु त्रावनकोरको नही। इतना वडा विद्वान होकर भी वह कितनी गलत वात करता है। यदि त्रावनकोर अलग हुआ तो हैदरावाद, काश्मीर और इदौर आदि सव अलग हो जायगे। इस तरहसे तो हिंदुस्तानके अनेक टुकडे हो जायगे। इसके अलावा फ्राटियरके खान हिंदुस्तानसे पृथक् नही होना चाहते। वे कहते है कि हम पाकिस्तानमे नही जायगे। तव फिर क्या वे हिंदुस्तानमे हिंदुओकी गुलामी करेगे? उनपर काग्रेससे पैसा खानेका इल्जाम लगाया जाता है? काग्रेस यदि इस तरहसे किसीको पैसा देकर अपनी तरफ करे तो वह अवतक जिंदा नही रहती। वादशाह खानने हमे विश्वास दिलाया है कि हिंदुस्तान पहले अपना विधान वना ले। इस दौरानमे वह किसी फैसलेपर पहुच जायगे। मगर रामस्वामी जो कहते है वह विल्कुल गलत है। फ्राटियरमे वहा रहनेवाली प्रजाकी आवाज है, जव कि त्रावनकोरमें तो एक राजा और उसका सचिव ही सारी प्रजाकी तरफसे वोल रहा है।

आजकी हालतमें राजा और प्रजा दोनोका एक हक है, यह मेरा दावा है। फ्राटियरकी मिसाल देकर सर सी० पी० लोगोकी आखोमें धूल नही झोक सकते। इस तरहसे न तो धर्म रहता है और न कर्म रहता है। मै तो रामस्वामीसे यही कहूगा कि सही चीज यही है कि त्रावनकोर राज्य विधान-परिषद्मे आ जाए।

## : ४९ :

### २५ जून १९४७

भाइयो और बहनो,

हरिद्वारमें मुझे सूवा सरहद और पजावके शरणार्थियोने यह वताया था कि कावुलमें जो हिंदू लोग रहते है उनको एक अमुक रगकी पगडी पहननी पडती है जिससे कि वे अलग पहचाने जा सके। इस वारेमें आज अफगान राजदूतने एक लवा वयान

देते हुए उसका प्रतिवाद किया है। उनका कहना है कि काबुलमे ऐसी कोई चीज नही है। वे कहते है कि वहा तो हिदुओके मदिर भी है और उन्हे मदिर बनानेकी इजाजत है। यदि ऐसा है तो हमारे लिए यह बडे फख्रकी बात है।

लाहौर, अमृतसर और गुडगावके उपद्रव हिदू, मुस्लिम और सिख तीनो कौमोंके लिए शर्मकी बात है। कुछ भी हो, ये झगडे-फसाद बद होने चाहिए। सच्चे दिलसे सब लोगोको मिल जाना चाहिए। आजके अखबारोमें मैने पढा है कि लाहौरमे कल मध्य रात्रितक नवाब ममदोतकी कोठीपर तीनो कौमोके नेतागण बैठे और उन्होने तय किया कि ये झगडे बद होने चाहिए। यह एक खुशखबरी है। आखिर क्या लाहौर और अमृतसरकी कब्रपर पाकिस्तान बन सकता है? और फिर ये कोई छोटे कस्बे भी नही है। इनको बनानेमे एक जमाना लगा है। अमृतसरमे तो सिखोका एक सुनहरी मदिर भी है।

आदमी अपना कर्त्तव्य भूलकर हैवान बन जाय, यह दुखकी ही बात है। ये नेतागण कल फिर मिलनेवाले है। यदि वे सफल हो जाते है तो वहा मार्शल-ला लागू करनेकी जरूरत ही नही होगी। अतः ये नेतागण धन्यवादके पात्र है।

मुझपर आज धर्म-सकट आ पडा है। मेरा दिल कभी बिहार जानेके लिए करता है तो कभी नोआखाली। नोआखालीमें तो मैंने एक तरहसे अपना काम शुरू भी कर दिया है और इससे वहाके हिदुओको काफी साहस मिला है। बिहार मुझे जाना ही चाहिए। मै यहा आठ दिनके लिए आया था, परतु हो गया एक महीना। मै कहा जाऊ और क्या करू, यह मुझे मालूम नही होता। एक ईश्वर-भक्तके लिए यह अच्छा भी है कि वह केवल आजकी चिता करे, कलकी नही। 'कल क्या होनेवाला' है यह तो ईश्वर ही जान सकता है। कुछ लोग कहते है कि तू अहिंसाकी इतनी लबी-लबी बात करता है तो फिर अमृतसर या गुडगाव क्यो नही जाता? मै वहा जाकर क्या करू और किसको कहू कि तुम लडो मत। मेरे दिलमें समय तो नही है। मै चाहता हू कि आप लोग जैसा मै हू वैसा मुझे

पहचान ले। मेरे दिलमें सशय तो कभी हुआ ही नही। परतु इस वक्त इतना गोलमाल चल रहा है, दुनियामें, और हिंदुस्तानकी दुनियामे भी, कि कुछ पता नही चल पाता। गीतामे लिखा है कि 'जो तेरा आजका धर्म है, वही तेरे लिए श्रेयस्कर है।' चार-पाच जगह उपद्रव हो रहे है और मुझे नही सूझता कि मै कहा जाऊ। ईश्वर मुझको कहता नही कि तुझको यह करना है। मै दोस्तोसे पूछता हू। जब हमारे दिलमें शक पैदा हो जाता है तो अच्छा तरीका यही है कि हम धैर्य रखकर बैठे रहें, बजाय इसके कि हम कोई पत्थर फेंककर मामलेको और बिगाडे। परतु ममदोतके नवाब साहबने तो कहा है कि पाकिस्तानमे अल्पसख्यकोके साथ अच्छा सलूक किया जायगा। वे फरेबसे ऐसी बाते कहते हो, यह मैं क्यो मान लू? जब अफगानिस्तान-में हिंदू नागरिक बनकर रह सकते है तो पाकिस्तानमे इससे भिन्न कोई अन्य चीज हो नही सकती।

## : ५० :

### २६ जून १९४७

भाइयो और बहनो,

मै डेढ घटेतक वाइसराय साहबके पास रहा। मै वहा कुछ करनेके लिए तो गया नही था। न तो वाइसरायको कुछ देने गया था और न कुछ उनसे लेने। उनका काम करनेका अपना एक ढग है। चूकि मैने भी हिंदुस्तानकी आजादीके लिए अनेक लडाइया लडी है, कुछ सेवा की है, इसलिए जैसे वे औरोको बुलाते है, उसी तरह उनको ऐसा लगा कि मुझको भी बुलाना चाहिए। वे सबकी राय तो ले लेते है और पीछे उनको जो करना होता है वह करते है। उनके दिलमे क्या भरा है यह तो ईश्वर ही जानता है।

मेरी डाकमे आनेवाले खतोमे कुछ खत तो गालियोसे ही भरे होते है। उन गालियोका तो मेरे ऊपर कोई असर नही होता, क्योकि

मै इन गालियोको ही स्तुति समझता हू । परतु वे लोग गालियां इसलिए नही देते कि मै उनको स्तुति समझता हू, वल्कि इसलिए कि मै जैसा उनकी निगाहमे होना चाहिए वैसा नही हू। एक वक्त वह था जव कि वे मेरी स्तुति भी करते थे। इसलिए गालिया देना या स्तुति करना तो दुनियाका एक खेल है । परतु आज मैने एक खतमेंसे दो सवाल चुन लिए है जिनका मै यहा उत्तर देना चाहता हूं। एक सवाल तो यह है कि 'तुम लोग वरसोसे ब्रिटिश फौजके आदी हो गए हो । जव ब्रिटिश फौज यहासे चली जायगी तव तुम्हारा क्या हाल होगा ?' मै दक्षिण अफ्रीकामे भी, और वहासे आनेके बाद इस देशमें भी वरसों पहले इसका उत्तर दे चुका हू । आज भी मै वही कहता हू कि ब्रिटिश फौजसे हमारा वास्ता क्या है। हमारी शक्ति उससे वढती नही, वल्कि गिरती है। मै तो अहिंसाका माननेवाला हू, परतु जो लोग हिंसाको मानते है उनके लिए भी यही बात है। यदि सव लोग सिपाही वन जाय और वे राइफल भी चलाने लगे तो फिर हमे ब्रिटिश फौजकी क्या जरूरत रह जाती है ? यदि हमे ब्रिटिश फौजके चले जाने-से सदमा पहुचता है तो फिर हम स्वराज्यके लायक कैसे हो सकते है ? यदि किसी आदमीका फेफडा खराव हो जाय तो उसके जिंदा रहनेके लिए वह दूसरेके फेफडेसे काम नही चला सकता। स्वराज्य हिंदुस्तानका फेफडा है। अगर हमें जिंदा रहना है तो दूसरेकी मदद-से वह नही चलेगा। हमें आज ऐसा लगता है कि जैसे कोई आदमी जन्मसे किसी अधेरी कोठरीमे वद रहा हो और एक दिन उसे अचानक वाहर निकालकर छोड दिया जाय। सूर्यका प्रकाश देखकर उसकी आखे कुछ समयके लिए काम नही करेंगी। उसी तरहसे हम यहा अधेरेमे रहनेवाले पक्षी-जैसे वन गए है। एक दिन हमे ऐसा लगेगा कि जैसे हम किसी नई दुनियामे आ गए हो। एक दिनके लिए चाहे हमे ऐसा लगे, मगर सच्ची वात तो यही है । न हम ब्रिटिश फौजके जरिये यहा दवना चाहते है और न उससे हम अपनी रक्षा कराना चाहते है। हमें ब्रिटिश फौज तो क्या, कोई अन्य फौज भी नही चाहिए ।

परतु आज अमृतसर और लाहौर आदिके दगोकी वजहसे

हमारा अपने ऊपरसे विश्वास उठ गया है। हम इतने बदमाश हो गए हैं कि एक दूसरेसे डरने लगे हैं। हमारे अंदर यह खयाल जोर पकड़ता जा रहा है कि यदि फौज बीचमें न रहे तो लोग एक दूसरेको खा जाएं। मगर हकीकत यह है कि जबतक तीसरी ताकत हमें दबानेके लिए तैयार है, तबतक हम अपनी ताकतको बढ़ा नहीं सकते। स्वराज्य बुजदिल आदमियोंके लिए नहीं होता।

दूसरा प्रश्न यह है कि 'तू कैसा बेअक्ल और मूर्ख आदमी है कि तुझे अभीतक तेरी अहिंसाकी बदबू नहीं आती! सब कुछ देखते हुए भी अहिंसाके लिए तेरे दिलमें नफरत क्यों नहीं होती? न तो अपनी अहिंसासे तू हिंदुओंको बचा सकता है और न मुसलमानोंको बचा सकता है। तुझे हम जिंदा रहने देते हैं, सो तेरी अहिंसाकी खातिर नहीं, बल्कि इसलिए कि तू इस देशकी सेवा करते-करते इतना बूढ़ा हो गया है, सो तुझपर हमें रहम आता है।'

मुझको तो ऐसा लगता है कि मेरे चारों ओर जो कुछ हो रहा है और जो भीषण हिंसा हो रही है उसमें मुझे बदबू आ रही है। उस बदबूको देखते हुए मेरी अहिंसामेंसे जो खुशबू आती है वह मुझे और अधिक मीठी लग रही है। जो आदमी हमेशा अमृत-ही-अमृत पीता हो उसको अमृत उतना मीठा नहीं लगता जितना कि जहरका प्याला पीनेके बाद अमृतकी दो बूंद भी बहुत मीठी लगती है।

हमेशा मुझको मेरी अहिंसाकी खुशबू नहीं आती थी, क्योंकि तब मेरे चारों ओरका वातावरण अहिंसामय था। लेकिन आज जब मुझको हिंसाकी बदबू आती है तो उस बदबूको मिटानेवाली चीज मेरे पास अहिंसा ही है। खतमें यह भी लिखा है कि मैं बार-बार जिन्नासे मिलने क्यों जाता हूं। वे हमारे दुश्मन हैं, जिनसे हमें दूर रहना चाहिए। बहुत सी हमारे दुश्मन हैं और उनसे [illegible] कोई सबंध नहीं रखना चाहिए। लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है? [illegible] उनका काम सबकी सेवा करना है। मैं मानता हूं कि जिन्ना साहबने [illegible] क्यों, और [illegible] हिंदुओंने, अपना [illegible] बुरा किया है। जो आदमी बुरा काम करता है वह बुरा तो [illegible]

मगर आखिर तो वह हमारा ही भाई है। हिंदू उसके पीछे पागल थोड़े ही हो जायंगे। यह माना कि जिन्ना साहबने पाकिस्तान ले लिया, परतु इसका मतलब यह नही कि हम आपसमे मिलना ही छोड दे। कितने ही और झगडे है जिनको हम एक जगह बैठकर सुलझा सकते है। मैं तो 'सर्व-धर्म एक समान'का माननेवाला हू। इसलिए अहिंसाके लिए मेरे दिलमें नफरत हो नही सकती और न मुझको हिंसासे खुशबू ही आनेवाली है। मै मर जाऊ तब भी नही आने-वाली है। उस अहिंसाकी खुशबू यदि मै आप लोगोको भी दिला दू तो मेरा काम पूरा हो जाता है। अहिंसासे बदबू कभी आ ही नही सकती, क्योंकि उसमें खुशबू ही भरी पडी है।

## : ५१ :

### २७ जून १९४७

भाइयो और बहनो,

आज मुझको एक दुःखद खत मिला है। उस खतमे दिल्लीके एक भाई लिखते है कि पजाबसे आजकल काफी निराश्रित लोग यहा आ रहे है। वे वहासे इसलिए भागे है कि उनको वहा अपने जान-मालका खतरा था, परतु आखिर भागकर वे जायगे कहा? यदि आज यह अफवाह उड जाए कि दिल्लीमें कल भूकप होगा तो क्या हम यहासे भाग जायगे? जो बहादुर आदमी होता है वह भागकर कहा जायगा? मौत तो हमेशा उसके पीछे पडी है। कोई अमरपट्टा लेकर तो यहा आया नही। रहा जायदादका सवाल, सो वह तो आज हम पैदा करते है और कल गवा देते है। परतु वह भाई लिखते है कि ये जो शरणार्थी परेशान होकर पजाबसे निकलकर आए है उनसे दिल्ली-के मकान-मालिक अपने मकान किरायेपर देते समय पगडी[1] मागते है।

---

[1] नजराना। कहीं-कहीं इसे 'सलामी' भी कहते है।

दिल्लीमें जो मकान-मालिक है या जिनके पास जमीनें है, मै तो उनसे कहूगा कि उन्हें बाहरसे निराश्रित होकर आए हुए लोगोका अपने घरोमे स्वागत करना चाहिए। यदि यह नही कर सकते तो उनसे पगडी लेकर पैसा क्या पैदा करना ! वे अपने मकानोका उतना ही किराया लेकर सतोष करें जितना कि शरणार्थी आरामसे दे सकते है। शरणार्थियोको शरण देना उनका परमधर्म है। यह सबका सामान्य कर्त्तव्य है, इसमे मुझे कोई सदेह नही है। माना कि कुछ मकान-मालिकोका निर्वाह मकानोके किरायेपर ही होता है, परतु वे उचित किराया लेनेमें ही अपने मकानोका उपयोग करे। पत्रमे लिखा है कि अतरिम सरकारको इस समस्यापर ध्यान देना चाहिए और जहातक हो सके वह शरणार्थियोकी रिहाइशकी समस्याको सुगम बनानेका यत्न करे।

मुझसे रोज अखबारो और डाकमे आनेवाले खतोंके जरिये अनेक सवाल पूछे जाते है। उन सबका उत्तर देना तो सभव नही, परतु कुछ सवालोका जवाब देना मुनासिब है। इसलिए आज मैंने तीन सवाल चुन लिए है। पहला सवाल यह है कि जब दुनियामे लोग पैसेको ही परमेश्वर मान बैठे है तब हिंदुस्तानको इस बारेमे क्या करना है ? पैसा-बल, शरीर-बल या पशु-बल ये सब जडवादके द्योतक है, परतु इन सबसे बडा ईश्वरका बल है। जैसा कि एक भजनमे कहा गया है, जब सारे बल हार जाते है तब तेरे नामका बल ही हमारे पास रह जाता है। परतु आजके युगमे जब अमरीका, रूस और ब्रिटेन-जैसे देश ही पैसेको परमेश्वर मान बैठे है तब हमारी तो गिनती ही क्या है।

आज जडवादका ही बोलबाला है और लोग ऐसा समझने लगे है कि चैतन्यवाद या आत्मिक बल कुछ है ही नही, क्योकि हम न तो हाथोसे उसे छू सकते है और न आखोसे देख सकते है।

परतु मै अध्यात्मवादी हू और मेरे लिए नैतिक बलके सामने पशुबलकी कोई कीमत ही नही है। मै तो अब भी यही कहूगा कि पशुबल अस्थायी है और अध्यात्मबल या आत्मबल या चैतन्यवाद एक

शाश्वत बल है। वह हमेशा रहने वाला है, क्योंकि वह सत्य है। जडवाद तो एक निकम्मी चीज है।

दुर्भाग्यसे आज हिंदुस्तान भी इसमे फस गया और यह समझने लगा है कि जडवाद ही सब कुछ है। परतु मेरा तो यह अटल विश्वास है कि आखिरमे तो चैतन्यवाद या आत्मवादकी ही विजय होगी।

दूसरा सवाल यह है कि जब अग्रेज़ यहासे चले जायगे और डोमीनियन स्टेट्स भी तभीतक चलेगा जबतक कि विधान-परिषद् अपना विधान बनाकर तैयार नही कर लेती, तबतक इसके बाद आप यहा अग्रेजके दुश्मन बनकर रहेंगे या दोस्त बनकर ?

इसका उत्तर यह है कि मेरी तो हमेशा यह आशा रही है कि अग्रेज हमारे साथ भले ही बने रहेंगे। यदि कोई आदमी बुरा भी होता है तो उसकी बुराई उसके साथ चली जाती है, केवल भलाई ही पीछे रहती है।

परतु आज हिंदुस्तान प्रसव-वेदनामेसे गुजर रहा है। यदि इस वेदनामे अग्रेज पास हो जाते हैं, अर्थात् वाइसराय और उनके अग्रेज सलाहकार वही काम करते हैं जिससे सारे देशका भला हो तो फिर पीछे वे हमारे दुश्मन कैसे रहेंगे ?

डोमीनियन स्टेट्स भी तो हमने उनसे मित्र बनकर ही लिया है। उसे लेनेके बाद हम एक बडे क़बीलेके हिस्सेदार बन जाते हैं। इस कबीलेसे अलग होनेके बाद भी हम उनके साथ दोस्ताना तरीकेसे ही रहेंगे। इसीमें हमारी और उनकी भलाई है। हमारी अतरिम सरकारके वाइस प्रेसीडेंट जवाहरलालजीने तो पहले ही कह दिया है कि हिंदुस्तानकी आजादी किसीको खटकनेवाली नही होगी। आजाद भारत सब देशोके साथ मित्रताके सबध बनायगा।

तीसरा प्रश्न है कि इडियन रिपब्लिकका प्रेसीडेंट कौन होगा ? क्या आप किसी बडे अग्रेजको इस पदपर रखेंगे ? यदि किसी अग्रेज-को नही तो फिर पडित जवाहरलाल नेहरू बनें, क्योंकि वे बहुत पढे-लिखे हैं, अग्रेजी और फ्रेंच बोल सकते हैं और विदेशोका भी उनको अच्छा अनुभव है।

इसके उत्तरमें मैं कहना चाहता हू कि भारतीय प्रजातत्रकी प्रेसीडेंट एक भगी लडकी बनेगी, यदि कोई पाक और बहादुर लडकी मुझे मिल गई। प्रेसीडेंट बहुत पढा-लिखा ही हो और उसे कई भाषाओंका ज्ञान हो, यह कोई जरूरी नही है। किसी बडे विद्वान ब्राह्मण या किसी क्षत्रिय-को प्रेसीडेंट बनाकर हम दुनियाको अपना घमड दिखाना नही चाहते।

एक हरिजन लडकीको उस पदपर बिठाकर हम अपना आत्मिक बल दिखाना चाहते है। हमे ससारको यह बताना है कि यहा न कोई उच्च है, न नीच है। परतु वह लडकी दिलकी और शरीरकी साफ होनी चाहिए। उसमें किसी प्रकारका मैल न हो। यदि खडी हो तो सीता-जैसी पवित्र हो और उसकी आखोसे तेज बरसता हो। सीताजी-में इतना तेज था कि उन्हे रावण छू नही सकता था। यह तो एक ऐतिहासिक कथा है, परतु इसका अर्थ यह है कि जिसमें इतनी पवित्रता हो उसे कोई छूनेका साहस नही कर सकता।

ऐसी लडकी यदि मुझे मिल गई तो वह हमारी पहली प्रेसीडेंट बननेवाली है। हम सब उसको सलामी देंगे और इस प्रकार एक नई बात दाखिल करके दुनियाके सामने एक मिसाल रखेंगे।

आखिर कोई हिंदुस्तानकी बागडोर तो उसे सभालनी है नही। उसका एक सचिव-मडल रहेगा और वह जैसी सलाह देता जायगा उसीके अनुसार वह काम करेगी। उसे केवल अपने दस्तखत ही करने होंगे। यह कितनी बडी नैतिक बात है जो मैंने आज आपको बता दी। हिंदु-स्तानमे रहनेवाले सब लोग, चाहे वे सवर्ण हिंदू हो या मुसलमान, या कोई अन्य कौम, एक आवाजमे यही कहे कि जिस किसीको प्रेसीडेंट बनाया जायगा हम सब उसको सलामी देंगे। यही सच्चा नैतिक बल है और बाकी सब मिथ्या है। यदि मेरी कल्पनाकी लडकी हमारी प्रेसीडेंट बनी तो मैं भी खादिम बनकर उसका काम करूगा और सर-कारसे अपने खाने तकके लिए भी पैसा नही मागूगा। जवाहरलालजी, सरदार पटेल और राजेंद्रबाबू आदिको भी मैं उसके सचिव-मडलमें भेजकर उसके नौकर बना दूगा।

## : ५२ :

### २८ जून १९४७

भाइयो और बहनो,

आज जो मै आपको सुनाना चाहता हू वह एक निराली और अनोखी बात है। आशा है, आप सब ध्यानसे सुनेगे और उसे हजम भी कर लेगे। एक आदमी यदि अच्छा काम करता है तो वह उस भले काममे सारे जगत-को हिस्सेदार बना लेता है। जो आदमी बुरा काम करता है, उसमें सारा जगत हिस्सेदार नही बनता, परतु जगतको उससे दु ख तो पहुचेगा ही। आज हमारी इस विधान-परिषद्मे यही बात तो चल रही है कि एक शहरीके सच्चे हक क्या-क्या है? अर्थात् यह कि शहरीके मौलिक हक क्या होने चाहिए। हकीकत तो ऐसी है कि उन मौलिक हकोंके बदलेमें हम यह कहे कि शहरीके फर्ज क्या है। मौलिक हक वही तो है जिनको अमलमें लानेसे उनका भी भला हो और उनके पीछे सारे जगतका। आज हर आदमी यही सोचता है कि उसके हक क्या है? परतु यदि आदमी बचपनसे ही धर्म-पालन करना सीख जाए और अपने धर्म-ग्रथोका अध्ययन करे तो उसको अपना हक भी साथ-साथ मिलता चला जाता है। मुझे तो अपनी माताकी गोदमे ही अपना धर्म सिखाया गया था। मेरी माता तो जगली और बिना पढी-लिखी थी। अपने दस्त-खत भी नही कर सकती थी। छोटा-सा नाम था और वह भी लिखना नही सीखा था, हमको तो वह पढनेके लिए स्कूल भेज देती थी और खुद पढी नही थी। उन दिनो शिक्षक रखकर कोई पढता नही था और यह भी काठियावाड़-जैसे जगली प्रदेशमे। यह मै ७० साल पहलेकी बात करता हू। पिताजी एक दीवान तो थे मगर उस जमानेमे दीवान कोई बहुत अग्रेजी पढा-लिखा थोडे ही होता था। वे तो एक अगरखा पहनते थे और पावोमे सादी जूतिया होती थीं। पतलूनका तो नाम भी नही जानते थे। परतु इस हालतमें भी मेरी मां मुझे यह सिखाती थी कि बेटा, तुझे राम-नाम लेना चाहिए। वह मेरा धर्म जानती

थी । मतलब यह कि बचपनसे ही यह जानना चाहिए कि हमारा धर्म क्या है और उस धर्मका पालन करनेसे हमारा हक भी अपने आप हो जाता है। माता जो दूध पिलाती थी वह दूध पीनेसे मुझे जीनेका हक मिलता था। यदि मैं दूध पीनेका धर्म-पालन न करू तो मैं मर जाऊगा और फिर मेरा जीनेका हक भी नही रहता। बच्चेको दूध पीनेका कर्त्तव्य पालन करनेसे ही जीनेका हक मिलता है । यह एक बडी खूबीकी बात है। निचोड यह है कि कर्त्तव्य-पालनमें से ही हक पैदा होता है । यदि हम अपना धर्म-पालन करें तो हक उसके पीछे दौडता है। वह हक-से छूट नही सकता। असलमें वही हक सच्चा भी है। यदि उसकी हम रक्षा करे तो उसमें सारे ससारको अपने साथ ले सकते है। सत्याग्रह भी तो ऐसे ही पैदा हुआ था, क्योकि मै यही सोचता रहता था कि मेरा धर्म क्या है?

परतु आज तो एक अनोखी बात दिखाई दे रही है। जो राजा है वह ऐसा मानकर बैठ गया है कि उसे ईश्वरने रैयतपर राज्य करनेके लिए ही राजा बनाया है। उसको किसीको फासी देना, किसीको दड देना और किसीको जुर्माना करनेका हक है। वह हर चीजका प्रजासे ही पालन कराना चाहता है । वह कहता है कि यह हक उसको ईश्वरसे मिला है । कारखानोके मजदूर और मालिक अपने-अपने हक माग रहे है। जमीदार अपने हक माग रहे है तो किसान अपने। यहा कोई ऐसे दो वर्ग तो है नही कि जिसमे एक वर्गको केवल हक हो और दूसरा केवल कर्त्तव्य-पालन ही करता रहे। जो राजा अपना कर्त्तव्य-पालन नही करता और प्रजा अपना धर्म-पालन करती रहे तो पीछे वह प्रजा राजाकी जगह ले लेती है।

यदि राजा अपना धर्म-पालन करे और रैयतका ट्रस्टी बनकर रहे, तब तो वह रह सकेगा और यदि हाकिम बनकर रहेगा तो वह इस युगमे रह नही सकता। आजतक हम अधेरेमे पडे थे। राजा अपना धर्म भूल गया और प्रजा अपना धर्म भूल गई।

राजा लोग अपना धर्म छोडकर केवल यही कहने लगे कि मै चद्र-वशी हू या कि सूर्यवशी हू। मगर हकीकतमे राजा प्रजाका सबसे आला

दर्जेका सेवक होता है। सेवकका धर्म है सब कुछ स्वामीको भेट कर देना और फिर जो कुछ बच जाए उसे खाकर निर्वाह कर लेना। रैयत भी अपना धर्म-पालन करना सीखे । प्रजा लाखोकी तादादमे पडी है, वह चाहे तो राजाको मार भी सकती है, परतु इससे उसीको नुकसान पहुचेगा। यदि हम अपनी गली साफ करते है, रोशनी करते है या और कुछ करते है तो उसे अपना कर्त्तव्य मानकर करे। हममेसे हरएक-को भगी बनकर सेवा करनी चाहिए। जो मनुष्य पहले भगी नही बनता वह जिदा रह नही सकता है। और न रहनेका उसे हक है । हम सब किसी-न-किसी रूपमे भगी तो है ही। मानते नही तो क्या, हकीकत-में तो है। यदि रैयत महसूल देती है तो वह इसलिए नही कि राजाका पेट भरना है, बल्कि इसलिए कि उसके बिना राजतत्र चल नही सकता। जो मनुष्य अपने धर्मका पालन करता हो उसके पास हक अपने आप आ जाते है। मजदूरो और मालिकोपर भी यही चीज लागू होती है। यहा हमारे पास ही हरिजन मजदूरोकी एक बस्ती पड़ी है। वह जिस गदगी-में विद्यमान है, उसे देखकर मेरा दिल रोता है। हम कितने नालायक है। मै इतनी अच्छी और सुदर जगहमे रहता हू और वे बेचारे ऐसी गदगीमे पडे है। मालिकोके दिलमे ऐसा होना चाहिए कि मजदूर लोगोको खाना देकर पीछे आप खाए। मान लिया कि मालिक अपने धर्मका पालन नही करते तो फिर क्या मजदूर उस मालिकका गला काट देगे? वे काट तो सकते है, परतु इससे तो सारे-का-सारा ढाचा बिगड जायगा और पीछे फिर वह जायगा कहा ? मालिकको धमकी भी क्या देनी? इस तरहसे जो मजदूर है वे स्वत. मालिक बन जाते है। मजदूरोको यदि अपनी स्थितिको दुरुस्त करना है तो उनको यह भूल जाना है कि उनके जो हक है वे धर्म-पालनमेसे पैदा नही होते। मजदूर तो आज करोडोकी सख्यामे पडे है।

यदि मजदूर अपना कर्त्तव्य छोड़ दे तो सच्ची अराजकता और अधा-धुधी मच जाती है। यही नजारा आज हम सारे हिंदुस्तानमे या सारे ससारमे देख रहे है।

मनुष्य जन्मसे ही कर्जदार पैदा होता है और शास्त्र भी यही

सिखाता है कि इस कर्जको अदा करनेके लिए ही हम जन्म लेते है, और जन्मसे ही परवश बन जाते है। माता यदि खाना दे तो खा लेते है। इन्सान दूसरोपर निर्भर रहकर ही अपने आपको इन्सान बनाता है।

## : ५३ :

२९ जून १९४७

भाइयो और बहनो,

कल हमने फर्ज यानी धर्म-पालनके बारेमे बात शुरू की थी। मै जो आपको कहना चाहता था वह सब-का-सब कल नही कह पाया था। आज मै उसे कह दूगा। हमेशा जब कोई आदमी कही भी जाता है, उसका वहा कुछ-न-कुछ फर्ज हो जाता है। लेकिन जो आदमी अपना फर्ज भूलकर सिर्फ हककी ही हिफाजत करना चाहता है, वह इस बातको नही जानता कि जो हक अपने कर्त्तव्य-पालनसे पैदा नही होता उसकी कोई हिफाजत कर नही सकता। हिंदू-मुसलमानोके बारेमें भी यही चीज लागू होती है। कही भी, हिंदू रहे या मुसलमान रहे, या दोनो रहे, वे अगर अपना-अपना धर्म-पालन करे तो उसमेंसे हक अपने आप पैदा हो जाता है। फिर उसके मागनेकी जरूरत ही नही होती। जैसे बच्चा माका दूध पीता है। दूध पीना उसका धर्म है, क्योकि उससे उसको जिदा रहनेका हक मिलता है। यह एक ऐसा सुनहरी कानून है कि उसमें कोई तब्दीली नही कर सकता। यदि हिंदू मुसलमानको अपना सहोदर समझकर उसके साथ अच्छा सलूक करता है तो मुसलमान भी बदलेमें दोस्तीका ही जवाब देगा। आप एक देहातकी मिसाल ले लीजिए। अगर एक गावमें ५०० हिंदू और ५ मुसलमान रहते है तो इन ५०० हिंदुओका उन ५ मुसलमानोके प्रति फर्ज हो जाता है और पीछे हक भी। वे अपनी मगरूरीमें यह न मान लें कि हम तो इनको कुचल डालेंगे और

मार देगे। किसीको मारनेका हक तो पैदा ही नही होता। उसमे कोई बहादुरी नही, बुजदिली है, निर्लज्जपना और बेशर्मी है। उन ५०० हिंदुओका तो यह धर्म हो गया कि जो मुसलमान वहा पडे है, वे चाहे दाढी रखते हो या पश्चिममें नमाज पढते हो, उनके सुख-दुःखमे वे शामिल हो। उनका फर्ज है कि वे यह देखे कि उन्हे खाना मिलता है या नही, पानी पीनेको है या नही और उनकी अन्य जरूरत भी पूरी होती है या नही। जब ये ५०० हिंदू अपना धर्म-पालन करते है तब उन्हें यह हक मिल जाता है कि वे ५ मुसलमान भी अपना फर्ज पूरा करे। अगर किसी कारणसे गावमे आग लग जाती है और वे ५ मुसलमान यह कहे कि गाव जलने दो और उलटा गावको जलानेमे ही मदद करे तो फिर व अपना फर्ज अदा नही करते। गावमें आग लगना तो एक आम बात है। किसीने बीडी फूककर दियासलाई फेंक दी और वह किसी घासमे या रुईमे जा गिरी तो आग जलने लगी। हवाका जोर, और गावमे घास-फूसके झोपडे ही होते है और सारा गाव जल जाता है। मगर हकीकतमें होगा ऐसा कि वे पाच मुसलमान भी यही कहेगे कि हम भी उसमे पानी ले जाय और अगारोको बुझानेका यत्न करे। इस तरह यदि हर एक अपने-अपने धर्मका पालन करे तो फिर उनका हक भी आप-ही-आप मिल जाता है। परतु आज हम लोग अपने फर्जका पालन नही करते। काम तो फिर भी चलता ही है, क्योकि ईश्वरने यह दुनिया ऐसी पचरगी बनाई है जिसका काम कभी नही रुकता। मगर फर्ज पालन करनेसे उसमे एक खूबसूरती पैदा हो जाती है।

यह तो मैने आपको एक नमूना बताया। मान लो कि ये ५ मुसलमान बदमाशी करना ही चाहते है। आप उनको खाना दे, पानी भी दे और अच्छे-से-अच्छे सलूक करे और फिर भी वे गालिया ही दे, तब उन ५०० हिंदुओका क्या फर्ज हो जाता है? उनका यह धर्म नही कि वे उनको काट डाले। यह तो जानवरोकी बात हुई, मनुष्यका यह धर्म नही। यदि मेरा कोई सगा भाई है और वह दीवाना बन गया है तो क्या मै उसपर मार-पीट शुरू कर दूगा? मै ऐसा नही करूगा। उसको एक कमरेमें अलग रख दूगा और दूसरोको भी मार-पीट नही करने

दूगा। यह एक इन्सानियतका सलूक हुआ। इसी तरह यदि वे मुसलमान दोस्ताना तौरसे चलना ही नही चाहते और कहते जाय कि हम तो अलग नेशन है, हम पाच है तो क्या हुआ, हम बाहरसे ५ करोड मुसलमान बुला सकते है तो वे हिंदू उन बाहरके मुसलमानोकी धमकी-मे डरें नही। वे उनसे साफ कह दे कि हम तो उनसे दोस्ताना तौरसे चलनेको कहते है मगर वे चलते ही नही। अगर आप उन्हे मदद देना चाहते है तो दें, मगर हम डरनेवाले नही है और हम कभी भी डरके आगे सिर नही झुकायगे। अतमे बाहरकी दुनिया भी समझ जायगी कि वे ५०० हिंदू शरीफ आदमी है और अपना फर्ज पालन करनेको तैयार है। यही चीज उस गावपर भी लागू होती है जहा ५०० मुसलमान और ५ हिंदू रहते हो जैसा कि पाकिस्तानमें बहुत जगह रहते है। अभी झेलमके कुछ आदमी मुझसे मिले। उन्होने कहा कि हमारा वहा क्या हाल होगा? मैंने उनसे कहा कि अगर वहा मुसलमान अच्छे है, अपने आपपर काबू रखनेवाले है और अपना धर्म-पालन कर रहे है तो फिर आपको डरनेकी बात क्या है? और यदि वे ५ हिंदू पाजी है तो फिर वे सारे हिंदुस्तानके हिंदू वहा बुलावे तो भी क्या बनता है? जब सब अपना-अपना धर्म-पालन करे तो पीछे उनके पास हक अपने आप आ जायगा। ईश्वरकी ऐसी खूबी है। यह मै बहुत तजुर्बे-की बात कहता हू और वह तजुर्बा भी एक वर्षका नही, बल्कि साठ वर्षोका।

आजकल हिंदुस्तानके कुछ राजा लोग बहुत बिगड रहे है, वे समझते है कि वे 'यावच्चन्द्रदिवाकरौ' राजा ही है। वे कहते है कि हमे रैयतने थोडे ही राजा बनाया है, या तो अग्रेजने बनाया है या सूरज और चाद-ने। परतु यह तो धर्म-पालनकी बात नही, बल्कि घमड और अहकार-की बात हुई। अबतक राजाओपर अग्रेजोका साया था। करोडो रुपया उन्होने अमरीका और इग्लैडमे खर्च किया। खूब खेल खेले। मगर अब किस मुहसे वे खेल खेलेंगे। अब तो रैयत चाहेगी तभी वे राजा रह सकेगे। अब तो वे रैयतके सेवक बनकर ही रह सकते है। मगर खाना तो सेवकको भी चाहिए। अबतक तो वे लूटकर खाते थे।

महलोंमें भी उनको रहने दिया जाय, क्योंकि वे कह सकते हैं कि हम जन्मसे ही महलोंमें रहना सीखे हैं, झोपड़ोंमें कभी रहे ही नहीं। तो महलोंमें उनको रहने देनेसे रैयतका क्या बिगड़ता है?

परंतु राजा यदि रैयतके पास आता है, उसका सुख-दुःख सुनता और अपनेको रैयतका सेवक कहता है, तो फिर उस राजाको उस रैयत-पर राज्य करनेका हक मिल जाता है। वह सेवककी हैसियतसे राज-काज करे। उसे रैयतसे कर लेनेका भी हक मिल जाता है, क्योंकि करके बिना रियासतका काम कैसे चल सकता है? रैयत भी स्वेच्छासे कर देती है और बड़ी खूबसूरतीसे सारा काम चलता है।

यदि राजा लोग कहे कि रैयत कौन होती है, हम उसे तोपसे उड़ा देंगे, तो वह राजाका धर्म-पालन नहीं हुआ। तब रैयत क्या करे? ऐसी स्थितिमें रैयतका धर्म क्या है?

तब रैयतका धर्म हो जाता है राजाका सामना करनेका और उसका राज-पाट बंद करनेका। मगर रैयतके बिगड़नेका मतलब यह नहीं कि वह महलोंमें आग लगा दे और सब कुछ छिन्न-भिन्न कर दे। वह तो अधर्म हो जाता है। राजा यदि उलटे रास्तेपर है तो रैयतका यह धर्म नहीं कि उसे जमीनपर घसीटे। रैयत बाअदब, सत्यसे और अमनसे सामना करे। सत्याग्रह इसीमेंसे पैदा हुआ था।

रैयत अपने धर्मको छोड़कर अकेले हकके पीछे न भागे। जो केवल हकके पीछे दौड़ता है उसको वह मिलता नहीं है। उसकी दशा उस कुत्ते-जैसी होती है जो पानीमें अपनी ही परछाईं देखकर उसको काट खानेके लिए झपटता है। वह उसका काल्पनिक हक है। धर्म-पालनके बाद हक तो अपने-आप उसकी गोदीमें आ पड़ता है। यह एक बड़ी खूबसूरत और अनोखी बात मैंने आज आपको बताई है।

## : ५४ :

### सोमवार ३० जून १९४७

### (लिखित संदेश)

लोगोंकी आखें आज सरहदी सूबेमें होनेवाले जन-मतकी तरफ लगी हुई हैं, क्योंकि सरहदी सूबा कानूनन कांग्रेसका रहा है और आज भी है। बादशाह खान और उनके साथियोंसे कहा जाता है कि पाकिस्तान या हिंदुस्तान, दोमेंसे किसी एकको चुनो। हिंदुस्तानका आज गलत अर्थ हो गया है—हिंदुस्तानका हिंदू और पाकिस्तानका मुसलमान। बादशाह खान इस कठिनाईमेंसे कैसे निकलें? कांग्रेसने वचन दिया है कि डा० खान साहबकी सीधी देख-रेखके नीचे सरहदी सूबेमें जनमत लिया जायगा। सो वह तो नियत तारीखपर ही होगा। खुदाई खिदमतगार मत नहीं देंगे। सो मुस्लिम लीगको सीधी जीत मिलेगी और खुदाई खिदमतगारोंको अपनी आत्माकी आवाजके खिलाफ काम भी नहीं करना पड़ेगा, बशर्ते कि उनकी आत्माकी आवाज है, ऐसा माना जाय। ऐसा करनेमें क्या जन-मतकी शर्तोंका भंग होता है? वही खुदाई खिदमतगार जिन्होंने बहादुरीसे ब्रिटिश सरकारका सामना किया, अब हारसे डरनेवाले नहीं हैं। हार होगी, यह पक्की तरह जानते हुए भी अलग-अलग दल रोज चुनावमें हिस्सा लेते हैं। जब एक दल चुनावमें हिस्सा नहीं लेता तब भी तो हार निश्चित ही होती है।

पठानिस्तानकी नई मांग पेश करनेके लिए बादशाह खानको ताना दिया जाता है। कांग्रेसकी वजारत बननेसे पहले भी, जहांतक मैं जानता हूं बादशाह खानके सिरपर यही धुन सवार थी कि अपने घरमें पठानोंको पूरी आजादी हो। बादशाह खान एक अलग स्टेट बनाना नहीं चाहते। अगर वह अपने घरमें अपना विधान बना सकें तो वह खुशीसे दोमेंसे एक संघको कबूल कर लेंगे। मुझे तो समझमें नहीं आता कि पठानिस्तानकी इस मांगके सामने किसीको क्या उज्र हो सकता है। हां, पठानोंको पाठ सिखाना हो और उन्हें किसी-न-किसी तरह झुकाना

ही हो तो बात अलग है । बादशाह खानपर एक बड़ा इल्जाम यह लगाया जा रहा है कि वह अफगानिस्तानके हाथोमें खेल रहे है। मैं समझता हू कि वह कभी किसी तरहकी धोखाबाजी कर ही नही सकते । वह सरहदी सूबेको अफगानिस्तानमे जज्ब होने नही देगे।

उनके दोस्त होनेके नाते मै मानता हू कि उनमे एक ही कमी है। वे बहुत ही शक्की है, खासकर अग्रेजोके काम और नीयतपर वह हमेशा शुबहा करते है। मै सबसे कहूगा कि वे उनकी इस कमजोरीको, जो कि खास उन्हीमे नही है, नजरअदाज कर दें। यह जरूर है कि इतने बड़े नेताके लिए यह शोभा नही देता। अगर्चे मैंने उसको एक कमजोरी कहा है और जो एक तरहसे ठीक ही है, मगर दूसरी प्रकारसे इसको एक खूबी मानना चाहिए। क्योकि वे चाहे भी तो अपने विचारोको छिपा नही सकते।

सरहदसे मै आपको रामेश्वरम्की ओर ले जाना चाहता हू, जहासे, कहा जाता है कि रामचन्द्रजीने शिलाओका तैरता हुआ पुल बनाया था, ताकि उनकी सेना समुद्र पार करके लका पहुच जाए, जिसे उन्होने जीता, लेकिन अपने पास नही रखा और उन्होने उसे रावणके भाई विभीषणको सौंप दिया। वही मशहूर मदिर आज हरिजनोके लिए खोल दिया गया है। इस प्रकार दक्षिणमे कोचीनके मदिरोको छोडकर तमाम मशहूर मदिर हरिजनोके लिए खुल गए है। राजाजीने खास-खास मदिरोकी जो सूची मुझे दी है, वह इस प्रकार है मदुरा, तिन्नावेली, चिदम्बरम्, श्रीरगम्, पलनी, तिरुलिरेन, तिरुपति, काची और गुरवय्यूर। सूची इतनेपर ही खत्म नही हो जाती है। मद्रास असेम्बलीके हरिजन-स्पीकर अन्य हरिजनो और दूसरे पूजा करनेवालोको साथ लेकर इनमे-से अक्सर मदिरोमे घूमे है। शिक्षित हरिजन और अन्य लोग इस सुधार-के महत्त्वको शायद कबूल न करे, लेकिन हम इसका महत्त्व कम न करें; क्योकि वह सुधार बगैर खून-खराबीके हुआ है । हमें उम्मीद रखनी चाहिए कि कोचीन भी त्रावनकोर, तामिलनाड और ब्रिटिश केरलकी तरह अपने मदिरोको हरिजनोके लिए खुलवा देगा।

मंदिर-प्रवेश-सुधार तबतक अपूर्ण रहेगा जबतक मंदिर, जरूरी अदरूनी सुधारसे, वास्तविक रूपमें पवित्र न हो जाय।

## : ५५ :

### १ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

आप लोगोंने आजका भजन[1] समझ लिया होगा। यह भजन मध्य-प्रांतके तुकडोजी महाराजने बनाया है। इसमे खासी हिंदुस्तानी है। ऐसी हिंदुस्तानी नही है जिसमे ठूस-ठूसकर अरबी और फारसी भरी जाती है। यह तो दिल्लीवालोंकी-सी हिंदुस्तानी है। इसमें खूबी भी है, और मिठास भी है। भजनमें कहा है कि ये तीन बातें जिसने पाई राम उसको मिलता है। तीन बातें यह कि घर-बार चला गया, सब कुछ लुट गया, लेकिन वह हाय-हाय न करके रामका नाम लेता है। संगी-साथी उसे छोड देते है, उसका अपमान करते है तो भी वह ईश्वरको नही छोडता। रोग होता है, मामूली नही—बहुत भयानक, फिर भी वह रामको नही छोडता। जिसने ये तीन चीजे नही पाईं उसने रामको नही पाया। जिसने ये तीन नियामते पाई है उसके घरमे तो राम बैठा ही है। भजनकी ये तीन चीजें आज हमारे लिए बडी फायदेमद है। सो आज जो हम-पर गुजरती है उसमे हम हाय-हाय न करे।

एक भाई लिखते है कि तू रोज-रोज प्रार्थनामें कहता है कि हिंदु-स्तानका जो टुकडा हो गया है उसे किसी तरहसे मिटा देना है। लोग जानते नही कि मैंने ऐसा नही कहा है। जिस चीजको कांग्रेस और लीगने मंजूर कर लिया और भूगोलके दो टुकडे हो गए उसके पीछे सर क्या फोडना? मैं ऐसा आदमी नही हू। दिलके टुकडे थोडे ही

---

[1] "किस्मतसे राम मिला जिसको
　उसने ये तीन जगह पाई।"—तुकडोजी

हुए है। काग्रेसने जो मान लिया है उसे तो होने दो। उससे विगडता क्या है? जमीनका टुकडा कर लिया तो उसमे क्या दिलके टुकडे हो गए? अगर हम एक दूसरेके साथ मिल-जुलकर काम नही करेंगे तो हिंदुस्तानका काम कैसे चलेगा? मान लिया कि मुसलमान लोग मिल-जुलकर काम नही करना चाहते तो हम क्या करे? मैं कहता हू कि जिंदगी एक खेल है। खेलमे हमेशा दो पार्टिया चाहिए। अगर एक (पार्टी) मान ले कि टुकडा नही हुआ है तो दो टुकडे नही हो सकते। लेकिन इसका यह मतलब नही कि हम किसीकी खुशामद करे। हमें तो अपने धर्मका पालन करना चाहिए। जैसा मैंने परसो कहा था उसी प्रकार फिर कहता हू कि धर्म सच्ची चीज है, हक अच्छी चीज नही। कोई आदमी अगर हमे तग करता है तो हमे खुशामद नही करनी चाहिए, वल्कि धर्म-पालन करना चाहिए।

मुझे एक सिख लडकेने लिखा है कि तू सिखोसे महुब्वत तो करता है पर उनके वारेमें करता क्या है? हिंदू और मुसलमान दोनोने कुछ-न-कुछ पाया है, लेकिन सिखको क्या? उसके लिए तू क्या कहता है? उसके लिए कुछ हमदर्दी तो वताओ। मुझे उनसे यही कहना है कि पजावमे सिखोका टुकडा हुआ उसके लिए मै क्या करू? मै कोई हाकिम तो हू नही। मैं क्या करना? मेरे नजदीक तो सिख-धर्म और हिंदू-धर्ममे कोई भेद नही। मै तो सव पढ चुका हू। सिखोका ग्रथ साहव वडा आसान है। उसमे जो भरा है वही सव वैदिक-धर्ममें भी है। गुरु नानकने भी वही कहा है। लेकिन आज यह अलग माने जाते है। यह कौम वहुत छोटी है, लेकिन विख्यात है। इसकी तलवार मशहूर है। आज मेरे पास कनाडामे दो भाई आए थे। वे कहते थे कि कनाडामें काफी सिख पडे है और काफी काम करते है। अफ्रीकामें भी सिख लोग है। जहा-तहा सव जगह सिख दिखाई पडते है। सिख खेती करते है, इजीनियर है, रेल वनाते है, मोटर चलाते है। पर आज तो सिख वहुत ऐश-आराममे भी आ गए है।

मेरे पास मुस्लिम लीगका मथुरामे एक तार आया है कि यहा हिंदू लोग हमारे साथ वडी ज्यादती कर रहे है। मैं नही जानता

कि यह बात ठीक है या गलत। पर यह तरीका अच्छा नही। अगर हम सख्या-बल बताए तो यह ठीक नही। सख्या-बलसे मगरूरी आती है और मगरूरीमे हमारा नाश हो जाता है।

आप जानना चाहेंगे कि आज वाइसरायसे मिलने गया तो वहां क्या हुआ? मै तो नेहरूजी और सरदारके साथ चला गया था। अखबारवालोसे मै कहूगा कि जबतक वहासे कोई अधिकृत वक्तव्य न निकले वे अपनी गप्प न चलाए। आजकी हालतमें अखबारवालोंको चाहिए कि वह ऐसी कोई बात न करे जिससे देशको नुकसान हो।

एक पत्रमें लिखा है कि अग्रेज बदमाश है और तू भी बदमाश है। लेकिन अग्रेज फरेबी और बदमाश है ऐसा माननेको मै तैयार नही। जब वह बदमाश साबित हो जायगे तो वे खुद ही मर जायगे। इसी तरह अगर मै बदमाश हू तो मै भी मर जाऊगा। यह ऐसा खूबसूरत कायदा ईश्वरने बना रखा है। दुनियाको चलने दे। हम कोई फरेब न करें। अपनेमे कोई गलती न रहे। यही धर्मका मार्ग है।

## : ५६ :

### २ जुलाई १९४७

एक भाई मुझे लिखते है कि 'जगतमें बहुत वस्तुए होती है। कुछ ऐसी होती है जिन्हे लोग पसद करते है और कुछ ऐसी जिन्हें पसद नही करते। जिसे लोग कबूल नही करते उसको करना, जिसे लोग पसद नही करते उस कामको हाथमे लेना यह तो मूर्खताकी इन्तिहा है। तू तो लोगोको सच्ची राह बताता था। अब तुझे बुढापेमे भी ऐसा ही करना चाहिए कि लोग जिस रास्तेमे जाय उसमे तुझे समर्थन देना चाहिए।'

लेकिन मुझे यह चीज चुभती है। जो चीज लोकप्रिय बन गई है उसे वजन ( समर्थन ) क्या देना? जो कोई नही करते ऐसा काम करो। अगर तू अकेला है तो कुछ गवाता नही है। कानून तो यह है

कि अकेला है तो भी तुझे काम करना है। फिर लोग चाहे राजी हों या नाराज। किसी शख्सने ऐसा माना कि छोटे-छोटे रेतके कणोसे रस्सी बनाकर बिस्तर बाधूगा, तो यह मूर्खता है। रस्सी तो मूजसे ही बनती है। जो काम करने लायक होता है वह तो करना ही है।

लोग कहते है कि तू तो बहुत दिनोसे हिंदी-साहित्य-सम्मेलनमे था। जब वहा था तो हिंदीको बहुत बडी बताता था। दक्षिणमे पहले हिंदी चलाता था। वहा तो लोग तमिलको मानते थे। वहा तूने हिंदी चला दी। तूने इतना हिंदीका काम किया यह बहुत था, फिर हिंदुस्तानी क्यो?

इसका जवाब यह है कि मेरी हिंदुस्तानी हिंदीमेंसे आई है। मै इदौरके हिंदी-साहित्य-सम्मेलनमे गया। मारवाडी-सम्मेलनमे भी जमनालालजीके प्रेमसे चला गया। वहा जानेकी इच्छा नही थी, लेकिन प्रेमसे जाना ही पडता है। प्रेम मुझको घसीट ले गया। वही मैंने कह दिया था कि मेरी हिंदी तो अजीब प्रकारकी है। जिसे हिंदू भी बोलते है, मुसलमान भी बोलते है। उसे उर्दूमे लिखो, चाहे देव-नागरीमे लिखो—ऐसी मेरी हिंदी है। मेरी हिंदी वह नही है जो साक्षर[1] बोलते है। मै तो टूटी-फूटी हिंदी बोलता हू। मगर आप समझ लेते है। मैंने तुलसीदास पढ लिया है, पर मै हिंदीमे साक्षर नही हुआ हूं। उर्दूमे भी साक्षर नही बना हू, क्योकि मेरे पास उतना वक्त नही है। मैने ऐसी हिंदी चलाई, पर वह नही चली तो मै हिंदी-साहित्य-सम्मेलनसे निकल आया।

संस्कृतमयी बोली तो हिंदी हो सकती है और उर्दू भी आज ऐसी हो गई है जिसे मौलाना साहब बोल सकते है या सप्रू साहब। इसीलिए मैंने कहा कि न मुझे हिंदी चाहिए, न उर्दू। मुझे गगा-जमुनाका सगम चाहिए। पर लोग कहते हैं कि तू तो मूर्ख है। जहा अन्जुमन तरक्की-ए-उर्दू है, हिंदी-साहित्य-सम्मेलन है जो हिंदीका बडा काम करता है, वहा तेरी बात नही चलेगी। और जब पाकिस्तान बन गया है तो भी तू हिंदुस्तानीकी बात करता है?

---

[1] शिक्षित।

लेकिन मेरा दिल तो बागी हो गया है। वह कहता है कि मै क्यो हिंदुस्तानीको छोडू ? वह चीज अच्छी है तो मै उसे क्यो छोड दू ? जब हम प्रयागमे जाते है और सगममे स्नान करते है तो पवित्र हो जाते है। इसी तरह अगर हिंदी और उर्दूका सगम बना लू तो मै पावन हो जाऊगा।

आज तो मुसलमान कहते है कि इस्लामका सबसे बडा दुश्मन गाधी है। लेकिन मै कहता हू कि अगर मै जिदा रहा तो वे लोग मुझ दुश्मनको भी बुलानेवाले है। मेरी गरज तो सबको है। लेकिन मै कहूगा कि हिंदुस्तानमे जो पागलपनका पूर[1] आया है उसमे हम डूब न जाय। बिना मौतके न मर जाय।

अगर मै अकेला रहूगा तो भी यही कहूगा कि मै तो हिंदुस्तानी-को ही राष्ट्रभाषा मानता हू। मेरा राष्ट्र तो हिंदुस्तानमें भी है पाकिस्तानमे भी है। मुझे कोई कही नही रोक सकता। जिन्ना साहब रोके। मै कोई अलग प्रजा थोडे ही बन गया हू। जिन्ना साहब मुझे कैद करे। मै पासपोर्ट लेनेवाला नही हू।

यही हिम्मत आपमें भी होनी चाहिए। हमारी माता—हिंदमाता जिसका झडा लेकर हम घूमे है, कुर्बानी की है तो क्या हम आज यह मान ले कि अब उस हिंदमाताका सिर कट गया है ?

कोई ऐसी गलती न करे कि उर्दूको भूलकर हिंदी ही ले। जो चीज एक आदमी करेगा तो उस एकमेंसे अनेक हो सकते है। मै मर जाऊगा तो भी हटनेवाला नही हू। जैसा मेरा दिल कहता है.वैसे ही आप बने तो अच्छा है। हिंदमाताके लिए भी अच्छा है।

## : ५७ :

### ३ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

आप लोगोने आजका भजन[2] तो सुन लिया। इसमे ऐसी बात है

---

[1] बाढ़। [2] "पानीमें मीन पियासी रे, मोहि सुन-सुन आवे हाँसी।"

कि पानीमें मछली रहे और प्यासी रहे यह बडी हँसीकी बात है। हम ईश्वरकी दुनियामे पडे है, पर उसे जानते नही। ऐसी भरमना पैदा हो जाय तो यह हँसीकी ही बात है। ईश्वर तो हमारे पास पडा है। जैसे नाखून अगुलीसे अलग नही है ऐसे ही ईश्वर भी अलग नही है। नाखून अलग होता है तब वेदना होती है, ऐसे ही ईश्वर अगर दूर रहेगा तो वेदना होगी ही।

आज हिंदुस्तानमे भी वेदना फैल रही है। लेकिन यह सब शहरोमे है। ७ लाख देहात तो शहरोके इर्द-गिर्द नही रहते। हिंदुस्तान तो १६०० मील लबा और १५०० मील चौडा है। हिंदुस्तानके दो टुकडे हो गए तो नक्शा थोडे ही बदल गया। वह तो जैसा आज है वैसा ही रहेगा। अगर हम सब यह बात समझ ले और भूल न जाए तो सब झगडा निपट जाता है।

(एक ब्राह्मणने गाधीजीको पत्र लिखते हुए पूछा था कि महाशय! हमारा पढने-लिखनेका पहला हक है मगर कालिजोमें हमारे लड़कोंको स्थान नही मिलता, आप इसपर कुछ कहिए। गाधीजीने इसका उत्तर देते हुए कहा) एक भाईने मुझे लिखा है कि ब्राह्मण तो ४० करोडमे एक मुट्ठीभर है। समुद्रमे बिंदुवत् है। इसलिए अल्पमत है।

मै अगर अकेला हू तो मै भी अल्पमतमें हूं। लेकिन बिंदु अपने आपमे अल्पमतमें नही। जब वह पानीसे अलग हो जाता है तभी अल्पमतमें होता है और सूख जाता है। अगर वह साथ रहता है तो वह बिंदु नही, समुद्र ही है। हिंदुओंके समुद्रमें ब्राह्मण अल्पमतमे कहा है? जितना बडप्पन सबमें है वह उसमे भी है।

एक जमाना था कि ब्राह्मणके लडके ही पढने जाते थे। वह जमानेसे पढते आते थे, इसलिए जब नई चीज आई तो वह भी पढने लगे। लेकिन अब तो ब्राह्मणेतर भी शिक्षा लेते है। तब ब्राह्मण या दूसरेका दिल यो क्यो कहे कि मेरे लडकेकी भरती क्यों नही होती? मै तो दो-तीन दिनसे आपको हककी बात समझा रहा हू। हक-जैसी कोई चीज नही है। अगर ब्राह्मण हकसे पढने आता है तो मै पूछूगा कि यह

कहासे पैदा हुआ? जन्मसे' ब्राह्मणका हक है या किसी औरका हक है, मैं नही मानता। धर्मके साथ कर्म करनेसे हक पैदा होता है। पापीको भी पाप-कर्मका फल भोगनेका हक है ऐसा आप मानते हो, लेकिन मै तो कहूगा कि जिसने पुण्य-कर्म किया है उसे पुण्य-फलका हक हो जाता है।

ब्राह्मणका हक क्या है यह कोई मुझसे पूछे तो मै कहूगा कि वह ब्रह्मको जाने, यही उसका हक है। ब्राह्मणके तो दो ही धर्म है—एक तो ब्रह्मविद्याको जाने और दूसरे उसे जानकर दूसरोको सिखाए। जो ब्राह्मण इस तरहसे धर्मका पालन करता है तो उसे जिंदा रहने-का हक हो जाता है।

पहले जब ब्राह्मण ऐसा होता था तो लोग उन्हे जिंदा रखने-के लिए सीधा आदि देते थे, और वे ब्राह्मण भी ऐसे थे कि जितना उन्हे चाहिए उतना ही लेते थे, बाकी वापस कर देते थे। ब्राह्मणका हक तो ब्रह्मविद्या सिखाना है। जब ऐसा हक है तो रोना क्या कि कालेजमें नही जा सकने। सब कालेजमें कहा जा सकते है? ७ लाख देहातोमें रहनेवाले लडके-लडकी कालेजमे कहा जा पाते है। वह तो नई तालीमसे ही मुमकिन है। पर आज मै उसकी बात नही करता।

इसलिए मै कहता हू कि कोई अपनेको अल्पसख्यक न माने। सब एक है। हमारे धर्ममें जो सबसे नीचा है उसे सबसे ऊचा बताया गया है। इसलिए हम सब भगी बन जाय, मेहतर बन जाय, तभी हम सबकी खैर है। ब्राह्मणके लिए भी खैर है, फिर उसके लिए कोई दुविधा पैदा होनेवाली नही है।

: ५८ :

४ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

आज मै आपलोगोको एक बहुत बडी बात कहना चाहता हू। कुछ

लोग मुझे सुनाते हैं कि जो कुछ हो गया और हो रहा है और जो डोमिनियन स्टेटस[1] हमें मिलने जा रहा है, क्या उसमेंसे राम-राज्य पैदा हो जायगा? पूछनेवाले मुझे ताना देते हैं और मुझे कबूल करना पड़ता है कि मैं ऐसा नहीं कह सकता कि इसमेंसे राम-राज्य पैदा होगा। मैं सब चिह्न उसके विरुद्ध ही पाता हूं। अंग्रेजोंने हमारे देशके दो टुकड़े बनाए और पीछे उनके दो डोमीनियन स्टेटस भी बन जाते हैं। दोनों एक-दूसरेके दुश्मन बन गए, ऐसा मानकर जब वे चलते हैं तब उसमेंसे राम-राज्य कैसे पैदा हो सकता है? डोमीनियन स्टेटसका मतलब अंग्रेजोंके मातहत तो नहीं, उनके साथ हमारा बराबरीका रिश्ता हो जाता है। वह करीब-करीब आजादी-जैसा ही है, इसमें मुझे कोई शक नहीं है। परन्तु ब्रिटिश कामनवेल्थमें बाकी जो डोमीनियनें हैं, वे सब तो ऐसी हैं जिन्हें हम एक कबीलेके कह सकते हैं। हिंदुस्तान तो एशियाका एक देश है। तब वह डोमीनियन कैसे रह सकता है? यदि दुनियामें जितने भी राज्य हैं उन सबका एक डोमीनियन बनता तब तो बात दूसरी थी और उसमेंसे राम-राज्य भी पैदा हो जाता। मगर जो कुछ बना है उसमेंसे राम-राज्य या खुदाई राज्य नहीं निकल सकता। पहले तो ब्रिटिश गवर्नमेंटने यह माना था कि वह ३० जून १६४८ तक भारतीयोंके हाथोंमें सारी सत्ता सौंप देगी। मगर अब उसने ऐसा ठान लिया कि वह जितनी जल्द हिंदुस्तानसे चली जाय उतना ही अच्छा है। मगर जल्दीसे छोड़कर जाय कैसे? इसके लिए उन्होंने फैसला किया यदि डोमीनियन स्टेटस आज वे बना दें तो उसमें कोई खटका नहीं रहता, क्योंकि डोमीनियन बननेपर कुछ-न-कुछ ताल्लुक तो उनका रह ही जाता है।

मैं नहीं चाहता कि हिंदुस्तान एक कुएके मेंढककी तरह रहे। जैसे एक कुएका मेंढक कहता है कि कुएमें तो मेरा राज्य चलता है, बाहर चाहे कुछ होता रहे उसका मुझे पता नहीं। मगर हमारे यहां तो जवाहरलालजी तथा अन्य नेता लोग यह कह चुके हैं कि हम किसीके दुश्मन बनकर नहीं

---

[1] औपनिवेशिक स्वराज्य।

रहेंगे, अर्थात् दुनियामें सबके दोस्त बनकर रहेंगे। उसमें अंग्रेज भी आ जाते हैं। तो क्या वे एक विश्व-संघ बनाना चाहते हैं? एशियाई सम्मेलनमें मैंने कहा था कि ऐसा विश्व-संघ बन सकता है और उसमें किसी मुल्कको अपने यहां फौज रखनेकी जरूरत नहीं पड़ेगी।

कुछ देश आज अपने आपको डेमोक्रेट[1] कहते हैं। केवल कहनेसे ही वे डेमोक्रेट थोड़े ही बन जाते हैं। जहां लोक-राज्य होता है, वहां फौजकी क्या जरूरत? जहां फौजी राज्य होता हो वहां लौकिक या पंचायती राज्य हो नहीं सकता। फौजी राज्योंका कोई विश्व-संघ नहीं बन सकता। जापान और जर्मनीकी फौजी हकूमतोंने अपनी दोस्ती बताकर अन्य देशोंको अपने साथ मिलानेकी चाल चली थी, मगर वह चाल आखिर चली थोड़े ही। नतीजा यह कि आज जिस जगहपर भी नजर डालता हूं मैं आज राम-राज्यकी कोई निशानी नहीं पाता हूं।

कुछ लोग मुझसे पूछ रहे हैं कि तुमने ३२ सालतक सत्य और अहिंसाका नाम लिया। क्या उसीका यह नतीजा नहीं देखा जा रहा है कि आज देशमें हर जगह छुरों और गोलियोंसे मार-काट मची हुई है। इस तरहसे कौन कबतक यहां जिंदा रहेगा? इसपर मैं यह कहूंगा कि आज जब इतनी बेचैनी फैल रही है, तब वह अहिंसा तो नहीं हुई। तो क्या ३२ वर्षतक मेरा झूठ और फरेबका राज चलता रहा? ३२ वर्ष-तक करोड़ों आदमियोंने जो मुझसे अहिंसाकी तालीम ली, क्या वे एक-एक आज झूठे और हिंसक बन गए? मैं तो यह कबूल कर चुका हूं कि हमारी अहिंसा दुर्बलोंकी थी। मगर सचाई तो यह है कि दुर्बलोंके साथ अहिंसाका कभी मेल बैठता ही नहीं। अतः उसे अहिंसाकी बजाय निष्क्रिय प्रतिरोध कहना चाहिए। मगर मैंने जो अहिंसा चलाई थी वह दुर्बलोंकी नहीं थी, जब कि निष्क्रिय प्रतिरोध दुर्बलोंका होता है। उसमें सबलता नहीं आई थी। इसके अलावा निष्क्रिय प्रतिरोध सक्रिय और

---

[1] जनतंत्र।

सशस्त्र प्रतिरोधकी तैयारी होती है । नतीजा यह हुआ कि लोगोके दिलोमें जो हिंसा भरी थी, वह एकाएक बाहर निकल पडी ।

निष्क्रिय प्रतिरोध भी तो हमारा असफल नही हुआ। हमने अपनी आजादी करीब-करीब प्राप्त कर ली। आज जो हिंसा दिखाई दे रही है, वह भी नामर्दोंकी हिंसा है। एक मर्दकी हिंसा भी होती है। मान लीजिए, चार-पाच आदमी अपनी तलवारोसे लडते-लडते मर जाते है। उसमें हिंसा जरूर है, परतु वह मर्दोंकी हिंसा है। जब दस-बारह हजार सशस्त्र आदमी एक गांवके निहत्थे लोगोंपर हमला करके स्त्री-बच्चो-समेत उन्हे काट डालते है तो वह नामर्दोंकी हिंसा हुई। अमरीकाका एटम बम एक तरफ और सारा जापान दूसरी तरफ। वह नामर्दोंकी ही हिंसा थी। मर्दोंकी अहिंसा तो देखनेकी चीज होती है। उसी अहिंसा-को देखते हुए मै मरना चाहता हू । उसके लिए हृदयमे बल होना चाहिए। वह एक बडा खूबीदार हथियार है । यदि सबलोकी अहिंसाको लोगोने जान लिया होता तो हालमे ही जो जान-मालका नाश हुआ वह कभी नही होता।

मगर आज तो बहुत बुरी हालत पडी है इस देशकी। हिंदुस्तान-जैसे मुल्कमे, जहां ३२ सालसे मै सत्य और अहिंसा सिखाता रहा हू, कपडा और अनाजका राशन करनेकी क्या आवश्यकता थी यदि लोगो-का एक-दूसरेपर विश्वास होता। यदि हम दयानतदारीसे अन्न खाए और कपडा पहने तो हिंदुस्तानमे दुष्काल हो नही सकता। यदि सब लोग सचाईसे रहे और अपने-आप अपनी मदद करने लगे तो हमे सिविल सर्विसकी तरफ देखनेकी भी जरूरत न हो। स्वर्गीय माटगूने तो सिविल सर्विसको लकडीका ढाचा कहा था। वे अपनेको जनताके सेवक नही मानते और न वे इस मतलबके लिए रखे जाते है। वे तो जैसे भी हो विदेशी राजको यहा बनाये रखनेके लिए होते है। वे केवल दफ्तरोंमें बैठे चपरासियोके जरिए हुक्मनामे जारी करते रहते है। यदि आप लोग स्वय अपनी टांगोपर खडे हो जाए और सिविल सर्विस-पर निर्भर रहना छोड दें तो फिर हमें यहा न तो किसी चीजका राशनिंग चाहिए और न आजकलकी सिविल सर्विस चाहिए। मगर राजतन्त्र

चलानेके लिए सिविल सर्विसकी जरूरत तो रहेगी ही। यदि वे समयके साथ वदल जाए और जनताकी सेवा करनेके लिए तत्र चलाए तो वह तत्र हो जाता है।

## : ५६ :

### ५ जुलाई १९४७

भाइयो और वहनो,

आज वाइसराय साहवकी पत्नी यहा आई थी। उनके आनेका मेरे खयालमे कोई सवव नही था। मैंने टेलीफोनपर उनको कह भी दिया था कि आप यहा आनेका क्यो कष्ट करती है। उन्होने उत्तर दिया कि जव आप हमारे पास इतनी दफा आ चुके तो मुझे भी आपके यहा आना ही चाहिए। मैंने कहा कि मै तो अपने कामसे वाइसराय साहवके पास आता था और आना चाहिए था। मगर वे न मानी और आखिर आई। वे वडी सादगीसे रहनेवाली है और हमारे पास वैसे ही आकर वैठ गई जैसे हम यहा वैठे हुए है। उन्होने सव वाते दरयाफ्त की। यह भी पूछा कि हमारा जीवन यहा कैसे वीतता है और हर चीजमे दिलचस्पी ली। मैने वताया कि मै तो यहा मेहतरोके वीचमें रहता हू। परन्तु मैंने यह कहा कि मै तो एक मदिरमे रहता हू जो काफी स्वच्छ है और होना भी चाहिए। यदि आपको कुछ देखना है तो यहा पास ही भगियोकी एक वस्ती पडी है, उसे जाकर देख ले। उसे ढाकर दूसरी वनवा सकनेका अधिकार तो आपने छोड दिया और अच्छा किया। उन्होने रसपूर्वक सव कुछ वहा जाकर देखा। मै इसलिए उनके साथ नही गया कि लोगोकी भीड वहा जमा हो जाती। इसके वाद वे हरिजन-निवास गई जहा-पर कि हरिजन लडकोको काम सिखाया जाता है। वहा तो उनके खुश होने-जैसी चीज ही थी। वहा एक मदिर और स्तभ भी वन चुके है। साराश यह कि वे वहासे खुश होकर लौटी।

मेरा इरादा इस चिट्ठीका[1] जवाब आज देनेका नही था, परतु मैंने ऐसा महसूस किया कि मुझे उसको कलके लिए नही रोकना चाहिए। पजाब-विभाजनको लेकर सिखोंके बारेमें जो कुछ हुआ है, वह एक दर्दनाक बात है। हिंदू और सिखमे पहले कोई भेद नही था, मगर मेकालेने सिखोका जो इतिहास लिखा उससे यह सारा जहर पैदा हुआ। चूकि वह एक बडा इतिहास-लेखक था, इसलिए उसकी बातको सबने स्वीकार कर लिया। सिखोका जो गुरु-ग्रन्थ-साहब है वह सब हिंदू-शास्त्रोके आधारपर बना है। सिख बहादुर तो है मगर छोटी तादादमे है। पजाबके दो टुकडे होनेसे वहा जो सिख रहते है उनके भी दो टुकडे हो जाते है। चिट्ठीमे लिखा है कि पूर्वी पजाबमे जो सिख आ गए वे तो ठीक है, परतु पश्चिमी पजाबके सिखोका क्या होगा? यदि उनके साथ कुछ हुआ तो काग्रेस कुछ मदद करेगी या नही? मै यही कहूगा कि जो बहादुर होते है उनको किसी-की मददकी जरूरत नही होती। उन्हे केवल ईश्वरकी मदद होनी चाहिए। फिर आप ऐसा मानते ही क्यो है कि पश्चिमी पजाबमे सिखोके साथ कुछ होनेवाला है। यदि उनके साथ कुछ होगा भी तो क्या हिंदुस्तान-मे जो इतने लोग पडे है वे सब देखते ही रहेंगे? इसलिए सिख भाइयो-को कोई फिक्र करनेकी जरूरत नही है।

जो बिल[2] पेश हो चुका है वह शीघ्रतासे कानून बन जायगा। उससे हिंदुस्तानमे दो डोमीनियन बन जायगे, अर्थात् ब्रिटिश कामनवेल्थ-के दो नये मेम्बर बन गए। बिलमे कुल २० कलमें[3] है, जिनको मैंने पढा है। मै यह नही कह सकता कि उसमे कोई फरेब है या अग्रेजोने उसमे ऐसी भाषा प्रयोग की है जिसका उल्टा-सीधा अर्थ निकलता हो। आज किसी अग्रेजका हमे फसानेका इरादा नही है। मगर जहर तो उस बिल-में है ही। उस जहरको हमने पी लिया और काग्रेसने भी। अग्रेजोने डेढ-सौ सालतक यहा हकूमत चलाई और अग्रेजी राजने सियासी[4] तौर-

---

[1] जिसका जिक्र आगेकी पक्तियोमें है। [2] ब्रिटिश पार्लामेंटमें उप-स्थित भारतीय स्वाधीनता बिल। [3] धाराएं। [4] राजनैतिक।

पर यह मान लिया कि हिंदुस्तान एक मुल्क है। उन्होंने उसे एक मुल्क बनानेकी कोशिश की और उसमें वे सफल भी हुए। मुगल-राजने भी ऐसी कोशिश की थी, मगर उसे इतनी सफलता नही मिली।

इस मुल्कको एक बनाकर फिर उसे मिटा डालना कोई अच्छी बात नही थी। मैं यह नही कहता कि उन्होंने इरादतन ऐसा किया है। केबिनेट मिशनने भी हिंदुस्तानको एक मुल्क माना था और उसने अपनी दलीलें भी दी थी। मगर आज वे सब दलीलें मिट गई। दो आजाद और समान अधिकारवाले डोमीनियन पैदा करनेका जहर इस बिलमें मौजूद है। यह माना कि कांग्रेस और मुस्लिम-लीग दोनोने इस बिलपर रजामदी दे दी थी, मगर कोई बुरी चीज स्वीकार करनेसे वह अच्छी थोडे ही हो जाती है।

कायदे आजम जो कहते थे वही चीज आज वास्तवमें हो गई। उनकी पूरी-पूरी जीत हुई है, ऐसा कहनेमे मुझे कोई हर्ज नही लगता। मेरी दृष्टिमे तो इस बिलसे तीनोकी परीक्षा हो जाती है, जिनमें अंग्रेज भी आ जाते है। डोमीनियन स्टेटस तो इससे बन जाता है मगर वह तो चार दिनकी बात है, या कुछ महीने कह सकते हैं। विधान-परिषद् जो विधान बनायगी उसपर गवर्नर जनरलको दस्तखत देना होगा। वह उसमे एक अल्प-विराम भी नही बदल सकता। ऐसा ही पाकिस्तानकी विधान-सभामे होगा। विधान बनानेके बाद यदि दोनो अपनी आजादीकी घोषणा करें तो उनको कोई रोक नही सकता। दोनो करेंगे भी यही, ऐसा मै मानता हू। मगर यह तो आगेकी बात है जिसे कोई भी अभी निश्चित रूपसे नही कह सकता, परतु यह तो साफ है ही कि हिंदुस्तानके दो टुकडे किए गए और दोनोमें खुदमुख्तार डोमीनियन बने। इसके अलावा अंग्रेजोने एक और बातमें भी अपनी परीक्षा करवा दी है। हिंदुस्तानमें जितने देशी राज्य पडे है वहा भी हकूमत हिंदुस्तान अथवा भारतीय सघकी होनी चाहिए। यह एक खतरा रह जाता है जिसे रखनेकी कोई जरूरत नही थी, ऐसा मै मानता हू।

पाकिस्तानवालोको उनकी इच्छाके मुताबिक पाकिस्तान तो

मिल गया। जमीन उनको चाहे थोडी मिली हो मगर हक तो बराबरी-का मिल गया। कलतक जब पाकिस्तानके लिए लड़ाई लडी जा रही थी, मै पाकिस्तानको समझ ही नही पाया था। समझमें तो आज भी नही आता। पाकिस्तानका रग-ढग तो तब दिखाई देगा जब उसकी विधान-सभा कायदे-कानून बना लेगी। मगर पाकिस्तान-की असली परीक्षा तो यह होगी कि वह अपने यहा रहनेवाले राष्ट्रवादी मुसलमानो, ईसाइयो, सिखो और हिंदुओ आदिके साथ कैसा बरताव करते है। इसके अलावा मुसलमानोमे भी तो अनेक फिरके है। शिया और सुन्नी तो प्रसिद्ध है। और भी कई फिरके है, जिनके साथ देखते है, कैसा सलूक होता है। हिंदुओंके साथ वे लडाई करेगे या दोस्तीके साथ चलेगे ? क्या वे ऐसा तो नही मान बैठेंगे कि हम तो सरदार है और बाकी सब गुलाम है? इन सबका जवाब उन्हें अपनी विधान-सभामे देना होगा।

हिंदुस्तानको भी इस बिलके जरिएसे यह परीक्षा देनी होगी कि यहा जो मुसलमान है उनको वे भाई समझेंगे या दुश्मन ? मेरे खयालमें तो सब धर्म एक ही है। वृक्षकी शाखाए अलग-अलग होती है, परतु मूल पेड एक ही होता है। सब मजहबोंमे एक ही ईश्वर है। यूरोपमे भी पहले इस तरहके मजहबी लड़ाई-झगड़े होते थे मगर अब वहा एक दूसरा वायुमडल बन रहा है और लोग इन मजहबी झगडोसे इतने तग आ गए है कि वे अब ईश्वरतकको छोडते जा रहे है। जब दुनियाका यह रग है तो क्या हिंदुस्तान ही पीछे पडा रहेगा ?

जो लोग हिंदुस्तानको एक नेशन मानते है उनके यहा तो बहुमत और अल्प-मतका सवाल ही पैदा नही होता। इस दृष्टिसे देखा जाय तो यह बिल सब पार्टियोकी अतिम परीक्षाका साधन है। यदि हम सब अपने इम्तहानमें सफल होते है तो हम इसे ईश्वरकी भेजी हुई भेंट मान सकते है और अगर समझसे काम न लें तो वह फांसी बन जाती है।

: ६० :

६ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

मेरा खयाल है कि कल सीमाप्रांतमें रेफरेंडम (जनमत लेनेका कार्य) शुरू होनेवाला है। मैं तो बादशाह खानको और उनके सब मिनिस्टरोंको सलाह दे चुका हूं कि उनके लोग किसी भी डिब्बेमें अपने मत न डालें।

(मंचपर बैठे हुए एक सज्जनने गांधीजीको याद दिलाई कि जनमत-संग्रहका कार्य आज शुरू हो गया है। इसपर गांधीजीने कहा—) मुझे तो ऐसा खयाल रह गया था कि कल ७ ता०से शुरू होनेवाला है। कुछ भी हो, मैं तो यह कहने जा रहा हूं कि वे तो अमन रखनेवाले हैं। मगर मुझे यह देखना है कि वह अमन बुजदिलोंका है या बहादुरोंका। इस तरफ तो मैंने मंजूर कर लिया कि वह बुजदिलोंका अमन था।

मैंने तो उनसे कह दिया कि वे अपना मत डिब्बेमें न डालें। लीगसे भी मैंने यही बात कही है। मगर वे डालें या न डालें। खुदाई खिदमतगारोंसे तो मैं यही कहूंगा कि यह आपसकी लड़ाई क्यों?

कल जो बिल पेश किया गया है उसके मुताबिक हिंदुस्तानके दो टुकड़े हो जायंगे—एक पाकिस्तान और दूसरा हिंदुस्तान। अंग्रेजोंको दो टुकड़े करनेसे क्या मतलब था? सारा हिंदुस्तान एक था मगर उसके साफ दो टुकड़े बना दिए गए। हम तीस सालसे जो लड़ाई चला रहे थे वह सारे हिंदुस्तानकी आजादीके लिए थी। उसका नतीजा यह हुआ कि देशके दो टुकड़े हो गए। हमारा दिल टूट गया है, इसलिए हमारी जमीनके भी दो टुकड़े हो गए हैं। ३० बरसतक हमने शोर मचाया कि हम अपने देशका कब्जा ले लें। मैं अपने दिलसे पूछता हूं कि क्या इसीलिए तू कोशिश कर रहा था? मैं १७ बरसका था, तबसे मैं

कोशिश करता रहा हूं। मगर क्या सारी लड़ाई इसीलिए थी कि आखिरमे देशके दो टुकडे हो जाय? तीस बरसकी लडाईका नतीजा क्या यह होना चाहिए था कि एक कैंपमे हिंदू, एकमे मुस्लिम हो जायं और सिख किसीमे भी शामिल हो जाय?

देशके टुकडे करनेके साथ-साथ हमारे लश्करके भी दो टुकड़े हो रहे है। यह क्या हमारे आपसमें लडनेके लिए? सारी काग्रेसका इतिहास फौजके खिलाफ आदोलनसे भरा हुआ है। जबसे काग्रेस बनी—और उस समय दादाभाई नौरोजी, जो राष्ट्रके 'दादा' कहे जाते थे, ह्यूम, फीरोजशाह मेहता और तिलक भी मौजूद थे—उस वक्तसे ही उसकी माग थी कि हिंदुस्तानमे तालीमका जो इतजाम है उसपर सबसे कम खर्च किया जाता है। दूसरी ओर फौजपर इतना ज्यादा खर्च क्यो?

उस फौजकी तो पैदाइश इसलिए हुई थी कि ४० करोड़ हिंदुस्तानियोंको दबा दे। दूसरे, इस देशमे फ्रेंच थे और थोडी-सी जगहपर पोर्चुगीज भी थे। इधर एक क्लाइव साहब थे, उन्होने सोचा, फ्रेंच सेटिलमेंट और पोर्चुगीज सेटिलमेंट कायम हो रहे है। उनके खतरेको बचानेके लिए और अपने-आपको कायम रखनेके लिए फौज तैयार की। उस तरफ अफगानिस्तानमें ट्राइब्ज (कबीले) है। यह भी डर था कि रूस हमला न करे। इन सब कारणोसे यहा इतनी बडी फौज तैयार की गई थी।

इतनी बडी फौजके रहते हुए भी हम अग्रेजोके साथ निबट लिए। मगर हमारी अहिंसा बहादुरीकी अहिंसा नही थी, वह बुजदिलोकी अहिंसा थी। मैंने पैसिव रेजिस्टेन्स (निष्क्रिय प्रतिरोध)का रास्ता बताया था। उसको अख्तियार करके हमने अग्रेजोके साथ हथियारोकी तैयारी नही की। फिर भी अभी आर्मी (फौज) रह ही जाती है। यह क्यो? यह आपके लिए सोचनेकी बात है। मेरे लिए दु ख और शर्मकी बात है। मै सोचता हू, हमारी आखोमे खुशहाली क्यो नही है? हम आजाद हो गए है। हमारे देशके टुकडे हो गए है। मगर यह टुकड़े दोस्त बननेके लिए किए गए है या दुश्मन बननेके लिए?

हमारे आजके तरीकोका मतलब तो लश्कर बढाना हो रहा है। दोनो ही लश्कर बढायगे। अगर एक ओर बढेगा तो दूसरी ओर भी बढेगा। पाकिस्तानवाले कहेगे कि हम हिंदुस्तानवालोसे बचनेके लिए लश्कर बढाते है, क्योकि हम करोडो तो नही है। हिंदुस्तानवाले भी इसी तरहकी बाते कहेंगे। आखिर परिणाम लडाई आता है।

हम अपना पैसा तालीममे खर्च करेंगे, या दियासलाईमें, बारूदमे करोडो रुपये लगा देगे? फिर तोपोंमें और फिर बदूकोमे खर्च करेंगे? और फिर अपने नौजवानोको तालीम भी वही देगे?

पाकिस्तानने तो अमनको नही माना। कहते है कि कुरानशरीफमे ऐसा नही लिखा। मगर मै पूछना चाहता हू कि आप क्या करनेवाले है? क्या आप भी वही करेंगे?

अगर हमे डोमीनियन स्टेटस (औपनिवेशिक स्वराज्य) मिलता है तो भी हमारे दो टुकडे होते है। यदि हम आजाद होते है तो भी दो ही रहते है। मगर क्या हम लडनेके लिए अलग होते है? अग्रेजोने जो कुछ किया है उसमे मुझे अपने लिए सतोष या शानका कोई कारण मालूम नही होता। मुझे भविष्य बहुत ही मनहूस दिखलाई पडता है। उसे बताते हुए मै कापने लगता हू। अगर हिंदुस्तान और पाकिस्तान लडते-लडते बार-बार एक दूसरेको शिकस्त दें तो इसमे कौन-सा रस है? सब जगह यदि ख्वारी-ही-ख्वारी हो तो इसे क्या मै आजादी कहू? मै नही जानता। भगवान् हमे अधेरेसे उजालेमे ले जा।

'तमसो मा ज्योतिर्गमय।'

## : ६१ :

७ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

कल शामको मैने आप लोगोको बताया था कि आनेवाली आजादी हमारे दिलोमें खुशी क्यो नही पैदा कर रही है। आज मै आपको

यह बताना चाहता हू कि अगर चाहे तो हम बुराईसे भलाई किस तरह बना सकते हैं। जो हुआ सो हुआ। उसपर ख्याल दौडाने-से या किसीको बुरा-भला कहनेसे कुछ बननेवाला नही। कानून-की भाषामे आजादीके आनेमें अभी थोडे दिन बाकी है। असलमे तो जब सब पक्षोने बात मजूर कर ली है तो वे उसपरसे वापस नही जा सकते। केवल भगवान ही है जो इन्सानकी तय की हुई बातको उलट सकता है।

मबसे आसान रास्ता मुसीबतसे निकलनेका अब यह है कि काग्रेस और मुस्लिम लीग आपसमें समझौता कर ले—बिना वाइसरायके दखल या मददके। ऐसा करनेमें लीगको पहला कदम उठाना होगा। मेरा यह मतलब हरगिज नही है कि पाकिस्तानको मिटा दिया जाय। उसे तो एक पक्की बात और बहसके बाहर समझना चाहिए। लेकिन अगर काग्रेस और लीगके ज्यादा-से-ज्यादा दस नुमायदे एक मिट्टीकी झोपडीमे बैठे और निश्चय करें कि हम यहासे उठेगे नही, जबतक कि हम समझौता न कर लें, तो मै दावेसे कहता हू कि यह फैसला उस बिल या कानूनसे जो आज ब्रिटेनकी पार्लमिंटके सामने पेश है और जिससे दो बराबरकी रियासतें, या दो डोमीनियन बन रहे है, हजार दर्जे बेहतर होगा।

अगर हिंदू और मुसलमान जो मेरे पास आते है या मुझे लिखते है, मुझे धोखा देनेकी कोशिश न कर रहे हो तो मुझे तो साफ यही नजर आता है कि बटवारेसे कोई भी खुश नही। उसे लाचार होकर स्वीकार किया जा रहा है।

पर यह 'अगर'का शब्द जो मैंने इस्तेमाल किया है सो जरूर असभव-सा लगता है। मुझसे कहा जा सकता है कि जब लीगने ब्रिटेन-से अपनी हुकूमत कायम करवा ली है तो वह फिर अपने 'दुश्मनो'के पास क्यो आए और किस तरह उनके माथ भाई-भाई और दोस्तोके जैसा समझौता करे?

एक दूसरा तरीका भी है। वह भी शायद उतना ही मुश्किल हो। फौजका बटवारा हो रहा है—उस फौजका जो आजतक एक रही,

जिसका मकसद भी एक ही रहा—चाहे वह कुछ भी था। इस बटवारे-से तो हर एक देश-प्रेमीके दिलमें डर ही पैदा होगा। ये दो सेनाए किसलिए बनाई जा रही है? इसलिए नही कि अपने मुल्कके दुश्मन-का सामना करे, बल्कि इस मतलबसे कि वे एक दूसरेसे लडे और दुनियाको दिखाए कि हम लोग सिवा आपसमें लडने और एक-दूसरेको मार-मिटानेके और किसी कामके लायक ही नही।

मैंने यह भयानक चित्र आपके सामने जैसा है वैसा जान-बूझकर खीचा है ताकि आप उसे पहचानें और उससे बचें। बचनेका तरीका तो लुभानेवाला है ही, कम-से-कम मेरी नजरोमे क्या हिंदू जनता और वे सब लोग, जिन्होंने आजादीकी लडाईमे हिस्सा लिया, इस डरावनी तसवीरको समझकर आज कसौटीपर पूरे उतरेंगे? क्या वे आज कहनेको तैयार होगे कि अब उन्हे फौजकी जरूरत ही नही, या कम-से-कम यह प्रतिज्ञा ले लेंगे कि उसका उपयोग अपने मुसलमान भाइयो-के खिलाफ कभी नही करेंगे, चाहे वे सघमें रहते हो या पाकिस्तानमें? मेरी इस मागके शायद एक ही मानी किए जायगे वह यह कि ऐसा करनेसे हिंदू जनता और उसके साथी ३० सालकी कमजोरीको एक सुदर महाशक्ति बना सकेंगे। हो सकता है कि मेरा जो तरीका मसलेको हल करनेका है उसे आप मूर्खता समझें। जो भी हो, इतना तो मै कहूगा कि ईश्वर इन्सानकी मूर्खताको दानापन या बुद्धि-मानी बना सकता है। और उसके हाथोसे इतिहासमे ऐसा हुआ भी है। जो लोग फौजके खतरनाक बटवारेपर तुले हुए है ताकि आपस-आपसमें लडें, इससे बचनेके लिए भी मेरी बताई हुई कोशिश करनी चाहिए।

## : ६२ :

८ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

मै आज आपसे क्षमा मागता हू, क्योंकि मै १० मिनट देरसे आया।

आज मेरे पास इतना काम था और इतने लोग मिलने आए कि शांति नही मिली। आजकल मै जो कुछ बोलता हू सोच-विचारकर बोलता हू। पहले कुछ'नोट लिख लेता हू और फिर उसे बोलता हू। मै आज लिखता ही रहा और उसके बाद हाथ-मुह धोने गया, क्योकि हाथ-मुह तो धोना ही चाहिए न, और इसी बीच लडकिया मुझे कहने आई कि समय हो गया। किंतु मैंने सुना नही। इसीलिए आज कुछ देर हो गई।

आज मै कुछ कठिन बात करना चाहता हू। एक भाईने अग्रेजीमे पत्र लिखा है। वह लिखते हैं—"मै राष्ट्रभाषा नही जानता। इसलिए अग्रेजीमे खत लिखता हू।" उन्होने कहा है कि मै तमिल जानता हू—अगर मै तमिलमे कुछ लिखूगा तो आपको पढ़नेमे कठिनाई होगी—आप तमिल कुछ जानते है तो भी कठिनाई होगी। आप जानते ही है कि मै चाहता हू कि जो भाई मुझे चिट्ठी लिखे वे अपनी भाषामें लिखे। अच्छा तो यह है कि वे उत्तरी भारतकी भाषा—हिंदी और उर्दूके बीचकी भाषा—राष्ट्रभाषा हिंदुस्तानीमे लिखे। उस खतके लिखने-वालेने अपने खतमें अग्रेजी लेखक बर्नार्ड शाकी कुछ पक्तियोको उद्धृत किया है। बर्नार्ड शा अग्रेजोको ऊचा समझते है। अग्रेज सम-झते है कि उनके-जैसा खूबसूरत कौन है। वे बहुत अच्छा मजाक करते है। कहते है कि अग्रेज कुछ गलती नही करते। वे धर्मके लिए ही सब कुछ करते है। वे कहते है कि अग्रेज धर्मके लिए लडाई करता है। लूट करता है तो भी वह धर्मके नामपर, क्योकि किसीके पास अधिक पैसा क्यों रहे। हमे गुलाम बनाता है तो भी धर्मके नामपर—अच्छा बनाने-के लिए। राजाका खून करता है तो वह भी धर्मके लिए अर्थात् जनमत-के लिए। वे सब काम धर्मके नामपर करते है।

खत लिखनेवाला बर्नार्ड शाकी नकल करता है और इसीलिए मेरा भी मजाक करता है और कहता है कि अग्रेज आजादीके लिए देशको दो हिस्सेमें बाट रहा है। सो अग्रेज किस धर्मके नामपर हमे आजाद बना रहा है? लेकिन अग्रेजको मै जितना जानता हू उतना कोई नही जानता, तब मै कहूगा कि अगर कोई इन्सान कुछ कहता है तब उसपर क्यो न विश्वास किया जाय, जबतक कि वह ठग न साबित हो?

अग्रेज भारत इसलिए छोड रहे हैं, क्योंकि वे समझते है कि अब पैसोका लाभ नही होगा। सियासी मामलेमे भी वे हमे गुलाम बनाकर नही रख सकते, यह भी वे जान गए है।

पहली लडाईमे एक जगह मार्शल-ला लगाया था। अबकी लडाई-के दिनोमे भी वेवल साहबने सारे हिंदुस्तानमे मार्शल-ला लगा दिया। लेकिन अब सब अग्रेज जान गए है कि अब हिंदुस्तानको गुलाम नही रख सकते। हमने जब अहिंसात्मक आदोलन किया तब वे जान गए कि अब ज्यादा पैसा नही निकाला जा सकता। अब देशको कब्जेमे रखने-के लिए अग्रेजको ज्यादा खर्च ही करना पडेगा। इसीलिए वे जाना चाहते है।

देशको बचानेके अब भी दो तरीके है, जैसा मैने कल बताया। अब भी अग्रेजोके हाथमें है—अभी उनका बडा लश्कर पडा है। जबतक वह लश्कर नही चला जायगा तबतक नही कह सकते कि वे चले गए। अग्रेज चाहें तो अब भी दुरुस्त कर सकते है।

अग्रेज देशको टुकडा कर जाना चाहते है। अग्रेज हिंदुस्तानमे यदि नियम रखकर बाकायदा सबको ठीक कर जाय तो इसका मतलब यह नही कि हैदराबाद कहे, हम आजाद होगे—त्रावनकोर कहे, हम आजाद होगे—जब ऐसा सब कोई आजाद हो जायगा तब हिंदुस्तानकी आजादी कहा गई। मै यह स्वीकार करता हू कि हालकी कुछ घटनाओसे लोगो-को अग्रेजके इरादोपर सदेह हो गया है किंतु मै इसे तबतक बदमाशी नही कह सकता जबतक बदमाशी साबित न हो जाय।

इतना तो ठीक है कि अग्रेज रियासतोंके बारेमें उचित काम करने-में हिम्मतसे काम नही ले रहे है। लेकिन यदि अग्रेज देशमे ऐसी स्थिति उत्पन्न करके छोड जाता है जिसमे देशमे कई भाग एक दूसरेसे अलग हो जाय और वे आपसमे लडते रहे तो इससे बढकर अग्रेजोकी आबरू-पर और कोई धब्बा नही लगेगा।

## : ६३ :

### ६ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

आजका भजन[1] तो आपने सुना ही है। उसमे प्रेमकी सगाई सबसे बडी बात कही गई है। कृष्ण तो बादशाह था। जो कुछ करना चाहता था कर लेता था। उन्होने सबका पूजन किया तभी वे दासानुदास कहलाए। प्रेमके बदलेमे यदि हम अहिंसा शब्दका प्रयोग करे तो वही बात है। प्रेम कैसे पैदा कर सकते है यह दूसरी बात है।

आज आप लोग पूछेगे कि मै वाइसराय साहबके पास क्यो गया। आजादी तो अभी मिली नही है। अभी तो दुश्मनकी बात चलती है। जिस दिन चाहे वह ट्राम बद कर देता है, लूट लेता है और छुरा भोंक देता है। आजादी सूर्य-जैसी है, लेकिन वह आ रही है, ऐसा मुझे नही लगता। वाइसराय तो मुझे मित्र कहते है। मै भला उनका मित्र कैसे हो सकता हू—मै तो भगीका मित्र हू, गरीबोंका मित्र हू, लेकिन उनका कैसे! वे तो बादशाह है, लेकिन वे मुझे मित्र मानते है।

आज आपको कलके खतका दूसरा हिस्सा सुनाऊगा। वह लिखता है कि सन् १९४०मे मैने ऐसा कहा था—उस समय मैने लिखा था कि मै सब जगह अहिंसाकी बू पाता हू। वह लडाईका जमाना था। उस समय अहिंसाकी बू नही थी। वह पूछता है कि यदि उस समय हवामे खूनकी बदबू आती थी तो आज क्या निकलती है। उनको ऐसा पूछनेका हक है। आज हिंदुस्तानमे नियमबद्ध काम हो रहा है, ऐसा नही है। दिलमे आता है तो कोई रेल रोकता है, कोई आग लगाता है, कोई लूटता है और कोई छुरा भोक देता है। इसे अव्यवस्था कहते है। लोग पैसे खा जाते है। लोग बेशर्म होकर अनुचित रास्तेसे पैसा कमाते है। देनेवाले चुपचाप दे भी देते है। कौन किसको कहे! लोगोंके दिलमे

---

[1] 'सबसे ऊंची प्रेम सगाई'।

पैसा पैदा करनेकी धुन है, चाहे किसी ढगसे हो। हवामें आजकल झूठ, हिंसा, तिरस्कार और अविश्वास जोरोसे फैला है।

इन सबके ऊपर क्या आता है, ३ जूनकी बात। सबने—हिंदू, सिख व मुसलमानने—हिंदुस्तानका टुकडा करना मान लिया है। इसके बाद रोज अखबारमे क्या पाते है कि कई स्थानोमे चोरी हो गई, लूट हो गई, आग लगा दी गई, हत्या कर दी गई, खजर भोक दिया—आदि। खत लिखनेवाला मुझे ताना देता है कि यही आपकी प्रेम-सगाई है। वह पूछता है कि आप सदा सत्यके पुजारी रहे, लेकिन अब वह कहा है? सब जगह झूठ-ही-झूठ है। कौन नीचा है कौन ऊचा, यही सवाल है। सहिष्णुता कहा गई? यह सब जब नही है तब कहो तो कौन इसके लिए जिम्मेदार है? आप, वाइसराय या और कोई? उनको ऐसा पूछनेका हक है। ३० वर्षमे काग्रेसियोने जो त्याग किया, कठिनाइया सही, क्या आज उसका नतीजा देशका टुकडा करना है? आपका अमृतरूप स्वराज्य कहा गया? इसका वे जवाब मागते है। आगे वह कहता है कि अगर इस जहरमेसे अमृत पैदा करना है तो वह आप ही कर सकते है।

इसके जवाबमे मै तो कहूगा कि यह बात सच्ची है कि देशमे बदबू आ रही है। मै कहूगा कि मै इसके लिए जिम्मेदार हू। मै ३० वर्षसे कहता आ रहा हू कि सत्य और अहिंसासे काम लो। यदि देश उसके अनुसार चलता तो आज ऐसा नतीजा नही होता। पेडसे ही उसका फल जाना जाता है।

यदि अग्रेज चला जाता है तो क्या उसके बाद नियम न रहे? इसके लिए मुझे शर्मसे कहना पडता है कि मै इसके लिए जिम्मेदार हू। जो लोग अभीतक कह रहे थे कि वे सत्याग्रह कर रहे थे उनके भी दिलमे था कि जब हथियार मिलेगा तब हथियारसे काम लेगे। हमने पहले सत्याग्रहसे काम लिया, लेकिन अब नही दिखाई देता। जिस तरहके स्वराज्यकी कल्पना की जाती थी वह बहुत दूर है। हम आपसमें लड रहे है। मै ऐसा देखना नही चाहता। मुल्तान, रावलपिंडी, गढमुक्तेश्वर, बिहार और बगालमे क्या हुआ? मै सिपाही हू। मै इनके लिए आसू नही बहाना चाहता और न मरना ही चाहता हू।

आज हम जो पागल बन गए है उससे न हिंदू जिंदा रह सकता है, न मुसलमान और न सिख। तलवारके जरिए पैसा कमा सकते है, लेकिन धर्म नही।

जब मै ३० वर्षके अनुभवके बाद कुछ नही बता सकूगा तो उससे काम नही निपटता। तब हमे अब क्या करना चाहिए? हम सत्याग्रह करनेके लिए तैयार तो है, लेकिन अहिंसाको ठीक रूपमे अपनानेमे हमारी ही नही ससारकी भलाई है। आज इन्सानियत-का तकाजा है कि अग्रेज हम दोनोमे दोस्ती करा दे—दो लश्करोमे दोस्ती करा दे। मै आशा करता हू कि इसके बिना अग्रेजके जानेके लिए अभी जितना दिन बाकी है वह इसके लिए काफी है।

और रियासतका मसला पडा है। हम कहे कि टुकडा तो हो गया, अब क्या होगा। १५ अगस्त आखिरी दिन है। यह काफी समय है और इसके बीचमे सब कुछ हो सकता है। यदि १५ अगस्ततक तय नही होगा अर्थात् दोनो दलोमे समझौता नही होगा तो मुझे डर है कि बादमे भी वह तय नही होगा। अग्रेजकी ताकत हमसे ज्यादा है। उसके पास बहुत बडी सैनिक शक्ति है। जो कहते है कि उनकी सैनिक शक्ति खत्म हो गई, वे गलतीपर है।

## : ६४ :

### १० जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

मुझसे हमेशा कई तरहके प्रश्न पूछे जाते है। आज भी कुछ ऐसे ही प्रश्न पूछे गए है। एक प्रश्न तो यह है कि आज पाकिस्तान तो बन गया, तब हम लोग यूनियनमे पडे है, उनका धर्म क्या हो जाता है? मै कई बार इसपर बोल चुका हू। मगर यह इतना पेचीदा मामला है कि किसी-न-किसी तरहसे सामने आ ही जाता है। या तो हिंदुस्तान और पाकिस्तान दोनो एक दूसरेके दुश्मन बन जाते है या

ऐसा कहो कि दोनो दुश्मन बनकर बैठ गए है। मुस्लिम लीग तो कहती ही है कि हिंदू और उनमे भी सवर्ण हिंदू हमारे दुश्मन है। तो क्या हिंदू भी उनके दुश्मन बन जाय ? एक तरीका तो यह है कि यदि कोई एक-दूसरेको दुश्मन मानता है तो दूसरा भी उसको अपना दुश्मन समझे। मगर कम-से-कम मेरा वह रास्ता नही है। जब सारा जीवन मैं दूसरे रास्तेसे चलता रहा हू तो अब मै कैसे उसे छोड सकता हू। यहा मेरा इम्तहान होनेवाला है। मेरी इसानियत मुझे यही सिखाती है कि सारी दुनिया मेरी दोस्त है। यदि वे लोग न मानें तो वे ही खोनेवाले है, मै खोनेवाला नही। एक-दूसरेका गला काटनेमें किसीका भला होनेवाला नही है। वह तो जानवरके समान है।

दोस्तीका मतलब किसीको किसी-न-किसी तरहसे राजी करना नही है। दोस्त कभी एक-दूसरेकी खुशामद नही करते। यदि कटु शब्द कहने है तो वह भी कहने होगे। यह पूछा गया है कि जब आप खुशामद नही करते तो १९४४ मे १८ दिनतक तेज धूपमें कायदे आजमके घर जाकर क्या करते रहे ? मै वहा अपना धर्म समझकर गया था, खुशामद करने नही। जो चीज मै उन्हें देने गया था, वह यदि वे ले लेते तो आज इतनी खूरजी न हुई होती और जो वेइन्तिहा जहर फैल गया है, वह नही होता। इसके अलावा इस देशमें कोई तीसरी ताकत नही रहती और पाकिस्तान बननेके बाद भी हिंदुस्तान एक बना रहता। वह मेरी जिन्ना साहबसे एक दोस्ताना बातचीत थी। खुशामदको आज बहुत बुरे मानीमें लिया जाता है। जब जर्मनी और इग्लैड एक-दूसरेके विरोधी थे तब चेम्बरलेनने, जो कि उस समय इग्लैंडके प्रधान मत्री थे, हिटलरको सतोष देनेका तरीका अख्तियार किया। यह मेरी राय नही है मगर अग्रेज लोग ऐसा कहते है कि यदि चेम्बरलेनने हिटलरको सतोष देनेका तरीका अख्तियार न किया होता तो दूसरी ही बात बनती। उसमे तो खुशामद आ जाती है। मगर मै जब किसीको अपना दुश्मन मानता ही नही तब मै इस मानीमें किसीकी खुशामद करनेवाला नही हू।

मगर मेरे सामने सवाल यह है कि यूनियनमे रहनेवाले हम लोग क्या करे? पाकिस्तानमे जो मदिर और गुरुद्वारे मौजूद है, क्या उन्हे वे वहासे उठा देंगे या नष्ट कर देंगे? मेरा दिल तो ऐसा नही कहता। क्या वे हिंदुओंको मदिरोमें जानेसे रोक देंगे? पाकिस्तान-के ये मानी है, ऐसा मै कबूल नही करता। आज ही तो मुस्लिम लीग-के दौलताना साहबने कहा है कि 'पाकिस्तानमे हिंदू और सिख लोग अपने-अपने मजहबके मुताबिक नही चल सकेंगे, यह बात तो इस्लामके दुश्मन ही कह सकते है।' यदि वास्तवमे पाकिस्तानमे हिंदू और सिखको वही इन्साफ मिलेगा जो मुसलमानको मिलने-वाला है, तो मुझे कोई शक नही कि इस्लामकी डेमोक्रेसी एक बहुत बुलद चीज है। यदि वे सबको एक ही आदमकी औलाद मानते है, तब फिर कैसे हो सकता है कि दूसरे मजहबके लोगोको खुदाकी इबादत करनेसे रोक दिया जाय? दौलताना साहब ठीक कहते है, ऐसा मुझे लगता है। मै तो पजाब और सीमाप्रातके हिंदुओं और सिखोंसे कहूगा कि वे डरके मारे भागते न फिरें। सिखोंका सुनहरी गुरुद्वारा तो अमृतसरमें है, मगर ननकाना साहब कहा जायगा, जिसके लिए सिखोने इतना त्याग किया था? वह तो पाकिस्तानमे ही रहेगा। हैदराबादमे कितने ही हिंदुओंके मदिर है। हैदराबाद पाकिस्तानमें जायगा यह तो मै नही कह सकता। वहा तो ९५ फीसदी हिंदू है? यदि हिंदुओको भी पाकिस्तानमे ले जायगे तो फिर वह पाकिस्तानमे कहां रहा। मुसलमानोकी सबसे आला दर्जेकी जुमा-मस्जिद भी यहा यूनियनमें पडी है। क्या हम मुसलमानोंको उसमे नमाज पढनेसे मना कर देंगे? आगरामें उनका ताजमहल है और अलीगढमें मुस्लिम युनिवर्सिटी है। क्या वहा मुस्लिम युवक पढना छोड देंगे? यह तो ईश्वरकी मेहरबानी है कि पाकिस्तान बननेके बाद हमारा टुकडा हुआ ही नही है। क्या वे यहासे जुमा मस्जिद उठा ले जायगे या उसके लिए लडाई लडेंगे? क्या एक और लडाई बाकी है? कौन-सी जगह ऐसी है जहा मस्जिद और मदिर न हो? मै जहा जाता हूं वही ये सब मुझे मिलते है। तब क्यों पजाब, सरहद और सिंध-

से हिंदू लोग भागकर आते हैं? आखिर वे जायंगे कहां? उनमें आला दर्जेकी बहादुरी होनी चाहिए। हमें उस बहादुरीकी जरूरत नहीं जो मकानोंको जलाने और मासूम बच्चोंको मार डालनेमें काम आती है। वह बहादुरी नहीं, हैवानियत है। हमारी जमीनके टुकड़े भले ही हो जायं, मगर हम दोनों जगह इन्सान होकर रहें, हैवान बनकर नहीं।

परंतु यदि सिंध या और जगहोंसे लोग डरके मारे अपने घर-बार छोड़कर यहां आ जाते हैं तो क्या हम उनको भगा दें? यदि हम ऐसा करें तो अपनेको हिंदुस्तानी किस मुंहसे कहेंगे। हम कैसे 'जय हिंद'का नारा लगायंगे? नेताजी किसके लिए लड़े थे? हम सब हिंदुस्तानी हैं, चाहे कोई दिल्लीका हो या गुजरातका। वे लोग हमारे मेहमान बनकर रहें। हम यह कहते हुए उनका स्वागत करें कि आइए, यह भी आपका मुल्क है और वह भी आपका मुल्क है। इस तरहसे उन्हें रखना चाहिए। यदि राष्ट्रीय मुसलमानोंको भी पाकिस्तान छोड़कर आना पड़ा तो वे भी यहां रहेंगे। हम हिंदुस्तानीकी हैसियतसे सब एक ही हैं। यदि यह नहीं बनता तो हिंदुस्तान बन नहीं सकता।

१५ अगस्त आनेमें ३५ दिन और पड़े हैं। हम अबतक हैवान बने रहे, मगर चाहें तो अब भी इन्सान बन सकते हैं। हम सबका इम्तहान हो रहा है। उसमें अंग्रेज भी शामिल हैं। नोआखालीसे मेरे पास तार आया है कि पाकिस्तान बन जानेके कारण वहांके पीड़ित हिंदुओंको मुआवजा मिलनेकी संभावना नहीं रही। मुआवजा उन्हें क्यों नहीं दिया जाता? पाकिस्तान बन जानेसे तो वहांकी गवर्नमेंटका और अधिक, उनकी रक्षा करनेका, धर्म हो गया। तारमें यह भी लिखा है कि जिन लोगोंने खून किया और जो आज हवालातोंमें बंद हैं, उनके छोड़ दिए जानेकी संभावना है। मेरी उम्मीद है कि यह होनेवाला नहीं है। पाकिस्तानवालोंको तो यह सिद्ध करना चाहिए कि उनके यहां जो हिंदू रहते हैं उनका कुछ भी बुरा होनेवाला नहीं है। तब मैं कहूंगा कि हम १५ अगस्तको आजादीका दिन मनायंगे। यदि ऐसा नहीं होता है तो वह आजादी मेरी नहीं और मुझे उम्मीद है कि वह

आपकी भी नही होगी। अभी ३५ दिन बाकी पड़े है। हम चाहे तो इन ३५ दिनोमें बहुत कुछ हो सकता है। मै केवल भारतीय स्वाधीनता मिलसे ही अपनी आजादी माननेवाला नही हू।

## : ६५ :

### ११ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

हमने ईश्वरका नाम लेना तो छोड दिया,[1] परंतु काम, क्रोध और मोह आदि जो हमारे छः बुलद शत्रु है, उनको हम प्रिय समझकर अपने पास रखते है।

नोआखालीसे मेरे एक साथी लिखते है कि "जब तुम नोआखाली-मे आए तब बडी लबी-चौडी बात करते थे और 'करूगा या मरूगा'का प्रण किया था। यदि अब १५ अगस्तसे पहले यहा नही आओगे तो तुम्हे पछताना होगा।" यह मै कबूल करता हू कि अगर मै वहा १५ अगस्तसे पहले न पहुचा तो मुझे पछताना ही होगा। मै उन लोगो-के बीचमे रहता और उनके साथ खाता-पीता था। मै यहां दिल्लीमे क्यो पडा हू? मुझे बिहार या नोआखालीमें चले जाना चाहिए। यहा तो मै बेहाल हू। यदि मुझसे कोई पूछे कि मैंने यहा क्या किया तो मै यही कह सकता हू कि मैंने केवल हजामत की है, जो मै खासी कर लेता हू। नोआखालीमे मै बेहाल नही रहता था। रोज पैदल चलता था, नए-नए देहातमें जाता और नए-नए आदमियो—हिंदू और मुसलमान-दोनोसे मिलता था। नोआखालीमे मै कुछ काम करता था और बिहार-में भी। मेरे भीतर आज अगार जल रहा है। अगर मै नोआखाली चला जाऊगा तो वह नही जलेगा। अत आप लोग प्रार्थना करे कि हे भगवान, तू गांधीको जल्दीसे नोआखाली भेज दे।

---

[1] आजका भजन था : 'नाम जपन क्यों छोड़ दिया ?'

मैंने वहां जो प्रतिज्ञा की थी उसे छोड़ा नहीं है। वहांसे मैं बिहार चला गया, क्योंकि जहां नोआखालीमें सिर्फ दो-चार सौ ही आदमी मरे थे वहां बिहारमें तो हजारों आदमी मारे गए। इसलिए नोआखाली और बिहार मेरे लिए एक-जैसे बन गए हैं। वहांसे जवाहरलालजीने मुझे बुला लिया और कृपलानीजीका भी तार गया। परंतु यहां आकर मैंने किया क्या? बहुतसे लोग मुझसे ऐसा भी कहते हैं कि तुम नोआखालीमें ही क्या करोगे? जब सब चीज हिंदुस्तानमें तय हो जायगी तब नोआखालीमें अपने-आप तय हो जायगी। मगर मैंने तो इससे उलटा ही सीखा है। मेरे पिता यद्यपि विद्वान् नहीं थे, पर यह मुझे कबूल करना चाहिए, कि इतना तो मुझे बचपनमें वह सिखा गए थे कि झूठ नहीं बोलना और डर लगने लगे तो रामका नाम ले लेना। 'यथा पिंडे तथा ब्रह्मांडे' अर्थात् जो पिंडमें है वही ब्रह्मांडमें है, यह मूल मंत्र मुझे बचपनहीसे मिल गया था। मेरी अनपढ़ और देहाती माताने भी मुझे यही सिखाया था कि तू जो भी करे अपनी आत्माकी प्रेरणासे कर, तुझे दुनियाकी क्या पड़ी! दुनियाको देखनेवाला तो ईश्वर है। अतः नोआखालीमें मैंने जो वचन दिया उसे मुझे प्राण देकर भी नहीं छोड़ना चाहिए।

## : ६६ :

### १२ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

मुझे एक भाई लिखते हैं कि 'आज हमारे यहां जो हो रहा है वह बहुत बुरा है।' बुरा क्यों है, यह भी उन्होंने बताया है। वे कहते हैं कि 'जो लोग सत्याग्रह आंदोलनमें जेल गए थे समझते हैं कि उन्होंने बहुत भारी काम कर लिया, जिसकी वजहसे उनको प्रधान मंत्री या किसी प्रांत का गवर्नर या मिनिस्टर या उसका पार्लामेंटरी सेक्रेटरी तो बनना ही

चाहिए। उनके पास मोटरकार होनी चाहिए, क्योंकि वे समझते हैं कि यदि जेल चले गए तो हिंदुस्तानका लाखो-करोड़ों रुपयेका काम उन्होंने कर दिया। मैं भी दो दफा जेल हो आया हूं और एक दफा तो यरवदा जेलमें आपके साथ भी था। परतु मैं तो भिखारी ही रहा और किसीने मुझको पूछा तक नही।'

मैं कहता हूं, यदि जेलमे कोई चला गया तो क्या वह हिंदुस्तान-पर मेहरबानी करने गया था? यदि यही सिलसिला रहा तो मुझे डर लगता है कि काग्रेसका नाम मिट जायगा। काग्रेसमें जो लोग हैं उनको ऐसी बात ख्वाबमें भी नही सोचनी चाहिए। इस तरहसे तो कोई काग्रेसी यह कहेगा कि चूंकि वह जेल हो आया है इसलिए उसके लड़के-की शादी हिंदुस्तानकी सबसे अच्छी लडकीके साथ होनी चाहिए या उसकी लड़कीकी शादी हिंदुस्तानके सबसे अच्छे युवकके साथ हो। जवाहरलाल-जी इसलिए बड़े मंत्री या वाइस-प्रेसिडेंट नही बने कि वे जेल हो आए हैं। यदि उनको ये पैसे न मिले तो क्या वह भूखो मरनेवाले हैं? राजेंद्र बाबू तो पटना हाईकोर्टके चीफ जस्टिस होनेवाले थे। लेकिन उन्होंने स्वेच्छासे उसे लात मारकर फकीरकी तरह रहना पसद किया। राजाजी भी जेल जानेके कारण मिनिस्टर नही बने। मैं यह नही कहता कि वे सब फरिश्ते हैं। वे भी हमारी तरह इसान हैं और इसान तो भूलोंकी गठरी होते हैं, फिर, सरकारी दफ्तरमें कितने आदमी समा सकते हैं? यह तो एक निकम्मी बात है जिसे शीघ्र ही भूल जाना चाहिए। हम इस बातका खयाल भी न करें कि हमे जेल जानेके बदलेमे कुछ मिले। जो आदमी अपना धर्म पालन करता है, धर्म ही उसका बदला है।

मुझसे पूछा गया है कि कायदे आजम जिना पाकिस्तानके गवर्नर-जनरल बन गए और यहाका गवर्नर-जनरल वाइसराय बनकर बैठ गया, यह कहाका हिसाब है? हिंदुस्तानकी आजादीकी लड़ाई तो काग्रेसने लडी, मुस्लिम लीगने उसमें कोई हिस्सा नही लिया या ऐसा कहो कि काग्रेसने जब भी सिविल नाफर्मानी या सत्याग्रह किया, लीगने उसमें बिल्कुल सहयोग नही दिया, इसपर भी यदि काग्रेसको हिंदुस्तानी गवर्नर-जनरल नही मिलता है तो यह कोई इसाफकी बात नही हुई। इसका

अखबारोसे मुझे मालूम हुआ कि पहले हिंदुस्तान और पाकिस्तान—दोनोके लिए एक ही गवर्नर-जनरल रखना तय हुआ था। मगर बादमें जिना साहब मुकर गए। तब कौन उन्हे पाकिस्तानका गवर्नर-जनरल बननेसे रोकनेवाला था? मेरी निगाहमे उन्होने ठीक नही किया। एक दफा जब उन्होने कहा था तो माउटबेटनको बनने देते और पीछे यदि कोई गोलमाल होता तो उनको हटा देते। परतु अब इस्लामकी परीक्षा जिना साहबकी मार्फत होनेवाली है। सारी दुनियाके सामने वे पाकिस्तान स्टेटके गवर्नर-जनरल बन रहे हैं। अत पाकिस्तानकी खूबिया ही देखनेमे आनी चाहिए। काग्रेस तो हमेशा अग्रेजोसे लडती आई है। जवाहरलालजी तो सीधे आदमी है, मगर सरदार तो हमेशा लडनेवाले हैं। वे तो मेरे साथ लडते थे कि तू इनका एतबार करता है। जब वही इनके दावमे आ गए तो आपकी तथा हमारी बात ही क्या है! जब वे यह कबूल करते है कि वाइसराय गवर्नर-जनरल बनकर रहे तो हमे कबूल करनेमें क्या सकोच है? हम देखते है कि वे हिंदुस्तानके खादिम बनकर गवर्नर-जनरल हो रहे है या दगा देनेके लिए। एक नया अनुभव हमको मिलेगा। अत इसमे दूरन्देशी है और फिर हम कुछ खोते तो है ही नही। आखिर डोमीनियन स्टेटस भी हमने उनके कहनेपर स्वीकार किया है। वे एक बहुत बडे एडमिरल है, बडी लडाई लडनेवाले है। उनको हम रखे तो सही। यदि कोई बुराई निकली तो हम उनसे लड लेगे।

जब मै वाइसरायसे मिलने गया था तब उन्होंने मुझसे कहा कि जिस लडकेसे एलिजाबेथकी सगाई हुई वह मेरे लडके-जैसा ही है, आशा है, कल आप आशीर्वादके तौरपर कुछ शब्द लिखेगे। सो परसो जब वाइस-रायकी लडकी यहा आई तब मैंने उसके हाथ मुबारकबादीका एक खत लिखकर भेज दिया। कितनी सादी लडकी है वह। प्रार्थनाके समय मैंने उसे कुर्सीपर बैठनेके लिए कहा, मगर कुर्सीपर न बैठकर वह हमारे साथ ही दरीपर बैठ गई। और फिर राजकुमारी अमृतकौरने तो आज मुझे यह भी बताया कि जिस लडकीकी सगाई हुई है वही इग्लैंडकी रानी बनेगी, क्योकि बादशाहके कोई लड़का नही है। वाइसरायके भी कोई लड़का नही है। खैर वाइसराय अगर बुरा होता तो मै आशीर्वाद लिख-

मुझे क्यों भेजता ? मैं उसे बुरा नहीं मानता। उनकी जगह अगर जवाहरलालजी या सरदार पटेल गवर्नर-जनरल बनकर बैठ जाते तो उन्होंने बहुत खतरनाक काम किया होता। इसके अलावा गवर्नर-जनरलके हाथमें किसी प्रकारकी सत्ता नहीं होगी। जवाहरलालजी या उनकी केबिनट जो करेगी वही उसको करना होगा। उसको तो केवल अपने दस्तखत देने होंगे।

मगर लार्ड माउंटबेटन एक बड़ा आदमी है और अंग्रेज शैतानियत ही कर सकते हैं, ऐसा हम लोगोंका ख्याल बन गया है। तो माउंटबेटनको भी अपनी शराफत और इन्साफ-पसंदीका सबूत देना होगा। और मुझे विश्वास है कि वह इन्साफ करनेके लिए ही यहां आया है।

मेरे पास इन दिनों काफी मुसलमान मिलने आते हैं। वे भी पाकिस्तानसे कांपते हैं। ईसाई, पारसी या दूसरे गैर मुसलमान डरें यह तो समझमें आ सकता है, मगर मुसलमान क्यों डरें? वे कहते हैं कि हमें क्विसलिंग[1] माना जाता है। पाकिस्तानमें हिंदुओंको जो तकलीफ होगी उससे ज्यादा हमें होगी। पूरी सत्ता मिलते ही हमारा कांग्रेसके साथ रहना शरियतमें गुनाह माना जायगा। इस्लामके ये मानी हैं, इसे मैं नहीं मानता। कांग्रेस यदि किसी मुसलमानको अपने साथ रखती है तो क्या गुनाह करती है? क्या मुसलमान कांग्रेसी बननेसे गुनहगार हो जाते हैं? क्या वे कलमा या नमाज नहीं पढ़ते? क्या अली भाइयोंके जमानेके इस्लामसे आजका इस्लाम कुछ बदल गया है? राष्ट्रीय मुसलमानोंको कैसे क्विसलिंग कहा जा सकता है? मुझे आशा है कि जिना साहब जहां गैरमुस्लिम अल्पसंख्यकोंकी रक्षा करेंगे वहां इन मुसलमानोंको भी पूरा संरक्षण देंगे।

---

[1] देशद्रोही।

## : ६७ :

### १३ जुलाई १९४७

ऐसा समय एक-दो बार आया है जब मै प्रार्थनामें ठीक वक्तपर नहीं पहुच सका। आजका वक्त ऐसा ही था। मैने बहुत कोशिश की कि सात बजेके पूर्व पहुच जाऊ, लेकिन ऐसा नही हो सका। मै वाइसरायसे मिलने चला गया था। मै यहा पडा हू तो कुछ बाते करनी ही पडती है। यहा बहुत बातें होती है इसलिए मेरे-जैसे आदमीको भी कुछ कहना होता है। यो तो मै चार बजे ही चला गया था और आशा थी कि समयके पहले ही लौट आऊगा। मगर दूसरे मित्र भी होते है, इसीलिए मै वक्तपर नही आ सका। मगर मुझे यह देखकर बहुत अच्छा लगा कि प्रार्थना ठीक समयपर शुरू कर दी गई है।

जिना साहबने एक प्रेस-कान्फ्रेस की है। उसकी रिपोर्ट मेरे हाथमे आई है। उसमें उन्होने कहा है कि पाकिस्तानमे जो अल्पमतवाले है उनको किसी किस्मकी तकलीफ नही होनेवाली है। उनके साथ वैसा ही बर्ताव किया जायगा जैसा कि मुसलमानोके साथ। हिंदू मदिरोमे जा सकेगें, सिख गुरुद्वारोमे।

पर किसी एकके कहने मात्रसे वैसा हो नही जाता। आज भी खून-खराबी हो रही है, मकान जल रहे है और यह सब पाकिस्तानमे हो रहा है। यूनियनमें[1] भी हो रहा है। यह कौन कर रहा है? क्या मुसलमान ही कर रहे है? या हिंदू भी कर रहे है? मेरे पास दोनो प्रकारके खत आते है। लोग कहते है कि अब हम शांतिसे क्यो नही रह पाते? मै जिना साहबसे पूछता हू कि आपकी बात कब अमलमे आएगी? वह १५ अगस्तके बाद अमलमे आएगी या अभीसे? सिंध तो पाकिस्तानका केंद्र-बिंदु होगा। वहा मुस्लिम लीगका बहुत जोर है। जिना साहब पाकिस्तानके गवर्नर-जनरल भी बन गए है। ऐसा होनेपर भी इग्लैडमें बादशाह तो है ही। जबतक वह है तबतक जनताका कुछ-न-कुछ सबध

---

[1] इडियन यूनियन।

गवर्नर-जनरलके मार्फत उसके साथ रह ही जाता है। गवर्नर-जनरलको हम बनाते हैं। जिना साहब पाकिस्तानके गवर्नर-जनरल बने हैं। फिर भी वह बादशाहके सामने जिम्मेदार तो रहते ही हैं। लीगके प्रेसीडेंट भी वे मिट नहीं जाते। उनकी हैसियत बढ़ जाती है। उन्हें सबको अदल[1] इन्साफ देना चाहिए। सिंधियोंको सिंधसे क्यों जाना चाहिए? अगर एक भी सिंधी वहांसे चला जाता है तो यह जिना साहबके लिए शर्मकी बात है कि वह गवर्नर-जनरल हैं और उनके रहते हुए अल्पमतवाले जा रहे हैं।

मुझे लगता है कि एक आदमी जो कहता है वह वैसा करता है या नहीं, इसीसे उसकी जांच होती है।

इसी तरह यूनियनसे भी मेरे पास खत आते हैं। युक्तप्रांतमें कुछ हुआ या नहीं, मुझे नहीं मालूम। मगर वहांके मुसलमान यह भय महसूस करते हैं कि वे इस प्रांतमें रह सकते हैं या नहीं। मैं पूछता हूं कि वहां वे क्यों नहीं रह सकते? जिस तरह मैं जिना साहबसे पूछता हूं उसी तरह युक्तप्रांत और बिहारसे भी पूछता हूं कि वहां मुसलमान रह सकते हैं या नहीं?

अंग्रेजोंसे तो हमें निजात (?) मिल गई। एक जमाना था जब वे हमें लड़ाते रहते थे। अब वह जमाना चला गया। अब उनको हमें लड़ानेका मौका नहीं रहा।

युक्तप्रांतके मुसलमानोंको नौकरीके अनुपातके प्रतिशतके बारेमें शिकायत है। वे कहते हैं कि 'अबतक जहां ६० और ७० प्रतिशत सरकारी नौकरियां उनके हाथमें थीं वहां अब आबादीके हिसाबसे १४ प्रतिशत ही देनेका निर्णय किया गया है।' मेरा दिल तो इसकी शिकायत नहीं कर सकता। सरकारी नौकरियां कितने लोगोंको मिल सकती हैं? उनसे हमारा क्या भला होनेवाला है? और फिर, वहां तो हम खिदमतके लिए जाते हैं, अपना भला करनेके लिए नहीं? अबतक जो कुछ होता रहा है वही होता रहे तो यह कोई न्याय न होगा। यदि डाक्टर और

[1] पक्षपातरहित।

वकील अबतक लोगोको लूटते रहे है तो क्या आगे भी वे लूटते ही रहेगे ?

इसी तरह कोई पूछ सकता है कि हमे अबतक जो परसेंटेज[1] मिला हुआ था वह रहेगा या नही ? मै कहूगा कि वह किसने दिया था ? कैसे दिया था ? यदि हरिजन कहे कि सरकारने हमे इतना दिया था, वह कायम रहना चाहिए, तो मै पूछ सकता हू कि सरकारने तुम्हे वह क्यों दिया था ? काग्रेस सरकारसे लडती थी, सरकारने काग्रेससे लडनेवालोको रिश्वत दी। उसे उनकी खुशामद करनेकी जरूरत थी। अब हमारी हकूमत होगी। हमारी सरकार किसीकी खुशामद क्यो करे ? हमारे लिए तो यह जरूरी है कि हम अछूतपन मिटा दे। सरकारकी हिम्मत थी कि कानून बनाकर सब मदिर खोल दे ? मगर जब मै देखता हू कि मद्रासमे एकके बाद एक मदिर खुलता जाता है, वहाके बडे-बडे और पुराने मदिर हरिजनोके लिए खुल गए है, तो मेरा पेट (?) भर जाता है। धर्मकी रक्षा ऐसे ही हो सकती है। इसी तरह ईसाइयों और पारसियोकी बात है।

हमारी हकूमतका काम तो जो मिस्कीन है, जाहिल है, उन्हे ऊपर लाना होगा। यदि वह हरिजनोके लिए, शूद्रो आदिके लिए कुछ करती है तो ब्राह्मणको शिकायत क्यो होनी चाहिए ? हा, अगर कोई कहे कि ब्राह्मणोंको कोडे लगाए जाय, उनका अपमान किया जाय, तो मै कहूगा कि ऐसा क्यो, वह भी तो बुरा है।

मुसलमानोकी ओरसे या यूनियनकी ओरसे मै जो कुछ कह सकता हू वह यही है कि सबको अदल इन्साफ मिले। अगर ऐसा हो तो फिर कहनेको कुछ नही रहेगा। फिर देशके टुकडे होनेका दु ख नही रहेगा।

देशके टुकडे होनेके बारेमे लोग कहते है कि आज तो हिसाब हो गया—सेनाका हिसाब हो गया, नौ-सेनाका हिसाब हो गया। मै कहता हू कि हमारी ताकत कम हो गई। बाहरके लोग कहेगे कि हिंदुस्तानके पास नौ-सेना कहा है ? अपने मतलबके लिए वे दोमेसे किसी एक हिस्सेको

---

[1] प्रतिशत।

मिलाएगें और यह सेनाका बटवारा हमेशाके लिए गृह-युद्धका कारण बन जायगा।

पर मुझे आशा है कि पाकिस्तान और शेष भारतमे मैत्रीका भाव रहेगा। दोनोमे अल्पसख्यकोके प्रति न्यायका व्यवहार होना चाहिए। यदि यूनियनमे केवल हिंदू ही रह सकेंगे तो यह पक्षपात होगा। इसी तरह यदि पाकिस्तानमे सिर्फ मुसलमान ही रह सकेंगे तो वह भी पक्षपात होगा।

यद्यपि हमने अहिंसाका सबक नही सीखा तो भी हमें अपनी तीस बरसोकी कोशिशसे यह सीख लेना चाहिए कि हम किसीके दास नही बनेंगे। ऐसा हम अहिंसासे करे, चाहे हिंसासे। अहिंसाका नाम तो मैंने छोड दिया। फिर भी, अगर हमारे पास बल आ गया तो हम किसीकी सलामी नही करेंगे। यही मै बिहारसे कहता आया हू। लोग कहते है कि हमें तलवार दो, बदूक दो। मै कहता हू, तलवार और बदूक क्यो मागते हो? कहो, हम नही झुकेंगे। ऐसा ही मैंने नोआखालीमें भी कहा है।

अगर मुसलमानो और हिंदुओंके दिलमें तीस बरसोकी कोशिशसे यह आ गया है कि हम किसीकी गुलामी नही करेंगे तो मेरे लिए इतना बस है। अगर तीस बरसमे हमने इतना सीख लिया है, तो वह हिंसासे हो या अहिंसासे मुझे इसकी परवाह नही। हा, अगर मुझसे सीखने आओगे तो मै कहूगा कि यह अहिंसासे ही हो सकता है। एक अकेला आदमी अगर दुनियाका सामना करने चले तो वह अहिंसासे ही कर सकता है। अहिंसाके साथ ईश्वर होता है, उसके सामने तलवार टूट जायगी।

## : ६८ :

### १४ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

कहा जाता है कि मेरे भाषण आजकल निराशा पैदा करनेवाले होते हैं।

कुछ लोग तो कहते है कि मुझे बिलकुल बोलना ही नही चाहिए । लोगोके ऐसा कहनेसे मुझे एक चित्रकारकी कहानी याद आती है । उसने अपना चित्र एक दुकानमे रखा और नुक्ताचीनी करनेवालोंको दावत दी कि वे जहा-जहा भी उसमे गलतिया पाएं वहां-वहा निशान लगा दे। नतीजा यह हुआ कि वह तस्वीर तो रही नही, एक धब्बा-सा हो गया। चित्रकारका मतलब यह था कि लोगोको दिखाए कि हरेकको खुश करना नामुमकिन है; और उसे खुद तसल्ली हो गई कि उसने एक अच्छा चित्र खीचा था। उसका तो काम ही था कि वह अपने मनके पसदकी और अपनी लियाकतके मुताबिक एक तस्वीर बनाए। मेरा भी वही हाल है। मैं केवल बोलनेके लिए कभी नही बोलता। मै सिर्फ यह समझकर बोलता हू कि मेरे पास लोगोंके लिए देनेके लायक सदेशा है।

यह सच है कि आज मेरे और मेरे घने दोस्तोमे कुछ मतभेद है। बाज बातें जो उन्होने की या कर रहे है, उनसे मैं सहमत नही। लेकिन दिल्लीमे रहकर मेरे लिए मौजूदा हालातपर अपनी राय न देना असभव है। और असलमे मतभेद क्या है ? अगर आप छानबीन करें तो आपको पता चलेगा कि मतभेदकी जड एक ही है। अहिंसा मेरा धर्म है, काग्रेसका धर्म कभी नही रहा। काग्रेसने तो उसे केवल नीतिके रूपमे स्वीकार किया था। नीति उसी वक्ततक धर्म रह सकती है जबतक कि उसे चलाया जाय। उसके बाद नही। काग्रेसको पूरा अधिकार है कि जिस वक्त जरूरत न रहे उसी वक्त नीतिको बदल ले। धर्मकी और बात होती है। वह तो अमर है। वह कभी बदल नही सकता।

काग्रेसके विधानमे नीति तो वही रखी गई है, लेकिन काग्रेसवालोके अमलने नीतिको बदल दिया है। कानूनके शास्त्री भले उसपर नुक्ता-चीनी करें, लेकिन आप और हम ऐसा नही कर सकते और न करना चाहिए। आजके काग्रेसी क्यो न अपनी नीतिको बदलें ? कानूनकी बात होही जायगी। और यह बात भी समझने लायक है कि काग्रेसके विधानमें 'शाति'का शब्द इस्तेमाल किया गया है, 'अहिंसा'का नही।

१९३४में जब काग्रेसकी बैठक बंबईमें हुई थी तो मैंने बहुत कोशिश की कि 'अहिंसात्मक' शब्द 'शांतिमय'की जगह ले, लेकिन मै असफल रहा।

इसलिए अगर कोई चाहे तो 'शांति'के मानी अहिंसासे कुछ कम निकाल सकता है। मै खुद तो कोई फर्क नही पाता। लेकिन मेरी रायसे यहा कोई मतलब नही। फर्क है या नही यह फैसला विद्वानोको करना पडेगा। आपको और मुझे तो इतना ही समझ लेना चाहिए कि काग्रेसका अमल आज हर्गिज अहिंसात्मक नही है। अगर 'अहिंसा' काग्रेसका धर्म होता तो किस तरह फौजको सहायता देती, जैसा आज हो रहा है। फौज अगर चाहे तो जनताको खाकर फौजी-राज भी कायम कर सकेगी। क्या मैं यह आशा बिलकुल ही छोड दू कि जनता मेरी बात कभी भी नही सुनेगी? और अगर न सुनना चाहे तो फिर मेरे ऊपर जो नुक्ताचीनी करते है उनका क्या बिगडता है, और वे मुझे बोलनेमे क्यो रोके?

मुझे एक बात स्पष्ट करनी चाहिए सो यह कि मैंने साफ-साफ कह दिया और मान भी लिया है कि पिछले तीस साल जो लडाई हमने की वह अहिंसाके बलपर नही थी। वह तो सिर्फ मद विरोध था और ऐसा विरोध कमजोरोका हथियार है। उसे वे लोग इस्तेमाल करते है जो अहिंसाका उपयोग जानते नही, यह नही कि अहिंसाका उपयोग करना चाहते नही। अगर हममें अहिंसात्मक लडाई करनेकी बहादुरी होती—और उसके लिए वीरोकी बहादुरी चाहिए—तो हम दुनियाके सामने आज आजाद हिंदका एक और ही चित्र दिखा सकते। लेकिन आज तो हम दो टुकडेका हिंद बना रहे है, एक ऐसा देश, जहा भाई-भाई आपसमें लड रहे है और एक-दूसरेपर जरा भी विश्वास नही रखते। ऐसा होनेके कारण हम खुराक और कपडेकी कमीपर काफी ध्यान नही दे पाते और उन करोडो गरीबोको कुछ नही दिखा सकते—वे गरीब जिनका एक भगवान ही उनके सामने रोजकी जरूरतोकी शक्लमें नजर आता है—जिनका लडाई-झगडोसे क्या वास्ता, सिवा सिनेमाकी तस्वीरोके, कि जिनसे एक-दूसरेको मारनेकी तदवीरके अलावा वे और क्या सीख सकते है?

## : ६९ :

### १५ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

मैने कुछ दिन हुए तामिलनाड और मलाबारके मदिरोंके बारेमें कहा था, जो हरिजनोके लिए खोले गए थे, और खासतौरसे रामेश्वरम्के मदिरका उल्लेख किया था। वह एक बहुत बड़ा मदिर है और उसके बारेमें वहा काफी वहम भरा हुआ था। उनका खयाल था कि हरिजनोके अदर जानेसे मदिर अपवित्र हो जायगा। परतु आजके एक खतमे मुझसे कहा गया है कि मैने आंध्र देशके तिरुपति मदिरका नाम नही लिया जो बहुत विशाल और प्राचीन मदिर है। उसमे यह भी लिखा है कि यदि मै अपनी गलती दुरुस्त कर दू तो आंध्र देशके लोगोको बहुत सतोष मिलेगा। मै तो इस मदिरकी महिमा बराबर जानता था, परतु मेरी दृष्टिमे तामिलनाड और आंध्र जुदा-जुदा सूबे नही है। आज तो कुछ आबहवा ही ऐसी बिगड़ गई है कि सब अलग-अलग रहना चाहते है। तो भी मुझे अच्छा लगा कि मै अपनी गलतीको दुरुस्त कर लू।

अभी कुछ बगाली भाई मिलने आए है। वे कहते है कि पश्चिमी बगालके जुदा हो जानेसे पूर्वी बगालके हिंदुओके दिलमे ऐसा लगता है कि पश्चिमी बगालके हिंदू अब उनको भूल जायगे। यदि ऐसा हुआ तो मुझको बड़ा दर्द होगा। अगर इस तरहसे हिंदू हिंदूको और मुसलमान मुसलमानको भूल जाय तो सब गोलमाल हो जायगा। हिंदू, मुसलमान, पारसी, ईसाई सब हिंदुस्तानी है और हिंदुस्तानके रहनेवाले है, ऐसा हमे मानना चाहिए। मजहब या धर्म तो निजी बात है। मै ईश्वरको पूजना चाहता हू, उसमे दुनियाकी कौन ताकत मुझे रोक सकती है। परतु यदि मुसलमान, पारसी, हिंदू और ईसाई आदि सब अपनेको अलग-अलग मानने लगे तो पीछे हिंदुस्तान रहा कहा? मै तो कबूल करूगा कि बगालके हिस्से ही क्या करने थे। मै बगाली मुसलमानोंमें रहा हू। नोआखालीमें मै उनके बीच पैदल घूमता था। मैने वहा सबके दिलोमें मोहब्बत पाई है। हिंदुओको मुसलमानोंसे डरना क्या था? जो मूर्खता और दीवाना-

पन आ गया, वह क्या हमेशा थोडे ही रहनेवाला है। मेरी समझमें तो पूर्वी बगालके हिंदुओंके साथ बुरा होनेवाला नही है। मगर बहुत-सी बातें न चाहते हुए भी हुई और हो रही है। बगालके टुकडे हुए और हिंदुस्तान तथा पाकिस्तान भी बन गए। परतु जो चीज हो गई उसे बर्दाश्त करके आगे बढना चाहिए और पीछे उसे दुरुस्त कर लेना चाहिए। पश्चिमी और पूर्वी बगालके हिंदू-मुसलमान एक साथ रहे और एक भाषा बोलते है। अत. हिंदुओंका वहा कोई बिगाडनेवाला नही है। यदि वहाका हिंदू भी मुसलमानको अपना दोस्त माने तो क्या पूर्वी बगालके मुसलमान उनको मारते ही रहेंगे ? जब एक भी हिंदू मुसलमानको अपना दुश्मन नही मानेगा तो फिर वे सब दोस्त ही रहनेवाले है, इसमें मुझे कोई शक नही है।

उन्होने यह भी पूछा है कि क्या बगालप्रातीय कांग्रेस-कमेटी मिट जायगी, क्योकि उसके भी तो दो टुकडे हो गए। मेरी दृष्टिसे तो बगाल-प्रातीय काग्रेस-कमेटीके हिसाबसे बगालके टुकडे नही हुए। जैसी वह आज है, वैसी ही रहनी चाहिए। वह हकूमतके कानूनसे बाहर है। अगर वह अपने टुकड़े कर लेती है तो मै कहूगा कि पश्चिमी बगालने बेवफाई की है। आज काग्रेसकी रचना इस तरहकी है कि देहातमें काग्रेस-कमेटी होती है, फिर मडलमे, उसके बाद जिलेमे, सूबेमे और सबसे ऊपर अखिल भारतीय काग्रेस-कमेटी है। ऐसा हमारा सिलसिला है। अत काग्रेस-कमेटी पूर्वी बगालमें होगी और पश्चिमी बगालमे भी। वे दोनो मिलकर बगालप्रातीय काग्रेस-कमेटी बनाएगे। काग्रेस-मुसलमान, ईसाई और पारसी आदि सबकी है। उसमे आगे भी कोई फर्क नही पडना चाहिए। इन बगाली भाइयोने यह भी पूछा है कि क्या पूर्वी बगाल बिलकुल भिखारी बन गया है कि उसके मत्री भी पश्चिमी बगालसे आए। यह तो उनके लिए और भी हितकर होना चाहिए, क्योकि इससे पूर्वी और पश्चिमी बंगालमें सबध बराबर बना रहता है। यह माना कि पूर्वी बगालमे मुसल-मान काफी पड़े है, परतु यह कैसे मान लिया जाय कि सारे मुसलमान गदे है। बिहारमें कितने ही मुसलमान मारे गए, परतु तो भी मै कह सकता हूं कि वहा लाखो हिंदू गदे बिल्कुल नही बने। कुछ लोगोकी गदगीकी वजहसे सारी कौमको गदा बताना बिल्कुल गलत है। इसका मतलब तो

यह है कि हमारे अदर स्वय गदगी है। हम नापाक और बुजदिल वन गए है। हमारे अदर अहिंसाकी बहादुरी नही है। वह बहादुरी केवल मरनेका इल्म सिखाती है, मारनेका नही। दुनियामे बडे-बडे लश्कर पडे है, मगर फिर भी सारी दुनियाकी आबादीको देखते हुए ये लश्कर मुट्ठी-भर है। एक ऐसा सिलसिला-सा बन गया है कि जिससे हमारी आख हमेशा टेढा ही देखती है। जब भी कुछ हो जाता है, हम फौज भेजनेकी ही माग करते है। नोआखाली, विहार, पजाव और सीमाप्रात सब जगहोसे यही माग आई कि फौज भेजो तो हमारी रक्षा होगी। परतु जो बहादुर हो सकते है, वे ऐसा क्यो कहे ?

## : ७० :

### १६ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

आजका जो भजन[1] था वह मैने बचपनमे ही, जब कि मै अग्रेजी हाई-स्कूलमे चला गया था, तब पढ लिया था। वह 'बालमित्र' नामक पुस्तककी प्रार्थना-मालामे आ गया था। भजन अच्छा और मीठा है और बात भी सच्ची है कि हम अपने शरीरकी फिक्र क्यो करे ? वह आज है और कल चला जायगा। या तो जल जायगा या कब्रमे चला जायगा; राख हो जायगा या मिट्टीमे मिल जायगा, पर बात एक ही है। यदि पानीमे फेका गया तो जीव-जतु खा जाएगे। मतलब यह कि आखिरमे शरीरका हाल एक ही-सा होता है। परतु इस भजनमे—'आप मुए पीछे डूब गई दुनिया'—यह अच्छा नही लगता। भले ही यह कबीरका बनाया हुआ हो, मगर उससे क्या हुआ ? मुझे तो यह बहुत चुभता है। ऐसा माननेमे कुछ स्वार्थ काम करता है, यह मेरी छोटी बुद्धि मुझे बताती है। इसको भजनमालामेसे निकाल देना चाहिए। हमारे मरनेके बाद दुनिया कैसे डूबनेवाली है ? पहले तो यह कि हम मरते ही नही है, क्योकि आत्मा

---

[1] "इस तन धनकी कौन बड़ाई।"

अमर है। फिर दुनियाका तो मरना ही क्या है, वह तो हमेशा बदलती रहती है। उसको तो परमात्माने एक खेल बना रखा है। मगर जितना भजनमें कहा गया है उसको हम मानकर ही नही बैठ जाते है। यदि वह सब मान ले तो पीछे यह विधान-परिषद् क्यो बैठती ? क्यो हमारे नेता लोग कायदे-कानून बनाते। यदि वे सब यही मान लें कि हमारे मरनेके बाद दुनिया डूब जायगी तो फिर कोई किसीके लिए कुछ न करता। अत इस वाक्यमें स्वार्थकी पराकाष्ठा आ जाती है।

मुझसे कुछ अखबारनवीस मिलने आए थे। उनके साथ बातचीतमें द्राविडस्तानकी चर्चा आ गई थी। हिंदुस्तानके विंध्याचलके दक्षिणमें जो प्रदेश पडा है उसे द्राविडस्तान कहते हैं। इस द्राविड प्रदेशमे तामिल, तेलगू, मलयाली और कन्नड ये चार भाषाए बोली जाती हैं। मैंने थोडा-थोडा सबको देख लिया है और मै कह सकता हू कि इनके मूलमे सस्कृत ही पडी है। तेलगू यदि आप सुनेंगे तो उसमे सस्कृतके ही शब्द सुनाई देगे। तामिलमें सस्कृतके शब्द तो काफी है, परतु उनको उन्होने द्राविडी लिबास पहना दिया है। मलयाली भी सस्कृतसे मिलती-जुलती है। कर्नाटकमें कन्नड भाषाका भी यही हाल है। मतलब यह कि इन सब भाषाओका मूल स्रोत सस्कृत ही है। मै तो द्राविडस्तानको हिंदुस्तानसे अलग मानता ही नही हू। अग्रेजोंने हम सबको एक कर दिया है। काश्मीरसे लेकर कन्याकुमारीतक जो लोग पडे है वे सब हिंदुस्तानी हैं। उनमे आर्य और अनार्य या आर्यावर्त और द्राविडस्तानका भेदभाव करना, कोरी अज्ञानता है। इस बारेमें मेरे दिलमे कोई शक नही है।

अब प्रश्न केवल भाषाका रह जाता है। हमारे यहा हिंदी और उर्दू ये दो भाषाए है, जो हिंदुस्तानमें बनी और हिंदुस्तानियोद्वारा बनाई गई हैं। उनका व्याकरण भी एक ही रहा है। इन दोनोको मिलाकर मैंने हिंदुस्तानी चलाई है। इस भाषाको करोडो लोग बोलते हैं। यह एक ऐसी सामान्य भाषा है जिसे हिंदू और मुसलमान दोनो समझते हैं। यदि आप सस्कृतमय हिंदी बोलें या अरबी-फारसीके शब्दोसे भरी हुई उर्दू बोलें, जैसा कि प्रो० अब्दुल बारी बोलते थे, तो बहुत कम लोग उसे समझेंगे। तो क्या हम द्राविडस्तानकी चारों भाषाओका अनादर

कर दे ? मेरा मतलब यह है कि वे मातृभाषाके तौरपर अपनी-अपनी प्रातीय भाषाको रख सकते है, मगर राष्ट्रभाषाके नाते हिंदुस्तानीको जरूर सीख लें। यो तो हर सूबेकी अलग-अलग भाषा है। उडिया, बगला, आसामी, सिंधी, पजाबी, गुजराती तथा मराठी, ये सब भाषाए हिंदुस्तानीसे भिन्न है। तो क्या हम ये सब भाषाए सीखे या अग्रेजीको अपनी राष्ट्र-भाषा मानने लगें ? यदि मै अब अग्रेजीमे बोलना शुरू कर दू तो आपमेसे बहुत कम लोग समझेंगे। ८-१० वर्ष परिश्रम करे तब कही लगडी अग्रेजी हम सीख पाते हैं। इस तरहसे तो सारा हिंदुस्तान पागल बन जायगा। अत' अग्रेजी हमारी राष्ट्र-भाषा नही बन सकती। वह दुनियाकी भाषा या व्यापारकी भाषा रह सकती है, हालाकि दुनियाकी भाषा भी अभी-तक कोई बा-जाब्ता तय नही हुई है। हिंदुस्तानकी भाषा तो हिंदुस्तानी रहनेवाली है, इसमे मुझे कोई शक नही है। प्रातीय भाषाए अपनी-अपनी जगह बनी रह सकती है, परतु सबसे ज्यादा लोग जो भाषा बोलते है वह हिंदुस्तानी ही है। हिंदी-साहित्य-सम्मेलनमे भी मै रहा हू। वहा जिस प्रकारकी हिंदी बोली जाती है उसे बहुत कम लोग समझ सकते है। उसी प्रकार जो ठेठ उर्दू है उसे बहुत थोडे लोग बोलते और समझते है। जन-साधारणकी भाषा तो हिंदुस्तानी है। जितना हमें चाहिए उतना साहित्य भी हम उसमेंसे पैदा कर सकते है। द्राविडस्तानकी मातृभाषा तामिल या तेलगू बनी रहनी चाहिए, मगर वहाके लोगोका धर्म या फर्ज यह हो जाता है कि वे जितनी जल्दीसे हिंदुस्तानी सीख सके, सीख ले। यदि वे हिंदुस्तानीको हिंदी और उर्दू दोनो लिपियोमे सीखे तो बहुत ही अच्छा हो, क्योकि इससे दोनों भाषाओका साहित्य उनको मिल जायगा; परतु यदि वे केवल बोलनेके लिए ही हिंदुस्तानी सीखना चाहते है तो उसे अपनी लिपिमे सीख लें। मद्रासमे हिंदुस्तानी-प्रचार-सभा हिंदुस्तानीको उनकी अपनी लिपियोमे सिखानेका कार्य कर रही है। यदि वहाके लोगोको स्वदेशीका सच्चा अभिमान है तो उनको राष्ट्रभाषा सीख ही लेनी चाहिए।

मगर आज हम इतने बदनसीब हो गए है कि जहा एक ओर पाकि-स्तान बना वहा दूसरी ओरसे द्राविडस्तानकी मांग आने लगी। यदि यही हाल रहा तो हिंदुस्तान कहा रह जायगा ! हम गुलामकी हालतमें तो

एक रहे, परतु आजादी मिलते ही टुकडे-टुकडे हो गए, इससे बडी मूर्खता हमारी और क्या होगी ?

आज हम आजादी लेनेको तो तैयार हो गए, परतु हम उसके लिए सामान क्या तैयार कर रहे है ? सब लोग अपने-अपने शौकके मुताबिक चलना चाहते है। यही तो मूर्खताकी सबसे बडी निशानी है। अबतक तो एक तीसरी ताकतने हर सूबेको अपने मातहत रखा, परतु अब हमारा परम धर्म हो जाता है कि हम खुशीमें सब एक होकर रहें। हमारे यहा जो लश्कर रहनेवाला है, उसका काम किसी सूबेको दबाकर सबके अधीन रखना नही होगा। इग्लैडमे जो लश्कर है वह वहा अग्रेजोंको दबानेके लिए नही है। वहां जो पुलिस रहती है उसके हाथमें भी कभी बदूक नही रहती, केवल लकडीका छोटा डडा होता है। वे आम लामबदी भी करते है तो अग्रेजोको दबानेके लिए नही, किसी बाहरी आक्रमणको रोकनेके लिए अथवा समुद्रपर अपनी सरदारी बनाए रखनेके लिए करते है। इग्लैडकी सेना वहाके लोगोको बचानेके लिए नही होती। अत यदि हमने अपने लश्करसे वही काम लिया जो अबतक लेते रहे है, तो वह लश्कर आपको ही खा जानेवाला है। हम अपनी ही तरफ देखना सीखें, लश्करकी तरफ नही। हिंदू-मुसलमान, पारसी, ईसाई आदि सब इसी देशके रहनेवाले है। उनके मदिर और मस्जिद अलग-अलग रह सकते है, परंतु हिंदुस्तानरूपी जो बडा मदिर है वह सबका है। सब मजहबोंके लोग एक ही ईश्वरकी इबादत करते है।

दूसरी बात, जो मै कल सुनाऊगा, वह सुनने लायक होगी। आजकी बात भी सुनने लायक थी और यदि उसपर अमल न किया गया तो हमारा निश्चय ही सत्यानाश होनेवाला है।

## : ७१ :

### १७ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

आज जो भजन[1] आप लोगोंने सुना वह सूरदासजीका बनाया हुआ है। वह हम सबको विनम्र बनानेवाला भजन है। सूरदास कहते है कि मुझ-जैसा कुटिल, खल और कामी कौन हो सकता है कि जिसने शरीर दिया उसीको मै भूल गया। इसी भजनमे वे यह भी कहते है कि हरिजनो-को छोडकर उसने हरि-विमुख लोगोंका साथ किया। 'हरिजन' शब्द मैंने सूरदाससे ही लिया है, वैसे तो एक गुजराती कविने भी इस शब्दका प्रयोग किया है। परतु क्या सूरदास-जैसा भक्त कुटिल और खल हो सकता था? जवानीमें मैंने जब यह भजन पढा तब मैंने यह सोचा कि ये साधु-सत लोग बहुत अतिशयोक्ति करते है। मगर पीछे मैंने इस बातको समझा कि उसने जो कुछ कहा वह अपने-आपको सामने रखकर ही कहा था। उसने अपने लिए कोई माप या गज बना रखा था जिसके मुताबिक वह यदि एक सेकिंडके लिए भी भगवानका नाम भूल जाता तो अपनेको कुटिल और खल समझता था।

आज जो दो बाते मै आपसे कहना चाहता हू उनपर भी यही चीज लागू होती है। अखबारी समाचारोसे मालूम हुआ है कि दक्षिण अफ्रीकामे भारतीयोके साथ गुडाशाही बरती जा रही है। उनको हलाक किया जा रहा है। मै २० वर्षतक वहा रहा हू। इसलिए मैं जानता हू कि वहा हिंदुस्तानियोके साथ क्या गुजरती है। मै तो वहा उनके-जैसा ही हब्शी बन गया था। वहा मुसलमान भी बहुत अधिक तादादमे है, मगर वे सब अपने-आपको हिंदुस्तानी कहते है। ईश्वर, कम-से-कम हमे इतनी सद्-बुद्धि तो दे कि बाहर दुनियामे हम अपने-आपको हिंदुस्तानी कहे। यदि वहा भी हम अपनेको हिंदू, मुसलमान या पाकिस्तानी कहने लगे तो निश्चय-से हमारा खात्मा हो जानेवाला है।

---

[1] "मो सम कौन कुटिल खल कामी।"

अभी पिछले दिनों स्वरूप[1] संयुक्त राष्ट्रीय संघके सामने दक्षिण अफ्रीकाके भारतीयोंका पक्ष रखनेके लिए [illegible] आदिके साथ अमरीका गई थी। उसके बाद अफ्रीकामें हिंदुस्तानियोंको कानूनी तौरसे तो तंग नहीं किया जा रहा है, मगर गुंडाशाहीने मारना-पीटना शुरू कर दिया है। यदि यही हाल जारी रहा तो जो मुट्ठीभर हिंदुस्तानी हैं वे कैसे वहां रह सकेंगे? मैं एक बार ट्रांसवाल चला गया था और दो हजार लोगोंके साथ वहां पैदल घूमा। एक बोअरने भी कभी हमको नहीं छूआ। हमें तो बोअर लोग पानी भी पिला देते थे। हमारे यहां तो पानी बहुत रहता है, मगर वहां पानी कम मिलता है। जब वर्षा होती है तब वे पानी जमा करके रख लेते हैं और उसे ताला लगाकर रखते हैं। हम बोअरोंके साथ दोस्ती करके वहां [illegible] थे। परंतु आज तो मैं एक दूसरी ही शकल देख रहा हूं। चूंकि हमारे यहां अब दो सरकारें बन रही हैं, इसलिए मैं जिना साहब और जवाहरलालजी दोनोंसे कहूंगा कि उन्हें मिलकर स्मट्सके पास तार भेजना चाहिए। स्मट्स साहब मुझको अपना दोस्त मानते हैं। मैं भी उनसे एक दोस्तके नाते यह कहूंगा कि वे गोरे लोगोंसे कह दें कि वे दक्षिण अफ्रीकामें एक भी हिंदुस्तानीके साथ मारपीट न करें। यदि तब भी वे उनका कहना न मानें तो वे अपने पदसे इस्तीफा दे दें। लार्ड माउंटबेटनको भी खामोश होकर नहीं बैठना चाहिए। वह नौसेनाका [illegible] ऐड-मिरल है और शाही [illegible] है। फिलिप माउंटबेटन तो उनके [illegible] [illegible] हैं, जिनकी कि शादी इंग्लैंडकी राजकुमारी [illegible] होनेवाली है। इसके अलावा माउंटबेटन १५ अगस्ततक तो [illegible] हैं और उसके बाद गवर्नर-जनरल रहेंगे। [illegible] बातोंसे लाभ उठाकर जनरल स्मट्सको कहना चाहिए कि हिंदुस्तान भी उनके अपने देशकी तरह एक डोमिनियन बन रहा है। [illegible] ब्रिटिश हुकूमत खत्म हो गया है। [illegible] जो कुछ हो रहा है, वह बंद होना चाहिए।

---

[1] श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित।

डोमीनियन स्टेटसको आजादीसे भी बढकर बताया गया है। परतु जबतक मै इस फलको चख नही लेता तबतक कैसे कह सकता हूं कि अमृत है या उसमें जहर भरा है। उसमे शायद अमृत ही होगा, मगर हमे उसको चखने तो दो ?

दक्षिण अफ्रीकाके भारतीयोंको मेरी यह सलाह है कि वे सब वहां भले आदमी बनकर रहे। उनमेसे जो अच्छे पैसेवाले है वे अपने गरीब मुसलमान भाइयोंको न छोडे, जो कि वहा अछूतोंकी तरह पडे है।

मुझसे यह पूछा गया है कि दक्षिण भारतमे तो हरिजनोंके लिए इतना काम हो गया और तामिलनाड तथा आध्रके सब बडे-बडे मदिर हरिजनोके लिए खोल दिए गए, परतु युक्तप्रातका क्या हुआ ? युक्त-प्रातमे हरिद्वार पडा है। क्या हरिद्वारके मदिरोंमे अछूत जा सकते है ? दक्षिण भारतकी त्रावनकोर रियासतमे तो बहुत पहलेसे ही यह सब हो गया था। वहाके दीवान सर सी० पी० रामस्वामी अय्यर आज तो हमसे बिगडे हुए है, और बिगडे हुए है भी या नही यह आज तो मैं नही जानता। मगर तब उन्होने वहाके महाराजाको समझाकर अबसे बहुत पहले ही कानूनद्वारा अपनी रियासतमें अछूतपनको मिटा दिया था। युक्तप्रातमे हरिद्वारके अलावा काशी विश्वनाथ भी है जहा गगाजीमे स्नान करनेसे मोक्ष मिलता बताया जाता है। वहाके मदिरोमे हरिजन जा सकते है, ऐसा मैं नही कह सकता। परतु मै तो यही कहूगा कि जहा हरिजन नही जा सकते वे मदिर नापाक है।

आज दुनियामे सब धर्मोकी कडी परीक्षा हो रही है। इस परीक्षामे हमारे हिंदू-धर्मको सौ फीसदी नबर मिलने चाहिए ९९ फीसदी भी नही।

## : ७२ :

### १८ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

आजका जो भजन[1] है, वह समझने-जैसा है, क्योंकि हम लोग भी तो आखिर भीरमें पड़े हुए है। न हमारे पास खानेके लिए अन्न है, न पहननेके लिए कपडा। तो क्या हम इसकी शिकायत जवाहरलालजीसे या सरदारजीसे करें, क्योंकि वही तो आज हमारे हाकिम बन गए है? वाइसराय साहबने गद्दी छोड़ दी या छोडने जा रहे हैं। गवर्नर-जनरल तो उनको हमने बनाया है, इसलिए बन रहे है। पहले जो अफसर होते थे वे लदनसे नियुक्त होकर आते थे। मगर अब तो स्वाधीनता-बिल पास हो गया है और कलके अखबारोमें आप यह भी पढ लेंगे कि बादशाहने उस बिलपर अपने दस्तखत दे दिए। अत सारी सत्ता अब हिंदुस्तानकी आम जनताके हाथमें आ गई। मगर इस भजनमे जो चीज भरी है वह यह है कि जब हमपर भीर पडती है तब हम दूसरोको नही, बल्कि तुमको, अर्थात् ईश्वरको ही पुकारेंगे। केवल वही हमारी भीर हर सकते हैं। यदि उसको याद करके हम अपना काम चलायेंगे तो हमारा काम ठीक चलता जायगा, नही तो वह बिगड जायगा। वह दुनियाका बादशाह है। अतः उसके मातहत रहकर काम करनेमें ही हमारी भलाई है।

'डॉन' नामका एक अग्रेजी अखबार दिल्लीसे निकलता है। वह जिना साहबका अखबार है और उसमे रोज कुछ-न-कुछ गालिया आ ही जाती है। मुझको भी आती हैं। मै तो उनको देखकर केवल हँस देता हू। मगर आज तो उसके एडीटरने मेरे नामसे एक खत छापा है। खासा लिखा हुआ है। वे कहते है कि आप जिना साहबसे जो चीख-चीखकर कहते है कि आपका इम्तहान होनेवाला है, सो यह सब बद कर दे।

क्या मैं एडीटर साहबसे पूछ सकता हू कि कराचीसे, जहापर कि

---

[1] "हरि तुम हरो जनकी भीर।"

पाकिस्तानकी राजधानी बन रही है, जो हिंदू लोग दु.खी और डरके मारे भाग रहे है उसकी वजह क्या है ? क्यो वे डरे हुए है ? सिंधके हिंदू बहुत आला दर्जेके व्यापारी है। वे क्यों बबई, मद्रास या किसी और जगह भागकर जा रहे है ? इससे सिंधकी ही हानि होगी, उनकी नही। मैं जानता हू कि वे जहा भी जायगे वही पैसे पैदा करेंगे। वे कही भी खोनेवाले नही है। दक्षिण अमरीका तकमें सिंधी मिल जाते है। दुनियामे कोई ऐसी जगह नही होगी जहा सिंधी न रहते हों। दक्षिण अफ्रीकामे तो उन्होंने अच्छा पैसा पैदा किया है और जब मै वहा था तब मुझे भी वे गरीब लोगोंके हितमे खर्च करनेके लिए खूब पैसा देते थे, परतु उनमे एक अवगुण यह है कि वे शराब पीते है। उसे वे छोड भी नही सकते, क्योंकि उसके छोडनेसे वे मर (?) भी जाते है।

'डॉन'ने यह भी लिखा है कि आप जिना साहब या अन्य लीगी नेताओको ही क्यो कहते है ? आज युक्तप्रातमे क्या हो रहा है ? वह तो आपका अपना सूबा है। पर सिंध भी तो मेरा ही सूबा है, जैसा युक्तप्रात। मैं तो सारे हिंदुस्तानको, जिसमें पाकिस्तान भी शामिल है अपना मानता हू। मै अपनेको पाकिस्तानका भी तो बाशिंदा कहता हूं। इसलिए नही कि मै वहा कोई हकदार बनना चाहता हूं। मुझे कोई हाकिमी नही चाहिए। मैं तो केवल पेटके लिए रोटी चाहता हूं और वह ईश्वर मुझको दे देता है। मुझे तो युक्तप्रातके बारेमें कुछ पता ही नही था। इसके अलावा मैंने किसीपर इल्जाम तो लगाया ही नही। एडीटर बडे आदमी है। वे अगर ऐसा समझते है कि मै जो कुछ कहता हू वह सही नही है तो उनको क्या परवाह पडी थी ! मेरे-जैसे कितने ही कहते फिरते है। मगर युक्तप्रातके बारेमे पतजीसे मेरी बाते हुई है। उन्होने मुझे बताया कि जितना हमसे होता है हम मुसलमानोको बर्दाश्त करते है। मगर हम हर जगह तो नही पहुच सकते। मुस्लिम लीगियोंने जब रोज हिंदुओको गालिया देने और उनको सतानेपर कमर कस ली हो तब कही-कही हिंदू भी बिगड जाते है। हम जहातक होता है सबके साथ इन्साफ करते है। पतजीने यह कहा है कि गढमुक्तेश्वरमे हिंदुओने जो किया वह अच्छा नही किया। और अखबारी समाचारोके

अनुसार तो युक्तप्रातके मुस्लिम लीगी नेताओतकने पत-मन्त्रिमडलके कामकी सराहना की है।

परंतु मै 'डॉन'के एडीटर साहवको यह कहना चाहता हू कि अगर यह मान भी लिया जाय कि उनकी सब बातें ठीक है और पतजीने जो कुछ कहा वह कोई वेद-वाक्य नही है, तो भी कोई वजह नही कि अगर युक्त-प्रातमे एक मुसलमानका गला कटता है तो उसके बदलेमें सिंध या पजाबमें दस हिंदुओके गले काटे जाय। मै तो यह देखनेके लिए जिंदा रहना चाहता हू कि हम इस मजहबी खुराफातको बिल्कुल भूल जाय। हमने चाहे किसी भी मजहबमें जन्म लिया हो, मगर कर्मसे हमे हिंदुस्तानी होना चाहिए। जब यह हो जायगा तभी हम अपने देशकी आजादी कायम रख सकेंगे।

'डॉन'के एडीटर अगर सचमुच इस्लामकी खिदमत करना चाहते है, तो मै कहूगा कि इस्लाम यह तरीका नही सिखलाता। जहातक जिना साहबसे कहनेका सबंध है, मै तो लार्ड माउटबेटन और जवाहर-लालजीको भी कहता रहता हू। जवाहरलालजीके कहने और करनेमे अगर फर्क हो तो वे भले ही अपने घरके पडित बने रहें, मेरेलिए तो वे बदमाश है। ऐसा कहकर मै जवाहरलालजीको कोई गाली थोडे ही देता हू। मगर 'डॉन'के एडीटरसे मै इतना अवश्य कहूगा कि उनकी कलममे जो जहर है उसको वे छोड़ दे। राष्ट्रीय पत्रोमे भी कभी-कभी भली-बुरी बातें आ जाती है। पर अगर सब मिलकर आपसी झगडेकी खबरें न छापे, तो मै कहूगा कि हमने एक बडा भारी काम कर लिया।

## : ७२ :

### १६ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

आज वर्किंग कमेटीकी बैठक यहा हुई थी, परतु उसमे ऐसी कोई बात नही हुई जो मै आपको बता सकू, अर्थात् उसने कोई बता सकने

लायक बात ही नही हुई। एक बातकी ओर मै आज आपका ध्यान दिलाना चाहता हू और वह यह कि काग्रेसी लोगोंमे आज ऐसी बेसब्री, या इसे गंदगी कहना चाहिए, पैदा हो गई है कि किसी-न-किसी तरह काग्रेसकी मार्फत ऊपर चले जाय। अगर काग्रेस केवल मुट्ठीभर लोगोकी होती और वे ऐसी इच्छा रखते, तब तो बात समझमें आने लायक थी। परतु काग्रेसमे तो करोडोंकी तादादमे लोग है और यदि ये सब-के-सब ऐसी इच्छा करे तो हुकूमत तो मर जायगी। नौकरी दो ही तरहके लोग किया करते है। एक तो वे जो और सब तरफसे लाचार हो जायं और दूसरे वे जो अपने सब स्वार्थ छोडकर सेवाकी दृष्टिसे ऐसा करे। चूंकि काग्रेसके हाथमे शासनकी बागडोर आ गई है, इसलिए करोड़ों रुपयेकी आय और व्ययका हक भी उसको मिल गया है। अगर सब काग्रेसी यह समझ लें कि काग्रेस जो खर्च करे उसमेसे उनके पल्ले भी कुछ पडना चाहिए और कर-दाता यह मान बैठे कि चूकि काग्रेसके हाथमे सत्ता है इसलिए अब कर देनेकी कोई जरूरत नही, तब कोई काम नही चल सकेगा। इसका मतलब तो यह हुआ कि हम अपना धर्म तो भूल गए और अधर्मको अपना रहे हैं।

आजकल मेरे पास तार-पर-तार आ रहे है। मै यह नही कहता कि मेरे पास ही ये तार आ रहे हैं। जिनके हाथोमें हुकूमत है उनके पास तो और भी अधिक तार आ रहे होगे। उनमे लिखा है कि हिंदुस्तानमे गो-वध रुकना चाहिए और वह भी ऐसी गायोंका जो दूध देती है तथा हलमें चलाने लायक बैलोका। तार भेजनेवालोको शायद यह मालूम नही है कि मैं जब दक्षिण अफ्रीकामे था तब भी गायका पुजारी और उसका भक्त था; परतु जिसकी भक्ति हम करते हैं उसे हमारी रक्षा करनी चाहिए या हम उसकी रक्षा करे? मगर हकीकत तो यह है कि जो अपनेको गो-रक्षक कहते हैं, वही गो-भक्षक हैं। वे यही समझकर मुझे तार देते है कि मै जवाहरलाल या सरदारसे ऐसा कानून बनानेके लिए कहू, परतु मै उनसे नही कहूगा। मै तो इन गो-रक्षकोसे कहूगा कि आप क्यो व्यर्थ इतना पैसा तारोपर खर्च करते है? उस पैसेको गायोपर ही क्यों न खर्च करें? अगर आप नही खर्च कर सकते तो

उसे मेरे पास भेज दें। मैं तो यह कहूंगा कि गायकी पूजा करनेवाले भी हम हैं और उसका वध करनेवाले भी हमी हैं। गायोको हम इतना कम चराते हैं और बैलोंपर इतना अधिक वजन लादते हैं कि उनकी हड्डी-ही-हड्डी देखनेमें आती है। लकडीमें भी चोभनी लगा लेते हैं और जब बैल नही चलता तब उसके बदनमें चुभो देते हैं। ऐसे जो लोग हैं उनको यह कहनेका क्या हक है कि गोकुशी बद होनी चाहिए। आखिर गो-धन तो सारा हिंदुओंके ही घरोंमें भरा है। वे क्यो कसाइयोके हाथ उन्हें बेच देते हैं? हिंदू तो कम दूध देनेवाली गायको खरीदेगा नही, चाहे गौशालावाले भले ही खरीद लें, क्योकि उनके पास तो धर्मादेका पैसा होता है। तब बाकी गाय बूचडखानेमें ही जाती है। इसके अलावा आज कोई जमाना तो बदल नही गया है। हम जो थे वही आज हैं और वही १५ अगस्तके बाद रहनेवाले हैं। जैसी दुर्बल गाये मैं आज हिंदुस्तानमें देखता हू वैसी मैंने दुनियाके किसी हिस्सेमें नही देखी। हम तो यहा धर्मके नामपर ही अधर्म कर रहे हैं। सरदार या जवाहरलाल कानून बनाकर इस गोकुशीको बद कर दें ऐसी चीज नही है। कानून तो लडाईके दिनोमें भी बनाए गए थे, क्योकि दूध तो आखिर उनको भी चाहिए था। उस वक्त भी दूध देनेवाली गायोका वध बद था और यह सब जगह हो सकता है। यह तो पाकिस्तानमें भी होनेवाला है, क्योंकि दूध तो उनको भी पीनेको चाहिए।

मुझसे कुछ प्रश्न पूछे गए हैं जिनके जवाब इस प्रकार हैं—

प्रश्न : अभी हमने सुना है कि जो हमारा राष्ट्रीय झडा होनेवाला है उसके एक कोनेमें यूनियन जैक होगा। यह केवल सुनी हुई और अखबारोकी पढी हुई बात है। अगर यह सच है तो हम उस झडेको फाड डालेंगे और उसके पीछे अपनी जान तक दे देंगे।

उत्तर अगर हमारे झडेके एक कोनेमें यूनियन जैक लगाया गया है तो क्या गुनाह किया? गुनाह अगर किया होगा तो अंग्रेजोने किया। उनके झडेका क्या दोष है? अंग्रेजोकी खूबी भी तो आप देखिए। वे स्वेच्छासे आपके हाथमें बागडोर देकर जा रहे हैं। कितनी खूबीकी बात है कि इतना बडा बिल जिसमें सारी सल्तनतको उन्होने फेंक दिया, पार्ला-

भेंटने पास करनेमे एक सप्ताह भी नही लगाया। एक जमाना वह था जब कि हम लोगोके मिन्नते करते रहनेपर भी छोटेसे बिल पास होनेमें भी एक-एक साल लग जाता था। उस बिलमें उन्होने कोई सफाई की है या नही, यह तो बादमे तजर्बेसे ही पता चलेगा। मगर यूनियन जैक रखनेमें तो हमारी शराफत ही थी। हम अपने सबसे बड़े दरवानके तौर-पर लार्ड माउटबेटनको यहां रखते है। वह पहले इग्लैडके बादशाहका नौकर होता था मगर अब हमारा नौकर है। जब हम उसको अपनी नौकरीमें रखते है, तब एक कोनेमे उसका झडा भी रख लेते है तो उससे हिंदुस्तानके साथ कोई बेवफाई नही होती।

पर यह तो मैंने आपको अपनी राय बताई है। मगर मैंने आज यह सुन लिया है कि यूनियन जैककी जो बात थी वह हमारे झडेमें नही होनेवाली है। मुझको तो इस बातका दर्द होता है कि काग्रेसी नेताओंने इतनी उदारता क्यो नही दिखाई? हम उससे अग्रेजोके साथ अपनी मित्रताका सबूत देते। आज अगर मेरी वैसी ही चलती जैसी पहले चलती थी तो मै उन लोगोंको डाटनेवाला था। आखिर हम लोग अपनी इन्सा-नियत और शराफतको क्यो छोडे?

## : ७४ :

### २० जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

मुझको कुछ लोग ऐसा सुनाते है, और सुनानेका उनको हक भी है, कि मै आजकल ऐसी बातें कहता हू जिससे लोगोंका उत्साह नही बढता। वे कहते है कि जिस आजादीके लिए आप लड़ रहे थे वह तो मिल गई और राजनैतिक आजादीके साथ-ही-साथ आर्थिक आजादी भी मिल जायगी। यह सब कुछ होनेपर भी मैं आजादीके दिन, अर्थात १५ अगस्तको खुशी नही मना सकता। मैं आपको धोखा देना नही चाहता, इसलिए मै जाहिरा यह बात कह रहा हू। मगर मैं आपसे यह नही

कह सकता कि आप भी खुशी न मनाए। आखिर सब काम मेरी मर्जीके मुताबिक थोड़े ही होते हैं। मैं तो हिंदुस्तानके टुकडे करना भी नहीं चाहता था, मगर वे होकर रहे। जब वे हो गए तो उसके लिए रोना क्या? अगर इससे भी बुरी चीज हो जाती तब भी मैं नहीं रोता। हिंदुस्तानके टुकडे होनेका जो दुख आपको है उससे अधिक मुझको होगा। मेरी सारी जिंदगी लड़ाई लडनेमें बीती है या यह कहिए कि मेरा सारा जीवन करीब-करीब बागी रहा है। तब ऐसे आदमीको रोना कैसे आ सकता है? जब नोआखालीमें गया तब मैंने वहा रोते हुओंके आसू सुखा दिए। मैंने उनको बताया कि जो लोग मर गए उनके लिए रोना क्या? परंतु जिन लोगोके हाथोंमें हमने बागडोर सौंपी है वे बहुत बडे आदमी है। वे जब कहते है कि खुशी मनाई जानी चाहिए तब आपको वह मनानी ही चाहिए। यह न सोचें कि गांधी क्यो नही खुशी मनाता। अगर कोई न मनाना चाहे तो काग्रेस किसीको मजबूर तो करती नही, परंतु मेरी अपनी यह राय है कि वह दिन खुशी मनानेके लिए नहीं है। इसका मतलब यह नही है कि अग्रेज यहासे जायगे नही। १५ अगस्त-तक तो बहुतसे गोरे अफसर यह देश छोड चुकेंगे। जो रहेंगे भी, तो वे हमारे गुमाश्ते बनकर रहेंगे। अब उनकी भी नियुक्ति लदनसे न होकर यहासे हुआ करेगी।

मगर हकीकत तो यह है कि आज जो आजादी हमें मिली है वह हिंदुस्तान और पाकिस्तान दोनोंको आपसमें लडाई लडनेका सामान भी साथ देती है। तब हम उस दिन दिया-बत्ती क्या जलाए? मैं तो उस दिन आजादी मिली समझूगा जब कि हिंदू और मुसलमानोंके दिलोंकी सफाई हो जायगी। अभी पंजाबके कुछ मुस्लिम-लीगी भाइयोंने यह धमकी दी है कि अगर सीमा-कमीशनने अपना फैसला, जैसा हम चाहते है, वैसा न दिया तो हम लड़कर लेंगे। सिख भाई भी इसी तरहकी धमकियां दे रहे हैं। जब हम सब किसीको पच मान लेते है तो वह जो फैसला दे उसे कबूल कर लेना चाहिए। 'लड़के लेंगे पाकिस्तान' और 'लड़के लेंगे सिक्खिस्तान'—यह चीज हममेंसे कब जानेवाली है? मैं तो केवल एक ही लडाई जानता हू और वह सत्याग्रहकी लडाई है।

उस लडाईसे आत्म-शुद्धि होती है। वह लडाई अगर दुनियामे हमेशा चलती रहे तो अच्छा ही है। मै अपने हिंदू, सिक्ख और मुस्लिम भाइयोंसे कहता हू कि जब हमने सीमा-कमीशनको अपना पच मान लिया तो उसका फैसला मानना उनका धर्म हो जाता है। मगर आजकी आवहवासे मुझे जब वह सुगधि नही मिलती तब खुशी किस बातकी? अग्रेजोका यहासे चले जाना ही मेरे लिए काफी नही है।

ब्रह्मदेश भी हिंदुस्तानकी तरह आजाद हो रहा है। वहाके नेता जनरल यू आग-सागने आधुनिक बर्माको जन्म दिया और उसे आजादीके दरवाजेपर लाकर छोड दिया। वह सत्याग्रही नही था तो उससे क्या हुआ? वह एक बहादुर लडाका था और उसीके फलस्वरूप आज बर्मा आजाद होने जा रहा है। एक सशस्त्र गिरोहने उनको और उनके चार अन्य साथियोंको कत्ल कर दिया, यह कोई छोटी बात नही है। हम चाहे उनसे कितनी ही दूर हों, मगर हमारे लिए यह बड़े रंजकी बात है। अगर ऐसी घटनाए होती रही तो दुनियाका क्या हाल होगा? हत्यारे सचमुच लुटेरे थे, ऐसा मुझे नही लगता। मै बर्मामे काफी रहा हू। रगून और माडले आदि स्थान सब मेरे देखे हुए है। वहा बुद्ध-धर्म चलता है। बर्माके लोग अधिकाश बुद्ध-धर्मको मानते है। जहा बुद्ध-धर्म प्रचलित है वहा ऐसे खून-खच्चर क्यो? इन हत्याओमें लुटेरूपन नही, बल्कि उनके पीछे कुछ पार्टीबाजी रही है। इस तरहकी लडाइयोने दुनियाका सत्यानाश कर दिया है। इस तरहसे तो जो हमारे मुखालिफ है वे आकर हमारा खून करने लगे तो कैसे काम चलेगा। बर्मा जब आजादीके दरवाजेमे दाखिल हो गया है तब ऐसा होना बहुत दुःखदायी बात है। हम ऐसे जाहिल क्यो बन जाते है?

मुझे आशा है कि हिंदुस्तान इससे सबक लेगा; क्योंकि यह न केवल बर्माके लिए बल्कि सारे एशिया और ससारके लिए एक दु खद घटना हुई है। हम सब यह प्रार्थना करें कि हे भगवान, बर्माके जो लोग है वे हमारी ही तरहसे आजादीके लिए तड़प रहे है, उनको तू इस दु खमे सान्त्वना दे और मृत व्यक्तियोंके परिवारोको शोक सहन करनेकी शक्ति दे। जिन लोगोने खून किया है उनके दिलोंकी भी तबदीली कर।

'डॉन' अखबारके एडीटरने आजके अकमें मेरे दो सुझाव मान लिए है। यह पढकर मुझको अच्छा लगा। वे कहते है कि हम गाधीको इत-मीनान दिलाते है कि पाकिस्तानमे हिंदू और मुसलमान सब आपसमें दोस्ताना तौरपर रहेंगे। उन्होने एक बात और लिखी है। वे कहते है कि अखबारनवीसोकी एक कमेटी बना दें। वह कमेटी साम्प्रदायिक समाचारोंकी जाच करे और उसके बाद उसे प्रकाशित करे। मुझको सबोधन करते हुए वे कहते हैं कि तू भी तो अखबारनवीस है। उस कमेटीका अध्यक्ष बन जा। मै उनसे कहना चाहता हू कि मै तो लाचार हू। मेरे पास वक्त नही है। दूसरे, मै इस कामके लायक भी नही रह गया हू। इसके अलावा, मै आज यहा और कल वहा, मैं कैसे उसकी सदारत कर सकता हू ? अगर वे दिलसे कुछ करना चाहते है तो वे और सम्पादकोसे मिलकर कर सकते है। .

मै अतमें फिर कहता हू कि जब पाकिस्तान और हिंदुस्तान दोनोमें रहनेवाले अल्पसख्यक यह कह देंगे कि हम वहा बहुत खुश है, तब मै कहूगा कि अब हमारे पास सच्ची आजादी आ गई है और हमको उसकी खुशिया मनानी चाहिए।

## : ७५ :

### सोमवार २१ जुलाई १९४७

(लिखित सदेश)

पाकिस्ताननिवासी एक भाई लिखते है—'आप लोग पद्रह अगस्तका दिन मनानेकी बातें कर रहे है। क्या आपने सोचा है कि उसे हम हिंदू कैसे मनावें ? हम तो सोच रहे है कि उस रोज हमारे हाल कैसे होगे और हमें क्या करना होगा ? इस बारेमें कुछ कहोगे ? हमारे लिए तो वह दिन मुसीबतका सामना करनेका होगा, उत्सव मनानेका हरगिज नही। यहाके मुस्लिम आजसे ही हमें डरा रहे है। क्या जाने हिंदुस्तानके मुस्लिम क्या समझते होंगे ? क्या वे भी भयभीत नही होगे। हम लोगोंको

यहातक डर लग रहा है कि बड़े पैमानेपर लोगोंको मुस्लिम बनानेका यत्न किया जायगा। आप कहेंगे कि धर्मकी रक्षा सब अपने-आप करें। यह सन्यासीके लिए भले ही सच्चा हो, गृहस्थीके लिए नही।'

जिना साहब अब तो पाकिस्तानके गवर्नर-जनरल बन रहे है। उन्होंने कहा है कि हरेक गैर-मुस्लिमके प्रति ऐसा ही बरताव होगा जैसा मुस्लिमके प्रति। मेरी सलाह यह है कि हम उनके लफ्जोपर भरोसा रखें और मानें कि वहा गैर-मुस्लिमोके प्रति कुछ भी बुरा बरताव नही होगा और न मुसलमानोके प्रति हिंदुस्तानमें। मेरा खयाल तो ऐसा भी है कि अब जब दो राज होते है तो हिंदुस्तानको पाकिस्तानसे जवाब मागना होगा।

मै इतना जरूर मानता हू कि १५ अगस्त किसी तरह उत्सव मनानेका दिन नही है, वह दिन प्रार्थनाका और अर्तविचारका है। लेकिन अगर दोनों समझ जाए तो दोनोको आजसे दोस्त बननेकी तजवीज करली चाहिए। या तो १५ अगस्तको सब भाई-भाई मिलकर खुशी मनावें या बिलकुल नही। आजादीकी खुशी मनानेका दिन ही तब हो सकता है जब हम सच्चे दिलसे दोस्त बने। लेकिन यह तो मेरा विचार है और इस विचारमें मुझे कोई साथ देनेवाला नही है।

फिर वह भाई पूछते है कि कष्टके मारे अगर सब या बहुत लोग पाकिस्तानसे निकल जाए तो उनको हिंदुस्तानमे आश्रय मिलेगा या नही? मै तो मानता हू कि ऐसे लोगोंको जरूर आश्रय मिलना चाहिए। लेकिन धनिक लोग अगर पुराने ढंगसे रहना चाहे तो मुसीबत होगी। ऐसे लोगोको जगह मिलनी चाहिए और कामके बदले दाम भी। मेरी उम्मीद तो यही रहेगी कि कोई गैर-मुस्लिम डरके मारे पाकिस्तानका अपना वतन नही छोडेगा, और न हिंदुस्तानका कोई मुस्लिम हिंदुस्तानका अपना वतन छोडेगा।

वह भाई यह भी पूछते है कि जो जमीन व मकान पाकिस्तानमे छूटेंगे उनका क्या होगा?

मैंने तो कहा है कि जमीन व मकानका बाजार-दाम पाकिस्तानी सरकारको देना चाहिए। रिवाज तो यह भी है कि ऐसे कामोंमें दूसरी

सरकार दखल भी देती है। यहा तो हिंदुस्तानकी सरकार होगी। लेकिन मै क्यो मानू कि मामला वहातक जायगा। पाकिस्तान सरकारका फर्ज होगा कि ऐसे लोगोको अपनी जमीन व मकानका बाजार-दाम दे।

वही भाई फिर पूछते है कि आप तो अपनेको व्यावहारिक आदर्शवादी मानते हैं। आजकल जो चल रहा है सो तो वहशियाना काम है। आततायीके प्रति अहिंसा चल सकती है क्या? यदि हा, तो कैसे?

मेरी कोशिश तो रहती है कि मै अपने आदर्शको इस तरह चलाऊ कि वह काममे आ सके, चाहे भले ही मै हमेशा सफल न बनू। आततायी किसे कहें? मनु महाराजने जिनको आततायी माना है उन सबका वध आज नही होता है। आज तो वध-मात्रका प्रतिवध करनेकी चेष्टा होती है। फिर सुधारक लोग यहातक जाते हैं कि दड-नीति हटनी चाहिए। आततायी भी बीमार माने जाय और जैसे बीमारोका इलाज होता है वैसे इन आततायियोके लिए भी अस्पताल बनाये जाय। कहनेका मतलब इतना ही है कि शास्त्रके नामसे जो चलता है सबको शास्त्र न माना जाय और शास्त्र वही माना जाय जिसमे कम-वेश हमेशा होता रहे। युग-युगमें नीति बदलती रहती है। जिसमें फर्क नही हो सकते, ऐसे कानून बहुत कम होते हैं। और आततायीको दड देनेका काम हरेकका कभी नही होता है। यह काम पचायतका या हकूमतका होता है। हकूमत कानून बनाती है और उसके मुताविक इसाफ करनेके लिए अदालत बनती है। ऐसा न हो तो हम सबके आततायी बननेका डर होता है। बर्मामे जो भयानक खून हुए वे भयानक थे; लेकिन अब हम समझे कि वे सियासी थे। मुझे यकीन है कि जिनका उन्होने खून किया वे उनके हिसाबसे आततायी थे। हमारे आतकवादियोने मेरा कहा नही माना था। ऐसा उन्होने सच्चे दिलसे मुझको कहा है कि जिनका खून उन्होने किया वे आततायी थे। अपनेको उन्होने कभी आततायी नही माना था। इसी कारण मै कहूगा कि जो आदमी अपने हाथोमे कानून लेता है वह गुनहगार बनता है। वह लोगोकी हिंसा करता है। अहिंसासे अगर छूट हो सकती है तो वह सिर्फ लोगोकी बनाई हुई पचायतसे। आज जो जगतमे हो रहा है वह अत्याचार है, आततायीपन है।

## : ७६ :

### २२ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

आज मेरे पास एक खत आया है। इस प्रकारकी जो चीजें मेरे पास आती है उनका खुलासा मै यहा कर देता हू। खतमे लिखा है-"आजकल आप लार्ड माउटबेटनको बहुत बढा रहे है। वे कोई गलती ही नही कर सकते, ऐसा आप कह रहे है। लेकिन आपको याद होगा कि आपने दूसरी राउड टेबुल कान्फ्रेसमे चीख-चीखकर यह कहा था कि जब हिंदुस्तानको आजादी मिल जायगी तब वाइसराय साहबका जो घर है उसमे हरिजन बालक रहेगे या वहा अस्पताल खोला जायगा। आज आपका इस तरहसे लार्ड माउटबेटनको चढाना उस चीजसे मेल नही खाता।"

मै कभी किसीको नही चढाता। न तो मुझे उनसे कुछ चाहिए और न उनको मुझसे। मुझको तो खिताब भी नही चाहिए, और दूसरी चीज उनके पास देनेके लिए है ही क्या ? मुझपर इलजाम तो यह लगाया जाता है कि मै अपने आदमियोको केवल डाटता ही रहता हू और उनकी कभी तारीफ नही करता। जहातक लार्ड माउटबेटनका सबध है, अभी तो उसी घरमे—घर तो क्या एक किला कहना चाहिए—उनको रहना चाहिए। अगर मै उनको बाहर घसीट सकू तो मै उनको अपने पास ही रखू। मगर उनको वहा राजाओसे मिलना है और भूतकालकी गलतियोंको उन्हे दुरुस्त करना है। उन गलतियोसे जो दुष्परिणाम हो सकते है उसको उन्हे मिटाना है। गवर्नर-जनरल भी तो उनको इसीलिए बनाया गया है कि वह बहुत तेजीसे काम करनेवाले है। उनको यह पद देनेका मतलब उनकी खुशामद करना नही है। और फिर क्या जवाहरलालजी और सरदार पटेल किसीकी खुशामद करनेवाले थे ? इसमें मुझे कोई गलती नही दिखाई देती। अगर वह बदमाश ही है तो उसका नतीजा उनको मिलनेवाला है। मेरे ६० वर्षोका अनुभव तो यही बताता है कि जो किसीके साथ धोखा करता है, वह किसीका कुछ नही बिगाड सकता। वह केवल

अपना ही बुरा करता है। मगर अभी मैं नही जानता कि लार्ड माउटबेटन साहब उसी किलेमे रहेगे या कही और, या वहा अस्पताल बनेगा। उस बारेमे तो जवाहरलालजी और सरदारको ही मालूम होगा। मुझे इसका कोई ज्ञान नही।

एक दूसरे भाई लिखते है कि लश्करका जो विभाजन हो रहा है और उसमें जो ब्रिटिश अफसर रखे जायगे उससे क्या तुम सहमत हो? इस भाईको पहले तो मुझसे यही पूछना चाहिए कि जो लश्कर रहनेवाला है, क्या उससे मै सहमत हू। लश्करको रखनेमें, चाहे वह कैसा और कितना ही क्यो न हो, मेरी मदद हो ही नही सकती। मगर दुखकी बात तो यह है कि आज हम पुराने-जैसे नही रह गए। पुराना जमाना बदलकर अब नया शुरू हो गया। मैने तो यह माना था कि हमारे लोग सब अहिसक है। सबसे मेरा मतलब है एक बडे पैमानेपर।

परतु अब ३२ वर्षके बाद मेरी आखे खुली है। मै देखता हू कि अबतक जो चलती थी वह अहिसा नही थी, बल्कि मद-विरोध था। मद-विरोध वह करता है जिसके हाथमे हथियार नही होता। हम लाचारी-से अहिसक बने हुए थे, मगर हमारे दिलोमें तो हिसा भरी हुई थी। अब जब अग्रेज यहासे हट रहे है तो हम उस हिसाको आपसमे लडकर खर्च कर रहे है। मै तो केवल इतना ही जानता हू कि मेरे दिलमे कभी हिसा नही थी। मगर जो दूसरे लोग है उनका मै क्या करू। वे कहते है कि अग्रेजोके वक्त हमने अहिसा रखी। हम अब भी अहिसा रखे, यह तू किस तरहसे कहता है? इसमे दोष मेरा ही है। ३२ वर्षतकका जो शिक्षण था, वह दोषपूर्ण था। मगर यदि वे भाई मुझसे पूछें तो मै आज भी यही कहूगा कि लश्कर रखनेमे मै शरीक नही हू। क्या हिंदु-स्तानमे आखिर फौजी-राज्य होना है? बगाल, पजाब, बिहार जहा देखो, वहीसे लश्करकी माग आती है। कहीं हिंदुओको अपनी रक्षाके लिए लश्कर चाहिए तो कही मुसलमानोको। ऐसे बेहाल है हम आज। इसलिए लश्करका किस तरहसे बटवारा होता है या नही होता इसका मुझे कुछ पता नही। जिस चीजमे मेरी दिलचस्पी ही नही उसमें मै क्यो अपना वक्त खर्च करू?

आज चार बहनें मुझको इस बातके लिए मुबारकबाद देने आई थी कि तिरंगा झडा जिसमें चर्खेका चक्र मौजूद है, अब सारे भारतका राष्ट्रीय झडा बन गया है। मै तो उसमें अपने लिए कोई मुबारकबादी नही देखता हू। मुझे बताया गया है कि उसमे चर्खेके स्थानपर एक चक्र है। यदि वह चक्र चर्खेका ही है तो, तब तो खैर है और अगर नही है तो भी मुझे उसकी क्या पडी है। अगर उन्होने चर्खेको फेक दिया तो फेक दें, मेरे दिलमें और मेरे हाथोमे तो वह रहेगा ही।

एक भाईने बताया कि चर्खा उसमे है और दूसरे कहते है कि चर्खा तो अब खत्म हुआ और तेरे जिंदा रहते हुए ही वह खत्म हो गया। मै नही जानता कि चर्खा है या खत्म हो गया। मगर इतना जरूर जानता हू कि अगर चर्खा झडेमे लगा भी दिया जाता और वह लोगोके दिलोमें नही है तो मेरी दृष्टिसे झडा और चर्खा दोनो जलाने लायक है। परतु अगर चर्खा झडेमे नही है और लोगोंके दिलोमे है तो मुझे झडेमे चर्खा न लगानेकी कोई चिता नही है। मै तो यह चाहता हू कि सारे देशका एक झडा हो और हम सब उसको सलामी दे। मुझको यह सुनकर अच्छा लगा कि आज विधान-परिषद्मे चौधरी खलीकुज्जमा और मोहम्मद सादुल्ला दोनोने इस झडेको सलामी दी और यह भी कहा कि यूनियनका जो झडा होगा उसके प्रति वे वफादार रहेंगे। अगर दिलसे उन्होंने ऐसा किया है तो यह अच्छा लक्षण है।

लेकिन सिलहटसे जो तार आया है वह बहुत खतरनाक है। वहा जनमत-सग्रह तो हो गया मगर त्रास अभीतक चल रहा है। क्यो वहाके मुसलमान अपना मिजाज खो बैठे है? वहा जो राष्ट्रीय मुसलमान है उनको हलाक किया जा रहा है। तारमें लिखा है कि यहासे किसीको देखनेके लिए तो भेज दो। मै किसको भेज सकता हू। या तो कृपलानी-जी भेजे या जवाहरलालजी भेज सकते है। मै चाहता हू कि मुझे यहासे अब नोआखाली चला जाना चाहिए। सिलहट तो उसके नजदीक ही है। मगर कैसे जाऊ, मै तो यहा कैद पडा हू। मै उल्लघन करके जा भी नही सकता।

मै मानता हू कि पत्रमे जो लिखा है उसमे एक शब्द भी झूठ नही

है। उसमें भेजनेवालोंने अपने दस्तखत भी दिए हैं। यह भी बताया गया है कि जनमतके बाद एक हरिजन बस्तीको भी मुसलमानोंने जला दिया। यह बड़े शर्मकी बात है। एक तरफ तो हम देखते हैं कि खलीक साहब और सादुल्ला यूनियनके झंडेकी सलामी करते हैं और दूसरी तरफ पाकिस्तानमें ये घटनाएं हो रही हैं।

कराचीसे एक और खत आया है जिसमें एक धनिक आदमी लिखते हैं कि पाकिस्तान सरकारने उनके मकानपर कब्जा कर लिया है। वह लिखते हैं कि अब मैं रहूंगा कहां? मैं तो जिना साहब या वहांके और लोगोंसे कहता हूं कि अगर ऐसा कुछ होता है तो बड़े आश्चर्यकी बात है।

ऐसे मौकेपर तो हमें खुशियां मनानेके बजाय यह प्रार्थना करनी चाहिए कि हे ईश्वर, हमको इस झंझटमेंसे छुड़ा दे और आजादीमें जो मिठास होती है उसको चखनेका मौका दे। उस आजादीका, जिसका, हम अबतक ख्वाब लेते रहे हैं, हमें स्वाद तो लेने दिया जाय? वास्तवमें यह प्रार्थना करनेका ही मौका है।

## : ७७ :

### २३ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

(आज प्रार्थना-सभामें किसी व्यक्तिने गांधीजीको लिखकर यह पूछा कि क्या आपने ईश्वरसे साक्षात्कार कर लिया? इसका उत्तर देते हुए उन्होंने कहा—) हमारे लोग ऐसे भोले दीखते हैं कि किसीके इतना कह देनेपर ही कि वह आदमी महात्मा है, उसे महात्मा मान लेते हैं। हमारे देशमें महात्मा बनना तो आसान बात हो गई है। मैंने तो साक्षात्कार किया नहीं है; अगर कर लेता तो आपके सामने बोलनेकी कोई जरूरत नहीं रहती। मैंने तो ऐसी गलती की कि अबतक जो चीज चलती रही उसे अहिंसा समझता रहा। जब ईश्वरको किसीसे काम लेना होता है तो वह उसको मूर्ख बना देता है। मैं अभीतक अंधा बना रहा। हमारे

दिलोंमें हिंसा भरी हुई थी और उसीका आज यह नतीजा है कि हम आपसमे लडे और लड़े भी वहुत वहशियाना तौरसे।

आज जो भजन गाया गया है—'साधो मनका मान त्यागो'—उसका मतलब है कि यदि मनुष्य काम और क्रोधको छोड़ दे तो उसको निर्वाण मिल सकता है। उसके मानी रामराज्य भी है। मगर वह रामराज्य ऐसा नही जैसा कि आज हमें मिल रहा है। आज तो हम रामराज्यसे करोडो मील दूर पडे है। केवल अंग्रेजोके चले जानेसे ही रामराज्य नही मिल जाता। आज तो रामराज्यकी मेरे नजदीक कोई निशानी नही है।

आज तो मैं नमकके वारेमें कहना चाहता था। कुछ लोग कहते है कि कभी तो तुमने नमकके लिए डाडी कूचतक किया था और आज नमक नही मिलता और अगर मिलता है तो उसके लिए वडा दाम देना पडता है। मुझको यह सब सुनकर अपना सिर झुकाना पडता है। लोग कहते है कि नमकपरसे कर तो उठ गया मगर हमको तो इसका पता नही चलता। नमकपर कोई राशन तो नही है, मगर चोर-वाजार तो है। व्यापारी लोग ऐसे वदमाश है कि वे नमकपर भी नफा निकालते है। मगर हम लोग भी आलसी वन गए है। देहातोमें वहुत-सी जगहे ऐसी है जहा लोग मुफ्तके वरावर नमक पैदा कर सकते है। इस वातकी छूट तो उस वक्त भी मिल गई थी जव कि मेरा लार्ड इरविनसे समझौता हुआ था। अगर हम आलसी न वनें तो नमक अच्छा मिले और सस्ता भी। आज जो नमक वाजारमे मिलता है वह कितना गदा होता है। इसका कारण यही है कि लोग मेहनत नही करते। जेलमे मुझे मेरे हिस्सेका जो नमक मिलता था उसको भी मैं स्वय साफ कर लेता था। हम आज इतने स्वार्थी हो गए है कि लोगोंको सस्ते भावपर नमक भी खानेके लिए नही दे सकते। जहां गरीवोंको नमक भी खानेको नही मिलेगा, उसे हम रामराज्य कैसे मान लेगे। नमककी केवल मनुष्योके लिए ही नही पशुओंके लिए भी जरूरत होती है। डर तो इस वातका भी है कि चूंकि हिंदुस्तानके दो हिस्से हो गए है और दोनोको पैसेकी जरूरत होगी इस-लिए वे नमकपर कर न वढा दे। मगर क्या वे इस कदर पागल वन

जायगे कि लोगोको नमक भी खानेको नही देंगे ? अगर ऐसा हुआ तो निश्चय ही हमे यह आजादी बहुत महगी पडेगी।

## : ७८ :

२४ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

मै कई बार पहले भी इस बातकी ओर ध्यान दिला चुका हू कि जब हम प्रार्थना करने जाते है या कोई अन्य पवित्र कार्य करने बैठते है तब हम सिगरेट या बीडी नही पीते। ईसाई लोग वैसे खूब सिगरेट और शराब पीते है, मगर गिरजा-घरमे मैने कभी किसी ईसाईको शराब या बीडी पीते हुए नही देखा। मस्जिदो और गुरुद्वारोमें भी यही नियम चलता है। फिर इस स्थानको तो हम मदिर, गिरजाघर, मस्जिद जो चाहें मान सकते है, क्योकि हमारी प्रार्थनामें सब मजहबोसे चुन-चुनकर चीजें ली हुई है। आप बीडी पीना छोड दें तो सबसे अच्छा हो, मगर मेरे कहनेसे आप छोडनेवाले नही है, यह मै जानता हू। तो भी, जिनको बीडी पीना है वे अलग जाकर पी ले। इसके अलावा कुछ लोग प्रार्थनाके बीचमें ही उठकर चल देते है। शायद उनको रस नही आता होगा। मगर रस नही आता तो क्या हुआ, हमारा मतलब तो ईश्वरका नाम लेनेसे है। प्रार्थनाका यह नियम है कि जबतक खत्म न हो और खत्म तब होती है जब मै करता हू, तबतक कोई आदमी बीचमें उठकर न जाय।

चर्खा-सघके पास दो लाख रुपयेकी कीमतके पुराने ढगके तिरगे झडे बने पडे है। चर्खा-सघ बहुत गरीब लोगोकी सस्था है। उसका मै सदर हू। उसमें जो लोग नौकरी करते है उनको भी बहुत कम पैसा मिलता है। सो उन्होने पूछा है कि जो दो लाख रुपयेकी कीमतके झडे उनके पास पडे है उनका क्या होगा ? नए और पुराने झडेमें कोई अतर नही है, केवल पुरानेको नई खूबसूरती दे दी है। पहलेमे चर्खा था, जब कि

इसमें चर्खेका चक्र तो है, मगर माल और तकुआ नही है। नया झडा बन जानेसे पुरानेकी कीमत किसी तरहसे कम नही हो जाती। जिस तरहसे एक बादशाह तो मर जाता है, मगर बादशाहत कभी नही मरती। वह हमेशा बनी रहती है। एक सिक्का पलटता है तो दूसरा सिक्का आ जाता है। मगर दूसरा सिक्का आनेसे पहलेके सिक्केकी कीमतमें फर्क नही पडता। महारानी विक्टोरियाके शासनमे रुपया कुछ और तरहका था, जार्ज पचमके समयमें कुछ और तथा अब कुछ और किस्मका है मगर रुपयेकी कीमत वही सोलह आने बनी रही। अत दोनों झडोकी कीमत तबतक एक ही रहेगी जबतक कि गाधी-आश्रममे एक भी पुराना तिरगा झडा बाकी बचा रहेगा। अत· जिन लोगोके पास पुराने झडे है वे उनको फाड न डालें और गाधी-आश्रमसे भी उसी झडेको खरीदें ताकि दो लाख रुपयेकी रकम नष्ट न हो। मगर आगेसे चर्खा-सघ नए सिक्केके झडे ही बनाएगा।

आज मेरे पास दो सवाल आ गए है। एक भाई लिखते है कि १५ अगस्तके बाद काग्रेसका क्या होगा और उसका प्रोग्राम क्या रहेगा? वे यह भी लिखते है कि अबतक काग्रेसमे आदमी यह शपथ लेकर शामिल होता था कि वह सत्य और अहिंसाके द्वारा हिंदुस्तानकी आजादी प्राप्त करेगा, मगर अब जब कि आजादी मिल गई तब उसके बाद क्या होगा?

काग्रेसका क्या प्रोग्राम रहेगा यह तो काग्रेस ही बता सकती है। मगर काग्रेसके एक खादिमके नाते मैं तो इतना जानता हू कि अबतक तो हमारा काम हकूमतका सामना करना था। हम हकूमतके बागी बने और उसको हमने हटाया। हमने बाहरसे तो सत्य और अहिंसाको बनाए रखा मगर हमारे भीतर तो हिंसा भरी हुई थी। हमने ढोगी बनकर काम किया। उसीका फल हम आज आपसकी लडाईके रूपमें भोग रहे है। आज भी हम अपने दिलोमे लड़ाईका सामान तैयार कर रहे है और अगर यही सिलसिला जारी रहा तो हमें १८५७के गदरसे भी अधिक भयानक रक्तपातका सामना करना होगा। तब तो हिंदुस्तान इतना जाग्रत नही था और इसके अलावा वह केवल सिपाहियोका बलवा था।

उसमे सिर्फ अग्रेजोको ही हमने काटा था। मगर अतमें अग्रेजी लश्करने बलवाइयोका सामना किया और उन्हें शिकस्त भी दी। लेकिन ईश्वर न करे कि आज हमारे दिलोमे जो लडाई भरी है वह उस हदतक चली जाय। अत केवल सत्य और अहिसाकी दृष्टिसे ही नही, बल्कि हिंदुस्तानके हितकी दृष्टिसे, जिसके लिए लाखों लोग जेल गए और अनेक कष्ट झेले, मै यह सलाह दूगा कि इस प्रकारकी तैयारी न करो। उससे न केवल तुम हिंदुस्तानकी आजादीको खोओगे, बल्कि उसे फिर गुलाम बना दोगे। अग्रेज, रूस, अमरीका या चीन कोई देश हमपर हमला करके हमे गुलाम बना लेगा। क्या आप यह देखनेवाले है कि १५ अगस्तको हिंदू और मुसलमान आपसमें लडे और सिख उनके बीचमे फसकर मर जाय? इससे तो मुझे यह पसद होगा कि एक भूकप आ जाय और उसमे हम सब दबकर मर जाय। अत. काग्रेस चूकि सारे हिंदुस्तानकी है, इसलिए उसे चाहिए कि वह हिंदुओ, मुसलमानों, पारसियो तथा अन्य सब जातियोको सतुष्ट करे। मै यह नही कहता कि आप मुसलमानोकी खुशामद करे या खुद बुजदिल बन जाय। बुजदिली तो मै कभी किसीको सिखाता ही नही हू। हम बहादुरीके साथ सबको शात करे, यही काग्रेसका मुख्य प्रोग्राम होना चाहिए।

यद्यपि मैं हिंदी-साहित्य-सम्मेलनका दो बार सदर रहा हू, मगर फिर भी मेरा यह दावा है कि हिंदुस्तानकी राष्ट्र-भाषा हिंदी और देव-नागरी लिपि नही हो सकती। आज हमारे बहुतसे कार्यकर्ता यह कहते है कि गाधी तो सब ऐसी-वैसी बातें करता है। वह तो हमेशा मुसलमानो-की खुशामदमें ही लगा रहता है। मगर जिना साहबने भी दो नेशनकी बात कहते समय मुझपर उर्दू भाषाको मिटानेका इल्जाम लगाया था। आज तो मै दोनो भाषाओका दुश्मन बना हुआ हू। मगर मै दोनोका दोस्त रहना चाहता हू। ईश्वरके सामने मेरा यह दावा मजूर होगा कि अगर हिंदुस्तानका कोई सच्चा खैरख्वाह था तो वह गाधी ही था। आज मै काफी हिंदू आपको ऐसे बता सकता हू जो न तो हिंदी जानते है और न देवनागरी लिपिमें लिख सकते है। अगर यहा हिंदू, मुसलमान ईसाई, पारसी और सिख सबको रहना है तो हिंदी और उर्दूके सगमसे

जो भाषा बनी है उसीको राष्ट्रभाषाके रूपमें अपनाना होगा। जो शब्द आप सब लोग बोलते है उनसे एक बुलद भाषा बन सकती है इसमे मुझे कोई सदेह नही है।

यहा इडोनेशियाके नेता शहरियार आए है। वे नेहरूजी और जिना साहबसे मिलेगे। हिंदुस्तान तो उनको नैतिक मदद दे सकता है, जो कि किसी भी फौजी मददसे अधिक प्रभावशाली होगी।

एक अग्रेजका खत आया है कि चूकि अब हिंदुस्तानके दो टुकडे हो गए, इसलिए अब उसका दर्जा ससारके बडे राष्ट्रोमे नही हो सकेगा। मै इस बातको नही मान सकता, बशर्ते कि दोनों टुकडे दोस्त या भाई-भाई बनकर रहे।

## : ७६ :

### २५ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

आज राजेद्रबाबूने मुझको बताया कि उनके पास करीब ५० हजार पोस्टकार्ड, २५–३० हजार पत्र और कई हजार तार आए है जिनमे गो-हत्या बाकानून बद करनेके लिए कहा गया है। इस बारेमें मैने आपसे पहले भी कहा था। आखिर इतने खत और तार क्यो आते है? इनका कोई असर तो हुआ नही है। एक तार और आया है जिसमे बताया गया है कि एक भाईने तो इसके लिए फाका भी शुरू कर दिया है। हिंदुस्तानमे गो-हत्या रोकनेका कोई कानून बन नही सकता। हिंदुओको गायका वध करनेकी मनाही है, इसमे मुझे कोई शक नही। मेरा गो-सेवाका व्रत बहुत पहलेसे लिया हुआ है, मगर जो मेरा धर्म है वही हिंदुस्तानमें रहनेवाले सब लोगोंका भी हो, यह कैसे हो सकता है? इसका मतलब तो जो लोग हिंदू नही है उनके साथ जबर्दस्ती करना होगा। हम चीख-चीखकर कहते आए है कि जबर्दस्तीसे कोई धर्म नही चलाना चाहिए। हम प्रार्थनामे हमेशा

कुरानकी आयत पढते है, परन्तु यदि यही चीज मुझसे कोई जबर्दस्तीसे कहलवाना चाहे तो मै कैसे कहूगा ? जो आदमी 'अपने-आप गोकुशी नही रोकना चाहता उसके साथ मै कैसे जबर्दस्ती करू कि वह ऐसा करे ? भारतीय यूनियनमें अकेले हिंदू तो है नही। यहा तो मुसलमान, पारसी और ईसाई आदि सभी लोग रहते है। हिंदुओका यह कहना कि अब हिंदुस्तान हिंदुओकी भूमि बन गई है, बिल्कुल गलत है। जो लोग यहा रहते है उन सबका इस भूमिपर अधिकार है। अगर हम यहा गो-हत्या रोक देते है और पाकिस्तानमें इसका उलटा होता है तो क्या स्थिति रहेगी ? मान लीजिए कि वे यह कहे कि तुम मदिरमे नही जा सकते, क्योकि तुम पत्थरोकी पूजा करते हो, जो शरियतके अनुसार वर्जित है। मै पत्थरमे भी ईश्वर मानता हू तो ,उसमें दूसरोका क्या दोष करता हू ! अत अगर वे मुझे वहा जानेसे रोकेंगे तब भी मै वहा जाऊगा। इस तरह मै ईश्वरका भक्त बन जाता हू।

इसलिए मै तो यह कहूगा कि तार और पत्र भेजनेका सिलसिला बद होना चाहिए। इतना पैसा इनपर बेकार फेंक देना मुनासिब नही है। आखिर हम ऐसा सोचनेका घमड क्यो करते है कि दो पैसेका पोस्टकार्ड भेजनेमें कौन-सी कमी आ जाती है। मै तो आपकी मार्फत सारे हिंदुस्तान-को यह सुनाना चाहता हू कि वे सब तार और पत्र भेजना छोड दें।

इसके अलावा जो बडे-बडे हिंदू है, वे खुद गोकुशी करते है। वे अपने हाथसे तो गायको काट नही सकते, परतु आस्ट्रेलिया तथा अन्य देशोको यहासे जो गायें जाती है उन्हें कौन भेजता है ? वे वहा मारी जाती है और उनके चमडेकी जूती बनकर यहा आती है, जिन्हें हम पहनते है। एक कट्टर वैष्णव हिंदूको मै जानता हू। वह अपने बच्चेको गो-मासका शोरबा पिलाते थे। मेरे पूछनेपर उन्होंने कहा कि दवाईके तौरपर उसे इस्तेमाल करनेमें कोई पाप नही है। अत धर्म असलमें क्या चीज है यह तो लोग समझते नही है और पीछे गो-हत्या बाकानून बद करनेकी बात करते है। देहातोमे हिंदू लोग बैलोपर इतना बोझ लादते है कि वे मुश्किलसे चल पाते है। क्या यह गो-हत्या नही है, चाहे शनै-शनै ही क्यो न

हो? अत. मैं तो यह सलाह दूगा कि विधान-परिषद्पर इसके लिए जोर न डाला जाय।

जिस जगह वृक्ष अधिक होते है वे बादलोसे पानी अपने आप बरसा लेते है। पेड़की पत्तियोमे कुछ ऐसा आकर्षण होता है कि पानी दूधकी धारकी तरह ऊपरसे गिरने लग जाता है। यह प्रकृतिका कानून है। जिस भूमिमें वृक्ष नही होते वह मरुभूमि हो जाती है, क्योकि पानी तो वहा बरसता नही, इसलिए सब रेत-ही-रेत हो जाता है। अगर वर्षा बद करनी हो तो वृक्षोको काट दीजिए। मैं जोहान्सबर्गमें कई वर्षतक रहा। वहाका जलवायु बहुत अच्छा है। वहा जबसे वृक्षारोपण हुआ तबसे वर्षा पड़नी भी शुरू हो गई। इसलिए दिल्लीके अफसरने वृक्षारोपणका जो काम उठाया वह बहुत अच्छा है। जिन लोगोके पास खाली जमीने नही है वे मिट्टीके गमलोमें थोडी-थोडी मिट्टी डालकर सब्जी पैदा कर सकते है।

एक भाईने यह प्रश्न पूछा है कि आज हमपर मुसलमानोकी तरफसे जो ज्यादतियां हो रही है उनको दृष्टिमें रखते हुए हम किस मुसलमानका ऐतबार करें और किसका नही, यूनियनमें जो मुसलमान रहते है उनके साथ हम कैसा सलूक करे और पाकिस्तानमें जो गैर-मुस्लिम है, वे क्या करे?

इस बारेमें मै पहले भी कई बार कह चुका हू और आज फिर कहता हू कि अब हिंदुस्तानमें सारे धर्मोंका इम्तहान हो रहा है। सिख, हिंदू, मुस्लिम और ईसाई आदि सब धर्म किस तरहसे चलते है और कैसे हिंदुस्तानकी बागडोर सम्हालते है, यह देखना है। पाकिस्तान तो चाहे मुसलमानोका कहो, मगर यूनियन तो सबका है। अगर आप यहा बुजदिल न रहकर सचमुच बहादुर बन जाते है तो आपको यह सोचना भी नही पडेगा कि आपको मुसलमानोके साथ कैसा सलूक करना चाहिए? मगर आज तो हम सब बुजदिल पडे है। उसके लिए मैंने तो अपना गुनाह मजूर कर लिया। हमारा ३० वर्षका शिक्षण क्यो गलत तरीकेसे हुआ, यह मेरे लिए एक कठिन प्रश्न हो गया है। मैंने कैसे यह मान लिया कि अहिंसा बुजदिलोका हथियार

हो सकती है? अगर अब भी हम सचमुच बहादुर होकर मुसलमानोके साथ प्रेम करे तो मुसलमानोको भी सोचना होगा कि वे आपके साथ धोखा करके क्या लेगे। वे भी बदलेमे मोहब्बत ही दिखाएगे। क्या हम यूनियनके करोडो मुसलमानोंको अपना गुलाम बनाकर रख सकते है? दूसरोको गुलाम बनानेवाला खुद गुलाम बन जाता है। अगर हम यहा तलवारका बदला तलवारसे, लाठीका बदला लाठीसे और लातका बदला लातसे देने लगें तो फिर पाकिस्तानमे उससे भिन्न सलूककी आशा रखना फिजूल है। अगर ऐसा हमने किया तो जिस हाथसे हमने आजादी ली उसी हाथसे हम उसे खो देगे। जो सीधा और सरल रास्ता है वही हमे अपनाना चाहिए और फिर हम देखेंगे कि पाकिस्तानमे एक भी हिंदू या एक भी ईसाईको कोई छूनेवाला नही है।

आज पाकिस्तान और भारतकी भावी सरकारोकी ओरसे जो वक्तव्य प्रकाशित हुआ है वह मुझे अच्छा लगा है। मगर मै तो उसे प्रत्यक्षमे देखना चाहता हू। इस वक्त तो हम ऐसा क्यो मानें कि जो कुछ वे कहते है उससे भिन्न ही पाकिस्तानमे होनेवाला है। होता भी है और हम बुज़दिल नही है तो हम उसका जवाब भी दे देंगे। जबतक ऐसा नही हुआ है तब उसे मान-कर ही हम बैठ जाय यह तो हमारी बुज़दिली है। इस तरहसे माननेका मतलब होगा लडाईका सामान तैयार करना। तब तो हमारे और पाकि-स्तानके लश्करोमे आमने-सामनेकी लडाई छिड़ जायगी और जिना साहब जो दो नेशनकी बात करते थे वह सही साबित होगी। इसलिए मै तो ईश्वरसे यही प्रार्थना करता हू कि तू हमे उस आपत्तिसे बचा ले।

## : ८० :

### २६ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

मै चाहता तो यही हू कि एक बैरिस्टरको जितना पैसा मिलता है उतना ही एक भगीको भी मिले, परतु यह बात कहनेमें जितनी

आसान है, करनेमे उतनी ही मुश्किल है। दूसरे, ये सब बातें हड़ताल करनेसे पूरी नही होती। वेतन-कमीशनकी सिफारिशोसे जो वेतन बढे है, पहले हमें उन्हें हजम करना चाहिए और फिर बादमे अपने पक्षमे लोकमत तैयार करना चाहिए। हड़तालका भी एक शास्त्र होता है। यो ही हड़ताल कर बैठनेसे कोई लाभ नही।

आज तो हिंदुस्तानमें हड़तालोंका एक वातावरण-सा बन गया है। जहा लोगोकी अपनी हकूमते हैं वहां भी हड़तालें होती हैं। जब हमारे यहा अंग्रेजी हकूमत थी तब, जहातक मुझे याद है, इतनी हड़ताले नही होती थी। आज कलकत्तासे तार आया है और अखबारोमे भी छपा है कि वहा एकाउटेंट जनरल आफिसके कर्मचारियोने कलमबद हड़ताल कर दी है। इस आफिसमें डाक और तारघर शामिल हैं जो किसी एक आदमीकी खातिर नही, बल्कि सब लोगोकी भलाईके लिए चलते हैं। यह माना कि उनमें बड़े-बड़े अमलदार भी है जिन्हें काफी पैसा मिलता है। फिर छोटोने क्या गुनाह किया कि उन्हें थोड़ा पैसा मिले? आखिर इतना बडा अंतर क्यों रहता है? अंग्रेजोने यह आदत डाली, मगर हमको भी वह मीठी लगी और उसे हम जारी रख रहे है, परतु इस तरहसे यदि लोग कलमबद करके बैठने लगे तो हिंदुस्तानका क्या होगा? हड़तालके जरिए दबाव डालकर यदि कुछ पैसे उन्होंने बढवा भी लिए तो उससे क्या हुआ? मगर यह तरीका तो गलत है और इससे हिंदुस्तानका सत्यानाश होनेवाला है।

आजकी हिंदुस्तानकी हालत देखकर मुझे उस मुर्गीकी मिसाल याद आती है जो सोनेके अडे देती थी। मुर्गीवालेने सारे अडे एक साथ निकालनेके लिए उस मुर्गीको मार डाला। मगर नतीजा यह हुआ कि सोनेके अडे भी नही निकले और मुर्गी भी मर गई। आज जो हमारे हाथमें हकूमत आई है वह उसी किस्मकी मुर्गी है। हम अगर यह उम्मीद करे कि उस मुर्गीसे सब सोनेके अडे आज ही निकालकर खा जाय तो निश्चय ही वह मुर्गी तो मरेगी ही, उसके साथ हम भी मरनेवाले है।

इसके अलावा हड़तालका तो मैंने शास्त्र बना रखा है। दक्षिण

अफ्रीकामे पहले-पहल हमने इसकी आजमाइश की थी। वहा हिंदुस्तानी कुली और मजदूर समझे जाते थे। वहा उनका हडताल करना कुछ मानी रखता था, क्योकि और तरहसे वहा उनकी बात कोई सुननेवाला नही था। अत वह आदमी जो हडतालका शास्त्र जानता है, वह उन लोगोसे जो कि आज इधर-उधर हडताल कर रहे है, यह सूचना देना चाहता है कि जो तरीका उन्होने अपनाया है उससे वे अपना ही खात्मा कर लेगे। हमारे देशके दो टुकडे तो हो गए, मगर अब भी अगर हमारे आपसके झगडे इसी तरह जारी रहे तो ईश्वर ही जानता है कि हमारा क्या हाल होनेवाला है। अब तो हमारा यह धर्म हो गया है कि हम अपना काम करते जाय, क्योकि वह हकूमत-का काम है। वेतन-कमीशनकी सिफारिशोके फलस्वरूप छोटे लोगोका दर्जा काफी ऊचा हो गया है। अगर इस तरहसे हम मागते ही रहेंगे तब तो हिंदुस्तानका दिवाला निकल जायगा। यह ठीक है कि हकूमतके पास करोडो रुपये आते है, मगर वह सब केवल मुट्ठीभर लोगोपर तो खर्च नही किया जा सकता। उस रुपएका अधिक भाग तो उन देहातियोंपर खर्च किया जाना चाहिए जिनसे वह पैसा आता है।

बबईमें, हाल हीमे, मजदूरोकी एक नाममात्रकी हडताल हो चुकी है। वहाकी सरकारने एक-दो करोड रुपया तो मजदूरोको दिया, मगर उससे भी उनको सतोष नही हुआ और अपनी ताकत जाहिर करनेके लिए उन्होने एक नाममात्रकी हडताल की। उन्हें चाहिए तो यह था कि जो कुछ मिल गया उसे तो हजम करते और उसके बाद अपने पक्षमे लोकमत बनाते। इसके बजाय उन्होने हडताल करके पैसे बढवानेका मार्ग अपनाया। काग्रेसमें भी आज कितनी ही पार्टिया बन गई है और उनमेंसे ही एक पार्टीका इस हडतालमे हाथ है, ऐसा मुझे बताया गया है। मगर इस नाममात्रकी हडतालमे तो चाहे वह दो घटेके लिए ही क्यो न हो, एक तरहका घमड भरा रहता है। उससे वह पार्टी यह सिद्ध करनेकी कोशिश करती है कि उसकी मजदूरोमें कितनी चलती है। अन्यथा इस नाममात्रकी हडतालका क्या उद्देश्य हो सकता था? मुल्कका इस प्रकारकी हडतालोसे कोई भला

नही हो सकता। इसलिए वहाके मजदूरोने जो कुछ किया वह मुझे अनर्थ लगता है।

दूसरी लडाई तो जब होगी तब होगी, मगर क्या हम इस आपसकी लडाईमे ही कटकर मर जाना चाहते है? यह कोई देशका काम नही है, कोरा स्वार्थका काम है। एक ओर तो हमे आजादी मिली, अग्रेज यहासे गए और हकूमतका काम हमने चलाना शुरु ही किया कि दूसरी ओर हम पैसोके बटवारेपर ही लडाई करने लगे। मै तो यहातक मानता हू कि एक बैरिस्टरको जितना पैसा मिलता है उतना ही एक भगीको भी मिलना चाहिए। मगर बैरिस्टर तो अधिक छीन लेता है और हम खुशीसे उसे दे देते है। मै भी तो कभी बैरिस्टरी करने लगा था, मगर मैने कुर्सीपर पड़े रहकर पैसे लूटना एक निकम्मी बात समझी और इसलिए भगी बन गया। मगर ये सब बाते कहनेमे तो अच्छी लगती है, करनेमे मुश्किल होती है। आखिर हम ऐसे आदमी कहासे लाए जो गवर्नर-जनरल, बैरिस्टर और व्यापारी हो सके और साथ-ही-साथ पैसा भी उतना ही ले जितना एक भगीको मिलता है। एक दर्जी भी चार-पाच रुपये रोज कमा लेता है, मगर भगीको कौन इतने पैसे देता है? अत आज जरूरत इस बातकी है कि मनुष्य अपना स्वभाव बदले, मनुष्यमे उदारता पैदा होनी चाहिए। यह नही कि हम अपनी स्वार्थपूर्तिके लिए सबका गला काट दें। बर्मामें जो खून हुए हैं, उनसे भी अगर हम कोई सबक नही लेगे तो हिंदुस्तान और सारी दुनियाका क्या हाल होगा? यह हिसाब आप अपने घर जाकर करें।

## : ८१ :

२७ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

हिंदुस्तान देशी राज्योसे भरा पड़ा है। उनकी सख्या पाच-सौसे ऊपर है, जिनमे कोई बड़े है और कोई छोटे है। हाल हीमे वाइसराय

साहबने राजाओंको यहा बुला लिया था। अबतक तो उनपर ब्रिटिश साम्राज्यका छत्र था, परतु वह तो अब उठ गया। वाइसराय साहबने उनको बहुत नम्र शब्दोमें जो व्याख्यान दिया वह मुझको अच्छा लगा। उन्होंने राजाओंको सलाह दी कि भारतीय यूनियन और पाकिस्तानके रूपमें जो दो स्वतत्र राज्य बन रहे है उनको उन दोनोंके भीतर आना है। वह कोई छोटा व्याख्यान नही था। मगर उसमें जो चीज मुझे चुभी वह यह कि इतने बडे व्याख्यानमें रियासतोंकी रैयतका कही जिक्र नही था। ब्रिटिश गवर्नमेंटके साथ जो करार था वह तो राजा लोगोसे ही था। उसमें रैयत कही आती ही नही थी। इसलिए जब ब्रिटिश साम्राज्यसत्ता हट गई तब बाकानून वे आजाद तो हो जाते है और ब्रिटिश सल्तनत उसमें कोई दखल भी नही दे सकती। मगर राजा लोगोका धर्म और कर्त्तव्य भी तो कोई चीज है। अब बदूकका राज्य तो चला गया जिससे किसी रियासतको मजबूर किया जा सकता था। मगर ब्रिटिश साम्राज्यके मातहत जो वे सुरक्षित रहते थे वह सुरक्षितता तो अब नही रही। फिर कोई भी बडी-से-बडी रियासत ले लीजिए, मैं कोचीनको ही लेता हू, क्योकि एक खासा बडा समुद्र भी उसके साथ लगता है। वह अपनी सुरक्षाके लिए सारी दुनियाके साथ तो समझौते कर नही सकती। ऐसी हालतमें उनको ठीक सलाह देना वाइसरायका धर्म था। मगर रैयतका भी अगर वे अपने व्याख्यानमें कुछ जिक्र कर देते तो मुझको बहुत अच्छा लगता। चूकि मैं काठियावाड राज्यमें पैदा हुआ था, इसलिए एक रैयत होनेके नाते मुझे उस बारेमें कहनेका हक है। अबसे पहले राजा लोग अगर दीवान भी रखते थे तो उसमें वाइसरायकी इजाजत लेते थे। वह उनको अच्छा तो नही लगता था। इसलिए अब जहा उनके ऊपरसे ब्रिटिश-सुरक्षाका छत्र हटा उसके साथ-साथ उनका दबाव भी तो उनपरसे हट गया। मगर दूसरी तरफसे प्रजाका दबाव अब उनपर पडना है। नतीजा यह हुआ कि राजा लोग प्रजाके सेवक बनकर रहेगे तभी वे राजा रह सकते है। उनके यहा जो प्रजा-मडल है उनके साथ उनको मशविरा करना चाहिए और शासन-प्रबधमें उनका सहयोग ले। गर

बात तो ठीक है कि उन्होने कभी राज्य तो चलाया नही। राज्य तो हमारे इन नेताओने भी पहले कभी नही किया था जो आज केंद्रीय सरकारमे है। वे बाहर तो शेर बने हुए थे, मगर आज तो बकरी-जैसे बन गए है। इसका यह मतलब नही है कि राजा लोग यो ही अपने राज्यमे बीस-पच्चीस आदमियोको खड़ा कर दे और उनको प्रजा-मडल कहने लगे। वे जो कुछ करे वह सच्चाई और नेकनीयतीसे करे।

जहातक यूनियन या पाकिस्तानमे शामिल होनेका सबध है, उसमें भौगोलिक स्थितिका पूरा घ्यान रखना होगा। गुजरात या काठियावाडका कोई राज्य अपनेको बगालके साथ थोडे ही कह सकता है? अत रियासते भूगोलके दबावसे नही निकल सकती।

अग्रेज जाते समय क्या राजाओंको यह नही कह सकते थे कि जो सर्वोच्च सत्ता उनके पास थी वह अब हिंदुस्तान और पाकिस्तानके पास चली गई है। निश्चय ही यह बहुत खटकनेवाली बात है और हिंदुस्तान तथा पाकिस्तान दोनोके लिए वह एक पेचीदा प्रश्न बन गया है। मै तो यही कहूगा कि राजाओके लिए भी यह इम्तिहानका समय है। वे नामके राजा रहे, मगर असलमें प्रजाके सेवक बन जाए, तब तो हिंदुस्तानकी खैर है।

मैने जो आज यह रुदन किया है वह इस वजहसे नही कि राजाओके विरुद्ध वाइसरायने मुझसे शिकायत की हो या हमारी स्वदेशी हकूमतने, जिसमे जवाहरलालजी और राजेंद्रबाबू आदि है, मुझसे कुछ कहा हो। हकीकत तो यह है कि लोग आज इस बातकी तुलना करते है कि हिंदुस्तानकी हकूमत क्या करती है और पाकिस्तानकी क्या?

मगर देशी राज्योकी प्रजापर क्या बीत रही होगी? वहाकी रैयत क्या इस आजादीपर खुश होगी? क्या वहाके लोग आजादीके उत्सवमे शामिल होंगे? मै तो उस दिन उपवास करूंगा और मेरी प्रार्थना भी खासतौरसे उस दिन यही होगी कि हे ईश्वर! हिंदुस्तान आजाद तो हुआ, परतु उसे बर्बाद न कर।

देशी राज्य हिंदुस्तानका एक चौथाई हिस्सा है। क्या वहाकी दस करोड प्रजा १५ अगस्तको आजादीका उत्सव मना सकेगी? अगर राजा लोग यह कहे कि हम तो तुम्हारे नौकर बनकर रहेंगे तब

तो खैर है। तब वे प्रजासे जो पैसा लेंगे वे प्रजाको ऊपर उठानेके लिए ही लेंगे। वे दस गुना करके उसे वापिस दे देंगे, पैसेके रूपमें नही, बल्कि अपने राज्यमें शिक्षाके लिए स्कूल, रोगियोके लिए अस्पताल, सडकें तथा बाग-बगीचो आदिके रूपमें। इसलिए मुझे ऐसा लगा कि मै आज राजाओंके बारेमें इतना तो कह दू। बाउन्डरायके भाषणके बारेमें जवाहरलालजी और सरदार पटेलने तो कुछ कहा नही। मगर दिलमें तो वे भी महसूस करते ही होगे। दिलमें फिर जहर क्या रखना था? यह तो एक तरहका खेल-सा है जिसमें खेलके सब खिलौने मेजपर रखे रहने चाहिए। जब हमारे दिलमें किसी प्रकारका जहर नही होगा तभी तो हम १५ अगस्तका दिन दिल खोलकर मना सकेंगे।

## : ८२ :

२८ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

आज मै कुछ प्रश्नोके जवाब दूगा।

प्रश्न— १५ अगस्तके बाद दोनो राज्योमें दो कांग्रेस होगी या एक ही रहेगी? या कांग्रेसकी आवश्यकता ही न रहेगी?

उत्तर—मेरे विचारमें उस समय ऐसी संस्थाकी जरूरत और भी ज्यादा होगी। बेशक, उसका काम बदल जायगा। यदि कांग्रेस मूर्खतापूर्वक दो धर्मोंके आधारपर दो राष्ट्रोका सिद्धात मजूर नही कर लेती तो सारे हिंदुस्तानके लिए केवल एक कांग्रेस रह सकती है।

हिंदुस्तानके बटवारेसे आज उसके समूचेपनका बटवारा नही होता—नही होना चाहिए। दो सार्वभौम राज्योमें बाट दिये जानेके कारण हिंदुस्तानके दो राष्ट्र नही होते। मान लिया जाय कि कोई एक या ज्यादा रियासतें दोनो राज्योंके बाहर रहती है तो क्या कांग्रेस उन्हे और उनकी जनताको राष्ट्रीय कांग्रेससे निकाल देगी? क्या

उनकी माग यह नही होगी कि काग्रेस उनकी ओर विशेष ध्यान दे और उनकी विशेष परवाह करे ? जरूर ही पहलेसे ज्यादा उलझे हुए सवाल उठेगे। उनमेसे कुछका हल कठिन भी हो सकता है। मगर काग्रेसके टुकडे कर देनेके लिए यह कोई कारण न होगा। उससे अबतककी अपेक्षा अधिक बडी राजनीतिज्ञता, अधिक गहरे विचार और अधिक शात निर्णयको उत्तेजना मिलेगी। पगु बना देनेवाली कठिनाइयोपर ही हमे पहलेसे विचार नही करते रहना चाहिए। आजतक जो खराबिया हो चुकी वे काफी है।

प्रश्न—क्या काग्रेस अब साम्प्रदायिक सस्था बन जायगी ? आज जोरोसे माग की जा रही है कि चूकि अब मुसलमान अपने आपको परदेशी समझने लगे है, इसलिए हमे भी अपने सघको हिंदू भारत कहकर क्यो नही पुकारना चाहिए और उसपर हिंदू-धर्मकी अमिट छाप क्यों नही लगा देनी चाहिए ?

उत्तर—इस सवालमें घोर अज्ञान भरा है। काग्रेस कभी हिंदू-सस्था नही बन सकती। जो उसे ऐसा बनावेंगे, हिंदुस्तान और हिंदू-धर्मसे दुश्मनी करेंगे। हिंदुस्तान करोडोका मुल्क है। उनकी आवाज किसीने नही सुनी। अगर कोई दो प्रजाकी बातपर जोर देनेवाले है तो वे शहरोके शोर-गुल मचानेवाले लोग ही है। हम उनकी आवाजको हिंदुस्तानके देहातोके करोडोकी आवाज न समझे।

तीसरी बात यह है कि हिंदुस्तानके मुसलमानोने नही कहा है कि वे हिंदुस्तानी नही है और अतमे याद रखा जाय कि हिंदू-धर्ममें कितनी ही कमिया क्यो न हो, हिंदू-धर्मने कभी अलहदगीका दावा नही किया। अलग-अलग धर्मोके लोगोने मिलकर हिंदुस्तानको एक प्रजा या राष्ट्र बनाया है उन सबका हिंदुस्तानी कहलानेका समान हक है। बहुमतको दूसरोंको दबानेका हक नही है। बहुमतके जोरसे या तलवारके जोरसे मिली हुई ताकत सच्ची ताकत नही है। दरअसल सचाई ही सच्ची ताकत है।

प्रश्न—तीसरा सवाल है कि जो मुसलमान नही उनका पाकिस्तानके झडेकी तरफ क्या रुख रहे ?

उत्तर—पाकिस्तानका झडा अभी तो लीगका झडा होगा। अगर मुस्लिम लीग और इस्लाम एक चीज है तो सारी दुनियाके मुसलमानोका झडा एक होना चाहिए और जिनकी इस्लाममे दुश्मनी नही उनको उसकी इज्जत करनी चाहिए। मै इस्लामका, हिंदू-धर्मका, ईसाई-धर्मका, या किसी दूसरे धर्मका झडा जानता नही हू। मगर मैने इस्लामका गहरा अभ्यास नही किया तो मै भूल कर सकता हू। अगर पाकिस्तानका झडा, चाहे उसका रूप-रग कुछ भी हो पाकिस्तानमे रहनेवाले सब लोगोका झडा होगा, तो मै उसकी सलामी करूगा और आपको भी ऐसा ही करना चाहिए। दूसरे लफ्जोमे उपनिवेश एक दूसरेके दुश्मन नही बन सकते। मै तो बहुत रस और दु खसे देख रहा हू कि दक्षिण अफ्रीकाका उपनिवेश हिंदुस्तानके उपनिवेशकी तरफ क्या रुख रखता है? क्या दक्षिण अफ्रीकाके लोग हिंदुस्तानको नफरत कर सकते है? क्या अफ्रीकाकी यूनियनके गोरे अब भी हिंदुस्तानियोके साथ रेलके एक डिब्बेमे सफर करनेसे इन्कार करेगे?

## : ८३ :

### २९ जुलाई १९४७

भाइयो और बहनो,

आज मै बहुत कामकी बाते कह रहा हू। मुझसे ऐसा कहा जाता है कि मुझे काश्मीर जाना चाहिए। मुझे वहा जानेका शौक नही है और होना भी नही चाहिए। लेकिन वह खूबसूरत जगह है। वहा हिमालय पहाड भी है। लेकिन दुनियामे कई और भी खूबसूरत जगह है। तीर्थ-क्षेत्र भी काफी पडे है।

एक बार मै काश्मीर जाना चाहता था। उस समयके काश्मीर महाराजाने मुझे बुलाया भी था। उस समय सर गोपालस्वामी आयगर वहाके दीवान थे। लेकिन ईश्वर जब मुझको मौका दे तभी तो मै जाऊगा।

जब पिछली बार पडित जवाहरलाल काश्मीरमें रोक लिए गए

तब उनकी यहा जरूरत थी। उस समय मौलाना आज़ाद काग्रेसकी सदारत करते थे। वे जवाहरलालको काश्मीरसे बुलाना चाहते थे; क्योंकि यहा उनकी जरूरत थी। उस समयके वाइसराय लार्ड वेवेलने भी उनकी जरूरत महसूस की। वेवेल और मौलाना साहब दोनों परेशान थे। तब मौलानाने जवाहरलालके पास खबर भेजी कि आपने जो काम अपनाया है वह काग्रेसका काम है, इसलिए अनुशासनके मुताबिक आप यहां आइए। उस समय जवाहरलालने यहां आना तो मजूर कर लिया, लेकिन यह भी उन्होंने कहा कि बादमें फिर काश्मीर जाऊगा। मौलानाने कहा कि बादमें यह काम किया जा सकता है और जरूरत होगी तो गाधीजीको भी आपके साथ भेज दिया जायगा। मैंने भी जवाहरलालसे कहा कि ऐसा करनेसे तुम्हें कोई नही रोक सकता।

अब तो सरकार ही बदल गई। वाइसराय बदल गया। मै अब काश्मीर जानेको तैयार हो गया, जिससे जवाहरलाल अपना काम करते रहें। चूकि वहा कई झझट थे, इसलिए मैंने कह दिया था कि यदि वाइसराय कह दे कि वहा जाओ तो मै जाऊगा। वाइसरायने कुछ समय पहले मुझसे कहा कि मैं अभी वहां जाता हू, आप न जायं। इसलिए मै नही गया। अब सिलसिला ऐसा हो गया कि या तो मै वहां जाऊ या जवाहर जाय। लेकिन वह तो जा नही सकते। यही काम बहुत पड़ा है। वैसे तो वहाकी आबहवा अच्छी है। यदि वहा वह जायगे, तो वह तदुरुस्त होकर आयेंगे। लेकिन यहांके झंझटको भी तो सम्हालना होगा। यदि अंतरिम सरकारके उपाध्यक्ष वहा जाय तो उसका ऐसा भी मतलब निकाला जा सकता है कि वे काश्मीरको भारतीय सघमे मिलाने गए हैं—इस तरहका भ्रम पैदा हो सकता है। इसलिए मै वहां जाऊगा।

काश्मीरमे राजा है और रैयत भी। मै राजाको कोई ऐसी बात नही कहने जा रहा हू कि वे पाकिस्तानमें न सम्मिलित हो और भारतीय सघमें सम्मिलित हों। मै इस कामके लिए वहा नही जाऊगा। वहां राजा तो है, लेकिन सच्चा राजा तो प्रजा है। यदि राजा प्रजाका सेवक नही है तो वह राजा नही है, मै यही मानता हू। मैं

तो इसीलिए बागी बना; क्योंकि अंग्रेज अपनेको यहाका राजा समझते थे, जिसे मैं नही मानता था। अब वे भारत छोड रहे है। जो हाकिमी करने आया था वह अब नौकर बनना चाहता है। मनसा-वाचा-कर्मणा वे अब नौकर बनना चाहते है। वे अब इसलिए गवर्नर-जनरल नहीं बनते, कि राजाने नियुक्त किया है, बल्कि हम—अंतरिम सरकार—उन्हे गवर्नर-जनरल बना रहे है। मै तो कहता था कि हरिजनकी एक लडकीको गवर्नर-जनरल बना देना चाहिए, लेकिन मै यह मानता हू कि अभी इस हालतमें हरिजनकी लड़कीको गवर्नर-जनरल नही बनाया जा सकता, क्योंकि राजाओसे बात करनी है, और भी कई बडे-बडे काम पडे है। हा, जब प्रजातंत्र बन जायगा तब ऐसा हो सकता है। मैं कहना चाहता हूं कि अंग्रेजोके इस काममे फरेबी नही दिखाई देती। आज यह भी नही है कि वे पैसा चाहते हैं—यदि रखना है तो उन्हें नौकरी दो नही तो वे जा रहे है। १५ अगस्तको काफी अंग्रेज चले जायगे; ऐसी उनकी मंशा है—वाचा और कर्मणा तो ऐसा है ही।

अभीतक वाइसरायकी छत्रछायामे काश्मीरके महाराजा जो करना चाहते थे कर सकते थे। अब तो वे रैयतके है। सर्वोच्च सत्ता लोगोके हाथमे है। मै यह नही कहता कि मैं महाराजा साहबको तकलीफ देना चाहता हू। वहा काम करनेवाले जो पडित और मुल्ला हैं वे मुझे नामसे तो जानते ही है। मैंने काश्मीरके लोगोको काफी पैसा दिया है। उनका नकाशीका काम व शाल बनानेका काम अच्छा होता है। चर्खा संघने भी अच्छा काम वहा किया है। वहाके गरीब लोग मुझे पहचानते हैं।

वहाके लोगोसे पूछा जाना चाहिए कि वे पाकिस्तानके संघमें जाना चाहते है या भारतीय संघमें। वे जैसा चाहें करें। राजा तो कुछ है ही नही। प्रजा सब कुछ है। राजा तो दो दिन बाद मर जायगा लेकिन प्रजा तो रहेगी ही। कुछ लोगोने मुझसे कहा कि यह काम मै पत्र-व्यवहारके जरिये ही क्यो न करू? तो मैं कहूगा कि वैसे तो मै पत्र-व्यवहारके जरिये ही नोआखालीका काम भी कर सकता हूं।

काश्मीरमें मैं कोई काम सार्वजनिकरूपसे नही करूगा। मैं प्रार्थना

भी सार्वजनिक सभामे नही करना चाहता, करू वह दूसरी बात है। प्रार्थना तो मेरे जीवनका एक अग है।

अब रही बात यह कि मै जो कहता हू कि १५ अगस्तको फाका करो और प्रार्थना करो, यह क्या है ? मै दु ख तो नही मनाना चाहता हू। लेकिन दु खकी बात यह है कि हमारे पास खुराक नही है, कपडा नही है। आज एक आदमी विगड जाता है और दूसरे आदमीको मार डालता है। लाहौरमें ऐसा चल रहा है कि जरा बाहर निकले और मार डाले गए। सो हम मौज करे और मिठाई खाय, ऐसा उत्सव ऐसे अवसरमे कैसे मनाया जाय ?

६ अप्रैल १९१९ को सारे हिंदुस्तानमे जागृति हो गई थी। उस दिन कोई उत्सव इस तरहसे नही मनाया गया। मैंने हिंदुओ और मुसलमानोसे कहा कि वे उस दिन फाका रखे, प्रार्थना करे और चर्खा चलाए। उन दिनोमें हिंदू और मुसलमानोमे कोई दुश्मनी नही थी, इसलिए सबोने वैसे ही फाका रखकर उत्सव मनाया। ६ तारीखको जितना बडा उत्सव उस समय था वैसी तारीख हिंदुस्तानके इतिहासमें आनेवाली नहीं है। आज ६ तारीखसे भी ज्यादा आवश्यकता है कि लोग फाका रखें। करोडो लोग भूखो मर रहे है। उस समय तिलक-स्वराज्य-फडके लिए एक करोड रुपये जमा करना मुश्किल था—वह जमाना ही वैसा था। हमारे पास सत्ता नही थी। आज तो करोडों रुपया हमारे हाथमे आ गया है। ऐसी जिम्मेदारी आ गई है। यदि ऐसे समयमे हम नम्र न बनेगे तो क्या होगा ? अगर १५ अगस्तको खूब खा-पीकर मजे उडाएगे तो १६ अगस्तको राजेंद्रबाबू क्या करेंगे—क्या खिलाएंगे ? इसलिए मै कहूगा कि उत्सव जरूर मनाए, लेकिन फाका रखकर, प्रार्थना करके और चर्खा चलाकर मनाए। हा, हमें मातम नही मनाना चाहिए।

## : ८४ :

### ३० जुलाई १९४७

आज मेरा यहा आखीरका दिन है। कलसे प्रार्थना नही हो सकती। अगर आप करेंगे तो अच्छा होगा, मगर मैं तो नही रहूगा। ईश्वरकी कृपा हो गई तो परसो श्रीनगर पहुच जाऊगा। मैने कल कहा था कि मैं वहा दो-तीन दिन रहूगा। मुझे वहा कोई खास काम करना है, ऐसी बात नही है। मुझे वहा किसी सार्वजनिक सभामें हिस्सा नही लेना है। मैं तो लोगोसे मिलने जा रहा हू। किसी उम्मीदसे नही। मैं खाली हाथ भी लौटकर नही आनेवाला हू, लेकिन मेरे हाथ भरना या न भरना ईश्वरके हाथ है। आज तो मै प्रतिज्ञाके वश होकर जाता हू। प्रतिज्ञाका पालन हो जानेपर पीछे भाग आऊगा। वहासे मै नोआखाली जाऊगा।

विहारके एक मुसलमानके पाससे मेरे पास खत आया है कि वहा हिंदू और मुसलमान सब लोग पहले-जैसे भाई-भाईके समान रहने लगे है। बिहारके मत्री श्रीअसारीने भी मुझे बताया है कि अब कोई झगडा नही रहा। पहले जिस तरह भाई-भाईके-जैसे लोग रहते थे वैसे ही अब फिर रहने लगे है। स्पेशल ट्रेनोसे लोग आ रहे है। वे विहार-सरकारके खर्चसे नही आ रहे है। विहार-सरकारने तो उन्हे नही भेजा था। बगालवाले ले गए थे। उनका काम था कि वे उन्हे भेज देते। मै तो विहारके हिंदुओसे कहूगा कि जो मुसलमान आ रहे है उन्हें अपनाना चाहिए। अपनेमें पहले-जैसा मिला लेना चाहिए। हकूमतपर भरोसा किए बैठे नही रहना चाहिए। अवतक तो हमारे हाथमे सत्ता नही थी। अंग्रेजोका राज था। तब उनपर भरोसा करना पडता था। अब सल्तनत हमारे हाथमे आ गई है। रैयतकी हकूमत है। इसलिए अब कोई ऐसा नही कह सकता कि हकूमतका काम है। अगर रैयत ही नही है तो हकूमत कहा? इसलिए बिहारके हिंदू ऐसी आबोहवा रखे कि वहाके मुसलमान ऐसा न समझें कि हमारी पीठपर पाकिस्तान नही है। अभी दो भाग हो

गए है, मेरे ख्यालसे यह बुरा हुआ है। मगर बुरा या अच्छा, अब तो हो ही गया है। जो पाकिस्तानको माननेवाले थे उनके मनमे तो वह भरा ही हुआ है। दोनोने मान लिया है कि अब हम अलग-अलग हो गए। यदि मुसलमानोने ऐसा समझकर किया तो मुझे बुरा लगेगा। पाकिस्तान तो कोई चीज नही है। उससे सिर्फ हकूमतका बटवारा हुआ है। मै बिहारियोंसे इतना ही कहना चाहता हू।

अब मै बवईके बारेमें कुछ कहना चाहता हू। बवईकी हकूमतने तय किया है कि कमीशनकी बताई हुई वृद्धिके मुताबिक तनख्वाह दी जायगी। मैंने अतिशयोक्ति की थी। कह दिया था कि अभीसे कर दिया। मगर अभीतक ऐसा नही किया गया। मगर इससे क्या हुआ? जो तय हो गया है उसके मुताबिक किया जायगा। फिर वहाके कर्मचारी भूख-हडताल क्यो करे?

वहासे एक तार आया है कि अगर गांधी इस मामलेमे दखल दे तो फैसला हो सकता है। मैंने कहा, गाधीके हाथमे कोई सत्ता नही है। यो तो वह सब मेरे दोस्त है। उन्होने मेरे मातहत काम किया है। वह कहते है कि गाधी जैसा कहेगा वैसा हम मान लेगे। मगर मै ऐसा नहीं कह सकता। अशोक मेहता वहा है। वह भी कहता है कि गाधी फैसला कर दे तो हमे मजूर होगा। मगर मै कहता हू कि मै ऐसा नही कह सकता। अबतक हमारे हाथमे ताकत नही थी। अब ताकत आई है। क्या मै दखल देकर उसे नष्ट कर दू? मुझे लोग डिक्टेटर बनाकर फैसला कराए, ऐसा घमडी मै कभी नही बन सकता। परमेश्वर मुझसे काम ले सकता है। हकूमतने अपना काम कर दिया। उसने कमीशनके मुताबिक वृद्धि करना तय कर लिया है। मै बादमे उसमें शिरकत दू तो ऐसा हो नही सकता। इसलिए उनका यह कहना कि ऐसा तो ठीक नही और हम टोकेन स्ट्राइक[1] करेंगे, यह ठीक नही। मै उनसे अदबके साथ कहूगा कि वे ऐसा न करें। मै उनका दोस्त हू, हकूमतका दोस्त हू, और राजा

---

[1] सांकेतिक हड़ताल।

लोगोका भी दोस्त हू। उन्हें मुझसे अनुचित काम नही कराना चाहिए। सभी पार्टियोका फर्ज है कि १५ अगस्तसे जो हकूमत बननेवाली है उसके मारफत सब काम कराए। अग्रेजोके जमानेमे हम कुछ नही कर पाते थे। हमने कोशिश की। अहिंसात्मक युद्ध किया। अब भी कर सकते है। मगर उसके लिए सामान तो चाहिए, लोकमत तो बनना चाहिए।

उदाहरणके लिए गो-रक्षाका मामला है। इसमे मजबूर करोगे तो मुसलमानोको ! हिंदुओको क्यो नही ? पारसियोको क्यो नही ? इस तरह गो-रक्षा नही हो सकती। अपने धर्मपर चलनेमे सब काम बिना कानून हो सकता है। मै तो चाहता हू कि मुसलमान भी गो-वध न करें। वे गायका मास न खाए। लेकिन ऐसा करना या न करना उनकी इच्छापर है। हमें यह घमड नही होना चाहिए कि हमारी हकूमत आ गई है इसलिए हम जबरन या कानूनन सब काम करा सकते है।

मै चाहता हू कि जो स्वराज्य मिला है उसका ठीक उपयोग किया जाय। हम धर्मकी वृद्धि करे, ताकि जो स्वराज्य हम चाहते है वह जल्दी आ जाय।

## : ८५ :

### १० सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनो,

जब मै शाहदरा पहुचा, तो मैने अपने स्वागतके लिए आए हुए सरदार पटेल, राजकुमारी और दूसरे लोगोको देखा। लेकिन मुझे सरदारके ओठोपर हमेशाकी मुस्कराहट नही दिखाई दी। उनका मसखरापन भी गायब था। रेलसे उतरकर मै जिन पुलिसवालो और जनतासे मिला, उनके चेहरोपर भी सरदार पटेलकी उदासी दिखाई दे रही थी। क्या हमेशा खुश दिखाई देनेवाली दिल्ली आज एकदम मुर्दोका शहर बन गई है ? दूसरा अचरज भी मुझे देखना बदा था। जिस भगी-बस्तीमें ठहरनेमें

मुझे आनद होता था, वहां न ले जाकर मुझे बिड़लाके आलीशान महलमे ले जाया गया। इसका कारण जानकर मुझे दुःख हुआ। फिर भी उस घरमे पहुचकर मुझे खुशी हुई, जहा मैं पहले अक्सर ठहरा करता था। मै भगी-बस्तीमें वाल्मीकि भाइयोंके बीच ठहरू या बिड़ला-भवनमें ठहरूं, दोनों जगह मै बिडला भाइयोंका ही मेहमान बनता हू। उनके आदमी भगी-बस्तीमें भी पूरी लगनके साथ मेरी देखभाल करते है। इस फेरबदलके कारण सरदार नही है। वह वाल्मीकि-बस्तीमे मेरी हिफाजतके बारेमे किसी तरह डरनेकी कमजोरी कभी नही दिखा सकते। भगियोंके बीच रहकर मुझे बडी खुशी होती है, हाला कि नई दिल्लीकी कमेटीके कसूरसे मै बिलकुल उन घरोमें तो नही रह सकता, जिनमें भंगी लोग मछलियोकी तरह एक साथ ठूंस दिए जाते है।

मुझे बिड़ला-भवनमे ठहरानेका कारण यह है कि भगी-बस्तीमें जहां मै ठहरा करता था, वहा इस समय निराश्रित लोग ठहराए गए है। उनकी जरूरत मुझसे कई गुना बड़ी है। लेकिन हमारे यहा निराश्रितोंका कोई भी सवाल खडा हो, यह क्या एक राष्ट्रके नाते हमारे लिए शरमकी बात नहीं है? पडित नेहरू और सरदार पटेलके साथ कायदे आजम जिना, लियाकतअली साहब और दूसरे पाकिस्तानी नेताओंने यह ऐलान किया था कि हिंदुस्तानी संघ और पाकिस्तानमें अल्पमतवालोंके साथ वैसा ही बरताव किया जायगा, जैसा कि बहुमतवालोके साथ। क्या हर डोमीनियनके हाकिमोंने यह मीठी बात दुनियाको खुश करनेके लिए ही कही थी, या इसका मतलब दुनियाको यह दिखाना था कि हमारी कथनी और करनीमे कोई फर्क नही है और हम अपना वचन पूरा करनेके लिए जान भी दे देंगे? अगर ऐसा ही है, तो मैं पूछता हू कि हिंदुओं, सिखों, गौरवभरे आमिलों और भाईबदोको अपना घर पाकिस्तान छोडनेके लिए क्यों मजबूर किया गया? क्वेटा, नवाबशाह और करांचीमे क्या हुआ है? पच्छिमी पंजाबकी दर्दभरी कहानियां, सुनने और पढ़नेवालोंके दिलोंको तोड़ देती है। पाकिस्तान या हिंदुस्तानी संघके हाकिमोंके लाचारी दिखाकर यह कहनेसे काम नही चलेगा कि यह सब गुडोंका काम है। अपने यहां रहनेवाले लोगोंके कामोंकी पूरी जिम्मेदारी अपने सिर लेना

हर डोमीनियनका फर्ज है। उनका काम 'क्या और क्यों' करनेका नही, बल्कि करने और मरनेका है। अब वे साम्राज्यवादके कुचल डालनेवाले बोझके नीचे चाहे या अनचाहे कोई काम करनेके लिए मजबूर नही किए जाते। आज वे आजादीसे, जो चाहें कर सकते है। लेकिन अगर उन्हें ईमानदारीसे दुनियाके सामने अपना मुह दिखाना है, तो इसका मतलब यह नही हो सकता कि अब दोनो डोमीनियनोमे कोई कानून-कायदा रहेगा ही नही। क्या यूनियनके मत्री अपना दिवालियापन जाहिर करके 'दुनियाके सामने बेशर्मीसे यह मजूर कर लेगे कि दिल्लीके लोग या निराश्रित खुशीसे और खुद होकर कानूनको नही पालना चाहते? मैं तो मन्त्रियोसे यह आशा करूगा कि वे लोगोके पागलपनके सामने झुकनेके बजाय उनके पागलपनको दूर करनेकी कोशिशमें अपने प्राणोकी बाजी लगा देंगे।

जिस मकानमें मै रहता हू, उसमें भी फल या शाक-भाजी नही मिलती। क्या यह शर्मकी बात नही है कि कुछ मुसलमानोके मशीनगन या बदूक वगैरासे गोलीबार करनेके कारण सब्जीमडीमें शाक-भाजीका मिलना बद हो गया? शहरके अपने दौरेमे मैने यह शिकायत सुनी कि निराश्रितोको राशन नही मिलता। जो कुछ दिया भी जाता है, वह खाने लायक नही होता। इसमे अगर दोष सरकारका है, तो उतना ही दोष निराश्रितोका भी है जिन्होने जरूरी कामकाजको भी रोक दिया है। उन्होने यह क्यो नही समझा कि ऐसा करके वे अपने-आपको नुकसान पहुचा रहे है? अगर उन्होने अपनी तमाम सच्ची शिकायतोको दूर करनेके लिए सरकारपर भरोसा किया होता और कायदा पालनेवाले नागरिकोकी तरह बरताव किया होता, तो मै जानता हू और उन्हें भी जानना चाहिए, कि उनकी ज्यादातर मुसीबतें दूर हो जाती।

मै हुमायूके मकबरेके पास मेवोकी छावनीमे गया था। उन्होने मुझसे कहा कि हमें अलवर और भरतपुर रियासतोसे निकाल दिया गया है। मुसलमान दोस्तोने जो कुछ भेजा है,' उसके सिवा हमारे पास खानेकी कोई चीज नही है। मै जानता हू कि मेव लोग बडी जल्दी उभाडे जा सकते और गड़बड़ी पैदा कर सकते है। लेकिन उसका यह इलाज नही

है कि उन्हें न चाहनेपर भी यहासे निकालकर पाकिस्तान भेज दिया जाय। उसका सच्चा इलाज तो यह है कि उनके साथ इन्सानोंका-सा बरताव किया जाए और उनकी कमजोरियोका किसी दूसरी बीमारीकी तरह इलाज किया जाए।

इसके बाद मै जामिया-मिलिया गया, जिसके बनानेमे मेरा बड़ा हाथ रहा है। डा० जाकिरहुसेन मेरे प्यारे दोस्त है। उन्होंने सचमुच दु:खके साथ मुझे अपने अनुभव सुनाए; लेकिन उनके मनमे किसी तरहकी कड़ुवाहट न थी। कुछ समय पहले उन्हे जालधर जाना पडा था। अगर एक सिख केप्टन और रेलवेके एक हिंदू कर्मचारीने समयपर वहा उनकी मदद न की होती, तो मुसलमान होनेके कसूरमे गुस्सेसे पागल बने सिखोने उन्हे जानसे मार दिया होता। डा० जाकिरहुसेनने इन दोनोका अहसान मानते हुए अपना यह अनुभव मुझे सुनाया। जरा खयाल तो कीजिए कि इस राष्ट्रीय सस्थाको, जहा कई हिंदुओने शिक्षा पाई है, यह डर है कि कही गुस्सेसे भरे निराश्रित और उन्हें उकसानेवाले लोग उसपर हमला न कर दें। मै जामिया-मिलियाके अहातेमें किसी तरह ठहराए गए १००से ज्यादा निराश्रितोंसे मिला। जब मैंने उनकी मुसीबतोकी दर्दभरी कहानी सुनी तो मेरा सिर शर्मसे नीचा हो गया। इसके बाद मै दीवान हॉल, वेवेल केटीन और किंग्सवेकी निराश्रितोंकी छावनियोमें गया। वहा मै सिख और हिंदू निराश्रितोसे मिला। वे पजाबकी मेरी पिछली सेवाओको अबतक भूले नही थे। लेकिन इन सारी छावनियोमें कुछ गुस्सेभरे चेहरे भी दिखाई दिए, जिन्हे माफ किया जा सकता है। उन्होंने मुझे हिंदुओकी तरफ कठोरता दिखानेके लिए कोसते हुए कहा, 'हम लोगोकी तरह आपने मुसीबते नही सही है। हमारी तरह आपके भाई-बेटे और सगे-सबधी नही मारे गए है। हमारे-जैसे आप दर-दरके भिखारी नही बनाए गए है। आप यह कहकर हमें कैसे धीरज बंधा सकते है कि आप दिल्लीमें इसीलिए ठहरे है कि हिंदुस्तानकी राजधानीमे शाति और अमन कायम करनेमे भरसक मदद कर सके?'' यह सच है कि मै मरे हुए लोगोको वापिस नही ला सकता। लेकिन मौत सारे प्राणियोंको—इन्सान, जानवरो वगैरा—भगवानकी दी हुई देन है। फर्क सिर्फ

समय और तरीकेका है। इसलिए सही बरताव ही जीवनका सही रास्ता है, जो उसे जीने लायक और सुंदर बनाता है।

आज दिनमे एक सिख दोस्त मुझसे मिले थे। उन्होंने कहा कि वे जन्मसे तो सिख है, लेकिन ग्रंथ साहबकी दृष्टिसे वे सच्चे सिख होनेका दावा नही कर सकते। मैंने उन भाईसे पूछा कि आपकी नजरमे कोई ऐसा सिख है? वे एक भी ऐसा सिख नही बता सके। तब मैंने नरमीसे कहा कि मै ऐसा सिख होनेका दावा करता हू। मै ग्रंथ साहबके मानोंमें सच्चे सिखका जीवन बितानेकी कोशिश कर रहा हू। एक समय था, जब ननकाना साहबमें मुझे सिखोंका सच्चा दोस्त करार दिया गया था। गुरु नानक मुसलमान और हिंदूमे कोई भेद नही मानते थे। उनके लिए सारी दुनिया एक थी। मेरा सनातन हिंदू-धर्म ऐसा ही है। सच्चा हिंदू होनेके नाते मै सच्चा मुसलमान होनेका भी दावा करता हू। मैं हमेशा मुसलमानोकी महान् प्रार्थना गाता हू, जिसमें कहा गया है कि खुदा एक है और वह दिन-रात सारी दुनियाकी हिफाजत करता है।

निराश्रितोसे मेरा कहना है कि वे सचाई और निडरतासे रहे और साथ ही किसीसे वैर या नफरत न करें। गुस्सेमे बिना सोचे-समझे नादानी-भरे काम करके महगे दामो मिली आजादीके सुनहले सेब को फेंक न दें।

## : ८६ :

### १२ सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनो,

पहली बात तो मै आपको यह कहना चाहता हू कि आज जो खबर मेरे पास सरहदी सूबेसे आ गई है वह खतरनाक बात है। मेरा दिल तो उससे दुखी होता ही है। सरहदी सूबेमें मैं काफी दिनोतक रहा हू। बादशाह खान मेरे साथ थे। डाक्टर खानसाहबके घरपर रहता था। लीगवाले दोस्तोसे मुहब्बतसे मिलता था। जब मै यह सुनता हू कि वहा अब तो कोई हिंदू या सिख आरामसे नही रह सकता तो मुझे आश्चर्य

होता है। हिंदू और सिख वहा काफी तादादमे थे, लेकिन मुसलमानोंके सामने उनकी तादाद छोटी ही थी। कितनी भी छोटी क्यों न हो, उससे क्या? बात तो यह है कि एक भी मासूम बच्चा वहा रहे तो उसको भी सुरक्षित होना चाहिए।

जैसा मै अपने लिए सोचता हू वैसा ही मै आपको कह सकता हूं कि हम कभी गुस्सेमें न आए। दु.ख मानना है तो माने। हमारे दिलमें हमारे दुखी भाइयोके लिए दिलचस्पी होनी चाहिए, उनके लिए हमारे दिलमे हमदर्दी होनी चाहिए। वे मारे जाते है तो हम मुसलमानोको क्यो न मारें, यह दिलमे आ सकता है। लेकिन जिन्होने हमारे भाइयोको मारा उन्हे तो मै मार नही सकता। उनके बदले दूसरे बेगुनाहोको मारनेकी तैयारी करू? कितनोको मार सकते है? वहा जो हुआ उसका जितना हो सके बदला लेना, इसका नाम वैरभाव हुआ—मैं इस चीजको नही मानता कि कोई बुराई करता है तो उसका बदला बुरा बनकर लू। जो बुराई करता है, वह वहशियाना बात करता है, वह जगली बन जाता है, मूर्ख बन जाता है, तो क्या मै भी मूर्ख और जगली बनू? मेरे ही लोग मूर्ख बन गए, दीवाने बन गए तो क्या उनको मारू? मै आपको अपने बचपनकी बात सुनाऊ। उस वक्त मै शायद दस वर्षका था। मेरा बडा भाई बीमार पड गया। दीवाना-सा बन गया। मगर सबने उसपर दया ही की। उसके लिए डाक्टर बुलाया, यह बुलाया, वह बुलाया लेकिन जेलरको नही बुलाया। इसको कैदमें भेज दो ऐसा नही कहा। यह दीवाना हो गया है, फौज बुलाओ ऐसा नही कहा। मेरा बाप सब कुछ कर सकता था, क्यो नही किया? वह उसका लडका था। बाप कहता था, क्या लड़केको मार डालू? तो जैसे अपना लडका है, भाई है, ऐसे मेरे सभी भाई है। मै आपको कहूगा कि हम ऐसा न कहे कि मुसलमान हमारे दुश्मन है। कितने मुसलमान मैं बता सकता हूं जो मेरे दोस्त है। उनके घरमे मै रह सकता हू। वे मेरे घरमे रहते है। उनके घरमें मै रहूं तो वे मेरी बडी हिफाजत करेंगे। चूकि यहां हिंदुस्तानमे आज पाकिस्तान बन गया, हिंदुस्तानमें जो सब मुसलमान है उन्हे काटना इन्सानका काम नही है। इसलिए मै आपको यह सुनाता हू और आपकी

मार्फत सबको। वहांकी, पाकिस्तानकी, हकूमत तो अपना काम भूल गई। कायदे आजम जिना साहब जो पाकिस्तानके गवर्नर-जनरल हैं, वहांके जो गवर्नर हैं, उनको मैं कहूंगा कि आप ऐसा न करें। जितनी बातें अखबारमें आई है, अगर वे सही है, तो मैं उनसे कहूंगा कि वहां हिंदू-सिख आपकी सेवाके लिए ही पड़े हैं। आज वे क्यों डरते हैं? इसलिए कि उनको और उनकी बीबियोंको मर जाना पड़ेगा, उनकी बीबियोंको कोई उठा ले जायगा। उन्हें खतरा है सो वे भागते हैं। वहांकी हकूमतमें ऐसा क्यों? अपने लोगोंको भी मैं कहना चाहता हूं कि आप ऐसे जाहिल न बनें। यहां दिल्लीमें हिंदू-सिख कहें कि चूंकि पाकिस्तानमें हिंदू-सिख मुसीबतमें पड़े हैं, वहां उन्हें बर्बाद कर दिया गया है, करोड़ोंकी जायदाद वहां छोड़कर वे आए हैं, उसका बदला यहां लेंगे तो यह जहालत है। मैंने पाकिस्तानके हिंदू-सिखोंकी दशा देखी है। मैं लाहौरमें रहा हूं। क्या मुझे दुःख नहीं होता? मेरा दावा है कि मेरा दुःख किसी पंजाबीके दुःखसे कम नहीं। अगर कोई पंजाबी हिंदू या सिख मुझे आकर कहेगा कि उसकी जलन ज्यादा है; क्योंकि उसका भाई मर गया है, लड़की मर गई है, बाप मर गया है, तो मैं कहूंगा, उसका भाई मेरा भाई है, उसकी लड़की मेरी लड़की है, उसकी मां मेरी मां है। मेरे दिलमें भी उसके जितनी ही जलन है। मैं भी इन्सान हूं, गुस्सा आ जाता है, पर उसे पी जाता हूं। उससे मुझमें शक्ति पैदा होती है। उस शक्तिसे क्या बदला लूं? बदला कैसे लूं कि वे खुद अपने गुनाहके लिए पश्चाताप करें। कहें, हमसे बड़ा गुनाह हो गया है। जो मुसलमानोंने वेस्ट[1] पंजाबमें किया है वह सबके सामने है। वे हिंदू-सिख ऐसा करके मारे उससे क्या? लेकिन वे धर्मको मारते है, उसको वे क्या करेंगे? उसका जवाब वे किसको देनेवाले हैं? यह सब मैं जानता हूं। लेकिन वे जाहिल बनते हैं इसलिए मैं यह कहूं कि दिल्लीके हिंदू दिल्लीके सिख और जो कोई भी यहां बाहरसे आए है वे जाहिल बनें? मैं उम्मीद करता हूं कि वे ऐसा नहीं करेंगे, ऐसे पागल नहीं बनेंगे, ताकि बादमें आनेवाले

---

[1] पश्चिमी।

यह कहें कि हमारे बाप-दादे—हिंदू, सिख, मुसलमान सब ऐसे पागल बन गए कि उनको एक मोटी रोटी जिसका नाम आजादी था वह मिल गई, पर उसको वे हजम नही कर सके, खा नही सके, उस रोटीको उन्होने दरियामे फेंक दिया और ऐसा कहकर हमपर थूके। मै आपको कहता हू कि हम सावधान नही बन जाते है तो ऐसा जमाना आ रहा है।

आज मै जुमा मस्जिदमे गया था। उनकी बीबियोसे मिला। कोई रोती थी, कोई अपने बच्चेको मेरे पास लाती थी कि मेरा यह हाल है। इनको मैं क्या कहू कि वहा वेस्ट-पजाबमे हिंदुओका, सिखोका क्या हाल हुआ है, यह सब उनको जाकर सुनाऊ कि सरहदी सूबेमे क्या हुआ वह सुनाऊ? वह सब सुनाकर क्या करू? ऐसा करनेसे पजाबके हिंदू-सिखोका दर्द क्या मिट जायगा ?

पाकिस्तानवाले जाहिल बने, उसके सामने हिंदू और सिख भी जाहिल बन गए। तो एक जाहिल दूसरे जाहिलको क्या कहनेवाला था ? इसलिए तो आपसे यह कहूगा, आप सारे हिंदू-धर्मको, सिख-धर्मको बचानेका काम करें। हिंदुस्तानको और पाकिस्तानको, सारे देशको बचानेका काम करें। हम आखिरतक शरीफ रहे तो पाकिस्तानमे मुसलमानोको शरीफ बनना ही है। यह दुनियाका कानून है। इस कानूनको कोई बदल नही सकता। यह आपको एक बूढा सुना रहा है, जिसने धर्मका काफी अभ्यास किया है। हरेकका भला करनेकी कोशिश की है। ७८, ७९ वर्षमे मैने काफी तजुर्बा लिया है। मै कोई आखे बद करके दुनियामें नही घूमा। बीस वर्षतक हिंदुस्तानके बाहर रहा हूं। दक्षिण अफ्रीका-जैसे जगली मुल्कमे जो हब्शी लोगोसे भरा हुआ है, उनके बीचमें मैं रहा और राम-नाम नही भूला। रामका नाम याद रखता था और तभी तो मै वहा रह सका। इसलिए मै आपको अपने तजुर्बेसे कह सकता हू कि हमारा काम नही है कि अगर किसीने हमारे साथ बुरा किया हो तो हम उसका बुरा करके बदला लें। बुरेका बदला हम भला करके लें, यह सच्ची इन्सानियत है। जो भलेके बदले भला करता है वह तो बनिया बन गया और झूठा बनिया। मै कहता हूं, कि मै बनिया हूं। मगर सच्चा। आप झूठे बनिया न बनें। सच्चा वह इन्सान है जो बुरेका बदला

भलेसे करता हूँ। यह मैंने बचपनसे सीखा और इतना तजुर्बा होनेके बाद समझ सकता हू कि यह सच्ची बात है। तो मैं आपको कहता हू कि बुरेका बदला हम भले बनकर ले।

वे लोग मस्जिदमें बेहाल पड़े थे। जुमेके रोज इतने इकट्ठे हो गए, तो नाटक करनेके लिए नही। उन्होने सुन लिया था, मैंने कलकत्तेमे मुसलमानोके लिए कुछ किया, बिहारमे कुछ किया, नोआखालीमें हिंदुओंके लिए कुछ किया, सो उन्होने सोचा, अच्छा वह आ गया है। अपने-आपको सनातनी हिंदू कहता है और इसलिए मुसलमान, सिख, पारसी और क्रिस्टी होनेका भी दावा करता है। तो उससे पूछो तो सही कि हमारे लिए क्या करना चाहता है?

एक माताने कहा मेरा बच्चा मर गया है, मैं क्या करू? मैंने कहा—मा, मैं तुझे क्या बताऊ? खुदाको याद कर, ईश्वर तेरा भला करेगा। बच्चा मर गया, सब मर गए तो क्या हुआ। तू भी तो इसी रास्तेपर जानेवाली है। छुरीसे नही तो शायद कालरेमे मर जायगी। तू हमेशा जिंदा थोडे ही रहनेवाली है? इसलिए खुदाका नाम ले और हँस-रोकर क्या करेगी?

ऐसी घटनाए क्यो होती है? ऐसे हम जाहिल क्यो बनें? हम अपने धर्मको पहिचाने। उस धर्मके मुताबिक मै सब लोगोको कहूगा कि यह हमारा परम धर्म है कि हम किसी हिंदूको पागल न बनने दें, किसी सिखको पागल न बनने दें। मैं कहना चाहता हू कि सब मुसलमान जो अपनी-अपनी जगहोंसे हट गए है, उन्हें वापिस भेजो। मेरी हिम्मत नही है कि मैं आज उन्हें भेजू, मगर उन्हे वापिस भेजना है यह आप अपने दिलमे रक्खें। मैं तो रखता हू। हमे शाति नही हो सकती है जबतक सब मुसलमान जिन जगहोसे निकले है, वही फिर न चले जाय। हा, एक बात है। आज मुझे लोग सुनाते है कि मुसलमान आज तो अपने घरोमे छुरा रखता है, गोला-बारूद रखता है, मशीनगन रखता है—स्टेन-गन, मैंने तो देखी भी नही है, वह सब रखता है, जैसे कि सब्जी-मडीमे। मैंने सब सुना है, देखा तो नहीं, लेकिन मैं सब माननेको तैयार हू। पर उससे हम क्यो डरे? मैं तो मुसलमानोको कहूगा और दिल्लीमे

तो सबको कहता हू कि आप एक ऐलान निकालें और खुदाको हाजिर-नाजिर जानकर, ईश्वरको साक्षी करके उसमे कहे कि पाकिस्तानमे कुछ भी हो उस गुनाहके लिए हमको आप क्यो मारे ? हम तो आपके दोस्त है, हम हिंदुस्तानके है और रहेंगे। दिल्ली कोई छोटी नही है, देशकी राजधानी है, पायेतख्त है। यहा बडी आलीशान जुमा मस्जिद पडी है, यहा फोर्ट भी है वह आपने नही बनाए है, मैने नही बनाए है, हिंदूने नही बनाए है। वह तो मुगलोके बनाए हुए है, जो हमारे ऊपर राज्य करते थे। वे तो यहाके बन गए थे, हमारे रीति-रिवाज सब चीज ले ली थी। मुसलमानोको आज हम कहे कि यहासे जाओ, नही तो हम तबाह कर देंगे तो क्या जामा मस्जिदका कब्जा आप लेनेवाले है ? और अगर हम कब्जा लेते है तो उसके मानी क्या होते है ? आप समझे तो सही ! उस जुमा मस्जिदमें क्या हम रहेंगे ? मै तो यह कभी कबूल नही कर सकता। मुसलमानोको वहा जानेका हक होना ही चाहिए। वह उनकी चीज है। हमे भी उसका फख्र है। उसमे बडी कारीगरी भरी पड़ी है। हम क्या उसे ढा देगे ? यह कभी नही हो सकता।

मुसलमानोसे मेरा कहना है कि आप साफ दिलसे कह दें कि आप हिंदुस्तानके है। यूनियनके वफादार है। अगर आप ईश्वरके वफादार है और आपको इडियन यूनियनमें रहना है तो आप हिंदुओके दुश्मन नही बन सकते। उनके साथ लड नही सकते। आपको यह कहना है। पाकिस्तानमें जो मुसलमान हिंदुओके दुश्मन बने पडे है उन्हे सुनाना है कि आप पागल न बने। अगर आप पागल बनेंगे तो हम आपका साथ नही दे सकते। हम तो यूनियनके वफादार रहेंगे। इस तिरगे झडेको सलाम करेंगे। हकूमतका जैसा हुक्म होगा, उसके मुताबिक हमे चलना है। वे सब मुसलमानोंको कह दे कि जिनके पास मशीनगनें है गोला-बारूद है, वह सब हकूमतको दे दे। हकूमतका यह धर्म है कि किसीको इसके लिए सजा न करे। ऐसा ही मैं कलकत्तेमें करवाकर आया हू। कलकत्ते-में मेरे पास काफी हथियार लोगोंने जमा कर दिए थे। ज्यादा तो हिंदुओने ही दिए थे। यहा मुसलमानोके पास हथियार है तो क्या हिंदुओके पास नही है ? मै हिंदूको तो कहता हू कि हथियार रखना ही न चाहिए।

रखना है तो उसके लिए लाइसेंस होना चाहिए, उसके लिए परवाना होना चाहिए। पजावमें कहते है कि सबको हथियार रखनेका हक दे दिया है। मै नही जानता कि पजाबमें क्या हो रहा है। अगर सबको हक है तो सब हथियार रक्खेगे। उससे पजावका कोई भला नही होने-वाला है। सबके पास हथियार रहेंगे तो आपस-आपसमें लोग लडेंगे और एक दूसरेको मारेंगे। सब हथियार रक्खें और सब लडनेवाले हो जाय तो तिजारत कौन करेगा ? क्या आपसमें मारनेका पेशा रह जायगा ? इसलिए मै कहूगा कि अगर पजावमे या पाकिस्तानमे ऐसा है तो उसमे तवदीली करनी चाहिए और कहना चाहिए कि हथियार कोई न रक्खेगा, हथियार सब हकूमतके पास रहेंगे। शहरीको हथियारकी क्या जरूरत है, इसकी तो हकूमतको जरूरत है। कुछ भी हो, आज तो किसी शहरीके पास हथियार नही होना चाहिए। मै कहूगा कि जितने भी हथियार मुसलमान रखते हो, सब हथियार हकूमतको दे देना चाहिए। हिंदुओंको भी सब हथियार दे देना चाहिए। पीछे हिंदू-सिख मुसलमानोसे कहें कि आप क्यो डरते हैं। हम आपसे नही डरेंगे और आप हमसे न डरे। बाहर कुछ भी हो, दिल्लीमे तो हम भाई-भाई होकर रहेंगे। ऐसा कलकत्तेमें भी हुआ और हिंदू-मुसलमान भाई-भाई होकर रहने लगे। विहारमें भी हिंदू ऐसा करते हैं। मै उम्मीद करता हू कि दिल्लीमें भी वही होगा जो कलकत्तेमें हुआ। आप लोग जल्दी दिल्लीमें वैसी हालत लाए जिससे मै जल्दी पजाव जा सकू और वहा जाकर कह सकू कि दिल्लीमें मुसल-मान शातिसे रह रहे हैं। उसका वदला मै वहा मागूगा। मेरे वदला मागनेकी वात कैसी है, वह मैने आपको समझा दिया और वही सच्चा वदला है। वह वदला मै ममदोतके नवाब साहव और वहाकी हकूमतसे मागूगा। ईस्ट[1]-पजावमें भी मै चला जाऊगा। वहा सिखोंको, हिंदुओंको डाटूगा, उन्हें कड़ी सुनाऊगा, क्योकि मै सवका खादिम हू, दोस्त हू। मै सव मजहवका हू, तो मुझे सवको कहनेका हक है और मै कहूगा कि आप पागल क्यो बनते है। सिख इतनी वहादुर कौम है। एक सिख

[1] पूर्वी।

सवा लाख इन्सानसे ज्यादा कहलाता है। वह क्या किसी कमजोरको मारेगा ? मारकर क्या पानेवाला था ?

मुसलमानोंको चाहिए था पाकिस्तान, उन्हे मिल गया। पीछे क्यो लडते है, किसके साथ लडते है ? क्या पाकिस्तान मिल गया तो सारा हिंदुस्तान ले लेगें ? वह कभी होनेवाला नही। क्यो वे कमजोर हिंदू-सिखोंको मारते है ? यह सब मै उनको कहना चाहता हूं। मै तो अकेला हू। आपके पास हकूमत पडी है, दोनों हकूमते आमने-सामने बाते करे कि उनके यहा जो अल्पमत—माइनारिटी—पड़ी है, उसकी रक्षा आपको करनी है। यहा जो है उनकी रक्षा हमें करनी है। नही तो यहा किस मुहसे जवाहरलाल कह सकता है, किस मुहसे सरदार पटेल कहनेवाले है कि हम बराबर अल्पमतकी हिफाजत करते है और यहां कोई मुसलमान लडका ऐसा नही है, जिसको कोई छू सकता है या उसपर लाल आखे निकाल सकता है। अगर कोई ऐसा मुसलमान है, जो पागल बन जाता है, अपने घरके अदर मशीनगन रखता है तो हम उसको सजा करेगें, मारेगे। लेकिन जो मुसलमान यहा वफादार होकर रहता है, उसे कोई छू नही सकता। ऐसे हालात आप पैदा करे कि जिससे जवाहरलाल ऐसा कह सकें, सरदार वल्लभभाई ऐसा कह सके कि दिल्ली थोड़े दिनोंके लिए पागल बन गई थी, लेकिन दिल्ली शुद्ध बन गई है। आज हिंदू कहते हैं कि मुसलमान अगर हमारे बीच रहे तो मशीनगन चलाएगे, हमारे पास मशीनगन नही हम क्या करें ? तो क्या हम मुसलमानोको मार डाले, या निकाल दे ? यह शराफत नही। हम इस तरह डरपोक न बने।

मुसलमान भाइयोको मै कहना चाहता हू कि उन्हे एक खासा स्टेटमेंट[1] निकालना चाहिए। दिलोको बिलकुल साफ कर लेना चाहिए। सिखोने भी कुछ निकाला है, हिंदुओने भी। दिल और दिमाग साफ हो जावे तो हम मेलजोल कर सकते है। आखिर दिल्लीकी इतनी बडी तिजारत, इतनी खूबसूरत इमारते, दिल्लीकी तहजीब यह सब हिंदू-मुसलमान दोनोकी है, महज एककी नही।

---

[1] वक्तव्य।

## : ८७ :

### १३ सितम्बर १९४७

भाइयो और वहनो,

एक जमाना था, शायद १५की सालमें, जब मै दिल्लीमें आया था, हकीम साहबको मिला और डाक्टर असारीको। मुझको कहा गया कि हमारे दिल्लीके वादशाह अग्रेज नही है, लेकिन ये हकीम साहब है। डाक्टर असारी तो वडे बुजुर्ग थे, वहुत वड़े सर्जन थे, वैद्य थे। वे भी हकीम साहबको जानते थे, उनके लिए उनके दिलमें बहुत कद्र थी। हकीम साहब भी मुसलमान थे, लेकिन वे तो बहुत बडे विद्वान् थे, हकीम थे। यूनानी हकीम थे लेकिन आयुर्वेदका उन्होंने कुछ अभ्यास किया था। उनके वहा हजारो मुसलमान आते थे, और हजारो गरीब हिंदू भी आते थे। साहूकार, धनिक मुसलमान और हिंदू भी आते थे। एक दिनका एक हजार रुपया उनको देते थे। जहातक मै हकीम साहबको पहचानता था, उन्हें रुपएकी नही पडी थी, लेकिन सबकी खिदमतकी खातिर उनका पेशा था। और वह तो वादशाह-जैसे थे। आखिरमे उनके बाप-दादा तो चीनमें रहते थे, चीनके मुसलमान थे, लेकिन बडे शरीफ थे। जितने हिंदू लोग मेरे पास आए, उनसे पूछा आपके सरदार यहा कौन है ? श्रद्धानदजी ? श्रद्धानदजी यहा बडा काम करते थे। लेकिन नही, दिल्लीके सरदार तो हकीम साहब थे। क्यो थे ? क्योकि उन्होंने हिंदू-मुसलमान सबकी सेवा ही की, खिदमत की। तो वह १५ के सालकी बात मैंने कही। लेकिन बादमें मेरा ताल्लुक उनसे बहुत बढ गया और उनको और पहचाना—डाक्टर असारीको पहचाना। डाक्टर असारीके घर में काफी दिनोतक रहा और उनकी लडकी जोहरा और उनके दामाद शौकतखाको पहचानता हू। सब भले है, आज भी यहा पडे है। लेकिन दिलमे रज क्यो है ? उनको आज डर लग गया है, क्या यहा कोई हिंदू उनको भी मारेगा ? उनके घरमें तो वे रहते नही है। होटलमें जाकर रहते है। इत्तिफाकसे बच गए है, उनका दरवान हिंदू था। उसने जो लोग आए थे उनको भगा दिया। तो ऐसे आज हम क्यो है ? ऐसे पागल हिंदू क्यो

बने, सिख क्यो बने, जिसका उनको डर लगे। आप मुझको कह सकते है, काफी हिंदू कहते है, गुस्सेमे आ जाते है, लाल आख करते है कि तू तो बगालमे पडा रहा, बिहारमे पडा रहा, पजाबमे आकर देख तो सही, पजाबमे हिंदुओकी क्या हालत मुसलमानोने की है, सिखोकी क्या हालत की है, लड़कियोकी क्या हालत की है। मै यह सब नही समझता हू, ऐसा तो नही है। लेकिन मै उन दोनो चीजोको साथ-साथ रखना चाहता हू। वहा तो अत्याचार होता ही है। पर मेरा एक भाई पागल बने और सबको मार डाले तो मै भी उसके समान पागल बनू और गुस्सा करू? यह कैसे हो सकता है? मेरे पास सब एक है, मेरे पास ऐसा नही है कि यह गाधी हिंदू है इसलिए हिंदुओको ही देखेगा, मुसलमानोको नही। मै कहता हू कि मै हिंदू हू और सच्चा हिंदू हू और सनातनी हिंदू हूं। इसलिए मुसलमान भी हू, पारसी भी हू, क्रिश्टी भी हू, यहूदी भी हू। मेरे सामने तो सब एक ही वृक्षकी डालिया है। तो मै किस डालीको पसद करू और मै किसको छोड दू। किसकी पत्तिया मै ले लू और किसकी पत्तिया मै छोड दू। सब एक है। ऐसा मै बना हू। उसका मै क्या करू। सब लोग अगर मेरे-जैसा समझने लगे तो पूरी शाति हो जाय।

आज मै पुराने किलेमे गया। वहा मैने हजारो मुसलमानोंको देखा। और दूसरी मुसलमानोंसे भरी गाड़िया किलेकी तरफ चली आ रही थी। सारे मुसलमान आश्रित थे। किलेमें उनको रहना पडा, तो किसके डरसे? आपके डरसे, मेरे डरसे? मै जानता हू कि मै तो नही डराता हू, लेकिन मेरे भाई डराते है, जो अपनेको हिंदू मानते है, जो अपनेको सिख मानते है। उन्होने डराया सो मैने डराया और आपने डराया। तो मुझसे तो बरदाश्त नही होता कि वे डरके मारे भागकर पाकिस्तानमे जाय। पाकिस्तानमे स्वर्ग है और यहा नरक है, ऐसा नही। हम इस नरकमे क्यो पड़े? मै जानता हू कि न पाकिस्तान नरक है और न हिंदुस्तान नरक है। हम चाहे तो उन्हें स्वर्ग बना सकते है, और अपने कामोसे नरक भी बना सकते है। पाकिस्तानमें मुसलमानोंकी बड़ी तादाद है, वे उसे नरक बना सकते है। हिंदुस्तानमे जहा हिंदू बडी तादादसे है, हिंदुस्तानको नरक

बना सकते है। और जब दोनो नरक-जैसे बन गए, तो उसमे फिर आजाद इन्सान तो नही रह सकता। पीछे हमारे नसीबमें गुलामी ही लिखी है। यह चीज मुझको खा जाती है। मेरा हृदय काप उठता है कि इस हालतमें किस हिंदूको समझाऊगा, किस सिखको समझाऊगा, किस मुसलमानको समझाऊगा। किलेमें काफी मुसलमान गुस्सेमें आ गए, दूसरोने उन्हे रोका। यह भी मैंने देखा उनके दिलोमें मुहब्बत थी, वह समझाते थे, रोकते थे, कहते थे कि यह बूढा आया है, वह तो हमारी खिदमत करने आया है। हमारे आसू है, उसको पोछनेके लिए आया है। हम भूखे है, तो देखनेके लिए आया है कि उनको रोटीका टुकडा कहीसे मिल सके तो पहुचाए, उनको पानी नही मिलता है, तो उनको पानी कहासे पहुचाए। मुझे पता नही है कि वहा पानी मिलता है या रोटी मिलती है कि नही। किसीने कहा कि हमारे पास रोटी नही है, पानी भी नही है। मै तो देखने गया था। कोई शौकसे थोडे ही गया था, कोई मजा तो मुझे लेना नही था। कुछ लोगोने मुझे बडी मोहब्बतसे सुनाया। मुझे अच्छा लगा। घर-बार छोडना किसीको पसद नही आएगा। जैसे वे वैसे आज हिंदू आश्रित पडे है। अपना घर छोडा, जायदाद छोडी, कोई मर गया और कोई यहा जिदा आ पडे है। पीछे यहा खाना कहा है, पीना कहा है, घर कहा पडा है ? कही भी पडे रहते है। यह अच्छी बात नही है। सबके लिए शर्मकी बात है। तो मै तो इनको भी समझाता था। आप लोगोंकी मार्फत दूसरे जिसको मेरी आवाज पहुच सके, उनको भी पहुचाना चाहता हू। आपकी दिल्ली बडी आलीशान नगरी है, जिसमे वह पुराना किला है, वह तो इद्रप्रस्थ कहा जाता है। कहते है कि महाभारतके कालमे पाडव यहा पुराने किलेमे रहते थे। इसको इद्रप्रस्थ कहें, दिल्ली कहें, यहा हिंदू-मुसलमान दोनो इकट्ठा होकर पले। मुगलोंकी यह राजधानी थी। आज तो हिंदुस्तानकी है, मुगल बादशाहका तो कोई है नही। मुगल बाहरसे आए थे। लेकिन उनका सब कुछ यहा देहलीमे था। वे देहलीके बने। उसमेसे असारी साहब भी बने, हकीम साहब भी बने और कही हिंदू भी बने। हिंदूने भी उनकी नौकरी की। ऐसी आपकी इस दिल्लीमें, हिंदू-मुसलमान सब आरामसे पडे रहते थे।

बाज दफा लड़ लेते थे। दो दिनके लिए लड़े पीछे एक बन गए। जिसमे एक दफा किसी कातिलने, खूनी आदमीने हमारे श्रद्धानदजीका खून किया, लेकिन उसके पहले मुसलमान श्रद्धानदजीको दिल्लीकी जामा मस्जिदमे मोहब्बतसे ले गए थे और वहा उन्होंने भाषण दिया। यह है आपकी दिल्ली।

लेकिन आज क्या हो रहा है? सरदार ऊचा सिर रखकर चलने-वाला, आज मैं आपको कहता हू कि उसका सिर नीचा हो गया है। वह जवाहरलाल, वह बहादुर जवाहरलाल, हवामे उडनेवाला, किसीकी परवाह न करनेवाला, आज वह लाचार बनकर बैठ गया है। क्यो लाचार बना? हमने उसको लाचार बनाया। अगर ऐसा ही रहता कि पश्चिमी पजाबके मुसलमान दीवाने बन गए, वह भी खतरनाक बात है, नही बनना चाहिए। मगर एक पागल बने तो उसकी तो दवा हो सकती है, लेकिन सब पागल और दीवाने बने तो कौन दवा करेगा? वह जवाहरलाल कोई ईश्वर तो है नही। सरदार ईश्वर थोडे ही हैं। दूसरे जो उनके मत्री पडे है, वे ईश्वर तो हैं नही। उनके पास ईश्वरी ताकत तो कोई नही है। बाहरकी ताकत, दुनियाकी ताकत भी कहा उनके पास पडी है?

मै तो बस यही बात सबको कहता हू। काफी हिंदू आ गए, मुसल-मान आ गए, उनसे काफी बहस की, लेकिन आखिरमे मेरी आवाज ईश्वरको जाती है। मै कहता हू, मुझको यहासे उठा ले तू। नही तो दिल्लीमे जो आज दीवाने बन गए है वे लडते है, उनको तू जैसे पहले थे वैसे बना दे। किसी हिंदूके दिलमें या सिखके दिलमे मुसलमानोके लिए गुस्सा न हो। मुझको लोग सुनाते है कि मुसलमान तो फिफ्थ कालमिस्ट[1] है, उसका मतलब है बेवफा है, आज जो हकूमत है उसके प्रति वे बेवफा है। साढे चार करोड मुसलमान पडे हैं। साढ़े चार करोड अगर बेवफा बनते है तो उसमे खोएगा कौन? उनको ही गवाना है। वे इस्लामको गढेमे डालेगे।

---

[1] पचमांगी।

लेकिन हिंदू और सिखको वे खतरेमे नही डाल सकते है। साढे चार करोड मुसलमान अगर ऐसी वदगुमानी करे कि हकूमतकी वेवफाई कर सकते है तो उनको गढेमे पडना है। मगर साढे चार करोड मुसलमानोको आप न सतावे। मग, नही तो वे पाकिस्तान जाय ऐसा कहें, यह ठीक नही। क्यो जाय? किसकी शरणमे जाय? मै आपको कहता हू वे आपकी शरणमें है, मेरी शरणमे है। कम-से-कम मैं वह दृश्य देखना नही चाहता। मै ईश्वरको यही कहूगा कि उससे पहले तू मुझको यहासे उठा ले। काफी दिन जिंदा रखा है, कोई ७८, ७९ वरस कम नही है। मुझको पूरा सतोप है। जो मेरेसे वन सकती है वह सेवा मैने कर ली, लेकिन अगर जिंदा रखना चाहता है तो मेरे पाससे ऐसा काम ले जिससे मेरी आत्माको सतोप पहुचे। दोनो कहे तू दोनोका दोस्त है। इसलिए सब तेरी वात सुनते है और सुनेंगे। मै काफी मुसलमानोके साथ वैठता हू, किसे कहू कि वह दगा-वाज है और मुझको दगा दे रहा है। मैं कहता हू कि अगर वह दगा देता है, तो दगा किसीका सगा नही हो सकता।

मुसलमानोके पास काफी हथियार पटे है, यह मै कवूल करता हू। थोडे तो मैने दे लिए, थोड़े-से पटे है तो क्या करेंगे? मुझको मारेंगे? आपको मारेंगे? ऐसा करें तो हकूमत कहा गई है? मै आपको कहता हू कि अगर हम आज अच्छे वन जाय, शरीफ वन जाय तो हकूमतको हमें इन्साफ दिलाना ही है। हकूमतोको आपस-आपसमें लटने दे, हम आपस-आपसमें नही लडे, हम आपस-आपसमे दोस्त ही रहें। हम डर न करें कि हमको मार डालेगे। मारनेवाला कितना ही वलवान हो, मार नही सकता जवतक ईश्वर हमारी रक्षा करता है। इसलिए मैं कहता हू, दोनोसे कहता हू, डरको छोडो। कायदे आजम-की वहस मुझे वुरी लगी। कहते है, यूनियनमें मुसलमानोको सताया गया, इसलिए उन्हें पाकिस्तान लाया जा रहा है, उनके लिए खाना चाहिए, जमीन चाहिए। पाकिस्तान गरीव है, इसलिए जिसके पास पैसे है वे पैसे भेज दे। मुझे उसकी शिकायत नहीं। मगर साथ ही यह क्यो नही कहते कि पश्चिमी पजावमें हिंदुओपर क्या हुआ?

बिहारने बुराई की तो उसका कफ्फारा किया। कलकत्तेमे हिंदुओने आकर मेरे सामने पश्चात्ताप किया। ऐसे ही मुसलमान आकर कहे, हमने बुराई की, गलती की तो वह शराफत होगी। मैंने देख लिया है, मै कैसे आखें बद कर सकता हू। हिंदू गुनाह करते हैं उसको भी छिपा नही सकता हू। इसी तरह कोई मुसलमान गुनाह करे तो उसे भी मै नही छिपाऊगा। छिपाऊगा तो मै इस्लामका बेवफा बनूगा। मैं उसका बेवफा नही बनना चाहता। गुरु ग्रथका भी बेवफा नही बनूगा। मै सबका वफादार ही रहना चाहता हू। न मै खुदाका बेवफा बन सकता हू न इन्सानका। सबकी तरफ वफादारी करना चाहता हू।

मुसलमान सब बेवफा होते है, ऐसा नही है। मै काफी मुसलमानोके बारेमें कहनेको तैयार हू कि वे बावफा हैं। अगर बेवफा होंगे तो ईश्वर उन्हे पूछेगा और वे अपने-आप इस्लामको खतरेमें डालेगे। काफी मुसलमानोंने इरादा किया, इसलिए मैंने कल कहा कि मुसलमानोका यह धर्म है कि जितने खास-खास लोग है वह कहे कि हम ऐसे निकम्मे नही है। हम हिंदुस्तानके वफादार हैं और रहेंगे; हिंदुस्तानके लिए दुनियासे लडेंगे। तब तो वे सच्चे मुसलमान है नही तो वे बुरे मुसलमान हो जाते हैं। मेरी ऐसी उम्मीद है कि ऐसे बुरे मुसलमान हमारे यहा हिंदुस्तानमे है नही और अगर है तो उन्हें अच्छा करनेके लिए हमको अच्छा बनना है, बुरा नही।

## : ८८ :

### १४ सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनो,

जैसे कल गया था वैसे आज भी मैं वहा चला गया था, जहा हमारे मुसलमान आश्रित लोग रहते है। वहा कैंपमे जो गदगी थी वैसी मैंने देखी नही। मै हिंदुओंके कैंपमें भी गया और मुसलमानोके कैंपमें भी गया। हिंदुओके कैंप दूसरी जगह है। मुस्लिम कैंपोमे

इतनी बदबू निकलती है, इतनी गंदगी है, क्यों उसको नहीं साफ करते? अगर मैं उस कैंपका कमांडर हूं तो मैं तो उसे बरदाश्त नहीं करूंगा। मैं तो कैंपोंमें रहा हूं, मैंने कैंप देखे हैं। कैंप ऐसे गंदे नहीं रह सकते। मुझको बड़ा रंज हुआ। इतने सिपाही बने हैं, इतनी मिलिटरी पड़ी है, तो वे इतनी गंदगी क्यों बर्दाश्त करते हैं? वे कहेंगे कि सफाई करना हमारा काम कहां है। हमको तो बंदूक चलानेका हुक्म है। यहां शांति रखनेकी हमारी ड्यूटी है। वे आपसमें लड़ते हैं, तो हम उनको बंदूकसे साफ कर देते हैं। इतना ही हमको हुक्म है, हुक्मके बाहर हम नहीं जा सकते। ठीक है, लेकिन वह हमारी मिलिटरी है हमारे वे सिपाही हैं। मेरी निगाह है कि उनके हाथमें एक कुदाली भी होनी चाहिए। एक फावड़ा भी। कहीं भी गंदगी हो उसे साफ करें। पहिले-पहल उनका काम सफाई होना चाहिए। कैंपको अगर अच्छा रखना है तो हमारे मुस्लिम और हिंदू भाइयोंको खुद वहां सफाई रखनी है। जैसे वे पड़े हैं ऐसे ही पड़े रहें, उन्हें हम कुछ न कहें तो हम उनके दुश्मन बनते हैं। अगर हम उनके दोस्त हैं, उनके सेवक हैं तो हमें उन्हें साफ कहना है कि आप यहां आए हैं, लाचार न बनें। अगर पाकिस्तानसे हिंदू शरणार्थी आ जाय तो क्या उनको कुएंमें डाल दें। क्या यहां रक्खें नहीं और देखभाल न करें। हम उनको ऐसा कहें कि आप दुखी हैं इसलिए आपको झाड़ू नहीं लगानी है, यह चलनेवाला नहीं है। आपको सफाई[1] करनी है। हम आपको खाना भी देंगे, पानी भी देंगे मगर भंगी नहीं देंगे। मैं तो बहुत कठिन हृदयका आदमी हूं।

हरिद्वारमें जब कुंभका मेला था तो मैंने कुदाली चलाई। हमारे पास वहां कैंप 'सैनिटेशन' के सब काम थे। वहांके जो कैंप-कमांडर थे वे चार-पांच आदमियोंकी टोली करके निकल जाते थे और सब काम करते थे और जितनी गंदगी होती थी उसको साफ करते थे। इसके लिए सबको तालीम दी गई थी। तो मैं तो यह कहूंगा कि यहांके जो कैंपके कमांडर हैं, कोई भी हों, मुसलमान हों, हिंदू हों,

---

[1] सफाई।

मुझे परवाह नही है, उनका पहिला काम है अपने कैंपको बिल्कुल साफ रखना। उसमे कोई पैसा तो खर्च नही होता। अगर कैंपके पास फावडे नही है तो हकूमतका काम है कि वह उस चीजको सफाई करनेके लिए दे। अगर नही देती, उसके पास इतने काम पड़े है कि उसमेंसे उसे फुर्सत नही मिलती तो कमाडरको फावडा कहीसे पैदा करना है और लोगोको देना है। जिस तरहसे हकूमतका काम कैंपमे खाना पहुचानेका है, उसी तरहसे सफाईका इतजाम करनेका है। पीनेका पानी है और कपड़े साफ करनेका पानी है, टट्टी-पेशाबका पानी है, चूकि उसकी निकासीका इतजाम नही होता, इसलिए कालरा[1] हो जाता है। कभी कैंप-सैनिटेशन अधूरा रहना ही नही चाहिए। मुझे कहना पड़ेगा कि यह चीज मैंने अग्रेजोके पाससे सीखी। मुझे पता नही था कि कैंप-सैनिटेशन कैसे चलाया जा सकता है। किस तरहसे हजारों-लाखो आदमी रहते है, उनको किस तरहसे काम दे कि जिससे वह सैनिटेशनका काम करे। और जो कुछ उनको काम करनेको दिया जाय वह करे। मिलिटरीवाले यह सब करते है। मिनटोंमे सारा शहर खड़ा हो जाता है। तम्बू, डेरे लग जाते है। कैंपका पहला काम यह है कि पहली पार्टी जो पहुच जाती है, उसको पानी कहा है, यह देख लेना है। किस तरीकेसे पानी इस्तेमाल करे। दूसरी जो पार्टी है उसको ट्रेंचे[2] खोदना है, जिससे पेशाब व पाखाना बाहर न जा सके। जाहिर है, ऐसा करें तो पीछे वहा कालरा नही हो सकता। डिसेन्ट्री[3] नही हो सकती? वे आरामसे रह सकते है। बाकी चीजोको मैं छोड़ देना चाहता हू। यहा तो अधाधुध पड़े है। सब जैसे-तैसे पडे है। कैंपको कोई साफ-सुथरा नही रखता।

मैं किसका गुनाह निकालू। मुस्लिम शरणार्थी कैंपका जो कमाडर है वह मुस्लिम है। वह उनको कह सकता है, उनको समझा सकता है कि उनको यह करना है। उनको समझाकर काम लेना है। उनको कहा जाय कि तुम अगर ऐसे रहोगे तो तुम मर जाओगे। तुम्हारे बच्चे

---

[1] हैजा; [2] खाइयां; [3] पेचिश।

साफ-सुथरे नहीं रह सकते हैं, इससे बेहतर है कि कैंपको साफ रखो। वहां हम सफाई सिखा दें तो बड़ा काम कर सकते हैं। हिंदूके कैंप देखें तो वहां भी मैला पड़ा रहता है और कचड़ा पड़ा रहता है। मगर कुछ फर्क तो है। नंगे पैर जाओ तो मैं तो वहां चल ही नहीं सकता। तालाबमें कुछ पानी ही नहीं था, सूखा पड़ा था। कहांसे पानी निकले उसका इंतजाम नहीं। आखिरमें जानवर तो मुसलमान भी नहीं है, और हिंदू भी नहीं। आज हम जानवर-जैसे बन गए हैं। तो मुझको यह सब बड़ा बुरा लगा। पीछे मेरा खयाल दूसरी चीजकी तरफ चला गया। ऐसे तो हम हैं, लेकिन ऐसे हम क्यों बनें? क्यों पाकिस्तानसे डरके मारे हिंदू भागे, सिख भागे। ठीक है, हिंदूने यहां कुछ बुरा किया। मगर वहां तो नहीं किया। पश्चिमी पंजाबमें हिंदू क्या बुरा करेंगे, सिख क्या करेंगे? उन्हें वहांसे क्यों भागना पड़े? किसीने गुनाह किया है तो उसको सजा करो। यह तो हकूमतका काम है। इसी तरह मैं कहूंगा कि किसीको यहांसे भागना क्यों पड़े? मुसलमान है तो क्या मुसलमान होनेका गुनाह उसने किया है? मुसलमान है तो भी हमारा है, हमारी हकूमतमें पड़ा है। उस मुसलमानको भागना क्यों पड़े? वे शरणार्थी हैं तो खुली बात है कि यह दिल्लीके लिए शर्मकी बात है। जो मुसलमान यहां पड़े हैं वे बाहरसे नहीं आए हैं। लेकिन वे करीब-करीब सब यहां दिल्लीके मोहल्लोंसे आए हैं। थोड़े बाहरसे आए होंगे। दिल्लीमेंसे हमने उनको मारकर भगा दिया है। मैं आपको कहूंगा, कल भी सुनाया था कि यह हमारे लिए तो बड़े शर्मकी बात है। पीछे मेरा विचार चला कि हम दोनों पागल क्यों बनें। पाकिस्तानकी हकूमतकी यह कमजोरी है कि जो वहांके अल्पमत हैं उनको वहांसे भागना पड़ा। वे उनकी रक्षा न कर सके, पाकिस्तानकी हकूमत उनकी रक्षा नहीं कर सकी, इसलिए उनको भागकर यहां आना पड़ा। पाकिस्तानकी हकूमतका फर्ज है कि उनकी मिन्नत करे कि भाई आप कहां जाते हैं, क्यों जाते हैं? आपको कोई हलाक करता है तो हमको बताइए, हम उनको मारेंगे, जेलमें भेजेंगे, सजा करेंगे। लेकिन आपको तो यहां रहना है। आज तो वहां ऐसा बन गया है कि शरीफ आदमी

भी भाग रहे है। लाहौर खाली हो गया है। जिस लाहौरको हिंदुओने बनाया, उस लाहौरमें जहा हिंदुओके बडे-बड़े महलात मैंने देखे, इतनी तालीमकी जगहे देखी। इतने कालेज और कहा है ? मै तो सबको पहिचाननेवाला ठहरा। आज वे कालेज वगैरा किसके कब्जे-मे है ? यह सब बहुत बुरा लगता है और मुझको शर्म आती है कि पाकिस्तानकी हकूमत ऐसे कैसे बन सकती है। पीछे यहा देखता हू तो भी मुझको शर्म आती है कि हमारी हकूमत होते हुए और ऐसा शेर जैसा जवाहरलाल होते हुए ऐसे सरदारजी-जैसे यहा होम मिनिस्टर[1] होते हुए, दिल्ली क्यो बिगड़े और उनकी हकूमत क्यो न चले ? उनका हुक्म निकले कि एक बच्चेको यहा रक्षित खड़ा रहना है तो बच्चेको सुरक्षित रहना चाहिए। तब तो हमारी हकूमत चली। लेकिन आज तो उनके पास मिलिटरी पडी हुई है, पुलिस पड़ी हुई है, उसके मार्फत वे शाति करवा रहे है। लेकिन आखिर हकूमत है किसकी ? आपकी है। आपने बनाई है। वह जमाना चला गया जब अग्रेज फौजसे राज्य करते थे। आज सच्ची हकूमत आप ही है। आपने उनको बडा बनाया, आप उनको छोटा बना सकते है।

मान लो, कि यहा सब मुसलमान बिगड़े है, सबके पास हथियार पडे है, बारूद-गोला पडा है। उनके पास स्टेनगन पडी है, ब्रेनगन पडी है, मशीनगन पडी है। सब मारनेको तैयार है। लेकिन फिर भी आपको हक नही है कि आप उन्हे मारे। हर एक आदमी हकूमत बन जाता है तो किसीकी हकूमत नही रहती। अगर हर एक आदमी अपनी बनाई हुई हकूमतका हुक्म मानता है तो पीछे सब काम हो सकता है। नही तो दुनिया हँसेगी, अरे देखो, तुम्हारी दिल्ली। दूसरी योरुपकी कोई ताकत रूसकी ताकत हो, फ्रास हो, अग्रेज हो, अमरीका हो सब मिलकर हमको चिढा सकते है, आप आज़ादी रखना कहा जानते हो, आप तो गुलाम बनना ही जानते हो। वैसा होना नही चाहिए। इसलिए मै मुसलमानोको कहूगा कि जितने हथियार उनके पास यहा पड़े है वह सब

---

[1] गृह-मंत्री।

हथियार उनको अपने-आप दे देना चाहिए। किसीके डरसे नहीं। लेकिन वे हिंदुस्तानके हैं और हिंदुस्तानमें पड़े हैं और भाई बनकर अगर यहां रहना चाहते हैं तो हथियार दे दें। पीछे वे बतला दें कि हम तो वफादार हैं हिंदुस्तानके हैं और हम कभी बेवफा नहीं हो सकते हैं, हिंदू क्या मुसलमान क्या, सब आपके हैं। मुसलमानोंको यह भी कहना है कि अगर पश्चिमी पंजाबमें, सरहदमें बिलोचिस्तानमें, सिंधमें मुसलमान बिगड़ते हैं और वहां हिंदू और सिख चैनसे और आरामसे नहीं रह पाते हैं तो पीछे हमारे लिए यहां दुश्वारी हो जाती है। आखिर सब इन्सान हैं, इन्सानियतको समझें। हम कहांतक समझाते रहें। इन्सान बिगड़ भी जाता है, अच्छा भी होता है। अच्छे तरीकेसे रह सकता है तो यहां अच्छे तरीकेसे रहे। कोई शख्स ऐसा बिगड़ जाता है कि वह हैवान बन जाता है। तब मैं दिल्लीके हिंदुओंको कहूंगा आप खबरदार रहें, बहादुर बनें, बुजदिल न बनें। मुसलमानोंके हथियारोंसे डरना बुजदिलीका काम है। हमें क्या परवाह है कि मुसलमान यहां हथियार लेकर बैठे हैं। उनसे हथियार लेना हकूमतका काम है। मिनिस्टरोंका काम है उनके पाससे हथियार छीन ले। अगर वे शरीफ बनते हैं, अगर वे हिंदुस्तानके सच्चे हैं और हिंदुओंके पास सब भाई-भाईकी तरह मिलकर रहना चाहते हैं तो हथियार दे दें। और मुसलमान कहें कि हमने गलती की, हम ऐसा समझते थे कि हम दिल्ली सर कर लेंगे और सारे हिंदुस्तानको पाकिस्तान बना लेंगे, लेकिन अब हम समझ गए हैं कि हिंदुस्तानको पाकिस्तान बनाना है तो वह ऐसे नहीं हो सकता। हमारे पास पाकिस्तान तो है उसमें हमें इतमीनान होना चाहिए। हम वहां हिंदुओंको बचा सकते हैं। [illegible] हैं। तब तो यह होगा कि पाकिस्तान और हिंदुस्तान दोनों भले होंगे मुकाबला करने लगेंगे और भलमन्सीमें कौन ज्यादा मुकाबला है इसमें मुकाबला करेंगे। मक्केकी तरफ देखें, या पूरबकी तरफ देखें सच्चाई तो हम लोगोंके दिलमें पड़ी है, सफाई तो दिलमें होनी चाहिए। हम एक-दूसरेका भलाईमें मुकाबला करें तो हम [illegible] होकर काम कर सकते हैं।

मैं यहा आया हू, तो मैंने आपको कह दिया है कि मैं तो यहा मरना चाहूगा। अगर हम दीवाने बनते रहे और गुस्सेमें आ जाए और मुसलमानोको मारे तो वह काम तो मेरा नही है। उसका गवाह मैं नही बनना चाहता हू। मुसलमान मानें कि हिंदू सब गुनहगार है, सिख सब गुनहगार है और हिंदू और सिख कहे कि मुसलमान गुनहगार हैं, तो दोनो गलती करते हैं। मैं तो सबको एक जानता हू। मेरे नजदीक हिंदू हो, मुसलमान हो सब एक दर्जा रखते है। इसमें जो सच्चे है वे ईश्वरको मान्य है। जो बुरे है उनकी बुराई-की सजा आप क्या देनेवाले है? वे अपने आप सजा पानेवाले है। इसमे मुझे कोई शक नही है। सारी दुनियाके धर्मोंका यह मैने निचोड निकाला है। इसलिए मैं कहूगा कि मुसलमान कैसा भी बुरा करें; लेकिन आपको तो भलाई ही करनी है। बुराईका वदला देना है सचमुच तो वह भलाईसे हो सकता है। ऐसा मैं कम-से-कम आपको करते देखना चाहता हू। इतना हम करें तो हिंदुस्तानकी अपनी हकूमतको अच्छा रख सकते है। अगर नही तो हम सब गवा देते है।

## : ८६ :

### सोमवार, १५ सितम्बर १९४७

( लिखित सदेश )

रातमें जब मैंने धीरे-धीरे गिरनेवाले जीवनप्रद पानीकी आवाज सुनी—जो और मौकोंपर जीवनको खुश करनेवाली होती—तो मेरा मन दिल्लीकी खुली छावनियोमे पडे हुए हजारो निराश्रितोकी तरफ दौड गया। मैं चारों तरफसे अपनेको पानीसे बचानेवाले बरामदेमें आरामसे सो रहा था। अगर इन्सान बेरहम बनकर अपने भाईपर जुल्म न करता तो ये हजारों मर्द, औरते और मासूम बच्चे आज बेआसरा और उनमेसे बहुतसे भूखे न रहते। कुछ जगहोंमे तो वे घुटने-घुटने पानीमे ही होगे। इसके सिवा उनके लिए कोई चारा नही।

क्या यह सब अनिवार्य है? मेरे भीतरसे मजबूत आवाज आई—नहीं। क्या यह महीनेभरकी आजादीका पहला फल है? इन पिछले २० घंटोंमें ये ही विचार मुझे लगातार सताते रहे हैं। मेरा मौन मेरे लिए वरदान बन गया है। उसने मुझे अपने दिलको टटोलनेकी प्रेरणा दी है। क्या दिल्लीके नागरिक पागल हो गए हैं? क्या उनमें जरा-सी भी इन्सानियत बाकी नहीं रही है? क्या देशका प्रेम और उसकी आजादी उन्हें बिलकुल अपील नहीं करती? इसका पहला दोष हिंदुओं और सिखोंको देनेके लिए मुझे माफ कर दिया जाय। क्या वे नफरतकी बाढको रोकने लायक इन्सान नहीं बन सकते? मैं दिल्लीके मुसलमानोंसे जोर देकर यह कहूंगा कि वे सारा डर छोड दें, भगवानपर भरोसा करें और अपने सारे हथियार सरकारको सौंप दें। क्योंकि हिंदुओं और सिखोंको यह डर है कि मुसलमानोंके पास हथियार हैं। इसका यह मतलब नहीं कि हिंदुओं और सिखोंके पास कोई हथियार नहीं है। सवाल सिर्फ डिग्रीका है। किसीके पास कम होंगे, किसीके पास ज्यादा। या तो अल्पमतवालोंको न्याय करनेके लिए भगवानपर या उसके पैदा किए हुए इन्सानपर भरोसा रखना होगा, या जिन लोगोंपर वे विश्वास नहीं करते उनसे अपनी हिफाजत करनेके लिए उन्हें अपने बंदूक, पिस्तौल वगैरा हथियारोंपर भरोसा रखना होगा।

मेरी सलाह बिलकुल निश्चित और अचल है। उसकी सचाई जाहिर है। आप अपनी सरकारपर यह भरोसा रखिए कि वह अन्याय करनेवालोंसे हर नागरिककी रक्षा करेगी, फिर उनके पास कितने ही ज्यादा और अच्छे हथियार क्यों न हों। आप अपनी सरकारपर यह भी भरोसा रखिए कि वह अन्यायसे बेदखल किए गए अल्पमतके हर मेंबरके लिए हरजाना मांगेगी और वसूल करेगी। दोनों सरकारें सिर्फ एक ही बात नहीं कर सकतीं। वे मरे हुए लोगोंको जिला नहीं सकतीं। दिल्लीके लोग अपनी करतूतोंसे पाकिस्तान सरकारसे न्याय मांगनेका काम मुश्किल बना देंगे। जो न्याय चाहते हैं, उन्हें न्याय करना भी होगा। उन्हें बेगुनाह और सच्चे होना चाहिए। हिंदू

और सिख सही कदम उठाए और उन मुसलमानोसे लौट आनेको कहे, जिन्हे अपने घरोसे निकाल दिया गया है।

अगर हिंदू और सिख हर तरहसे यह उचित कदम उठानेकी हिम्मत दिखा सके, तो वे निराश्रितोंकी समस्याको एकदम आसान-से-आसान कर देंगे। तब पाकिस्तान ही नही, सारी दुनिया उनके दावोको मजूर करेगी। वे दिल्ली और हिंदुस्तानको बदनामी और बरबादीसे बचा लेगे। मै तो लाखों हिंदुओं, सिखो और मुसलमानोकी आबादीके फेरबदलके बारेमे सोच भी नही सकता। यह गलत चीज है। पाकिस्तानकी. बुराईको हम हिंदुस्तानसे आबादीका फेरबदल न करनेका पक्का और सही इरादा करके ही मिटा सकते है। मेरा खयाल है कि मै आखिरतक हिम्मतके साथ इस बातकी हिमायत करूगा, फिर चाहे मै अकेला ही इसे माननेवाला क्यो न होऊ।

## : ९० :

### १७ सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनो,

कल शामको मेरे अनुभवके बाद मैने यह तय कर लिया है कि जबतक सभाका एक-एक आदमी प्रार्थना करनेके लिए राजी न हो, तबतक आम प्रार्थना न करूगा। मैने कभी कोई चीज किसीपर जबरन नही लादी। तब फिर प्रार्थना-जैसी ऊची आध्यात्मिक या रूहानी चीज तो मै लाद ही कैसे सकता हू ? प्रार्थना करने या न करनेका जवाब दिलके भीतरसे मिलना चाहिए। इसमें मुझे खुश करनेका तो कोई सवाल ही नही उठ सकता। मेरी प्रार्थना-सभाए सचमुच जन-प्रिय बन गई है। मालूम होता है कि उनसे लाखो आदमियोको फायदा पहुचा है। लेकिन इस आपसी खिंचावके समय मै उन लोगोके गुस्सेको समझ सकता हू, जिन्होंने बडी-बडी मुसीबते सही है। मेरी प्रार्थना करनेकी शर्त यही है कि उसका जो भाग किसीको एतराजके लायक मालूम

हो, उसे छोडनेकी मुझसे आशा न रखी जाय। या तो प्रार्थना जैसी है वैसी ही दिलसे स्वीकार की जाय या उसे नामजूर कर दिया जाय। मेरे लिए कुरानकी आयत पढना प्रार्थनाका ऐसा हिस्सा है, जिसे छोडा नही जा सकता।

मै आपके गुस्से और उससे पैदा होनेवाले उतावलेपनको समझनेके लिए तैयार हू। लेकिन अगर आप अपनी आजादीके लायक बनना चाहते है, तो आपको अपना गुस्सा दबाना होगा और न्याय पानेकी भरसक कोशिश करनेके लिए अपनी सरकारपर विश्वास रखना होगा। मै आपके सामने अपना अहिंसाका तरीका नही रख रहा हू, हाला कि मै उसे रखना बहुत पसद करूगा। लेकिन मै जानता हू कि आज मेरी अहिंसाकी बात कोई नही सुनेगा। इसलिए मैने आपको वह रास्ता अपनानेकी बात सुझाई है, जिसे लोकशाही हकूमतवाले सारे देश अपनाते है। लोकशाहीमे हर आदमीको समाजी इच्छा यानी राजकी इच्छाके मुताबिक चलना होता है और उसीके मुताबिक अपनी इच्छाओकी हद बाधनी होती है। स्टेट, लोकशाहीके द्वारा और लोक-शाहीके लिए राज चलाती है। अगर हर आदमी कानून अपने हाथमे ले ले, तो स्टेट नही रह जायगी। वह अराजकता हो जायगी, यानी समाजी नियम या स्टेटकी हस्ती मिट जायगी। यह आजादीको मिटा देनेका रास्ता है। इसलिए आपको अपने गुस्सेपर काबू पाना चाहिए और राजको न्याय पानेका मौका देना चाहिए। मेरी रायमें अगर आप सरकारको अपना काम करने देंगे, तो इसमें कोई शक नही कि हर हिंदू और सिख निराश्रित शान और इज्जतके साथ अपने घरको लौट जायगा। मै यह कबूल करता हू कि आप लोगोको पाकिस्तानमें बहुत कुछ सहना पडा है, कई घर उजाड और बरबाद हो गए है, सैकडो-हजारो जाने गई है, लडकिया भगाई गई है, जबरन लोगोंका धर्म बदला गया है। लेकिन आप अपनेपर काबू रखे और अपनी बुद्धिपर गुस्सेको हावी न होने दे, तो लडकिया लौटा दी जायगी, जबरदस्तीके धर्म-परिवर्तनको झूठ करार दिया जायगा, और आपकी जमीन-जायदाद भी आपको लौटा दी जायगी। लेकिन अगर आप-

शांतिसे न्याय पानेके काममें दखल देंगे और अपना मामला बिगाड़ लेंगे तो यह सब नही हो सकेगा। अगर आप यह आशा करते हों कि आपके मुसलमान भाई-बहनोको हिंदुस्तानसे निकाल देना चाहिए, तो आप इन सब चीजोके होनेकी आशा नही रख सकते। मैं तो ऐसी किसी बातको बहुत भयानक समझता हू। आप मुसलमानोके साथ अन्याय करके न्याय नही पा सकते। इसके अलावा, अगर यह सच है कि पाकिस्तानमें अल्पमतवालों यानी हिंदुओ और सिखोके साथ बहुत बुरा बरताव किया गया, तो यह भी सच है कि पूर्वी पजाबमे भी अल्पमतवालो यानी मुसलमानोके साथ बुरा बरताव किया गया है। अपराधको सोनेकी तराजूमे नही तोला जा सकता। दोनो तरफके अपराधको मापनेका मेरे पास कोई सबूत नही है। यह जान लेना सचमुच काफी होगा कि दोनो पार्टिया दोषी है। दोनो राज्योके लिए ठीक-ठीक समझौता करनेका आम रास्ता यह है कि दोनो पार्टिया साफ दिलसे अपना पूरा-पूरा दोष स्वीकार करे और समझौता कर ले। अगर दोनोमें कोई समझौता न हो सके, तो सामान्य तरीकेसे पच-फैसलेका सहारा लें। इससे दूसरा जगली रास्ता और है लड़ाईका, मुझे तो लड़ाई-के विचारसे ही नफरत होती है। लेकिन आपसी समझौते या पच-फैसले-के अभावमें लड़ाईके सिवा कोई चारा नही रह जायगा। फिर भी इस बीच मुझे आशा है कि लोग अपना पागलपन छोड़कर समझदार बनेंगे और जिन मुसलमानोंने अपनी इच्छासे पाकिस्तान जानेका चुनाव नही किया है, उन्हें उनके पड़ोसी सुरक्षा या सलामतीसे पक्के विश्वासके साथ अपने घरोको लौट आनेके लिए कहेंगे। यह काम फौजकी मददसे नहीं किया जा सकता। यह तो लोगोके समझदार बननेसे ही हो सकता है। मैंने अपना आखिरी फैसला कर लिया है कि मैं भाई-भाईकी लड़ाईमें हिंदुस्तानकी बरबादीको देखनेके लिए जिंदा नही रहना चाहता। मैं लगातार भगवानसे प्रार्थना किया करता हूं कि हमारी इस पवित्र और सुदर धरतीपर इस तरहका कोई सकट आए उसके पहले ही वह मुझे यहासे उठा लें। आप सब इस प्रार्थनामे मेरा साथ दे।

मैं हिंदू और मुसलमान मजदूरोको एक साथ मिल-जुलकर काम

करनेके लिए धन्यवाद देता हू। अगर आप पूरे एकेसे काम करेंगे, तो देशके सामने एक उम्दा मिसाल रखेंगे। मजदूरोको अपने बीच साम्प्रदायिकताको कोई जगह नही देनी चाहिए। क्या मैंने यह नही कहा है कि अगर आप अपनी ताकतको पहचान ले और समझदारीके साथ रचनात्मक कामोमे उसे लगाए, तो आप सच्चे मालिक और शासक बन जाएगे और आपको रोजी देनेवाले आपके ट्रस्टी और मुसीबतोंमें साथ देनेवाले दोस्त बन जाएगे। यह सुखकी घडी तभी आएगी, जब वे यह जान लेंगे कि सोने और चादीकी पूजीके बनिस्बत, जिसे मजदूर जमीनके भीतरसे निकालते है, मजदूर ही ज्यादा सच्ची पूजी है।

## : ६१ :

### १८ सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनो,

आज हम सब दीवाने बन गए है, मूरख बन गए है, ऐसा नही है कि सिख ही दीवाने बने, हिंदू ही या मुसलमान ही दीवाने बन गए है। मुझसे कहा जाता है कि सारा आरभ तो मुसलमानोने किया। वह ठीक है, मै तो मानता हू कि उन्होने आरभ किया, इसमे कोई शक नही है। लेकिन वह याद करके मै करूगा क्या? आज क्या करना है, मुझको तो वह देखना है। हिंदुस्तानरूपी गजराजको हो सके तो छुडाना चाहता हू। मुझको क्या करना चाहिए? मुझको तो ईश्वरका सहारा लेना चाहिए। मेरा पराक्रम कुछ कर सके तो मुझको खुशी है। पर मेरा शरीर तो थोडी हड्डी है, थोडी चर्बी। ऐसा आदमी क्या कर सकता है? किसको समझा सकता है? लेकिन ईश्वर सब कुछ कर सकता है। तो मै रात-दिन ईश्वरको पकडता हू। हे भगवान, तू अब आ, गजराज डूब रहा है। हिंदुस्तान डूब रहा है, उसे बचा।

हिंदुस्तानमे सिवा हिंदूके कोई रहे ही नही, मुसलमान रहें तो गुलाम होकर रहें तो ऐसी बात तो नही है। आप देखें तो जवाहरलाल क्या

कहता हूं। हम तो तगीमे पड़े हैं। दूसरे जो काम करने हैं उन्हे नही कर सकते। इसी एक काममे पड़े है। अगर मान लें कि सब मुसलमान गदे हैं, पाकिस्तानमे सब बिगड़ गए है तो उससे हमको क्या? पाकिस्तानमे सब गदे हैं तो क्या हुआ? मै तो आपको कहूगा कि हम तो हिंदुस्तानको समुदर ही रखे जिससे सारी गदगी बह जाय। हमारा यह काम नही हो सकता कि कोई गदा करे तो हम भी गदा करें। तो आज मै दरियागंज चला गया। मेरे पास मुसलमान भाई भी आते हैं। उनसे बाते करता हू, मोहब्बत करता हू और उनको कहता हू कि आप क्यों डरते है। आप तगडे बन जाय। आप क्यों घर-बार छोड़ते हैं। आप जाकर बैठिए अपने घरमे। यहां वे तो शरारत नही कर सकते। इसलिए मैं चाहता हू कि सब हिंदू भले हो जाय। सब सिख भले बन जाय। जो मुसलमान पड़े हैं और जो पाकिस्तान नही जाना चाहते है उनसे सिख और हिंदू कहे कि आप अपने घरमे जाकर बैठो। यहा तो दुनियामे सबसे बड़ी मस्जिद, जुमा मस्जिद पडी है। हम बहुतसे मुसलमानोंको मार डालें और जो बाकी बचें वे भयके मारे पाकिस्तान चले जाय, तो फिर मस्जिदका क्या होगा? आप मस्जिदको क्या पाकिस्तानमे भेजोगे, या मस्जिदको ढाह दोगे या मस्जिदका शिवालय बनाओगे? मान लो कि कोई हिंदू ऐसा गुमान भी करे कि शिवालय बनाएगे, सिख ऐसा समझे कि हम तो वहा गुरुद्वारा बनाएगे। मै तो कहूगा कि वह सिख-धर्म और हिंदू-धर्मको दफनानेकी कोशिश करनी है। इस तरह तो धर्म बन नही सकता है।

पाकिस्तानमें जानेवाले जो जाना चाहते है वे यहासे चले जायं। मगर जो हिंदुओंके डरके मारे चले गए, पुराने किलेमे हैं, हुमायूंके मकबरेमें हैं, वे क्यों वहा रहें? मैंने तो उनको कहा है कि जो अपने घरोंमें है वे वही पडे रहें और पीछे हिंदू मारें-पीटें, काट डालें तो भी न हटे। मै आपके पीछे कट जाऊगा। मेरी जान है, वह जान मै फिदा कर दूगा। या तो करूगा या मरूगा। उनको कुछ हौसला आया और उन्होंने कहा कि हम यही मरेंगे, घर है वहासे हटेंगे नही। मेरा खयाल

है कोई मुसलमान वहासे हटेगा नही। अपने घरोंमें पडे है, सदियोसे यहा है। उनको आज हम निकाल दे? लेकिन वह नही हो सकता। जो यहासे चले गए है उनका क्या करे? मैंने कहा कि उनको हम अभी नही लाएगें। पुलिसके मार्फत, मिलिटरीके मार्फत थोडे ही लाना है? जब हिंदू और सिख उन्हे कहें कि आप तो हमारे दोस्त है आप आइए अपने घरमें, आपके लिए कोई मिलिटरी नही चाहिए, कोई पुलिस नही चाहिए, हम आपकी मिलिटरी है, पुलिस है, हम सब भाई-भाई होकर रहेंगे तब उन्हे लावेंगे। हमने दिल्लीमें ऐसा कर बतलाया, तो मै आपको कहता हू कि पाकिस्तानमें हमारा रास्ता बिल्कुल साफ हो जायगा। और एक नया जीवन पैदा हो जायगा। पाकिस्तानमें जाकर मैं उनको नही छोडूगा। वहाके हिंदू और सिखोके लिए जाकर मरूगा। मुझे तो अच्छा लगे कि मैं वहा मरु। मुझे तो यहा भी मरना अच्छा लगे, अगर यहा जो मैं कहता हू नही हो सकता है तो मुझे मरना है। मुझको भी गुस्सा आता है, लेकिन इन्सान तो ऐसा होना चाहिए कि गुस्सेको पी जाय। मैंने सुना कि काफी औरते जो अपनी शर्मको गवाना नही चाहती थी मर गई। काफी मर्दोंने खुद अपनी औरतोको मार डाला। मुझे तो यह बडा अच्छा लगता है। क्योकि मैं समझता हू कि वे हिंदुस्तानको बुजदिल नही बनाते है। आखिर मरना-जीना यह तो थोडे दिनोका खेल है। गया तो गया, लेकिन बहादुरीसे गया। अपनी शर्म नही बेच डाली। यह नही था कि उनको जान प्यारी न थी, लेकिन उनको मुसलमान जबर्दस्ती इस्लाममें लाए और उनकी मिट्टी ख्वार करे, उससे बेहतर था बहादुरीसे मर जाना। औरते मर गई, दो-चार नही, काफी औरतें मरी। यह सब सुनता हू। मेरी तो आख खुशीसे नाचना शुरु कर देती है कि ऐसी बहादुर औरते हिंदुस्तानमे पडी है। लेकिन जो लोग भागे है वे लोग कहा जाय? उनको वापस जाना है और शानके साथ। हम अपने यहा तो न्याय ही करे। अपना दामन शुद्ध रक्खें और अपने हाथ शुद्ध रक्खें, तब हम सारी दुनियाके सामने न्याय माग सकते है। मैंने कह दिया है कि जो मुसलमान हथियार रखते है, उन मुसलमानोको हथि-

यार छोड देना चाहिए। परसो जैसा मैंने कहा है, सब लोग हथियारोंको दे दें। मैं समझता हू कि उसमे कुछ देर लगेगी, लेकिन बात चल गई है हथियार तो छोडना ही है। हथियारसे बच नही सकते।

दूसरी, मेरे पास बडी शिकायत आती है जो हमारे सिपाही लोग, मिलिटरीवाले है, हिंदू है, सिख भी है, उसमे क्रिस्टी भी पडे है, गोरखे पड़े है, वे सब रक्षक है पर भक्षक बन गए है। यह कहातक सच है और कहातक झूठ है, मैं नही जानता हू। लेकिन मैं अपनी आवाज उन पुलिसवालोतक पहुचाना चाहता हू कि आप शरीफ बने। कही तो ऐसा सुना है कि वे खुद लूट लेते है। मुझको आज सुनाया गया कि कनाट-प्लेसमे कुछ हो गया और वहा जो सिपाही और पुलिसके लोग थे उन्होने लूटना शुरू कर दिया। मुमकिन है कि वह सब गलत हो। लेकिन उसमे कुछ भी सच्चाई हो तो मैं सिपाही और मिलिटरीसे कहूगा कि अग्रेजका जमाना चला गया। तब जो कुछ करना चाहते थे वे कर सकते थे, लेकिन आज तो वे हिंदुस्तानके सिपाही बन गए है, उन्हे मुसलमानका दुश्मन नही बनना है, उनको तो हुक्म मिले कि उसकी रक्षा करो तो वह करनी ही चाहिए।

## : ६२ :

### १९ सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनो,

मुझे एक पर्चा मिला है। यह पहले सरदारके पास पहुचा, पीछे मेरे पास। उसमे कहते है, जबतक हम मुसलमानोके बीच पड़े है, आरामसे रहनेवाले नही। पाकिस्तानसे हिंदुओंको भागना पडा। कूचा ताराचदमे उनके चारों तरफ मुसलमान है, उन्हें डर रहता है कि मुसलमान कुछ गोलाबारी करे तो? वे कहते है, अच्छा होगा कि सब मुसलमान यहासे चले जावे। काफी तो चले गए है, पर काफी अभी यहा पडे है। मैंने आपको सुनाया कि कल मैं गया था तो उससे उल्टी

बात मै मुसलमानोको कहकर आया। सो, जो लोग यहा पडे है उनकी जानका सवाल नही उठता। जो चले गए है उनको भी मै तो यही कह सकता हू कि आप आ जाय। जबरदस्तीसे लानेकी बात नही। जब हम पचायतका राज्य चलाते है तो जबरदस्तीसे थोडे ही चला सकते है। लोगोको समझाए, लोगोको तालीम दे। ऐसे हम क्यों डरें? जिन मुसलमानोके साथ इतने बरसोंसे रहे है वे ही मुसलमान आज ऐसे बिगड गए है कि उन्हे रखा नही जा सकता? बिगड भी सकते है, मै यह नही कह सकता कि वे नही बिगड सकते। लेकिन जो अच्छे थे वे बिगडे तो पीछे वे अच्छे भी हो सकते है। हम अगर अच्छे होते है और अच्छे होना ही काफी नही, बहादुर भी होना चाहिए और इसके साथ ज्ञान भी होना चाहिए, तो हमारे सपर्कमे जो बुरे आदमी आ जाते है वे भी भले हो जाते है। यह मेरा न्याय नही है, यह दुनियाका न्याय है। मै अपनी बात आपसे नही कहता हू। तो मैने जो कल बताया था आज भी वही कहूगा कि मै बचपनसे ऐसा ही सीखा हू। अब मै नया सबक नही ले सकूगा। और मुझे अब जीना कितना है? मैने कहा, आप मुझे यह सुनाते तो है, लेकिन उसे मै बर्दाश्त नही कर सकता हू। बर्दाश्त नही करूगा तो किसीको मारूगा, ऐसा नही। मै मर जाऊगा, ऐसा हो सकता है। इत्तफाकसे मेरे हाथमें एक दूसरा पर्चा आ गया। वह भी रास्तेमे किसीने दिया। जो पर्चा रास्तेमें मिले वह मै मोटरमे पढ लेनेकी कोशिश करता हू। उस पर्चेमे लिखते है, पश्चिमी पजाबमें इतना अत्याचार हो गया, अभी भी तुम क्यो नही समझते हो। उसके साथ एक और पर्चा है, जिसमें न नाम है न दस्तखत। उसमें लीगवालोंसे कुछ कहा है, गदी बातें भरी है। वैसे लीगवाले करें तो पीछे पाकिस्तानका क्या होगा और हिंदुस्तानका क्या होगा, उसका पता ही नही चल सकता। तो क्या हम भी गदे बने? यह मेरी नजरमे न्याय नही।

वहा इर्द-गिर्दमें मुसलमान रहते है। कुछ मुस्लिम कार्यकर्ताओने वही रहना पसद किया। मुसलमानोके वे सेवक है। कोई मार डाले तो भले मार डाले, वे बहादुर है सो रहते है। मेरे पास चले आए।

काफी मुसलमान पडे है। उनका कहना है कि बहुत लोग घर छोड चुके है। लेकिन मैने देखा, काफी मुसलमान तो भी वहा थे, हिंदू थोडे ही थे। जितने हिंदू भाई वहा भागे है उनको मैंने सुनाया कि मैं तो बचपनसे ऐसा ही सीखा हू। पॉलिटिक्स[1] मे दाखिल हुआ उससे पहलेसे मानता आया हू कि मुसलमान, हिंदू सबको मिल-जुलकर रहना है। ऐसे ही हिंदुस्तान बना है, ऐसे हिंदुस्तान रहना चाहिए। तो जो आदमी बारह बरसकी उमरसे वही काम करता आया है, तो आज उसकी जबानसे दूसरी चीज नही निकल सकती। मुझको तो यह पसद होगा, कि कोई अपनी जगहसे हटे नही, वही मर जावे। यही मै मुसलमानोसे कहता हू और यही हिंदुओंको कहता हू।

हिंदू कहते है मुसलमानोंके पास इतने हथियार पड़े है, वे निकलें तो हम समझें, नही तो हम कैसे मानें कि वे पीछे हमला न करेंगे। मै कहूगा कि उसमे हम न पड़ें, वह हकूमतका काम है। किसीके पास परवाना नही है, लाइसेन्स नही है तो उसके पास हथियार नही रख सकते है, भले ही वे लोग अपनी रक्षाके लिए हथियार रखते हों। रखना है तो लाइसेन्स ले लो। लेकिन हथियारसे रक्षा क्या करनी थी, पांच मुसलमान है, पाच सौ हिंदू और सिख, उनका मुकाबला क्या? वे पडे रहें। भले ही हिंदू, सिख उन्हे काट डालें। जो पांच ऐसे कट जायगे, बिना हथियार ईश्वरका नाम लेते चले जायगे, वे बड़े बहादुर है। वे कहते है, आप हमारे भाई है, मारना है तो मार डालें। यही मेरी सलाह सबके लिए है। आज मेरे पास काफी हिंदू पाकिस्तानके आ गए और सबने अपना दु.ख मुझको सुनाया। कई हँसकर सुनाते थे, कई बहनोंने रो दिया। मैंने उन्हे सुनाया, आपकी मार्फत सबको सुना देना चाहता हू कि हम बुजदिल न बनें। पाकिस्तानमे मुसलमानोंने अत्याचार किया। इसलिए हम यहाके मुसलमानोसे न डरें, न उन्हे डरावें। ऐसे ही मुसलमान पडे है जो पाकिस्तानमे रह ही नही सकते।

तो जो पर्चा मुझे मिला है, उसमें लिखा है कि अब तो पाकिस्तानमे

---

[1] राजनीति।

उनके रहते हुए हिंदुस्तान बेहाल न हो। यह मै देखना नही चाहता हू। देखना चाहता हू तो यह कि खराबीको साफ करनेमे हम सब मर जाय।

## : ९३ :

२० सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनो,

आप ईश्वरका भजन करे और उसीका भरोसा करे। यह सबकी समझमें नही आता। वे कहते है कि ईश्वर कहा पड़ा है? ईश्वर रहे तो इतने झमटमे हम क्यो पडे? अगर मुसलमान अह-मतमें[1] पड़ जाते हैं तो वे कहें ईश्वर कहा है, अल्लाह कहा है, खुदा कहा है, कुरान शरीफ कहां है। बहुत लोग कहते है, लेकिन वे सब गलती करते हैं। खुदा है, अल्लाह है, ईश्वर है, राम है, उसे याद करनेके लिए ऐसे मौके है। वह हमको मदद देता ही है। वह हमें थोडे पूछनेवाला है कि हम उसको पहिचानते है या नही। वह हमारे हाथोमें नही आता, उसे आखोसे नही देख सकते है, कानोसे नही सुन सकते है, इसलिए वे कहते है कि इद्रियोसे बाहर पडा है। ऐसी एक वह हस्ती है, दूसरे सब नास्ति है। हम सब नास्ति है। हम कहे जब हम जिदा रहते है तो नास्ति कैसे हो सकते है? आज-तक तो मै जिदा रहा, लेकिन कलके लिए मुझे कोई नही बता सकता कि रहूगा या नही। ऐसे ही, कल-कल करके ७८ वर्ष निकाल दिए। और भी शायद दो-चार दिन निकाल दू या वर्ष निकाल दू। लेकिन हम क्या जाने, मै कैसे कह सकता हू कि कोई आदमी अभी जिदा है तो वह एक मिनट बाद भी जिदा रहेगा या नही। कोई नही कह सकता। इसलिए मै कहता हू कि हम तो नास्ति है, जिसका कोई ठिकाना नही है। हमेशाके लिए नही रह सकते।

---

[1] मुसीबत।

'अस्ति' वह तो एक ही हो सकता है। हस्ती शब्द अस्तिसे निकला है। अस्तिके माने, है 'आदि है, अनादि है, और आयदा रहेगा। ऐसा हमेशा रहनेवाला अस्ति है, जिसने हमको बनाया है और जो हमको बिगाड सकता है, यहासे उठा सकता है। मेरे नजदीक तो वह बिगाडता नही, हमको बनाता ही है। इसलिए अगर आज हम मानें कि वह नही मिल सकता, और बिगडे तो वह मूर्खता होगी। लेकिन वह तो है और सब कुछ कर सकता है। वह रहीम है और उसके लिए सब एक है। वह किसीका बिगाडेगा नही, न किसीको मारेगा, न किसीको गाली देगा। वही उसका कानून है।

मुसलमान भी मेरे पास आ जाते हैं। वे यहाकी बात सुनाते है कि हम दिल्लीमें अभीतक रहे हैं लेकिन अब तो हम रह नहीं पा रहे और भाग रहे हैं। तो मै उनको कहता हू कि जब तक मै जिंदा पडा हू तबतक आपको यही रहना चाहिए, खिलाफतके जमानेमे हिंदू, मुसलमान, सिख सब साथ-साथ पडे थे। मैं तो गुरुद्वारेमें गया हू और मुसलमान भी मेरे साथ आए है। ननकाना साहबका जो बडा किस्सा बन गया, उस वक्त मौलाना साहब थे, अलीभाई थे और मैं था। सब ऐसा मानते थे कि सिख हो, मुसलमान हो, हिंदू हो, वे तीनो एक है। जलियावाला बागमें क्या हुआ? सब पुकार-पुकारकर और चीख-चीखकर कहते थे कि यहा तो सबका खून मिल गया। क्योंकि उसमें सब थे। हिंदू थे, मुसलमान थे और सिख थे, सबका खून मिला। उस वक्त तो बडे जोरसे कहते थे कि अब तो हमारा खून एक हो गया। उसको कौन जुदा कर सकता है? तो आज फिर वह जुदा बन गया? मुसलमान कहता है कि सिख है वह तो हमारे साथ मिल नही सकता है। सिख कहते है कि मुसलमानोके साथ क्या मिलना था। क्या गुनाह किया है एक-दूसरेका, जो एक-दूसरेके दुश्मन बन गए। तो मैं तो हैरान हो जाता हू। मैं पडा हू, जिंदा रहता हू, तो मैं तो तीनोका खून आज भी एक है, वही मानकर। हो सकता है तो उसे सिद्ध करनेके लिए। ऐसा चीखते-चीखते, ईश्वरके पास रोते-रोते। इन्सानके पास तो मैं रोता नही हू, लेकिन ईश्वरके पास तो रो सकता हू,

उसकी मिन्नत कर सकता हू; क्योंकि उसका तो गुलाम मैं हू। सबको उसका गुलाम बनना चाहिए। पीछे किसी इन्सानको किसीके गुलाम रहनेकी आवश्यकता नही रहती। कहता हू कि अगर मैं ऐसा कर सकू तो जिंदा रहना चाहता हू, नही तो ईश्वर मुझको यहासे उठा लें।

मेरा सिर शर्मसे झुक जाता है और मैं शर्मिंदा बन जाता हू कि वही हिंदू, वही सिख, वही मुसलमान जो कलतक एक दूसरेको भाई-भाई कहते थे आज एक दूसरेके दुश्मन हो गए है। कोई तो समझे कि वह हमारे दुश्मन नही हो सकते। चार-पाच भाई आए, उन्होंने मुझे कहा कि यहा जो सारे साढे चार करोड मुसलमान पडे है वे ऐन मौकेपर बागी हो जायगे। वे तो आखिर मुसलमान है, पाकिस्तानमे भी मुसलमान है। मानो कि हिंदुस्तान और पाकिस्तानमे लडाई हो गई या कुछ और ऐसा हो गया तो क्या वे पाकिस्तानको खुफिया तौरसे मदद नही देंगे? तो मैंने उनसे कहा कि माना कि कोई दें, मगर सब-के-सब तो ऐसा कर नही सकते। मैं आपको कहना चाहता हू कि साढे चार करोड़ मुसलमान ऐसे बन नही सकते है। मैंने उन भाइयोको कहा कि अगर आप शरीफ रहे, हम शरीफ रहे, जितने यहा अक्सरियतमें[1] हिंदू पडे है, सिख पडे है वे सब शरीफ बने, वे अगर किसी मुसलमानकी दुश्मनी नही करते है तो मैं जोरोसे कहूगा कि साढे चार करोड मुसलमानोमेंसे एक भी बेवफा नही बन सकता है। हमको बहादुर बनना चाहिए। अक्सरियतमें होते हुए हम बुजदिल न बनें। साढे चार करोड़ मुसलमान हिंदुस्तानमें है मगर सब तो ४० करोड है। वे ऐसे बुजदिल बने कि साढे चार करोड़ मुसलमानोसे डरे? मैं कहता हू कि साढे चार करोड़ अगर हिंदुस्तानके बेवफा बनते है तो वे इस्लामसे बेवफाईका काम करेंगे और इस्लामको खत्म कर देंगे। लेकिन अगर हम भी ऐसे ही बने, बुजदिल बनें, दगाबाज बने और उनका भरोसा बिल्कुल न करे और यहां एक भी मुसलमानको न रहने दें तो मैं आपको कहता हू कि

---

[1] बहुसंख्यक।

हिंदुस्तानमें हिंदू अकेला तो कुछ खा नही सकेगा। उनका रोटी खाना पीछे जहर-सा हो जायगा।

हिंदुस्तानके बाहर कोई भी मुसलमान या दूसरी सल्तनत हो, या तो पाकिस्तानमे जो मुसलमान है वे हिंदुस्तानपर हमला करते है तो मै आपको कहता हू कि साढे चार करोड मुसलमान जो यहा पडे है उनको हिंदुस्तानकी वफादारी करनी है। अगर नही करते है तो उनको शूट करो, यह तो कानूनमें पडा है। मेरा कानून तो दूसरा है, जो मैंने बतला दिया। लेकिन उसको कौन मानेगा? लेकिन जो दुनियाका कानून बना है, उसमें तो जो ट्रेटर[1] होता है, फिफ्थ कॉलमिन्ट[2] होता है—जिस मुल्कमें रहता है अगर उस मुल्कको डुबोनेका काम करता है, तो वह ट्रेटर[1] है, वह बेवफा है। उसके लिए एक ही सजा है कि उसको मार डालो। मै कहता हू कि आखिर इतनी बडी सल्तनत पडी है, साढे चार करोड मुसलमान सब-के-सब तो बेवफा हो नही सकते। साढे चार करोड मुसलमानोको किसने देखा है? वे तो ७ लाख देहातोंमें पडे रहते है, थोडे शहरोंमे पडे है। यू० पी० में पडे है, बिहारमें पडे है, सब देहातोमें फैले हुए है। मै तो देहातोमे रहा हू और उन सबको जानता हू। वे कभी बेवफा नही हो सकते है। सेवाग्राममे भी मुसलमान पडे है। वे सेवाग्राममें काम करते है। वे सेवाग्रामके लिए वफादार रहेंगे, उसके लिए मर जायगे। वे क्या जाने कि दूसरी जगह मुसलमान क्या करते है। वे तो सेवाग्राममे रहते है, वे सेवाग्रामके आश्रमकी रक्षा करते है और सबको भाई-भाई समझकर रहते है। कोई कहे कि सारे-के-सारे साढे चार करोड मुसलमान जो यहाके रहनेवाले है बेवफा हो सकते है, तो वह नही होनेवाला। और बेवफासे हम क्यो डरें? मै तो नही डरता हू। अगर वे हिंदुस्तानमें पड़े है और बेवफाई करते है तो मै कहूगा कि उनको मरना है और इस्लामको मार डालना है।

सच्चे काफिर तो वे है जो हमारी रोटी खाए, हमारे यहा नौकर बनें, लेकिन काम हमारे दुश्मन बनकर करें और हमारा गला काटें।

---

[1] देशद्रोही [2] पंचमांगी।

ऐसे हिंदू भी बने हैं, सिख भी बने हैं, मुसलमान भी बने हैं। दुनियामें हर किस्मके लोग रहते है, लेकिन ऐसा समझना कि साढे चार करोड़ मुसलमान जो यहा पडे है इस तरहसे दगाबाज बनेंगे हमारी बुजदिली है, और इससे यह पता चलता है कि हम सच्चे हिंदू नही है, हम सच्चे सिख नही हैं। हमारी शराफत, जितने अफसर पडे है उनकी शराफत, हिंदू है, सिख है उन सबकी शराफत और बहादुरी इसीमे पडी हैं कि कहे कि तुमको जाना ही नही चाहिए। उनकी मिन्नत करना चाहिए कि आपको कोई छू नही सकता। छोडिए, हमने काफी बुरा काम किया है, पर आगे नही करनेवाले। क्यो जाते हो, पाकिस्तान पहुचोगे तो वहा क्या होगा और वहा जाकर क्या करोगे, उसका क्या पता है? यहा तो तुम्हारा घर पडा है, सब कुछ है। ऐसी मोहब्बतसे हम उनको रक्खें तो सरहदी सूबेमे, डेराइस्माइल खा वहाके जो मुसलमान अफ्रीदी लोग हैं वे भी हमारे लोगोंको कहेंगे कि आपको भागना नही है। यह शराफतका असर है। अगर हम दिल्लीमें शाति कायम रक्खे, डरके मारे नही या गाधी कहता है इसलिए नही, लेकिन अगर सच्चे दिलसे आप इस तरह चले तो मैं आपको कौल दे सकता हू कि कोई मुसलमान आपको ईजा[1] नही कर सकता है, और अगर करेगा तो ईश्वर तो पडा है। वह सर्वशक्तिमान है, सबको पूछनेवाला है, वह हमारी रक्षा करेगा, इसमे मेरे दिलमें कोई शका नही है।

## : ६४ :

### २१ सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनो,

जिस तरहसे आज हिंदू, सिख और मुसलमान रह रहे है इस तरीकेसे नही रह सकते हैं। मुझको यह बडा बुरा लगता है और एक

---

[1] पीड़ित।

इन्सान जितनी कोशिश कर सकता है उतनी मैं इस चीजको हटानेकी करूंगा। आपको मैं कह दू कि मुझको दिलमें खुशी नही हो सकती है कि मै जिंदा रहू और जो मै चाहता हूं वह न कर सकू। ईश्वर मेरे पाससे वह काम लेता है, तब तो भला है, अच्छा है, लेकिन अगर ऐसा नही होता तो मैं समझता हू कि मेरा काम खत्म हो गया। मैं कोई आत्महत्या करके मरना चाहता हू ऐसा नही। यह सही है कि जो अपने जीवनको दूसरोकी ही सेवामे काटना चाहते है उनके लिए दूसरी परीक्षा नही हो सकती है। जो वे करते है उसमेंसे कुछ भी फल नही निकले उसके लिए वे हैरान न हो। लेकिन जब फल नही मिलता है तो जिस तरहसे एक वृक्ष, जिसमे फल नही आते और वह सूख जाता है, उसी तरहसे मनुष्य भी एक वृक्ष-जैसा है, उसको सूख जाना चाहिए, और वह सूख जाता है, यह सृष्टिका नियम है। हिंदू-धर्मके मुताबिक आत्मा तो अमर है; वह मरती नही, एक शरीर जो निकम्मा हो गया है और उसकी कोई उपयोगिता नही है, उसको तो खत्म होना चाहिए। उसकी जगह नया आ जाता है। परतु आत्मा अमर होती है और सेवाके द्वारा अपनी मुक्तिके लिए नए-नए चोले धारण करती है।

तो आज मैं चला गया जहा एक ओर बहुतसे हिंदू और दूसरी ओर बहुतसे मुसलमान एक साथ पड़े थे। उन्होने कहा—'महात्मा गाधी जिंदाबाद'। उसके क्या मानी? हिंदू भी वैसे कहें, वह भी क्या मानी रखता है, अगर दोनोके दिल अलग-अलग है और वे एक-दूसरेके साथ शातिसे नही रह सकते। तो मुझको वह जयघोष कठोर-सा लगा। मैंने उन मुसलमानोसे कहा कि आप लोगोंको घबराहट क्या करनी थी? आखिरमें मरना है तो मर जायगे। मरेंगे अपने भाइयोंके हाथमे, दूसरेके हाथसे मरनेवाले नही है। आप उनपर रोष भी न करे, उनको मारनेकी चेष्टा भी न करें, खुद मर जाय, लेकिन वहासे आप डरके मारे न भागें और न वहासे हटें। मैं तो उसपर कायम हू। लेकिन एक बात मैंने यहा सुनी कि वह महात्मा कैसा बुरा आदमी है? वह ऐसा कर रहा है कि हमने जिन मुसल-मानोको उनके घरोमेंसे हटा दिया, उनको उन्ही घरोमे फिर वापिस

लाना चाहता हूं। बात सच्ची है, मैं उनको वापिस लाना चाहता हूं, लेकिन किस तरहसे लाना चाहता हू ? मैंने तो उनको कहा, और आज भी उनको कहकर आया हू कि जो डरसे भागे हैं उन्हे वापिस लाना चाहता हू। जो खुशीसे अपने आप पाकिस्तान जाना चाहते हैं, उनको तो जानेमे कोई रुकावट नही होनी चाहिए। लेकिन डरके मारे, दुखके मारे और हकूमत आपकी रक्षा नही कर सकती है, हिंदू, सिख, तो रक्षा करते ही नही है, ऐसा समझकर आप जाना चाहते है तो मुझको बडा दु.ख होगा। जो लोग पाकिस्तान नही जाना चाहते है और यही रहना चाहते है मै कहूगा उनको कि तुम्हे यहासे नही जाना है। मैंने उनको कहा कि जो लोग बाहर चले गए है वे तो तभी आ सकते हैं, और तब ही आना चाहिए जब यहाके हिंदू और सिख खुशीसे कहें कि आप आइए। पुलिस और मिलिटरी—उनके जरिएसे उन्हे लाना मुझको तो अच्छा भी नही लगता। मैं तो कहता हू कि यह सब छोड़ दें। पुलिस नही चाहिए, मिलिटरी नही चाहिए। जो कुछ हमें करना है, हम कर लेंगें। मरना है तो मर जायगे। अगर कोई किसीको मारता नही है तो वह मरता नही है। लेकिन अगर एक मारता है, दीवाना बन गया है तो उसके सामने मैं क्यो दीवाना बनू ? मैं तो उसके हाथसे मर जाऊ, वह तो मुझे बडा प्रिय लगेगा। वह मुझे काट दे, वह अच्छा लगेगा। मैं हकूमतकी तरफसे कह नही सकता हू। मेरे हाथमें हकूमत है नही। मैं जैसा बना हू, वह तो आप जानते हैं। एक आदमी पागल बनता है और वह बुरा करता है, तो मैं वैसा नही कर सकता। पीछे वह भी मुझसे भलाई सीख लेना है। चालीस करोड हिंदू-मुसलमान पडे है, उसमेंसे पाकिस्तानमे थोडे करोड़ चले गए, लेकिन तब भी साढे चार करोड़ मुसलमान तो यही हिंदुस्तानमें पडे है, बाकी तो सब-के-सब हिंदू ही है। थोडे पारसी, थोड़े क्रिष्टी, थोड़े यहूदी भी पड़े हैं, उसकी तो गिनती नही हो सकती है। तो वे आपसमे लडकर मर जाय तो भले मर जायं, लेकिन पुलिस-मिलिटरीकी मार-फत जिंदा रहना वह जिंदगी नही। दोनो लडते है तो हकूमत क्या करे ? हकूमत कहे कि हम तो इस तरहसे रह सकते है, नही तो हम हकूमत

छोड देते है। पीछे जो ऐसा मानते हो कि हिंदुस्तानमें तो हिंदू ही रहे, क्योंकि पाकिस्तानमें मुसलमान ही रहते है, तो वे हकूमत बनावें। इसका मतलब यह होगा कि पाकिस्तानमें वे निकम्मे बन जाते है दीवाना बन जाते है, ऐसे ही हम भी यहा दीवाना बने? हम चाहे तो ऐसा कर सकते है। मेरा एक दोस्त है, उसको मै गाली देता हू तो वह मुझको दो गाली दे, वह ठीक है। वह गाली देता है, उसे सहन कर लिया, तो वह कहातक गाली देगा? मारता है, वह भी मै सहन कर लेता हूं, मै उसको मुक्केके सामने मुक्का नही देता हू। तब पीछे क्या होना है, आपने देखा है? मैंने तो देखा है कि कोई आदमी ऐसा हवामें मुक्का मारता है तो उसके हाथ टूट जाते है। जो बाक्सिग[1] करता है, वह भी रुईका मोटा तना गद्दा-सा होता है, उसपर मुक्का चलाता है, तब तो उसको कुछ लज्जत आती है। लेकिन अगर बाक्सर[2] कोई चीज सामने नही रखता है तो वह निकम्मा बन जाता है और कुछ नही कर सकता है। मैंने तो आपको सनातन सत्य बतला दिया। मै उसपर अकेला कायम हूं। लोग तो आज उसपर नही चल रहे है। मै आखिरतक इस सत्य पथपर पड़ा रह सकूगा कि नही, यह तो ईश्वर ही जानता है। मै तो आज सीधी बात करता हू कि जो बाहर चले गए है, उनको बाहर रहने दे। लेकिन बाहर रहने है, पीछे उनको खाना-पानी तो देना है। चूकि वे बाहर चले गए है, उनको भूखो रहने दे और उनको कहें कि तुम पाकिस्तान भाग जाओ, ऐसा नही हो सकता। ऐसा करके हम लडाईका सामान तैयार करते है। कांग्रेस हकूमत, अगर वह हकूमत सचमुच देशकी सेवा करनेके लिए है, पैसोंके लिए नहीं है, सत्ताके लिए नही है, लेकिन सबकी खिदमत करनेके लिए है—एक कौमकी नही, दो कौमकी नही, सबकी है। अगर वे खिदमत करते है और लोग बिगडते है और उन्हे खिदमत करने नही देते तो उन्हे हट जाना है। पीछे जो लायक है, जो हिंदुस्तानमें हिंदुओंको ही रखना चाहते है, वे उनकी जगह ले, हकूमतमें। वह हिंदूधर्मको डुबोनेवाली चीज होगी,

---

[1] मुक्के बाजी [2] मुक्के बाज।

हिंदुस्तानको भी डुबोनेवाली चीज होगी। पाकिस्तानको हम छोड दे, वह जो कुछ भी चाहे करे। हम तो हिंदुस्तानको ही देखे। उसका नतीजा यह आ जाता है कि सारी दुनिया हमारी तारीफ करेगी, हमारे साथ होगी। नही तो दुनिया जो अबतक भारतकी ओर देखती आई है, अब उसकी ओर देखना बद कर देगी। वे मानते थे कि हिंदुस्तान एक बडा मुल्क है, उसमे अच्छे आदमी रहते है, वे बुरे होनेवाले नही, यह विश्वास खत्म हो जायगा। आपको इस तरहसे करना है तो कर सकते है। लेकिन जबतक मेरे साससे-सास है तबतक मै सबको सावधान करता ही रहूगा और सबको कहता रहूगा कि अगर इस तरहसे करोगे तो इसमेसे कोई भलाई निकलनेवाली नही है।

## : ६५ :

### सोमवार, २२ सितम्बर १९४७

( लिखित सदेश )

एक सभ्य समाजमे मूल अधिकारोपर अमल करनेके लिए बदूकोसे रक्षाकी आवश्यकता नही होनी चाहिए, यह सबको मान लेना चाहिए। काग्रेसके वार्षिक अधिवेशनोमे प्रदर्शनीकी भूमिपर अन्य धर्मो, सम्प्रदायो और राजनैतिक सस्थाओकी बैठके होती देखकर मुझे अत्यत हर्ष होता था। वहा बिना पुलिसकी सहायताके विरोधी विचार प्रकट किए जा सकते थे। अब लोग इस रास्तेसे हट गए है और जनतामे इस रास्तेको अच्छी निगाहसे भी नही देखा जाता। अब वह अनुकूल वातावरण और बरदाश्तकी भावना कहा चली गई? क्या यह इसलिए हुआ कि हमने राजनैतिक स्वतत्रता प्राप्त कर ली है? क्या हम स्वतत्रताका दुरुपयोग करके उसकी आजमाइश कर रहे है? आशा रखें कि यह मनोवृत्ति अधिक दिन नही रहेगी। अगर रही तो वह हिंदुस्तानके लिए अत्यत दु खद बात होगी। हमारे टीकाकारोके लिए, जो बहुत है, हम यह कहनेका मौका न दे कि हम स्वतत्रताके लायक

नही थे। इन आलोचकोके लिए मेरे दिलमें कई उत्तर खडे होते है। लेकिन इनमे कुछ सतोष नही होता। भारतवर्षके करोडोके जन-समुदायसे प्रेम करनेवालेके नाते मेरे स्वाभिमानको हानि पहुचती है कि हमारी सहनशक्तिका दीवाला निकला। हम आशा करते है कि हमारी कौमी जिंदगीका यह एक गुजरता हुआ नजारा है। मुझसे फिर यह न कहा जाय, जैसा कि कहा जाता है कि यह सब मुस्लिम लीगके बुरे कामोका परिणाम है। इसको हम सत्य मान लें तो क्या हमारी सहनशीलता इतनी कमजोर हो गई है कि वह मामूलीसे बोझके सामने घुटने टेक दे? शिष्टाचार और सहनशक्ति तो इस तरहकी होनी चाहिए कि हमारी सस्कृति अपना स्वय परिचय दे। यदि भारतवर्ष सफल न हुआ तो एशिया मरता है। ठीक ही तो कहा गया है कि हिंदने अन्य सस्कृतियो और सभ्यताओको ढाला है। ईश्वर करे कि हिंद ससारमे उन सब देशो-का—चाहे वे एशियाके हो या अफ्रीकाके—आशा-स्थल बना रहे।

अब मैं बिना लाइसेंसके और छुपे हुए हथियारोके भयकी बातपर आता हू। इसमे सदेह नही कि कुछका तो पता चल गया है। कुछ अपनी इच्छासे मुझे दिए जा रहे हैं। ऐसे सब हथियारोको निकाल देना चाहिए। जितना कुछ मुझे मालूम है उससे दिल्लीमेंसे अभी भी बहुत कम निकल पाए है। मगर इन हथियारोसे हम डरें क्यो? अग्रेजी राज्यमे भी कुछ छुपे हुए हथियार रहते थे। उस समय इनकी कोई चिंता नही करता था। जब तुमको विश्वास हो जाय कि शस्त्रके गुदाम किसी जगह छिपे हुए है तो उन सबकी जरूर खबर दो। ऐसा न हो कि शोर तो ज्यादा हो और निकले कुछ भी नही। स्वतत्र होनेपर हम एक कानून अग्रेजोके लिए और दूसरा अपने लिए लागू न करें। कुत्तेको मारनेका कारण बतानेके लिए उसको बुरा नाम न दें। इतना सब करनें और कहनेके पश्चात् अतमे साठ वर्षके परिश्रमसे पाई हुई स्वतत्रताके लायक होनेके लिए कैसी ही कठिनाइया क्यो न हो, हमको वीरतासे उनका मुकाबला करना चाहिए। यदि हम उनका सामना सफाईसे करे तो हम ज्यादा योग्य बन सकते है। ऐसा समझकर कि मुसलमान अक्सरियतसे बेवफा बनेंगे उनको मार डालें या जला-

वतन करे तो हमसे ज्यादा बुजदिल कौन ?

अकलियतके लिए सम्मान रखना अक्सरियतका भूषण है। उसका तिरस्कार करनेसे अक्सरियतपर दुनिया हँसेगी। अपनेमे विश्वास, और जिसको दुश्मन माने उसका उद्धार करनेमे हमारी रक्षा होती है। इसी-लिए मैं जोरोसे कहता हू कि हिंदू, सिख और मुस्लिम जो देहलीमे है वे दोस्ताना तौरसे एक-दूसरेसे मिले और सारे मुल्कको वैसा करनेके लिए कहे। आप दुनियाके लिए नमूना बने। दूसरे हिस्सेमे हमारे लोग क्या करते है सो देहली भूल जाय। तब ही देहलीको इस जहरीले वायुमडलको दूर करनेका गौरव हासिल हो सकता है। अगर वैरका बदला लेना मुनासिब हो तो वह हकूमत हीके जरिए हो सकता है, हर एक आदमीके जरिए हरगिज नही।

## : ९६ :

### २३ सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनो,

प्रार्थना कोई मामूली चीज नही है, वह बड़ी बुलद चीज है। जीवनभरमे हम सब तरहकी बात करते है, २४ घटेमे काफी बाते करते है; गुनाह करते है, पैसेके लिए मारे-मारे फिरते है, तो कम-से-कम प्रार्थना तो कर ले। समाजमे अगर प्रार्थना करे तो वह बहुत बड़ी चीज हो जाती है। ४० करोड़ आदमी ऐसा मानकर कि ईश्वर एक है अपनी भाषामे प्रार्थना करे तो वह एक बहुत बुलद बात हो जाती है। और पीछे उनमे कुरान शरीफकी कोई आयत आए तो उससे भी न घबरावें। जो भाई ऐसा कहते है कि कुरानसे कुछ भी प्रार्थनामें न पढ़ा जाय, वे तो गुस्सेमें ऐसा कहते है। मुसलमान चूकि हिंदुओको तग करते है, सिखोको तग करते है, उनको मारते है, इसलिए क्या हम कुरानपर गुस्सा करें? मुसलमानोने जो कुछ किया वह अच्छा नही किया, लेकिन कुरान शरीफने क्या बुराई की? भग-

वानका एक भक्त पाप करता है तो इसलिए हम क्या भगवानका नाम नहीं लेंगे? भगवान तो एक ही है। जो भगवानके भक्त हैं वे ऐसा कहेंगे कि हिंदुओंने भी बुरा किया है तो क्या गीता बुरी है? सिक्खोंने अगर बुरा किया तो क्या हम गुरु-ग्रन्थसाहब न पढ़ें? गुरु-ग्रन्थने क्या गुनाह किया? सिक्ख बिगड़ें, हिंदू बिगड़ें, मुसलमान बिगड़ें, पारसी बिगड़ें उससे क्या हुआ? उनके जो धर्म हैं और उनके पीछे जो तपश्चर्या हो गई है वह तो कायम ही रहेगी।

मेरे पास रावलपिंडीसे जो भाई आज आए थे वे तो तगड़े थे, बहादुर थे और बड़ी तिजारत करनेवाले थे। रावलपिंडी बनाई थी तो हिंदुओंने और सिक्खोंने, लाहौर भी उन्हीं लोगोंने बनाया। पाकिस्तान सारे-का-सारा मुसलमानोंने थोड़े ही बनाया है, जो पाकिस्तान तो है, उसके बनानेमें सबने हिस्सा लिया, किसी एक कौमने नहीं। हिंदुस्तानको कहें कि यहां हिंदुओंकी संख्या ज्यादा है इसलिए इसको हिंदुओंने ही बनाया है तो यह बात ठीक नहीं। इसको हिंदुओंने, मुसलमानोंने और सिक्खोंने बनाया, पारसियोंने बनाया, ईसाइयोंने बनाया। जैसा आज हिंदुस्तान बना है उसके बनानेमें सबने हिस्सा लिया है। मैंने तो उस भाईसे कहा, आप शांत रहें और आखिरमें तो ईश्वर पड़ा है। ऐसी कोई जगह नहीं जहां ईश्वर नहीं। इसका भजन करो और उसका नाम लो, सब अच्छा हो जायगा। उन्होंने कहा, वहां पाकिस्तानमें जो पड़े हैं उनका क्या करें? मैंने उनको कहा, आप यहां आए क्यों, वहां मर क्यों नहीं गए? मैं तो इसी चीजपर कायम हूं कि हमारा जन्म हो तो भी हम जहां पड़े हैं वहींपर पड़े रहें, मर जायं। लोग मार डाले तो मर जाय। मगर ईश्वरका नाम लेते हुए बहादुरीसे मरें। यही मैंने लड़कियोंको सिखाया है। मरनेका इल्म तो हासिल कर लें और ईश्वरका नाम लेती रहें। कोई इन्सान है, बुरा आदमी है, उसकी नजर बद हो जाती है, वह हिंदू हो, सिख हो, पारसी हो, कोई भी हो, हम यह तो कर सकें कि उसके वशमें न हों। वह कहे कि चलो, पैसा देते हैं तो उससे यही कहना चाहिए कि ५ मिनट बाद मारना है तो तू अभी मार दे, लेकिन हम तेरे वशमें आनेवाली

नही है। पैसे देकर छूटनेवाली नही। मै तो, जबतक मेरेमे सास है, यही शिक्षा दूगा। दूसरी बात मै नही कर सकूगा। मै ईश्वरको नही भूलना चाहता। इसलिए मै सब लोगोको कहता हू कि सबसे बडी बहादुरी और सबसे बडी समझ दुनियाकी इसीमे पडी है कि मरनेका इल्म सीखो तब जिंदा रहोगे। अगर मरनेका इल्म नही सीखते हो तो बिना मौत मारे जाओगे। मैं नही चाहता कि कोई बेमौत मरे। मैंने मुसलमानोको भी कहा, आप क्यो जाना चाहते हैं, यही पडे रहो और मरो। मैंने रावलपिंडीके लोगोको भी यही कहा। मैं उन लोगोकी मिन्नत करूगा। हुकूमतवाले जो कुछ कर सकते है करे। मैंने उन लोगोको कहा है कि यहा आए है तो आप कैंपोमे जावे, वहा मेहनत करे। आप लोग तगडे है, हिम्मत न हारें। यह न कहे कि हम अब क्या कर सकते है, मकान नही, कुछ नही। मकान तो पडा है, धरती माता हमारा मकान है, ऊपर आकाश है। जो मुसलमान डरसे भाग गए, उनके मकान पडे है, जमीन पडी है। तो क्या मैं कहू कि आप मुसलमानोके घरोमें चले जाय? मेरी जुबानसे ऐसा नही निकल सकता। मुसलमानोके घर जो कलतक थे वे आज भी उनके है। वे भाग गए डरके मारे। अगर वे अपने-आप भाग गए है और उनको ऐसा लगता है कि वे पाकिस्तानमें खुश रहेगे तो चले जाय, वहा खुश रहे। उनको ईजा[1] न पहुचाओ, आरामसे जाने दो। उनकी जायदाद और जेवर जो है वे ले जाय। पीछे जो घर वे छोड जाते है वह तो हुकूमतके कब्जेमें रहता है, वह जो चाहे कर सकती है। उसमें जो हमारे शरणार्थी है वे अपने-आप चले जाय, यह तो अच्छा नही। मैं एक चीज जानता हू कि आप तगडे बने और जो मैं आपको कहता हू उसको आप करे ताकि आप मुझको यहासे भेज सके। मैं पजाब जाना चाहता हू, लाहौर जाऊगा। मैं पुलिस और मिलिटरीकी इस्कोर्ट[2] लेकर नही जाना चाहता हू, मैं तो भगवानके भरोसे अकेले जाना चाहता हू और वहाके जो मुसलमान है उनके भरोसेपर जाना चाहता हू। अगर उनको मारना है

---

[1] कष्ट; [2] दस्ता।

तो मार डाले। मै हँसते-हँसते मर जाऊगा और दिलमें कहूगा कि भगवान उनका भला करें। उनका भला भगवान कैसे कर सकता है? उनको भला बनाकर। ईश्वरके पास भला करनेका यही तरीका है—दिलके मैलको शुद्ध कर देना। वह मेरा शत्रु बने तो भी मै उसका शत्रु नही हू, मै उसका बुरा नही चाहता तो ईश्वर मेरी बात सुनेगा। उस आदमीके दिलमें लगेगा मैंने मारकर क्या लिया, इसने मेरा क्या गुनाह किया था? मुझे वे मारें तो मारनेका उन्हें अधिकार है। इसलिए मै लाहौर जाना चाहता हू, रावलपिंडी जाना चाहता हू। हकूमत मुझे रोके। तो रोके लेकिन मुझे रोक कैसे सकती है? रोकना चाहे तो मुझे मार डाले। अगर मुझको मार डाले तो आप लोगोको एक पाठ देकर मै चला जाऊगा। वह मुझको बडा अच्छा लगेगा। वह पाठ क्या है, तू मरेगा, लेकिन किसीका बुरा खयाल भी नही करेगा।

ध्रुव बालक था, बच्चा था। उसने भगवानकी प्रार्थना की। प्रह्लाद क्या था? १२ वर्षका लडका। उन सबने यही किया, तो हम तो उनके वारिस है। गुरुओने, नानक साहबने, जो गुरु-ग्रथ जानने वाले है वे सब जानते होगे, कि उन्होने यही सिखाया है कि किसीका बुरा नही सोचना, किसीको तलवार नही लगाना। मरनेकी हिम्मत रखना वह तो सबसे बडी बहादुरी है। अगर हमारे लोग इस तरहसे खप जायं तो किसीपर गुस्सा नही करना है। आपको समझना है कि वे खप गए, तो ठीक गए, भले गए। ऐसा ही ईश्वर हमको भी कर दे। ऐसी हमारी हमेशा हार्दिक प्रार्थना रहे। मै आपसे यह कहूगा, रावलपिंडीवालोमे भी कहा कि आप वहा जाय और जो सिख और हिंदू शरणार्थी है उनको मिलें, उनसे कहे कि भाई, आप वापिस जाय और अपने-आप—पुलिसके मारफत नही, मिलिटरीके मारफत नही। दिल्लीमें आप ऐसा करे कि हम झगडा नही करेगे तो मै समझूगा कि ईश्वर मेरी सुनता है। उस चीजको लेकर मै पजाब चला जाऊगा, मै एक दिन भी यहा उसके बाद न रहूगा, यह मै आपको कहना चाहता हू। मै यहां कोई शौकसे नही पडा हू, यहा सेवा करनेके लिए पडा हू। जो आग यहा भड़कती है उसके बुझानेमें एक इन्सान जितना कर सकता

है वह करनके लिए मै यहा पड़ा हू। तो मै आपको, रावलपिंडीके जो भाई आए है उनको, बतला देता हू कि उनको किस तरहसे रहना है और किस तरहसे वे काम करे कि उनकी खुशबू हिंदुस्तानमे, सारी दुनियामे, फैल जाय।

## : ६७ :

### २४ सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनो,

'आज जो भजन आप लोगोने सुना वह हमारे लिए आज ठीक है। हम सब आज कह सकते है—"मेरी टूटी-सी किश्ती है।" और पीछे भगवानको हम कहते है कि—"कृपा करके हमको पार उतारिए, अगर आपकी कृपा नही रहनेवाली है तो यह किश्ती पार उतर नही सकती।" यही आज हिंदुस्तानका हाल है, इसे मै प्रतिक्षण देख रहा हू। हममे, किसी-न-किसी तरहसे कहो लेकिन वैर-भाव आ गया है। हिंदू-मुसलमान दोनोके दिलोमें इतना गुस्सा आ गया है कि दिल्लीमें मुसलमानोको हम रहने नही देंगे। हिंदू-सिखोको पाकिस्तानसे भगाया गया है। मै सुनता हू कि छोटे-छोटे बच्चोंको भी यह सिखाया गया है। यह ठीक है कि यह सब प्रचार मुस्लिम लीगका है। मुस्लिम लीगने यह सिखाया और इसका मै साक्षी हू कि हम तो लडकर पाकिस्तान लेनेवाले है, मश्विरा करके नही, हिंदू और जितने गैरमुसलमान है उनके साथ मिन्नत करके नही। यह तो हमारा दुर्भाग्य था कि वर्षोसे यह चलता रहा कि वे हमारे साथ लडेंगे। लेकिन यह कभी चल नही सकता। लडकर क्या लेना था ? तो एक तरहसे तो कह सकते है कि लडकर नही लिया है। लेकिन हमने पाकिस्तान माना, हमने कबूल कर लिया, अंग्रेजोने कबूल कर लिया। अगर अंग्रेज कबूल न करते तो पाकिस्तान हो नही सकता था। कांग्रेस कितना ही कबूल करे; लेकिन आखिरमें तो सत्ता अंग्रेजोके हाथमें थी। उनको उसे छोड़ना

था। क्यों ? सत्ता अब यहां चल नहीं सकती थी। हम उनसे तलवारसे नहीं लड़े थे। हमारा निःशस्त्र युद्ध था। हम तो कहते हैं कि हमारा अहिंसात्मक युद्ध था। सो हिंदुस्तानको आजादी मिली। हिंदुस्तानके टुकड़े हुए। कांग्रेसने उसमें शिरकत दी। कांग्रेसने सोचा कि भाई-भाई कबतक इस तरहसे लड़ते रहेंगे, इससे तो अच्छा है चलो दो जो मांगते हैं। पाकिस्तान चाहिए ? दे दो। तो पाकिस्तान तो दिया। मुल्कका पूरा-पूरा हिस्सा हुआ, पाकिस्तान मिला। मगर कइयोंको लगता है पूरा नहीं मिला, पूरी रोटी नहीं मिली, आधी-पौनी ही मिली, तो इसे तो खा लो, पीछे देखेंगे। सो आजादी तो मिली, पर उसे हम हजम न कर सके, जहर जो भरा था। सो हमारे बीचकी लड़ाई खत्म नहीं हुई। लीगवालोंने जहरीली तकरीरें कीं। वे लोग जो पाकिस्तानमें रहते हैं, सब मुसलमान थोड़े हैं ? वहां हिंदू रहते हैं, पारसी रहते हैं, सिख रहते हैं, ईसाई रहते हैं। उन सबको खुश करें, बतावें कि सबका हक एक-सा होगा, हुकूमत तो हमारी होगी, इसमें शक नहीं है, क्योंकि हमारी अक्सरियत है। वह ठीक है, लेकिन हुकूमत आखिर इन्साफसे चलाना है। ऐसा कहा तो सही, लेकिन हो नहीं सका। क्यों नहीं हो सका, इसमें तो मैं क्यों जाऊं। मुझको सब पता है, वहां क्या-क्या हुआ। मुसलमान सब हदसे बाहर चले गए। उन्होंने सोचा कि अब तो हमारा राज्य हो गया है, तो काटो-मारो। वहांसे शुरू हुआ। जब शुरू हुआ तो पीछे सिख भी तो लड़नेवाले हैं। वे कैसे बरदाश्त करनेवाले थे। उन्होंने भी काटना-मारना शुरू कर दिया। यह हमारा किस्सा है और अभी वह खत्म नहीं हुआ।

हजारों भाई मेरे पास आते हैं कि हम वहां नहीं रह सकते, वहां हमारे लिए यह है कि इस्लाम कबूल करो, नहीं कबूल कर सकते तो जिस तरह हम रखते हैं वैसे रहो, यानी गुलाम होकर रहो। वह हम कैसे कबूल कर सकते हैं ? मजबूर होकर वहांसे भागे हैं। हमको पसंद पड़े तो हम मुसलमान भले हो जाय। डरके मारे मुसलमान होना दूसरी बात है। पेट पालनेके लिए कोई धर्म नहीं छोड़ सकता है। मजबूर होकर धर्म छोड़ना धर्म नहीं अधर्म है। जो पुरुष या स्त्री अपना मान खो देता है—और मान धर्ममें ही है, उसका बचना क्या ?

क्योंकि पैसा चाहिए, जेवर चाहिए, नौकरी चाहिए, इसलिए जो धर्म खो देता है, मैं कहता हू कि उसके पास कोई धर्म ही नही। न वह हिंदू धर्मके लायक है, न वह अच्छा मुसलमान ही बन सकता है। और मजबूर करके हमें कलमा पढाए तो हम थोडे ही मुसलमान हो सकते है ? मैं यहा कलमा नही पढता हू, मैं तो फातेहा पढता हू। दोनोमे खूवी पडी है। कलमामें तो ऐसा है कि सिवा खुदा दूसरा नही है, ऐसा कहो। और पीछे उनके रसूल तो मोहम्मद साहब थे। बाकी जो रसूल हो गए है, वे कोई नही है। लेकिन फातेहामें तो बिल्कुल साफ है, तू मालिक है, सबको बचा सकता है तो हमको भी बचा। लेकिन अच्छा हो तो भी जबर्दस्ती क्या पढाना। उसे हम पढे तो खुशीसे पढे। लेकिन कोई कहे—तू यह चीज पढ, पढेगा या नही, पढना होगा, नही पढेगा तो बदूक लगेगी। तो मैं नही पढना चाहूगा। मेरे पास मुट्ठीभर हड्डी है, लेकिन दिल तो मेरे पास है, वह दिल आपके पास है, वह दिल लडकियोंके पास है। वे कह सकती है कि अपना धर्म नही छोडेगी। लेकिन आज तो हम एक बाजी खेल रहे है। आज ऐसी हालतमें हिंदुस्तान-में, हमें क्या करना चाहिए ? यह बडा प्रश्न आप लोगोके सामने है। आज पाकिस्तानसे जो ट्रेन भरकर आती है, पाकिस्तानसे तो मुसलमान नही आते है, हिंदू आते है, सिख आते है, तो उस ट्रेनमें कुछ-न-कुछ कत्ल हो जाते है। यहासे जाते है तो, यहासे मुसलमान जायगे, उनका कत्ल हो जाता है। उसमें मुझको कहा जाता है कि हिसाब तो सुनो। मैं क्या हिसाब सुनू ? मेरे पास हिसाब तो है नही। हिसाब सुनकर क्या करूगा ? मैं तो यह कहूगा कि एक आदमी है वह शराबकी एक बोतल पीता है, दीवाना बन जाता है, दूसरा आदमी शराबकी दो बोतल पीता है, वह बिल्कुल दीवाना बन जाता है। दोनो दीवाने बन जाते है। एक पीनेकी चीज ऐसी पीता है कि वह दीवाना नही बन सकता, जैसे कि साफ नदीका पानी है। उसको शराबका नाम भले दे दो, लेकिन वह किसीको दीवाना नही बना सकती है। उसको शराब कौन कहनेवाला है ? शराब तो वह है जो हमारी अक्लको ले जाय और हमको दीवाना बना दे। बात यह है कि आज

हमको नशा चढ गया है। मान लो कि आज मुस्लिम लीगने नशा दिया; क्योंकि उसके मनमें आया सो कर लिया। तो हम सोचें कि वह कर सकते हैं तो हम भी वैसा करें। हम सोचे कि हम तो सारे हिंदुस्तानमें राज्य चलाएंगे और पाकिस्तानको मिटा देंगे, मैं आपको कहता हूं कि पाकिस्तानको हमने कबूल कर लिया, पीछे उसको मिटाना क्या है? मिटा नहीं सकते हैं। ताकतसे, अपनी तलवारकी ताकतसे तो नहीं मिटा सकते। और मिटानेकी चेष्टा करें तो हम दोनो डूबनेवाले हैं। हमारी किश्ती फूटी किश्ती है। आज हम डूब रहे हैं। आज चाहे आप हम लोगोंसे कहे कि लडो और पीछे जीत लेकर आओ। तो मैं कहूंगा कि जीत लेकर आओगे उसमे पहिले ही दुनियाकी दूसरी ताकत आपको खा जानेवाली है, दोनोको खा जाएगी। इतनी चीज़ मेरे सब दोस्त जो समझदार आदमी हैं, जिन्होंने इतने वर्ष ऐसे कामोंमें काटे है समझ ले, तो हमारी खैर हो सकती है। मगर जब दोनों ह्विस्कीकी बोतल पी रहे हो और उसमें लज्ज़त आती हो तब कैसे होगा? मै कहूंगा कि भाई, तू ह्विस्कीकी बोतल छोड दे, उसमें हमारे लिए विष भरा है, तो इसलिए हम इसे दरियामें डाल दें। मुसलमानोको हम इस वक्त ईजा नही पहुचायेंगे। उन्हे जाना हो तो उनको राजी-खुशीसे भेज देंगे, लेकिन उनको जबर्दस्ती और मजबूर करके नही भेजेंगे। वे अपने घरमें पडे हैं, यहा अक्सरियत उनकी है नही, हम क्यो ऐसे बुज़दिल बनें कि उन्हे सतावें? हम आज़ाद है, सारा हिंदुस्तान आज़ाद है, वे ऐसा क्यो मान लें कि हम उन्हे खा जाएगे? क्या वे ऐसे हैं कि हिंदू उन्हे पाए तो खा सकते है? काग्रेसने इतनी कुरबानिया की, वर्ष-प्रतिवर्ष ज्यादा-से-ज्यादा कुरबानी करती गई, उसमें काफी हिंदू-मुसलमान थे, तो क्या स्वराज्य मिलनेपर वे पागल हो गए है। इन कुरबानियोंसे, तकलीफे सहनेमे हिंदुस्तानको आजादी मिली, उसको शराबके नशेमें फेंक देंगे क्या? यह कितनी बुरी बात है। मै तो आपको यह कहूंगा कि अखबारमे आप खबर पढते है और गुस्सा करते है, यह समझने लगते है कि वे हमारे कभी नहीं बनेंगे तो मै आपको वह बात नही सुनाता हूं।

मैंने कल भी कहा था कि यह सब बंद हो सकता है। किस तरहसे ? हम साफ बन जाय। साफ बने उसके मतलब यह है कि हम बहादुर बन जाय। जो आदमी बहादुर बनता है वह ऐसी हरकतें नही करेगा। आपके पीछे आपकी हकूमत है, हकूमत बदला लेगी। हकूमतको कहो। राज्य तो हकूमत चलाती है। वह जमाना चला गया जब अंग्रेजोंकी हकूमत थी और जब हम उनको कुछ पूछ नहीं सकते थे। आज आपकी हकूमत है, उसको पूछो। सबको पूछना है। उनको हम कह सकते हैं कि इस तरहसे करो और इस तरहसे न करो। आखिर साढे चार करोड मुसलमानोसे क्या डरना था। मानो कि साढे चार करोड मुसलमानोको मार डाला, तब पीछे क्या करोगे ? पाकिस्तानमे तो बहुत मुसलमान पडे है, वहा किसको मारोगे ? पाकिस्तानवाले आपके पाससे साढे चार करोड़का हिसाब लेगे और वह हिसाब आप नही दे सकेगें, क्योकि उसके साथ सारी दुनिया होगी। इसलिए मै कहता हू कि हम पाक रहे, हमारी जो किताब है, बहीखाता है, अमलनामा है, उसको हम साफ रक्खें। हम कभी कर्जदार नही बनेगे, लेनदार बनेगे। ऐसा हम कर ले और पीछे मै कहूगा कि आपकी जो हकूमत है उसको तो पाकिस्तानको अल्टीमेटम[1] देना है। जितने हिंदू, सिख वहासे चले आए हैं उनको सबको वापस जाना है और उनकी हिफाजत पाकिस्तानको करनी है। पाकिस्तानने तो अब कह भी दिया है कि जितनी अक्लियत पाकिस्तानमे है उनको वही हक होगे जो मुसलमानोंको है। उनको बोलनेका, रहनेका, अपने मंदिरोमे जानेका, गुरुद्वारोमे जानेका, सब हक रहेगा। हकूमत उनके हाथमे नही आ जायगी। आज एक-दूसरेका एतबार टूट गया है, वह मै समझ सकता हू। लेकिन इलाज क्या यह है कि मेरे पास यहां मुसलमान पड़े हैं, उनकी जायदाद पडी है, घर पड़े है, उनके बच्चे है, उनको हम मारे और भगाना शुरू कर दे ? ऐसा नही होना चाहिए। इसमे बड़ी बुजदिली है। हम क्यो बुजदिल बनें ? ऐसी सीधी-सीधी बात

---

[1] अंतिम चेतावनी।

मैं आज आपको सुनाना चाहता हू। मैं तो यही कहता हू कि हम हिंदुस्तानमें बदला लेना भूल जाय और दिलको ऐसा बहादुर रखें कि हिंदुस्तान देख सके कि दिल्लीमे कुछ होनेवाला नही है। दिल्लीमें हमने कुछ कर लिया है, मुसलमानोको निकाल दिया है। मैं नही कहता हू कि जो चले गए हैं उनको आप आज वापस लाए। लेकिन जितने यहा पड़े है उनसे कहे कि चलो आराममें रहो। बादमें जो पीछे चले गए है उनको आप दिल्लीमे लाएगें। जो कोई मुसलमान बुराई करे उसके लिए हकूमतको कहो। आज जो करना चाहिए वह करने नही देते। वह आपकी हकूमत है, ईस्ट[1] पंजाबमें भी आपकी हकूमत है और वह तो हिंदुस्तानमें है। तो हिंदुस्तानमे जो पड़े है वे तो हिंदुस्तानकी हकूमतमें पड़े हैं। उनको हकूमत जैसा कहे करना है। अगर हकूमत कहे कि मारो, हमारे पास तो लश्कर नही है, तो पीछे हकूमत मर जाती है। तब तो पीछे गुडा-राज्य बन जाता है और वह तो हकूमतका काम ही नही है। मैं आपको कहना चाहता हू कि हकूमतको आप जितना जोर दे सकते हैं दें, लेकिन आप अपने हाथमें कानून न लें, बदूक न लें और किसीको मारे नही। इतना करो तो हम जीत जाते हैं और हमारी किश्ती जो आज डूब रही है वह बच जायगी। और पीछे जो सच है उसके साथ तो हमेशा ईश्वर है ही। ईश्वर हमको कभी छोड नहीं सकता है। हम अगर ईश्वरको छोड दे, उसको भूल जाए और सच्चा रास्ता छोड दें तो ईश्वर क्या कर सकता है?

## : ९८ :

२५ सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनो,

वह सब आपत्ति हमारे सिरपर यकायक आ पडी है। हमारी आजादी

---

[1] पूर्वी।

अभी दो-डेढ महीनेकी नही हुई। १५ अगस्तसे १५ सितम्बरतक और आज २५ तारीख है, तो एक महीना १० दिन हुआ। वह आजादी अभी तो एक छोटी-सी बच्ची है। एक महीना १० दिनका बच्चा क्या कर सकता है? उसके तो हाथ-पैर चलने चाहिए। एक महीने १० दिनके बच्चेमें वह दिमाग नही हो सकता। लेकिन हम तो तगडे है और अंग्रेजी सल्तनतसे आजतक लडते आए है, तो हम थोडे ही मुसीबतके सामने झुकनेवाले थे। आजादी के बादकी ही बात करे। यह तो हो नही सकता कि हम तैयार नही थे। आजाद तो हम बन गए, लेकिन हमारे जो लोग हैं उन्होने आजादीके यह माने मान लिए कि अब हम जो कुछ चाहे वह करे। इसस हिंदकी हकूमतका काम हमने बहुत ही मुश्किल कर दिया है। जो आदमी अपने हाथ साफ नही रखता वह साफ चीज क्या देखेगा और उसकी कहातक कदर करेगा? आज हममे बदमाश आदमी पडे है तो उसमेसे कौन आदमी किसको कहे कि तू बुरा है? अगर दूसरा उसका जवाब दे कि तू बदमाश है तो इससे वह सवाल और पेचीदा हो जाता है। यह स्वराज्य नही है और न यह स्वराज्य लेनेका रास्ता है। इसलिए मै कहूगा कि हमे तो जितना हो सकता है हमारी हकूमतको कहना चाहिए, उसको हमे मदद देनी चाहिए। मानो कि यह मदद नही मिलती, तो क्या जो पाकिस्तानमें होता है और हो रहा है ऐसा हम भी करने लगे? इससे उनको पाठ मिल जायगा? मै आपको कहूगा कि उनको पाठ ऐसे नही मिल सकता। दुनियाका काम इस तरह नही चलता। कुछ आदमी लडते-भिडते है तो हकूमत कहती है कि तुम आपसमें क्यो लडते हो, पुलिस पडी है उसको कहना चाहिए। पुलिस नही सुनती है तो मजिस्ट्रेटका मकान तो है, आप वहा निवेदन कर सकते हैं। वहा जो कुछ हो सकता है, वह होगा। एक-दो आदमी आपसमे लडे तब तो मजिस्ट्रेट फैसला करे, लेकिन यहा तो दो बडी कौमे आपसमें लडी। हकूमत क्या करे? यह अंग्रेजी हकूमत नही है जिसको इग्लेंडसे हुक्म आते थे। आज तो हकूमत आपकी है। उसके माने हुए कि आप हुक्म निकाल सकते है। आप हकूमतको कह सकते है, यह मत करो। उसे हटाना चाहे तो हटा सकते है। ऐसी आपकी

ताकत है। अगर उस ताकतका आप सच्चा इस्तेमाल न करे तो बड़े खतरेमे पड़ जाएगे और मै कहूगा कि हम आज बड़े खतरेमे पड़े है। पाकिस्तान तो खतरेमे पड़ा ही है और हम भी खतरेमे पड़े है। मै इसके जवाबमे यही कहूगा कि हमारी सरकार है, सल्तनत है, हकूमत है, उसको जो करना चाहिए कर रही है। और अगर कुछ बाकी रह गया तो उसको भी करना है। मैने आपको बतला दिया है कि आपका धर्म क्या है, बाकी मैं कहना नही चाहता। आप लोगोका धर्म क्या है? मिल-जुलकर रहे, मुसलमानोको दुश्मन न समझें। जो दुश्मन है वे अपने-आप मर जायगे। लेकिन हम एक आदमीको दुश्मन समझें, उसको मारे-पीटे तो उसमे हमारी बुजदिली है, इससे हममें दुर्बलता आती है। जो हिम्मत रखते है, बहादुर है उनका यह काम नही है कि वे किसीसे लड़े-भिड़े। क्योकि किसीपर हम अविश्वास रखते है, उससे हम लड़ते है, यह सब व्यर्थ है। लड़ना क्या था। उसके बीचमे हमारे बीचमें भगवान है। मैंने आपको सुनाया था कि यह सब तुम्हारे हाथमें नही (?) है; ईश्वरके हाथमे है। वह हमारी लाज रखे तो रहती है, नही रखे तो नही रहती है। उसको कहो, मनुष्यको नही। जो पतितका उद्धार करनेवाला है, उसको कहो। वह हमारे बीचमें है। वह हमारा उद्धार करनेवाला है। तो हम क्यो किसीसे बिगड़ें या डरें? भले ही मुसलमान कुछ भी करे, भले ही कितने हथियार रक्खे, भले वह बदमाश बन जाय, बेवफा बने। तो बेवफाईका बदला हकूमत लेगी। हकूमतके लिए तो यह कानून सारी दुनियामे पड़ा है कि बेवफाको गोली मार-कर उड़ा देती है। अगर कोई बेवफाई करे तो वह स्टेटके लिए बड़ा भारी गुनाह हो जाता है। वह एक खूनसे भी ज्यादा गुनाह हो जाता है। इसलिए उनको उड़ा देते है। तो वे ऐसा करें यह मै समझ सकता हू। लेकिन वे बेवफा हो गए है, ऐसा शक करके उन्हें मारना इन्सानका काम नही है, वह बुजदिलका काम है। मै कहूगा हम ऐसा न करें।

कल मैने कहा और आज फिर कहता हू कि हमारी टूटी-फूटी किश्ती है। उसको कृपा करके तुम ही पार उतार सकते हो। नही तो किश्ती दरियामे पड़ी है। उसको डूबना है, उसमे एक बड़ा छिद्र हो

गया है। पानी उसमें फक-फक करके भर जायगा और जो लोग उसमे बैठे वे भी डूब जायगे। भजनमें कहा है कि मेरी टूटी हुई किश्ती है उसको हे प्रभु, तू कृपा करके पार उतार। यह बिलकुल ठीक बात है कि हमारी ऐसी टूटी हुई किश्तीको भगवान ही पार उतारेगा। लेकिन हमे प्रयत्न करना चाहिए। अगर किसी जगहपर किश्ती टूट गई है तो हमारे पास जो सामान हो सकता है वह लेकर उसमे पानी भरने न दे। पानी भर जाता है तो मैने देखा है कि जितने जोरसे पानी अदर आता है उतने ही जोरसे उसे निकाल फेंकते है। तब छिद्र होते हुए भी वह नय्या चलती है, लेकिन कब चल सकती है जब ईश्वरका उसमे हाथ हो। ईश्वर कृपा करें तो वह नय्या चलनेवाली है और वह पार उतर जाती है, नही तो डूब जाती है। इसलिए मैं कहूंगा कि मनुष्यको प्रयत्न करना चाहिए और ईश्वरका सहारा रहना चाहिए।

दिल्लीमें आग भभक रही है, दूसरी जगह हिंदुस्तानमे आग लग रही है, हर जगह आज आग जल रही है तो हमारा धर्म हो जाता है कि हम उसको मिटा दे, उसपर पानी डालें, नही तो वह आग बुझ नही सकती। हमारा पहला काम यह हो जाता है कि हम लोगोको समझाए। उनको, आप लोगोको, सबको मैं वही चीज समझाता हूं। जब-तक मुझमें सांस है, मैं सारी दुनियाको वही चीज कहनेवाला हू। हिंदुस्तान इतना आलीशान मुल्क, आज बिलकुल एक श्मशान-सा हो गया है। ऐसा हैवान हो गया है!

मुझको तजुर्बा है और मै कहता हू कि हमारी पुलिस, मिलिटरीको लोगोका सेवक बनकर रहना है, लोगोंका अमलदार बनकर नही। अमलदारीका जमाना चला गया। मेरा तो उसूल यह है कि मुहब्बतसे काम लेना चाहिए। अगर हम ऐसा कहेंगे कि हिंदू मिलिटरी है, पंजाबी मिलिटरी है, हिंदू पुलिस मुसलमानको कटवा देगी—यह सब मैं सुनता हू तो मुझको दुःख भी होता है, हँसी भी आती है। अगर यह बात सच्ची है तो मैं समझता हू कि पुलिस-मिलिटरी दोनो हिंदुस्तानको दबा देंगी और हिंदुस्तानकी किश्ती डूब जायगी। आज तो हमारी मिलिटरी है। मैं ऐसा नही मानता कि अग्रेज सब निकम्मे है। मगर अग्रेज

## : ६६ :

### २६ सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनो,

यह जो चल रहा है वह न सिख-धर्म है, न इस्लाम है, न हिंदू-धर्म। सबको थोडा-थोडा हम जानते है। ऐसा कोई धर्म रह सकता है कि जो न करनेका काम करे? गुरु नानकसे सिख पथ चला। गुरु नानकने क्या सिखाया है? वे कहते है कि ईश्वरको तो बहुत नाममे हम पहिचानते है, उनकी बयानमे अल्लाह आ जाता है, रहीम आ जाता है, खुदा आ जाता है, सब धर्मोंमे यह है। नानक साहबने भी यह यत्न किया कि सबको मिला देगे। कबीर साहबने भी वही कहा। वह जमाना चला गया। यह हमारे लिए दु खकी बात है।

आज एक भाई मेरे पास आ गए—गुरुदत्त। वे बडे वैद्य है। अपनी कथा सुनाते-सुनाते वे रो दिए। उन्होने यह कबूल किया कि तुम्हारी शिक्षा यह थी कि मुझे वहा मर जाना था, लेकिन उसकी हिम्मत मुझमे नही थी। उन्होने कहा कि 'मैने तुम्हारा सदा सम्मान किया है और मै समझता आया हू कि जो तुम बताते हो वही सच्ची बात है। लेकिन सच्ची बातके मुताबिक चलना दूसरी बात है। सच बात है कि वह मुझसे नही बना। अभी मुझसे कहो तो मै—वापिस चला जाऊं।' मैने कहा कि अगर हम समझे, हमको बिलकुल साबित हो जाता है कि पाकिस्तान गवर्नमेंटसे हम कभी इन्साफ नही ले सकते है—वह अपने-आप कबूल नही करते कि उन्होने कुछ गुनाह किया है—अगर उनको आप समझा न सके तो आपकी कैबिनेट[1] है, बडी कैबिनेट है, उसमे जवाहरलाल है, सरदार पटेल है, दूसरे अच्छे आदमी पडे है, वे भी उनको समझा न सके कि ऐसा मत करो, तो आखिर लडना होगा। हम आपसमें दोस्ताना तौरसे तय कर ले। क्यो न ऐसा कर सके? हम हिंदू-मुसलमान कलतक दोस्त थे तो क्या आज ऐसे दुश्मन बन गए कि

[1] मन्त्रिसभा।

एक दूसरेका भरोसा ही नही करते ? अगर आप कहे कि भरोसा नही ही करनेवाले है तो पीछे दोनोको लडना पड़ेगा। लॉजिक[1] बताती है जिसके पास फौज रहती है, पुलिस रहती है और जिनको उनके मारफत काम करना पड़ता है वह ऐसा न करें तो क्या करे। अगर यही करते है कि वे पाकिस्तानमें, एकको मारते है तो हम दोको मारेंगे, तो कौन किसका रहेगा ? अगर हमको इन्साफ लेना है तो हम यह समझ ले कि यह मेरा और आपका काम नही है। वह हमारी हुकूमतका काम है। हुकूमतको कहो वह तो हमारी मददके लिए पडी है। हमें हमला नही करना है। लेकिन लडनेके लिए तैयार रहे, क्योकि लडाई जब आती है तो हमें नोटिस देकर नही आती है। किसीको लडनेके लिए आगे कदम बढाना नही है, लेकिन अगर कोई कदम बढाता है तो पीछे दोनो हुकूमतोंका सत्यानाश हो जाता है। लडाई कोई मामूली चीज नही है। मैं आखिर कबतक यह बताऊगा। अगर दोनोके बीच समझौता नही हो सकता तो हमारे लिए दूसरा कोई चारा नही। पीछे जितने हिंदू है वे लडते-लडते बरबाद हो जाय, या मर जाय तो मुझे इसमें कोई दुःख नही। लेकिन हमें इन्साफका रास्ता लेना है। मुझे कोई परवाह नही है कि सब-के-सब मुसलमान या हिंदू इन्साफके रास्तेमे मर जाते है। पीछे जो ४॥ करोड मुसलमान है अगर यह साबित होता है कि वे तो फिफ्थ कॉलमिस्ट है, पचम स्तभ है तो उन्हें तो गोलीपर जाना है, फांसीपर जाना है, इसमें मुझे कोई सदेह नही है। तो जैसे उनको जाना है वैसे हिंदूको, सिखको जाना है। अगर वे पाकिस्तानमें रहकर पाकिस्तानसे बेवफाई करते है तो हम एक तरफसे बात नही कर सकते। अगर हम यहा जितने मुसलमान रहते है उनको पचम स्तभ बना देते है तो वहा पाकिस्तानमें जो हिंदू, सिख रहते है क्या उन सबको भी पचम स्तभ बनानेवाले है ? यह चलनेवाली बात नही है। जो वहा रहते है अगर वे वहा नही रहना चाहते तो यहा खुशीसे आ जाय। उनको काम देना, उनको आरामसे रखना हमारी यूनियन सरकारका परम धर्म हो जाता है।

---

[1] तर्कशास्त्र।

लेकिन ऐसा नही हो सकता कि वे वहा बैठे रहे और छोटे जासूस बनें, काम पाकिस्तानका नही, हमारा करे। यह बननेवाली बात नही है और इसमे मै शरीक नही हो सकता। मेरे पास कोई जादूकी लकडी नही है, तलवार नही है। मेरे पास एक ही बात रही है, ईश्वरका नाम लेना, ईश्वरका काम करना। उससे हमारे सब काम निवट जाते है। यह साधन मेरे ही पास थोडे है, यह आपके पास भी है, और जो छोटी लड़की खडी है उसके पास भी है। जो जादू है वह ईश्वरके पास पडा है। ईश्वरकी कृपा न हो तो मै क्या करनेवाला हू? लेकिन इतना समझ सकता हू मै तो बहुत वर्षोंसे, ६० वर्ष हो गए, बस लडनेवाला हू, तलवारसे नही, बल्कि सत्य और अहिंसाके शस्त्रसे। आज भी वह शस्त्र हमारे पास है, लेकिन वह मेरी अकेलेकी शक्ति नही। अगर आप सब मेरा साथ न दे तो मै बेकार हो जाता हू।

हमको जिस शक्तिसे यह आजादी मिली है उसी शक्तिसे हम उसे रखनेवाले है। इस शक्तिसे हमने अंग्रेजोको हरा दिया। बम-गोलोंसे नही हराया। लेकिन जो कुछ हमारी शक्ति रही वह नि शस्त्र थी, उससे हमने उनको हरा दिया। हिंदू हो, सिख हों, पारसी हो, क्रिस्टी हो अगर हिंदुस्तानमें बसना चाहते है तो उनको हिंदुस्तानके लिए लड़ना है और मरना है। सब हिंदुस्तानी अपने देशके लिए लडेंगे तो हमारे पास लश्कर हो या न हो, हमें कोई ताकत नही हरा सकती और न हटा ही सकती है। उन्होने कहा है वे हिंदुस्तानके वफादार रहेंगे हम उनका विश्वास करे और दिलसे करें। याद रखें कि 'सत्यमेव जयते' सत्यकी जय होती है। सत्य हमेशा जय पाता है। 'नानृतम्' अर्थात् झूठ कभी नही। यह महान् वाक्य है। इसमें हमारे धर्मका निचोड है। उसको आप कठ कर ले, दिलमें रख ले। तो मैं कहूगा और जोरोसे कहूगा कि अगर सारी दुनिया हमारा सामना करे तो हम खड़े रहनेवाले है, हमको कोई नही मार सकता है। हिंदू-धर्मका कोई नाश नही कर सकता। अगर उसका नाश हुआ तो हम ही करेंगे। इसी तरह इस्लामका हिंदुस्तानमे नाश होता है तो पाकिस्तानमे जो मुसलमान रहते है वे कर सकते है, हिंदू नही कर सकते है।

: १०० :

२७ सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनो,

मेरा खास वैद्य कौन है वह मैं आपको बतला दू? वह मेरे लिए भी अच्छा है और आपके लिए भी अच्छा है। आज मेरा वैद्य, मनसे, वचनसे और कर्मसे राम है, ईश्वर है, रहीम है। वह वैद्य कैसे बन सकता है? एक भजन सुनाया।—'दीनन दुखहरन नाथ' दुखमें—सब दुख आ जाते है, शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक जितने दु:ख एक आदमीको भुगतने पडते है। शरीरके जितने दुख है उनका हरण करनेवाला राम है, यह भजनमे कहा है। सो मैंने समझ लिया कि सबसे बडा अचूक इलाज या उपचार है रामनाम। जो लोग मेरे पास आ जाते है उनके लिए मेरे पास तो दूसरी दवाई ही नही है। हा, रामनाम है। पीछे थोडी मिट्टी ले लो, पानीका उपचार कर लो। मै जानता हू कि जिसके हृदयमे रामनाम अकित हो गया है उसको तो मिट्टी भी नही चाहिए और पानीका उपचार भी नहीं। जिंदा रहते है तो जिंदा रहेंगे, मर जायगे तो भले मर जाय। दो घोडो-पर कोई सवारी नही कर सकता। अगर मुझको रामनाममे विश्वास है तो मुझको उसीपर कायम रहना चाहिए। उससे डरे तो मरे। राम तो तारणहार है। जो मनुष्य रामनामको अपने हृदयमे अकित करता है उसको मरना है ही कहा। यह शरीर क्षणभगुर है। आज है, कल नही, अभी है दूसरे क्षणमे नही। तो इसका मै अहकार करू? जानेका समय आ जानेपर उसको जिंदा रखनेकी चेष्टा करना वह व्यर्थ है। उस मनुष्यका क्या होगा जो शरीरपर इतना अहकार करता था? नानक गुरु बडे गुरु हो गए है। उनके पीछे जितने गुरु आए उन्होने भजन-कीर्तन लिखे तो सही, लेकिन आखिरमे उन्होने गुरु नानक-का नाम दिया। यह हमारी हिंदुस्तानकी सभ्यता है। मैं ऐसा मानता हू कि बहुतसे देशोमे ऐसा होता होगा। कुछ भी हो, मै तो यहा हिंदुस्तानकी जो सभ्यता है उसकी ही बात कर सकता हू।

मीराबाई बड़ी भक्त थी। बहुत भजनोंके अंतमें मीराका नाम आता है। उसने अपना नाम नहीं दिया; लेकिन अपने भजनोंमें मीराका शब्द लगानेसे मीराके भक्तोंको संतोष मिला। वह बडी खूबसूरत चीज़ है। कहते हैं कि अर्जुनदेव बहुत बडे गुरु हो गए है और कवि भी थे। वे लिखते हैं—"कोई बोले रामनाम, कोई खुदाई, कोई सेवे गोसइया कोई अल्लाह।" यह देखने लायक बात है, यह गुरुग्रंथमें दिया है। आज जो सिखोंके बारेमें कहा जाता है वह तो नानक गुरुकी जो शिक्षा थी उसको दबानेकी बात है। ऐसी चीज़ोंसे गुरुग्रंथ साहिबकी प्रतिष्ठा बढ नहीं सकती, सिख भी बढ नहीं सकते। कुछ सिख भाइयोंने ऐसे सादे भावमें मुझसे बात की। गुरु अर्जुनदेवने ऐसा नहीं कहा है कि रामके साथ रहीमका क्या मिलना था, कृष्णके साथ करीमका क्या मिलना था? और उन्होंने पीछे मुझे और सुनाया कि कोई जावे तीर्थ और कोई हज जाय, तो सब एक है। कोई पूजा करे कोई सिर नवाए, पूजा कोई मंदिरोंमें करता है और कोई अपना शरीर है वह ईश्वरके नामपर झुका लेता है। पीछे कहते है कि कोई पढे वेद, कोई किताब। किताबके माने कुरानशरीफके है। कोई नीला कपड़ा पहनता था कोई सफेद। मुसलमान नीला कपडा पहनता है और जो खासा हिंदू रहता है वह सफेद पहनता है। पीछे कोई कहे तुर्क, कोई कहे हिंदू। तुर्कके माने मुसलमान है। प्रभु और साहब इनके बीचमें भेद रहा, रहस्य रहा वह जान लेते हैं। अगर वक्त मिले तो हिंदू भजनोंमें, कीर्तनोंमेंसे इतनी चीजें मैं सुना सकता हूं कि आप हैरान हो जायंगे कि यह हिंदू-धर्म है या सिख-धर्म है। आज हम ऐसा क्यों कहते है कि बस मुसलमानोंको यहांसे जाना ही है, मुसलमानोंको हिंदुओंके साथ बसानेकी जो योजना रखी जा रही है वह भूल है और कांग्रेसकी यह चौथी भूल है। कांग्रेस इसको करे या न करे, लेकिन यह मेरी योजना है और भूल है तो यह मेरी भूल है। दूसरे आते हैं, वे कहते है कि तू महात्मा काहेका रहा? महात्मा होकर हिंदू-धर्मका नाश करनेमें पड़ा है। लेकिन मैं तो कहता हू कि जो मेरी भूल बतलाते है वह भूल नहीं है। सही बात यह है कि आज हम दीवाने बन गए है और

दीवानेपनमे उल्टी-सीधी बातें करते है। जब हमारा दीवानापन निकल जायगा तब हम जो सही बात है वह कहेंगे। इसलिए मै कहता हू कि मेरी बात भूल नही हो सकती। जो लोग ऐसा मानते है, कि मैं भूल करता हू वे खुद भूल करते है। अगर ४॥ करोड मुसलमानोंको यहासे निकाल दोगे तो सारा जगत थूकेगा। तब क्या यह कहोगे कि पाकिस्तान क्या कर रहा है ? पाकिस्तान अपना धर्म नही पालता, इसलिए मैं हिदुओको सिखाना शुरू कर दू कि तुम भी धर्म छोड़ो ? यह तो मैने सीखा नही। हम तो अगर यहा जो मुसलमान भाई है इनकी रक्षा कर लेते है और खुद साफ रहते है तो पाकिस्तानमें भी उसका असर होगा। यह मेरा जवाब है।

आज मै सोचता हूं और यह समझनेकी बात है कि एक क्रिस्टी बहन उसे आप जानते है, राजकुमारी अमृतकौर, वह तो हेल्थ मिनिस्टर[१] है, जितने लोग कैपोमें पडे है, हिंदू-मुसलमान, सबके लिए वह कुछ करना चाहती है। मगर उसे किसीका सहारा न मिले तो वह क्या कर सकती है ? वह पक्षपात तो कर नही सकती। जो कुछ हो सकता है सबके लिए करती है। वह थोडी क्रिस्टी भी है, थोडी मुसलमान भी है, थोड़ी हिंदू भी, इसलिए उसके सामने सब धर्म एक समान है। वह चली गई और उसके साथ लडकिया भी गई, वे सब तो सेवाके लिए गई थी। सेवामे डर क्या ? लेकिन उन्होने मुझको सुनाया कि वहां जो हिंदू, सिख पडे है वे कहते है कि खबरदार, तुम मुसलमानोकी सेवा करनेके लिए जाती हो तो यहासे भागना होगा। जब मैने यह सुना तो हँस दिया। वह कहनेकी बात थी, कुछ करना थोड़े ही था। लेकिन आखिरमें तो जो बेचारे मुसलमान पडे है या थोडे क्रिस्टी पडे है, वे कोई मारधाड करनेवाले थोडे ही है। कहासे मारधाड़ करेंगे ? उनके पास है क्या ? उनकी तो आज दुर्दशा है। उन्हे धमकी क्या देना था ? इसलिए मैंने सोचा कि आपको यह कहूं जिससे हम सावधान बनें और ऐसी बातें न करें।

आखिरमें जो मै कहना चाहता हू वह यह है कि मैने लडाईकी

---

[१] स्वास्थ्यमंत्रिणी।

बात की थी तो समझ-बूझकर की थी। लेकिन हमारे अखबारनवीस है उनका काम है बातको बढाना। उन्होने हेड लाइन[1] दी कि गाधी तो लडाई करना चाहते है। कलकत्तेसे तार आता है कि गाधी भी लडाईकी बात कहते है। क्या लडाई होगी? मैने जो बात कही वह तो यह है कि मेरे मनमे स्वप्नमे भी, ख्वाबमें भी लडाईकी बात हो नही सकती। क्या आखिर मै एक ऐन मौकेपर अपना धर्म छोड दूगा? मेरा धर्म तो अहिंसा है। मैने तो कभी लडाई नही की और न किसीको लड़ना चाहिए। जो काम हमे करना है वह लडकर हम कैसे कर सकते है? मैने तो बतलाया है कि अगर पाकिस्तान गुनाह करता है और हिंदुस्तान भी गुनाह करता है, क्योकि दोनो हकूमते अलग हो गई, आजाद हो गई, तो एक हकूमत दूसरी हकूमतसे इन्साफ करवाना चाहे तो कैसे करवा सकती है? हा, मिल-जुलकर काम करे तो वह दूसरी बात है। अगर मिल-जुलकर नही कर सकते है तो पच रक्खे। वह भी नही करते तो हम लाचार बन जायगे। यह कहना कि आप मेहरबानी करके आपसमें मिलकर कोई फैसला करे, अगर वह नही कर सकते तो पच रक्खें और अगर वह भी नही करते है तो हम लाचार बन जायंगे और लडाई होगी, क्या लड़ाईकी हिमायत करना है? मुझे तो हिंदुस्तान-को यही कहना है, और पाकिस्तानको भी यही कहना है कि आपसमें मिल-जुलकर फैसला करे या पच रक्खे। लेकिन पाकिस्तानवाले कहें कि नही, 'हम तो लड़कर लेगे हिंदुस्तान' तो मैने कल सुनाया कि अगर ऐसा गुमान रक्खे तो यहा हिंदुस्तानकी हकूमत लड़ेगी नही तो क्या करेगी? अगर हकूमतका चार्ज मेरे पास दे तो मेरे पास तो कोई मिलिटरी नही है, न कोई पुलिस है, मेरा तो रवैया दूसरा है। मगर उसमे तो मै अकेला हू, मेरा साथ कौन देगा? जो हकूमत आपकी है, जो सल्तनत आपकी है वह जब ऐन मौका आएगा तो जो कुछ कर सकती है सो करेगी। मैं तो एक ही बात कहता रहूगा। मगर अहिंसाको अगर लोग नही समझते है तो मै किसको सुनाऊ?

---

[1] सुर्खी।

## : १०१ :

२८ सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनो,

सभामे कोई ऐसा आदमी है जिसे कुरानकी खास आयतें पढनेपर एतराज हो? (सभाके दो आदमियोने विरोधमे अपने हाथ उठाए। गाधीजीने कहा—) मै आपके विरोधकी कदर करूगा, हाला कि मैं जानता हू कि प्रार्थना न करनेसे बाकीके लोगोको बडी निराशा होगी। अहिंसामें पक्का विश्वास रखनेके कारण इसके सिवा दूसरा कुछ मै कर नही सकता, फिर भी यह कहे बिना नही रह सकता कि आपको अपना विरोध करनेवाले इतने बडे बहुमतकी इच्छाओका अनादर नही करना चाहिए। आपका यह बरताव हर तरहसे अनुचित है। मैं आगे जो बात कहूगा, उससे आपको यह समझ लेना चाहिए कि किसीके बहकावेमें आकर आपने जो गैर-रवादारी दिखाई है, वह उस चिडचिडेपन और गुस्सेकी निशानी है जो आज सारे देशमे दिखाई देती है, और जिसने मि० विन्स्टन चर्चिलसे हिंदुस्तानके बारेमे बहुत कडवी बाते कहलवाई है। आज सुबहके अखबारोमें रूटरद्वारा तारसे भेजा हुआ मि० चर्चिलके भाषणका जो सार छपा है, उसे मै हिंदुस्तानीमे आपको समझाता हू। वह सार इस तरह है.

"आज रातको यहा अपने एक भाषणमे मि० चर्चिलने कहा—'हिंदुस्तानमे जो भयकर खूरेजी चल रही है, उससे मुझे कोई अचरज नही होता।

"उन्होने कहा—'अभी तो इन बेरहमीभरी हत्याओ और भयकर जुल्मोकी शुरुआत ही है। यह राक्षसी खूरेजी वे जातिया कर रही है, ये जुल्म एक-दूसरीपर वे जातिया ढा रही है, जिनमे ऊची-से-ऊची सस्कृति और सभ्यताको जन्म देनेकी शक्ति है और जो ब्रिटिश ताज और ब्रिटिश पालियामेंटके रवादार और गैर-तरफदार शासनमें पीढियोतक साथ-साथ पूरी शातिसे रही है। मुझे डर है कि दुनियाका जो हिस्सा पिछले ६० या ७० बरससे सबसे ज्यादा शात रहा है, उसकी आबादी भविष्यमे सब जगह बहुत ज्यादा घटनेवाली है। और,

आबादीके घटावके साथ ही उस विशाल देशमे सभ्यताका जो पतन होगा, वह एशियाकी सबसे बडी निराशापूर्ण और दुखभरी बात होगी ।"

आप सब जानते हैं कि मि० चर्चिल खुद एक बडे आदमी हैं। वे इग्लैडके ऊचे कुलमे पैदा हुए है । मार्लबरो-परिवार इग्लैडके इतिहासमे मशहूर हैं। दूसरे विश्व-युद्धके शुरू होनेपर जब ग्रेट ब्रिटेन खतरेमे था, तब मि० चर्चिलने उसकी हुकूमतकी बागडोर सभाली थी। बेशक, उन्होंने उस समयके ब्रिटिश साम्राज्यको खतरेसे बचा लिया। यह दलील गलत होगी कि अमेरिका या दूसरे मित्र-राष्ट्रोकी मददके बिना ग्रेट ब्रिटेन लडाई नही जीत सकता था। मि० चर्चिलकी तेज सियासी[1] बुद्धिके सिवा मित्र-राष्ट्रोको एक साथ कौन मिला सकता था ? मि० चर्चिलने जिस महान् राष्ट्रकी लडाईके दिनोमें इतनी शानसे नुमाइदगी की, उसने उनकी सेवाओकी कदर की। लेकिन लड़ाई जीत लेनेके बाद उस राष्ट्रने ब्रिटिश द्वीपोको, जिन्होने लड़ाईमे जन-धनका भारी नुकसान उठाया था, नया जीवन देनेके लिए चर्चिल-सरकारकी जगह मजदूर-सरकारको तरजीह देनेमे कोई हिचकिचाहट नही दिखाई। अग्रेजोने समयको पहचानकर अपनी इच्छासे साम्राज्यको तोड़ देने और उसकी जगह बाहरसे न दिखाई देनेवाला दिलोका ज्यादा मशहूर साम्राज्य कायम करनेका फैसला कर लिया। हिंदुस्तान दो हिस्सेमे बँट गया है, फिर भी दोनो हिस्सोंने अपनी मरजीसे ब्रिटिश कामनवेल्थके मेबर बननेका ऐलान किया है। हिंदुस्तानको आजाद करनेका गौरव-भरा कदम पूरे ब्रिटिश राष्ट्रकी सारी पार्टियोने उठाया था। इस कामके करनेमें मि० चर्चिल और उनकी पार्टीके लोग शरीक थे। भविष्य अग्रेजोद्वारा उठाए गए इस कदमको सही साबित करेगा या नही, यह अलग बात है। और इसका मेरी इस बातसे कोई ताल्लुक नही है कि चूकि मि० चर्चिल सत्ताके फेरबदलके काममे शरीक रहे है, इसलिए उनसे उम्मीद की जाती है कि वे ऐसी कोई बात नही कहे या करे, जिससे इस कामकी कीमत कम हो। यकीनन आधु-

---

[1] राजनीतिक।

निक इतिहासमे तो ऐसी कोई मिसाल नही मिलती, जिसकी अंग्रेजोंके सत्ता छोड़नेके कामसे तुलना की जा सके। मुझे प्रियदर्शी अशोकके त्यागकी बात याद आती है। मगर अशोक बेमिसाल हैं और साथ ही वे आधुनिक इतिहासके व्यक्ति नही हैं। इसलिए जब मैंने रूटरद्वारा प्रकाशित किया हुआ मि० चर्चिलके भाषणका सार पढा, तो मुझे दुःख हुआ। मै मान लेता हूं कि खबरें देनेवाली इस मशहूर संस्थाने मि० चर्चिलके भाषणको गलत तरीकेसे बयान नहीं किया होगा। अपने इस भाषणमें मि० चर्चिलने उस देशको हानि पहुंचाई है, जिसके वे एक बहुत बड़े सेवक है। अगर वे यह जानते थे कि अंग्रेजी हकूमतके जुएसे आजाद होनेके बाद हिंदुस्तानकी यह दुर्गति होगी, तो क्या उन्होंने एक मिनटके लिए भी यह सोचनेकी तकलीफ उठाई कि उसका सारा दोष साम्राज्य बनानेवालोंके सिरपर है, उन 'जातियों' पर नहीं जिनमें चर्चिल साहबकी रायमें 'ऊंचीसे ऊंची संस्कृतिको जन्म देनेकी ताकत है।' मेरी रायमें मि० चर्चिलने अपने भाषणमें सारे हिंदुस्तानको एक साथ समेट लेनेमें बेहद जल्दबाजी की है। हिंदुस्तानमें करोड़ोंकी तादादमें लोग रहते हैं। उनमेंसे कुछ लाखने जंगलीपन अख्तियार किया है, जिनकी कि कोई गिनती नही है। मैं मि० चर्चिल-को हिंदुस्तान आने और यहाकी हालतका खुद अध्ययन करनेकी हिम्मतके साथ दावत देता हूं। मगर वे पहलेसे ही किसी विषयमें निश्चित मत रखनेवाले एक पार्टीके आदमीकी हैसियतसे नहीं, बल्कि एक ग़ैरतरफ़दार अंग्रेजकी तरह आएं, जो अपने देशकी इज्जतका किसी पार्टीसे पहले खयाल रखता है और जो अंग्रेज सरकारको अपने इस काममें शानदार सफलता दिलानेका पूरा इरादा रखता है। ग्रेट ब्रिटेनके इस अनोखे कामकी जांच उसके परिणामोंमें होगी। हिंदुस्तानके विभाजनने बेजाने उसके दो हिस्सों-को आपसमे लड़नेका न्यौता दिया। दोनो हिस्सोंको अलग-अलग स्वराज देना, आजादीके इस दानपर धब्बे-जैसा मालूम होता है। यह कहनेसे कोई फायदा नही कि दोनोंमेंसे कोई भी उपनिवेश ब्रिटिश कामनवेल्थसे अलग होनेके लिए आजाद है। ऐसा करनेसे कहना सरल है। मैं इसपर और ज्यादा कुछ नही कहना चाहता। मेरा इतना कहना यह बतलानेके

लिए काफी होगा कि मि० चर्चिलको इस विषयपर ज्यादा सावधानीसे बोलनेकी जरूरत क्यों थी। परिस्थितिकी खुद जाच करनेके पहले ही उन्होने अपने साथियोके कामकी निंदा की है।

आप लोगोमेंसे बहुतसोने मि० चर्चिलको ऐसा कहनेका मौका दिया है। अभी भी आपके लिए अपने तरीकोंको सुधारने और मि० चर्चिलकी भविष्यवाणीको झूठ साबित करनेके लिए काफी वक्त है। मै जानता हू कि मेरी बात आज कोई नही सुनता। अगर ऐसा नही होता और लोग उसी तरह मेरी बातोको मानते होते, जिस तरह आजादीकी चर्चा शुरू होनेसे पहले मानते थे, तो मै जानता हू कि जिस जगलीपनका मि० चर्चिलने बडा रस लेते हुए बढा-चढाकर बयान किया है, वह कभी नही हो पाता और आप लोग अपनी माली और दूसरी घरेलू मुश्किलोको सुलझानेके ठीक रास्तेपर होते।

## : १०२ :

### मौनवार, २९ सितम्बर १९४७

( लिखित सदेश )

सुनता हू कि मेरे भाषणमें पाकिस्तान और यूनियनमे लडाईकी शक्यताके जिक्रसे पश्चिममे शोर-सा हो गया है। मै नही जानता कि अखबारवालोने बाहर क्या रिपोर्टे भेजी है। किसी बयानका सार बनानेमे मानी बदल जानेका खतरा रहता है। १८९६ मे दक्षिण अफ्रीकाके बारेमें मैने हिंदुस्तानमें कुछ लिखा था। उसका छोटा-सा सार दक्षिण अफ्रीकाके अखबारोमे छपा। नतीजेमे मेरी तो जान ही जानेवाली थी। सार इतना गलत था कि मुझे मार-पीट करनेके बाद २४ घंटोंके अदर वहाके गोरोका गुस्सा पश्चात्तापमें बदल गया। उन्हे अफसोस हुआ कि एक बेगुनाह आदमीपर उन्होने बिना कारण जुल्म किया। यह कहानी याद करनेका मेरा मतलब इतना ही है कि किसीपर जो उसने नही कहा या नही किया, उसकी जिम्मेदारी न डाली जाय।

मैं दृढतासे कहना चाहता हू कि मेरे किसी भाषणमेंसे यह अर्थ नही निकाला जा सकता कि मैंने लडाईको उत्तेजन दिया है या लडाईकी हिमायत की है। क्या लडाईका नाम लेना ही गुनाह है? गुजरातमें एक वहम है कि अगर किसी घरमे सापका नाम लिया जाय तो चाहे किसी बच्चेके मुहसे ही वह क्यो न निकला हो, साप निकलकर रहता है। मै उम्मीद रखता हू कि हिंदुस्तानके आम लोगोमे लडाईके बारेमें ऐसा कोई वहम नही है।

मेरा यह दावा है कि आजकी परिस्थितिपर अच्छी तरह गौर करके और साफ-साफ कहकर कि किन हालातमे लडाई हो सकती है, मैंने दोनो हिस्सोकी सेवा की है। मेरे कहनेका हेतु लडाई कराना नही था, जहातक हो सके लडाईको रोकना था—मैंने यह बतानेकी कोशिश की है कि अगर लोगोने पागलपनमें लूट-मार, आग लगाना, कत्ल करना वगैरह बद न किया तो उसका अनिवार्य परिणाम लडाई होगा। एकमेंसे एक निकलनेवाली चीजोकी तरफ ध्यान खीचनेमे क्या बुराई है?

हिंदुस्तान जानता है और दुनियाको भी जानना चाहिए कि मैं अपनी पूरी ताकतसे यह कोशिश कर रहा हू कि भाई भाईका गला न काटे। अगर यह न रुके तो उसका परिणाम लडाई ही हो सकता है। जब एक ऐसा इन्सान जो अहिंसाको जिंदगीका कानून मानता है, लडाईका जिक्र करता है तो उसका हेतु लडाईको रोकना ही हो सकता है। मेरी उम्मीद है कि मेरे इन बुनियादी विचारोमें मेरी मृत्युतक फर्क नही आनेवाला है।

## : १०३ :

### ३० सितम्बर १९४७

भाइयो और बहनो,

मेरा ऐसा खयाल है कि हम तो हैवान बन गए है। आज हिंदू और मुसलमान दोनो हैवान बन गए है। कौन किसको कहे कि किसने कम किया और किसने ज्यादा किया। किसने कम मारा और किसने ज्यादा

मारा। उसमे हम नही जा सकते। हकूमतको वहासे शरणार्थियोंको बुलानेकी चेष्टा करनी चाहिए, और वह ऐसा दूसरी हकूमतसे मिलकरही कर सकती है। वे सब पेचीदगिया पडी है। पेचीदगिया तो है, लेकिन हकूमत बनी है तो वह पेचीदगिया रफा करनेके लिए है। हकूमतके जो अपने मातहत[1] रहते है उसे उनकी हिफाजत करनेका धर्म पालन करना है और नही तो हकूमत छोड देना है। इसमे मुझे तनिक भी सदेह नही है। हमारी हकूमत आज तो ऐसी ही है कि जिसको हम बना सकते है और उसको मिटा सकते है। इसका नाम डेमोक्रेसी[2] है। लोगोको खुद ऐसा होना चाहिए कि जो काबूमे रहते है, जो सयममे रहते है, नियमन क्या चीज है उसे जानते है, पालन करते है। ऐसा न करे तो पीछे वे निकम्मे बन जाते है। हमको अगर अपने धर्मपर कायम रहना है तो यह सीख लेना चाहिए। हमारे बच्चोको जबसे समझ आ जाती है तबसे उनको यह समझाना है। आप उनको ऐसी तालीम दे कि धर्म तुम्हारे दिलमे है, उसकी रक्षा मै नही कर सकता हू। मै तो पिता हू, लेकिन पिताको अपने लडकोको, अपनी लडकियोको सिखाना है। मैने तो सिखाया है कि अपने धर्मकी रक्षा खुद करो। मेरा लडका एक जनूबी[3] अफ्रीकामे पड़ा है। एक कही शराब पीता है। कहा पडा है, मुझको पता भी नही है। एक बेचारा मुसीबतसे अपनी रोटी कमा लेता है। वह नागपुरमे पडा है। एक लड़का यहा पडा है। वह मुसीबतसे कमाता है ऐसा तो नही। तो क्या उन सबके धर्मका ख्याल मै करू ? मै तो करता नही हू। और क्यो करू ? वे बडे हो गए है। अगर छोटे हो तो उनके धर्मकी रक्षा मै कर सकता हू। वह भी कैसे ? लडकेको सिखा दिया कि अगर सचमुच तेरा हिंदू धर्म है तो तुझमे उसके लिए मरनेकी ताकत होनी चाहिए, मारकर तू नही बच सकता। मानो कि लडका है उसके पास एक लाठी है, दूसरेके पास रिवाल्वर पडी है तो रिवाल्वरवाला लाठीवालेको मार डालेगा। ऐसे, धर्मकी रक्षा नही हो सकती।

---

[1] नीचे, [2] जनतंत्र; [3] दक्षिण।

क्यो नही हो सकती? लाठीवाला लड़का मारा गया। उसका रिश्ते-दार आया। रिवाल्वरवाला लडका एक है। एकसे दो नही बन सकता है। वह एक रिवाल्वर लाता है। या एक ब्रेनगन और स्टेन-गन लाता है तो सामनेके लोग १० स्टेनगन लावेंगे। उसको कहेंगे, बोल इस्लाममे आता है या नही, या क्रिस्टी बनता है या नही, नही तो देख हम १० आदमी है, तेरे हाथमे जितने हथियार पडे है वे सब बरबाद हो जायगे। बोल, जल्दी कर, नही तो हम तुझे शूट कर देंगे। तो वह डरके मारे कहेगा कि आप मुझे मजबूर करते है, मगर मेरा धर्म तो ऐसा है कि वह अपनी देहसे मुझे प्यारा है।· धर्मका पालन करना उसके माने है कि हम ईश्वरके बने। प्रह्लादके साथ यही हुआ। वह तो रामका नाम लेता था। पिताने कहा, तू रामका नाम लेता है, छोड दे इसे। तो वह कहता है कि मै दूसरा नाम नही लूगा। इसपर एक भजन है, कितना सुदर है। प्रह्लादने पाटीपर लिखा है रामनाम और गुरु लिखाता है दूसरा। तो कहता है कि मेरी पाटीपर रामका ही नाम लिखा जा सकता है, दूसरा नाम मेरे पास नही है। वह बडा मीठा भजन है। प्रह्लाद कहता है कि रामनामके सिवा उसकी कलम कुछ लिख ही नही सकती। कहा तो यह जाता है कि वह १२ वर्षका लडका था। १२ वर्षके लडकेने अपने बापका सामना करके अपने धर्मकी रक्षा की। कैसे धर्मकी रक्षा की उसको छोड़ता हू। उसे सब हिंदू जानते है। लेकिन बात यह है कि प्रह्लाद अपने धर्मकी रक्षा अपने आप कर सका। ऐसे हजारो दृष्टात हर मजहबमें पडे है। तो हमारे लडके-लडकिया है, कोई लड़कीको ऐसा मानकर बैठे कि वह हमेशाके लिए अबला है तो मै कहता हू कि जगत्मे कोई अबला है ही नही, सब सबला है। जिसके दिलमें अपने धर्मकी चोट पडी है वे सब सबल है, वे दुर्बल नही है। इसलिए मै कहूगा कि हम पहली तालीम अपने लडके-लडकियोको यह दे कि वे अबल नही है। बच्चेका धर्म बच्चेके पास है। हमारे भाई जब आते है मै उनको कहता हू कि हकूमत जितना कर सकती है करे, लेकिन अगर आप ऐसा मानते होगे कि हकूमत कुछ न करे तो सब-के-सब इस्लाममें चले जायगे, तो

यह खराब बात है। हिंदुस्तानमे आज करोडों मुसलमान है, यह बहुत सोचनेकी चीज है, वे है कौन? वे कोई अरबिस्तानसे नही आए। अरबिस्तानसे जो आए वे करोडोंकी तादादमें नही थे। करोडोकी तादादमे जो मुसलमान बने वे सब-के-सब हिंदू थे। या कहो कि वे बुद्धिस्ट[1] थे। तो बुद्धिस्ट और हिंदूमें फर्क क्या पडा है? मेरे पास तो कोई फर्क है नही। अफगानिस्तानमें कौन थे, उसका तो सबको पूरा पता होना चाहिए या नही? बादशाह खानने मुझसे कहा कि हम तो पहले बौद्ध थे, पीछे इस्लाममें आए। इसलिए जो हमारी पुरानी सभ्यता थी उसे हम भूल थोड़े ही गए है। उसे भूल कैसे सकते है? उन्होने बताया कि हमारे जो देहात पडे है उनके नाम भी पहले सस्कृतमे थे। अब हमने उनका नाम बदल दिया है। यह सब किया, लिबास बदला, सब कुछ बदला, लेकिन जो चीज हममें पडी थी उसको हम नही बदल सकते है। उसे कैसे भूल सकते है? और पीछे यहा मद्रासमे, बंगालमें क्या, सब जगह, जिधर जाओ वहा, सब-के-सब आपके हिंदू पड़े थे। आप पूछो, जैसा कि मै अपने दिलको पूछता हूं, वे खुद इस्लाममें आए। क्यो आए? वे इस्लाममें आए उसके लिए गुनहगार मैं। प्रायश्चित्त आपको करना है, मुझको करना है। हा, अगर उन्होने अच्छा काम किया और हिंदू-धर्मसे भी बुलन्द धर्म ले लिया तो पीछे हम भी उसके साथ चले और सब कलमा पढे, इस्लामका नाम लें और इस्लामका जयघोष करे। लेकिन ऐसा हुआ तो नही। तो आज हम किससे मारपीट करेगे? किसको यहासे निकाल देंगे? वे हमारे ही लोग है। हमारे ही दादा परदादाके वक्त, चार पीढी कहो, पाच पीढी कहो, छः पीढी पहले कहो, लेकिन ये हमारे लोग थे। वे सब हिंदू थे और मुसलमान बने। मैंने हिंदू-धर्मियोंको सारे हिंदुस्तानमें घूमकर बताया है कि याद रखो आप लोगोंमें बडी दुष्टता है, आपने अस्पृश्यताको धर्मका हिस्सा मान लिया है, उसका नतीजा क्या हुआ? एक हिस्सा हमारा पचम वर्ण बन गया। वर्ण चार, हमने पाच बनाए और वह पाचवा अति शूद्र कहा

---

[1] बौद्ध।

जाता है। वे हमसे बाहर रहे। उसका खाना भी अलग। हमारे बीचमें नही रह सकते उन्हे तो हमारा गुलाम रहना चाहिए। उसमेंसे पीछे वे मुसलमान बने। तो सब ऐसे नही थे। पीछे तो काफी ब्राह्मण भी मुसलमान बने। काफी तादादमें क्षत्रिय भी बने और वैश्य भी बने। लेकिन वे थोडी-थोड़ी तादादमें ही बने। आज करोडोकी तादादमे जो मुसलमान बन गए हैं, उसका हिसाब तो यह है जो मैंने बताया। वे अस्पृश्यतामेंसे मुसलमान बने। आज हम कितना तूफान हिंदुस्तानमें करते हैं और कहते है कि मुसलमानोंको यहासे मार-पीटकर, किसी-न-किसी तरहसे उनको रज पहुचाकर हटा दें। कहा हटाए, किस जगहमें हटाए इसका कोई खयालतक नही करता। हमको सोचना चाहिए जब हमपर कोई हमला करता है और कहता है कि तू इस्लाममें आ, पीछे हमारा खात्मा हो जाता है। मैं मानता हू कि इस्लामने जबर्दस्ती मुसलमान बनाना कभी नही सिखाया। मैं तो मुसलमानोंके साथ बैठनेवाला हू। मेरे जो दोस्त हैं वे कहते है कि इस्लाम कभी नही सिखलाता है कि किसीपर जुल्म करके उसको इस्लाममें लाना। वह अपने-आप आना चाहते हैं तो आए। उसके पास इस्लामकी खूबिया रक्खो। लेकिन यह नही कि फुसलाकर, धोखा देकर, पैसा देकर या जालसे इस्लाममें लाना। लेकिन हमारे जो मुसलमान पडे हैं वे हमारे सगे भाई हैं। इसलिए मैं कहूगा कि हम सोच-विचारकर काम करें। हम सोचें, वे लोग क्यो इस्लाममें गए? पैसेके लिए। अरे, पैसा कमाना है, कुछ भी करना है, जाओ, कहीं भी दुनियामें, लेकिन अपने धर्मको साथ लेकर जाओ। अगर वह छोड़ देते है तो आपने सब कुछ छोड दिया। मैं तो आपसे एक ही बात कहना चाहता हूं, हम किसी मुसलमानको मारनेकी चेष्टा न करें। मुसलमान मारें तो मारे। मारें तो वह बुरा है। उसको हम बुरा मानेंगे लेकिन अगर वह बुरा है तो हम उसके बुरेका बदला बुराईमें कैसे दें। बुराईका बदला भलाईसे दे सकते है। वह शराब पीता है तो हम शराब पीवें? रडीबाजी करता है तो रडीबाजी करें? वह जुवा खेलता है तो हम जुवा खेलें? एक आदमी तलवार चलाता है तो

हम भी तलवार चलाए, और बच्चोंको मार जाता है तो हम भी बच्चोंको मार डाले? वह अगर लडकियोंको ले जाता है तो हम उसकी लडकीको ले जायं? तो उसमें और हममे फर्क क्या हुआ? मै तो कोई फर्क नही पाता हू। मैं तो कहता हू, "ऐ मुसलमान, हिंदू और सिख, कुछ समझो तो सही, मजहब क्या सिखाता है?" इकबालने कहा— "मजहब नही सिखाता आपसमे वैर करना।" इकबालने ऐसा कहा उस वक्त वह लदनमे रहता था। वह वडा कवि था। उस वक्त वह राउड टेबुल कान्फ्रेंसमें आया हुआ था। वहा उसके लिए सबने एक खाना किया तो मुझको भी बुलाया गया। मै चला गया। उसने कहा कि मैं तो ब्राह्मण हू। क्यो ब्राह्मण हू? क्योंकि मेरे वापदादे ब्राह्मण थे। कहाके? काश्मीरके। मैं तो काश्मीरका हू। ब्राह्मण हू और अब मै इस्लाममें आया हू। अभी नही बहुत पीछे हम इस्लाममे आए। तो भी हममे ब्राह्मण खून पडा है, और इस्लामका तमद्दुन[1] हमारेमे पडा है। तो इकबालने कहा "मजहब नही सिखाता आपसमें वैर करना।" पीछे उसने दूसरा-तीसरा भी लिखा है। वह दूसरी बात है। इकबाल तो चले गए, लेकिन हम इतना तो सीख लें कि हमको हमारा धर्म नही सिखाता है कि हम किसीसे वैर करे। इसलिए मैं कहूगा कि हम इन्सान बनें। इन्सान बनें तो हम हिंदुस्तानको ऊचा ले जाते है। आज तो हम हिंदुस्तानको गिरा रहे है। ईश्वर करे कि हम हिंदुस्तानको कभी गिराए नही।

## : १०४ :

१ अक्तूबर १९४७

भाइयो और बहनो,

एक बहनने मुझको कल खत लिखा है, उसमे वह लिखती है

---

[1] संस्कृति।

कि मै कुछ सेवा करना चाहती हू और मेरे पतिदेव भी कुछ सेवा करना चाहते है। लेकिन हमको कोई बताता नही कि क्या करें। यह प्रश्न बहुत लोग करते है; लेकिन मैंने ऐसे प्रश्नोका एक ही जवाब दिया है कि हकूमतका क्षेत्र, सरकारका क्षेत्र, वह तो छोटा रहता है लेकिन सेवाका क्षेत्र बहुत बड़ा रहता है। इतने दु.खी और पीडित भूखे और नगे है, लबा-चौडा सेवाका क्षेत्र पडा है। इसमें किसीको पूछने-की गुजाइश ही नही रहती है। जो सेवा करना चाहता है वह करे। लेकिन हम ऐसे पगु बन गए है कि हमको किसीको पूछना पडता है। तो मै बता दू क्या करें? आखिरमें देहली स्वच्छताके लिए कितनी मशहूर है? उसमे इतने कैंप पडे है और उनमें कितनी स्वच्छता है, वह मै जानता हू। लोग वहा बीमार हो जाते है यहा जितने शिविर पडे है उनमें इतनी गदगी भरी रहती है कि उसका बयान करना बड़ी मुसीबतका काम है। जहा खून-खराबा हो गया है, वहा भी बस ऐसा ही पडा है। दिल्लीकी म्यूनिसिपैलिटी कभी भी सफाईके लिए मशहूर नही रही। देहली शहरकी म्यूनिसिपैलिटीने शहरको साफ-सुथरा कभी रखा हो और दुनियामेंसे लोग आकर देहली देखें और कहें कि अगर कोई स्वच्छ शहर देखना चाहे तो देहली देखे, ऐसी तो बात नही है। सफाई हो तो लोगोके मकान साफ हो, लोगोंके पाखाने साफ हो, लोगोके बैठनेका, सोनेका स्थान साफ हो। ऐसे ही लोगोके दिल भी साफ हो। तो अगर दूसरा काम न मिल सके तो मै कहूगा कि इतना काम तो है ही। यह हो सकता है कि वह कैंपोमें न जा सकें तो और भी जगहें है। कही भी हम पूरी सफाई रखें तो उसका असर सारे दिल्लीके शहरपर पडता है। ऐसा मानकर हर एक आदमी अपने मकानको, और अपने दिलको, आत्माको साफ ही रखे। उसका नतीजा मुझे बतानेकी जरूरत नही। मै तो उस बहनको कहता हू कि अगर वह सचमुच सेवा करना चाहती है, सेवा-भावसे—नामके लिए नही, तो सेवा करनेके लिए आपके लिए बहुत बडा क्षेत्र दिल्लीमें पडा है। उसको मुझे कुछ भी बतलानेकी आवश्यकता नही और अगर यह कर सकें, दिल्लीवासियोके लिए दिल साफ हो जाय, यहा जितने आश्रित

लोग आते है वह भी साफ हो सकें तो वह तो एक बहुत बुलंद काम होगा और वे आदर्श दपति बन जायगे। दूसरे उनकी नकल करेंगे।

अभी मेरे पास दो तार आए है। एक लिखता है कि हमको तो ऐसा लगता था कि हिंदुस्तानके लोग बहुत अच्छे है और वहा हिंदू-मुसलमान सब मिले-जुले ही रहते है। यह तार मुसलमान भाईका है। अब हिंदुस्तानमें क्या हो गया है कि हिंदू-मुसलमान एक-दूसरेके साथ बैठ भी नही सकते। एक-दूसरेके साथ झगडते है, एक-दूसरेको काटते है और जगली पशु-से बन गए है। दिल्लीको ले । दिल्लीके हिंदू, सिख, मुसलमानोंको अपनाना चाहते है, और उनको भाई बनाकर रखना चाहते है, बशर्ते कि वे अपनी वफादारी यूनियनके प्रति सच्चे दिलसे जाहिर कर दे। जो यूनियनमें रहना चाहते है, मैं हू या आप है या कोई भी, ऐसा तो सबको करना ही चाहिए। यह मुसलमानोके लिए खास नही है, सबके लिए है और जरूरी है। फिर मुसलमानोंके पास काफी हथियार पडे है, बहुतसे मिल गए है, लेकिन सब नही आए। पुलिसके जरिए तहकीकात चल रही है, लेकिन पुलिसके जरिएसे सब तो आ नही सकते है। तो वे अगर साफ-दिल है और हिंदुस्तानके साथ लडना नही चाहते तो वे हिंदुस्तानके वफादार बने। कोई मुसलमान-ताकत हो और हिंदुस्तानपर हमला करे तो उससे भी लड़ना चाहिए। यह ठीक है कि अगर उन्हें हिंदुस्तानके साथ लडना नही है, तो उन्हे हथियारोकी क्या जरूरत है? हमारे यहा क्रिस्टी बहुत थोडे है, लेकिन अगर किसी क्रिस्टी-मुल्कके साथ, जर्मनके साथ लडाई छिड गई तो उन्हे उसके साथ हमारी ओरसे लडना होगा और यूनियनका वफादार रहना होगा। यह तो ठीक है कि अगर मुसलमान वफादार है, उनको हिंदुस्तानसे लड़ना नही है तो फिर हथियारोकी जरूरत क्या है? उनको हथियार अपने-आप दे देना चाहिए। यह तो सब ठीक है लेकिन जिस तरह वह बात कही गई उसमे जहर भरा था। आज तो शायद ५० हजार या इससे ज्यादा मुसलमान कैंपोमे पडे है, उनको दिल्लीमेंसे हमने निकाल दिया है। कुछको कत्ल कर दिया है। कैसा ही बहादुर आदमी हो, लेकिन मौत तो कोई पसद नही करता। कोई

तिजारत करना चाहता है, कोई और कुछ करना चाहता है, वह सोचते है, चलो, जिंदा तो रहेंगे, यहासे भाग-भागकर कहा जाए? सो उन्होने पनाह ले ली है पुराने किलेमे, और हुमायूकी कब्रके नजदीक जो बगीचा है उसमे। उनपर पानी आता है, सब कुछ होता है। पूरी डाक्टरी मदद नही मिल सकती है। यह डाक्टर नैयर मुझको वहाकी हालत सुनाती है। चार घटे रोज उनको देती है। वहा काफी गर्भवती पडी है। उनके बच्चे पैदा कराने है। उसके लिए नर्से चाहिए, कुछ दवा भी चाहिए, सब कुछ चाहिए। वह सब आहिस्ते-आहिस्ते होता है। वे ऐसी हालतमें पडे है तो क्यो पडे है? हिंदू कहते है कि हमने उन्हे निकाल दिया है उसमे हमने कोई गुनाह नही किया। लोग कहते है कि उन्हे हम वापिस भी ला सकते है कब, जब वे देशके लिए वफा-दार हो जाय। मै कहता हू कि उनको तभी वापिस लाया जा सकता है जब उनके लिए दिल साफ हो जाय। मान लो, वे वफादार भी नही रहे मान लो कि वे असला[1] भी नही देते, क्या इसीलिए हम मुसल-मानोको मारें-काटें? चार करोड या साढे चार करोड मुसलमान पडे है, अगर उसमे एक करोड या एक लाख भी कहो, वह अपने घरोमें छुपा-कर अस्त्र रखते है तो आपकी मिलिटरी है, पुलिस है, वह सब उनको घरसे बाहर ला नही सकती? आज पुलिस अग्रेजोके जमानेकी नही है। अगर हम मुसलमानोको मारें, उनके बच्चोको काटें, बहनोंको काटे, तो उसका नतीजा क्या होगा, यह आप देख लें। मैने कहा है कि हम गिर गए है। जब १५ अगस्तको आजादीका दिन मनाया गया, हम आजाद बन गए, तब दो-चार दिनके लिए तो सब भाई-भाई होकर रहे, तो उस वक्त कोई अस्त्रोके लिए कुछ नही कहता था। उस वक्त वफादारीकी भी बात नही थी। सब बिलकुल ठीक था। आज सब भूल गए है कि वे भाई है। वे हमें, आपको मारते है, उसमे गुनहगार तो मुस्लिम लीग थी। दिलमे गुस्सा भरा था। लेकिन आजादीका एक तेज आ गया और घडीभर हम भूल गए कि वे कभी दुश्मन

---

[1] लड़ाईके हथियार।

थे। यह नजारा मैंने कलकत्तेमे देखा। सारे हिंदुस्तानभरमें ऐसा हो गया। लेकिन बादमे वह गुस्सा निकल आया और उन्होंने कहा कि अब तो हिंदुओ, सिखोको काटना चाहिए। काटो, निकाल दो। तो अब हम क्या करें। हम और आप मुसलमानोके साथ शर्त करे ? हम करे भी तो वह काम हमारा नही है। लेकिन हमारे नामसे हमारे लिए, जो हमारे नुमाइदे[1] हकूमत चला रहे है उनको करना है। वे नही करते तो ऐसा नही है। आप देख ले, वे कोशिश कर रहे है और थोडे-बहुत असला ले भी लिये है। ऊचे पहुचकर हम एकदम नीचे गिर गए और रोज-बरोज गिरते जा रहे है। मैने कहा है कि दोनों शर्तें भले कायम रखो लेकिन इसके साथ एक और शर्त भी लगा दो तो पीछे आप आरामसे काम कर सकते है। वह शर्त यह है कि हम कानून अपने हाथोमे नही लेगे। उन्हे सजा करना हमारा काम नही था, हम कबूल करते है कि हम बेवकूफ बने। मै मानता हू कि मुस्लिम लीगने पहिले बेवकूफी की, लेकिन एक आदमी घोडेकी सवारी करता है और दूसरा भी सवारी करता है, तो पहिला आदमी घोड़ेपरसे किसी कारणसे गिर जाता है, तो क्या जो दूसरा घुडसवार है वह भी गिर जाय ? पीछे दोनोका नाश हो जाता है। हमें इस तरह उनका मुकाबला क्या करना था ? हम मुकाबला करेंगे किस चीजमे ? जैसा कि मैंने बतलाया है, जितना ज्यादा भलापन उनमें है उससे ज्यादा हम लाए। लेकिन जितनी दुष्टता उनमे है, उतनी ही दुष्टता हम करेंगे ऐसा मुकाबला करे तो हम दोनो गिरते है। वे बुराई करते हैं तो इस चीजको हमारी हकूमत दुरुस्त करेगी। हमारी हकूमत देख लेगी कि हमारा कोई भी आदमी पाकिस्तानमें पडा है, हिंदू हो, सिख या क्रिस्टी हो, वह वहा माइनारिटी[2]मे है और उसकी देखभाल अगर पूरी तरह नही होती है, उनको वहा काटते है, उनकी लड़कियोको उठा ले जाते है, उनकी जायदाद ले लेते है और उन्हे जबर्दस्तीसे इस्लाममें लाते है तो उसका जवाब हमारी हकूमत देगी। हम कौन जवाब

---

[1] प्रतिनिधि [2] अल्प संख्या

देनेवाले है ? जवाब देनेकी कोशिश करके हम जाहिल[1] बन जाते है। हम कभी जाहिल नही बनेगे। यह आजादीकी बडी भारी निशानी है। उसमे हम बिलकुल नापास साबित हुए है। उसका नतीजा क्या हुआ ? मेरे दिलमें आता है कि हममेंसे जो सचमुच कातिल बने है, वे कौन है यह तो मै जानता नही हू, लेकिन है तो सही और वे तजवीजसे काम कर रहे है कि आज इतना खून करे, आज इतने घर जला दें, इतने मकान खाली करवा दें। वे करनेवाले कहा है. यह मैं जानता नही, लेकिन ऐसा होता है तो हम तो गिरते ही है। इसलिए हमको कबूल कर लेना है कि यह हमारी बेवकूफी है। उस बेवकूफीको हम निकाल देगे और पीछे जितने पडे है उनको लाएगे। सल्तनतको और हकूमतको यह देखना है कि जितने लोगोको पाकिस्तानमें ईजा हुई है, जितने तबाह कर दिए गए है उन सबको पाकिस्तान मिन्नत करके बुलावे और जिनकी जायदाद लाहौरमें है, वह जायदाद उनको वापिस मिले। उनके मकान जो ले लिए गए है उनको वापस देना है। कितने बुलद मकानात मैंने देखे है। लडकियोकी कितनी तालीमगाह[2] वहा है। तालीमका जो इतजाम लाहौरमे रहा, वह हिंदुस्तानमें किसी जगहपर नही रहा। लाहौर तालीमके बारेमें पहिले दर्जेपर था। वह लाहौर आज कहा है ? लाहौरको, वहाकी सस्थाओको बनानेमें लाहौरकी हकूमतने हिस्सा नही लिया है, पैसा नही दिया है। पजाबके लोग तगडे है, बडी तिजारत करनेवाले है, पैसा पैदा कर लेते है, बडे-बडे बेकर पडे है, वे लोग जैसा पैसा पैदा करनेमे होशियार है वैसे पैसा खर्च करनेमे है। मैंने यह सब आखोसे देखा है। उन्होने इतने मकानात बनाए, इतने कालेज औरतो और मर्दोंके लिए रक्खे और पीछे ऐसे आलीशान अस्पताल बनाए, वे सब उनको वापस करना चाहिए। ५० मील लबा कारवा आ रहा है, बेहाल पडा है। हकूमतके हाथमें अगर हम अपने दुखका बदला लेना छोड देते तो हम जाहिल नही बनते। यह मैंने बतलाया। मेरे पास विदेशसे मुसलमान भाईका तार आया है। लोग ऐसे क्यो बन

---

[1] मूर्ख [2] शिक्षणालय

गए है, भाई-भाई बने, हम तो मुसलमान है मगर हम नही चाहते है कि आपसमें लडे, इस्लाम ऐसा नही सिखाता। मैंने कहा ही है कि आप लोग जागे। इतना मै कह दू, आप मेरी न माने तो न माने, मगर मै ऐसी चीजोका गवाह तो नही बनना चाहता हू। मै यह गिरावट देखना नही चाहता हूं। मेरी तो यही ईश्वरसे प्रार्थना है कि मुझे इससे पहले उठा ले। अगर हालत न सुधरी तो मेरे दिलमे ऐसा अगार पैदा हो जायगा कि मुझे भस्म कर डालेगा। मेरा दिल कहता है तू यह देखकर क्या करेगा। हिंदुस्तानकी आजादीके लिए तूने अपनी जान कुर-बान करनेकी कोशिश की, जान तो नही गई लेकिन आजादी तो मिल गई। लेकिन आजादीके साथ-साथ तू यह नतीजा देखनेके लिए जिंदा रहकर क्या करेगा? तो मेरी तो दिन-रात ईश्वरसे यह प्रार्थना रहती है कि मुझको तू यहासे जल्दी उठा ले। या मेरे हाथमे एक बाल्टी[1] रख दे ताकि उसके मार्फत इस अगारको बुझा दू।

यहा एक अस्पताल है। अस्पतालमे बहुतसे घायल मुसलमान पडे है, सब मुसलमान नही है थोडे हिंदू भी पडे है। उनको घायल और कत्ल करनेकी किसीने कोशिश की। ऐसी कोई पार्टी पड़ी है, देहातसे आई है। उन्होने बिलकुल एक छापा मारा, दरवाजेसे नही, लेकिन छोटी-छोटी खिडकिया रहती है उसमेंसे भीतर घुसे, और चार या पाच मरीजोको कत्ल करके भागे। इससे ज्यादा कोई जहालत[2]की वहशियाना[3] बात मै नही जानता। किसी लडाईमें भी ऐसा नही होता। लडाइयोमे काफी अस्पतालोमे गोलिया चली है, लेकिन इस तरहसे तो कभी नही हुआ।

और एक बात सुनाता हू। ट्रेन आती है तो उसमे पाच आदमी एक आदमीको खिडकीमेंसे फेंक देते है, जैसे सामान फेक दिया। तो वह तो मर ही जायगा। यह आजकी बात है और अस्पतालका किस्सा वह कलकी बात है या परसोकी होगी। इसमें शर्मिंदा होना किसको है? सिर झुकाना किसको है? आपको, मुझको। जितने हम पडे है हिंदू, उनको।

---

[1] पानी की बाल्टी [2] मूर्खता [3] जगली

पीछे ऐसा कहते हैं कि मुसलमान भी ऐसे हैं। मैं वह समझता हूं। वहां पश्चिम पंजाबमें जो होता है उसका जवाब हकूमत मांगे।

## : १०५ :

२ अक्तूबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आज एक सिख भाई[1] मेरे पास आए थे। उन्होंने कहा कि मुझसे किसीने पूछा कि आपने गुरु अर्जुनदेवकी वाणी तो सुनाई, परंतु दसवें गुरु गोविंदसिंहजीने उसमें तबदीली कर दी, इस बारेमें आप क्या कहोगे? इतिहास सिखाया जाता है कि गुरु गोविंदसिंह तो मुसलमानोंके दुश्मनकी हैसियतसे पैदा हुए। लेकिन ऐसा माननेका कोई सबब नहीं, क्योंकि दसवें गुरु साहबने करीब-करीब वही कहा है जो गुरु अर्जुनदेवने कहा था। गुरु नानककी बात ही क्या। वह तो कहते हैं कि मेरे नजदीक हिंदू, मुसलमान, सिखमें कोई अंतर नहीं है। कोई पूजा करे, कोई नमाज पढ़े, सब एक है। एक ब्राह्मण पूजा करता है तो दूसरे धर्मवाला भगवानको कोसता है, ऐसा नहीं, मुसलमान नमाज पढ़ते हैं। पूजा और नमाज दोनों एक ही चीज हैं। मानुस सब एक है, वाणी दूसरी-दूसरी है। गुरु गोविंदसिंहने कहा है कि मानुस सब एक हैं और एक होके अनेक प्रभाव है तो पीछे मैं मान लेता हूं कि हम सब एक हैं अनेक हैं। और देखनेमें तो अनेक भेष हैं, लेकिन वैसे सब एक हैं। व्यक्ति तो करोड़ों हैं, लेकिन स्वभावसे एक है। गुरु गोविंदसिंहने कहा है, "एकै कान, एकै देह, एकै बैन।" पीछे कहा, "देवता कहो, अदेव कहो, यक्ष कहो, गंधर्व कहो, तुर्क कहो" वह सब न्यारे-न्यारे हैं, वही गुरु गोविंदसिंहजी कहते हैं—"देखत तो अनेक भेष हैं, उसका प्रभाव एक है।" बैनके माने वाणी है वाणी तो एक है, जबान एक है। और आखिर

---

[1] प्रकाश

वह एक है। क्या मुसलमानके यहा एक सूरज है और हम और आप लोगोके लिए कोई दूसरा सूरज है? वह तो सबके लिए एक ही है। वह कहते है आब, पानी भी एक है। गगा बहती है तो गगा नही कहती है कि खबरदार, कोई तुर्क हो तो मेरा जल नही पी सकता है, बादलोमेसे जल आता है तब बादल नही कहते है कि मै आता हू पर मुसलमानोके लिए नही, पारसियोके लिए नही, मै तो सिर्फ हिंदुओके लिए हू। यूनियन सरकार हिंदुओके ही लिए हो, ऐसा नही, यह हो नही सकता। कुरान कहो, गीता कहो, पुराण कहो, सब एक ही है, लेकिन लिबास अलग-अलग पहना दिया है। अरबी ज़बानमे लिखो तो पीछे उसको कहो कुरान है, नागरी लिपिमे लिखो, सस्कृतमें लिखो, मगर समझकर पढो तो चीज एक ही है। तो वह कहते है कि सब एक है, और ऐसा कहकर खत्म करते है। गुरु गोविंदसिंहने यह सिखाया है। मैंने पूछा कि पडितजी, अगर गुरु गोविंदसिंहजीने, आप कहते है वैसे किया भी हो, तो वह गलत बात थी। जब लडाई होती थी तो हिंदू-मुसलमान लडाईमे मरते थे, घायल भी होते थे और जखमी भी; लेकिन जो जिंदा होते थे उनको गुरु साहबका एक समझदार शिष्य पानी देनेका काम करता था। उसने मुसलमानोको भी पानी पिलाया, हिंदुओको भी और सिखोको भी। उसने कहा, मुझको गुरु महाराजने ऐसा ही सिखाया है कि तेरे नजदीक न कोई मुसलमान है, न कोई सिख है, न कोई हिंदू है, सब-के-सब इन्सान है और जिसको पानीकी हाजत हो तो उसको पानी देना है। वह ऐसा थोडे ही कहते थे कि अगर कोई हिंदू जखमी हो गया है तो मरहम-पट्टी लगा दे लेकिन अगर कोई मुसलमान जखमी पडा है तो उसको वैसे ही छोड़ दो। उन्होने पूछा, लेकिन गुरुजी तो मुसलमानोके साथ लडे थे? तो लडे तो सही, लेकिन उन मुसलमानोके साथ लड़े जिन्होने इन्सानियत और इन्साफके रास्तेको छोड दिया था, जिन्होने अपने मजहबको छोड़ दिया था। वह दानी पुरुष थे, निर्लिप्त थे, अवतारी पुरुष थे, उनके लिए मेरे-तेरेका सवाल नही था। लेकिन हा, वह अपनी रक्षा तो करते थे, लडाई करते थे, इसमे कोई शक नही। सिख दावा करे कि नही, हम तो अहिंसक है तो वह तो गलत बात होगी। वह कृपाण रखते है,

लेकिन गुरुजीने सिखाया कि कृपाण रक्षाके लिए है, वह कृपाण तो मासूम[1] की रक्षाके लिए है। जो दूसरोको तग करता है उस जालिमके साथ लडनेके लिए वह कृपाण है। कृपाण बूढी औरतोको काटनेके लिए नही है, बच्चोको काटनेके लिए नही है, औरतोको काटनेके लिए नही है, जो निर्दोष बेगुनाह आदमी है उनको काटनेके लिए नही है। कृपाणका तो वह काम नही है। जो गुनहगार है और जिसपर इल्जाम साबित हो गया है कि यह गुनहगार है, पीछे वह मुसलमान हो, कोई भी हो, सिख भी क्यो न हो, उसके पेटमें वह कृपाण चली जाएगी। आप लोग कृपाण जिस तरीकेसे आज खोलते है वह तो जहालतकी बात है। ऐसे लोगोके पाससे कृपाण छीनी जाए तो कोई गुनाह नही माना जायगा, क्योकि उन्होने धर्म तो छोड दिया है, सिखने कृपाणका दुरुपयोग किया है।

आज तो मेरी जन्मतिथि है। मै तो कोई अपनी जन्मतिथि इस तरहसे मनाता नही हू। मै तो कहता हू कि फाका[2] करो, चर्खा चलाओ, ईश्वरका भजन करो, यही जन्मतिथि मनानेका मेरे खयालमे सच्चा तरीका है। मेरे लिए तो आज यह मातम[3] मनानेका दिन है। मै आजतक जिदा पडा हू। इसपर मुझको खुद आश्चर्य होता है, शर्म लगती है, मै वही शख्स हू कि जिसकी जबानसे एक चीज निकलती थी कि ऐसा करो तो करोडो उसको मानते थे। पर आज तो मेरी कोई सुनता ही नही है। मै कहू कि तुम ऐसा करो "नही, ऐसा नही करेंगे"—ऐसा कहते है। "हम तो बस हिंदुस्तानमे हिंदू ही रहने देंगे और बाकी किसीको पीछे रहनेकी जरूरत नही है।" आज तो ठीक है कि मुसलमानोको मार डालेंगे, कल पीछे क्या करोगे? पारसीका क्या होगा और क्रिस्टीका क्या होगा और पीछे कहो अग्रेजोका क्या होगा? क्योकि वह भी तो क्रिस्टी है? आखिर वह भी क्राइस्टको मानते है, वह हिंदू थोडे है? आज तो हमारे पास ऐसे मुसलमान पडे है जो हमारे ही है, आज उनको भी मारनेके लिए हम तैयार हो जाते है तो मै यह कहूगा कि मै तो ऐसे बना नही हू। जबसे हिंदुस्तान आया हू मैने तो वही पेशा किया कि जिससे हिंदू, मुसलमान सब

---

[1] निरपराध [2] उपवास [3] शोक

एक बन जाए। धर्मसे एक नही, लेकिन सब मिलकर भाई-भाई होकर रहने लगें। लेकिन आज तो हम एक-दूसरेको दुश्मनकी नजरसे देखते है। कोई मुसलमान कैसा भी शरीफ हो तो हम ऐसा समझते है कि कोई मुसलमान शरीफ हो ही नही सकता। वह तो हमेशा नालायक ही रहता है। ऐसी हालतमे हिंदुस्तानमें मेरे लिए जगह कहा है और मै उसमें जिदा रहकर क्या करूगा? आज मेरेसे १२५ वर्षकी बात छूट गई है। १०० वर्षकी भी छूट गई है और ९० वर्षकी भी। आज मै ७९ वर्षमे तो पहुच जाता हू, लेकिन वह भी मुझको चुभता है। मै तो आप लोगोको, जो मुझको समझते है, और मुझको समझनेवाले काफी पड़े है, कहूगा कि हम यह हैवानियत छोड दे। मुझे इसकी परवाह नही कि पाकिस्तानमें मुसलमान क्या करते है। मुसलमान वहा हिंदुओको मार डाले, उससे वे बडे होते है, ऐसा नही, वह तो जाहिल हो जाते है, हैवान हो जाते है तो क्या मै उसका मुकावला करू, हैवान बन जाऊ, पशु बन जाऊ, जड बन जाऊ? मै तो ऐसा करनेसे साफ इन्कार करूगा और मैं आपसे भी कहूगा कि आप भी साफ इन्कार करे। अगर आप सचमुच मेरी जन्म-तिथिको मनानेवाले है तो आपका तो धर्म यह हो जाता है कि अबसे हम किसीको दीवाना बनने नही देगे, हमारे दिलमे अगर कोई गुस्सा हो तो हम उसको निकाल देगे। मैं तो लोगोसे कहूगा भाई, आप कानूनको अपने हाथमे न ले, हकूमतको इसका फैसला करने दे। इतनी चीज आप याद रख सके तो मै समझूगा कि आपने काम ठीक किया है। बस इतना ही मैं आपसे कहना चाहता हू।

## : १०६ :

### ३ अक्तूबर १९४७

भाइयो और बहनो,

मै देख रहा हू कि हमारे मुल्कमे काफी जगहपर आज सत्याग्रह चलता है। मुझको बडा शक है कि जिस जगहपर वह कहते है कि

सत्याग्रह चलता है वहा सचमुच वह सत्याग्रह है या दुराग्रह है। ऐसा हमारे मुल्कमें हो गया है कि एक चीजका नाम ले लिया, लेकिन काम उससे उल्टा किया। और आज जब कोई भी आदमी, चाहे वह पोस्टआफिसका हो, टेलीग्राफ आफिसका हो, रेलवेका हो या तो देशी राज्यमें हो, जिस जगहपर वह सत्याग्रह करनेकी कोशिश कर रहा है इन सबको इतना समझ लेना चाहिए कि यह काम जो वे कर रहे है सत्य है या असत्य। अगर असत्य है तो उसका आग्रह क्या करना था और अगर सत्य है तो सत्यका आग्रह हमेशा और हर हालतमें करना ही चाहिए। 'हमको कुछ मिल जाय', इस उद्देश्यसे जो सत्याग्रह करते है वह सत्याग्रह नही हो सकता। वह तो असत्यका आग्रह होगा। सत्याग्रहके लिए मैने बहुत-सी चीजें बतला दी है। दो चीजें तो अनिवार्य बतलाई है। एक तो यह कि जिस चीजके लिए लडते है वह सचमुच सत्य है और दूसरे यह कि उसका आग्रह रखनेमें अहिंसाका ही उपयोग हो सकता है।

जितने लोग आज सत्याग्रह चला रहे है वे समझ-बूझकर काम करें। अगर मूल चीज असत्य है और उसके आग्रहमें जबर्दस्ती की जाती है तो उसको छोडना अच्छा होगा। अगर उसमे जहर भरा है, अगर वह दुराग्रह है और असत्य है, जो वह मागते है वह हक उनको मिल नही सकता, तो भी वह मांगना शुरू करते है, तो मै कहूगा कि ऐसी चीज मागनेमें अहिंसा इस्तेमाल हो नही सकती। वह अहिंसा नही हुई, वह तो हिंसा हुई। जो आदमी एक असत्य चीज मागता है और पीछे कहता है कि अहिंसासे कर लेगा, वह कर नही सकता है।

अगर कैंपोको चलानेका काम मेरे हाथमे हो तो कैंपोंमें रहनेवालोको मै कहूगा कि कैंपोकी सफाईका काम तो आपको ही करना है। क्या कैंपोमें जो लोग पडे है वे ताश खेलेगे, चौपड खेलेगे, जुआ खेलेगे और पडे रहेंगे या तो सोते रहेंगे? खाना तो पूरा नहीं मिलता है, पानी नही मिलता है, यह मै जानता हू। 'तो पीछे मै क्यो काम करू?' ऐसा करते है तो हम ऐबी बन जाते है। यहा कोई ५ या ७ आदमी थोडे ही है, हजारोकी तादादमें पडे है। कब पहुचेगे अपने घरमे, यह भी पता नही। खाना तो हम उनको देंगे, लेकिन उस खानेके लिए वे कुछ काम तो

करें। कम-से-कम सफाई करनेसे शुरू करें, पीछे कह दें कि हम दूसरा भी काम कर सकते है, सूत कात सकते है, बुन सकते है, बढईका काम कर सकते है, लुहारका काम कर सकते है, दर्जीका काम कर सकते है। या तो हम खटीकका काम करें वह निकम्मी चीज नही है। इतने काम हिंदुस्तानमें पडे है। कल वह भले ही करोडपति थे, आज तो करोड चले गए। ऐसा दुनियामे हो जाता है। अब सबको नए सिरेसे काममे जुट जाना ठीक है। कोई कहे कि हम करोडपति थे हम क्यो यह काम करे, तो हमारा काम बिगड़ जाता है। हम जो काम करना चाहते है वह बन नही सकता। मै बड़े अदबसे कहूगा इस तरह हमारा काम चल नही सकता। हर दृष्टिसे जितना काम हमारा चलता है वह तो आदर्श होना चाहिए। उसमें सफाई हो, गदगी बिलकुल नही। लोग पडे है उन्होने अपना सब काम खुद किया है। ऐसा करे तो मै आपको कहता हू कि हमें आज जो तकलीफ हो रही है वह काफी हदतक रफा होनेवाली है। और अगर हम इस तरह काम करनेवाले बन जाते है तो पीछे हमारा ग़ुस्सा भी शात हो जायगा। हमारे दिलोमे जो वैर-भाव पडा है वह भी शात हो जायगा। भलाई तो इसीमें है कि बुरे कामको बुरा समझना और पीछे उसका बदला देना है वह भलाईसे देना। उसका नाम भलाई है। ऐसा नही कि कोई पागल बन जाय, तो हम भी मूरख बन जायं। भलाईकी निशानी यह है कि हम दुष्टताका बदला दुष्टतासे न दें, दुष्टताका बदला हम साधुतासे दें। हमारे मुल्कका तो इसीमे कल्याण है। हम किसीको रज नही पहुचाएगे लेकिन खुद दु खको बर्दाश्त करके दूसरोंको सुखी करनेकी कोशिश करेंगे। अगर यह किया तो पीछे हिंदुस्तानका तो भला होता ही है आप जगतका भी भला कर सकते है। आज तो हिंदुस्तानकी ओर लोग देख रहे है कि हिंदुस्तान क्या करता है? अभी तो हमारे सच्चे इम्तहानका वक्त आ गया है। आजादी मिली है। अब हम क्या करेंगे।

## : १०७ :

### ४ अक्तूबर १९४७

भाइयो और बहनो,

मै आप लोगोको कैसे मनवा सकूगा कि अगर हम लोग पागल नही बनते तो यह सब जो आज हो रहा है होनेवाला नही था। इसमे मुझको कोई सदेह नही, मान लो कि मुसलमान पागल बने, इसलिए ये शरणार्थी लोग पाकिस्तानसे भागकर आते है। इन्हे वहा चैन मिले तो हिंदू वहासे क्यों भागेंगे ? पश्चिमी पजावसे क्यो भागेगे ? दूसरा पाकिस्तानका हिस्सा है, वहासे भी लोग भाग-भागकर आते है, यह दु.खकी कथा है। लेकिन वहासे क्यो हटते है वे, यह समझने लायक चीज है। वहाके लोग जालिम बने है ऐसा हम मान ले, लेकिन उसके सामने क्या हम भी जालिम बन जाय ? क्या हम हकूमत अपने हाथोमें ले लें; कानून अपने हाथोमें ले ले कि चलो, वह मारते है तो हम भी मारेंगे, वे बूढोको मारते है तो हम भी मारेंगे, औरतोंको मारते है तो हम भी मारेंगे, बच्चोको मारते है तो हम भी मारेंगे, जवानोको मारते है तो हम भी मारेंगे ? मैंने बहुत दफा कहा कि यह वहशियाना कानून है। यह कानून चले और साथ-साथ मेरा जीवन चले, तो ये दो काम नही चल सकेंगे। तो आजतक मेरी प्रार्थना ईश्वरसे यही रहती थी कि मुझको १२५ वर्ष जिंदा रख जिससे मै कुछ-न-कुछ और भी देशकी सेवा कर सकू। और हिंदुस्तानमे खुदाई राज, राम-राज्य, जिसका नाम ईश्वरीय राज्य है, वह स्थापित हो तब मुझको चैन आ सकता है। तब मैं कह सकता हू कि हिंदुस्तान सचमुच आजाद बन गया है। लेकिन आज तो वह ख्वाब-सा[1] हो गया है। रामराज्य तो छोड दो, आज तो किसीका राज्य नही। ऐसी हालतमे मेरा-जैसा आदमी क्या करे ? अगर यह सब नही सुधर सकता तो मेरा हृदय पुकार करता है कि हे ईश्वर ! तू मुझको आज

---

[1] सपना-सा

क्यो नही उठा लेता ? मै इस चीजको क्यो देखता हू ? अगर तू नही उठाता और चाहता है कि मुझको जिंदा रहना है तो कम-से-कम वह ताकत तो मुझको दे दे जो मै एक वक्त रखता था। मुझे ऐसा गुमान था कि मै लोगोको समझा सकूगा। लोगोके पास आया और कहा, खबरदार, इस तरहसे न करना, तो वे समझ जाते थे। उनके दिलमे मेरे प्रति इतनी मुहब्बत थी। मै नही कहूगा कि आज मेरे लिए लोगोके दिलमें मुहब्बत कम हो गई है। मगर कम हो या बेशी, उसके पीछे तो अमल होना चाहिए। वह नही है। तो मै कहता हू कि मेरा असर चला गया है। जब हम गुलामीमें थे तब तो मेरा काम अच्छा चलता था, लेकिन अब जब हम आजाद हो गए है, तब मेरा काम नही चलता। जो पाठ मैंने प्रजाको उस वक्त सिखाया था मै तो वही पाठ आज भी दे सकता हू। अगर वह पाठ आज आप ले ले तो हम खूब आगे बढ जाते है।

मै कहना तो यह चाहता था कि आप लोगोके लिए अब जाड़ेके दिन आते है। मेरे लिए तो आप देखते है यह गरम चादर ये लडकिया लेकर आई है कि शायद मुझको ठड लगे। खासी भी है। इस वक्त कम है, सो यह सूती चादर काफी है। लेकिन वे जो यहा कैंपोमे पड़े है, पुराने किलेमे पडे है उनका क्या? आप कह सकते है कि मुसलमानोको हम क्यो दे? मै तो ऐसा नही बना हू। मेरे लिए तो मुसलमान भी वही है, सिख भी वही है, पारसी भी वही है, ईसाई भी वही है। मै ऐसा भेद नही कर सकूगा। इन जाड़ेके दिनोमें उन सबका क्या होगा? अगर हम यह कहे कि यह तो हकूमतका काम है, हकूमत उन्हे जाड़ेके दिनोमे कबल दे देगी, तो मै आपको कहता हू कि हकूमत नही दे सकेगी। हकूमत कोशिश तो करेगी, लेकिन आज हमारे पास वह स्टाक कहा है? हकूमत कबल कहासे निकालेगी? छू-मतर करके उनके पास आ जाता हो, ऐसे नही बनते। आज सारे यूरोपमें, अमरीकामे भी वह चीज नही मिलती। हमको वहासे कोई वस्तु भेज नही सकते। कुछ रहम करके कोई भेजे भी तो दस-बीस हजार कबलोसे क्या होगा? यहा तो लाखो लोग पड़े है, ऐसे हर एकको थोड़े ही मिल सकते है। मै जितने आप लोग है सबसे

कहूगा कि जाडेके दिनोमे वे सर्दीको बर्दाश्त करते रहें यह ठीक नही। इसके साथ आप अपने सब कबल भी नही दे सकते। लेकिन मैं जानता हू कि हमारे पास बहुतसे लोग ऐसे पडे है जो अपने लिए कबल रखते है और जितने चाहिए उससे ज्यादा रखते है। दिल्लीमें काफी गरीब पडे हैं, जिन्हें मुसीबतसे कबल मिलते है। जितने कबल आप बचा सकते है उन्हें दें दे।

मैंने देखा है, मै दिल्लीमे रहा हू और जाडेके दिनोंमें रहा हू। मै समझता हू कि दिल्लीमे काफी गरीब लोग भी पडे है, लेकिन मैं तो इतना ही कहूगा कि जो ऐसे गरीब नही है, जिनके पास एक कबलसे काम चल सकता हो, और उनके पास दो हों तो एक मुझे दे दें। इसी तरहसे आप आजसे चीज़े देना शुरू करें। आप ऐसा न सोचे कि यहा हकूमत करती है सो आपको कुछ करना नही। ठड तो शुरू हो गई है, लेकिन अभी बर्दाश्त हो सकती है। लेकिन १७ अक्तूबरके बाद मै वाइसरायके घर गया था, तब वहा आग जलती थी। क्योकि ठड हो गई थी और यहाकी ठड ऐसी होती है कि आदमीकी बर्दाश्तके बाहर हो जाती है। अक्तूबरसे वह जल्दी-जल्दी बढने लगती है और तेज हो जाती है। नवबर, दिसबर, जनवरी, फरवरी यह सब जाडेके खुशनुमा दिन है। जिनके पास खाना है, कपडा है, क़ाफी पहनकर चलते है, बडे बूट पहने है, मोजे पहने है, वह तो जाडेको खुशनुमा कह सकते है, लेकिन जिनके पास नही है उनका क्या हाल होता है, उसका मै गवाह हू। आप भी हो सकते है। इसलिए मै कहूगा कि इतना तो हम करें कि जितनेको हम बचा सकते है, बचा लें। जिनके पास जाडेमे पहनने लायक कपडे है, यह भी हो सकता है कि आपके पास ऊनी कपडा न हो, ऊनी कमलिया नही तो लिहाफ तो रहता है, लिहाफ काफी हो जाता है, अगर वह अच्छा हो तो आप लिहाफ भी ला सकते है। चद्दर भी रहती है, जो चद्दर पुराने जमानेकी मोटे कपडेकी, मोटे खद्दरकी रहती है वह काफी गरम रहती है, मुझे और कपडे नहीं चाहिए। लेकिन यह चद्दरकी शक्लमें ऊनकी हो, लिहाफ हो, या तो मोटी चद्दर पडी हो, उन तीनो चीजोमेंसे जो आपके पास आरामसे बच सके,

आप अपने-आप मुझे दे दे। अगर आप भेजना शुरू कर दे तो इंत-जाम हो जायगा कि कौन उसका कब्जा लेंगे। मै आप तो करनेवाला नही हू। ऐसा भी नही होगा कि चीज आ गई तो सब गोदाममे पडी सड जायगी या नालायक आदमीको मिल जायगी। जितनी चादरे आप देंगे, जितने ऐसे कपडे आप देंगे, मै आपको इतना कह सकता हू कि वे सब योग्य पुरुष और योग्य स्त्रीके पास जानेवाली है। मै उम्मीद तो करूगा कि आप मुझको ऐसा न कहे कि यह तो हम हिंदुओके लिए देते है, यह सिखके लिए देते है। इन्सान सब एक है। पीछे कोई न कहे कि इसमेसे मुसलमानोको न देना। यहा काफी मुसलमान तो मारे गए, काफी भाग गए। हमने भगा दिए। जो बाकी रहे है, उनके पास कितनी जायदाद पडी है यह मुझको पता नही। जो मुसलमान हिंदु-स्तानमे पड़े है वे भी अगर कबल वगैरह भेजे और कहे कि हम तो मुसलमानोको ही देगे, तो मै मुसलमानोको दे दूगा। लेकिन मै यह उम्मीद करूगा कि जितने लोग मेरी बात सुनते है और दूसरे जो इस रेडियोकी मार्फत सुननेवाले है, वे सब मुझे परेशान न करे, और कह दे कि हमने तुझको यह चीज कृष्णार्पण[१] की, तो जो उसके लायक है उसको मिल जायगा। इसलिए मेरी उम्मीद है, विश्वास है कि इतना आप करेगे। तो मै यह कहूगा कि आपने बहुत बड़ा काम किया है। ऐसा न करे कि चलो, जो टूटा-फूटा निकम्मा हो, मैला पडा हो, वह लाकर मुझको दे दे कि मै धोऊ, रफू करू। मैला कपडा है तो आप धोनेकी कोशिश करे, इतनी अपनेको तकलीफ दें, धोबीको देनेकी कोई जरूरत नही रहती है। आरामसे थोडा पानी तो मिल जायगा, तो उसको अच्छा साफ करके लपेट करके आप मुझे दे दे। तो मुझको बड़ा अच्छा लगेगा।

---

[१] दान।

## : १०८ :

### ५ अक्तूबर १९४७

भाइयो और बहनो,

पहले तो मैं अपनी तबियतके बारेमें आपसे कुछ कहू, क्योकि आज भी अखबारोमें मेरी बीमारीकी बाबत कुछ खबर आई है। किसने दी है, मुझको पता नही है। जो डाक्टर मेरे इर्द-गिर्द रहते है, उनकी तो यह खबर दी हुई नही हो सकती। लेकिन बहुत आदमी यहा आते-जाते है, वे देखते है कि मुझे कुछ खासी वगैरह है, थोडा बुखार भी आ जाता है और फिर वे रजका गज बना देते है। ऐसा क्यो? कुछ मेरी तदुरुस्तीके बारेमे लिखे तो, क्योंकि मै महात्मा माना जाता हू इसलिए वह चीज सारी दुनियामें फैल जाती है। गाधी मर जायगा तो क्या होगा? सब मरनेवाले है तो गाधीको भी मरना है। कोई अमृत-फल खाकर तो आया नही है। मुझे कुछ दुर्बलता और खासी तो है, पर इसे अखबारोमें देनेसे क्या लाभ? मै यह कहूगा कि जिन्होने यह खबर दी उन्होने न तो मेरा और न किसी अन्यका ही भला किया। आप तो देखते है, मै आता हू बात भी करता हू, इसमे कोई रुकावट नही होती है। हा, थोडी दुर्बलता है, खासी है, लेकिन उसको जाहिर क्या करना था? मेरी इच्छा है कि लोग ऐसा न करें।

दूसरे, मैंने तो कल आप लोगोसे कहा था, प्रार्थना की थी कि अगर दे सकते हो, तो गरीबोके लिए, अभी जाडेके दिन आते है, तो कबल दे, रजाई दें, और दूसरी ओढने लायक चीजे हो, उनको भी दें। आज तीन सज्जनोंने कबल भेजे है। उनमेंसे दो सज्जन है वे तो यही इर्द-गिर्दमें रहते है। नाम तो मै उनका भूल गया हू। उन्होने दो कबल मुझे भेजे है, अच्छे-खासे है। एक शख्स है, उनका भी नाम तो मै भूल गया हू, उन्होने दस कबल दिए है और वे तो नए ही हो सकते है। वह सब जैसा मैंने आपको कहा है, सुरक्षित रखे जा रहे है और जैसा आपको कल कहा था उनका इस्तेमाल योग्य भाई और बहनोको

देनेमे होनेवाला है। मेरी उम्मीद है कि आज अगर आप सब लोग समझ गए है तो जो कोई चीज आप दे सकते है, मुझको दीजिए।

अभी एक तार मेरे पास आ गया है, जिसे कई आदमियोने मिल-कर साथ भेजा है। तार मेरे सामने पडा है। उसमे जो लिखा है, वह मुझे अच्छा नही लगता। लिखनेका तो उनको अधिकार है। तार भेजनेवाले लिखते है कि जैसा हिंदुओने किया है यदि वे वैसा न करते तो शायद तुम भी जिंदा नही रह सकते थे। यह बहुत बडी बात हो गई। मुझको जिंदा रखनेवाली कोई ताकत मै मानता ही नही हू, सिवा एक ईश्वरके। वह जबतक चाहता है तबतक मै जिंदा हू, और उस वक्ततक मेरा कोई नाश नही कर सकता है। जो मेरे लिए सही है, वह सबके लिए सही है। तो ऐसी बात वे क्यो लिखे? मुझको कहना पडेगा कि लिखा तो मुहब्बतसे है यह, पर मेरा यह विश्वास है कि मुझे या किसीको भी जिंदा रखना सिर्फ भगवानके हाथोमे है।

वे पीछे लिखते है कि याद रक्खो, (कुछ नाम भी दिये है उनको मै छोडना चाहता हू) तुम बहुत भोले हो, जो अबतक मुसलमानोका विश्वास करते हो। कोई एक नही जो मुझको ऐसा बतलाते है, सब मिलकर मुझको सुनाते है कि यहां मुसलमान ऐन मौकेपर दगा देनेवाले है, वे पाकिस्तानका साथ देनेवाले है और वे पाकिस्तानके लिए हिंदुस्तानके सामने लड़नेवाले है। वे लिखते है कि १०० मेसे ९८ मुसलमान दगाबाज है। मुझको कहना पड़ेगा मै यह नही मानता। यहाके साढे चार करोड़ मुसलमान तो ज्यादातर देहातोमें पडे है, और जो थोडे मुसलमान शहरोमे पडे है, वे हममेंसे ही मुसलमान बने है, वे सब-के-सब दगाबाज नही हो सकते। तो क्या सब मुसलमान दगाबाज है, यह मानकर प्रत्येक मुसलमानके घरमे प्रवेश करो और उन्हे तबाह कर दो? हर एकके पास हथियार है, उनको छीन लो? उनके कहनेका बिल्कुल ऐसा ही मतलब हो जाता है कि उनको तबाह करो और सबके सबको यहासे हटा दो। मै उन भाइयोको कहूगा कि यह तो कायरोकी बाते है। मै तो एक ही चीज कहूगा कि मान लो यदि मुसलमान ऐसे है तो वह चीज हकूमतको साबित कर दो।

हकूमतको कहो कि इसका फैसला करे। ऐसा ही करें जैसा कि वे भाई कहते हैं तो उससे तो हम दोनों दुश्मन बनेंगे और फिर उसका नतीजा होगा दोनोंकी लडाई। दोनो लडते है तो पीछे दोनोंका नाश होनेवाला है या यह कहो कि हम पाई हुई आजादीका नाश करेंगे। कोई हिंदू दूसरोके मातहत जाकर अपना हिंदूपन नही रख सकता है। अंग्रेज थे तो हम उनकी गुलामीमे सोचते थे कि हमारे धर्मकी रक्षा होती है, वह भूल थी।

जब मैं बच्चा था तो मैंने एक अंधे कविकी, जो एक अच्छे कवि थे, कविता पढी थी, जिसके अर्थ यह होते है 'खैर, अब तो वैर गया, हमें आरामसे रहना है, अंग्रेज आ गए है।' एक जमाना था कि हम अंग्रेजोपर मुग्ध हो गए थे और सोचते थे कि इनके नीचे हम सुरक्षित है। वह भूल सुधारो। अब यदि हम ऐसे बुजदिल बने कि साढे चार करोड मुसलमानोको मार भगानेकी सोचे तो उससे तो हम कायर सिद्ध होगे। ऐसी बातोसे हम अपने धर्मको कभी भी बचा नही सकेंगे। मैं तो ऐसा नही मानता कि हिंदू, मुसलमान जन्मसे एक दूसरेके दुश्मन पैदा हुए है। और अगर ऐसे बने तो पीछे हिंदुस्तान कैसे जिंदा रह सकता है? क्या दोनो, हिंदू और मुसलमान गुलाम बननेवाले है और दोनो अपने धर्मको भूल जानेवाले है? यह कैसे हो सकता है? हमारा-आपका तो धर्म हो जाता है कि हम इस सबधमे सब बाते सरकारको पहुचा दे।

आज मैं आपको कहूगा कि मै तो मन्त्रियोके साथ बैठता-उठता हू। पडितजी तो हमेशा करीब-करीब रोज मेरे पास आते है, सरदार भी करीब-करीब रोज आते रहते है, हाला कि उतना नही जितना पडितजी आते है। लेकिन दोनो आते है, दोनो मित्र है, दोनो मेरे साथ रहते है। दोनोने बडी खूबीसे मेरे साथ लडाई भी की है। तो मै ऐसा नही कहना चाहता हू कि मै उनको कुछ कह नही सकूगा। सरकारको हिंदू, मुसलमान, पारसी और ईसाई सबकी रक्षा करनी है, तभी वे कह सकते है कि वे सच्चे काग्रेसी है। हिंदू-सभा है—तो उसका काम तो हिंदू-धर्मकी रक्षा करना है। सिखों और

हिंदुओंके धर्मकी रक्षा करना, बुराइयों और बदियोको हटाना, उनका अपना काम है। दूसरा थोडे ही कोई मिटानेवाला है? हम दूसरोको कहे कि आप मेहरबानी करके हमारा धर्म बचा दें, तो इस तरह धर्म बचता नही है। मेहरबानीसे कही धर्म बचता है? यदि हम कहे कि हमारा धर्म बचाओ तो वह तो धर्मका सौदा हुआ। हमे जान प्यारी है इसीलिए हम ऐसा कहते है। हम कभी एक चोला पहिने, कभी दूसरा, तो यह भी कोई धर्म होता है? इस कारण मै कहूगा कि ये जो तार देनेवाले है, उन्होने कोई बडा सयानापन नही किया है।

यह चीज कहकर मैं आपको दूसरी बात बतलाना चाहता हू। हमारे चर्चिल साहबने दुबारा भी वही चीज कही है और बढाकर, बनाकर कही है। यह मुझको चुभता है। क्योकि मै तो अंग्रेज लोगोका दोस्त हू। मुझको किसीके साथ दुश्मनी तो है ही नही। उनमें बहुत भले लोग पडे है और अभी उन्होने भारतको आजादी देकर बहादुरीका काम किया है। पीछे उसका कुछ भी असर हो, मुझे उसकी परवाह नही। चर्चिल साहब उसपर हमला करते है और कहते है कि जैसा उन्होंने पहले भाषणमे भी कहा था, "मै तो हमेशासे मानता आया हू। हिंदोस्तानी ऐसे है, वैसे है"। अगर हमेशा मानते आए है तो अब पीछे उसको दोबारा दुहरानेकी क्या जरूरत थी?

लेकिन ऐसा लगता है कि उन्होंने केवल अपनी पार्टीके लिए ही मजदूर सरकारपर हमला किया है, ताकि लेबर पार्टीकी मिनिस्ट्री मिट जाय और फिर उनकी पार्टीकी हकूमत हो जाय। इग्लैंडमे आज मजदूरोका राज्य है। वह एक छोटा-सा टापू है, लेकिन मजदूरोकी शक्तिपर वह इतना बढा है और अपने उद्योगके कारण दुनियामे मशहूर हो गया है। जो मजदूर सरकार अब वहा बनी है, उसको हटा दो, यह चर्चिल साहबकी मशा है। और उसको हटा देनेके लिए वे कहते है कि इस लेबर मिनिस्ट्रीने बेवकूफी की है, उसने यह भद्दा काम किया, एम्पायरको[1] मलियामेट कर दिया, हिंदुस्तान जो एम्पायरमे था,

---

[1] साम्राज्य।

उसको गवा दिया और अब बर्माका भी वही हाल होनेवाला है जो हिंदका हुआ। अब मैं कैसे कहूं चर्चिल साहबको कि आपका इतिहास बहुत देखा, बर्मा किस तरहसे आप लोगोने लिया, हिंदुस्तानमे कैसे आपने अंग्रेजोकी हकूमत कायम की, उस इतिहासपर कोई आदमी अभिमान कर सके यह मै नही मानता हू।

हम आज जो कर रहे हैं, वह वहशियाना काम करते है, और हमारे हाथमें जो हकूमत आई है, उसको मिटानेकी चेष्टा कर रहे है। मै कबूल करता हू कि आज आपके नजदीक मै एक नाकिस[1] आदमी बन गया हूं, मेरी आपके पास आज नही चलती, लेकिन मै आपको कहू कि अगर चर्चिल साहबकी बात अंग्रेजोने मान ली, जिसको कि कजरवेटिव[2] पक्ष कहते है, उसने मजदूरोको हराया और मजदूरोके राज्यको शिकस्त दे दी तो वह बुरा होगा। मै आपको कहूगा कि हम किसी शक्तिके मार्फत आजाद हुए है, ऐसा सारी दुनिया कहती है। वह शक्ति कैसी है? उस वक्त सत्ता मजदूरवर्गके हाथमे थी, सोशलिस्ट हकूमत उस वक्त इग्लैंडमे थी और उसने हमें आजादी दी। सोशलिज्म[3]को कौन मिटा सकता है? उसको न तो चर्चिल साहब मिटा सकते है और न कोई और ही मिटा सकते है। उनका राज्य दूसरी तरहसे चल ही नही सकता, यह तो मै देख चुका। लेकिन माना कि अंग्रेजी प्रजाने अपनापन गवा दिया और मजदूरोकी शिकस्त हो गई और चर्चिल साहबके हाथ फिर सत्ता आ गई, तो क्या वे हमें अल्टीमेटम दे देंगे कि नही, हम तुमको फिरसे गुलाम बनानेवाले है, हमला करनेवाले है? दे तो सही। किस तरहसे वें दे सकते है, मेरी अक्ल काम नही करती। कैसे भी हम हिंदुस्तानी बुरे हो, भले हो, हम बदमाश बन जाते है, हम दीवाने बन जाते है, तो भी उन्ही लोगोने मुझको सिखाया है कि आजादी सबसे बडी चीज है। ऐसी बडी आजादीमें जितनी गलतिया हो वह सब करनेका तुमको हक है। आजादीका मतलब यह नही है कि हम भले बने, तब तो आजादी मिलेगी और अगर लुटेरे रहते है, बुरे रहते है तो

---

[1] खराब; [2] कट्टरपंथी; [3] समाजवाद।

आजादी न मिले। यह कहांकी बात है? अंग्रेजोके लिए तो वह कानून नही हुआ। कोई भी प्रजा-जितनी दुनियामे पडी है, इनके लिए यह कानून नही था और अगर ऐसा रहता कि जो भला रहता है, उसके पास ही आजादी रह सकती है, तो आज सारी दुनियामे जो हो रहा है, उसे देखकर कही भी आजादी कैसे रह सकती है? अंग्रेजोने ही हमे सिखाया है कि आजादी गुलामीकी अपेक्षा भली है। एक अंग्रेज लेखक कहता है कि हम चाहे शराब पिए पडे रहे पर आजाद रहे, परतु गुलाम होकर सुधरना स्वीकार नही। पर हम उनकी बुराइया ले लेते है, भलाइया नही।

हिंदुस्तानमे तो सात लाख देहात पड़े है, सात लाख देहातके लोग तो आज पागल नही हो गए। सात लाख देहातके लोग अगर पागल बन जाते है तो हिंदुस्तानका नक्शा बदल जायगा। लेकिन सात लाख देहात हिंदुस्तानके है, वे सब-के-सब पागल बन जाय, लेकिन आजाद बने रहे तो मुझको बड़ा मीठा लगेगा। लेकिन चूकि वे पागल बन गए है, इसलिए कोई हिंदुस्तानपर बद-नजर करे और कब्जा लेनेकी कोशिश करे तो वह चलनेवाली चीज नही है।

मैने कह दिया है और आज फिर कहता हू कि अगर हम पागल रहे तो उसका नतीजा यह आनेवाला है कि अंग्रेज तो अब यहा आने-वाले है नहीं, वे अब यहा नही आ सकते है, उन्होने एक चीज उगल दी तो पीछे दुबारा थोडे ही वापिस लेनेवाले है, मगर दुनियाके सामने तो सब है, वह तो देखेगी कि क्या हो रहा है? दुनिया उसको यह नही करने देगी और न हिंदुस्तान ही करने देगा। लेकिन दूसरी जो ताकते है, जिसको यू० एन० ओ० कहते है, जिसके पास बडी ताकत पडी है, यदि वह यहा जाच-पडतालके लिए आए तो हम उसे रोक नही सकेंगे। पीछे हम ऐसे पागल बन जाते है कि अपनापन छोड़ देते है तो हम आजादीको खोकर उनको दे देंगे।

मैं चाहे बिलकुल अकेला रह जाऊ, लेकिन मेरी जबान तो यही सुनाएगी कि खबरदार, सारी दुनिया भी आए, वह हमारा बिलकुल नाश करना चाहती है, तो कर सकती है, लेकिन हमको दुबारा गुलाम बनाकर

नही रख सकती। मेरी तो ऐसी प्रतिज्ञा है कि हम दुबारा गुलाम न बने। उस प्रतिज्ञाका आप पालन करेंगे, उसको सच्चा बनाना वह तो आप लोगोंका काम है, मेरे अकेलेका नही है। मै अकेला तो भारतको बचा नही सकता। मेरा क्या ठिकाना है? कौन जाने कबतक चलता हू। ईश्वर मुझे उठा लेता है तो हिंदुस्तानका क्या होनेवाला है? मै अकेला थोडे ही हिंदुस्तानको बचा सकता हू। वह तो ईश्वरपर निर्भर है और अगर वह साथ रहेगा और उसकी मेहरबानी रही तो हिंदुस्तान बच सकेगा। जबतक मै जिंदा हू मै समझता हू कि कोई ऐसा नही कर सकता कि चलो, हिंदुस्तानमे कुछ तूफान हो रहा है, इसलिए उसको गुलाम बनाओ और कब्जा करो। ईश्वर मेरी इस प्रतिज्ञाका पालन आपकी मार्फत कराए। यही मेरी इच्छा है।

## : १०६ :

मौनवार, ६ अक्तूबर १९४७

(लिखित सदेश)

जिन लोगोको हमारी खुराककी समस्यापर जानकारी होनी चाहिए वे डा० राजेद्रप्रसादके निमत्रणपर, उनको खुराकके बारेमें, सलाह देनेके लिए यहा जमा हुए है। इस जरूरी मामलेमें यदि कोई भूल हो जाए तो उसका परिणाम यह हो सकता है कि उस भूलसे, जिससे बचा जा सकता है, लाखों आदमी मर जाए। हिंदुस्तानके, भूखे रहनेसे, करोड़ो नही तो लाखोकी सख्यामें, कुदरती तथा इन्सानके बनाए हुए दुष्कालमे मरनेमे कुछ अपरिचित नही है। मै कहता हू कि किसी अच्छे सगठित समाजमे हमेशा पानीकी कमीसे और अनाजकी फसल बिगडनेसे होनेवाली आपत्तिमे बचने-का कामयाब इलाज पहलेसे ही सोच रखा जाता है। इस बातकी चर्चा करनेका यह मौका नही है। इस वक्त तो हमें यही देखना है कि आया[1]

---

[1] अथवा।

हम मौजूदा खुराककी भयकर परिस्थितिसे बचनेकी उम्मीद रख सकते हैं या नही ।

मेरा खयाल है कि हम ऐसी उम्मीद रख सकते है। पहला पाठ जो हमें सीखना चाहिए वह है खुदकी मदद और स्वाश्रय। अगर हम इस पाठको हजम कर ले तो तुरंत ही अपनेको विदेशी मुल्कोकी मददपर भरोसा रखनेसे और आखिरमें दिवालियापनसे बचा लेगे। यह बात कुछ अभिमानके तौरपर नही कही जा रही, बल्कि यह तो एक हकीकत है। हमारा कोई छोटा मुल्क नही है जो अपनी खुराकके लिए बाहरकी मददपर निर्भर रहे। हमारी जनसख्या तो चालीस करोड है जो एक बर्रे-आजमके[1] हिस्सेमे रहते है। हमारे देशमें बाकी दरिया है और भाति-भातिकी फसलें होती है और असख्य मवेशी है। यह तो हमारा ही कसूर है कि यह मवेशी हमारी जरूरतसे भी कम दूध देते है, मगर उनमे इतनी शक्ति आ सकती है कि वह हमारी जरूरतके मुताबिक दूध दे सके। यदि गत चद सदियोमे हमारे देशको भुलाया न गया होता तो वह न सिर्फ अपने लिए पूरी खुराकका प्रबध कर सकता बल्कि वह बाहरके देशोको भी कुछ खुराक पहुचा सकता, जिसकी कमी दुर्भाग्यवश पिछली लड़ाईके कारण तमाम ससारमे हो गई है। इसमे भारतवर्ष भी शामिल है। मुसीबत घटनेके बजाय बढती ही जा रही है। मेरी तजवीजका यह अर्थ नही है कि यदि कोई देश हमें खुशीके साथ खुराक देना चाहे तो हम उसे नामजूर कर दे। मेरे कहनेका आशय तो केवल यही है कि हम भीख मागते न फिरे। इससे हममें गिरावट आती है। इसके अलावा यह खयाल करो कि खुराकको एक जगह पहुचानेमे कितनी कठिनाइया आती है। हमे यह भी डर रहना चाहिए कि विदेशसे जो अनाज आवेगा वह शायद अच्छा नही होगा। हम इस बातको नजर-अंदाज नही कर सकते कि मनुष्य-स्वभाव हर मुल्कमे कुदरती तौरपर कमजोर है। वह कही भी न पूर्ण हुआ है न पूर्णताके नजदीक पहुचा है। अब हमे यह देखना है कि हमे विदेशी सहायता क्या मिल सकती है। मुझे बताया गया है कि जरूरतका केवल तीन

[1] महाद्वीप।

फी सदी बाहरसे आ सकता है। यदि यह बात सच है और मैंने कई निपुण जानकारोंसे इस सत्याकी सच्चाई मालूम कर ली है, तो विदेशोंपर भरोसा रखनेके कोई मानी नही रहते है, क्योंकि विदेशोंपर थोडा-सा भी भरोसा रखें तो इसका परिणाम यह आ सकता है कि हमें अपनी हर एक इंच जोती जानेवाली जमीनपर जितना ध्यान देनेको है, वह नही देंगे। अगर हम स्वाश्रयी बननेका निर्णय करें या धन पैदा करनेवाली फसलकी बजाय खुराककी फसलपर ध्यान दें तो जो जमीन बेकार पड़ी है उसे हमें तुरत काममें लाना चाहिए।

खुराकके केंद्रीकरणको मैं नुकसानदेह मानता हू। विकेंद्रीकरणसे काले बाजारपर बडी आसानीसे आघात पहुचता है तथा खुराकको इधर-उधर ले जानेमें जो समय और पैसा खर्च होता है वह बचता है। इसके अलावा किसान तो हिंदुस्तानका अनाज और दालें पैदा करता है। वह जानता है कि अपनी फसलको चूहो वगैरहसे कैसे बचाए। अनाज जब एक स्टेशनसे दूसरे स्टेशनपर जाता है तो चूहोको नुकसान करनेका मौका मिलता है। देशको करोडोका नुकसान उठाना पडता है और लाखो टन अनाजकी कमी पड जाती है जिसकी हर एक छटाक हमारे लिए कीमती है। अगर हर एक हिंदुस्तानी खुराक पैदा करनेकी, जहा-जहा वह पैदा किया जा सकता है, जरूरत महसूस करने लगे तो बहुत मुमकिन है कि हम यह भूल जाए कि देशमें अनाजकी कमी है। मैंने अनाज अधिक पैदा करनेके लिए सुदर आकर्षक विषयको पूरी तरह बयान नही किया, लेकिन जितना मैंने बयान किया है उससे बुद्धिमान इस बातकी ओर ध्यान देंगे कि हर एक आदमी इस शुभ काममें किस प्रकार मदद दे सकता है।

अब मैं यह बताना चाहता हू कि जो तीन फी सदी अनाज हम बाहरसे शायद हासिल कर सकते है यह घाटा कैसे सहें। हिंदू हर एकादशीको या पद्रह रोज बाद उपवास या अर्ध-उपवास करते है, मुसलमान और दूसरे लोगोंको इस बातकी मनाही नही है कि कभी-कभी भोजनका त्याग कर दें, खासकर जब कि लाखो भूखोंके लिए उसकी जरूरत है। अगर तमाम मुल्क इस बातकी खूबीको महसूस कर ले तो हिंदुस्तान विदेशी अनाजकी कमीको जरूरतसे ज्यादा मिटा देगा। मेरा अपना खयाल है

कि राशनिंगका अगर कुछ लाभ है भी, तो वह बहुत कम है। यदि काश्तकारोंको उनकी मर्जीपर छोड़ दिया जाय तो वे अपनी पैदावारको बाजारमें ले आएंगे और हर एकको अच्छा खाने लायक अनाज मिलने लगेगा जो आजकल आसानीसे नहीं मिलता। मैं खुराककी कमीके इस मुख्तसिर[1] बयानको खत्म करता हुआ प्रेसीडेंट ट्रूमैनकी सूचनाकी ओर ध्यान दिलाता हूं जो उन्होंने अमेरिकन लोगोंको दी है कि उन्हें रोटी कम खानी चाहिए, ताकि यूरोपवालोंके लिए अनाज बचा सके, जिसकी उन्हें सख्त जरूरत है। प्रेसीडेंटने यह भी कहा है कि इस त्यागसे अमेरिकन लोगोंकी सेहत खराब नहीं हो जायगी। मैं प्रेसीडेंट ट्रूमैनको उनके पारमार्थिक बयानके लिए बधाई देता हूं। मैं नहीं मान सकता कि इस दानके विचारके पीछे अमेरिकाको पैसा बनानेका खयाल रहा होगा। मनुष्यको उसके कार्यसे जांचना चाहिए न कि उस भावनासे जिससे वह प्रेरित हुआ है। केवल परमात्मा ही मनुष्यके हृदयको जानता है। यदि अमेरिका भूखे यूरोपके लिए खुराकका त्याग कर सकता है तो क्या हम अपने ही लिए यह छोटा-सा त्याग नहीं कर सकते ? अगर बहुतको भूखे मरना ही है तो कम-से-कम हम इतना श्रेय तो लें कि हमने अपनी मदद करनेके लिए जो बन सकता था वह किया। यह मेहनत हमारे देशको ऊंचा उठाती है।

हमें उम्मीद करनी चाहिए कि डा० राजेंद्रप्रसादने जो कमेटी बुलाई है वह जबतक कोई अमली[2] हल इस खुराककी स्थितिको सुधारनेका न निकाल लेगी, काम न छोड़ेगी।

## : ११० :

७ अक्तूबर १९४७

भाइयो और बहनो,

कल जो मैंने कहा उसमें तो एक शब्द भी, आज जो हिंदू-मुसलमानके

---

[1] संक्षिप्त; [2] व्यावहारिक।

बीचमें चल रहा है उस बारेमे नही था। लेकिन आज ऐसा कुछ हो गया है कि मुझको बिलकुल खामोश रहना नही चाहिए। यहा नही हुआ है, वह हुआ तो है देहरादूनमे। खासा सज्जन मुसलमान था, उसको कत्ल कर दिया। जहातक मुझको पता है, उसने कुछ गुनाह नही किया था, और कोई कानून हाथमे लिया हो ऐसा भी नही है। लेकिन चूकि वह मुसलमान था, इसलिए उसको काट डाला। मुझको बुरा लगा कि ऐसा ही हम करते रहे तो आखिरमें हम कहा जाकर ठहरेंगे। आज तो मै देखता हू कि मेरे पास काफी मुसलमान भाई-बद पडे है। मेरा दिल झिझकता है। अगर मै उनको कहू कि आज यहासे जाओ, उस जगहपर चला जा—वह कैसे जाए? आज मै पाता हू कि ट्रेनमें मुसलमान सही-सलामत है, ऐसा भी नही। जिसको जो चाहे कपार्टमेंटसे उठाकर फेंक देते हैं या दूसरी तरह कत्ल कर डालते है। मै यह समझता हू कि पाकिस्तानमें ऐसी ही चीज हो रही है, लेकिन ऐसा हम करते रहें तो उससे हमको क्या फायदा पहुचनेवाला है। आखिरमे हम अपने-आपको पहचानें तो सही। अपने धर्मको भी तो पहिचाने। सबका धर्म सबके पास रहता है। हमारा धर्म क्या सिखाता है? क्या हम धर्मको छोडकर काम कर रहे हैं? क्या काग्रेस पागल थी? आखिर ६० बरसतक काग्रेस क्या करती आई? अगर काग्रेसने आजतक गलती की तो वह मुल्ककी दुश्मन थी, और मै कहूगा कि पीछे काग्रेसको हटा देना चाहिए। आज जो अपनेको काग्रेसी मानते है वे भी साफ-साफ कह दें कि हम काग्रेसको छोड देते है, दूसरी कोई पार्टी बना लेते है। उसमें कोई शिका-यत नही हो सकती है। लेकिन कुछ भी करो, सारी दुनियाके सामने और हमारे लोगोके सामने, मै इतना तो कह सकता हू कि हम अपने हाथोमें कानून न लें। ले लेगे तो हम अपनेको मार डालनेकी कोशिश करेंगे और आजादी गवा बैठेंगे, तो पीछे जब दूसरा कोई आकर हिंदुस्तानपर कब्जा कर लेगा तो हम हाथ मलना शुरू कर देगे कि हमने क्या गजब कर दिया। वह कोई अच्छी बात नही है। ऐसी बातोमे एक पाठ हमें सिखाया जाता है। एक नेवला था। उसने बच्चेको बचानेके लिए एक साप मार डाला। उसका मुह खूनसे लाल हो गया। मा तो आती है

बेचारी बाहरसे। सरपर पानीका बर्तन है। कुएपर गई थी, पानी लेने। मिट्टीका बर्तन था। वह नेवला तो नाचता-नाचता आया कि मैंने तुम्हारे बच्चेको बचा लिया, पर वह समझी कि उसने बच्चेको मार डाला है। वह बर्तन उसपर डाल दिया। बर्तनका पानी गया, बर्तन टूटा, नेवला मर गया। भीतर जाकर देखती है बच्चा तो पलनेमे पड़ा था और खेल रहा था। वह भी खुशीसे अपनी माको मिलना चाहता था। और सामने साप मरा पड़ा है। तो वह समझ गई कि नेवला उसका दोस्त था। अफसोस हुआ। कहा, मैंने खामखाह उसे मार डाला। तो ऐसा हम न करे कि आखिरमे हम, जैसे उस माको पछताना पड़ा वैसे पछताए कि अरे, हमने अपनी हकूमतका कहना न माना। हकूमत हमने बनाई है, क्या हम उसे बिगाड़ेगे ?

हमारे हाथोमे आज हकूमत आ गई है, अपने प्रधान आ गए है। आज मुख्य प्रधान यहा जवाहरलाल है। वह तो सच्चा जवाहर है और उसने काफी लोगोकी सेवा की है। सरदार है, दूसरे है। क्या वे हमको नापसद है ?· आज कहे जवाहरलाल तो निकम्मा है, वह ऐसा हिंदू कहां है, और हमको तो जैसा हम कहते है ऐसा ही करनेवाला चाहिए कि जो मुसलमानोंको छोड़ दे, उनको निकाल दे, तो ऐसा जवाहरलाल नही है, न मै ही हू, यह मै कबूल करता हू। मै अपनेको सनातनी हिंदू मानता हू, तो भी ऐसा सनातनी नही कि सिवा हिंदूके और किसीको हिंदुस्तानमे रहने नही दू। कोई किसी धर्मका हो, लेकिन हिंदुस्तानका वफादार है तो वह हिंदुस्तानी है और उसको यहां रहनेका उतना ही हक है जितना मुझको है। भले ही उसके जातिवालोकी तादाद बहुत छोटी हो। धर्म मुझको यही सिखाता है। बचपनसे मुझको सिखाया गया कि इसको रामराज्य कहो या ईश्वरीय राज्य कहो। कभी हो नही सकता है कि एक आदमी इस वक्त विधर्मी है इसलिए वह नालायक है, नापाक है। तो आप समझे कि गांधी भी तो कैसा हिंदू है। गाधीके हाथमे ताकत नही है, वह प्रधान नही है। जवाहरलाल है, तो उसे चाहो तो हटा सकते हो। सरदार है। कौन सरदार? वह बारदोलीका सरदार है। उसकी मानते हो ? तो उसके भी मुसलमान दोस्त पड़े है। उनके

दोस्त इमाम साहब जो गुजरातमें हमारी कांग्रेसके सदर[1] थे, मर गए। अब इमाम साहबके दामाद अहमदाबादमें हैं। मेरा खयाल है वे डिस्ट्रिक्ट कांग्रेसके प्रधान हैं। खासा आदमी है, बड़ा भला है। मैं तो उसे बहुत जानता हूं। उसने इमाम साहबकी लड़कीसे शादी की। वे इमाम साहब, जो दक्षिण अफ्रीकासे मेरे साथ आए थे, अपना कारबार छोड़कर अपनी बीवीको साथ लेकर आए और मेरे साथ रहे। वे मर भी गए, उनकी जवान लड़की बैठी है। क्या मैं उसे छोड़ दूं और कहूं कि अब तू हमारे कामकी नहीं है; क्योंकि आखिरमें तू मुसलमान है? मुसलमान है इसमें कोई शक नहीं; लेकिन वह भली है, अच्छी है, ऐसा मैं कह सकता हूं। उसको पता नहीं है कि उसको जाना पड़ेगा। अगर सरदार उसे जाने दें तो पीछे वह कहां रहनेवाली है? हम अपने हाथोंमें कानून न लें। और जो कानून होनेवाला है वह सरदार या जवाहरलाल करें, आर्डिनेंस बनावें और पीछे वह प्रजापर छोड़ दें, ऐसा प्रधान आज हो नहीं सकता। माना कि अंग्रेजोंके समय वह सब पहले चला था, उन्होंने जो किया सो हम भी करें क्या? हम जिसकी शिकायत आजतक करते रहे हैं, वही शिकायत हमारे लिए की जाए? ऐसा हम बर्दाश्त न करें। यही मैं तो कहना चाहता था।

## : १११ :

८ अक्तूबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

एक सज्जन मेरे पास आते हैं, अच्छे हैं। वे देहरादूनसे आ रहे थे। ट्रेनमें काफी आदमी थे। तो किसी स्टेशनपर, मैं स्टेशनका नाम तो भूल गया, उनके डिब्बेमें एक आदमी आ गया। बाकी तो उस डिब्बेमें सब हिंदू थे, सिख थे। किसीके हाथमें तलवार थी, किसीके छुरा था।

---

[1] प्रधान।

उन्होने नए आनेवालेको देखा। किसीने पूछा कि आप कौन है। वह तो बेचारा अकेला आदमी था, उसने कहा भाई मैं तो चमार हू। लेकिन उनको शक हुआ। उसका हाथ देखते है तो उसका नाम हाथोमें गुदा हुआ है। कभी लोग हाथोमें अपना नाम लिखवा लेते है। तो वह तो मुसलमान साबित हो गया और किसीने उसके छुरा भोक दिया और पीछे जमुनामे जो बीचमे रास्तेमे आती है उठाकर फेंक दिया। यह कार्रवाई तो की एक ही आदमीने, लेकिन इतने आदमी थे, वे भी उनके गवाह रहे। मुझसे वात करनेवाले सज्जन यह सब देख न सके और मुह दूसरी ओर फेर लिया। मैने तो उनको कहा कि अगर आपके दिलमे रहम आ गया था और आप उस चीजको ठीक नही समझते थे तो आपने क्यो नही उस आदमीको कहा कि अरे ऐसी वहशियाना वात न करो। पचास साठ हिंदू, सिख उस डिब्बेमें थे, उनमे एक बेचारा मुसलमान। यह कहाकी इन्सानियत है कि उसको कोई मार डाले और जमुनामे फेक दे। वह बिल्कुल मर गया था ऐसा तो न था, उसके छुरा भोका गया था और वैसा ही फेक दिया गया था। आपमे इतना रहम था तो इतना आपने क्यो नही किया, क्यों नही उसको मरनेसे वचाया? उसने कहा कि मुझको दुःख तो हुआ, लेकिन मैं अपना फर्ज भूल गया। मुझको सूझा नही कि क्या करना चाहिए तो मैने कहा यह तो कोई अच्छी बात नही है, यह कोई इन्सानियत नही है। हम इतने लोग पडे है, एक हमारा मुसलमान भाई आता है, उसका इस तरहसे खून कर देते है, फेक देते है, ऐसा करनेवालेका हाथ पकडो और रहमसे मुहब्बतसे कहो कि आप यह क्या करते है, किसको मारते है, उसने तो कोई गुनाह नही किया है, उसको आप न मारे। और अगर वह न माने तो उस भाईकी जान बचानेके लिए आप अपनी जान कुर्बान कर दे, तो मुझे बडा अच्छा लगेगा। एक आदमीको पचास साठ मिलकर मार डाले, इसमे क्या बहादुरी है? लेकिन इतने आदमी जमा हुए है उसमेंसे एक आदमीको किसीने मारनेका इरादा कर लिया और वह उसको मार डालता है तो सब बैठे देख रहे है, उनके दिलमे या तो यह खयाल होता है कि चलो, मार डाला अच्छा है, इसमें बात क्या है। मै कहूंगा कि जो लोग इस तरह सोचते है वे बहुत भारी

गलती कर रहे है । वे मारनेवाले ऐसे भी लोग होते है जिनके दिलोमें रहम तो है और वे मारनेको अच्छा काम नही समझते, लेकिन चूकि उनको अपनी देह प्यारी है, इसलिए वे कुछ नही कर सकते और वे भूल जाते है कि उनको ऐसे मौकेपर क्या करना चाहिए था। इसमें भूलना क्या था, एक आदमी इस तरहकी वहशियाना हरकत करे तो आप उससे कहे कि ऐसा मत करो । यह कितनी बुरी बात है कि जिन आदमियोंको यह काम पसद नही था वे भी उसके गवाह होते है । मै आपको कहना चाहता हू, क्योकि मैने नजरोसे देखा है कि एक आदमी ऐसा बुरा काम करता है तो दूसरे आदमी जो खडे रहते है वे उसको पसंद भी नही करते लेकिन हिम्मत नही कर सकते कि आगे बढकर रोकें । एक भी भाई हिम्मत करके उठ खडा होता है और उसे रोकता है और कहता है कि अगर उसे मारोगे तो मै तुम्हारा हाथ पकड लूगा, नही मानोगे तो खुद मरूगा लेकिन उसको नही मरने दूगा, तो वह तो मै समझूगा । लेकिन अगर मेरे जैसा आदमी है वह तो अहिंसापर रहेगा, खुद मर जायगा, मार तो सकता नही, लेकिन उसकी जान अपनी जान देकर बचाएगा। मुझे तो इसमे कोई शक नही है कि अगर कोई इस तरह हिम्मत करता तो वह आदमी बच जानेवाला था। और अगर उसे बचानेकी कोशिशमें अपना खून हो जाता तो वह तो सच्चा बहादुर आदमी साबित हो जाता । इसीका नाम सच्ची अहिंसा है । सच्ची अहिंसा यह नही है कि बलवानके सामने तो हम अहिंसाका उपयोग करें, लेकिन कमजोरपर हिंसा करे ।

अंग्रेजोके लिए हमने अहिंसाका इस्तेमाल किया लेकिन आज हम हिंसा अपना रहे है । किनके साथ ? अपने भाइयोके साथ । तो अंग्रेजोंके साथ जो हमने अहिंसाको अपनाया वह बहादुरोकी अहिंसा नही थी। उसका नतीजा हिंदुस्तान आज पा रहा है और उसका नतीजा आज मै भी पा रहा हू, आप भी पा रहे है । मै कबूल करता हू कि मै आपको सच्ची अहिंसा नही सिखा सका । मै तो आपको बहादुरकी अहिंसा बतलाता हू । आज यहां मुसलमान पडे है, पाकिस्तान वहा हिंदुओंके साथ बुरा करता है, तो हम भी यहा वही करें ? वे क्या कोई बहादुरीका काम करते है ! मै तो कहता हू कि पाकिस्तान जो करता है वह बुरा करता

है और हम यूनियनमें अगर उसकी नकल करते हैं तो वह भी बुरा है। पीछे यह कहना कि किसने पहले किया, किसने बादमें किया, किसने कम किया, किसने ज्यादा किया, यह तरीका दोस्त बनानेका नहीं है। सच्चा तरीका दोस्तीका तो यह है कि हम हमेशा इन्साफपर रहें और शरीफ बने रहें। इस तरह करनेसे जगली और दीवाना भी आखिरमें सुधर जाता है। हम इसमें नहीं जाना चाहते कि किसका गुनाह बड़ा है और किसका छोटा और किसने पहले शुरू किया। ऐसा कहें तो यह सब मैं जहालत समझता हूं। वह दोस्तीका तरीका नहीं है। जो कलतक दुश्मन थे उनको दोस्त बनना है तो भले ही कलतक उनमें दुश्मनी रही हो, लेकिन आज जब उन्होंने दोस्ती कर ली है तो पीछे वे सब कलकी बात भूल जाते हैं। उसको याद क्या रखना था? दोस्तीका यह तरीका नहीं है कि लड़ना होगा तो लड़ेंगे, उसके लिए भी तैयारी कर लें और अगर दोस्ती हो गई तो दोस्त बनकर रहेंगे। इसमेंसे सच्ची दोस्ती पैदा नहीं हो सकती।

अब मैं दूसरी चीजपर आ जाता हूं और इस बारेमें थोड़ासा कह दूं तो अच्छा है। आज दुनियामें अखबारोंकी ताकत बहुत बढ़ गई है जब एक मुल्क आजाद हो जाता है तब पीछे उसकी ताकत और भी बढ़ जाती है। आजादीके जमानेमें यह नहीं हो सकता है कि जो अखबार निकालनेवाले हैं उनको सिर्फ इतनी रिपोर्ट देनी है और यह खबर नहीं देनी है, वह सब बन नहीं सकता। मगर लोकमत ऐसे वक्तमें बड़ा काम कर सकता है। अखबार जो गंदी बात कहते हैं या झूठी बात कहते हैं या दूसरोंको उकसानेवाली बात लिखते हैं या तो हकूमत उनको बंद करे और उनपर कानून लगावे, कोर्टमें चली जाय। लेकिन वहां जानेसे हुल्लड़ मच जाता है, और काम बढ़ जाता है। हकूमत ऐसा भी नहीं कर सकती। अंग्रेजोंका जमाना दूसरा था। उनको क्या पड़ी थी? तिलक महाराज-जैसे आदमीको पकड़कर छः बरसके लिए सजा कर दी। अखबारमें उन्होंने कुछ दिया था। ऐसी कोई खास बात भी नहीं लिखी थी। तो भी उनको छ बरसकी सजा मिली। और पूरी सजा भुगतनी पड़ी। इस तरहसे बहुतोंको जेल जाना पड़ा। मुझको भी छ बरसकी सजा हो गई थी। छः वर्ष रहा नहीं यह दूसरी बात है। लेकिन सजा हुई छ. बरस की, क्योंकि

मैंने 'यंग इंडिया' में एक लेख लिखा था। कोई बुरा नहीं लिखा था, लेकिन सजा मुझको दी गई। आज आजादीके जमानेमें यह सब नहीं हो सकता। आज तो जो अखबारनवीस हैं, एडीटर हैं और जो अखबारोंके मालिक हैं, उनको सच्चा बनना है, लोगोंका सेवक बनना है। अखबारोंमें गलत और झूठी खबरोंको न आने देना चाहिए और न लोगोंको उकसानेवाली बातें छापनी चाहिए। आज आजादीके जमानेमें तो यह पब्लिकका फर्ज हो जाता है कि गंदे अखबारोंको न पढ़े, उनको फेंक दें। जब उन्हें कोई लेगा नहीं तो वे अपने-आप ठीक रास्तेपर चलने लगेंगे। आज मुझे बड़ी शर्म लगती है यह देखकर कि गंदी और गलत खबरोंको पढ़नेकी लोगोंकी आदत-सी हो गई है। ऐसे अखबार आज चलते हैं। एक चीज मैंने देखी, वह रिवाड़ीका किस्सा है। एक अखबारने लिख दिया कि रिवाड़ीके मेव लोगोंने, जो वहां पड़े थे, सारे हिंदुओं को मार डाला, मकान जला डाले और माल, मवेशी लूट लिए। मेवोंने इतना बुरा काम किया यह खबर देखकर मुझे बड़ी चोट लगी। दूसरे रोज अखबारमें रिवाड़ीके बारेमें कोई खबर ही न थी। यह सब बनाई हुई बात थी। मैं परेशान था कि उस अखबारमें रिवाड़ीकी बात कैसे आ गई। मैं तो कहूंगा कि जिस सज्जनने रिवाड़ीकी बातें लिखी थीं उसे यह साफ करना चाहिए। अगर गलती की थी तब भी और अगर जान-बूझकर ऐसा लिख दिया था तो भी उसको माफ होना चाहिए। उसने खुदाके सामने बड़ा गुनाह कर लिया है, ऐसा नहीं होना चाहिए था। ऐसा वह करे तो हमारा काम आगे नहीं बढ़ सकता है। हुकूमत तो आज अखबारवालोंकी चौकसी नहीं कर सकती, वह चौकसी तो मुझको करनी चाहिए, आपको करनी चाहिए। हम अपने हृदयको साफ करें, गंदी चीजको पसंद न करें। गंदी चीजको पढ़ना छोड़ दें। अगर हम ऐसा करेंगे तो अखबार अपना सच्चा धर्म पालन करेंगे। एक बात और कहकर मैं खतम करूंगा।

जैसे अखबार हैं वैसे ही हमारी मिलिटरी है और पुलिस है। मिलिटरी और पुलिस सबके दो हिस्से हो गए। वह उन्होंने नहीं किया यह मैं कबूल करता हूं, लेकिन हो गया। तो यहांकी जो मिलिटरी है, उसमें हिंदू हैं सिख हैं। और मुसलमान फ़ौज पाकिस्तानमें चली गई है। अगर

हिंदू, सिख फौज और पुलिस अपने दिलमें ऐसा समझे कि हम तो हिंदू हैं, सिख है, इसलिए हिंदूकी ही रक्षा करेंगे, हिंदू है, उसने एक गुनाह किया है तो उसको छिपाएगे, जो मुसलमान है तो उनके लिए हम सिपाही कहा है, मिलिटरी कहा है, उनकी हम रक्षा क्यो करे ? ऐसा हमारे लोग समझ ले, और पाकिस्तानमें जो मुसलमान फौज है, पुलिस है वह ऐसा समझे कि जो हिंदू है उसको मारो, उसकी रक्षा करना हमारा धर्म नही है। ऐसा अगर हो तो हिंदुस्तानका भला नही हो सकेगा। हकूमतके पास तो पुलिस है, फौज है। लेकिन मुझे न तो पुलिस चाहिए न मिलिटरी चाहिए। मै तो लोगोसे कहूगा कि आप हमारी पुलिस बन जाइए, फौज बन जाइए। हिंदू अगर यहा मुसलमानोको मारते है तो उन्हे बचाना है। हमें उस कामसे हटना नही है।, मै मर भी जाऊ लेकिन पीछे नही हटूगा। तो मेरी हकूमत तो ऐसी है। यह कोई मै हवामें बात नही कर रहा हू, सच्ची बात है सो कहता हूं। तो वही बात मै हकूमतकी मिलिटरी और पुलिससे कहता हू। उनका पहला धर्म यह हो जाता है कि मुट्ठी भर भी मुसलमान अगर यहा पडे है तो उनकी रक्षा करनी है। अगर उनपर, जो यहा पडे है, हिंदू हमला करते है, सिख हमला करते है, तो पुलिस और फौजको उनको बचाना चाहिए। अपनी जानको खतरेमे डालकर भी उनको बचाना चाहिए। तब वह सच्ची पुलिस है, सच्ची मिलिटरी है। हिंदुस्तानको जो आजादी मिली है, वह भी एक अजीब किस्मकी है। सारी दुनिया ऐसा कहती है और मैं भी कहता हू कि इस तरहसे किसी भी हकूमतने किसी मुल्ककी आजादी वहाके लोगोको नही दी है। बिना किसी लडाई-झगडेके और खूनखराबीके हमने अपनी आजादी पाई है। तो जरूरी है कि हमारी मिलिटरी हो, पुलिस हो, वह ऐसी न हो कि जेब भरनेके लिए काम करे। उनको जितना मिलता है, उससे सतोप रखना चाहिए। उनको यह नही सोचना कि मिठाई मिले, जलेबी मिले और दूसरे स्वादिष्ट भोजन मिले। सिपाही तो वह है जो सूखी रोटी नमक मिलता है उसको खाकर पेट भर लेता है और अपने धर्मका पालन करता है। लेकिन अगर वह समझे कि दूसरे आदमी-का लडका तो कालिज-मदरसेमे जाता है, उसके लिए तो मोटर रहती

है बाईसिकल रहती है और क्या-क्या चीजें नही रहती है, और हमारे पास तो कुछ भी नही है, इसलिए रिश्वत लेना है, प्रजाको खाना है, तब वह प्रजाके सेवक नही रहते। इस कारण मै कहता हू कि रोटीका टुकडा खाकर जो मिले उसमें राजी रहकर अपना काम बिना धर्मके भेदभावके करे वही सच्चा फौजी और सिपाही है। वह कभी ऐसा न सोचे कि मै हिंदू हूँ इसलिए मुसलमानको मारू। मुसलमान अगर बदमाशी करे तो उसे पकडे और सजा दिलवाए वह दूसरी बात है। लेकिन क्या जो बेगुनाह आदमी है मगर मुसलमान है, उसको हम यहा इसलिए मारें कि दूसरे मुसलमान जो वहा है वे बिलकुल बदमाश है? अगर कोई भी हिंदू ऐसा करता है तो सिपाहीका धर्म हो जाता है कि वह उस मुसलमानकी रक्षा करे। तब मैं कहूगा कि वह जो हिंदुस्तानका नमक खाता है उसको सही अदा करता है। और अगर हमारी पुलिस और मिलिटरी ऐसा नही करती तो वह नमकहराम बनती है।

ऐसा मै पाकिस्तानकी मिलिटरी और पुलिसके लिए भी कहूगा। लेकिन वहा तो मेरी कुछ चलती नही है। मै किसको कहू किसको न कहू। लेकिन मै जो यहा कहता हू अगर यहा वैसा होता है, तो वहा अपने-आप बादमें वैसा होना है, इस बारेमे मुझे कोई शक नही है। तो आज तो लोगोके दिमाग बिगड गए है, वे कहते है कि वहा हमारे भाइयोपर ऐसा होता है तो हम यहा भी वैसा क्यो न करे? लेकिन ऐसा कहना इन्सानियत नही है। इसलिए मै तो जबतक मेरेमें सास है, चीख-चीखकर यही कहता रहूगा कि हम अपनेको साफ रक्खे, शरीफ बने रहे, हमारे अखबारोको शरीफ रहना है, मिलिटरी और पुलिस है उसको शरीफ रहना है। यह चीज अगर नही रहती है तो हमारी हकूमत चल नही सकती है और पीछे हम बेहाल हो जायगे। पाकिस्तानमे कुछ भी हो, हमे शरीफ रहना है। वह दीवाना बने, तो भी हमे तो शरीफ ही रहना है। तो मै कहता हू हमे शराफत हर हालतमे अपनेमे रखनी है। इतना तो करो। अगर मेरी न सुनी, तो मै कहता हू कि सब बेहाल होनेवाले है।

## : ११२ :

### ६ अक्तूबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

हमेशा मैं किसी न किसी रूपमे वही बात कह देता हू। लाचार बैठा हू। इसी कामके लिए तो यहा पडा हू। मुझे कहना चाहिए कि क्योंकि आप उदार है, भले हैं, इसलिए शातिसे मेरी बात सुन लेते हैं, इसलिए मैं आपका उपकार मानता हू। धन्यवाद ही दे सकता हूं। लेकिन मेरेमे ऐसा तो है नही कि चलो मैंने सुना दिया और लोगोने शातिसे सुन लिया और खतम हुआ। उससे मेरा पेट नही भरता। हमारे इतने लोग परेशान पडे हैं, हिंदुस्तानमें बहुत जगह पडी है, उनके लिए क्या करना चाहिए? उन लोगोंका धर्म क्या है? हकूमतका धर्म क्या है? जो लोग एक किस्मकी खराब आबोहवा पैदा करते है उन्हे हमे समझना है, समझाना है, तब तो पीछे जो लोग दूसरी जगह पडे है उनतक भी मेरी आवाज पहुचेगी।

मेरे पास कुछ लोग, जो लोग परेशानीमे हैं, वे आ गए थे। वे लोग बडे अच्छे है। पाकिस्तानके पश्चिमी पाकिस्तानके है। मेरे पास दस-बारह रोज पहले आ गए थे। पहले मैंने कहा, मुझे सब कुछ लिखकर दो। उन्होने लिखकर बयान दे दिया, ताकि मुझसे कुछ हो सकता है तो करू। उनका कहना यह था कि जो पाकिस्तानमें पडे है, उन लोगोके आनेका कुछ प्रबध हो, नही तो वे आ नही सकते। रास्तेमे खतरा रहता है। उनके पास अनाज है, पर अनाज साथमे कैसे ला सकते है? रखने कौन देगा? हवाई जहाजमे आ जाय, मोटरसे आ जाय ऐसा ही रास्ता आज हो सकता है। ट्रेनमें आज बडी दुश्वारिया है। जैसे पहले चलती थी ऐसे ट्रेनें चलती भी नही। जो अबतक आ नही पाए है उनका पीछे क्या हाल हुआ वह भी पता नही। ऐसी हालतमे वे आ जाय तो अच्छा है। लेकिन मै सोचता हू कि हम है कहा, और कहा जा रहे है?

अब मैं जरा मनको बगालकी ओर ले जाऊ। वहा भी तो मैंने काफी

काम किया है। पूर्वी बगालमे भी और पश्चिमी बगालमे भी। पूर्वी बगालमे तो नवाखाली है, जो आज पाकिस्तानमे है। वहा मै चला गया था और वहा बडी लबी पैदल यात्रा की। रोज अलग-अलग जगहपर चला जाता था। वहाके लोगोसे बातचीत करता था। हिंदू बहनो, भाइयोमे जो डर भरा था उसे निकालता था। राम नामसे निकालना ठहरा। राम नाम लेते हुए कोई मार डाले तो मर जाए। ऐसा हमे क्या जीनेका मोह पडा है ? क्या जिंदा रहनेके लिए राम नामको छोड दे ? डरके मारे राम नाम न ले ? औरते अगर कुमकुम लगाती है तो वह न लगाए ? वहा जो औरत विधवा नही होती वह शखकी चूडिया पहनती है, यह सौभाग्यकी निशानी है। जो विधवा बन जाती है वे नही पहनती। तो क्या डरके मारे शखकी चूडी न पहनें, हालाकि वे विधवा नही है ? जो शुभ चिन्हके रूप शखकी चूडिया पहनती थी वे आज पहननेसे झिझकती थी तो मैने उनको समझाया कि ऐसे नही करना चाहिए। वे समझ गई और कहा कि अब पहनेगी। अब मै सुन रहा हू कि वहासे आहिस्ते-आहिस्ते लोग चले आते है। इसका मुझे पता नही चला, वहा तो मेरे आदमी पडे है। शायद मैने आपको कहा है कि जो अच्छे आदमी मेरे साथ थे वे सब वहा पडे है। प्यारेलाल वहा पडे है, खादी प्रतिष्ठानके लोग वहा पड़े है, कनु गाधी वहा पडे है। ऐसे काबिल लोग वहा पडे है। सतीशचन्द्र भी वहा पडे है। वे सब लोगोको हिम्मत देते है। लेकिन फिर भी लोग भागे चले आते है। वहा लोगोको परेशानी है। होनी भी चाहिए। लेकिन वहासे भागना क्या था ? कहासे भागेगे और भागकर वे करेगे क्या ? वे सोचे। हमारे यहा कुरुक्षेत्रमे २५००० शरणार्थी पडे है, औरते है, मर्द है। कुछ औरतें है जिनके बच्चे होनेवाले है। उनमेसे कोई मर जाय तो बडी बात नही होगी, क्योकि वहा उनका इलाज आज कौन करेगा ? वहा मकान भी नही है, लोग परेशान है, क्योकि वे पजाबसे भागकर आए है। तो मै अपने दिलमे सोचता हू कि मुझे उन लोगोको क्या सलाह देनी चाहिए ? जितने आए है इससे ज्यादा तो अब भी पडे है। हम कोई दस-बीसकी तादादमे हो, लाख दो लाखकी तादादमे हो तो उन्हे समझा सके, सभाल सकें। करोडोकी

तादादमें, इस बड़े मुल्कमे लोग पड़े है, वहां लोगोको तबदील[1] करना, एक जगहसे दूसरी जगहपर ले जाना छोटी बात मत समझो। इसमें परेशानी इतनी है कि वे बिचारे बगैर मौतके मर जाते है, भूखो मर जाते है। हकूमत सबको सब चीज पहुचानेकी कोशिश करे तो भी पहुचा नही सकती है, चाहे कितनी भी कोशिश करे। हकूमतके पास आज जो सिपाही है, मिलिटरी है, सबका इतजाम अग्रेजोके पास जैसा था वैसा तो हो नही सकता। होना नही चाहिए। हकूमतके पास जो फौज है वह लोगोकी मारफत काम चला सकती है। लोग चाहें तो वे हकूमतके हाथ है, पैर है। अगर वे उन लोगोको मदद न दे और उनके पाससे मददकी उम्मीद करें तो वह मिल नही सकती। यह मै वजीरोसे भी कहता हू। मै देखता हू कि हकूमत बेफिकर नही है। मै करीब-करीब हमेशा उनको मिलता हू। वे लोग भी परेशान है यह मै आपको कहना चाहता हू। मगर वे करे क्या? आखिरमे हकूमत तो वे जानते नही थे। काग्रेस चलाई मगर वह तो मुट्ठी भरकी थी। हमारे दफ्तरमे जितने नाम रजिस्टर है उतने भी तो कभी हाजिर नही हुए और हमारे दफ्तरमे जितने है वह तो मुट्ठी-भर आदमी है, थोडे पैसोमे काम करना रहा। आज करोडोका काम करना है। करोडो रुपया पडा है और हजारोकी तादादमे जो आदमी पडे है उनका थोडोकी मारफत काम करना है।

यह काम कैसे हो सकता है। और कैसे पचीस हजार आदमियोको समयपर खाना पहुचा सकते है, वह सोचना है। हजारो नए आदमी रोज आते है, तो वे भूखो रहते है। कपडा पूरा नही है और जाडेके दिन आ रहे है। जो हाल यहाका है वही हाल आप समझे कि पाकिस्तानमे है। पाकिस्तानमे कोई जन्नत है और हमारे यहां दोजख है ऐसा नही है। या यह कहो हमारे यहा जन्नत है तो वह है नही, यह मै नजरोसे देखता हू और पाकिस्तानमे दोजख हो ऐसा भी नही। आखिरमें दोनो जगहोमें इन्सान है, कोई अच्छा है, कोई बुरा है लेकिन, उस अच्छापन और बुरापन-का हिसाब कौन निकाले? निकालकर हम क्या पाएगे? मेरे सामने

---

[1] बदलना।

तो बडा प्रश्न ही यह हो जाता है और आपके सामने भी यही होना चाहिए, कि ऐसे लोग जो पडे है, जिन्हे आना है या जो आ गए है, उनकी जो हो सके हिफाजत करे। लेकिन जो आए है उनके लिए भी हमारी कोशिश यही होनी चाहिए कि वे आखिर अपने घर चले जाए। मै आपको कहता हू कि उन्हें अपनी जगहपर जाना है। मै तो जानता हू कि जो देहातमे रहनेवाला आदमी है वह अपने देहातको छोडकर नही जायगा। एक एकड जमीन हो तो उसके पीछे वह ख्वार हो जायगा। हजारोकी तादादमें, लाखोकी तादादमे लोग चले जाए तो कहा जाए, कैसे रहें। जाते-जाते तो रास्तेमे मरते जाते है। इसलिए मै कहता हू कि हमे मरना है तो हम मरेगे। किसी जगहपर पडे है तो वहा पडे रहेगे। पीछे क्या होता है देखेंगे। पाकिस्तानमे रहते है तो वह देखनेवाला नही है, ऐसा नही है। देखनेवाला ईश्वर तो है और दूसरा कोई है या नही, हकूमत तो है।

अभी बगालमें मैने कहा हमारे दोस्त सब पडे है। तो जो हकूमत पश्चिमी बगालमे है वह पूर्वी बगालकी हकूमतको लिखे, कि यहा क्या है। लेकिन वहाके लोग, वहा भी क्या, हर जगहपर, जो हकूमत कहे उसकी तामील[1] नही करते। अफसर लोग उसकी तामील नही करते। उनके दिल-दिलमें ऐसा गुमान आ गया है, अब तो आजादी आ गई है अब कौन है हमे पूछनेवाला। अग्रेज थे, वह तो गए। उनकी लाल आखे देखकर तो यह काप उठते थे। अब क्या हो गया है? अग्रेजोके सामने कापते थे इसका मै गवाह हू। लेकिन आज सबको लगे कि हमको कौन पूछनेवाला है, हम अपने जनरल है, सिपाही है, ऐसी आजादी हम पा गए है, उस आजादीमें अच्छा लगे सो करेगे, तो मै आपको कहना चाहता हू कि इस तरह काम नही चल सकता।

दोनो हकूमते मानती है कि हमे इन्साफ करना ही है, तो पीछे जोर आ जाता है। लेकिन माना कि हकूमत इन्साफ नही करना चाहती तो क्या होगा? आखिर हो क्या सकता है? मै तो लडाई करनेवाला आदमी हू नही, मै तो लडाईसे भागूगा। लेकिन जिसके पास हथियार रहते

---

[1]पालन।

है, सिपाही या पुलिस रहती है, मिलिटरी रहती है, उसको लडना नही तो दूसरा क्या करना है ? मै तो कुछ कर नही सकता हू, लेकिन जिसको करना है उसे तो करना ही है। तब लडना होगा। मेरे धर्मके आदमी जहा पडे है, वहा वे परेशान पडे नही रह सकते है। तो हमको कुछ करना होगा। वह तो दोनो हकूमतके लिए मै वात करता हू। दोनो हकूमतके लिए होता है। उसमे जो जालिम है उसको यह हक नही कि दूसरे जालिमको सजा दे। जो हकूमत लोगोको अच्छी तरहसे नही रखती या नही रख सकती वे दूसरी हकूमतका इसी दोषके लिए सामना करेंगे क्या ? ऐसा कोई कर सकता है ? इन्साफके लिए लडते-लडते हम मर गए, हकूमत मर गई तो मै समझ सकूगा। लेकिन हम आज इस तरह डरके मारे मर जाए मरते-मरते वहासे भाग आवे ? आवे तो आते-आते मर जाते है, पीछे आते है तो, लेकिन रखना कहा ? उनको खाना कहासे दोगे ? वे क्या वेकार वैठे रहेगे ? वेकार न वैठें तो उनको काम-धधा देना होगा। इस देशमें आपके करोडो लोग भूखसे मरते है, करोडो वेकार वैठे है, उनके लिए तो हम कुछ कर नही पाते, तो जो लोग वाहरसे आते है, वाहरसे नही किसी दूसरे प्रातसे आते है, परेशानीमे पडे है, उनके लिए काम कहासे निकालोगे ? वह जो पेशा करते थे, वह कैसे होगा, वे कैसे करेंगे और क्या करेंगे ? झझट यह वडी है, इसमेसे खरावी पैदा होती है, वह खरावी जो मै वताता हू, उसमें हो नही सकती और पीछे लोग वहादुर वनते है। लोग मरनेका इल्म सीख जाते है। मरनेका इल्म सीख लें तो हमारा भी भला है और जगतका भी भला है। मैंने आपको जो उपाय वताया है वह हम हिंदुस्तानको समझा दे तो सवका भला है। हम वहादुर वनते है और पीछे सारा जगत हमारी तारीफ करनेवाला है, उसमे मेरे दिलमे कोई सदेह नही।

कही है वह तो वडी सीधी है और बिल्कुल व्यवहारकी बात है। यानी बाहरसे खुराक नही मंगवाना। ऐसी व्यवहार की बात सुनते ही लोग काप क्यो उठते है ? कहते है आदत पड गई है। आदत तो पड़ी है पर वह तो कई वरसोकी नही। वह हमारी आदत कही भी नही जा सकती है कि हमको कोई रोटी खिलावे तो हम खाए। हमारे लिए ऐसा इतजाम बने कि हमें छ आउस, आठ आउस, वारह आउस अनाज, जो कुछ भी हो उतना अनाज, हमे मिले तव हम खा सकते है, और उसके लिए नई-नई चिट्ठिया लिखे। वह तो व्यवहारके बाहरकी बात हो गई। जो मै कहता हू वह बिल्कुल व्यवहारकी बात है। और उसमे परेशान क्या होना था। हिंदुस्तान जैसा बड़ा मुल्क जिसमे करोडोकी तादादमें हम पडे है, जमीन भी हमारे पास काफी पडी है, ईश्वरकी कृपासे पानी भी बहुत है। ऐसे स्थान है हिंदुस्तानमें कि जिस जगह पानी नही मिलता। ऐसे रेगिस्तान पडे है यह मै जानता हू, लेकिन ऐसा नही कहा जा सकता कि हिंदुस्तानमे किसी जगह पानी मिलता ही नही है। तो हमारे पास पानी पडा है, जमीन पडी है, करोडोकी तादादमे लोग पड़े है, हम क्यो परेशान बने।

मेरा तो कहना इतना ही है कि लोग इसके लिए तैयार हो जाय कि हम अपने परिश्रमसे अपनी रोटी पैदा कर लेगे। रोटी खानेके लिए अनाज पैदा कर लेगे। इससे लोगोमें एक किस्मका तेज पैदा हो जाता है और उस तेजसे ही आधा काम हो जाता है। कहा जाता है और वह सच्ची बात है कि मौतके डरसे जितने आदमी मरते है उससे बहुत कम सच्ची मौतसे मरते है। एक आदमीको ऐसा हो गया कि मै तो आज चला कल चला। किसी आदमीको क्यो, मुझको ही ले लो। मुझे खांसी हो गई तो खासीके कारण मैं समझ लू कि मै तो अब मर जाऊगा, तो मरना तो जब है तब मरूगा, वह तो भगवानके हाथमे पडा है, लेकिन मै अगर आजसे परेशान हो जाऊं और ऐसा मान लू कि मै तो अब मरा तो वह बेमौत मरना है। और रोज मरना अब चला हाय ! अब क्या होगा, तो इस तरह जो मेरे समीपमें लोग पडे है उनको भी परेशान करूगा और मै भी परेशान हूगा और हमेशा सूखता जाऊगा। हमेशा रोता ही रहूगा कि

अब मैं चला। उससे अच्छा तो यह है कि जबतक हमको मौत नही आती तबतक हम आराममे पड़े रहे और समझे कि कोई हमको मारनेवाला नही है, कोई मारनेवाला है तो ईश्वर है। जब उसका जी चाहेगा उठा लेगा। एक तो यह चीज कि हम मौतका डर छोड देते है तो हमको हमारी परेशानी भी छोड देती है। इस तरहसे मै कहता हू कि जब हम यह करेगे, तब हम परेशान न होगे। किसीको यह नही सोचना चाहिए कि हम किसीकी मेहरबानीसे अपनी खुराक पावे। बल्कि हम अपनी मेहनतसे उसे पैदा करे। तभी मैं कह रहा हू कि हम बगैर मौतके न मरें। आज जो चिटें मिलती है, राशनिंग होती है और इसी तरहके जो तरीके हमें बेमौत मारनेके है, उनको हम छोड दे। यह तो खुराककी बात है।

ऐसी ही बात कपडोकी है। मैंने तो कह दिया है कि अब जितना कपडा मिलता है, उससे चौगुना मिल सकता है। हमारे मुल्कमें कपडोकी तगी कैसी? मेरा तो ऐसा विश्वास है कि खुराककी तगी तो थोडी-सी हो भी सकती है, लेकिन कपडोकी तगी इस हिन्दुस्तानमें नही होनी चाहिए। क्यो नही होनी चाहिए? क्योकि हिन्दुस्तानमे जितनी रुई पैदा होती है वह हमको जितनी कपड़ोके लिए रुई चाहिए उससे बहुत अधिक है। हिंदुस्तानमे कातनेवाले, बुननेवाले, इतने काफी पडे है कि अपने-आप कात सकते है और सूतको बुन सकते है और आरामसे पहन सकते है, तब तो पीछे हम बिल्कुल आजाद बन जाते है खानेके लिए, कपडेके लिए, और मिलसे भी हम आजादी पा लेते है। आज तो नही पाई और अभी पा नही सकते तो उसमें हमारा अनजानपन है। मेरा खयाल था कि हम ऐसा करेगे। लेकिन आज तो वह नही है, वह जमाना तो चला गया कि जब मैं सारे हिंदुस्तानमे घूम-घूमकर खद्दरका प्रचार करता था। बहनोको कहता था कि कातो, जितना कात सकती हो उतना कातो। उन्होने कताई की भी, लेकिन काता बिना समझके। उन्हे मजदूरीकी परवाह नही थी, वह कातती थी और कपडे बनवा लेती थी। यह होता था, लेकिन आज तो शक्ल दूसरी है। आज तो तुम्हारे पास कपडा ही नही है। तो मै तो कहता हूं कि अब हम अपने कपडोके लिए सूत पैदा करें, कातें और उसको बुनवा लें और बुने। अपने-आप बुननेमें कोई तकलीफ

तो है नही। लेकिन वह भी न करे तो क्या करे ? हा, तो जो मै बात कर रहा था उसमेंसे नतीजा यह आता है कि लोग तो जो कपडेकी दूकाने पडी है वहा चले जाय, कपडा ले ले। हकूमत है वह भी मिलोके पाससे कपडा ले और पीछे लोगोमे बाटना शुरू कर दे। इसके अलावा जो लोग कर सकते हो वह एक, दो महीनेके लिए, चार महीनेके लिए, यह व्रत ले लें कि हम कुछ कपडा लेनेवाले नही है। कपडेके लिए खद्दर चाहिए। छीट वगैरह जो महीन कपडे है वह न ले। हम इतने महीने तक वह न लेंगे, इसका मतलब तो यह होता ही नही कि हम नगे रहनेवाले है। इतनेमें खादी तैयार कर लेगे तो जाडेके दिनोमें झझटसे छूट जायगे। यहा कबलकी बात तो नही है। यहा तो इतनी ही बात है कि हमें पहननेके लिए जो खद्दर चाहिए वह खुद बना लेगे, बाजारसे नही खरीदना चाहते है। इतना हम करें तो कपडेका दाम एकदम गिर जाता है। आज तो कपडेका बाजार भी गरम होता जाता है। सभी बाजार गर्म होता जाता है। थोडा कपडा तो हमे चाहिए, कमीज बनवाना है, कुर्ता बनवाना है, उसके लिए थोडा गज कपडा तो चाहिए। तो खद्दर लो। और मैने कहा है कि चाहिए तो यह कि वह खद्दर हम अपन हाथसे बना लें। तय कर ले कि कपडेकी दूकानपर न जाएगे। ऐसा हम व्रत लेकर बैठ जाय कि इतने महीनेतक नही खरीदेंगे, तो मै कहता हू कि सब झझट निकल जाता है और कपडोके लिए और खुराकके लिए हम आजाद हो जाते है। दूसरा क्या होना है कि लोगोमे मेरी समझमें आत्म-विश्वास आ जाता है और लोग स्वावलबी बन जाते है और वह समझते है कि कपडेकी तगी हमें क्या होनेवाली है। हम तो कपटा अपने लिए खुद पैदा कर लेगे, करवा लेगे। हमारी अपनी खुराक है वह पैदा कर लेगे या तो करवा लेगे। यह सब करे तो उसमेंसे एक बड़ा भारी बुलद नतीजा आ जाता है। हम आजाद तो बने मगर राजनीतिक अर्थोमे आजाद बने। हमारी करोडोकी आर्थिक स्थिति आज सही नही हो गई। वह हम महसूस नही करते। पीछे महसूस करेंगे जब यह समझे कि अब हमारे यहा हम खुराक पैदा कर लेते है, उसका दाम हम जितना चाहे उतना ले लेते है, कपडा हम अपने-आप बना लेते है। रूई तो पडी है। या तो कही मिलोसे ले लेते

है। कपड़ा मिलोंमें मिलनेकी कोई गुंजाइश नहीं है ऐसा समझ लेना चाहिए। कुछ भी हो, लेकिन कम-से-कम इतना तो समझें कि हम परेशानी उठानेवाले नहीं हैं। तो हम कम-से-कम आर्थिक आजादी पा जाते हैं। और जो गरीब लोग हैं उनको भी पता चलता है कि हमको आजादी मिल गई है। इतना काम हम करें, पीछे इसका दूसरा नतीजा खुद ही आ जायगा।

आज हम आपस-आपसमें झगड़ते हैं लेकिन झगड़ा करनेके लिए फुर्सत तो होनी चाहिए। जब हम काममें गिरफ्तार हो जायगे और सब मजदूर-जैसे बन जाएंगे तब एक मिनट भी हमको न झगड़ा करनेको रहेगा न किसीसे मार-पीट करनेको। खाना तो हमारे पास है। पहिनना, उसका भी हमारे पास इतजाम है। हम शराबखोरी छोड़ दे, जुआ खेलना छोड़ दें। इस तरहसे सिलसिलेवार हम सीधे चलते जाते हैं तो मैं कहता हू पीछे कोई दोष ही हममें नहीं रहता। ऐसा अपने-आप हम महसूस कर लेते हैं कि अब हम आपस-आपसमें लड़ेंगे ही नहीं। न कोई मुसलमान रहा न हिंदू रहा। कोई बदमाशी करेगा तो उसका जवाब हम दे देंगे। उसके साथ लड़ना है तो लड़ेंगे। लेकिन आज हम क्यों बगैर मौतसे मरना शुरू करदें?

इसलिए मैं तो कहूंगा कि जो चीज मैंने आपको सिखा दी है और सुनानेकी चेष्टा की है वह अगर अच्छी तरहसे आपके दिलोंमें जम जाय और उसपर चलनेका फैसला हम करें तो मैं कहता हू कि हम बहुत ऊचे चढ़नेवाले हैं। और हमें किसीकी ओर देखना नहीं पड़ेगा कि कौन हमें मदद देता है। हमें मदद किसकी चाहिए? मदद तो हमको ईश्वर देनेवाला है और वह किसको मदद देता है? जो आदमी अपने-आपको मदद देनेके लिए खुद तैयार रहता है उसीको ईश्वर मदद देता है।

## : ११४ :

११ अक्तूबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

आज भाद्रपदकी कृष्णपक्षकी द्वादशी है। यह दिन गुजरातमें यानी

काठियावाडमें कच्छमें रेंटिया वारसके नामसे समझा जाता है और उस वक्त लोगोंका ध्यान रेंटियाकी ओर यानी चर्खेकी ओर और चर्खेके इर्द-गिर्दमें जो चीजे समझी जाती है उनकी ओर खिंच जाता है। एक सिल-सिला चलता है तो पीछे उसको कोई छोडता नही, लेकिन मैं आज ऐसा नही पाता हू कि रेंटिया द्वादशीका हम कोई उत्साहसे पालन करे। रेंटिया-का विस्तृत अर्थ भी मैने दिया है और हिंदुस्तानने मान लिया है कि चर्खा अहिंसाका प्रतीक है। उसकी निशानी है। आज वह निशानी तो गुम हो गई है। अगर वह निशानी रहती तो आज हमारे सामने जो चीजे बन रही है वह बननेवाली नही थी। लेकिन बनती है तो भी उस निशानी-का स्मरण तो मै आपको करा दू। मेरा जन्म दिन दो अक्तूबरको मनाया था सो काफी था। लेकिन कई वर्षोसे अग्रेजी तारीख भी मानी जाती है और जो हिंदी तिथि है उसको भी माना जाता है। इस तरहसे वह दो दिन हैं और उनके बीचमें जितना फर्क रह जाता है वह सबका सब समय उत्साहसे चर्खा उत्सव मनानेमे दिया जाता है। लेकिन आज जैसा मैंने कहा ऐसा कोई मौका मैं पाता नही हू। तो भी अगर दैवयोगसे कोई भी चर्खेको और जिसपर वह निशानी है उस अहिंसाको मान ले तो अच्छा ही है। पाच आदमी भी इसे मान लें तो अच्छा ही है। और करोड़ करे तो और भी अच्छा है। लेकिन एक ही करे तो भी वह अच्छा है। इसलिए मैंने आप लोगोका ध्यान इस ओर खीचा है।

कराचीमे हमारे मडल साहब है और वे पाकिस्तानका जो प्रधान मडल है उसमे कोई प्रधान है। ऐसा कहा जाता है कि वे हरिजन है और बगालके है। तो भी कायदे आजमने उन्हें पाकिस्तानके प्रधान मडलमे स्थान दे दिया है। उन्हीकी सूचनासे एक बात बन गई है। उसमें दूसरे दो-तीनका नाम मै भूल गया हू, वे भी शरीक हो गए है। सबके सब शरीक है, ऐसा तो नही हो सकता। लेकिन दो हुए तो भी क्या, एक हुआ तो भी क्या। लेकिन एक सरक्युलर निकल गया है कि जितने हरिजन भी सिंधमें रहते है उनको हाथपर एक पट्टी रखनी चाहिए। उस पट्टीपर ऐसा लिखा जायगा कि यह हरिजन है, याने अछूत है अस्पृश्य है। जिसमे उन्हे कोई हलाक न करे, कोई निकाल न दे। उसका लाजमी नतीजा मेरी समझमें यह

आता है—(वह अगर मेरे शककी ही बात है तो अच्छी ही बात है लेकिन वैसा एक आ ही जाता है) कि वह हरिजनोको आज तो नौकरी मिल जायगी और पीछे मान ले कि वे हरिजन वहा ही रहें तो (सबके सब रहनेवाले तो नही हैं बाज तो वहासे निकल भी गए हैं और निकलनेवाले हैं, ऐसा मैंने सुना है। मेरे पास बहुत खत आ गए हैं, लेकिन जितने वहा रह जाय) उनको पीछे आखिरमें इस्लाम कबूल करना है। ऐसा नतीजा आ जाता है, मेरे सामने तो यह भयकर नतीजा है। एक आदमी ऐसा मानकर कि वह सच्ची चीज है अपना मजहब छोड देता है और कोई भी धर्म कबूल कर लेता है तो उस चीजका मै कहूगा कि सबको हक है। आज मै अपनेको सनातनी हिंदू मानता हू, कल मुझको ऐसा लगे कि सनातन हिंदू क्या है इस धर्मको मै पसद नही करता, तो उसे छोड सकता हू। लेकिन वह बहुत भारी बात है। मै अपने धर्मको कबूल नही करु तो मुझे कौन रोक सकता है ? मेरे दिलमे कोई लालच नही है कि मै क्रिस्टी हो जाऊगा तो मेरी आर्थिक स्थितिको दुरुस्त करूगा या और कोई भी फायदा उठाऊगा। मैने तो अपने ईश्वरके साथ हिसाब कर लिया फिर दुनिया इसकी मुखालिफत[१] करे तो भी मै वही करूगा। मै मानता हू कि यह हालत आज एक भी हरिजनकी नही होगी। यह बात मै दावेसे कहना चाहता हू क्योकि मै हरिजन बन गया हू, अछूत बन गया हू, उनका धर्म मैंने कबूल कर लिया है। मै यह उम्मीद करता हू कि आज पाकिस्तानमे जितने हरिजन पडे है या कोई दूसरे पडे हैं उनके लिए इतना ऐलान कर देना चाहिए कि वे सुरक्षित है। पीछेसे वह बिल्ला लगानेकी जरुरत नही रहती। सबके लिए ऐसा ऐलान होना चाहिए कि कोई भी शख्स आज ऐसा कहेगा कि मैंने धर्मका परिवर्तन राजीसे कर लिया है तो वह माना नही जायगा। धर्म अपने दिलकी बात है। इन्सान जाने और उसका ईश्वर जाने। लेकिन पाकिस्तानकी हकूमतमें कोई भी आदमी ऐसा दावा आज नही कर सकता कि उसने अपने धर्मका परिवर्तन जान-बूझकर किया है। ऐसा ही माना जायगा कि उसने किसी डरकी वजहसे

---

[१] विरोध।

या मजबूर होकर ऐसा किया है इसलिए आज ऐसा उनको कहना है किसीके धर्मका परिवर्तन हो ही नही सकता।

दूसरी एक बात रह जाती है। हमारे सामने इसी महीने दो त्योहार आ रहे हैं। एक तो दशहरा है। वह बडा बुलद त्योहार है। उसको बहुत लोग मानते है, सारे हिंदुस्तानमें हिंदू लोग मानते है। लेकिन उसकी महिमा बगालमे बहुत अधिक है। मै बंगालमें रहा हूं, इसलिए मै जानता हू कि दशहरेकी क्या महिमा वहा मानी जाती है। वह त्योहार आता है उससे ठीक दो दिनके बाद बकरीद आती है। पहले जब बकरीद होती थी तो हिंदू-मुसलमानमें कोई बडा वैमनस्य नही था। आजकी तरह लडाई नही करते थे तो भी दिलमे खटका रहता था। और जो अग्रेजी सलतनत थी उसको भी कुछ तैयारी रखनी पड़ती थी कि बकरीदके दिन कुछ हो न जाय, हिंदू-मुसलमानोंके बीचमें लडाई न चल जाय। कोई भी मौका मिल सकता था गाय को काटे, गायको सजावटके साथ ले जाय, और हिंदुओको उकसानेके लिए ऐसा करें। दशहरेमे तो सब जगह सजा-वट करते है बाजा तो बजाना है, औरतो-मर्दोंकी सजावट होनेवाली है, नए कपड़े पहनकर कोई गाडीपर सवार होंगे, कोई घोड़ेपर सवार होंगे, वह सब करेंगे तो क्या, वह भी एक लडाईका मौका हो जायगा और बकरीद भी लड़ाईका मौका हो जायगा। मै तो कहूगा कि जो हिंदू और मुसलमान दोस्ताना तौरसे साथ-साथ रहना चाहते है उनका यह धर्म हो जाता है कि वे मर्यादासे इन त्योहारोका पालन करें। ऐसी चीज कोई न करे जिससे सामनेका आदमी गुस्सेमें आ जाय। बगैर इस सबके आज हम गुस्सेसे भरे है और गुस्सेमें जब आ जाते है तो एककी दस बना देते है। ऐसी हालतमे ऐसी कोई बात हम न करे जिससे गुस्सा बढे।

अग्रेजी हकूमतने जाते हुए जो काम किया उसमे एक दोष रह गया। हिंदुस्तानके दो टुकडे कर डाले और दो हकूमते बन गई। आज तो दोनों दुश्मन-जैसे बन गए है। सभव है कि आपस-आपसमे कभी भी लडाई न करें। लेकिन ऐसा सामान बन रहा है कि जिससे यह कोई समझ नही सकता है कि आगे क्या होगा। लेकिन आशा रखे कि हम दोनो समझ जायं और अगर नही समझेंगे तो अपनी आजादी हार बैठेंगे। मुल्कको

हार होना पड़ता जाता है, उसपर रोकर बैठ जाना वह बडी भारी गलती होगी। मेरी तो यह प्रार्थना है ईश्वर उसको ज्ञान दे और हम सब शुद्ध हो जायं। वह बडी अच्छी बात होगी।

एक और बात मैंने कह दी है, लेकिन पाकिस्तानमें हमारे जो लोग पड़े हैं उन्हें सावधान होकर काम करना है और वहां जो दो हकूमतें हैं उन दोनोंको हमारे जो भाई वहां पड़े हैं उन्हें पूरी सहायता देना चाहिए और उनका उत्साह बढाना चाहिए।

## : ११५ :

१२ अक्तूबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

आज भी काफी कवलियां आ गई। रजाई भी। और रजाईके बारेमें तो मैं यहांतक कह सकता हूं कि मिलोंकी तरफसे भी रजाइयां तैयार हो रही हैं। वह रजाइयां भी आ जायगी। मेरे दिलमें इतनी आशा जरूर हो गई है कि जिस रफ्तारसे ये रजाई और कवलियां वगैरह आ रही हैं उसमें इस जाडेके दिनोंमें जो लोग यहां इकट्ठे हो गए हैं यहांके माने दिल्लीमें और उसके इर्दगिर्द, उनको तकलीफ नहीं होनी चाहिए। यह तजवीज भी हो रही है कि वह सबकी सब रजाइयां जिनको मिलनी चाहिए या कवलियां या जो दूसरी चीजें पहिननेको आ जाती हैं वह सब जरूरतमंदोंको मिलें। एक बात उसमें समझनेके लायक है कि जो कवलियां जाती हैं वह आखिरमें फट जायगी, मगर आज वह पानीसे और ओससे बचा सकती हैं। लेकिन रजाई आ गई तो खतरा रहता है कि वह पानीसे नहीं बचेगी। बाकी तो ईश्वरकी कृपा रहेगी तो जाड़ोंके दिनोंमें पानी नहीं आना चाहिए लेकिन ओस काफी पडती है और सबको कवलियां शायद न मिल सकें, सबको तब भी मिल सकेंगे या नहीं सो मेरे दिलमें शक है। एक चीज है, मैं आज बात कर रहा था तब बता दिया था। वह मैं यहां भी बता देना चाहता हूं कि जिन लोगोंके हाथोंमें रजाइयां

चली जाती है वह समझे कि न्यूज पेपर काफी पडे है, वह मिल जाय तो रजाईपर अगर न्यूज पेपर रखे तो पीछे ओस रजाईमे से होकर नही आ सकती। दूसरी खूबी रजाईकी यह है कि उसमे काफी रुई आ जाती है और उसमे काफी गरमी रहती है। जब रुई टूट जाती है तब रजाईको खोल सकते है। रजाईका कपड़ा धोकर रुईको धुनकर फिरसे भर सकते है। तो वह नई चीज बन सकती है। जो देखभाल करके उस चीजको इस्तेमाल करनेवाले है उनके लिए वह बडी कामकी चीज है। हमारेपर यह एक बडी भारी आपत्ति आ पडी है, लेकिन जो ईश्वरका स्मरण करते है और ईश्वरका काम कर लेते है उनको ऐसी आपत्तिसे भी सीख मिल जाती है। दो किस्मकी बातें हो सकती है। एक तो जब आपत्ति आ गई तो आदमी घबराहटमे पड़ जाता है या तो गुस्सेमे आ जाता है, तब पीछे वह ज्यादा दुख पाता है। लेकिन आपत्तिमे यह सोचे कि हम बेगुनाह है तो भी आपत्ति आती है, लेकिन तो भी हम इस वक्त ईश्वरको भूलनेवाले नही है, उनकी मदद मागनेवाले है। ऐसे लोग उस आपत्तिमेंसे भी सुखको पैदा कर सकते है। काफी लोग जो इधर आ गए है और आश्रित बन गए है वह ताजिर लोग थे, उनके पास काफी पैसा था, दूसरे प्रकारका धन था। बड़ी-बडी हवेलियां थी वे सब चली गई, खो गई। मैंने तो कह दिया है जो जहासे आ गया है जबतक वहा वापिस पहुच नहीं सकता है, और वहा सही सलामत नही रह सकता है तबतक हमारी दोनों हकूमतोंके लिए कष्टकी बात है। अगर हम लोग जिंदा रहना चाहते है, आजाद रहना चाहते है तो कभी न कभी हमे इस तबादलेके पापका पश्चात्ताप करना है। पश्चात्ताप उसका नाम है कि हमने जो भूल की उसको दुरुस्त करें। तब वह सच्चा प्रायश्चित्त है। दूसरा नही हो सकता। जो सचमुच गलतीको दुरुस्त कर लेता है उसका पश्चात्ताप काफी हो गया। गलतिया दुरुस्त करना है तब तो जो लोग आज आए है जान लेकर, जान बचाकर भाग आए है, उनको वापस जाना है। वह जब होनेवाला है तब होगा, लेकिन दरमियानमे क्या करोगे ? मै यह कहना चाहता हूं कि दरमियानमें लोगोंको अगर अच्छे डाक्टर लोग मिल जाय—जो निराधार बन गए है उनमे डाक्टर भी रहते है, वकील भी रहते है सब किस्मके

लोग रहते है—वे डाक्टर सेवाका ही काम करे और दूसरे भी जो उनके मातहत पडे है वे भी ऐसा करे, तब बहुत बुलद काम कर सकते है और हम उस आपत्तिमेसे एक नया पाठ सीख लेते है।

मै शरणार्थियोके बीच गया तो मुझे बताया गया है कि उनमे करीब ७५ फी सदी आदमी ताजिर थे। तो मै चौक उठा कि इतने ताजिर लोग यहा तिजारत कैसे कर सकेगे। लाखोकी तादादमे ताजिर आ गए है; वे सब एकाएक तिजारत करने लगेगे तो सब जगह गोलमाल हो जायगा। अगर ऐसे मनमे रक्खे कि हम तो कुछ-न-कुछ मेहनत करेगे, हम नई चीज सीखेगे और वह सीख ले तब तो काम चल सकता है। वर्षोसे जो ताजिर रहे है वे अपनी तिजारत भूल जाय। जगतमे ऐसा होता है अगर एक चीज नही मिल सकती है तो पीछे दूसरी चीज ढूढो। हम बेकार नही बैठेगे, जुआ नही खेलेगे, शराबमे अपना समय गवाना नही चाहते है कुछ काम तो करेगे ही। मेहनत करेगे। जो ताजिर है लेकिन जिसका शरीर अच्छा है, हाथ-पैर अच्छे चल सकते है वे थोडी मेहनतका काम करे। ऐसी मजदूरी काफी रहती है जिसमे बहुत सीखनेकी जरूरत नही रहती। ऐसी चीजे वह करे और सब मिलजुलकर काम करे। साथमे कैसे काम होता है वह सीख ले। तब हमारे लिए जो यह एक नरक-जैसी चीज तैयार हो गई उसमेसे हम स्वर्ग बना सकते है।

मै समझा रहा था और मैने सोचा कि आज तो यह चीज अच्छी तरहसे आप लोगोके सामने रक्खूगा और आपकी मार्फत सबको सुना दूगा। जो निराधार लोग पडे है वे यह सुनेगे और करेगे तो उनको बडा फायदा होगा और मुल्कको भी बडा फायदा होगा। और जो हमारे ऊपर दुःख आ गया है उस दुःखमेसे हम सुख पैदा कर लेगे।

इस सिलसिलेमे मै यह कहना चाहता था कि जो रजाइया हमारे पास अभी नही आई है लेकिन हर जगहसे आनेवाली है उसका हम क्या करें? उसमे जो कपड़ा रहता है वह मैला बन गया हो तो उसको निकाल-कर धो सकते है। उसकी जो रुई पडी है उसको हम रख लेते है। रुई तो बिगड़ती ही नही। उसको सुखा लेते है और उसको हाथसे साफ कर लेते है, धुनकीकी भी जरूरत नही। हा, उसे कातना हो, तब दूसरी

बात है। उस रुईके द्वारा गदेले बनाना है या रजाई बनाना है तो वह आरामसे हो सकता है। मेरी समझमें हाथोसे वह सस्ते दाममे बन सकती है, और जल्दी बन सकती है। मिलोके पास काफी कपड़ा पड़ा है। यहा मैं खानेकी चीजकी बात नही करना चाहता। काफी कपास पडी है। उसमेंसे रजाई बहुत शीघ्रतासे बन जाती है और लोगोको वह दे दी तो जाडेसे वे बच जाएगे। इसलिए यह चीज किस तरहसे हो सकती है वह लोगोको बताना है और पीछे जो एक निराशा फैल गई है उसमेंसे हमें आशा खडी करना है। एक भजन है कि आशा तो लाखो निराशामेंसे पैदा होती है। यह बात सच्ची है। वह कविका वाक्य है। लाखों निराशामे छिपी हुई आशाको हम देख लेना चाहते है। उसको देखनेके लिए हमको क्या करना है? जितने निराधार लोग बन गए है उनको पहले तो यह समझ लेना चाहिए कि वे सारे हिंदुस्तानके है, पजावके ही नही, सरहदी सूबेके नही या सिंघके ही नही। जितने सूबे है वे हिंदुस्तानमे पड़े है सो वहाके लोग हिंदुस्तानके है। एक शर्तसे हम सब हिंदुस्तानी बन सकते है और रह सकते है, हम किसीपर बोझ न पडे। जैसे दूधमे मिश्री दाखिल करो तो वह दूधको मीठा बनाती है और दूधमें मिल जाती है और दूधमेंसे निकाली नही जा सकती है, दूध वैसाका वैसा रह जाता है, इसी तरहसे मिश्रीकी तरह वे लोग जिधर चले जाय वहा एक-दूसरेके साथ लडते नही रहे, द्वेष नही करें, मिलजुलकर रहे, आपस-आपसमें सहयोग बना ले और सबके सब मेहनती आदमी बन जाते है। तब होता यह है कि जिस सूबेमे वे चले जाते है उसे दुरुस्त कर लेते है। तब सूबेके लोग ऐसा कहेंगे कि हमारे यहा ऐसे चाहे जितने आदमी आ जाय उनको हम समा सकते है।

मेरी उम्मीद तो ऐसी है कि जिन्हे मेरी आवाज पहुच सकती है ऐसे जो निराधार लोग पडे है उनमें जो काम करनेवाले है वे उन लोगोको यह चीज बता दे कि आप भले आदमी बनें। किसी जगह भी जाकर बोझ न बने और हर जगह पर रहे तो जैसे मैंने बता दिया है इस तरह मुहब्बतसे रहे, साथ-साथ मिलजुलकर रहे। किसीको धोखा न दे। हमको अपना वक्त गवाना नही चाहिए। एक-एक मिनट ईश्वरके

लिए हो, ईश्वरके कामके लिए, सेवाके लिए हो। हम तो सेवाके लिए पैदा हुए है। पीछे हम भूल जायगे कि हम दु:खमे गिरफ्तार होकर पडे थे, शोकमें है। हमारे पास इतने लाखोकी तादादमें लोग पडे है, वे सेवा करे। हम पैदा हुए है सेवा करनेके लिए। हम तय करे कि हम अपने मुल्कको ऊचा ले जायगे, गिराएगे नही। इतना अगर हम सीख ले तो मैं समझता हू कि हमारी धन्य घडी होगी और पीछे हमे कोई फिक्र न रहेगी। गलती तो होती है, इन्सान गलतियोका पुतला है। मगर आखिरमे गलतिया दुरुस्त करना भी इन्सानका काम है। हम अपनी गलतिया दुरुस्त कर लेते है तो हम इन्सान बन जाते है।

## : ११६ :

### १३ अक्तूबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

कल मैने शरणार्थी कैंपोके बारेमे कुछ बाते कही थी। अग्रेजी तर्जुमेमें कुछ छूट गया था, आज उसे विस्तारसे कहता हू, क्योकि मै उस चीजको बहुत महत्त्व देता हू। अगरचे हमारे यहा धार्मिक और दूसरे मेले होते है, काग्रेस मिलती है, कान्फ्रेंसे होती है मगर आम तौरपर हमे कैंप जीवनकी आदत नही। मैं १९१५मे हरिद्वार कुभ मेलेपर गया था। मुझे और मेरे साथियोको भारत सेवक सघ (सर्वेन्ट्स आफ इडिया)के कैंपमे काम करनेका मौका मिला था। अगरचे मेरी और मेरे साथियोकी अच्छी तरह देखभाल की गई, मगर मेरे मनपर यह असर पडा कि हमारे लोगोको कैंपमे रहना नही आता। हमे सार्वजनिक सफाईकी तरफ ध्यान देनेकी आदत नहीं। परिणाममे भयानक गदगी पैदा होती है और छूतकी बीमारिया फूट निकलनेका खतरा रहता है। हमारे पाखाने इस कदर गदे होते है कि क्या बात करना। शायद यह कहना ज्यादा सही होगा कि पाखाने बनाए ही नही जाते। लोग समझते है कि पाखाने तो कही भी बैठा जा सकता है। और गगाजी या जमनाजीका किनारा इस कामके

लिए खास पसद किया जाता है। पड़ोसियोका ध्यान किये बिना, जहा-तहा थूकना तो अपना हक समझा जाता है। खाना पकानेका इतजाम भी अच्छा नही होता। मक्खिया तो हर जगह हमारी साथिन होती है। हम भूल जाते है कि मक्खी एक क्षण पहले गदगीपर बैठी होगी और किसी छूतकी बीमारीके कीडे उससे चिपके हुए होगे। रहनेकी जगह, तबू वगैरह भी ठीक तरीकेसे नही लगाए जाते। मै कोई चीज बढा-चढाकर नही कह रहा। कैंपोंमे जो शोर होता है उसकी तो बात ही क्या करना।

तरीकेमे कैंप बनाने और पूरी तरहसे सफाई रखनेके लिए किसी मिलिटरी कैंपको देखिए। मै मिलिटरीकी जरूरत नही समझता। मगर उसका यह मतलब नही कि मिलिटरीमे खूबिया नही। वे हमें नियमनमे, साथ रहने, सार्वजनिक सफाई, समयपर काम करना, हर एक जरूरी कामके लिए वक्त रखना, इन सब चीजोमे पाठ सिखा सकते है। उनके कैंपोमे पूर्ण शाति रहती है। वे घटोमें कैनवसका शहर खडा कर लेते है। मै चाहता हू हमारे शरणार्थी कैंप उस आदर्शको पहुचे। तब वर्षा आवे या ना आवे उन्हे तकलीफ नही होगी।

अगर सब काम करे तो ऐसे कैंप खडे करनेमे बहुत खर्च नही होता। शरणार्थियोको खुद खेमे लगाने चाहिए। खुद सफाई करना, झाडू लगाना, सडके बनाना, खदकें खोदना, खाना पकाना, कपडे धोना वगैरह कोई काम ऐसा नही, जो उनकी शानके खिलाफ समझा जाय। कैंपका हर एक काम हर एकके करने लायक है। ध्यानपूर्वक और समझपूर्वक काम किया जाय तो जनताके मनोभावमें यह तबदीली जरूर लाई जा सकती है। तब आजकी विपत्तिको भी ईश्वरकी छिपी प्रसादी समझा जा सकता है। तब कोई शरणार्थी कही भी बोझ रूप नही होगा। वह कभी अकेले अपने-आपका खयाल नही करेगा। बल्कि अपने सब मुसीबत-जदा[1] भाइयोका ख्याल रखेगा और जो दूसरोको नही मिल सकता वह अपने लिए नही मागेगा। यह बात सिर्फ विचार करते रहनेसे नही

---

[1] विपत्ति ग्रस्त।

बल्कि जानकार आदमियोंकी देखरेख और रहनुमाईमें काम करनेसे हो सकती है।

रजाइया और कंबल आ रहे हैं। आशा है जल्दी ही सर्दीसे बचनेका काफी सामान इकट्ठा हो जायगा।

## : ११७ :

१४ अक्तूबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

आज भी काफी कंबलिया आ गई। यहा एक आर्य-कन्या-विद्यालय है, उसकी दो शिक्षिकाए और विद्यार्थिनिया आ गई थी। उन्होने पैसा इकट्ठा किया है, वह भी कंबलिया लेनेके लिए। वह बिचारी कितनी ला सकती थी। थोडी कंबलिया लाई। लेकिन एक बडी बात मुझको सुनाई, मुझे वह अच्छी लगी। उन्होंने सुनाया कि जब वह व्रत रखनेकी बात निकली मैंने कहा कि महीनेमें कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष होते ही है, तो एक पक्षमें एक दिन सब निकाल दे और उस रोज खाना छोड दे तो जितना बाहरसे खाना आता है वह सबका सब हमें मिल जाता है, क्योंकि इतना बच जाता है। पैसा देकर बाहरसे अन्न लेना मैं एक बडा दोष समझता हू। उस दोषसे हम बच जाते है, यह सुनकर विद्यालयकी शिक्षिका ने विद्यार्थिनियोंके साथ मशविरा किया। उन्होने किसीको मजबूर नही किया। मगर सबने तय किया कि हम हर गुरुवारको व्रत रखेंगे और उससे जो बच जाता है वह दान दे देंगे। उनके पास जो बचा करता है, वह देनेकी कोशिश करती है। उन्होंने यह भी कहा कि थोडी जमीन है उससे हम अनाज भी पैदा करेगी। दोनों काम खुराक बचाना और अधिक पैदा करना हमने अपने सरपर ले लिया है। यह सब मुझको उनकी जो कंबलिया और पैसे आ गए है उससे ज्यादा प्रिय था। पीछे एक ईरानके एलची साहब और उनकी धर्मपत्नी आए। थोडा बैठे लेकिन एक बडा ढेर कंबलिया दे गए। कहा, यह कंबलिया किसीको दे सकते

हो तो दो। मैंने कहा, मै तो एक भिक्षुक हू, जितना मुझको मिल जायगा लूगा और उसकी जिसे दरकार है उसे दे दूगा।

मेरे पास काफी सिख भाई आ गए थे। दो-तीन हिस्सेमें आए थे। उनसे काफी बातें हुईं। बाते क्या हुईं वह तो मै आपको बताकर क्या करूगा उसमे कोई ऐसी खुफिया[1] बात नही थी लेकिन बातोका निचोड मैंने निकाल लिया है और वह यह है कि वह भी पूरा-पूरा समझ जाय और इसी तरहसे दूसरे भी समझ जाय कि हम इस तरहसे आपस-आपसमे लडकर कुछ हासिल नही करनेवाले। न्याय देना, सजा देना, बदला लेना इत्यादि काम करना है तो हकूमत करे। हकूमतके मार्फतसे जितना हो सकता है उतना हम करे। मेरा ऐसा खयाल है कि वह सबके सब इस बातपर राजी है। बाकी हिस्सेको मै छोड देता हू।

पीछे एक तीसरी बात मैंने सुन ली। कुछ आदमीको गिरफ्तार किया गया है। हमारी हकूमत है, गिरफ्तार करे तो वह हकूमतके हाथ है। बाज दफा उनसे निर्दोष आदमी भी गिरफ्तार हो सकते है। जान-बूझकर बेगुनाहोको गिरफ्तार करे, ऐसी गलती तो हमारी हकूमतसे होनी नही चाहिए। और स्वच्छदतासे किसीको गिरफ्तार करे ऐसा भी नही होना चाहिए। लेकिन कुछ भी करे आखिर इन्सान तो इन्सान है, गलतियोसे भरा हुआ पुतला है, वह कोई फरिश्ता नही है, वह ईश्वर तो है ही नही। तो गलतिया करेगा। गलतीसे कुछ बेगुनाह आदमियोंको पकड़ लिया तो उसमे क्या आदोलन करना था? लेकिन मै सुनता हू कि कुछ आदोलन हो रहा है कि ऐसे आदमियोको क्यो पकडा, वह तो बेगुनाह आदमी है। बेगुनाह आदमी है या नही वह तो हकूमतको देखना है। हकूमतके पास अगर कोई सामान पैदा करके रक्खे कि फला आदमी बेगुनाह है वह तो मै समझ सकूगा। लेकिन हकूमतको इस तरह हलाक करे, आदोलनके बलसे किसीको छुडवा ले, तो वह ठीक नही है। जब अग्रेजी सल्तनतसे लडते थे और बाज दफा जो जेल वगैरहमें भेजे जाते थे उनके लिए कहते थे कि उनको क्यो नही छोडते, वे बेगुनाह है। वह तो

[1] गुप्त।

था लेकिन राज्यकी नजरमें वह गुनहगार थे, हमारी नजरमें नही थे। उस वक्त तो हमने अग्रेजी हकूमतके सामने आदोलन किया कि उन्होंने हमारे नेताओको क्यो पकड लिया। लेकिन आज किसके सामने आदोलन करे। अपनी सारी सरकार पचायती राज है। पचायतके वह प्रतिनिधि है, उन्हे नेता भी तो हमने बनाया है। इसलिए मै कहूगा कि आज वह मौका नही कि आदोलनके दबावसे हम हमारी हकूमतको दबाले। एक तो यह हमारी हकूमत है, उसके पास वह मिलिटरी ताकत नही है जो अग्रेजोके पास पडी थी। अग्रेजोके पास सारी नौका-सेना पडी थी। जिस नौका-सेनाके लिए एक वक्त कहा गया था कि वह अजित है, बेजोड है। आज तो वह दावा नही चल सकता, यह दूसरी बात है। लेकिन कैसा भी हो उसके पास सब पडा था। उसके बल हमारे ऊपर राज्य चलता था। आज हमारे ऊपर हम राज्य चलाते है। अगर हमको मालूम है कि कोई दूसरी ताकत हमारे ऊपर राज्य नही चलाती है और जो राज्य करते है उनको हमने बनाया है तो जिनको हम बनाते है उसको हम उठा भी सकते है। इसलिए मै कहूगा कि ऐसा आदोलन हमे नही करना चाहिए।

चौथी बात मै आपको सुनाना चाहता हू वह यह है, मैने इस बारेमें काफी तो कहा है कि किस तरहमे हिंदुस्तानमें पूरी-पूरी शाति पैदा हो सकती है। यह पेचीदा प्रश्न है। मै कोई खुश नही होता हू कि आज तो दिल्लीमें कुछ गड-बड चलती ही नही। कही एकाध आदमी मार दिया इस तरहसे कुछ चले भी लेकिन जैसा सिलसिलेवार पहले चलता था वैसा नही है। यह अच्छा है। इससे हकूमत तो खुश रह सकती है, लेकिन मै नही रह सकता। क्योंकि मै हकूमत करनेके लिए नही आया हू। इत्तफाक[1] से यहा रह गया। मै तो इस उम्मीदमें रहा कि दोनोंके दिल फूट गए है, उनको दुरुस्त करना है और ऐसा करनेमें मदद करना है। इससे पहिले भी आपस-आपसमे लडते थे, मगर लड लिया तो पीछे एक हो गए। आज तो हमारे दिल जहरीले हो गए है कि मानो एक-दूसरेके सदियोसे दुश्मन है, इस तरहसे मानना शुरू कर दिया है। हमारे लिए बडी नामुनासिब बात है। होना तो

---

[1] संयोग।

यह चाहिए कि हम कोई बुजदिल न रहे, न मुस्लिम, न सिख और न हिंदू। तो पीछे हमको किसीका डर न रहेगा। मुसलमानोको सिखोका डर छोडना चाहिए, और डरके मारे भाग जाते है उसे वन्द करें। हिंदुओको और सिखोको मुसलमानोका डर छोड देना चाहिए। तव, जव हम आपस-आपसका डर छोड़ देंगे और सिख, हिंदू, मुसलमान, जव एक दूसरोसे नही डरेंगे तव पीछे हम चाहे तो एक वडी भारी मिलिटरी ताकत वन सकते है। और हम चाहे तो हिन्दुस्तान एक वडी अहिंसक और अजीत सैन्य वन सकता है। दो रास्ते हमारे पास पडे है, तीसरा नही है। आज जो चलते है वह कोई रास्ता नही है। वह तो हैवानियतका रास्ता है। उसमें आगे वढनेका रास्ता नही है। तो मै वतलाना चाहता हू कि किस तरहसे हम एक-दूसरोके नजदीक आ सकते है। सवसे वडी चीज तो यह है कि मुसलमान, हिंदू, सिख एक-दूसरोकी गलतिया निकालते रहे जैसे आज निकालते है, वह छोड दें। सव अपनी गलतिया देखे और अपनी गलतियो-को पहाड-सा वनाकर देखे। ऐसा नही कि मुसलमान कहे कि हमने भी एक जमानेमे गलतिया की लेकिन उसमे क्या हुआ, देखो तो सही हिंदू और सिखकी जो पहाड़-सी गलतिया है उनके सामने हमारी गलतिया कुछ भी नही है। और ऐसा ही हम कहना शुरू करदे कि अच्छा चलो हिंदू, सिख है उन्होंने गलतिया की है लेकिन मुसलमानोने किया उसके सामने वह कुछ नही। यह जवाव नही। गलतियोका जवाव गलतियोसे दे दिया इसमें कौनसी वड़ी वहादुरी है? यह तो जगतमे होता आया है। ऐसा कहकर हम हिंदू और सिख अपने दिलको फुसला ले, मै कहूगा कि यह कोई तरीका ही नही है। इस तरह हम कभी आपस-आपसमें दिल साफ करके वैठ नही सकते। आज तो नौवत यहातक आ गई है कि पाकिस्तान सरकार कहती है कि इतने मुसलमानोको हम नही लेंगे, तो हमारे दिलमें शक पैदा हो जाता है कि उसमे भी कुछ दगेकी वात है। उसमें दगेकी वात क्या होनी थी। और अगर है तो दगा उसके दिलमे पड़ा है उससे हमें क्या? हम इतने वहादुर नही रहेंगे कि शकसे कुछ न करे, तो पीछे मरनेवाले है। इस वातको मै छोड दू। मै तो इतनी वात कहता हूं मुसलमानोको, हिंदुओको और सिखोको कि दूसरेकी गुनाहकी तरफ

इशारा भी न करे। अपने ही गुनाहको कबूल करे। अगर मानते है कि यह गुनाह हुआ है तो उसको कबूल कर लेना चाहिए। मैंने कल कहा कि एक जरूरी बात है कि बस हिंदू हैं वह तो हमारे दुश्मन है। ऐसे हम दुश्मन बने तो उसका नतीजा बुरा ही आनेवाला है। पाकिस्तान तो हो गया उससे क्या ? लेकिन हम पागल नही बनेंगे। कलतक दुश्मन थे, आज दोस्त बने। लेकिन जब दोस्त बने तब हमें ऐसा कहना है कि हम किसी जमानेमें दुश्मन थे तब हमने दुश्मनी की लेकिन अब तो दोस्त हो गए है। दुश्मनी भूल गए है। हुकूमतको हिंदू, सिख और हिंदुस्तानमें जो कोई भी रहता है उनको साफ-साफ दिलसे कहना है कि इतनी गलती तो हमसे हो गई, आपकी गलती हुई है सो आप जाने। मगर हम क्यो गलती करे ? नही करेंगे। ऐसा अगर दोनो आपसमे सच्चा मुकाबला करें, एक मुकाबला तो यह है कोई आकर एक मुक्का दे तो हम उसके दो मारें, लेकिन उसके बदलेमें यह मुकाबला करे कि हम तो बदलेमें बेगुनाह ही रहेंगे और भले बनेंगे। मुकाबला करेंगे भलेपनमे, अच्छा होनेमे, तब मै कहता हू कि हमारे लिए खैर है। तब मैं आरामसे दिल्ली छोड सकता हू। मेरे नसीबमे अगर दिल्लीमे, यही पड़ा रहना है और दिल्ली हीमे मरना है तो मर जाऊगा। ऐसा करना मै जानता हू, दूसरा मैने सीखा नही है। मरना तो एक दिन है ही, कर नही सकते हो तो मरो तो सही। लेकिन मारना नही है। मै तो सबको यही कहता हू कि अरे इतना तो सीख लो। करेंगे या मरेगे। तीसरी चीज नही है। अब हमें भागना नही। हमारे नसीबमे जो होगा वह दूसरा तो बन नही सकता। हमें किसीसे दुश्मनी नही करनी, वह हिंदुस्तानकी शातिका मार्ग नही है। हिंदुस्तानकी शातिका मार्ग तब हो सकता है जब हम किसीसे लडें ही नही। सब डर छोड देते है। मुसलमान यहा रहते हैं तो रहें। क्या हमें वे मार डालेंगे, कैसे मारेंगे, क्यों मारेगे ? क्या सब यहासे हट जाय ? क्यो हट जाय और कहा हट जाय ? आज पाकिस्तानवाले कहते है कि हम तो इतने मुसलमानोको हजम कर सकते है। मुसलमान तो सारे हिंदुस्तानमे पड़े है। एक छोटा पाकिस्तान पडा है, उसमे कैसे सब भरें ? वह कहे हम और नही ले सकते तो सुनना होगा। उसमे क्या फरेब पडा है ?

पडा या नही पडा है, उससे हमें क्या ? लेकिन हम इस चीजको तो समझ ले कि हमारे पास हमारे भाई भी पडे हैं। मुसलमान अगर बदमाश है तो उसको मारो, कानून करो जो आदमी दगाबाज साबित होगा, हिंदुस्तानका बेवफा साबित होगा, उसको शूट करना है तो करो। पाचको करो, पचासको करो, चार करोडको करो, मुझे कोई परवाह नही है, वह तो मै समझ सकता हू, लेकिन एक आदमी यो ही आकर उसको मार डाले वह कैसे बरदाश्त हो सकता है ? नही करना चाहिए। और हम खुद भी ऐसे पागल क्यो बनें ? ऐसे बुजदिल क्यो बनें ? इसलिए मैंने आपको बतला दिया है कि अगर दोनो हकूमतोको अच्छी तरहसे रहना है तो एक-दूसरेके साथ भलाईमे मुकाबला करें। तुम्हारी गलती ज्यादा है यह बताते रहनेसे हमारी जय नही होनेवाली है। लेकिन हम समझ जाय कि हा, यह सब गलतिया हुई है इनको हम दुरुस्त करेंगे। और सब साफ कर देंगे तो खैर है। कह तो काफी सकता हू लेकिन आजके लिए मैंने आपको काफी कह दिया इतना हजम कर ले तो बस है।

## : ११८ :

### १५ अक्तूबर, १९४७

भाइयो और बहनो,

मेरे पास काफी लोग हमेशा आते है। उनमेंसे कई लोग शरणार्थियोके लिए कबलिया और कुछ पैसा भी दे जाते हैं। एक बहनने आज दो हजार रुपएका चेक भेज दिया है। दो भाई मुसलमानोकी तरफसे भी आए है। उन्होने इकट्ठा करके कुछ कबलिया और कुछ पैसे भी दिए है। वे कारीगर लोग है। उन्होने अपने नामतक भी नही बताए। मैंने उनसे इन चीजोको अपने-आप अपने पीडित भाइयोमे बाट देनेको कहा था। मगर उन्होने कहा कि हम ये चीजे गाधीके हाथमें ही सुपुर्द करना चाहते है, क्योंकि पश्चिमी पजाबमें जो हिंदू और सिख बर्बाद हुए है उनको ये चीजे बटनी चाहिए। मुझको यह बहुत अच्छा

लगा। ऐसे मौकेपर अगर चद मुसलमान भी ऐसा करते है या चद हिंदू और सिख ऐसा करते है तो वह स्वर्ण अक्षरोमें लिख लेना चाहिए। उन्होने कहा कि एक जमानेमे हम आपको मुसलमानोका शत्रु मानते थे, मगर अब हमे विश्वास हो गया कि आप सबके दोस्त है। मैं तो हू और मेरा यह दावा भी है। इसके लिए मुझे किसीके प्रमाण-पत्रकी जरूरत नही है। कोई पाच-सात वर्षसे नही, बल्कि ६० वर्षसे इसी धाराके मुताबिक मेरा जीवन चला है।

आम तौरसे यह कहा जाता है कि हर एक सिख मुसलमानोको अपना दुश्मन मानता है और हर मुसलमान सिखको। यह बात बिलकुल गलत है। यह सच है कि काफी तादादमें सिख लोग दीवाने बने, जैसे कि काफी हिंदू और मुसलमान भी बने। मगर यह कहना कि सारी सिख-जाति ऐसी है या सारे मुसलमान ऐसे है, एक बडी अधर्मकी चीज है। मेरे पास तो ऐसे अनेक उदाहरण पडे है जहा सिखो और हिंदुओने मुसलमानोको बचाया या मुसलमानोने सिखो और हिंदुओको अपने घरोमे रखकर बचाया। पजाब और सरहदी सूबेमे ही नही, हर जगहसे ऐसे उदाहरण मिले है। अखबारोको ये चीज अच्छे ढगसे छापनी चाहिए। वे हिंदुओंद्वारा मुसलमानोको काटने या मुसल-मानोद्वारा हिंदुओको काटनेकी खबर छापना छोड दें। उससे नुकसान ही होता है। अखबार आजकलकी दुनियामे एक बडी सत्ता हो गए है, और यदि चाहे तो वे बडा काम कर सकते है।

(युक्तप्रातीय सरकारकी उस घोषणाकी कि जिसमें कि देवनागरी लिपिमे लिखी हुई हिंदीको राजभाषा घोषित किया गया है, चर्चा करते हुए गाधीजीने कहा—) सारे हिंदुस्तानके एक चौथाई मुसलमान यू० पी०में भरे है। वे उर्दू बोलते है। अगर उनको वहा रहने देना है तो देव-नागरी लिपि नही होनी चाहिए। मालवीयजी महाराजने भी हिंदीके लिए बहुत काम किया था। मगर उर्दू जबानको काट डालो, ऐसा कहते मैंने उनको कभी नही सुना। यू० पी०मे आज जिन लोगोके हाथमे सत्ता है वे बहुत बडे है और अच्छे काम करनेवाले है। वे मुसलमानोंको अपने साथ रखते है। मगर एक तरफ तो मैं यह कहू कि मुसलमान

यहांसे न जाए और दूसरी तरफ उनकी तौहीन[1] करता रहूं और उनको गुलाम बनाकर रखनेकी कोशिश करूं तो फिर वे खुद ही मजबूर होकर चले जाएंगे। मगर मेरी तादाद वहां बहुत ज्यादा है तो क्या मैं इतना घमंडी बन जाऊं कि दूसरे लोगोंको बर्दाश्त ही न करूं। ऐसा तो हमसे होना ही नहीं चाहिए। सबको हिंदी और उर्दू दोनों लिपियोंमें लिखना सीखना चाहिए। अगर मुसलमान अपनी खुशीसे जाय तो जाने दिया जाय, मगर हमें तो अपना फर्ज पालन करना चाहिए। आखिर यू० पी०में हर जगह मुसलमानोंकी निशानियां पड़ी हैं। आगरा, लखनऊ, देवबंद, आजमगढ़ आदि शहरोंमें उनकी आलीशान जगहें हैं। वहां काफी राष्ट्रीय मुसलमान हैं। इसके अलावा हिंदू भी ऐसे कितने ही हैं जो केवल उर्दू जानते हैं। सर तेजबहादुर सप्रू तो एक बड़े उर्दूदां हैं। क्या उनको देवनागरी लिपिमें लिखनेके लिए मजबूर किया जायगा? क्या उनसे यह कहा जायगा कि तुम उर्दूको भूल जाओ? क्या हम अपने हाथसे ही अपने हाथोंको काटनेवाले हैं? अगर हमने ऐसा किया तो हमारी ज्यादतीकी इन्तहा[2] होनेवाली है। हम इस तरहसे हिंदू-धर्मकी रक्षा नहीं कर सकते, इसमें मुझे कोई शक नहीं है। हमें पाकिस्तानकी नकल नहीं करनी है। अतः वहांकी हकूमतको, यद्यपि वह मेरे हाथमें नहीं है, मगर मुहब्बतसे मैं उससे कह सकता हूं कि जो सर्कूलर उन्होंने जारी किया है उसे वे वापिस ले लें।

## : ११६ :

१६ अक्तूबर १९४७

भाइयो और बहनो,

अबतक मैसूरको तो मैं भूल ही जाता था। वहां क्या हुआ यह तो आप लोगोंने देखा होगा। श्रीरामास्वामी मुदालियर मैसूरके दीवान

---

[1] अप्रतिष्ठा; [2] अंत।

साहब है। मैसूर भारतीय यूनियनमें भी आ गया है। वहाके लोग काफी लिखे-पढे हैं। उन्होंने काफी दफा सत्याग्रह किया है और इस वक्त भी उन लोगोंकी तरफसे कुछ सत्याग्रह हुआ। वे चाहते थे कि राजतन्त्रमें काफी हिस्सा लोगोका रहे। राजा लोग तो रहें और जनता उनके प्रति वफादार भी रहे, परतु वे राजतंत्रसे हट जाए। होना भी यही चाहिए था, मगर हुआ नही, इसलिए लोगोने सत्याग्रह किया। सत्याग्रह शुरू करनेसे पहले उन्होने एक तार भी मुझे दिया था, जिसमें उन्होंने कहा था कि आपको डरनेकी जरूरत नही, हम बहुत समझ-बूझकर सत्याग्रह कर रहे हैं और सत्याग्रहके कानूनसे बाहर नही जाना चाहते। उसमें जो तकलीफें आएगी उनको हम बर्दाश्त करेंगे। मगर वहाके दीवान श्रीरामास्वामी मुदालियर तो बहुत बडे आदमी हैं। उन्होंने सारी दुनियामें भ्रमण किया है। उन्होंने समझा कि आखिर कबतक लोगोको हलाक[1] करते रहेंगे? ऐसा कबतक चल सकता है। नतीजा यह हुआ कि जो लोग कैदमें चले गए थे वे छूट गए और मैसूर राज्य और उसके लोगोके बीच एक सुलहनामा हो गया। लोगोकी जो बाकानून शर्तें थी वे राज्यकी तरफसे स्वीकृत हो गई। मैसूरमें यह जो कुछ हुआ उसके लिए वहाके राजा, दीवान साहब और लोगोको धन्यवाद देना चाहिए। राज्यने वहां लोगोको राजी रखकर ही काम चलाना कबूल कर लिया है। ऐसे ही और भी काफी राजा लोग पडे हैं। वे भी सब ऐसा ही करें और लोगोको राजी रखते हुए इंग्लैंडके राजाकी तरह राज करें। जो प्रजा कहे वही वे करें और उसके बाहर न जाएं तो कितना अच्छा हो।

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हू कि जहा मै ठहरा हुआ हू वह एक गृहस्थका मकान है—बिरला भाइयोका। वे सबको आने देते है। हमें उनके इस शिष्टाचारकी कद्र करनी चाहिए। वैसे तो प्रार्थना-सभामें लाखो लोग आए है, मगर यहा तो छोटी प्रार्थना-सभा होती है और मैं तो इतनी भी आशा नही करता था। जो लोग आते हैं उनमें

---

[1] दमन।

पजाबसे आए हुए लोग भी रहते है। मुझे यह जानकर बहुत दु.ख हुआ कि कुछ लोग वृक्षोके फल तोड़ लेते है। किसीको पेड़का एक भी फल छूना नही चाहिए। फल तो क्या एक पत्तीतक नही तोडनी चाहिए। यदि लोग इस तरहसे तोडने लगे तो बागके मालीको अच्छा नही लगेगा। फल काटनेका भी एक समय होता है। अत उनके साथ किसीको जबर्दस्ती नही करनी चाहिए। यहा जो लोग आते है वे ईश्वरका नाम लेनेको आते है। कम-से-कम प्रार्थना-सभामे तो हम लोग पवित्र और पाक बनकर रहे। सिवाय भगवानके और कोई चीज दिलमे होनी ही नही चाहिए। तो फिर चोरी हम कैसे करे। हम सब लोग दु.खमे पडे है, यह एक दूसरी बात है। परतु हम अपनी सज्जनताको कभी न छोडें।

एक शिकायत और मेरे पास आई है। सारे दिनभर लोग मेरे पास आते रहते है। उनमेसे कोई कहते है कि प्रार्थना-सभामे तुमने सरकारी अफसरो, पुलिस और मिलिटरीकी प्रशसा करके उनको योग्यताका प्रमाण-पत्र दे दिया है। ऐसा मैने कहा तो है नही। यदि कह भी दिया तो बेवकूफी की या असावधानीमे कह दिया। मगर मैने कहा ही नही। मैने यह कहा था कि उन्हे ऐसा होना चाहिए। यह नही कि वे ऐसे है। वह आदमी ऐसा था, एक बात है और वह ऐसा होना चाहिए बिलकुल दूसरी बात है। प्रमाण-पत्र तो मै दे ही कैसे सकता था, क्योकि मै तो किसीको पहचानता ही नही! मुझे क्या पता कि वे सब बाकायदा काम करते है। हमारा धर्म तो है कि जो पुलिस और मिलिटरी कहे, क्योकि वे अधिकारके साथ कहते है, उसका पालन करें।

यदि हम पचायत राज्य चाहते है तो उसका पहला नियम यह है कि वह जो हुक्म करे उसको हम पालन करे। हमने अभी पंचायत राज्यका पूरा नतीजा नही पाया है। यदि हम दिलसे अहिंसक होते तो आजका यह नजारा हमे देखनेको नही मिलता। फिर भी अग्रेजी हकूमत तो यहासे हट गई। यहा जो गवर्नर-जनरल है, वे नौ सेनाके एक बड़े अफसर और बादशाही कुटुबके होनेपर भी आज हमारे नौकर बनकर रह रहे है। हमारा जो प्रधान मडल कहे उसपर उनको चलना पड़ता है। वे हमारे हाकिम नही, बल्कि हम उनके हाकिम है। इस

प्रकार जो हमारी हकूमत हो गई है वह पचायत राज्य है और उसके हुक्मपर सबको चलना चाहिए। अगर किसीको इन सरकारी अफसरोके खिलाफ कोई शिकायत है तो उसका इलाज यह है कि वे हकूमतके पास चले जाय या अखबारोमे छपवा दे। यदि किसी अफसरने रिश्वत खा ली है या वह निकम्मा है तो उसके खिलाफ कार्रवाई की जाय। जो लोग रिश्वत लेते है वे अपने और अपने मुल्कके साथ गुनाह करते है। अभी कुछ मिलिटरीके लोगोने स्टेशनपर कोडा मारना शुरू कर दिया। किसी अफसरको कोडा मारनेका अधिकार ही नही है। मगर हम भी यदि उसके जवाबमे कोडा मारे तो हम भी वही चीज सीख जाते है। स्वराज्यसे पहले तो सरकारी अफसर हमारे नौकर नही, बल्कि हाकिम बनकर बैठ गए थे। वे अग्रेजी हकूमतके प्रति वफादार थे और यदि उस वक्त रिश्वत खाते थे तो अग्रेजी हकूमतका गुनाह करते थे। मगर आज भी यदि वे ऐसा करे तो हिंदुस्तानके साथ गुनाह करते है। इतना बडा फर्क हो गया है।

नग्राखालीके लोग मेरे पास आ गए है। पूर्वका पाकिस्तान कोई छोटा मुल्क थोडा ही है। उसमें ढाका और त्रिपुरा-जैसे पडे है। उनका कहना है कि ढाकासे हिंदू लोग भाग रहे है। उनको ऐसा लगता है कि यहा कुछ ज्यादती होनेवाली है। इन बगाली भाइयोने मुझसे कुछ कहनेके लिए कहा है। मै तो वही कह सकता हू जो कहता आया हू। किसीको इस तरहसे अपना वतन या अपना स्थान नही छोडना चाहिए। जो बहादुर लोग होते है वे किसीसे डरते नही। यदि डरते है तो केवल ईश्वरसे। उन्हें बुजदिल बनकर भागना नही चाहिए। मरनेकी ताकत उनमें होनी चाहिए। पाकिस्तान हकूमतको वे कह दे कि आप मारना चाहे तो मारो, हम आपको तकलीफ देना नही चाहते। पाकिस्तानके वफादार बनकर हम यहा रहना चाहते है। हम यहा पाकिस्तानकी जड काटनेकी बेवफाई नही करेंगे। मगर हकूमत यदि चाहे तो हमको काट सकती है, हमारी लडकीको उठा या छीन नही सकती। यदि हकूमत यह कहे कि रामनाम मत लो, तो उसे तो हम लेंगे। यदि वह कहे कि दशहरेके दिन नक्कारा न बजाओ, तो नक्कारा हमारा जरूर बजेगा क्योंकि वह हमारे धर्मका अग बन गया है। मगर यह बात बुरी है कि बडे-बडे

आदमी तो अपनी जान बचानेके लिए भाग जाए और बेचारे मिस्कीन[1] आदमी वहा पडे रहे। वहा शूद्र लोग काफी तादादमे पडे है। वे इतनी बहादुरी कैसे दिखाएंगे। अगर मै तिजारत करता हू और मेरे पास काफी पैसे पडे है तो क्या मै भाग जाऊ? वह मेरा धर्म नही है। जो डाक्टर, वकील और व्यापारी वहा है वे इस बातको देखे कि यदि वहासे छोडकर जाना ही है तो गरीब लोग उनसे पहले जाए। गरीब लोगोको वही छोडकर खुद भाग आनेमे कोई इसानियत नही है। इस तरहसे वे हिंदू, सिख या इस्लाम-धर्मको बढा नही सकते। आप जहा भी जाए गरीबोको अपने साथ रखे। बदकिस्मतीसे मै आज पूर्वी पाकिस्तानमें नही हू। ईश्वरने मुझको कहा ऐसा बनाया कि मै हर जगह हो सकू। मै तो इन्सान पडा हू और वह भी बहुत मिस्कीन हू। मगर आवाज तो वहातक पहुचा ही सकता हू और वह पहुचा देता हू।

इन बगाली भाइयोने कहा है कि मै हमारे सचिव डा० अम्बेदकर साहबसे भी कहू कि वे इस बारेमे कुछ करे। उन्होने दलित जातियोंमे काफी काम किया है। उनको भी इस मौकेपर वहाके लोगोको कुछ कहना चाहिए। वे उनको यह सुना दे कि अपना धर्म छोडकर जिंदा रहना पाप समझना चाहिए। ऐसा कहनेसे उनमे एक ताकत आ जाएगी।

मुझसे सुहरावर्दी साहबको भी वहा भेजनेके लिए कहा गया है। उनका जाना भी ठीक ही होगा। मगर सुहरावर्दी साहब यहा है नही। एक-दो दिनमे यहा आ जायगे। मगर ख्वाजा नाजिमुद्दीन तो वहा है। वे भी तो ऐसा कहते है कि पूर्वी पाकिस्तानमें किसी हिंदू या सिखको हलाक नही किया जायगा। सुहरावर्दी साहब भी उनकी मदद करनेके लिए वहा चले जायगे। नही जायगे तो करेंगे क्या? आज सबका स्वार्थ इसीमें है कि हिंदू-मुसलमान और सिख सब मिलकर रहे। अगर ऐसा नही होता तो हिंदुस्तान और पाकिस्तान दोनो मर जाते है।

---

[1] दीन।

## : १२० :

### १७ अक्तूबर १९४७

भाइयो और बहनो,

मेरे पास कुछ खत भी आए हैं और यों भी जो लोग सुनते हैं वे बताते हैं कि मेरी खासी अबतक मिटी नहीं है। मैं प्रार्थनाके बाद जब कुछ कहता हूं तो भी खांसी आ जाती है। मैं डाक्टर या वैद्यकी दवाई नहीं करता हूं। डाक्टर कहते हैं कि जो तीन दिनमें खत्म होनेवाली चीज है उसको तीन सप्ताह लग गए। पेनिसिलीन लेनेमें तीन दिनमें ठीक हो सकती है। लेकिन मैं समझता हूं कि रामनाम सबसे ऊंची दवा है। वह रामबाण दवा है। जैसे रामका बाण काम करता था और जाकर कभी निष्फल नहीं होता था, वैसे ही यह दवा कभी निष्फल नहीं जाती। लेकिन धीरज तो चाहिए। इस अवस्थामें और आजकल दिल्लीमें क्या सारे मुल्कमें जो चल रहा है उसमें मैं अपने लिए दूसरा कोई चारा नहीं पाता। सिवा ईश्वरकी मददके और कोई चारा ही नहीं है। मैं मनुष्यकी हैसियतसे कितनी ही कोशिश करूं वह सब निष्फल होती है। मेरे शब्द एक जमानेमें बडा असर रखते थे, आज वे नहीं रखते। तो क्या मैं कोई गुनहगार हो गया हूं या पहले दिलमें बात करता था आज दिलसे नहीं करता? मैं तो दिलसे ही करता हूं और आप भी सुनते हैं। लेकिन युग बदल गया है। युगकी तासीर[1] होती है, होनी चाहिए और हो भी रही है। लेकिन मुझपर नहीं होनेवाली है। मै नहीं होने देता। मैं तो जैसा था वैसा ही हूं। मैं जानता हूं कि मैं जैसी बात कहता था वही बात आज भी कहता हूं। मेरी सत्य और अहिंसापर पहले जो श्रद्धा थी, वह अब भी है और हो सकता है कि आज ज्यादा है। युग बदल गया है मगर मैं तो नहीं बदला हूं। श्रद्धासे जो प्रार्थना सुनते हैं उनपर असर होता है। आदमी स्वभावसे जैसा बना है वैसा ही कर सकता है। इसमें कृत्रिमताको कोई स्थान नहीं है।

---

[1] असर।

आज जो काम कर रहा हू वह रामका नाम लेकर कर रहा हू। उसपर मेरी श्रद्धा है। तो क्या वजह है कि इस मामूली व्याधिके लिए छोड दू। या तो यह व्याधि दूर हो जाती है या मुझको दूर कर देती है। आदमी मर जाता है तो कौन-सी बडी बात है? सबके जन्मके साथ मरण भी लिखा है। अगर रामको मुझसे काम लेना है तो जिंदा रखेगा और अगर नही लेना है तो मुझे इसी खासीसे मार डालेगा। अभी लडकीने जो राम-नामका भजन गाया है उसमें कहा है कि तू रामनाम ले, तू कामको भूल जा, क्रोधको भूल जा, रागको भूल जा, मोहको भूल जा, लेकिन रामनामको मत भूल, वही तेरा सहारा है। भजनको गाना और चिंतन करना तेरा काम है। लेकिन ऐसे मौकेपर जब खासी आती है तो डाक्टर या वैद्य बताते है कि तू पेनिसिलीन ले। वहा रामनाम कहा आया। जब इसी छोटे काममे रामनामपर श्रद्धा नही होगी तो बडे काममे उससे मै कैसे सफल होऊगा। इसमे मै अपने पुरुषार्थसे काम न करू तो हीन बन जाऊगा, निकम्मा बन जाऊगा। दूसरे चाहे न समझे मै अपनी दृष्टिसे बहुत हीन बन जाऊगा। इस मामूली-सी खासीको हटानेमे रामनामको क्यो भूल जाऊ।

हमेशा जैसे आते है आज भी कबलिया आ गई। कुछ चेक भी आ गए। बडे शौकसे एक मुसलमान भी लिहाफ दे गए। उसमें ढाई रतल रूई है। जिनके पास नही है उनके पास ये पहुचनी चाहिए और उनके पास पहुचानेकी चेष्टा की जा रही है। कहते है कि लोगोको जितने उत्साहसे भेजनी चाहिए उतने उत्साहसे नही भेज रहे है। मै तो लोगोको धन्यवाद ही देना चाहता हू कि वे इतनी तेजीसे कबलिया भेज रहे है और पैसे भी भेज रहे है। कुछ लोग पैसा इसलिए भेजते है कि वे कबलिया सस्ते नही खरीद सकते और कहते है कि तुम सस्ते खरीद लो।

राजेंद्रबाबूने खुराकके बारेमें एक कमेटी बुलाई थी। कपडेके बारेमे उसमे कुछ नही हुआ। कपडे और खुराकके बारेमे महीनोसे जिस चीजको मै मानता आया हू उसीपर मै आज भी कायम हू। मै मानता हू कि गरीब लोग उसमे परेशान होते है और वह परेशानी और भी बढ जाएगी। मुझको कोई खत लिखता है और जो किसानोमे काम करते

है वे कह गए है कि जो तुमने कहा है उससे किसान लोग बहुत खुश हो गए है। उनपर जो अकुश लादा गया है उससे तो वे छूट जाएगे। उनको कुछ तो मौका मिल जाएगा। उनके यहा अनाज तो भरा पडा है। वे सारा अनाज क्या खाएगे ? पैसा भी उनको पैदा करना है तो क्या वे अनाजपर ब्लैक मारकेट करेंगे ? किसान बेचारे स्वभावसे सीधे होते है, उन्हे ब्लैक मारकेट क्या करना है। थोडा दस-बीस रुपया उनको मिल जाय, इसीलिए वे खुश हो रहे है। उनको ब्लैक मारकेट या प्रपच क्या करना है। इसीलिए मै फिर कहूगा और आपके मारफत हकूमतको भी कहूगा कि आखिर इतनी श्रद्धा तो लोगोपर रखो। इतनी हिम्मत क्यो नही करते कि राशनिंगको छोड दो। उसका नतीजा कभी बुरा नही हो सकता। लोग बदमाश हो गए है और अनाजको छिपा बैठे है ऐसा मानकर आप क्यो बैठ गए है। आखिर हकूमत तो आपके हाथमें पडी है। दुबारा करना हो तो फिर करो। इतनी भी हिम्मत आप न रखें और उसके कारण लोग इतने परेशान हो कि उसका कुछ हिसाब नही मिलता। जो पचायतका स्वभाव है वही होना चाहिए।

मिल-मालिक कहते है कि उनके पास कपडेका ढेर लग गया है, उसपर अकुश है, वे कैसे निकालें ? वे अपने फायदेकी बात नही करते ऐसा मै मानता हू। बिल्कुल लोगोकी दृष्टिसे ही बात करते है। अगर छूट दे दी जाय तो जो कपडा पडा है वह लोगोतक पहुच तो जाए। यह कितनी भयानक बात है कि हिंदुस्तानमें अनाज तो पडा है, लेकिन जिनके पास पहुचना चाहिए उनके पास पहुच नही रहा है। मुझे ऐसा लगता है कि इसमें कोई बडा दोष है। हमारे सिविल सर्विसके लोग कुर्सीपर बैठे-बैठे काम करना चाहते है। उनके सामने टेबुल है, डेस्क है, लाल पट्टी है, वैक्स है और लाल पट्टी लगाना, फाइल बनाना यही उनका काम रहता है। कब वे किसानोके बीच रहे है ? किसानोंका कब उन्होने परिचय किया है ? बडे अदबसे मै उनसे कहूगा कि आप ऐसा क्यो मान बैठे है कि लोग मर जाएगे ? आपके अकुशसे लोग मर रहे है यह तो हम अपनी खुली आखोसे देख सकते है। जो लोग बदमाशी और पागलपन करनेवाले है वे अब भी कर रहे है, लेकिन उनकी अच्छी चीजे छिप

जाती है। मै तो कहूगा कि दोनो चीजे जितनी जल्दी हो सके निकाल देनी चाहिए। अगर स्टाक थोडा भी पडा है तो भी लोग जाग्रत हो जाएगे। कपडा, अनाज और सब चीजोके दाम जो आज वढ गए है वे गिर जाएगे। जग तो अब है नही और हिंदुस्तानसे वाहर कुछ जाता नही है, लेकिन दाम वढता ही जाता है। यह वडी नामोशी[1] की वात है। हमारा सिर झुक जाता है। ऐसा मै मानता हू। सरकारको लोगोपर श्रद्धा रखना चाहिए और हिम्मत रखनी चाहिए। हिम्मतके साथ हम जितनी जल्दी हटा सके हटाना चाहिए। ऐसा मेरा विश्वास है और यह विश्वास मेरा दिन-पर-दिन वढता जाता है।

आज तो हम वेचैनीमे वैठे है। दिनभर हम यही वात सोचते रहते है कि मुसलमान मार डालेगे, हिंदू मार डालेगे, सिख मार डालेंगे। यही काम रहता है और कोई वेहतर काम दीखता ही नही। वैमनस्य तो है मगर उसका विचार करनेसे हम उसे भूलनेवाले नही है। हमारा शास्त्र भी कहता है कि जो उसका विचार करता रहता है वह उस समय वन जाता है। उसका जहर चढ जाता है। उसका नशा हमको भी हो जाता है और हम भी यही सोचने लगते है कि मुसलमानोको काटो और मुसलमान सोचते है कि हिंदुओ और सिखोको काटो। अगर हम ऐसा ही सोचते रहे तो यह हमारा स्वभाव वन जाएगा। क्या आजादीमे हमारा यही हाल होनेवाला है? इसका नाम पचायती राज मै कभी नही कह सकता।

दक्षिण अफ्रीकासे मेरे पास तार आया है। तारमे वे लिखते है कि तुमने (गाधीजी) हमपर वडा उपकार किया है। मैने क्या उपकार किया; जो मुझे अच्छा मालूम हुआ उसे कह दिया। सत्याग्रहमे यह वड़ा गुण तो पडा है। जव पजावमे मार्शल-ला चलता था तो उसमे वडी ज्यादतियां होती थी। लाखो आदमियोको पेटके वल चलना पडता था। पेटके वल वे चलते थे, क्योकि उनको अपनी जान प्यारी थी। वे चले। उस गलीका नाम मै भूल गया—वह छोटी-सी गली अमृतसरमें है। पेटके

---

[1] शब्द 'नामूसी' है जिसके माने है वदनामी।

वलसे सिर्फ जिंदा रहनेके लिए चलते थे। नहीं चलोगे तो मार डाले जाओगे, ऐसा उनसे कहा जाता था। सिर्फ जिंदा रहनेके लिए उन्हें ऐसा क्या करना था, वे खड़े होकर कहते कि हम ऐसा नहीं करेंगे—'कदी नहीं हारना भावे माडी जान जावे।' यह सत्याग्रहमें बिल्कुल सही है कि चाहे जान चली जाए, पैसा चला जाए, लेकिन हारना नहीं। उसमें सत्य आ जाता है। असत्य काम करनेसे उसमें असत्य आ जाता है। दक्षिण अफ्रीकामें चाहे लोग मुट्ठीभर क्यों न हों उससे क्या हुआ—ऐसा करनेवाले करोड़ों हो कैसे सकते हैं। वहां लाखोंकी तो आबादी ही है। यदि सैकड़ों क्या, दस भी ऐसे मिल जाएं तो वे हिंदुस्तानका नाम करनेवाले हैं। वे कहते हैं कि तुम यहांके लोगोंको यह भी क्यों नहीं कहते कि वे पैसे भेजें। वह मुझको चुभता है। वे मिस्कीन नहीं हैं। दक्षिण अफ्रीकामें वे पैसा कमाने गए हैं, लेकिन हमपर उपकार करने नहीं गए। जो वहां लड़नेवाले लोग पड़े हैं उनके पास पैसे ज्यादा नहीं है और पैसेवाले उनको पैसे नहीं देते। जो पैसेवाले होते हैं उनको पैसा ही प्रिय हो जाता है। वे अपना मान और सम्मान पैसेमें ही समझते हैं। हम तो लड़नेवाले हैं, लेकिन पैसे थोड़े हैं; लेकिन पैसे नहीं तो अबतक कैसे चलना रहा।

पूर्वी अफ्रीकामें हमारे लोग बहुत हैं और पूर्वी किनारा तो हमारे लोगोंसे भरा पड़ा है। मैं उनसे कहूंगा कि वे पैसे भेजें। हमारा हिंदुस्तान तो आज मिस्कीन-सा बन गया है। किस मुंहसे मैं यहां किसीसे कहूं। यहां करोड़पति तो हैं और करोड़ों कमा भी रहे हैं, किंतु उनपर टैक्स वगैरह लगा देनेसे उनके पास भी कम पैसा रह गया है। हमारी कम-नसीबीसे लड़ाई भी कर रहे हैं। उसमें भी करोड़ोंका नुकसान हो जाता है। मैं कैसे कहूं कि दक्षिण अफ्रीकामें भेजनेके लिए पैसे दो। दक्षिण अफ्रीकामें मैं जब था तब आप लोग पैसे भेजते थे—गोखले महाराज पैसे भेजते थे। पंजाब और सारे हिंदुस्तानने मेरे पास ५ से ७ लाख रुपए-तक भेजा। आज तो मैं ऐसा नहीं समझता कि मैं ऐसा कह सकता हूं। मारेशसमें बहुत हिंदी पड़े हैं—वे वहां कुली हैं। वहां हिंदू-मुस्लिम-सवाल नहीं है। सुवामामें भी काफी हिंदी पड़े हैं। उनके पास पैसे भी हैं।

वे शराब पीते नही है, रडीवाजी भी नही करते। उन्हे खानेके लिए पैसे चाहिए। खानेमे कितना पैसा लगता है ? वे कह सकते है कि हम अपने लिए थोडे लड रहे है—हिंदुस्तानके लिए लड रहे है। हा, मै यहासे पैसे भेजनेवालोपर रुकावट नही डाल सकता, लेकिन कह नही सकता कि आप लोग पैसे भेजें।

## : १२१ :

१८ अक्तूबर १९४७

भाइयो और वहनो,

कवल और चेक आ तो अव भी रहे है, किंतु उनकी गति सतोष-जनक नहीं है।

मैने देखा है कि सरदार पटेलने भी एक निवेदन निकाला है, जिसमे उन्होने भी लोगोसे भिक्षा मागी है। वह वताता है कि अगर हकूमतकी ओर देखकर बैठे तो काम निपट नही सकता। हकूमत उसतक पहुच नही सकती है। अच्छा है उन्होने भी निवेदन निकाल दिया। जो लोग आज जाडेको वर्दाश्त नही कर सकते उनके पास किसी-न-किसी तरह ओढने और पहननेको कुछ पहुचाया जा सके तो वडी अच्छी वात है।

डाक्टर सुशीला नायर भी यही काम कर रही है। वह हमेशा पुराने किलेमे जाती है और इधर-उधर भी जाती है। आज कुरुक्षेत्र चली गई है, क्योकि वहा एक नया शिविर वन गया है। वहा सव लोग इतजाम तो कर रहे है, लेकिन वह वडी डाक्टर है। उनके साथ दूसरी लेडी डाक्टर भी गई है। दूसरे लोग भी गए है। श्रीमती जान मथाई भी गई है। उन लोगोको जितनी मदद पहुचाई जा सकती है पहुचाई जाए।

कल मैने आपसे हिंदुस्तानीके वारेमे वातचीत की थी। अव उसके वारेमे काफी लोग मुझे लिख रहे है कि आप यह कैसा भद्दा काम कर रहे है। मै मानता हूं कि यह भद्दा काम नही है। मै समझता हूं कि

मै हिंदुस्तान और सघके लिए बडा अच्छा काम कर रहा हू। उससे उसकी 'खिदमत होती है। वे लिखते है कि आखिरमे हिंदुस्तानीका जो सिलसिला चला वह ऐसे जमानेमे चला जब कि हम कुछ गिरे हुए थे, गुलामीमे थे। हम यह भूल जाते है कि जो लोग आए थे वे आए तो थे चढाई करनेके लिए, लेकिन रह गए इसी मुल्कमे। इस मुल्कमे किस तरह जीवन बसर हो सकता है यह उन लोगोने सोचा। सच पूछिए तो उसीमेसे पीछे उर्दू निकली और उसे ठेठतक पहुंचा दिया गया। चलते-चलते उसमे उन्होने ठूस-ठूसकर अरबी और फारसीके शब्द डाल दिए। उसको जामा भी पहना दिया। उसका व्याकरण भी वहीसे है। हिंदुस्तानीमे तो ऐसा नही है, उसका व्याकरण भी यहाका है। उर्दूमे जो फारसीके शब्द है वे वर्षोसे है। उनको चुन-चुनकर निकाल देना हमारा धर्म थोडे ही हो जाता है। जो यहा आए पीछे वे यही रह गए। उन्होने यहाके रीति-रिवाज सब ले लिए। उससे हमारा आज द्वेष करना तो निजी द्वेष हो जाता है, ऐसा मै मानता हू। लेकिन आज जो कहता हू उसका तो दूसरा सबब है। मैने काफी लिखा है। अग्रेजीका तो ऐसा है कि अग्रेज यहा सल्तनतके लिए आए थे। उनका दिमाग ऐसा नही चलता था। वे हिंदुस्तानके तो होकर बैठे नही। वे यहा बसनेके लिए थोडे आए थे। वे हमेशा एसा सोचते थे कि वे बाहरके है, बाहर ही रहेगे, बाहर ही पलेगे और बाहर ही उनके बच्चे पलेगे। पीछे उन्होने अग्रेजी भाषा भी दाखिल कर दी। उन्होने धीरे-धीरे उसका ढाचा भी बनाया। वहा तो ऐसी कोई बात नही हुई जो उर्दूमे हुई। उर्दू तो अवधी या उस वक्त जो और दूसरी तीसरी भाषाए चलती थी उनमेसे निकली। लेकिन अग्रेजीका यह हाल नही है। आज तो यह ठीक है कि अंग्रेजी हकूमत हमारे घरसे चली गई है, लेकिन अगर अग्रेजी भाषाकी हकूमत हमपर चले, वह हम-पर काबू करे, हम उसके बिना कारोबार चला न सके तो हमारा क्या हाल होगा? क्या करोडो लोग अग्रेजी सीखेंगे? क्या अग्रेजी हमारी राष्ट्रभाषा होनेवाली है? बहुत साफ-साफ मै कहना चाहता हू कि वह तो कभी हो ही नही सकती। इसमे पड़नेकी कोशिशतक न करें। यदि करते है तो इसमें हमे हारना है।

एक सज्जन लिखते है कि तुम तो भूल जाते हो। हिंदुस्तानमे जो लोग काम करनेवाले है वे सब अग्रेजी पढे-लिखे है। अग्रेजी पढ़े-लिखे मुट्ठीभर है। ठीक है कि वे कोर्ट दरबारमे चले जाते थे और वहां अग्रेजीमे काम करते थे, क्योकि उनका उनपर प्रभाव चलता था। जो गुलामीमे रहता है उसकी तो यह आदत हो जाती है कि वह राज्यभाषाको पसद करे। यह तो हुआ, मगर वे बेचारे जिनकी मातृभाषा हिंदुस्तानी या हिंदी है, वे अगर कही कोर्ट दरबारमे जाए और अग्रेजीमे सब काम चले तो वे समझेगे ही नही। यह तो हमारा अक्लका दिवाला निकालना हो गया। हम बिल्कुल समझना नही चाहते। हमारा स्वार्थ किसमे है वह भी हम समझना नही चाहते। अब अग्रेजी सल्तनत तो चली गई। उसके साथ ही अग्रेजी जबानको भी, उस जगहसे निकालना होगा जो हमने उसे दे दी है, और जिस जगहके लिए वह हो नही सकती। एक भाई मुझको लिखते है कि यह जो तुम कहते हो उसमेसे तो एक चीज और निकल जाएगी। लोग तो ठीक-ठीक मतलब लगाते नही है।

आज हम दीवाने जो बन गए है। हिंदू मुसलमानसे लडाई करे, उसके साथ न बैठे, उसका गला काटे, यही रह गया है। राजकुमारी अमृतकौर, जो कल या परसो ही शिमलेसे लौटी है, मुझको सुनाती थी कि शिमलेमे जो गरीब लोग बर्षोसे पड़े है उन्हे वहासे हटना है, क्योकि वे लोग मुसलमान है। हम ऐसे जाहिल बन गए है। उनको हटनेमे कितनी तकलीफ बर्दाश्त करनी पडी। पाकिस्तानमे काफी हिंदू पडे है—वे भी यही शिकायत करते है। यह सब सिलसिलेवार चलता गया।

कुछ लोग कहते है कि सस्कृतमयी जो हिंदी है वह राष्ट्रकी जबान है। अग्रेजी तो अब जानेवाली है। मगर लोग सूबेकी भाषामे अपना काम चलाएगे। वहा झगडा होनेवाला है ऐसा डर है, और सही है। उसमें आपसमे घृणा पैदा हो जाएगी। अग्रेजी तो रह नही सकती क्योकि अग्रेज तो अब मुट्ठीभर है। वे हकूमत तो चला नही सकते।

## : १२२ :

### १६ अक्तूबर १६४७

भाइयो और बहनो,

आप लोग महसूस करते है कि ६ बजे प्रार्थना जो शुरू करते है उसमे देर हो जाती है, क्योंकि दिन छोटे ही होते जाते है। रोज दो-तीन मिनट कम हो जाते है। इस तरहसे प्रतिमास १५ मिनट कम हो जाते है और दिसबरकी २३ तारीखको तो दिन कम हो ही जाता है। आजकल अधेरा जल्दी हो जाता है। इसलिए कलसे प्रार्थना ५॥ बजे होगी।

आजका भजन तो आपने सुन लिया। मेरा खयाल है कि उस भजनका करुण हिस्सा मैंने आपको नही सुनाया है। यो तो एक भजन-माला बन गई है। वह जो भजन-माला है उसमे जितने भजन है उसका कुछ-न-कुछ इतिहास है ही। उसमे कोई सब गिने-चुने तो नही है। हा, चद गिने-चुने भी है, लेकिन सारा-का-सारा सग्रह आश्रममे तैयार हुआ है। आश्रममे एक बडे भक्त थे जो सगीत-शास्त्री भी थे। उनका नाम गणेश शास्त्री था। उन्होने भजनोका यह सग्रह किया। हा, उन्होने मदद ली काका साहबकी भी। उसमे यह भजन था। यह भजन तो मेरा भतीजा मगनलाल गाधी गाता था, जो दक्षिण अफ्रीकाके आश्रम-मे मेरे बहुत साथ रहा था। ऐसा सग्रह तो बहुतोने किया, अकेला गणेश शास्त्रीने थोडे किया। हम आखिर इन्सान पडे है तो जब थोडा-सा भी सत्याग्रह लबा हो जाता है, क्योकि उस जमानेमे तो लडाई चल रही थी सत्याग्रहके मारफत स्वराज हासिल करनेकी। थोडेसे वर्ष बीत गए तो कई लोगोको चोट लगी कि अभीतक हमको स्वराज नही मिला। उसमे हमारी कोई गलती होगी—ऐसा ही मानना चाहिए यही अच्छा है। आदमीको तो ऐसा ही मानना चाहिए कि कोई चीज टेढी हो जाती है तो उसका सबब दूसरा है। हमारा पडोसी है, या हमारा भाई है, हम नही है—यह शुद्ध रास्ता नही है, अशुद्ध है। दूसरोपर सब कुछ दोष डाल देना या जब कुछ

टेढी हो जाती है तो उसमें दूसरोका दोष है, हमारा तो है ही नही, ऐसा मानना गलत है। जितने भक्त हो गए हैं उन्होंने यही कहा है। तुलसीदासजी भी वही कहते है, या कहो कि सूरदासजी भी वही कहते हैं 'मो सम कौन कुटिल खल कामी', मेरे-जैसा कुटिल कौन है, खल कौन है, कामी कौन है? तुलसीदासजी या सूरदासजी ऐसे नही थे हमारी दृष्टिमें, अब वे अपनी दृष्टिसे ऐसा मानते थे। जितने ईश्वरसे दूर रहते थे उससे कुछ गुस्सा होता था, पीछे चाहे भाई, बहन, लडके, दोस्त सब क्यो न पास हो। उसके दिलमेंसे यह आह निकलती है कि कुटिल, खल, कामी कौन होगा? ऐसा उन्होंने कह दिया और वह अच्छा है कि वे हमेशा अपना दोष अपनेमें ही ढूढते रहे। ऐसा ही यह भजन है—'अजहु न निकसे प्राण कठोर'। वह कहता है कि अब-तक ईश्वरके दर्शन न हुए तो अबतक प्राण क्यो न निकले? हमेशा तो इस भजनको गणेश शास्त्री गाते थे, लेकिन बाज दफा जब वह हाजिर न होता या बीमार पड जाता तो मगनलाल उसको गाता था। वह सगीत-शास्त्री तो नही था लेकिन उसका कठ अच्छा था। उसका वह भजन अब भी मेरे कानोमें गूजता है। वह तो आश्रमका स्तभ था। आश्रमको चलानेमें वह पहाड-सा था, बहुत मजबूत। कुदाली अपने आप चलाता था तो सबसे आगे चला जाता था। दक्षिण अफ्रीकामें तो उसका शरीर बहुत मजबूत था। यहां उसको कोई बीमारी तो नही थी, लेकिन शरीर क्षीण हो गया था, क्योकि उसपर सारा बोझ तो वहापर भी था, लेकिन यहा तो एक अनोखी चीज यह है कि करोडो आदमियोमें काम करना पडता था। रचनात्मक कामका भी बोझ उसपर पडता था। रचनात्मक कामके बिना हम रह भी कैसे सकते है। उसके वगैर स्वराज चीज हो भी क्या सकती है? आज स्वराज तो मिला, लेकिन उसकी कितनी कीमत है? मिला तो भी क्या, आज हम सिद्ध करते हैं कि अगर हम रचनात्मक काम उस वक्त कर लेते तो हमें यह वक्त नही देखना पडता जो हम आज प्रत्यक्षमें देख रहे है। स्वराज्यकी जो कल्पना हमने की थी और वह कल्पना बढ भी गई थी, क्या वह यही है? अगर उस वक्त हम इतना कर लेते

तो आज हिंदुस्तानका इतिहास अनोखा होनेवाला था, इसमे मुझे कोई शक नही। भगनलालका जो भगवान था वह तो स्वराज्यमे ही था। उसका स्वराज्य तो राम-राज्य था।

भगवानके दर्शन तो स्वराज्यमे ही है। भगवानका कोई शरीर थोडा है। कोई कहते है कि वे चतुर्भुज मूर्ति है—उनके हाथोमें शख, चक्र, गदा, पद्म है। यह सब हमारी कल्पना है। ईश्वरके पास शख, चक्र, गदा, पद्म क्या होना था। वह तो निरजन और निराकार है, वह तो देहातीत है तब उसकी देह कहासे? हम मनसे कल्पना कर लेते है, मान लेते है। तो फिर हम अपना भगवान कहा देखे? उसको हम अपने कर्मोमे देखे। अगर यज्ञ समझकर कार्य करें तो भगवानकी स्थापना होती है, जैसे कि एक आदमी चर्खा चलाता है और सूत कातता है तो वह उसी सूतके धागेमें भगवानका दर्शन करता है या करती है। जब उसके दिलमे ऐसा है कि सारी दुनिया हमारी है और हमारी दुनिया तो भारतवर्ष है, जहा गरीब है। उनको खानेको नही मिलता। उनके निमित्त या दरिद्रनारायणके निमित्त जो वह एक धागा निकालता है उसमे वह भगवानका दर्शन करता है। स्वराज्य तो तब दूर था, लेकिन जब आश्रम चलता नही था तब भगनलालके दिलसे बाज दफा यह आह निकलती थी 'अजहु न निकसे प्राण कठोर।' अबतक भगवानका दर्शन नही हुआ तो भी यह प्राण क्यों नही निकला? पीछे वह कहता है कि चारो प्रहर चार युग-से बीते है। याने चार पहरकी जो रात्रि थी बीत गई, लेकिन मेरे प्राण तो नही गए। उसको चार पहर चार युगके-से लबे लगते है। मुझको भी ऐसे ही लबे लगते है। अबतक हमें स्वराज्य नही मिला था, लेकिन १५ अगस्तको तो वह मिल गया, यह माना, लेकिन मै उसे स्वराज्य नही मानता हू। मेरी व्याख्याका तो स्वराज्य मिला ही नही और न यह स्वराज्य राम-राज्य हो सकता है। आज तो हम एक दूसरेको दुश्मन समझकर बैठ गए है। हिंदूके दुश्मन मुसलमान है और मुसलमानके दुश्मन हिंदू और सिख है। हम दुनियामें किसीको दुश्मन बनाना नही चाहते और न हम किसीके दुश्मन बनना चाहते है, यह मेरी व्याख्याका स्वराज्य है। तो

वह अभी आया नही है। हिंदुस्तानमे क्या मुसलमान हिंदूके दुश्मन बने और हिंदू मुसलमानके दुश्मन बने? क्या हमारे भाई आपस-आपसमें दुश्मन बनेंगे? तो मै यह क्यो कहता हू, एक दफा तो थोड़ा-सा कह दिया था लेकिन मै बार-बार यही कहना चाहता हू कि अगर हम सचमुच ऊपर जाना चाहते है तो हम भाई-भाई बनकर रहें। आज तो हम गिर गए हैं और अभी भी शायद गिरते जा रहे है। हमारे दिलमे खून भरा है, द्वेष भरा है, हम मुसलमानको देखकर भडक जाते है, उसको मस्जिदमे ईश्वरको भजता हुआ देखते है तो उसको मार डालते है, उसको अपना दुश्मन मानते है और सोचते है कि कब उसको यहासे निकाल दे, उसकी मस्जिदको मदिर बना ले। और उसमें क्या गुनाह हो गया है, जैसा मदिर है, वैसी ही मस्जिद है, फिर क्या चीज है इसमे कि मुसलमान मदिरको ढा दे और हिंदू मस्जिदको ढा दे। ईश्वरकी दृष्टिमें दोनो ही गुनहगार हैं। जो हम करे वह मुसलमानको बुरा लगे और जो मुसलमान करे वह हमें बुरा लगे तो वह स्वराज्य कैसे हो सकता है? आज तो हम ऐसा बन गए हैं, लेकिन हम इस अगारमेंसे निकलना चाहते है।

वह तो मैंने कह दिया कि दिल्लीमें मै 'करू या मरू', ऐसा कहकर आया था। किया तो नही, हा यह ठीक है कि अब हमेशा लडाईकी खबर आती नही और यो लगता है कि हम भाई-भाई-जैसे पड़े है; लेकिन यह तो मनको धोखा देनेकी बात है। जो मिलिटरी और पुलिस यहा पडी है, यह तो उसकी वजहसे है। जो चद मुसलमान हैं क्या उनके दिलमें ऐसा होगा, क्या मेरे दिलमे भी ऐसा होगा। मैं तो ऐसा नही समझता। मेरे पास भी यहा मुसलमान है। क्या आप यहा भी उनका अपमान करेंगे? ? क्या आप मेरे देखते उनको मार डालेंगे? उनके मारनेके पहले आपको मुझे मारना होगा। शेख अब्दुल्ला साहब कल यहा पीछे बैठे थे। कुछ काश्मीरी पडित भी उनके साथ थे। शेख साहब हमारे दोस्त हैं। हमारे रफी साहबके भाईको भी किसीने काट डाला मसूरीमें। कितना बेगुनाह आदमी था। हमारा तो वह खादिम[1]

---

[1] सेवक।

था। उनकी विधवा बेगम यहा आकर बैठी है। लोगोके दिलमे घृणा न हो, इसलिए मै इस करुण कथाको खोलना नही चाहता। बहुत बाते भरी है मेरे दिलमे। बहुत कुछ जानता भी हू, लेकिन मै उस कथाको बढाना नही चाहता। लेकिन निचोड तो बता दू। अगर हम ऐसा बने, जैसा गाते है कि जब हम भगवानका दर्शन नही करते है तब यह प्राण क्यो नही निकल जाता, ऐसी आह दिलमे निकले तो उसका पहला कदम यह है कि हम अपने दोषोको पहाड-जैसे देखे और दूसरोके दोषोको नही। अगर हम सारी दुनियाके सामने यह जाहिर करे कि हमारा ही सब दोष है, दूसरे सब भले आदमी है तो वह बुजदिली नही है, इससे हम गिरते नही है, हम बढते ही है। हम बहादुर बनते है।

अगर हम रामराज्य या ईश्वरका राज्य हिंदुस्तानमे स्थापित करना चाहते है तो मै कहूगा कि हमारा प्रथम कार्य यह है कि हम अपने दोषोको पहाड-जैसे देखे और मुसलमानोके दोषोको कुछ नही। मै यह नही कहता कि मुसलमानोने कुछ नही किया। बहुत किया है। छिपाकर रखना या उसे मै नही जानता, ऐसी बात नही है। लेकिन जानते हुए मै ऐसा नही देखूगा। देखूगा तो दीवाना बन जाऊगा, हिंदुस्तानकी खिदमत नही कर सकूगा। जब मै यह समझू कि मेरा कोई दुश्मन ही नही है और अपना सारा दोष दुनियाके सामने रखू और दूसरोके दोषोको न देखू। तो क्या हुआ, भगवान तो देखने ही वाले है। अगर मेरेको कोई थप्पड मारे, कान काट ले, गर्दन काट ले तो उसमे कौन-सी बात है। मरना तो है ही। इन्साफ करनेवाला ईश्वर तो है, लेकिन मै जो कुछ करू उसको न भूलू। इसलिए मै इसी चीजको बार-बार सुनाना चाहता हू कि आप अपने दिलोको ऐसा साफ करे कि सारी दुनियामे मुझे कोई सुनानेवाला न हो। आज मै गया था तो मुझसे पूछा कि दिल्लीमे कैसा है? तो मेरा सिर झुक गया। क्योकि अभी भी हिंदू-मुसलमानोका दिल एक नही हुआ है। दिल तो अब भी जुदा है। यह तो ठीक है कि कोई एक-दूसरेका गला तो नही काटता है, क्योकि पुलिस पडी है, मिलिटरी पडी है, सरदारजी सब इतजाम करते है, जवाहरलालजी करते है। इसलिए एक-दूसरेको काटते नही है।

उससे क्या हुआ, अंग्रेज भी तो ऐसा ही करते थे। जो दिल्लीमे हम देख रहे है, वह देखना नही चाहते। आज मेरी पाख कट गई है। अगर वह पाख फिर आ जाय तो उड़कर पाकिस्तान चला जाऊगा और वहां भी देखूगा कि हिंदू या सिखने क्या गुनाह किया है और अगर किया भी है तो उससे क्या। उनका वहा मकान है उसमे वे क्यो न रहें? लेकिन आज मै किसको किस मुहसे कह सकता हू। मै तो सबको यही समझाता हू कि अगर ईश्वरका दर्शन करना है और यहा सच्चे स्वराज्यकी स्थापना करना है तो एक दिल होकर सारी दुनियाको कह दो कि हिंदुस्तान कोई गिरा हुआ मुल्क नही है। इसका क्या नतीजा आता है? यही कि एक तो हम ऊचे जाते है दूसरे हमारे मुल्कमें जो भूख है, प्यास है उसे दूर करनेके लिए वक्त मिलेगा।

आज सारी दुनिया हमारी ओर यह देख रही है कि अगर एशियाको ऊचा जाना है, अगर अफ्रीकाके हब्शीको ऊचा चढना है तो हिंदुस्तानको उठाना चाहिए। हिंदुस्तान तो एशियाका या अफ्रीका और कहो कि यूरोपका भी मध्य-बिंदु बना हुआ है। अगर हिंदुस्तान कुछ कर पाए तो सारी दुनिया उससे आश्वासन लेगी।

दुनिया तो ठडीसे काप उठी है। अगर दुनियाको गर्मी आनेवाली है तो हिंदुस्तानसे ही। मेरी तो भगवानसे प्रार्थना है और आप लोगोसे भी कि हम इस तरहका बर्ताव रखे कि हमको गर्मी मिले और हमारी मार्फत सारी दुनियाको गर्मी मिले। सारे एशियाके लोग और अफ्रीकाके लोग हमारी ओर देख रहे है। उन सबको ऐसा लगे कि यहा अभी तो कुछ होगा तो फिर सारी दुनिया मानना शुरू कर देगी।

## : १२३ :

मौनवार २० अक्तूबर १९४७

(लिखित सदेश)

राजकुमारीने प्रार्थनाके बाद कल खबर दी कि एक मुस्लिम

भाई जो हेल्थ आफिसर थे, वह जब कामपर थे, उनको कत्ल किया गया। वे कहती हैं कि वह अफसर अच्छे थे, अपना फर्ज बराबर अदा करते थे। उनके पीछे विधवा है और बच्चे हैं। विधवाका क्रंदन यह है कि खूनीके हाथसे उनका और उनके बच्चोंका भी खून हो। उनका शौहर सब कुछ था, रोटी वही पैदा करते थे।

मैंने कल ही आपको कहा था कि जैसे देखनेमें आता है, ऐसे दिल्ली सचमुच शात नही हुई है। जबतक इस तरहके दु खद किस्से बनते है, हम देहलीकी ऊपर-ऊपरकी शातिपर खुशी नही मना सकते। यह तो कबरकी शाति है। जब लार्ड इर्विन, जो अब लार्ड हैलिफैक्स हैं, देहलीके वाइसराय थे, तब उन्होने ऊपर-ऊपरकी हिंदुस्तानकी शातिको कबरकी शाति कहा था। राजकुमारीने मुझे यह भी बताया कि कुरान शरीफके मुताबिक शवको दफन करनेके लिए काफी मुसलमान मित्र इकट्ठे करना भी कठिन हो गया था।

इस किस्सेको सुनकर मेरी तरह हरेक रहमदिल स्त्री-पुरुष काप उठेंगे। देहलीकी यह हालत! बहुमतके लिए अल्पमतसे डरना, चाहे वह कितना ही ताकतवर क्यो न हो, बुजदिलीकी पक्की निशानी है। मैं आशा रखता हू कि सत्तावाले गुनहगारोको ढूढ निकालेगे और उन्हें सजा देंगे। अगर यह आखिरी गुनाह है, तो मुझे कुछ कहना नही, अगरचे इस किस्मके गुनाह हमेशा शर्मनाक तो होते ही हैं। मगर मुझे बहुत डर है कि यह तो एक निशानी है, इससे दिल्लीकी जमीर[१]को जाग्रत होना चाहिए।

कबलके लिए पैसे आ ही रहे हैं। सब दाताओंका बहुत-बहुत आभार मानता हू। यह खुशीकी बात है कि किसीने भी यह नही कहा कि हमारा दान हिंदूको या मुसलमानको दिया जावे।

मुझे दु खसे एक और खतरेकी तरफ भी आपका ध्यान खीचना है। मैं नही जानता, यह खतरा सचमुच है या नही। एक अंग्रेज भाई

---

[१] आत्मा।

एक खुली चिट्ठीमें, जो जिनके साथ उसका संबंध हो उनके लिए है, लिखते है—

"हम कुछ लोग एक निर्जनसे दगे-फसादवाले इलाकेमे पड़े है। हम ब्रिटिश है और बरसोसे खुद तकलीफे सहन करके भी हमने इस मुल्कके लोगोंकी सेवा की है। हमे पता चला है कि खुफिया सदेश भेजा गया है कि हिंदुस्तानमे जितने अग्रेज बच गए है, उन्हें कत्ल कर दिया जावे। मैंने अखबारोमे प० नेहरूका वह वक्तव्य पढा है, जिसमे उन्होने कहा था कि सरकार हरेक वफादार शख्सके जान और मालकी हिफाजत करेगी। मगर देहातोमें पडे लोगोकी रक्षाका करीब-करीब कोई साधन नही। हमारी रक्षाका तो बिलकुल नही।"

इस खुली चिट्ठीके और भी कई हिस्से यहा दिए जा सकते है। मैंने खतरेसे आगाह होनेके लिए यहा काफी दे दिया है। हो सकता है कि यह झूठा डर ही हो। मगर ऐसी चीजोकी तरफ लापरवाही रखना ही अक्लमदी है। मुझे आशा तो यह है कि पत्र लिखनेवालेका डर सर्वथा निर्मूल होगा। मै उनके साथ सहमत हू कि दूर-दूर देहाती इलाकोमें पडे लोगोकी हिफाजत करनेका सरकारका वायदा कुछ मानी नहीं रखता। सरकार वह कर नही सकती, फिर चाहे सेना और पुलिस कितनी ही होशियार क्यो न हो। और हमारी सेना और पुलिस तो इतनी होशियार है भी नही। रक्षाका पहला साधन तो अपने हृदयमें पडा है। वह है ईश्वरमे अटल श्रद्धा। दूसरा है पडोसियोकी सद्भावना। अगर यह दो नही है तो अच्छा यही है कि हिंदुस्तानको जहा मेहमानोकी ऐसी बेकदरी है, छोड दिया जावे। मगर हालत इतनी खराब आज है नही। हम सबका फर्ज है कि जो अंग्रेज हिंदके वफादार नौकर बनकर रहना चाहें उनकी तरफ हम खास ध्यान दें। उनका किसी तरहका अपमान नहीं होना चाहिए। उनकी तरफ जरा भी लापरवाही नही होनी चाहिए। अगर हमें स्वमानवाला आजाद राष्ट्र बनकर दिखाना है तो प्रेसको और सामाजिक सस्थाओको इस बारेमें भी दूसरी कई चीजोकी तरह सब चौकन्ना रहना है। अगर हम अपने पड़ोसियोका स्वमान

नही रखते, चाहे वे गिनतीमे कितने ही थोडे क्यों न हों, तो हम खुद स्वमान रखनेका दावा नही कर सकते।

## : १२४ :

२१ अक्तूबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आज भी मैंने एक किस्सेकी बात सुन ली। उसमें वह कोई मुसलमान भाईका कत्ल नही हुआ, लेकिन शायद वह हिंदू था और वह तो कोई गवर्नमेंटकी नौकरीमें था। वह अपना काम कर रहा था। उसको भेजा गया था। वहा कोई होगा जिसके हाथमे बदूक पडी थी, तो उसने बदूकसे मार डाला। उसने कोई गुनाह किया था, ऐसा मैं नही सुनता हू। बस, उसके दिलमे आया कि यह आदमी ऐसा है कि हम जैसा कहते है ऐसा नही करता, इसलिए मार डाला। तो मैं इसमेंसे कहना तो इतना ही चाहता था कि यह जो हमारेमे आदत हो गई है और अभी तो शुरूकी आजादी है, और आजादी शुरू करते ही हमारे दिलमें ऐसा आ गया कि हमारे पास बंदूक है, इसलिए उसको मार डालो। जैसे एक आदमी उडते पक्षीको मारता है, उसका निशाना बनाता है। बडा शिकारी बना है जो उडते पक्षीका निशाना बनाता है। ऐसे ही एक इन्सान है, जो अमलदार है, उसको भी निशाना बना लेता है। उसको तो वहा काम करनेका हुक्म हुआ है। बस दिलमे आ गया कि मारो, तो फिर उसको मारो, ऐसे हम बन जाय तो हिंदुस्तानमे तो आखिर हमारा हाल बहुत ही बुरा होनेवाला है। कोई आदमी आरामसे नही रह सकता है। कहते है कि ऐसे तो जगली मुल्क कई पडे है, जिनमे कोई सही-सलामत रह नही सकता। क्योकि जिसके पास बदूक पड़ी है और वह खून करता है तो उसके दिलमे ऐसा नही कि इन्सानका खून कैसे करें। जो खून करता है वह जिंदा तो कर ही नही सकता। हकीकत तो यह है और कानून भी ऐसा है कि जिसने इन्सानको बनाया है, वह तो ले भी

जाय। वह तो ईश्वरका काम हुआ। जो आदमी जीवको बना नहीं सकता उसको लेनेका अधिकार कैसे आया? इन्सान जीवको बना थोडे ही सकता है। लेकिन हिंदूके दिलमे होता है मुसलमानका शिकार करना, मुसलमानके दिलमें होता है सिखका शिकार करो और सिखके दिलमे मुसलमानका। आज तो वह करे; लेकिन जिनका शिकार करना था वे जब चले जाएगे तो पीछे इन्सान आपस-आपसमें शिकार करेंगे, यही कानून दुनियाका चला आया है। वही कानून हमने शुरू कर दिया है। तो मैंने सोचा कि यह बात तो कर लू।

दूसरी बात यह है कि काफी लोगोको हकूमतने पकडा। उस जमानेमे हमारे हाथमें तो आजादी थी नही। आज भी मानो कि आजादी नही आई। जो आदमी पकडे, वे तो पकड लिए गए। बहुत कर सकते है तो वाइसराय साहबके पास अर्जी करो। वह कहे कि छोड़ना है तो छूटे। लेकिन वाइसराय साहब खुद नही छोड सकते। वे बाकानून काम करते थे। मार्शल ला चले तो भी बाकानून काम करते। उनके कानूनके अफसर रहते है तो जिसको वे कह देते कि छोडो तो छोड दिया जाता। बाकीको वे कहते कि तहकीकात करनेके बाद ही छोड़ सकता हू। यह तो ठीक कानूनी बात है। जिसको पुलिसने पकडा है और बाकानून पकडा है, उसको पीछे जो सजावार होगा तो सजा हो जायगी। लेकिन आज तो हमारे हाथमे हकूमत आ गई है। हमने तो हकूमत चलाई नही थी। कोई यह ठान ले कि मैं तो यहाका प्रधान हू और प्रधानकी हैसियतसे चलो, उसको छोड देते है, ऐसा हम अगर शुरू कर दें तो हमारा खात्मा हो जायगा। कभी लोगोको पकड लेते है, क्योकि वे खून करते है और पीछे छोड दिया, यह होना नही चाहिए। अभी भी मैं कह दूगा कि यह हकूमतका काम नही है कि एक आदमीको पकड़ लिया, बाकानून पकड़ा है, पुलिसने पकडा है, पीछे शिकायत आई या कि फरियाद आई तो हकूमत किस कारणसे और कैसे छोडे! हमने पुलिस बनाई है, कोर्ट बनाए है, प्रोसीक्यूटर[1] बनाए है, तो क्या वे

---

[1] अभियोग चलानेवाला।

सब फिजूल है ? मेरे दिलमें आया कि एक रिश्तेदार है, दोस्त है, उसके लिए सिफारिश आई तो मैंने उसको छोड दिया। वह कैसे छूट सकता है ? मेरे हिसाबसे तो छूट नही सकता। अगर बेगुनाह है तो उसको सजा हो ही नही सकती। इस तरहसे हमारा जो न्यायका दफ्तर है उसको साफ रखें। जज भी हमारे पास ऐसे होने चाहिए। जो पुलिस है और जो प्रोसीक्यूटर है वे खामखा केस चलाए और यह सोचें कि इतने केस तो कोर्टसे सजायाफ्ता हो ही, ऐसा नही होना चाहिए। जिनको सजा होनी चाहिए उनको ही हो। लेकिन वह सब कानूनमे कोर्टका काम रहा। माना कि एक आदमीने फरियाद की कि इसने मुझपर हमला किया, उसको पकडो। पकड लिया। क्या उसको छुडानेके लिए मै प्रधानके पास जाऊ ? प्रधान कहेगा कि कोर्टके पास जाओ। अगर फरियादी पीछे यह कहे कि पकडकर क्या करे, हमारी दुश्मनी बढेगी, उसको छोडो तो पीछे वह छूट जायगा। वह कहे कि मैंने फरियाद तो की, लेकिन उस बारेमे मै भुलावा देना नही चाहता कि मै उसको छोड़ देना चाहता हू। पीछे कोर्ट उसे छोड सकता है। पीछे प्रोसीक्यूटर रहा, उसको भी वह वही सम्मति दे सकता है। तो फिर यह हो सकता है। अगर कोई खूनी है और उसने खून किया है और उसको छुडाना है तो वह फरियादीके कहनेपर भी छूट नही सकता। वह छूटे तो हमारा काम नही चल सकता। मैंने तो वकालत की है और आदमी छुडाए है। तो कैसे ? जो खूनी है उसको कहना है और कह सकता है कि खून तो मैंने किया, लेकिन अब दिल साफ है, सजा न हो तो अच्छा है। जिस आदमीने फरियाद की है या शिकायत की है वह भी यह कहे कि उसको सजा नही होना चाहिए, हम तो उसके दोस्त बन गए है, गुस्सेमे आकर उसने खून कर दिया तो अब उसका खून करनेमे मुझको क्या फायदा। अब वह दोस्त बनता है, खिदमत भी कर सकता है, खुदापरस्त हो जायगा, ईश्वरकी भक्ति करेगा, तो फिर ईश्वर-भक्तिसे मै उसको महरूम[1] क्यो करू ? खूनी भी कोर्टसे कहेगा कि खून

---

[1] वंचित।

तो किया, गुनाह किया, लेकिन इस वक्त तो माफ करो, जो शिकायत करता है वह तो मुझको माफ करता है। पीछे हो सकता है कि मैं अच्छा काम करूंगा और सारी समाजकी सेवा करूंगा,] इसलिए मुझे छोड़ा जाय। वह तरीका है खूनीको छोडनेका। वह तरीका बाकानून हो सकता है। लेकिन हमारे हाथमें जो हकूमत आई है उसका गैरइस्तेमाल न करें। अगर आज हम गैर-उपयोग कर लेंगे तो सब कहेंगे कि इसको छोडो, उसको छोडो। बेचारा वह प्रधान भी क्या करेगा? गलतीसे किसीको छोडनेका हुक्म कर दिया। हुक्म तो कर सकता है; लेकिन वह करेगा नही। उसका भाई है, दोस्त है, पत्नी है, कुछ भी है अगर उसने गुनाह किया है तो भी वह यही कहेगा कि वह मेरा काम नही है, कोर्टके पास जाओ, प्रोसीक्यूटर है उसके पास जाओ, शिकायत करनेवाला है उसके पास जाओ। मेरे पास कुछ हो नही सकता। प्रधान जबतक ऐसा साफ नही होता तबतक हम अपना काम नही कर सकते।

मुझको, ऐसा ही कहो, एक हिदायत मिली है कि मुझे १५ मिनटसे ज्यादा कहना नही चाहिए। मैं इससे ज्यादा कहना भी नही चाहता। मैं काफी बोला हू। मुझको शौक तो है नही कि बोलता ही रहू। बोलना है तो कामसे बोलना। लेकिन मुझसे कहा गया है कि १५ मिनटसे ज्यादा न बोलू तो उससे लोगोका ज्यादा कल्याण होगा, लोग ज्यादा सुन लेंगे, तुम्हारी बात तो सुनना चाहते ही है। इससे मेरी आदत हो जायगी कि १५ मिनटसे आगे बढना ही नही।

## : १२५ :

### २२ अक्तूबर १९४७

भाइयो और बहनो,

पहले तो मैं आपको यह खबर दे दू कि कबल अभी भी आ रहे है। मुझको अभी पता लगा है कि दो सौ कबल आज आ गए। ऐसे ही आते रहते है और पैसे भी आते रहते है। मैं उम्मीद करता हू जो

वहुतसे आदमी पडे है, उनको ओढनेकी चीज मिल जायगी और मिलने-वाली है। यह अच्छा है कि इतनी उदारता हमारे लोगोमें रही है।

एक भाई मेरे पास आ गए थे। मै कोई हमेशा, हमेशा क्या, शायद ही उर्दू अखवार पढता हू। उर्दू पढ तो लेता हू, लेकिन उसको पढनेमे थोडी दिक्कत होती है। जव एक बच्चा बारह-खडी पढ लेता है और आहिस्ता-आहिस्ता पढने लगता है, ऐसा ही मेरा हाल समझो। बच्चेसे कुछ थोडा ज्यादा जानता हू, लेकिन शीघ्रतासे पढना हो तो नही पढ सकता हू। तो उस भाईने मुझको एक उर्दू अखवारमेंसे, इस तरहसे जो चीज आई है उसे पढकर सुनाया। उसको सुना और मुझको दु ख हुआ। सब चीजोका पूरा बयान तो मै यहा करना नही चाहता हू। उसमे लिखा है कि अब तो हमने तय कर लिया है—वह जो अखवार-नवीस है, वह एडीटर साहब, उसने अपने दिलमें तय कर लिया है, लेकिन उम्मीद है कि सारे हिंदुस्तानने ऐसा तय नही किया है, कि सब-के-सब मुसलमान पाकिस्तान चले जाए, जो रहता है उसको कट जाना है। या तो उसको काटो या पाकिस्तान चले जाओ। यह अखवार या एडीटर साहब जो लिखता है अगर वह सच्ची पडे तो यह बडी शर्मकी बात है। उसकी कलमसे ऐसी चीज नही निकलनी चाहिए। ऐसे अखवार तो निकलने ही नही चाहिए। अगर वह सचमुच ऐसा मानते है तो वे लोगोको अपनी राय बता सकते है। लेकिन जब ऐसा वे कहते है तो वह डूडी पीटकर कहनेकी-सी बात होगी कि या तो वे पाकिस्तान चले जाए या उनको मारो। तो कल मैने कह दिया था कि जब वे पाकिस्तान चले जाएगे तो पीछे क्या करोगे? आपस-आपसमे लडोगे? एक सज्जनने तो मुझको कह भी दिया कि आपस-आपसमे लडाई शुरू भी हो गई। यह लडाई तो आपस-आपसमे होनी ही है। जब एक दफा खूनका स्वाद ले लिया तो पीछे वह छूट नही सकता। वही हमारा हाल होनेवाला है। लेकिन अखवार-नवीसने ऐसा कह दिया और उसने छापा है तो ठीक ही है, हमारे लोग तो ऐसे अखवारके पीछे पागल बन गए है। गीताजीको छोडो, बाइबिल-को छोड़ो, कुरान-शरीफको छोडो, लेकिन अखवार ही हमारी गीताजी है

और उसमें जो आता है उसको हम ब्रह्म-वाक्य मान लेते हैं। लोग जो इस तरहसे पागल बन गए है और अखबार उस पागलपनका लाभ उठाकर ऐसा छापे तो यह बहुत बुरी बात है। मैं इस बारेमें इससे अधिक नही कहना चाहता।

दूसरी बात तो यह है कि हर जगहसे शिकायतें आ रही है। यह ठीक था कि अग्रेजी जमानेमे तो जो देशी रियासते थी वे अपने दिलमे आए वैसा करती थी। थोड़ा-सा अकुश तो अग्रेजी सल्तनत रखती थी। उसको तो रखना ही था, क्योंकि उसको सल्तनत चलानी थी। आज तो वह चली गई है। हा, यह तो है कि आज सरदार पटेल है—उनके हाथमे उनका महकमा[1] है, इसलिए वह तो कुछ करे? लेकिन वे बेचारे क्या कर सकते है? उनकी तो अपनी जबान पडी है—हिंदुस्तानकी सेवा कर ली है, इसलिए सरदार बने है। लेकिन उनके पास तलवार नही, बदूक नही, लश्कर नही। वे खुद थोड़े लश्करी है, वे कमाडर भी नही है कि उनका हुक्म चले। जबतक सिपाही लोग समझते है कि वे तो हिंदुस्तानका नमक खाते है और उनके सामने वे हाकिम है—मतलब यह कि वे बडे सेवक है, ऐसा मानकर वे चले तो काम बड़ा सीधा-सीधा चले।

आज रियासतवाले कहते है कि हमने प्रवेश-पत्रपर दस्तखत तो कर दिए, उससे क्या हुआ? इससे क्या हमारे पाससे कुछ छीन थोडे ही लिया? हमारे पास भी तो सिपाही है। जब अग्रेजी सल्तनत थी तब वे खिलौने-से थे, लेकिन अब थोड़े ही है? देशी रियासतें जो कुछ करना चाहती है, कर सकती है। मै खुद भी तो देशी रियासतका हू। इसलिए मै जानता हू कि वे क्या कर सकती है, कितना भला कर सकती है। मै देशी रियासतोके राजाओसे बडे अदबसे कहूगा कि अगर आप इतना अहकार रखेगे कि जो रैयत पड़ी है, उसको मार सकते है, काट सकते है, तो वे रह नही सकते है। मैंने तो कह दिया है कि जो राजा लोग है उनका स्थान है अगर वे रैयतके ट्रस्टी बन जाते है। अगर वे रैयतका

[1] विभाग।

हाकिम वनकर रहना चाहते है, उसको चूसना चाहते है और दवाना चाहते है, तो उनका कोई स्थान नही रह सकता, इसमें मुझे कुछ भी शक नही है। हिंदुस्तानका क्या हाल होगा, वह तो ईश्वर ही वेहतर जानता है। जो राजा लोग पडे है उनके पास तो कोई चारा नही है। वे कभी हिंदुस्तानका राज चला नही सकते। पीछे चाहे हम गुलाम ही वन जाए तो हम वनेंगे। तो क्या राजा लोग भी गुलाम वनेंगे ? वह जमाना चला गया। वह एक युग था। अग्रेजी सल्तनत थी, उसने सोचा कि जो यहा राजा लोग है वे भी अच्छे है, उनके मार्फत राज चलाए। वह तो उन्होने अपना स्वार्थ समझकर ही किया। तो फिर उसमे उसका दोष क्या निकालना ? लेकिन आज हम ऐसे कमनसीव है कि हम दोनो पागल वनें और आपस-आपसमें लडें, उनमेंसे कोई एक जीते या दोनोको कोई दूसरी या तीसरी ताकत या दो-चार ताकते मिल-जुलकर हिंदुस्तानको खा जायगी। तो फिर उसके साथ ही राजा लोगो-को भी खा जायगे। अगर वे हिंदुस्तानके वफादार रहते है और रैयतके नौकर वनते है तो खैर है। मै तो रैयतसे भी कहूगा कि वह वुजदिल क्यो वने। अगर राजाओके पास हथियार है और वे वेहथियार है तो क्या? हम भी तो सल्तनतके सामने लडते थे, हम भी वेहथियार थे। कोई छुपकर भी हथियार रखे हो, ऐसा नही था। अगर होते तो मुझको तो इसका इल्म होना ही चाहिए था। लेकिन ऐसा नही था। करोडों लोगोने उसका हृदयवलसे सामना किया। हमने सोचा कि अगर काटेंगे तो एक लाखको काटेंगे, दो लाखको काटेंगे, तीन लाखको काटेंगे, आखिर कितनोको काटेंगे, हम ४० करोडकी आवादी है, काटते-काटते उसके हाथ काप जायगे। ऐसी जो रैयत पडी है, उसको आजादी तो मिलनी ही चाहिए थी और वह मिली। उस आजादीका हम क्या करते है, यह अलग वात है।

मै तो कहूगा कि राजा लोगोंको पागल नही वनना चाहिए। उनको समझना चाहिए कि वे स्वेच्छाचारी नही वन सकते, व्यभिचारी नही वन सकते। वे शरावमें सारा दिन पड़े रहें, ऐसा नही हो सकता। वह तो मैने आप लोगोंको और आपकी मार्फत राजा लोगोको कह दिया।

एक वक्त तो मैंने कह दिया था कि अब दशहरा आ रहा है और पीछे एक दिन छोडकर बकरीद आ रही है। दोनो करीब-करीब एक साथ मिलते है। हम हिंदू और मुसलमान दोनो भयभीत रहते है, हमेशा रहते है, आज तो ज्यादा भयभीत है। क्योकि आज तो एक-तरफा ही हो सकता है। अगर हिंदू पागल बन जाय और समझे कि मौका मिल गया—क्योकि बकरीद है, तो मुसलमानोको काटो। हमारा दशहरा भी हो गया है। दशहरा क्या है ? रामजीकी जीत मनानेके लिए ही दशहरा है। पीछे कहते है कि एकादशी है, उस दिन तो रामका भरतके साथ मिलाप होगा। उसमे तो हमे सयम सीखना है, भल-मनसाहत सीखना है, धर्म क्या चीज है उसको सीखना है। अगर वह हम सीख लें तो हम दशहरा सच्चे अर्थमे मनाते है। दशहरेके दिन दुर्गा-पूजा भी होती है। वह क्या चीज है ? हम सब खूनके प्यासे रहें, वह दुर्गाका अर्थ नही है। दुर्गाका अर्थ यह है कि वह एक बडी शक्ति पडी है, उसकी उपासना करके हम ऊचे चढ सकते है।

इसी तरहसे दशहराका यह मतलब नही है कि हम सारे दिनभर रूप, रग, राग उडाए। उसको हमारे गुजरातमे नवरात्रि कहते है। जब हम बच्चे थे तब मेरी मा कहती थी कि नवरात्रिको खाना नही खाना चाहिए। अगर खाना ही है तो फल खाओ, ज्यादा-से-ज्यादा दूध पीओ, लेकिन अनाज न खाओ। अगर सचमुच पूरा-का-पूरा उपवास करो तो सबसे अच्छा है। मेरी मा तो बडी उपवास करनेवाली थी, जिसका मै तो कोई मुकाबला नही कर सकता था। मेरे बडे भाई तो मुकाबला कर ही नही सकते थे—मैं थोड़ा-सा मुकाबला करता था। लेकिन उसमें उपवास करनेकी जो शक्ति थी उसके सामने मैं एक खिलौना हूं, बच्चा हू। दशहराको हम इस तरहसे मनाते है। हा, पीछे जो दिवाली है उसमे खा-पी सकते है, थोडा मौज कर सकते है, लेकिन दशहराको बिलकुल नही। यह जो नवरात्रिका अर्थ है, क्या उसको छोडकर हम काट-कूट करेंगे ? पीछे बकरीद है। जो मुसलमान भाई है उनको हमने डरा दिया है। उनमे हमारे अच्छे भाई है। जो राष्ट्रवादी भाई थे वे भी आज परेशान पडे है। वे भी भागते है, लेकिन कहा जाय ?

हम ऐसे बेरहम बन जाय कि उनको भी भगा देगे। तब शाति होगी? वह शाति कैसे हो सकती है?

क्या ४ या ३॥। करोड मुसलमानोको नाश करोगे या उन्हे भगा दोगे या हिंदू बना लोगे? अरे, वह भी तो नाश ही करना हुआ। अगर तुमपर भी ऐसी जबरदस्ती हो तो क्या तुम सब मुसलमान बन जाओगे? तुमसे कहा जाय कि कलमा पढले हो या नही, अगर नही तो मार डाले जाओगे। मै तो पहला आदमी होऊगा कि यह कहूगा कि आप पहले हमारा सबका गला काट लो, पीछे बात करो। इतनी तो हमारेमे हिम्मत होनी ही चाहिए। इस तरह मुसलमानोसे हिंदू बननेको कहना बेकार बात है। मुझको तो ऐसा हिंदू नही चाहिए। ऐसे हिंदूसे क्या मै हिंदू-धर्मको बचा सकता हू। मुझको तो ऐसा अच्छा हिंदू चाहिए जो सयम रखे। मै ऐसा घमडी और जालिम क्यो बनू? जालिम बनना और धर्मका पालन करना दोनो चीज हो नही सकती। तो ये जो दो दिन है उनमे हम डरे नही, खामोशीसे रहे और हमसे जो गुनाह हो गए है उनका हम प्रायश्चित्त या पश्चात्ताप करें और भाई-भाई बनकर भेट करे। इतना अगर आप कर सकते है तो ईदके बाद मुझको यहा आप नही पाओगे।

एक हिंदू भाईने मुझसे पूछा कि पजाब जाओगे? मैने पूछा कि पजाब भेजोगे? हा, जाऊगा तो उनसे भी लडूगा। मेरी लडाई कैसी होती है यह तो आप जानते ही है। उनसे पेट भरकर बाते करुगा। लाखो आदमी जो वहासे यहा आते है, हिंदू और सिख है वे अपनी जगहपर क्यो नही बैठ सकते? जबतक यह नही होगा मुझको शाति नही मिलेगी। तो पीछे मुसलमानोको यहा लाना है। तो आप कहेगे कि यह तो होनेवाला नही है। मै कहूगा कि वह हो सकता है, लेकिन उसकी कुजी तो दिल्लीमे पडी है। उम्मीद तो ऐसी है कि जो दो दिन आते है उनमे हम बता दे कि हम हिंदू-मुसलमान दोनों शरीफ है और दोनो मिल-जुलकर रहनेवाले है।

## : १२६ :

### २३ अक्तूबर १९४७

भाइयो और बहनो,

दो भाई लिखते हैं, "हम शरणार्थी हैं। अपने मित्रोकी शरणमे रह रहे हैं। सर्दीके कारण हम बहुत दुखी हैं। कृपा कर हमें बताइए कि कंबल तथा रजाई कहासे प्राप्त करे। क्या ऐसे शरणार्थियोंके लिए कोई प्रबंध है?" वे रावलपिंडीके हैं ऐसा उन्होने लिखा है। अब इस तरहसे तो और काफी लोग पड़े होंगे। जो रजाइया और कंबल इकट्ठे किये जा रहे है वे तो सचमुच उन लोगोके लिए है जो कैंपोमें पड़े हैं और जिनके पास यह तो जाहिर ही है कि कोई चीज ओढनेको नही है। उनके लिए यह सब प्रबंध हो रहा है। काफी बाटा गया है, और भी बाटा जायगा। हजारोकी तादादमें ऐसे लोग पडे है, कोई चंद हो, ऐसा थोडे ही है। हो सकता है कि लाखो भी हों जिनको ये चीजें मिलनी चाहिए। एक शिविर तो, जो कुरुक्षेत्रमें है, मरकजी[1] सरकारने अपने प्रबंधमे ले लिया है। वहा काफी तादादमें लोग पडे है और रोज नए आते रहते हैं।

दिल्ली शहरमे भी ऐसे शिविर हैं। तीन तो हैं कम-से-कम, शायद चार हैं। पूर्वी पंजाबमें भी पडे है। वहा भी उनको ये चीजें मिलनी चाहिए, जो यहाके लोगोको मिले। वे भी तो शरणार्थी हैं। लेकिन जो शरणार्थी मित्रोके यहा रहते है उनको ओढनेके लिए कुछ देना, यह तो मित्रोका काम रहता है, ऐसा मेरा खयाल है। लेकिन हो सकता है कि जो लोग बेचारे अपने घरपर रखते है वे खुद अपने लिए मुसीबतसे रजाई या कंबलका प्रबंध कर सके, तो उनको, जिनको वे रक्षा देते हैं, कहासे दे? यह नही हो सकता, ऐसा मैं नही कहता। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि जिनको रजाईकी दरकार है उसीको दे दी जाय तो सबको पहुच नही सकती; क्योंकि ऐसे मागनेवाले सब शरीफ ही हैं, ऐसा मानकर मैं नही चलता। जिनको चाहिए ही

---

[1] केंद्रीय।

इसलिए माग लेते है, ऐसी बात नही है। मैंने बहुत-से शिविरोंको देखा है। ऐसा काम मै करता ही आया हू। जब जनूबी[1] अफ्रीकामें था तो वहा भी मुझे ऐसा ही करना पडा था, इसलिए मै तो जानता हू कि इस काममे कितनी मुसीबत है। ये जो भाई लिखते है उनकी तो कोई शिकायत मेरे पास नही है; उनके बारेमे तो मुझे कुछ कहना नही है। लेकिन जो सचमुच गरीब है और जिनके पास कुछ है ही नही, उनको पहुचना ही चाहिए, इसमें मुझे कुछ भी शिकायत नही है। लेकिन मुझे ऐसे आदमियोके बारेमें पता कैसे चलेगा? पता लेनेकी कोशिश तो करता हू। बिलकुल ही खबर नही लेता, ऐसा तो है नही और न मै यह मान लेता हू कि मुझे कोई धोखा देगा नही, इसलिए जो मागे ले ले। क्या ये भाई कुछ ऐसा बता सकेंगे? मै तो भेज नही सकता, लेकिन मेरा खयाल है कि कहीसे भी उन्हें मिल जायगा। मेरे पास तो कबल है, नही है ऐसी बात नही है। ये सब कबल तो कुरुक्षेत्रमे भेजनेके लिए पडे है। दूसरे भी तो जमा कर रहे है, वे भेज सकते है।

अभी यहा रोज लोग आते है। वे बिडला-मदिरमें जाते है, जिससे वह भर गया है। वहा कोई जगह ही नही है, जितना ले सकते है उतना लेते है। उनका तो काम ही रहा है दूसरोंके दु खमे हिस्सा लेना। वहा ।ास्वा ।ा पडे है, जो रात-दिन वही काम करते है। लोगोके पास जाते है, वहासे कबल लाते है, खाना लाते है और उनको देते है। लेकिन जब रोज लोग आते है तब उनको भी थकान होती है। कहातक उनको देते रहेंगे? यही हमारा हाल है। तो इन लोगोको मै इतना ही कहूंगा कि जो लोग रहते है वे अपने लिए तो कुछ करे। यह तो ठीक है कि जब सबके लिए होता है तो उनके लिए भी होना चाहिए। सबके लिए एक ही कानून हो सकता है। अगर एकके लिए एक हो और दूसरेके लिए दूसरा, तो फिर हम बडे पैमानेपर काम चला नही सकते। लेकिन हमें तो बडे पैमानेपर काम करना है। इसीलिए इसको बतानेमे मैंने इतना वक्त ले लिया। अब जाडा तो दिन-प्रति-दिन

[1] दक्षिणी।

बढता ही जायगा, उसको बर्दाश्त कैसे करेंगे ? मैं नही चाहता कि एक दिनके लिए भी किसीको बर्दाश्त करना पडे। एक तो यह बात है।

दूसरी बात यह है कि आज भी मैंने सुन लिया है कि चूकि काफी दूकाने खुल गई है, तो एक बेचारे गरीब मुसलमानके भी दिलमे आया कि मै भी अपनी दूकान खोलू। आज वह चला गया था अपनी दूकान खोलने। ऐनकका वह काम करता था। ऐसे आदमी तो मुश्किलसे शायद ही दिनमें दो-चार रुपए कमाते होगे। मैं नही जानता कि वह कौन था ? उसका नाम भी मुझे पता नही है। जब वह दूकान खोलने जा रहा था तो उसको काट डाला। यह सारी दिल्लीके लिए शर्मकी बात है। किसीने काटा होगा, एकने या दोने ? लेकिन दो आदमी कैसे काट सकते है ? जो मिलिटरी है, पुलिस है, वहा कहा थी ? दूकान कोई कोनेमे तो थी नही ? रात्रि भी नही थी। कोई खुफिया तौरसे तो दूकान होती नही है। सब आदमी आते-जाते रहते है। इनमेसे किसीने रोकनेकी भी चेष्टा नही की ? उनको काटनेकी हिम्मत कैसे हो गई ? लोग इस बारेमे बेपरवाह रहते है कि जाने दो, एक मुसलमानको मार दिया तो अच्छा ही है। जब वे हिंदूको मारते है, सिखको मारते हैं तो हम मुसलमानको मारे। ऐसा बदला लेनेका ख्याल दिलमे पैदा हो जाता है। इसको रोकना चाहिए। अगर न रोके तो दिल्ली निकम्मी होनेवाली है। दिल्लीमे क्या आप ऐसा मानते है कि यहा हिंदू और सिख ही रहेंगे ? अगर ऐसा है तो फिर दिल्ली मिट जायगी। उसको सारी दुनिया बर्दाश्त नही करनेवाली है। दिल्लीके पीछे एक बड़ा लंबा-चौड़ा इतिहास पड़ा है। उस इतिहासको मिटानेकी चेष्टा करना भी पागलपन होगा।

आज मुझे, जो कुष्ट रोगसे पीड़ित है, उनके बारेमे कहना है। हिंदुस्तानमे भी ऐसे काफी लोग पडे है। वे रास्तेमे दिखाई नही पडते है, क्योंकि उनको देखनेसे घृणा पैदा हो जाती है। जिनको कोढ है वे सचमुच पापी है और जो दूसरे मरीज है वे पापी नही है, ऐसी बात नही है। यह तो ठीक है कि जिसको मर्ज है उसने कोई-न-कोई दोष तो किया ही है। जब मुझको खांसी हो गई थी तो मै समझता हूं कि

कुछ-न-कुछ दोष तो मैंने किया ही होगा। दोषको मैं पाप मानता ही हूं। खासी तो हर एकको ही हो जाती है, उसमें कोई दोष नही है यह मैं माननेवाला नही हूं। तो मैं जो मेरे लिए कानून बनाऊं वही सारी दुनियाके लिए है। कोढ चमड़ीका रोग है। वह कैसे हो जाता है उसके लिए काफी कथा है। मैं तो मानता हूं कि यह शरीरका रोग होता है। और कोढ और खासीमें कोई भेद नही है। जिसको कोढ होता है उसको थोडा दर्द ज्यादा होता है; लेकिन अगूठा चला जाता है, हाथ चला जाता है, नाक चला जाता है, ऐसा बदसूरत तो बन जाता है। लेकिन वह बदसूरत है इसलिए बडा दर्द हो, ऐसी बात नही है। मैं तो कहूंगा कि इससे ज्यादा नफरत होनी चाहिए उससे, जो मन मलीन रखता है। जिसका शरीर मलीन है, क्योकि वह भी मनकी मलीनतासे ही होता है, और साथ ही जिसकी दृष्टिमे गदगी रहती है, जो भगवानका भजन न सुनकर दुष्टोका इतिहास सुनता है, वही सच्चा कोढी है। ऐसे मर्जवाले तो बहुत पडे है, क्योकि हम सब ऐसे होते है, इसलिए कौन परवाह करता है। लेकिन चूकि कोढ तो सबको नही होता है इसलिए हमारे दिलमे उनके बारेमे, जिनको यह होता है, नफरत होती है। हमारे पास काफी ईसाई लोग थे। हिंदुस्तानमें जितने कोढ-अस्पताल थे वे सब ईसाई लोगोंके हाथमे थे और आज भी पडे हैं। वे लोग परोपकारकी दृष्टिसे उनकी सेवा करते है। आज हिंदुस्तानमे भी ऐसे लोग पैदा हो गए है जो परोपकारकी दृष्टिसे उनमे काम करते है। एक परोपकारी पुरुष, मैं तो उनको महात्मा ही कहूंगा, मनोहर दीवान हैं। वे वर्धामे रहते है और विनोबा भावेके बडे शिष्य है। विनोबाजी तो बहुत बडे आदमी है। तो मनोहरके दिलमें हुआ कि चलो, कुछ-न-कुछ करें। तो उन्होने कोढियोकी सेवा करनेका काम पसद किया। विनोबाने भी उनको ऐसा करनेके लिए प्रेरणा दी। वे निर्लेप रहते है। पैसेकी उनको दरकार नही। वे डाक्टर तो नही है, लेकिन उन्होने उसका काफी अभ्यास कर लिया है। काफी लोग उनकी मदद लेते है। अभी वर्धामे एक छोटे पैमानेपर, एक समितिकी मारफत एक सम्मेलन होनेवाला है। जो लोग इस काममे लगे हुए है वे ३० तारीखको

वहा मिलेंगे। डा० सुशीला नायर भी उसी कामके लिए जानेवाली है। यो तो जाना था डा० जीवराजको, राजकुमारीको भी, उसको पता भी है, क्योंकि वह मेरे साथ सेवाग्राममें रही है। लेकिन वे तो यहा काममें फसी हैं, इसलिए जा नही सकती। उनसे कोई आग्रह तो कर नही सकता कि आपको जाना ही होगा। और आग्रह करे कौन ? सेवाका काम है, जिसको जाना है, वे जाय। लेकिन उनको फुरसत नही है, इसलिए नहीं जायगे। एक और भाई है जिनका नाम जगदीशन् है। उनको खुद भी कोढ हो गया था। वे मद्रासके रहनेवाले हैं। वे बड़े सज्जन और विद्वान पुरुष हैं। वे श्रीनिवास शास्त्रीजीके भक्त थे। तो उन्होंने अपना जीवन इस काममे लगा दिया है। वे भी आनेवाले हैं, और भी जो दूसरे हैं वे भी जमा हो जायगे। वह करुण कथा है, रसिक भी है और उसमे काफी लोग काम भी करते है। कलकत्तामे भी एक बहुत बड़ा कोढ-अस्पताल है, जो बडे पैमानेपर काम करता है। परोपकारकी दृष्टिसे सब काम होता है और आहिस्ता-आहिस्ता बढ रहा है। जब मै कलकत्तेमे था तब मुझको ले गए और कहा कि थोडा-सा लिख तो दो। लेकिन मै यहा आनेकी पैरवी[1] कर रहा था। और भी हिंदुस्तानमे इधर-उधर काफी कोढ-अस्पताल पडे हुए हैं, लेकिन जितने पैमानेपर यह काम होना चाहिए उतने पैमानेपर नही हो रहा है। मै यह नही कहता कि सबको इसमें दिलचस्पी लेना चाहिए, लेकिन हम सुनें तो सही कि जब हम ऐसे खाली पडे है तो इस तरहके कामोमें रहे। क्या हम एक-दूसरेके नाश करनेमे ही फसे रहेगे ? मै तो कहूगा कि यह सबसे बड़ी व्याधि है, सबसे बडा कोढ है। हम अच्छे कामोको भूलते हैं और हम आपस-आपसमे मर जाते है। हिंदू मुसलमानको मारता है, मुसलमान हिंदू व सिखको मारता है। हम कबतक आपस-आपसमें एक दूसरेको मारते रहेंगे ? क्या ही बेहतर हो कि हमारे पास जो समय है उसका सदुपयोग करे और उसको ऐसे कामोंमें दे दें, जिससे प्रेमभाव कायम हो।

---

[1] कोशिश।

## : १२७ :

### २४ अक्तूबर १९४७

भाइयो और बहनो,

अखबारोमे कुछ चार-पाच रोज पहले शायद यह खबर आई थी कि यहा जो मजदूर-सम्मेलन होनेवाला है उसमे एशियाके काफी लोग आएगे। वह सम्मेलन २७ तारीखको होगा। अखबारोमे यह भी लिखा था कि मै उसकी कारंवाई शुरू करनेके लिए जाऊगा। मुझको तो इसका पता ही नही था और किसीसे मैने शायद ऐसा कहा भी नही। एक अखबारनवीस था। मैने उसको कहा कि यह खबर कहासे मिली है? उसका विरोध कीजिए और कहिए, ऐसी बात नही है। मजदूर-मत्री श्रीजगजीवन राम आए थे। मैने उनसे भी कहा। उन्होने कहा कि आपको तो आना ही है; लेकिन उस दिन तो सोमवार है, तो भी जब आप यहा है तब पूछनेकी कोई बात ही नही रहती थी। अखबारोमे तो ऐसा ही है। मैने जवाहरलालजीसे भी कहा कि मैने शायद गलतीसे कह दिया हो, तो उनको बडा आश्चर्य हुआ। मुझको तो वहां जानेकी कोई जरूरत है नही, क्योकि मै और किसी कामका तो रहा नही। आज तो मेरा एक ही काम है और वही काफीसे ज्यादा है। ऐसा मै महसूस करता हू कि अगर वह सफल हो जाता है तो वह मेरा जीवनभरका कार्य है। हम सब एक मुल्कके है और सब एक बनकर रहें। यहा जो हिंदू-सिक्ख-मुसलमान, पारसी और ईसाई है वे अगर सब मिलकर रहे तो मुझे और किसी बातकी परवाह नही। वे सब हिंदुस्तानके है, उनको यही रहना है, फिर वे लडाईमे क्यो पडे?

जो आदमी बचपनसे ऐसा स्वप्न देखता आया है उसको इससे आघात पहुचता है। उसने आजादीके लिए मेहनत की और आजादी मिल भी गई; लेकिन उसके साथ यह जहर फैल गया। यह मुझे बुरा लगता है। इससे बुरा काम और क्या हो सकता है? मुझे इस बुरे कामको रोकना है। प्रयत्न मेरा काम है। अगर वह होना है तो हो, नही होना है तो न हो। भजनमे आया है 'कोई निंदो कोई वंदों',

वह तो सब एक ही है; क्योकि वह तो रामचद्रका भजन करना है, और सब उसको अर्पित कर दिया है; लेकिन प्रयत्न तो करना चाहिए, तब फिर उसमे सारा जीवन व्यतीत करना है।

हमेशाकी तरह आज भी कबल आ गए है। जिनको भेजना चाहिए उनको भेजा जाता है। जरूरत बहुत है, इतने कबल चाहिए कि सबको कैसे पहुचाए जाय? सबको पहुचाना बहुत बड़ा काम है। ईश्वर सबको पहुंचा देगा। जो निराधार है और करोड़पतिसे भिखारी बन गए है, क्या उनको नगा और भूखा रहना पडेगा? अगर हम सच्चे है तो ईश्वर खाना देगा और अगर हम नालायक बने रहते है तो भूखा और नगा रहना पडेगा।

जिनको कुष्ट रोग रहता है उनके बारेमें मैंने कल एक बात कही थी। जगदीशनका भी नाम लिया था। वे बड़े विद्वान् आदमी है। उनको यह रोग था। वह बिलकुल नाबूद[1] तो नही हुआ है, लेकिन काफी अंकुशमे आ गया है। वे इसमे काफी काम करते है, काफी दिलचस्पी लेते है, उनसे मिलते-जुलते है। मेहनती तो जबरदस्त है ही। वे मद्रासमे रहते है, वर्धामे नही, लेकिन कई दिनोंसे वर्धामें है। उन्होंने इस बारेमे मुझसे खत-किताबत की थी। उनका पत्र मिले कई दिन हो गए। उसको आज मैंने पढ लिया। मैंने उसमें एक बात देखी है, जिसे मै यहा साफ कर देना चाहता हू। वे कहते है कि जिसको कुष्ट रोग हो गया है उसको कोढी मत कहो। लोग उससे बुरा अर्थ निकाल लेते है—उसको वे अछूतसे भी बदतर मान लेते है। अछूत बदी थोड़ा करता है। उनको छूनेसे हम पतित हो जाते है, ऐसा हम मान लेते है। मै कह चुका हू कि सच्चा कोढ तो मनकी मलिनता है। अपने भाइयोंसे घृणा करना, किसी जाति या वर्गके लोगोको बुरा कहना, रोगी मनका चिन्ह है, और वह कोढसे भी बुरा है। ऐसे लोग उससे भी बदतर है, तो फिर ऐसा नाम क्यो लेना चाहिए? कुष्ट रोगसे पीड़ित कहो, लेकिन कोढी मत कहो। अगर बुरा कहनेसे बुरा बन जाय

---

[1] नष्ट।

तो नही कहना चाहिए। गुलाबके पुष्पको आप चाहे किसी भी नामसे कहे, लेकिन उसमे जो सुवास या सुगध भरी है उसको वह कभी नही छोडेगा, बुरे-से-बुरा नाम दो तो भी नही। यदि यह जगदीशन ऐसा कहता है, ठीक है, पर जो छूतकी बीमारी है वह कोई एक तो है नही। किसीको खुजली हो जाती है, उसको जो स्पर्श करेगा उसको खुजली हो जायगी। सर्दी है, हैजा है, प्लेग है, इसी तरहसे कुष्ट रोग है। फिर उसके प्रति घृणा क्या करनी? एक आदमी जब सचमुच कुष्ट रोगी बन जाता है तो लोग उसका तिरस्कार करते है। वे कहते है कि वह तो कमजात है। कमजात तो वे हुए जो तिरस्कार करते है। यह घृणा करनेका जो कोढ है वह निकल जाना चाहिए। इसलिए मैंने सोचा कि आज भी मै इस बातको तो दोहरा दू।

३० तारीखको वर्धामें जो सम्मेलन होनेवाला है उसमे राजकुमारी जानेवाली थी, जाना चाहिए, डाक्टर जीवराज भी जानेवाले थे, जाना चाहिए, लेकिन जाए कैसे? वे अपने काममे गिरफ्तार है। उसको छोडकर एक दिनके लिए तो जा सकते है। लेकिन उनको दो दिन लगेगे, क्योकि जिस दिन जायगे उस दिन तो लौट नही सकते। वर्धा हवाई जहाज तो जाता नही। नागपुर जाता है। वे दो दिनमे वापस आ सकते है।

हा, एक और जरूरी बात मै आपको कहना चाहता हू। ब्रजकिशनजीने तो कह दिया, कल मै जेलमे जाकर प्रार्थना करूगा। वहाके लोग चाहते है कि मै वहा प्रार्थना करू। मुझको अच्छा लगेगा और आपको भी अच्छा लगेगा, लेकिन आप लोग वहा नही जा सकेगे, वह तो कैदखाना है। वहा कैदी ही जा सकते है। मुझको तो वे बुलाते है, इसलिए जाता हू। परसो हम यहा फिर मिलनेवाले है।

## : १२८ :

### २५ अक्तूबर १९४७

भाइयो और बहनो,

मुझको जब इस जेलमे कैदियोके सामने प्रार्थना करनेका निमत्रण मिला और प्रार्थनाके बाद जो कहता हू वह कहनेको भी, तो मै राजी हुआ और मुझको वह निमत्रण बहुत मीठा लगा। शायद सब कैदियोको तो पता नही होगा कि मै खुद बहुत पुराना कैदी हू। जनूबी[1] अफ्रीकासे। और यह मै कह सकता हू कि मेरी निगाहमें तो मै बेगुनाह था, लेकिन सल्तनतके नजदीक तो बेगुनाह नही कहा जा सकता था। कई किस्मकी जेल मुझको मिली है और कई जेले मैंने देखी है। जनूबी अफ्रीकाकी जेल तो बहुत कडी रहती है, और पीछे हिंदी[2]की तो वहा कोई गिनती ही नही। वह तो चाहे बैरिस्टर ही क्यो न हो, तो भी क्या हुआ? सब-के-सब कुली ही माने जाते थे। तो वहा तो एक तरफ हिंदी, दूसरी तरफ वहाके हब्शी लोग और पीछे अंग्रेज, सब अलग-अलग थे। जब सत्याग्रही कैदी चले, क्योकि सत्याग्रहमें एक-दो तो रहते नही, हजारोकी तादादमे भी चले जाय, और पहले पहल जब जेल हुई तो हम डेढ़-सौ ही थे। शुरूमे तो ऐसा नही था; मैं था और चार-पाच दूसरे थे। पीछे जब सत्याग्रहका सिलसिला शुरू हुआ तो हम डेढ-सौ हो गए और जहा हब्शी भरे जाते हैं उसी जगह हम लोग भर दिये गए। इसलिए वहा तो हम कुछ तग आ गए थे। तो मै वह बताता हू कि वहांकी जेल कैसी रहती है और कैसी सख्तीसे वहां काम लिया जाता है। यहां तो हम बस एक तूफान-सा मचा देते है कि हम तो राजनैतिक कैदी है और दूसरे अखलाकी[3]। जनूबी अफ्रीकामें तो कुछ ऐसा फर्क रहता नही है। वहा सब अखलाकी कैदी माने जाते है। मैं तो यह मानता नही कि कैदियोके बीचमे जो राजनैतिक कैदी हैं, वह तो अच्छा है

---

[1] दक्षिणी [2] हिंदुस्तानी [3] गैर-राजनैतिक।

और जो अखलाकी कैदी है वह बुरा है। कानूनके सामने तो जिसने कानून भग किया है वे सब एक ही तरहके अपराधी है। तो पीछे उन अपराधियोमे फर्क क्या करना? लेकिन यहां तो हम राजनैतिक कैदी बने और उसमें भी ए, बी और सी के कैदी बने, तो वह इसलिए न कि हमारा एक बहुत जबर्दस्त आदोलन था। करोडो-की तादादमे हम पडे है और उनमे बडे-बडे लोग भी है। लेकिन वहा बेचारे कौन बडे लोग थे! सब छोटे-छोटे ताजिर लोग थे और उनमें हिंदू, मुसलमान, पारसी सभी थे। वहा तो कोई यह फर्क भी नही करता था कि वह हिंदू है, वह मुसलमान है और वह पारसी है। सब कुली थे या ऐसा कहो कि सब हिंदू थे। तो वहा हम ऐसा दभ कर ही नही सकते थे कि हम बडे है तो हमारे लिए 'ए' वर्ग बनाइए, हमसे छोटे है उनके लिए 'बी' और जो सबसे छोटे है, उनका 'सी'। मै तो उसको मानता नही हू। लेकिन यहा हमने यह सब किया। मै तो यह माननेवाला हू कि जो कैदमें गया, वह कैदी है। लेकिन एक कैदी है तो उसने खसूसन[1] गुनाह किया है और जो बाहर सफेद कपडे पहनकर बैठे है, वे गुनहगार नही है, ऐसा मै नही मानता। मै तो दस दफा जेल गया, पूरा-पूरा तो याद भी नही, और काफी बरस उसमें काटे है, इसलिए मुझको तो इसका पता है। जो वहा जेलके सुपरिन्टेंडेंट वगैरा थे, वे तो मेरे दोस्त बन गए थे। तो वहा एक बड़ा दरोगा था, खासा आदमी था और बडा जेलर था। उसने मुझसे कहा कि देखो, मै तो इन कैदियोका अफसर बना हू, लेकिन दुनियाको क्या पता कि मैने कितना गुनाह किया है। ये या तो कोई चार-पाच सालकी जेल काटने आए है या फासीकी सजा पाकर आये है और पीछे फासी माफ हो गई है, लेकिन ऐसे कितने है जो यह जानते हो कि मैंने क्या गुनाह किये है। शायद मेरा भगवान ही जानता हो। इसलिए मुझको यह अच्छा नही लगता कि मै तो चीफ जेलर रहू और वे कैदी हों। मै भी वही माननेवाला हू। इसलिए मैने सोचा कि

---

[1] खास करके।

मुझे आपके सामने किस तरहसे आना चाहिए। अब अंग्रेजी सल्त-नत तो हट गई, उसने अपनेको उठा लिया। अच्छा किया। लेकिन अब हम अपनी जेलोंमे क्या करे ? जब अग्रेजी सल्तनत थी तो उस वक्त जेलमें जो चलता था—कितना अच्छा था या कितना बुरा था, उसका तो मै गवाह हू, लेकिन अब चूकि हकूमतकी बागडोर हमारे हाथोमें आ गई है, तो हमारी जेल, एक जेल न रहकर, अस्पताल बननी चाहिए। किसीने अगर खून किया है, चोरी की है या डाकू बना है या कानूनकी पुस्तकमे जितने गुनाह पडे है, उनमेसे कोई एक किया है, तो मै तो इन सबको एक किस्मकी व्याधि मानता हू। वह एक मर्ज है। कोई गुनाह करनेकी खातिर गुनाह थोडे ही करता है। अगर कोई व्यभिचार करता है या शराब पीकर कोई और अपराध करता है तो वह कोई शौकसे ऐसा नही करता। मै तो चूकि बूढा हो गया हू और मुझे अनुभव भी हो गया है, इसलिए मै तो यह सीख गया हू कि जैसा आदमीका स्वभाव बन जाता है वैसा ही वह करता है। कैदियोको क्या करना चाहिए, वह उन्हे सिखाया जाय। यहा जो सुपरिन्टेडेट साहब है या डिप्टी कमिश्नर है, वे कैदियोकी देखभाल करते है या उनपर हुक्म चलाते है कि इसको कोडा मारो, इसको यह काम दो और उसको वह काम दो, तो वे सजाके तौरपर ऐसा करते है। लेकिन मै तो यह कहूंगा कि जो सुपरिन्टेडेट, डिप्टी कमिश्नर या दरोगा है, वे सब ऐसे बने कि जैसे अस्पतालमे सर्जन या वैद्य होते है। और वैद्य होकर उस आदमीका, जो शराब पीता है, मर्ज मिटानेकी कोशिश करें। उसको यह बताया जाय कि शराब पीनेमे क्या-क्या बुराइयां है। अगर किसीने लडकीको उडा लिया है, यह तो बड़ा गुनाह हुआ न, लेकिन उसको भी बताना चाहिए, क्योकि यह भी एक किस्मका मर्ज है। अगर ऐसा जेलमे हो जाय तो बहुत अच्छा लगेगा और कैदी भी सब खुश हो जायगे। खुश होकर वे ऐसा थोडे ही मान लेंगे कि हमेशा जेलमे ही रहना अच्छा है। अस्पतालमे जो व्याधि-ग्रस्त लोग चले जाते है, वे हमेशा वही रहना थोडे ही पसद करते है। फिर अस्पतालोके तो आली-

शान मकान होते है, यहा हमारी जेलें तो ऐसी है भी नही। हम बनाए भी कहासे ? हमारा तो एक गरीब मुल्क पडा है। अगर हम अस्पतालो-जैसी जेले बनाने लगे तो हमारा दिवाला निकल जायगा। ऐसी जेले तो जनूबी अफ्रीकामे जो सोनेका मुल्क है, वहा भी नही है। वहा जो अग्रेज कैदियोके लिए कोठरिया या कमरे बनते है, वे कोई महल-जैसे थोडे ही है। इग्लैडके पास इतना पैसा है जो ऐसी जेलें बना सके, क्योंकि वहाकी जेले तो मैने देखी है। हा, अमरीकाकी जेले मैने नही देखी। लेकिन इतना तो हो, कि हमारी जेले अस्पताल-जैसी हो, जैसे अस्पताल-में डाक्टर रहता है और रोगियोकी चिकित्सा करता है। जब एक रोगी स्वस्थ होकर अस्पतालसे बाहर जाता है तो वह हमेशाके लिए ऋणी हो जाता है। वैसे ही यहा हमारी जेलोमे होना चाहिए। जेलमे जो कैदी रहते है वे ऐसा न कहनेवाले हों कि यहा बडी सख्तिया और ज्यादतिया होती है, सुपरिन्टेडेट या दरोगा खराब है। सब खराब-ही-खराब है, ऐसा वे न कहने पाए। वे कहे कि अस्पतालकी तरह हमारी बड़ी देख-रेख रखते थे, हमको खाना देते थे, और यह सिखाते थे कि जीवन कैसे व्यतीत होना चाहिए। यह तो मैने बताया कि उन लोगोको क्या करना चाहिए जो जेलका कारोबार चलाते है। लेकिन उनको क्या, आखिरमें वह करना तो उनके हाथमे भी नही है। वह तो हकूमतको करना है । या तो पंडितजीको करना है या सरदारजीको, या कहो, सारी हकूमतको, जिसे हम केबिनेट कहते है, करना है । लेकिन हकूमतको तो यही कहना है कि तुम्हे ऐसे चलना है। पीछे जो कानूनके बाहर जाकर जालिम बन जाता है वह दूसरी बात रही। कोई गुनहगार दरोगा, सुपरिन्टेंडेट या कमिश्नर तो आजकल होगा नही। आखिर इतना तो हम सीख गए है, और वे हकूमतके मातहत काम करते है। हकूमतके पास कोई बडा लश्कर नही है, और न वह बाहरसे कोई मदद मंगा सकती है जिससे कि वह उनको डरा सके। वे तो खुशीसे अपनी हकूमतका हुक्म मानते है। अगर खुशीसे न मानें तो हमारा सारा तन्त्र बिगड जाता है और मुल्कमे अधाधुधी हो जाती है। तो यह तो मैने अमलदारोके लिए कह दिया कि वे गुनह-

गार तो न बने। और थोडा तो वे आप भी हकूमतके कहे बिना ही कर सकते है। जैसे कैदियोंके साथ रहमदिल बनना है, तो उसमे उनको सीखनेकी क्या चीज है? जेलको वे अस्पताल समझें और उसमे जो कैदी है वे रोगग्रस्त है, ऐसा माने। तो एक काम तो निपट गया।

दूसरा यह कि जो कैदी लोग है, उनको एक कैदीकी हैसियतसे मै सुनाना चाहता हू। मै भी तो एक सत्याग्रही कैदी रहा हू। सत्याग्रही कैदी जान-बूझकर तो गुनाह कर नही सकता। जेलके जो सुपरिन्टेडेट या दरोगा है, उनको वह कभी परेशान नही करेगा और न कभी उनका अपमान करेगा। उसको तो आदर्श कैदी बनकर रहना है। तभी वह अपने सत्याग्रहको अच्छी तरहसे चला सकता है। जो कैदी सचमुच गुनहगार बनकर आए है, उनको भी यहा सत्याग्रही बन जाना चाहिए। उन्हे जेलके कानूनोसे कभी बाहर नही जाना चाहिए। जेलकी पाबदियोमें रहकर जो कुछ उसको मिलता है उसमें उसको सतुष्ट रहना चाहिए। अगर कोई कभी देखे तो सुपरिन्टेडेट या दरोगासे कह दे कि मुझको जो खाना मिलता है वह थोडा है या अच्छा नही रहता, या पूरा पकाया नही जाता या उसमे पत्थर रहते है या जतु होते है। यह सब रहता है, मैने तो अपनी आखोसे देखा है, क्योकि मै तो वहा रहा हू। लेकिन इसके लिए भी उनके पास क्या जाना था? वह सब तो कैदियोके ही हाथमें रहता है, वहा कोई रसोइये तो होते नही। अगर रसोइये रखे तो जेल नही चला सकते। जो कैदी लोग है वे ही तो अपना खाना बनाते है। वे सच्चे दिलसे काम करे। जो चावल बनाए वह साफ करके बनाए और जो रोटी पकाए वह कच्ची न रखें। यह सब तो आपके हाथमे रहता है। आप अपने घरका काम समझकर इसको करे, तब तो मै समझता हू कि आप लोग जेलमे आए और आपसे गुनाह भी हो गया—गुनाह तो सब करते है, किसीका गुनाह जाहिर हो जाता है, चलता है और कोई गुनहगार नही होता, तब भी उसको गुनहगार बनाया जाता है—तो आप इस तरहसे आदर्श कैदी बन जाते है।

एक काम आप कर सकते है। आप लोग जो यहा है उनमे हिंदू, मुसल-

मान, सिख सभी हैं, मुसलमानोमे भी कई किस्मके होगे, तो आप यहा सब भाई-भाई बनकर रहे। आज तो हमारे देशमे जहर फैल गया है। मेरी उम्मीद है कि कम-से-कम इस जेलमे तो वह जहर फैलेगा नही। तो यहासे आप लोग आदर्श शहरी बनकर निकले। तब तो जो डिप्टी कमिश्नर और जेल सुपरिन्टेंडेंट साहब है, वे मुझको सुनाएगे कि तुमने बडा अच्छा काम किया। उससे हमारा काम आसान हो गया है, कोई हमे दिक नही करता, जेलके कानूनकी सब पाबदी करते है और सारे कैदी रोज-ब-रोज अच्छा बननेकी कोशिश करते है। मै तो ईश्वर या खुदासे यही मागूगा कि आप लोग आदर्श कैदी बने और यहासे अच्छे शहरी बनकर निकले और बाहर निकलकर लोगोसे कहे कि यह क्या बात आप कर रहे है? हिंदू मुसलमानका दुश्मन है और मुसलमान हिंदूका, सब भूल जाय इन बातोको। गलतिया तो सबसे होती है।

कल चूकि ईद है, इसलिए यहा जितने मुसलमान भाई है, उनको मै ईद मुबारक कहता हूं। मै चाहता हू कि जितने हिंदू और सिख कैदी है वे भी अपने मुसलमान भाइयोको, जितने भी वे हो, ईद मुबारक कहेगे। अतमे बस यही कहता हू कि हमेशा सब मिल-जुलकर रहो।

## : १२६ :

२६ अक्तूबर १९४७

भाइयो और बहनो,

पहले तो एक भाईने जो प्रश्न पूछा है, उसका मै उत्तर दे दू। वह पूछते है—"आप कहते तो है कि बदलेकी भावना अच्छी नही होती, परतु आपके राम-भक्त तो हर साल रावणका बुत जलाकर बदलेकी भावनाको उकसाते है।" इसमें दो गलतिया है। एक तो यह कि मेरे राम-भक्त कौन है, यह मै जानता ही नही। मेरा राम-भक्त अगर मै हूं तो अच्छा है, उसका भी मुझको तो पता नही। राम-भक्त बनना कोई

मामूली काम थोड़े ही है। इसलिए आपके राम-भक्त कहना एक बड़ी गलती है। मेरे रामभक्त तो कोई है ही नही। लेकिन ऐसा होता है कि लोग रावणका बुत बना लेते है और राम उसको परास्त करते है। अभी तो राम परास्त करते है रावणको, लेकिन हममे कौन रावण होगा और कौन राम बनेगा? अगर हर कोई आदमी राम बन सकता है तो पीछे रावण कौन बनेगा? यह तो कथा है, लेकिन कथामे भी ऐसा मानते है कि राम तो ईश्वर है और रावण उसका दुश्मन। इसीलिए तो उसको अशुभ कहा, राक्षस कहा और निशाचर कहा। क्योकि उसका काम ही यह था कि रामको न मानना और ईश्वरको न मानते हुए ही मर जाना। पीछे भगवानके हाथोसे ही उसकी मृत्यु हुई। यह तो एक कथानक है। इसका यह मतलब नही है कि रावणका बुत बनाते है तो वे बदला लेनेके लिए उकसाते है। मै तो उसमेसे यह सीखता हू कि वे यह बताते है कि आदमी दूसरोसे बदला न ले। मै यह न मान लू कि यहां जो भाई बैठे है, वे तो रावण है और मै राम हूं। तब तो मेरे जैसा उद्धत और मूर्ख आदमी और कौन बन सकता है। मुझको क्या पता कि मै राम हू, कौन जानता है कि मुझमे कितनी दुष्टता भरी है। ईश्वरके दरबारमे मै महात्मा हू या दुष्ट हू, उसको कोई नही जानता। मुझको भी पूरा पता नही चलेगा कि मुझमे कितनी दुष्टता भरी है या कितनी साधुता है। वह जाननेवाला तो रामजी ही है। वह ऊपर पड़ा है और सबको देखता है। कोई चीज उससे छिपी हुई नही है। इन्सान किसीसे बदला ले नही सकता। अगर किसीसे बुरा भी हुआ है, तो भी उससे बदला क्या लेना? अगर एक इन्सान सम्पूर्ण है, यद्यपि इन्सान सपूर्ण कभी हो नही सकता, क्योकि सपूर्ण तो केवल ईश्वर ही हो सकता है, फिर भी माना कि एक इन्सान सपूर्ण है और अन्य अपूर्ण है, तो क्या वह दूसरोको सजा दे या उनका सहार करे? यह जो पुतला बनाते है विजयादशमीके रोज, उसका मेरी निगाहमे तो यही मतलब है कि बदला लेना इन्सान, मनुष्य या आदमीका काम नही है। उसको बदला लेना भी न कहा जाय तो भी जो सहार य· इत्यादि करनी है, वह ईश्वर ही कर सकता है। तो क्या.

यह गुण है कि हिंसा भी वही करे और अहिंसा भी वही ? वह निर्गुण है और गुणातीत है। उसके लिए ये सब चीजें कुछ नहीं। लेकिन यह दृष्टांत तो ऐसा है कि जितने रावण इस दुनियामें हैं उनका संहार करनेवाला केवल ईश्वर ही है। कुछ लोग ऐसा भी मान लेते हैं कि विजयादशमी तो यह सिखाती है कि वे तो पूर्ण और दूसरे अपूर्ण हैं। इसलिए कानून-को अपने हाथमें लेकर अपने-आप बादशाह बन जाते हैं और किसीपर आघात करना और किसीको कत्ल करना, यह सब करने लगते हैं।

वह हिंदुस्तानमें हो भी रहा है; क्योंकि हम पागल हो गए हैं। जो जवाब मैंने दिया है उसको आप लोग तथा जिस भाईने प्रश्न पूछा है, वह भी समझ गए होंगे कि राम-रावणका दृष्टांत लेकर हम पापाचारी न बनें। हमें पुण्यवान बनना चाहिए। एक ओर रामका नाम लेना और दूसरी ओर पापाचारी बनना, ईश्वरकी निंदा करना है।'

अभी आप लोगोंमेंसे पूछ सकते हैं कि तुम इतनी लंबी-चौड़ी बातें तो करते हो, लेकिन काश्मीरमें जो कुछ हो रहा है उसका भी कुछ पता है ? हां, पता है मुझको। लेकिन इतना पता है जितना कि अख-बारोंमें आया है। अगर वह सब सही है तो वह एक बहुत बुरी बात है। यह मैं कह सकता हूं कि इस तरह तो न धर्मकी रक्षा हो सकती-है और न कर्मकी। उसमें इल्जाम तो पाकिस्तानपर ही लगाया गया है न, कि वह काश्मीरको मजबूर करनेकी चेष्टा कर रहा है। वह होना नहीं चाहिए। अगर कोई किसीको इसलिए मजबूर करे कि उसके पाससे कुछ ले ले, तो वह हो नहीं सकता, इसमें तो मुझे जरा भी संदेह नहीं है। आज तो काश्मीर है, पीछे हो सकता है कि हैदराबादको मजबूर करो, जूनागढ़को करो या किसी और रियासतको। मैं कोई न्यायकी तुलना करना नहीं चाहता; लेकिन मैं तो एक उसूल मानकर चलता हूं कि कोई किसीको मजबूर नहीं कर सकता। पीछे, चाहे उसमें कुछ भी हो, मुझको तो कोई परवाह नहीं, चाहे काश्मीर हो, हैदराबाद हो या जूनागढ़ हो। कोई किसीको मजबूर न करे और किसीके साथ जबर्दस्ती न करे। लेकिन आजकी दुनियामें जो काश्मीरके महाराजा हैं, वे वहांके राजा नहीं हैं, यह बड़े अदबके साथ कहना पड़ता है। दूसरी

रियासतोमे भी जो राजा माना जाता है, वह नही है। उसको तो बनानेवाले अंग्रेज लोग थे, वे चले गए। वे तो इसलिए उनको राजा-महाराजा बना देते थे, कि उनकी मार्फत राजतत्र चलता था और राजदड मिलता था। काश्मीरको अभी अपने यहां प्रजातत्र स्थापित करना है। इसी तरहसे दूसरी रियासतोमें भी, हैदराबाद और जूनागढमें भी। मेरे नजदीक तो उनमे कोई भेद ही नही है। रियासतकी असली राजा तो उसकी प्रजा है। अगर काश्मीरकी प्रजा यह कहे कि वह पाकिस्तानमे जाना चाहती है तो कोई ताकत नही दुनियामे जो उसको पाकिस्तानमे जानेमे रोक सके। लेकिन उससे पूरी आजादी और आरामके साथ पूछा जाय। उसपर आक्रमण नही कर सकते और उसके देहातोको जलाकर उसको मजबूर नही कर सकते। अगर वहाकी प्रजा यह कहे, भले ही वहा मुसलमानोकी आबादी अधिक हो, कि उसको तो हिंदुस्तानकी यूनियनमे रहना है, तो उसको कोई रोक नही सकता।

अगर पाकिस्तानके लोग उसे मजबूर करनेके लिए वहा जाते है तो पाकिस्तानकी हकूमतको उन्हे रोकना चाहिए। अगर वह नही रोकती है तो सारे-का-सारा इल्जाम उसको अपने ऊपर ओढना होगा। अगर यूनियनके लोग उसको मजबूर करने जाते है तो उनको रोकना है और उन्हें रुक जाना चाहिए, इसमे मुझे कोई सदेह नही है।

काश्मीरकी बात तो मैंने आपसे कह दी। लेकिन एक दूसरी अच्छी बात भी मै आपको सुना दू। कलकत्तामे मेरे पास एक तार आया है। मेरा ख्याल है कि मैंने आपको यह बता दिया था कि कलकत्तामे एक शान्ति-सेना, जब मै वहा था, तब बन गई थी। ईश्वरकी ऐसी ही कृपा हो गई थी। कलकत्तामें शांति स्थापित करना बडा कठिन-सा लगता था, लेकिन शांति-सेना बननेके बाद वह बडी आसानीसे हो गया और हिंदू या मुसलमान किसीको भी कोई खास नुकसान नही हुआ। उससे पहले तो जो बडे मुहल्ले थे उनमें मुसलमान जमकर बैठ गए थे और हिंदुओको वहासे भगा रहे थे। पीछे हिंदुओंने भी कई जगह मुसलमानोकी, जो झोपडिया थी या कुछ और था, उनको जलाया और उनपर अत्याचार भी किया। वह नही होना चाहिए था। इस

सारे किस्सेमे तो मै जाना नही चाहता। लेकिन जब मै वहा जाकर बैठ गया तो भगवानकी कृपासे वह शाति-सेना बनी और जो विद्यार्थी-गण या दूसरे लोग थे, वे उसमे शामिल हो गए। अब वे लिखते है कि यहा दशहरा और ईद दोनो बडे मजेसे हुए है। हिंदू-मुसलमान आपसमे भाई-भाई बनकर रह रहे है। कलकत्तामें ईद कल मनाई गई थी, लेकिन दिल्लीमे आज है। तो दशहरा और ईद दोनोका जिक्र करते हुए यह तार मुझको भेजा है। वे लिखते है कि शाति-सेना सब जगह फैल गई थी। कही किसीका नुकसान नही हुआ, न हावडामे और न कलकत्तामे। कोई किसीको सता नही सका और दोनो दिन सब लोग आरामसे रहे। वे तो पूर्वी बगालमे भी ढाकाकी ओर चले गए थे।

तो मैने सोचा कि आपको यह बात भी सुना दू, क्योकि मुझको अच्छा लगता है कि जब हिंदुस्तानमे कही भी हिंदू-मुस्लिम-वैमनस्य दूर होता हो और एक-दूसरेके दुश्मन न रहकर सब भाई-भाई बनकर रहते हो। फिर कलकत्ता तो कोई छोटा-मोटा देहात थोडे ही है। वहा करोडोका व्यापार चलता है, उसमे बडे-बडे जहाज आते है, वहा हिंदू-मुसलमान दोनो रहते है और व्यापार करते है। अगर वहा हम एक-दूसरेके दुश्मन बन जाए तो क्या वह सारा व्यापार मटियामेट नही हो जायगा? अगर शाति-सेनाने वहा सबको भाई-भाई बनकर रहना सिखा दिया तो यह बहुत ही अच्छी बात है। कलकत्तासे क्यो न हम भी सबक सीखे और यहा भी क्यो न एक शाति-सेना बन जाए? आज तो यहा ईद है न, इसलिए कुछ मुसलमान भाई मेरे पास आए थे। वे मुझको पह-चानते है कि मै उनका दुश्मन नही, दोस्त हू। मै एक हिंदू हू और वह भी एक सनातनी हिंदू, इसलिए मुझमे मुसलमानपन भी उतना ही भरा है जितना कि हिंदूपन। इसलिए वे मुझको अपना दोस्त मानकर आ गए थे। मैने उनको ईद मुबारक कहा तो सही, लेकिन मैने कहा कि मै किस मुहसे आपको ईद मुबारक कहू। वे आज भी बेचारे भय-भीत पडे है। सोचते है कि न जाने हिंदू उनको रहने देगे या नही, या मारेंगे कि नही। कोई सब थोडा ही मारते है। लेकिन चूकि काफी कत्ल हो गए, इसलिए भयभीत है। थोडी तादादमे है। तो क्या

जिस जगह जो लोग बडी तादादमे है वे थोडी तादादवालोपर आक्रमण और अत्याचार करें? इस अत्याचारको मिट जाना चाहिए। नही तो हमको मिट जाना है।

जो कलकत्तेमें हुआ, वही अगर हम यहां कर सकें तो कितना अच्छा हो। मेरा दिल तो तब नाच उठेगा। आज तो मेरा दिल रोता है। आंखोंसे आसू तो नही गिरा सकता हू, क्योंकि अगर ऐसा करू तो मेरा काम नही चल सकता। मगर दिल तो रोता है। क्या आजादीमे हिंदू और मुसलमान ऐसे बनेंगे? अगर बडी तादादवाले छोटी तादादवालोपर हमला करें तो वह जालिमपन है। उससे कोई धर्म बच नही सकता। अत्याचारसे कभी कोई धर्म नही बचता। धर्म तो केवल धर्मकी मार्फत ही बच सकता है। और कोई दूसरा चारा है ही नही।

रतलामसे यह तार आया है कि यहाके जो महाराजा है उन्होने ऐसा ऐलान निकाल दिया है कि अब यहां जिम्मेदार प्रजातंत्र स्थापित होगा और उसकी मार्फत राज्य चलेगा। राजा तो उसके एक ट्रस्टीकी तरह बनकर रहेंगे। वहां जो हरिजन-सेवक-सघके मत्री है, वे मुझको लिखते है कि इस राज्यमें अब हरिजनो और दूसरे लोगोमे कोई भेद नहीं रहेगा। जो महाराजाका मदिर है, उसमे वे गए और एक बड़ी जमात तथा हरिजन लोग भी उनके साथ गए। राज्यके जितने मदिर है उनमे आजसे अस्पृश्यता नही रहेगी। जो कुए है उनसे हरिजन पानी भी भर सकते है। ये सब बातें जानकर मुझे बहुत अच्छा लगा। अगर हिंदू-धर्मको आगे बढाना है तो उसमें घृणा और अस्पृश्यता कैसे रह सकती है? अस्पृश्य तो वे है जो पापात्मा होते है। एक सारी जातिको अस्पृश्य बनाना एक बडा कलक है। अस्पृश्यताकी जड हरेक हिंदूके दिलसे निकल जानी चाहिए। जैसा रतलाममे हुआ है, वैसा और सब जगह भी, जहापर कि हिंदुओंकी तरफसे राजतन्त्र चलता है, अस्पृश्यताको मिटा देना चाहिए। तब तो हिंदू-धर्मको हम बहुत ऊचे ले जाएंगे। अगर अस्पृश्यताकी जड चली गई तो क्या पीछे हम मुसलमानोंको या दूसरे धर्मवालोको अस्पृश्य बताएंगे? जो अस्पृश्यताका मैल

हममें भरा है, यह तो उसी मैलका नतीजा है जो आज हम भुगत रहे हैं। इसलिए रतलाममें जो हुआ है वह मुझको अच्छा लगा और मैंने सोचा कि कलकत्ता और रतलामकी दोनो अच्छी बातें भी मैं आपको सुना दूं।